नहीं हुए। अब तक भी कभी कभी उनके अत्याचार और उत्पीड़न का अश्राव्य शङ्खनाद इस इतने दूरवर्ती भारत में भी सुनाई देता है।

इस पुस्तक की लेखिका ने यही करुण-कहानी इस पुस्तक में कही है। उसके पात्र सजीव से हैं। उसके कितने ही पात्र यद्यपि कल्पित-नामधारी हैं, तथापि उनकी यातनायें कल्पित नहीं। वे सच्ची हैं। सहस्राधिकों की सही हुई हैं। अनेक घटनायें तो लेखिका की अथवा उनके आत्मीय जनों और परिचित सज्जनों की आँखों देखी हैं। इन घटनाओं का वर्णन पढ़ते समय पाठक को रोमाञ्च हो आता है। उसके मुँह से सहसा निकल पड़ता है—"धिक्कार है इस बल-पौरुष को! धिक्कार है इन पाशविक अत्याचारकारियों को!! धिक्कार है इनकी स्वार्थान्धता को!!!"

मनुष्य को स्वाधीनता कितनी प्यारी है; परतन्त्रता से उसे कितनी घृणा है; अपने आत्मीयों—अपने पुत्र-कलत्रादि—के लिए वह कहाँ तक दुःख-कष्ट सहने को तैयार रहता है, यह भी इस पुस्तक के पाठ से अच्छी तरह ध्यान में आ सकता है। इससे यह भी विदित हो सकता है कि अन्यायियों में भी न्यायी, अत्याचारियों में भी परोपकार-शील, पाषाण-हृदयों में भी दीन-दयालुओं का प्रादुर्भाव हो सकता है। उनके आविर्भाव से दीन-दुखियों का दुःख कम हो जाता है और अन्त में परपीड़क नर-पशुओं को हार माननी पड़ती है। हार कर उन्हें अपने रक्त-रञ्जित हाथों को धोना पड़ता है और परमेश्वर से अपने कृतापराधों के लिए मन ही मन क्षमा माँगनी पड़ती है।

इस अनुवाद को हम हिन्दी-साहित्य का एक रत्न समझते हैं। आशा है, पाठक इससे यथेष्ट लाभ उठावेंगे।

जुही, कानपुर,
१९ मार्च १९१६

महावीरप्रसाद द्विवेदी

भूमिका।

अँगरेज़ी भाषा में मिसेस स्टो का लिखा हुआ "अङ्कल टाम्स केविन" नामक उपन्यास बहुत ही प्रसिद्ध है। इस उपन्यास ने अमेरिका में गुलामी की जड़ पर कुठार का काम किया था। इसके प्रकाशित होने पर प्रथम संस्करण में केवल युनाइटेड स्टेट्स में ही इसकी ३१३००० कापियाँ बिक गईं और उसके बाद दस वर्षों में इसके कम से कम १४०० संस्करण हुए! इस उपन्यास के प्रकाशित होने पर अमेरिका के गोरे वनियों ने कहना आरम्भ किया कि जैसे अत्याचारों का वर्णन इसमें किया गया है वैसे अत्याचार कभी नहीं होते। इस पर मिसेस् स्टो ने तत्काल इस उपन्यास की एक टीका प्रकाशित की और उसमें साबित कर दिया कि इसमें जो कुछ कहा गया है उसमें ज़रा भी अत्युक्ति नहीं है, आँखों देखी और अपने आत्मीय जनों से सुनी हुई सत्य घटनाओं का केवल नाम पते बदल कर वर्णन किया गया है। इस पुस्तक को लिख कर सहृदया मिसेस् स्टो ने दासों का कितना बड़ा उपकार किया यह अकथनीय है। इसी पुस्तक के आधार पर यथास्थान थोड़ा सा फेरफार करके वङ्ग-भाषा के प्रसिद्ध लेखक स्वर्गीय बा० चण्डीचरण सेन ने "टाम काकार कुटीर" नामक एक बहुत सुन्दर पुस्तक लिखी है। और उस पुस्तक को सामने रख कर तथा अँगरेज़ी की मूल पुस्तक से कुछ सहायता लेकर हिन्दी की यह वर्त्तमान पुस्तक लिखी गई है।

इस पुस्तक के आदि में सरस्वती-सम्पादक श्रीमान् पं० महावीरप्रसाद जी द्विवेदी ने पुस्तक का सारांश-स्वरूप एक सुन्दर वक्तव्य लिख कर पुस्तक का महत्त्व और बढ़ा दिया है। इस कृपा के लिए मैं उनका अति अनुगृहीत हूँ।

मेरे जिन मित्रों ने मुझे इस काम के लिए उत्साहित किया उन्हें मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। मैंने यथासाध्य पुस्तक को सब प्रकार से उत्तम बनाने की चेष्टा की है पर इसका फ़ैसला हिन्दी-प्रेमी पाठकों के हाथ है कि मैं इस कार्य में कहाँ तक सफल हुआ हूँ। मैं मेसर्स गुरुदास चट्टोपाध्याय ऐण्ड सन्स का कृतज्ञ हूँ कि जिन्होंने मुझे बङ्गला की पुस्तक का आश्रय लेने की आज्ञा सहज में दे दी। मैं अपने प्रिय मित्र पं० गौरीशंकर मिश्र बी० ए० को धन्यवाद देता हूँ कि जिन्होंने मेरे इस कार्य के लिए अपना कुछ समय दिया। इस पुस्तक में जो कई कवितायें हैं उनके लिए हिन्दी-जगत् के सुपरिचित कवि श्रीयुक्त गयाप्रसादजी शुक्ल "सनेही" मेरे विशेष धन्यवाद के पात्र हैं। अन्य कई मित्रों ने भी इस कार्य में मेरी सहायता की है इसके लिए वे भी धन्यवाद के अधिकारी हैं।

पवित्र वस्तु प्रचारक कम्पनी
जेनरल गंज, कानपुर
मिती चैत्र शु० १ संवत्
१९७३

महावीरप्रसाद पोद्दार

सूची ।

बेच कर हमें बड़ा फ़ायदा रहा। खरे धर्म की बड़ी क़ीमत है। दासों के दाम भी यह गुण होने से बढ़ जाते हैं। लेकिन भाई, माल ज़रा होना चाहिए असली।

शेल्बी—मैं कह सकता हूँ कि टाम से सच्चे धर्मात्मा संसार में थोड़े ही होंगे। अभी कल की बात है मैंने उसे सनिसिनेटी में एक आदमी के यहाँ से अपने पाँच सौ रुपये लाने को भेजा था। बहुत शीघ्र वह रुपये लेकर लौट आया। वहाँ उसे कितने ही बदमाशों ने पाँच सौ रुपये लेकर चल देने की पट्टी पढ़ाई, बहुतेरा बहकाया, पर उसने किसी की एक न सुनी। तुम्हीं कहो ऐसे ईमानदार दास को क्या कोई अपनी इच्छा से बेचेगा। यह तो तुम्हारे ऋण में जकड़ जाने से लाचार होकर बेचना पड़ता है। टाम का मूल्य मेरे सारे ऋण के बराबर है। तुम में समझ हो तो ऐसे गुण-सम्पन्न टाम को लेकर मेरा पीछा छोड़ो।

हेली—भई, कारबारी आदमी में जितनी समझ होती है उतनी तो हममें भी है। पर इस साल बाज़ार की हालत वैसी अच्छी नहीं है, नहीं तो मैं तुम्हारा ही कहना मान लेता।

शेल्बी—फिर तुम और क्या चाहते हो?

हेली—टाम के साथ एक छोकड़ा या छोकड़ी नहीं दे सकते?

शेल्बी—मेरे पास बेचने के लिए कोई लड़का लड़की नहीं है। मैं अपने दास-दासियों को कभी नहीं बेचता। यह तो इस बार हारे दर्जे बेच रहा हूँ।

अभी शेल्बी की बात पूरी भी न हो पाई थी कि घर का दरवाज़ा खोल कर एक पाँच छः वर्ष का वर्णसङ्कर (Quadroom) बालक अन्दर आया। बालक देखने में बड़ा सुन्दर था। काले काले घुँघराले बाल उसके कोमल चेहरे पर चारों ओर बिखरे हुए थे। उसकी

दोनों काली काली आँखें चमक रही थीं। उसकी आंखों से नम्रता और तेज टपक रहा था। उसके सादे स्वच्छ वस्त्र मुख की सुन्दरता को और भी बढ़ा रहे थे।। बालक का सलज्ज और निडर भाव देखते ही पता लग जाता था कि वह अपने मालिक का प्यारा है।

शेल्वी ने बालक को देखते ही "जिम, लेना।" कह कर एक मुट्ठी किशमिश उसके सामने डाल दी। बालक को किशमिश उठाने के लिए लपकते देख कर उसका मालिक हँसने लगा। किशमिश उठा लेने के बाद शेल्वी ने उस बालक को अपने पास बुला कर प्यार से कहा, "जिम, इन्हें ज़रा अपना नाचना दिखला तो।" बालक झट तयार होकर ठुमुक ठुमुक नाचने और ग़ुलामों में प्रचलित एक गीत को बड़े मधुर स्वर से गाने लगा। इस पर हेली बड़ा ख़ुश हुआ, ख़ूब वाह वाह की और एक नारंगी लड़के को दी।

शेल्वी ने कहा—"अब ज़रा अपने कुबड़े चाचा के समान कमर झुका कर लकड़ी के सहारे चलने की नक़ल तो करना।"

देखते देखते बालक ने मालिक की लाठी लेकर कुबड़ों के लाठी के सहारे चलने की हूबहू नक़ल कर दी। बालक की इस विचित्र ख़ाल-लीला को देख कर शेल्वी और हेली दोनों हँस पड़े। इसी भांति अपने मालिक की आज्ञा से बालक ने और भी कई नक़लें दिखलाईं।

यह सब देख कर हेली बोला "वाह वाह! ख़ूब अलबेला छोकड़ा है। बस, इसी छोकड़े को टाम के साथ दे दो। फिर तुम्हारी छुट्टी—एक दम छुट्टी। क़सम है तुम यही करो, सारी सफ़ाई हुई जाती है।"

इसी समय एक वर्णसङ्कर युवती धीरे से दरवाज़ा खोल कर अंदर आई। वह बालक की माता जान पड़ती थी। दोनों की काली आंखें और घुँघराले बाल एक ही समान थे। हेली उसकी सुन्दरता पर मुग्ध हो उसकी ओर आंखें गड़ा कर घूरने लगा। लज्जा से युवती का

मुख नीचा हो गया। एक ही बार के देखने में उसके अङ्गों की सुन्दरता दास-व्यवसायी हेली के मन में गड़ गई।

शेल्वी ने इलाइजा (आगन्तुक स्त्री) को देख कर पूछा, "इला-इजा, क्या चाहती है ?"

"मैं हेरी को ढूँढने आई थी" बालक पाई हुई चीज़ों को लेकर माता के पास दौड़ गया।

शेल्वी ने कहा—"इसे ले जाओ।" युवती बालक को गोद में उठा कर चली गई।

इलाइजा के चले जाने पर हेली बोला, "कैसी सुन्दर छोकड़ी है ! ख़ूब नक़द माल है। इसे अर्लिन्स में बेच डालो तो मालामाल हो जाओ। हमने हज़ार हज़ार पर जिन छोकड़ियों को बिकते देखा है वह इससे ज़्यादा ख़ूबसूरत नहीं होतीं।"

शेल्वी ने कहा—"मैं इसे बेच कर धन नहीं संग्रह करना चाहता।" "सो क्यों ? बोलो तुम इसे कितने का माल समझते हो ? कितने पर सौदा करने को राज़ी हो ? और बेचो तो क्या लोगे ?"

शेल्वी—मैं इसे कभी नहीं बेचूँगा। बराबर का सोना लेकर तो मेरी स्त्री इसे अलग करेहीगी नहीं।"

हेली बोला—"वाह उस्ताद, तुमने भी ख़ूब कही। अरे औरतों को नफ़े नुक़सान की बातों का क्या पता ? वह रुपये का मोल नहीं जानतीं। लेकिन तुम अपनी बीबी को एक बार समझाओ तो, उसे बतलाओ कि इसे बेच डालने पर कैसे बढ़िया बढ़िया गहने और कपड़े हाथ लगेंगे। फिर मैं देखूँगा कि तुम्हारी बीबी इसे बेचना चाहती है कि नहीं।

शेल्वी ने झुंझला कर दृढ़ता से कहा, "हेली, जब तुमसे एक बार कह दिया कि मैं इसे नहीं बेचूँगा, फिर क्यों नाहक की बकवाद लगाये

हो । एक बार जिसके लिए नाहीं कर दी उसे फिर कभी नहीं करूँगा, इसे तुम सच मानो ।"

इस पर हेली ने कहा—"ख़ैर बाबा, जाने दो। लड़के को तो दोगे न ? हम अधिक दाम देकर इसे ख़रीद रहे हैं। तुम्हें बेचना ही पड़ेगा ।"

शेल्बी—तुम्हें इस लड़के की क्या दरकार है ?

हेली—हमारे एक दोस्त ने बेचने के लिए कुछ ख़ूबसूरत लड़के माँगे हैं। राम-दोहाई, मैं सच कहता हूँ तुम्हारे ऐसे बड़े आदमी बड़े शौक़ से ऐसे छोकड़ों को ख़रीदते हैं। बाज़ार में इनके बड़े दाम उठते हैं। तिस पर यह लड़का ! यही तो असल में बेचने की चीज़ है, कैसा अच्छा खिलाड़ी है, कैसा गाना बाना जानता है ।

शेल्बी—मैं इसे नहीं बेचना चाहता । मेरे हृदय में कुछ दया है। इसे इसकी माता की गोद से अलग करने की मेरी इच्छा नहीं है ।

हेली—हाँ सो तो मैं ख़ूब समझता हूँ। इन सब नन्हें नन्हें छोकड़ों को बेचने के वक़्त उनकी माँ बहुत रोती चिल्लाती हैं और तुम लोग वह चिग्घारना सुन कर पिघल जाते हो। लेकिन ज़रा हिकमत से काम लिया जाय तो तुम्हारे सर की क़सम ज़रा भी हुल्लड़ नहीं मचता। तुम हमारी बात सुनो। इसको बेचने के पहले इसकी मा को कहीं टरका दो। फिर बच्चे को ख़रीदार के हवाले कर देने पर जब वह औरत घर लौटे तो उसे एक जोड़ा करनफूल या और कोई दिल-बह-लाव की चीज़ ख़रीद देना, बस उसका सारा दुःख-दर्द काफ़ूर हो जायगा। लड़के को याद तक तो करे हीगी नहीं। तुम्हारी क़सम यह सब तो हम लोगों के बायें हाथ का खेल है।"

शेल्बी—मैं तो नहीं समझता कि इतने से उसके जी को सन्तोष हो जायगा।

हेली—सन्तोष होगा क्यों नहीं? यह भी क्या गोरे हैं? ज़रा हिकमत से काम लो और बेड़ा पार। बहुत लोग कहते हैं कि ग़ुलामी का रोज़गार मन को पत्थर बना देता है पर यह सरासर झूठ है। छोटे छोटे लड़के लड़कियों को बेचने के वक़्त उनकी माँ ज़रूर रोती चिल्लाती हैं पर ज़रा छल-बल से काम लेने से सहज में उनका रोना-पीटना बन्द हो सकता है। बहुतेरे दास-व्यवसायी ज़रा से के लिए सारा बना बनाया खेल बिगाड़ बैठते हैं। सच कहता हूँ उन्हें इससे बड़ा नुक़सान उठाना पड़ता है। तुम्हारी क़सम, चाल से काम न लेने की वजह से अर्लिन्स में ऐसे ही एक व्यापारी के बहुत से रुपये मिट्टी में मिल गये। उसने एक औरत ख़रीदी थी। उसके था एक छोटासा लड़का। लड़का दूसरे के हाथ बिका था। ख़रीदार ने लड़के को उसकी गोद से खींच कर फेंक दिया और उस औरत की मुशकें कस कर घर लेगया। इसी से वह रो रो कर पगला गई और आख़िर मर ही गई। नफ़े की उम्मेद पर जो एक हज़ार गिने थे। उसमें नफ़ा तो गया जहन्नुम में, एक हज़ार में एक टका भी न तरा। बोलो तो यह क्या अक़्लमन्दी रही। इसी से मैं जो करता हूँ, बड़े दाँव-पेंच के साथ करता हूँ। भगवान् जानते हैं मेरे काम में तो कभी कोई टंटा बखेड़ा उठता ही नहीं। तुमने जो कहा वह हमको भी ठीक जँचता है। दास-दासियों के साथ दया का बरताव तो करना ही चाहिए। हम किसी औरत की गोद से लड़का नहीं छीनते। बल्कि उसे किसी बहाने से दूसरी जगह टरका देते हैं और पीछे से लड़के को भी चम्पत कर देते हैं। देख लो, इससे दया, मया, धरम करम सब साबित रह जाते हैं। हम सदा योंही दया-मया के साथ काम करते हैं। नुक़सान किस चिड़िया का नाम है, हम जानते ही नहीं। बहुतेरे तो हमारी दया की बात का मज़ाक उड़ाते हैं, वह इसे दया नहीं ढोंग बताते हैं। पर

बतलाया करें, हमने कभी घाटा तो नहीं उठाया। दया से काम लेने में कभी पैसा बरबाद नहीं जाता। तुम्हीं कहो हम झूठ कहते हैं ?

हेली की दया की डींग ने शेल्वी को हँसा दिया। शेल्वी साहब का हँसना देख कर हेली का उत्साह दूना हो गया। उसने फिर बातों का तार लगाया। वह कहने लगा, "यह बड़ा अचरज है कि लोग यह सब बातें नहीं समझते। पहले टाम लोकर नाम का एक हमारा सझिया रहा। यों तो इन कामों में वह बड़ा घाघ था, पर ग़ुलामों का वह कमबख़्त यमराज ही था। हम उसे बहुत समझाते कि "टाम, लड़कियाँ जब रोती हैं तब पीट पीट कर उनका अचार निकालने से क्या फ़ायदा ? उनके रोने धोने से अपना क्या घिसता है ? अरे रोना धोना तो काम ही है। वह तो रुकने का नहीं। फिर नाहक ठोक ठाक कर उनकी सूरत बिगाड़ने से क्या नफ़ा ? उलटा अपना नुक़सान।" हम उसे ज़रा दो मीठी बातें करके काम निकालने को बहुत समझाते। हज़ार कोड़ों की मार से जो काम नहीं निकलता वह दो मीठी बातों से हो जाता है। पर टाम पर इनका कोई असर न पड़ा। आख़िर जब उसके साझे से हमें घाटा होने लगा तो हमने साझा तोड़ दिया। लेकिन भई, मन का वह बड़ा साफ़ और पक्का कामकाजी था। उसके मुक़ाबिले का आदमी खोजे जल्दी नहीं मिल सकता। यों तो दुनिया भरी पड़ी है।"

शेल्वी—तुम क्या टाम लोकर से अच्छा काम चलाते हो ?

हेली—बेशक ! जहाँ ज़रा गड़बड़ जान पड़ती है वहाँ हम बहुत सम्हल कर काम लेते हैं। छोटे लड़के-लड़कियों को बेचने के समय हम उनकी माताओं को खिसका देते हैं। यह तो कहावत ही है, कि आँखों से दूर होने पर मन से भी दूर हो जाता है। जब उन्हें मिलने की आस नहीं रहती तब वे चुपचाप मन को समझा लेती हैं। गोरों की तरह

लड़के-वालों के साथ रहने की आशा करना काले .गुलामों का काम नहीं। बराबर ऐसी शिक्षा पानेवाले .गुलाम सुपने में भी वैसी आस नहीं करते।

शेल्बी—मालूम होता है तब तो मेरे यहाँ के दास-दासियों ने उपयुक्त शिक्षा नहीं पाई है।

हेली—हाँ, बेशक। तुम सारे केन्टार्की वालों ने .गुलामों को बिगाड़ रक्खा है। करना चाहते हो तुम भला, नतीजा होता है उलटा। एक .गुलाम आज यहाँ है कल उसे टाम ले जायगा। परसों उसे डिक के घर जाना पड़ेगा। अगले दिन फिर और किसी का होगा, यों ही दुनिया का चक्कर काटता रहेगा। अगर तुम उसे .खूब सुख देकर, उसके मन में कुटुम्ब के साथ रहने की आस पैदा कर देते हो तो फिर वह तकलीफ़ सहने लायक़ नहीं रह जाता। तुम लोग काले और गोरों का भेद मिटा देना चाहते हो। पर यह क्या कभी सम्भव है? काला क्या गोरे की बराबरी कर सकता है? काला काला ही है गोरा गोरा ही है।

योंही अँगरेज़ सौदागरों के दया-धर्म की गूढ़ व्याख्या करके ईसा से अपनी दयालुता की तुलना करते हुए हेली ने एक गिलास शेरी पीकर अपनी प्यास बुझाई और फिर शेल्बी से पूछा, "हाँ, तो, अब कहो तुम क्या करोगे?" शेल्बी ने कहा—"अपनी स्त्री से सलाह करके कहूँगा। पर तुम किसी के सामने इन बातों की चर्चा मत चलाना। कहीं मेरी स्त्री के कानों तक यह बात पहुँच गई तो बड़ा बखेड़ा होगा। वह जीते-जी कभी दास-दासी बेचना स्वीकार न करेगी।"

हेली—हम बहुत जल्दी दूसरी ठौर जाना चाहते हैं। जो कुछ करना हो आज ही तै कर डालो।

शेल्वी—अच्छा, तुम सात बजे आजाना। जैसा होगा वतला दूँगा"

हेली के जाने के उपरान्त शेल्वी साहब मन ही मन सोचने लगे कि, "ऋण भी क्या बुरी बला है! जिसके पीछे टाम ऐसे स्वामिभक्त ईमानदार नौकर को इस दुष्ट के हाथ बेचना पड़ता है। यदि मैं इसका ऋणी न होता तो टाम के बेचने की बात मुँह से निकालते ही मैं हण्टरों से इसकी ख़बर लेता। पर इलाइजा के पुत्र-विक्रय की बात अपनी स्त्री से कैसे कहूँगा। वह तो इसे सुनते ही झगड़ने लगेगी।

इस समय केन्टाकी प्रदेश में दक्षिण की भाँति दास-दासियों पर घोर अत्याचार नहीं होता था। लुसियाना आदि प्रदेशों के अँगरेज़ बनिये अधिक लाभ के लोभ से ग़ुलामों से दिन-रात काम लिया करते थे और ज़रा भी भूल होते ही पीठ का चमड़ा छुड़ा लेते थे। पर केन्टाकी प्रदेश के दो एक सहृदय अँगरेज़ दास-दासियों के साथ सदा सद्व्यवहार करते थे। दास-दासियों का भी अपने मालिकों पर प्रेम होता था। किन्तु यह सब होने पर भी दासत्व-प्रथा से होने वाले कष्टों में तनिक भी कमी न होती थी। देश-प्रचलित क़ानून के कारण ऋण के लिए सहृदय अँगरेज़ों के भी ग़ुलामों को नीलाम होना पड़ता था। शेल्वी साहब सर्वथा निर्दयी न थे। प्रत्युत उन्हें साधारणतः सहृदय कहा जा सकता है। दास-दासियों के साथ कठोर व्यवहार करके उनका हाथ कभी कलङ्कित न हुआ था। पर, इस समय वह बिचारे क्या करें, दास-व्यवसायी हेली के ऋणजाल में बेतरह जकड़ गये हैं। उससे छूटने के लिए दास-दासी बेचने के सिवा और कोई उपाय नहीं है। हेली ने उनके टाम नामक दास को ख़रीदना चाहा था। टाम को न बेचें तो सब कुछ नीलाम हुआ जाता है। पहले हेली के साथ शेल्वी साहब की उसी ऋण के विषय में बातें हो रही थीं। अन्त में

हेली ने टाम को ख़रीदने का प्रस्ताव किया और शेल्वी साहब को उसे मानना पड़ा। पर इलाइजा के पुत्र को बेचने न बेचने का अभी तक कुछ निश्चय न हुआ था। इलाइजा जब हेरी की खोज में शेल्वी साहब के कमरे में घुसने लगी तभी उसके कान में भनक पड़ गई कि हेली उसके लड़के को ख़रीदना चाहता है। इस पर उसने बाहर आड़ में खड़ी होकर उन लोगों की सारी बातें सुनने का विचार किया था। पर शेल्वी साहब की मेम ने उसे किसी दूसरे काम से पुकार लिया। इससे उसे तुरन्त वहाँ से हट जाना पड़ा। अपनी सन्तान की बिक्री की बात सुन कर वह बेतरह घबड़ा गई थी। उसकी छाती धड़कने लगी। उसके होश हवास ठिकाने न रहे। शेल्वी साहब की मेम ने उसे लाने को कहा कपड़ा, उसने लाकर रख दिया एक गिलास पानी। कहा पानी को, उठा लाई बोतल। इससे मेम ने उकता कर स्नेह-भरे वाक्यों से उसे डाँट कर कहा, "अरी इलाइजा, आज तुझे हो क्या गया है?"

इस पर इलाइजा सिसकने लगी। शेल्वी साहब की मेम ने फिर पूछा, "बेटी, तुझे क्या हो गया?" इलाइजा अधिक रोने लगी। थोड़ी देर बाद बोली, "माँ, बाबा के पास एक दास-व्यव-सायी आया है! मैंने उनकी बातें सुनी हैं—" शेल्वी साहब की मेम बोली, "बस, तू ऐसी ही है! दास-व्यवसायी आया है, आने दे, फिर हुआ क्या?"

इस पर इलाइजा घबड़ा कर सिसकती हुई बोली, "माँ, बाबा क्या मेरे हेरी को बेच डालेंगे?"

मिसेज़ शेल्वी स्नेहभरे वचनों से बोली, "अरी, तू तो पागल हो गई है। कौन बेंचता है तेरे हेरी को? तू नहीं जानती कि तेरे बाबा दक्षिण-प्रदेश के निर्दयी लोगों के हाथ दास-दासी नहीं बेंचा करते। वह

अपने दास-दासियों को कभी न वेंचेंगे । तू नाहक ही हेरी हेरी करके पागल हो रही है । इधर आ, जल्दी से मेरा जूड़ा बाँध दे । इन व्यर्थ की बातों को न सुना कर ।"

इलाइजा बोली—"माँ, तुम बाबा को मेरे हेरी को मत वेंचने देना ।"

शेल्बी की मेम ने विरक्त होकर कहा—"तू बिल्कुल बे समझ है । तू चुपचाप बैठी रह । मुझे अपनी सन्तान वेंचना स्वीकार है, पर तेरी सन्तान न वेंचने दूँगी । मैं देखती हूँ तू इसी तरह पागल हो जायगी । हमारे घर कोई आया, बस तू समझ बैठी कि, तेरे लड़के का ख़रीदार ही है ।"

इस समझाने बुझाने से इलाइजा को कुछ सन्तोष हुआ और वह मेम का जूड़ा बाँधने लगी । शेल्बी साहब की मेम बड़ी दयावती थीं । उनका हृदय ज्ञान, धर्म्म और सद्भावों से परिपूर्ण था । दास-दासियों को वह अपनी सन्तान के समान प्यार करती थीं । दासत्व-प्रथा से उन्हें बड़ी घृणा थी । शेल्बी साहब की धर्म्म पर अधिक श्रद्धा न थी । सारे सत्कर्मों का भार अपनी स्त्री के हाथों में सौंप कर वह निश्चिन्त से थे । मालूम होता है, उन्होंने समझ रक्खा था कि बड़े बड़े सत्कर्म करके उनकी स्त्री जो ढेर का ढेर पुण्य इकट्ठा कर रही है उसी के प्रताप से वे दोनों तर जायँगे; उन्हें और अलग पुण्य करने की कुछ आवश्यकता नहीं है; उतना ही पुण्य दोनों के लिए काफ़ी होगा । पाठक चलिए, एक बार शेल्बी साहब के निर्जन घर में चल कर देखें कि, वह किस सोच-विचार में पड़े हैं । शेल्बी साहब को अपने चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार दिखाई दे रहा है । वह यही सोच रहे हैं कि इलाइजा के पुत्र की बिक्री के विषय में स्त्री से क्या कहें, कैसे कहें । शेल्बी साहब को, अपनी मेम का जितना डर है इलाइजा के दु:खित होने का उतना फिक्र नहीं है । वह केवल भय से व्याकुल हैं । कुछ उनकी समझ में नहीं आता कि

क्या करें। मेम साहब जानती थीं कि शेल्बी साहब दयालु हैं। इसी से उसने इलाइजा को सरलता से इस प्रकार धीरज बँधा दिया था। स्वप्न में भी उसने नहीं सोचा था कि उसके स्वामी ऐसा करेंगे; और तो क्या, इलाइजा की बात का उसने ज़रा भी ख़्याल न किया। इसी से उसने अपने पति से इन बातों की चर्चा तक न की। और उस दोपहर को वह किसी पड़ोसी के यहाँ मिलने चली गई।

दूसरा परिच्छेद।

माता का प्रेम।

इलाइजा शेल्वी साहव के घर वड़े लाड़ प्यार से पली थी। मिसेज़ शेल्वी इलाइजा पर वड़ा स्नेह रखती थीं। अपनी कन्या की भाँति उसका प्रतिपालन करती थीं। अमेरिका में और बहुत से जो गोरे अँगरेज़ सौदागर थे, वे सुन्दरी दासियों के गर्भ से लड़के लड़की पैदा करके वाज़ार में उन्हें ऊँचे दामों पर वेंच डालते थे। उन पापी कलङ्की गोरे अँगरेज़ सौदागरों के घर इन अभागी सुन्दरी दासियों के सतीत्व-रक्षा की कोई सम्भावना न रहती थी। पर सौभाग्य-वश इलाइजा वैसे दुःख-यन्त्रणा और पापों से वची हुई थी। शेल्वी साहव की मेम ने उसे ईसाई धर्म की ख़ासी शिक्षा दिलाई थी; सत्सङ्ग में रहने के कारण इलाइजा का चरित्र वड़ा पवित्र था। जव वह युवा हुई तो मिसेज़ शेल्वी ने जार्ज हेरिस नाम के एक वलिष्ठ वुद्धिमान् और सुन्दर वर्णसङ्कर दास से उसका विवाह कर दिया था। जार्ज शेल्वी साहव के एक पड़ोसी का दास था। रूप-गुण, सभी वातों में वह इलाइजा के योग्य था। पर जार्ज का मालिक ग़ुलामों से वड़ा निष्ठुर व्यवहार करता था। सदा उन्हें दुःख देता और कोड़े लगाता था। जार्ज का जन्म एक अँगरेज़ वनिये और एक अफ़्रीका की क्रीत-दासी के मेल से हुआ था। उस वनिये की मृत्यु हो जाने पर, उसके ऋण के लिए, जार्ज को अपनी माता और भाई-वहिनों सहित नीलाम होना पड़ा। जार्ज के वर्त्तमान मालिक ने उसे नीलाम में ख़रीद कर विलसन नामक

एक आदमी के पाट के कारख़ाने में लगा दिया । जार्ज कारख़ाने में काम करके जो कुछ पाता वह सब उसे अपने मालिक को सौंप देना पड़ता था । दासों को अपने कमायें हुए धन पर कोई अधिकार न था । बैल, घोड़े आदि पशुओं को किराये पर चला कर जैसे लोग धन कमाते हैं, अमेरिका के गोरे सौदागर उसी प्रकार ग़ुलामों को किराये पर लगा कर रुपये इकट्ठे करते थे । विलसन के कारख़ाने में जार्ज बड़ी सावधानी और ईमानदारी से काम करता था । ग़ुलाम होने पर भी उसकी बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण थी । उसने अपनी अक़्ल से पाट साफ़ करने के लिए एक बड़ी अच्छी कल बनाई थी । विलसन ने उसका यह अध्यवसाय, परिश्रम, कार्यदक्षता, बुद्धि का प्राखर्य और ईमानदारी देख कर उसे अपने कारख़ाने का मैनेजर बना दिया । कारख़ाने के और नौकर-चाकर उसे बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखने लगे । पर, जार्ज था तो ग़ुलाम ही । भला, उसका इतना सम्मान, और यह उन्नति, उसके नीच मालिक अँगरेज़ सौदागर को क्यों सुहाने लगी ? जार्ज का कोई भी गुण उसे अपने नीच मालिक के अत्याचारों से न बचा सका ।

जार्ज का मालिक उसे इस प्रकार प्रधानता पाते देख कर मन ही मन जल-भुन कर ख़ाक हो गया ! जार्ज पर लोग श्रद्धा करने लगे, यह सुन कर उसकी द्वेषाग्नि भभक उठी । उसने मन ही मन ठान लिया कि जार्ज को विलसन के कारख़ाने से निकाल कर और किसी सख़्त काम में लगाऊँगा । बस फिर क्या था ? विचार उठने भर ही की देर थी । दूसरे दिन वह विलसन के कारख़ाने में पहुँच कर उससे बोला, "जार्ज को अब मैं तुम्हारे कारख़ाने में काम नहीं करने दूँगा" ।

विलसन ने कहा, "जार्ज के परिश्रम से मेरे कारख़ाने की बड़ी उन्नति हुई है, उसके अलग कर लेने से मेरी बड़ी हानि होगी" । उसने और भी कहा, "यदि तुम्हें रुपयों का लोभ हो तो मैं उसके लिए तुम्हें

अब से दूनी मज़दूरी दे सकता हूँ"। पर जार्ज के मालिक ने एक न मानी। परन्तु उसे कारखाने से अलग करके मिट्टी खोदने के काम में लगा दिया, और उसे मनमाने कोड़े लगाने लगा।

जार्ज ने विलसन के कारखाने में नियुक्त होने पर इलाइजा से ब्याह किया था। विलसन जार्ज को बहुत चाहता था। इससे जार्ज नित्य का कार्य समाप्त करते ही शेल्बी साहब के यहाँ जाकर अपनी स्त्री से मिल सकता था। पर अब उसे नहीं जाने दिया जाता था। उसके मालिक ने उसे शेल्बी के यहाँ जाने से रोका और अपने यहाँ की एक दासी से नाता जोड़ने की आज्ञा दी। इलाइजा जार्ज को प्राणों से भी प्यारी थी। भला, वह कैसे उसे छोड़ कर दूसरी दासी को ग्रहण करे? दास-दासियों के हृदय में क्या प्रेम का सञ्चार नहीं होता है? इलाइजा के गर्भ से क्रमशः उसके तीन सन्तानें हुईं, जिनमें केवल एक ही जीवित है। यह सन्तान दोनों के हृदय की ग्रन्थिस्वरूप है। कोई भी मनुष्य क्या ऐसे पुनीत प्रेम को विसार सकता है? क्या वह कभी ऐसे गाढ़े स्नेह-बन्धन को छिन्न कर सकता है? जार्ज गुलाम है—पराधीन है—तो क्या हुआ, क्या वह कभी इस अटूट प्रेम-बन्धन को तोड़ना स्वीकार कर सकता है? क्या अपनी स्त्री की जगह दूसरी स्त्री को अंगीकार कर सकता है? जार्ज ने देख लिया कि अब कोई दूसरा उपाय नहीं है, एक मात्र मृत्यु ही उसे इस दासत्व की यन्त्रणा से मुक्त कर सकती है। इसी से उसने "स्वतन्त्रता वा मृत्यु" इस वाक्य को अपना मूलमन्त्र बनाया।

अब वह भागने का उद्योग करने लगा।

"जो चाहे कर सकता है ? किसने उसे मुझ पर यह अधिकार दिया है ? कहाँ से उसे यह क्षमता मिली है ? मुझ में क्या मनुष्यात्मा नहीं है ? मैं भी क्या उसी की तरह मनुष्य नहीं हूँ ? मैं ख़ूब जानता हूँ कि मैं उससे सौगुना सत्यवादी हूँ; मैं जानता हूँ कि मुझे उससे अच्छा लिखना पढ़ना आता है; मैं उससे लोगों की सौगुनी श्रद्धा का पात्र हो सकता हूँ; फिर कौन सा कारण है कि वह जब चाहे बिना अपराध मुझे मारे ? मुझे इस तरह पीटने की क्षमता उसे किसने दी ? मैंने उसके डर से छिपे छिपे पढ़ना लिखना सीखा, उसने मेरे पढ़ने लिखने में क्या क्या अड़चनें नहीं डालीं। पर अब किस अपराध के कारण वह मुझ पर ऐसा घोर अत्याचार कर रहा है ? वह मुझे पशुओं के काम में लगाना चाहता है; पाप-पङ्क में फँसाना चाहता है। मुझे एक दम नीचे गिराने का उसने सङ्कल्प कर लिया है। बुरी नीयत से मुझे मिट्टी काटने के काम में लगाया है। तुम्हीं कहो, मैं अब और कितना सह सकता हूँ ?"

"जार्ज, मुझे बड़ा डर लग रहा है। तुम्हारे चेहरे के रङ्ग ढङ्ग से जान पड़ता है कि तुम कहीं आत्महत्या या और कोई पापकार्य न कर डालो। मैं तुम्हारे हृदय का दुःख समझती हूँ, पर सावधान, सावधान ! कम से कम मेरे और हेरी के भले की ओर ध्यान रख कर धीरज धरो।"

"अब धीरज धरने की सामर्थ्य नहीं। कष्ट और दुर्दशा दिन दिन बढ़ रही है। आख़िर हाड़ चाम का शरीर कितना सहेगा ? वह नीच, तरह तरह के कौशल रच कर मुझे सताता है; नाना प्रकार से मेरा अपमान करता है। तनिक सा बहाना मिलते ही पीट डालता है। लोगों की मेरी ओर थोड़ी सी श्रद्धा देखते ही वह जल कर कहता है कि मेरे ऊँचे सिर को पैरों तले रौंद डालेगा। कल की बात है, उसका एक छोटा लड़का एक घोड़े को सड़ासड़ चाबुक

मार रहा था; मैंने उसे मना किया। इस पर वह दुष्ट बालक मेरे ही ऊपर चाबुक बरसाने लगा। मैंने उसका चाबुक पकड़ लिया। इस पर वह मुझे लात मार कर अपने पिता से जाकर बोला, "जार्ज ने मेरा बड़ा अपमान किया है।" इतना सुनना था कि उसके पिता ने मुझे पास के एक पेड़ से बाँध दिया और अपने लड़के से बोला कि "अपने कोड़े से इसे जहाँ तक तुम से बने पीटो" वह मेरी पीठ पर चाबुक मारने लगा। यह देखो उस मार से मेरी सारी पीठ छिली पड़ी है।" जार्ज इलाइजा को अपनी पीठ दिखा कर फिर कहने लगा, "किस ने इस नीच को मुझ पर ऐसा प्रभुत्व करने का अधिकार दिया है? इलाइजा! तुम्हारे मालिक ने तुम्हें लाड़ प्यार से पाला है; इससे तुम्हारी उन पर यथेष्ट भक्ति है। पर मैं ऐसे नरपिशाच की कैसे भक्ति करूँ? तुम्हारे मालिक ने तुम्हारे लिए बहुत धन ख़र्च किया। पर मुझे जिस मूल्य में इस नीच ने मोल लिया था उससे सौ गुना मैं उसे कमा कर दे चुका। मैं अब कदापि ऐसा नृशंस व्यवहार नहीं सहूँगा। कभी नहीं,—कभी नहीं।"

ये सब बातें सुन कर इलाइजा सन्न हो गई। उसके मुँह से बात न निकली। कुछ देर बाद बोली, "तो अब क्या करना चाहते हो? तुम क्या नहीं जानते कि दुःख सुख दोनों में उसी परम पिता का भरोसा है।"

"इलाइजा! तुम्हारे हृदय में धर्म भाव है, इसी से तुम ऐसा कहती हो। पर मेरा हृदय केवल प्रतिहिंसा से परिपूर्ण है। मेरा ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास नहीं है। ईश्वर होते तो मेरी यह दुर्दशा क्यों होती?"

"जार्ज! यह न कहो। चाहे जैसी दुर्दशा क्यों न हो, ईश्वर पर विश्वास करना ही चाहिए। मैं बचपन में मां से सुना करती थी कि हर हालत में मनुष्य को ईश्वर पर विश्वास रखना चाहिए।"

"तुम्हारी माँ कह सकती हैं। जो सब तरह से सुखी हैं, आनन्द भोगते हैं, जिनके घर है, द्वार है, धन सम्पत्ति है, जी चाहा काम करने की स्वाधीनता रखते हैं, वे सहज में ऐसा उपदेश दे सकते हैं। पर यदि वह कभी मेरी सी अवस्था में पड़ कर परमेश्वर पर वैसा ही अटल विश्वास रख सकें, तो मैं जानूँ। तब मैं उनकी बात पर विश्वास कर सकता हूँ। मैं यदि सुखी होता, मुझे यदि मनुष्यों के अधिकार प्राप्त होते तो मैं भी ऐसा ही कहता। तुमने अभी तक मेरी दुर्दशा की सारी बातें नहीं सुनीं। मैं सब बातें तुम से कहता हूँ—मेरे मालिक ने कहा है कि, वह अब मुझे तुम्हारे पास नहीं आने देगा। तुम्हारे मालिक के दास दासियों के साथ अच्छा व्यवहार करने के कारण वह उन पर बहुत चिढ़ा हुआ है। वह कहता है कि दास-दासियों के साथ अच्छा व्यवहार करने से वे ख़राब हो जाते हैं। वे स्वाधीन होने का यत्न करने लगते हैं। विशेष कर उसका विश्वास है कि तुम्हें ब्याह कर तुम्हारी उत्तेजना से मैं कुछ स्वाधीन सा हो गया हूँ। इसी से वह मुझे तुम्हारे पास क़तई न आने देगा। अपने घर की मीना नाम की दासी से विवाह करने को कहता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उससे विवाह न करने पर वह मुझे दक्षिण देश में बेंच डालेगा।"

"कैसे मीना से तुम्हारा विवाह करेगा? ईसाई धर्म के अनुसार पादरियों के सामने हम लोगों का विवाह हुआ है।"

"तुम्हें पता नहीं कि इस देश के क़ानून के अनुसार क्रीत-दासों को विवाह करने का अधिकार नहीं है। तुम्हारे और मेरे मालिक जब तक चाहें तुम्हारे पास मुझे आने देंगे और तभी तक तुम मेरी स्त्री और मैं तुम्हारा स्वामी हूँ। तुम्हारे मालिक चाहें तो अभी तुम्हें दूसरे पुरुष के हाथ सौंप सकते हैं। मेरे मालिक चाहें तो मुझे दूसरी स्त्री से नाता जोड़ने को वाध्य कर सकते हैं। हम सरीखे

दुखियारे क्रीत-दासों का न स्त्री पर कोई अधिकार है, न सन्तानों पर; घर के पशु-पक्षियों की जो दशा है, वही हमारी भी है । तुम्हारे मालिक चाहें तो अभी तुम्हारे पुत्र को तुम से छीन कर बेंच सकते हैं। इसी से मैंने पहले ही कहा कि, तुम्हारे साथ कभी मेरी भेंट न होना ही अच्छा था। मुझे यदि मनुष्य-तन न मिलता, हम लोगों के यदि सन्तान न होती तो ही ठीक था। हम लोगों का तन-धारण विडम्बना मात्र है। हम लोगों का विवाह ही चिरदुःख का एक मात्र कारण है, हमारी सन्तान हमारे हृदय की शोकाग्नि वन कर हम लोगों का कलेजा जलावेगी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम्हारी यह सन्तान किसी समय तुम्हारे हृदय में शोकाग्नि प्रज्वलित करने का कारण वनेगी।"

"मेरे मालिक तो वड़े दयालु हैं।"

"दयालु होने से क्या हुआ? आज यदि वह मर जायँ, तो तुम्हें अपने लड़के सहित उनके ऋण के लिए नीलाम होना पड़े। इस सन्तान को जितना प्यार करोगी, इसके शोक में तुम्हें उतना ही अधिक जलना पड़ेगा। इसका न जन्मना ही अच्छा था।"

जार्ज की वात का सुनना कहिए कि, इलाइजा को इसके पहले अपने मालिक से दास-व्यवसायी हेली की की हुई वातें याद पड़ गईं। इससे वह अधीर हो गई। पर वह वड़ी वुद्धिमती थी। जार्ज के सामने उसने अपना मनोभाव प्रकट न होने दिया। जार्ज अपने ही दुःख से पागल हो रहा है, उसके होश ठिकाने नहीं हैं। ऐसे समय यदि उससे यह वात कही जाय तो वह निस्सन्देह शोक से विल्कुल विह्वल हो जायगा, यही सोच कर इलाइजा ने जार्ज के सामने हेरी के विकने की आशङ्का के विषय में कोई वात न उठाई ।

फिर कुछ देर वाद जार्ज ने इलाइजा का हाथ पकड़ कर कहा;—

"इलाइज़ा ! मैं जाता हूँ । आशा नहीं कि इस जन्म में फिर भेंट हो, जान पड़ता है यही हम लोगों की अन्तिम भेंट है—"

"जाते हो ? कहाँ जाओगे ?"

"मैं अब कैनाडा उपनिवेश में पहुँचने का यत्न करूँगा। वहाँ ग़ुलामी की चाल नहीं है। वहाँ पहुँच सका तो स्वाधीन हो जाऊँगा। वहाँ पहुँचने के बाद फिर तुम्हें तुम्हारे मालिक से ख़रीद ले जाऊँगा। और बीच ही में, यदि भागते हुए पकड़ा गया तो फिर निश्चय जान देनी ही है। इस कठिन कष्ट को सहने के लिए फिर इस शरीर का मोह न करूँगा।"

"पर मेरी एक बात मानो। पकड़े जाने पर आत्महत्या मत करना।"

"मुझे आत्महत्या नहीं करनी पड़ेगी मुझे पकड़ पाने से वे ही मेरी हत्या कर डालेंगे।"

"तुम भागना चाहते हो तो भाग जाओ; पर इस अभागिनी और इस सन्तान के कल्याण के लिए आत्महत्या वा नर-हत्या इत्यादि किसी पाप से अपने पवित्र हाथों को कलङ्कित मत करना। मैं फिर कहती हूँ, परम पिता की प्रार्थना करो, और उसी की करुणा का भरोसा रक्खो।"

"इलाइज़ा ! मैंने मन ही मन जो निश्चय किया है वह तुम्हें सुनाता हूँ। अभी तक मेरे मालिक के मन में मेरे भागने के विचार पर कोई सन्देह नहीं है। मैं आजही रात को भागने की सारी तैयारी करूँगा। और कई ग़ुलाम इस तैयारी में मेरी सहायता करेंगे। सब ठीक ठाक हो जाने पर इसी सप्ताह में मुझे भागने का ख़ूब अच्छा मौक़ा मिलेगा। तुम मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना करो। तुम्हारे हृदय में भक्ति, विश्वास और श्रद्धा का वास है। ईश्वर तुम्हारी प्रार्थना सुनेंगे।

मेरा हृदय तो शुष्क हो गया है। अत्याचार से सताया हुआ हृदय सदा द्वेष और हिंसा से भरा रहता है। इस हृदय में ईश्वर का स्थान नहीं, ऐसा हृदय ईश्वर के नाम पर नहीं पसीजता। न ऐसे हृदय में धर्म-विश्वास ही को स्थान मिल सकता है। यही कारण है कि जगत् में किसी न्यायी मङ्गलमय ईश्वर का राज्य है, इस पर मैं कभी विश्वास नहीं कर सकता।"

"जार्ज! जार्ज! मैं बार बार कहती हूँ कि ऐसी बात ज़बान पर मत लाओ। चाहे जैसी दुर्दशा क्यों न हो, धैर्य रख कर सदा एकाग्र-चित्त से मङ्गलमय परमात्मा के चरणों में आत्म-समर्पण करो। हम ऐसे अभागे, निराश्रित, निर्बल, और अनाथ ग़ुलामों का एक ईश्वर के सिवा संसार में दूसरा कौन सहायक है? वही दयामय ईश्वर ही अशरणों का शरण, निरुपायों का उपाय, अनाथों का नाथ और बे सहारों का सहारा है। हृदय में उस ईश्वर का ध्यान करो। तुम्हें पाप और कलङ्क कभी स्पर्श न कर सकेंगे।"

इलाइजा की बातें समाप्त होते ही जार्ज ने कहा, "अब विदा होता हूँ" पर फिर बारम्बार सतृष्ण नयनों से उसके मुख की ओर निहारने लगा। अब इलाइजा आँसू न सम्हाल सकी। उसके रोने से जार्ज का हृदय भी पिघल गया। जार्ज की दोनों आँखों से आँसू बहने लगे। फिर वह आँखें पोंछते हुए हेरी का मुँह चूम कर चलता हुआ। इलाइजा हेरी को गोद में लिये हुए जार्ज के मार्ग की ओर एक टक देखती रही। कुछ देर बाद, जार्ज के आँखों की ओट हो जाने पर उसे चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार दिखाई देने लगा। आज सूर्यास्त के साथ साथ इलाइजा का सुख-सूर्य भी अस्त हो गया। पर उसके दुःख की घोर अन्धियारी आने में अभी कुछ देर है।

चौथा परिच्छेद ।

टाम का परिवार ।

पाठकों को स्मरण होगा कि, टाम के वेचने के सम्बन्ध में हेली से शेल्वी साहव की जो वात-चीत हुई थी, वह पहले परिच्छेद में लिखी जा चुकी है । उसे पढ़ कर पाठकों को केवल इतना ही मालूम हुआ होगा कि, शेल्वी साहव के यहाँ टाम नामक एक स्वामिभक्त क्रीतदास था और उसे ख़रीदने के लिए ही हेली शेल्वी साहव के पास आया था । अव हम इस परिच्छेद में टाम का विशेष परिचय देते हैं । टाम यद्यपि अफ़्रीक़ावासी काला क्रीतदास था, फिर भी उसे धर्माधर्म का ख़ूब ज्ञान था । वह वहुत ही सीधा और सदाचारी था । स्वार्थ-परता उसे छू तक नहीं गई थी । और भी वह सव तरह से भला था । शेल्वी साहव पर कर्ज़ का वोझ न होता तो वह कभी उसे न वेचते ।

शेल्वी साहव के यहाँ, उनके रहने के स्थान से थोड़ी ही दूर पर, दास-दासियों के रहने योग्य कई छोटे छोटे घर थे । उन्हीं में सव दास-दासी रहा करते थे । अमरीका के प्राय: सभी धनाढ्य वनियों के घर योंही अफ़्रीक़ा के अभागे काले दास-दासियों से ठसे हुए थे । इनमें से अधिकांश महापुरुष इन अभागे दास-दासियों को सदा सताया करते और उन पर घोर अत्याचार किया करते थे । पर इनमें जहाँ हज़ार वुरे थे वहाँ पाँच भलेमानस भी थे । सभी जातियों में भले वुरे दोनों ही होते हैं । उन सव सज्जन अँगरेज़ों के यहाँ दास-दासी थोड़ा आराम पाते थे । इसके पहले कहा गया है कि शेल्वी साहव

की मेम का हृदय दया-धर्म इत्यादि अनेक गुणों से अलङ्कृत था। दास-दासियों पर अत्याचार करना तो दूर रहा वह सदा उनकी आत्माओं को उन्नत करने में लगी रहती थीं। वह उन्हें लिखना पढ़ना सीखने का सुअवसर देतीं तथा सदा उन्हें उपदेश देकर उत्तम मार्ग पर चलाने की चेष्टा करती थीं।

शेल्बी साहब के ग़ुलामों में टाम सबसे पुराना है। क्लोई नाम की एक दासी के साथ टाम का विवाह हुआ था, उसके गर्भ से टाम के तीन चार सन्तानें हुई हैं। क्लोई शेल्बी साहब के घर की मुख्य रसोइन है। वह दूसरे सब दास-दासियों पर सदा हुकूमत जनाती और अपने मन में समझती थी कि केन्टाकी भर में उसकी सी रसोइन दूसरी नहीं है। उसके बनाये भोजन में किसी तरह की भूल बतलाने से वह बहुत ही क्रुद्ध होती थी। इसीलिए वह जो कुछ बनाती थी, वही सब को अच्छा जान पड़ता था। पर क्लोई में और अनेक सद्गुण थे। वह पतिपरायणा और सन्तान-वत्सला थी। टाम का घर और दास-दासियों के घरों की अपेक्षा कुछ बड़ा था। टाम शेल्बी साहब के तेरह वर्ष के लड़के मास्टर जार्ज से कभी कभी पढ़ना सीखा करता था। प्रति दिन संध्या समय टाम महल्ले के सारे दास-दासियों को बटोर कर अपने घर में उन लोगों के साथ मिल कर ईश्वर की उपासना करता और उन्हें बाइबल पढ़ कर सुनाया करता था। अशिक्षित होने पर भी टाम का हृदय भक्ति और प्रेम से भरा था। टाम बड़ी सीधी सादी भाषा में ईश्वर की उपासना करता था। अन्य दास-दासी टाम को अपना पादरी (धर्मोपदेशक) मानते थे।

जिस समय दास-व्यवसायी हेली ने शेल्बी के कमरे में बैठ कर टाम को ख़रीदने का प्रस्ताव किया था, उस समय शेल्बी का पुत्र मास्टर जार्ज स्कूल में था। जार्ज को इन बातों का ज़रा भी पता न

था, स्कूल से लौट कर, जैसे वह नित्य टाम को पढ़ाने के लिए उसके घर जाया करता था वैसे ही आज भी उसके घर में बैठा पढ़ा रहा था। पर टाम या मास्टर जार्ज किसी ने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि आज टाम के सारे सुखों का सूर्य्य अस्त हो जायगा, आज टाम को पतिपरायणा स्त्री और सन्तान सन्तति से जन्म भर के लिए विछुड़ना पड़ेगा।

पाठकों को स्मरण होगा कि, शेल्वी साहव ने संध्या के ६ वजे दास-व्यवसायी हेली को वुलाया था। हेली फिर ठीक ६ वजे शेल्वी साहव के यहाँ आ पहुँचा। इधर जव टाम मास्टर जार्ज के पास बैठा पढ़ना लिखना सीख रहा था, तव उधर शेल्वी साहव के कमरे में वैठे शेल्वी साहव और हेली दोनों टाम की विक्री के विषय में लिखा-पढ़ी कर रहे थे। लिखा-पढ़ी समाप्त हो जाने पर हेली वोला, "सव ठीक है, अव तुम इस विक्री के इक़रारनामे पर दस्तख़त वनादो।" शेल्वी साहव ने वड़े खिन्न चित्त से हस्ताक्षर करके उसे हेली को सौंप दिया। हेली ने उसे एक पुराना वन्धक रक्खा हुआ तमस्सुक वापस किया। इस तमस्सुक के लिए ही शेल्वी साहव को स्वामिभक्त टाम और इलाइज़ा के नन्हें वच्चे हेरी को वेंचना पड़ा था। हस्ताक्षर का कार्य निपट जाने के वाद शेल्वी साहव हेली से वोले, "तुम ने वचन दिया है कि टाम को किसी निर्दयी वनिये के हाथ न वेंचोगे, देखना अपनी वात मत छोड़ना।"

हेली वोला, "जव टाम को मुझे वेंचही डाला, तव इस वात को वार वार क्यों दुहराते हो?"

शेल्वी साहव ने कहा, "मैंने वड़े सङ्कट में पड़ कर वेंचा है।"

इस पर हेली हँसते हुए कहने लगा, "और मैं भी यदि तुम्हारी तरह सङ्कट में पड़ जाऊँ? पर हम ख़ुद उस पर किसी प्रकार का

अत्याचार नहीं करेंगे। हम तुम से कह चुके हैं कि, हम दयाधर्म को साथ लिये हुए कारवार करते हैं।"

जब यों हेली, टाम और इलाइजा के बच्चे को ख़रीद कर चला गया तब शेल्बी साहब उदास होकर अलग बैठ कर चुरुट खींचते हुए मन ही मन विचारने लगे,—दास-व्यवसयी भी कैसे पाजी होते हैं! ख़रीदने के क्षण भर पहले बोला, टाम को भलेमानस के हाथ बेंचूँगा; और इक़रारनामे की लिखा-पढ़ी होते ही बदल कर बातें बनाने लगा!

पाँचवाँ परिच्छेद।

दास-दासी-विक्रय का दुखदायी दृश्य।

टाम और इलाइजा के पुत्र को वेंच कर, शेल्वी साहव रात को अपने शयनागार में जाकर दुःखित चित्त से कुर्सी पर पड़े हुए चिट्ठी-पत्री पढ़ रहे थे। उनकी मेम आयने के सामने खड़ी हो कर रात्रि के वस्त्र वदल रही थी। शेल्वी साहव को इस प्रकार उदास देखते ही उसे इलाइजा के पुत्र-विक्रय की वात याद पड़ी। उसने अपने पति से पूछा—"आर्थर! वह कौन है, जो आज अपने यहाँ वड़ा ठाठ वाट वदल कर आया था?"

"उसका नाम हेली है।"

"हेली कौन है? वह यहाँ क्यों आया था?"

"नेसेज नगर में मेरा उससे कुछ काम पड़ा था उसी सम्वन्ध में आया था।"

"वस एक ही दिन के काम पड़ने में उसने तुमसे इतनी घनिष्ठता पैदा करली कि यहाँ आ कर घरवालों की तरह खाया पिया?"

"कुछ हिसाव था उसी को साफ़ करने के लिए मैंने उसे यहाँ वुलाया था।"

"क्या वह दास-व्यवसायी है?"

यह प्रश्न सुन कर शेल्वी साहव ने और अधिक चिन्तायुक्त हो कर कहा, "तुम यह क्यों पूछती हो?"

"दोपहर को इलाइजा ने वहुत घवड़ाये हुए मुझ से आ कर कहा

था कि, तुम उसके लड़के को बेचने के विषय में उस आदमी से बात-चीत कर रहे थे। उस पर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। वास्तव में इलाइजा बड़ी भोली है !"

यह बात सुन कर शेल्वी साहब अत्यन्त अस्थिर होकर बोले, क्या इलाइजा ऐसा कहती थी ?"

"हाँ, उसने कहा था, लेकिन मैंने उसे समझा दिया कि वह बड़ी बेवक़ूफ़ है यों ही बका करती है !"

"एमिलि ! मैं ऐसे आदमी के हाथ दास-दासी बेचना सदा बड़े अन्याय का काम समझता था। पर आज इस सङ्कट की दशा में बिना बेचे काम नहीं चल सकता। हेली ऐसे निर्दयी मनुष्य के हाथ अपने किसी किसी दास-दासी को अवश्य बेचना पड़ेगा।"

हेली के हाथ ! असम्भव है। तुम हँसी तो नहीं करते हो ?" "मैं हँसी नहीं करता। मुझे बड़ा दुःख है कि टाम को बेचना पड़ा।"

"क्या ! हमारे टाम को बेचोगे ? ऐसे प्रभु-भक्त विश्वासी दास को ! तुमने तो उसकी प्रभु-भक्ति के पुरस्कार में उसे स्वाधीनता देने का वचन दिया था न ? तुम और मैं दोनों उसे दासत्व-शृङ्खला से मुक्त करके स्वाधीनता देने की हज़ारों बार आशायें दिला चुके हैं ! उसे कैसे बेचते हो ? यह देखते तो तुमने इलाइजा के बच्चे को भी बेच दिया है ?

"एमिलि ! अब तुम से यह सब बातें छिपाना व्यर्थ है, मैंने सचमुच इलाइजा के लड़के और टाम को बेचना स्वीकार कर लिया है, पर केवल इतने ही के लिए तुम मुझे सर्वथा निर्दयी क्यों ठहराती हो ? यह तो सभी करते हैं।" "तो और किसी को न बेच कर टाम और इलाइजा के पुत्र को ही क्यों बेचा ?"

"टाम और इलाइजा के लड़के का मूल्य सबसे अधिक मिलने के कारण ही उन्हें बेचना पड़ा। हेली इलाइजा को इससे भी अधिक

यह बड़ी भूल थी जो मैं समझती थी कि दास-दासियों के साथ अच्छा व्यवहार करने भर ही से दासत्व-प्रथा का कलङ्क धुल जायगा। दासत्व-प्रथा के सम्बन्धी देश का वर्त्तमान क़ानून हद से ज़्यादा घृणित और नीति-विरुद्ध है। इस क़ानून के अनुसार दास-दासी रखना महा अन्याय है। दास-दासियों से अच्छा व्यवहार करने पर भी इस प्रथा का कलङ्क दूर नहीं हो सकता। अच्छे बर्ताव से इस कुप्रथा की गन्दगी कुछ अंशों में भले ही दूर हो जाय, पर इसका भीतरी कलङ्क जड़ से नहीं जा सकता। मैं समझती थी कि दास-दासियों से अच्छा बर्ताव करके और धर्म की शिक्षा देकर मैं उन की दशा सुधार लूँगी। पर यह समझ कर मैंने कितनी बड़ी बेवकूफी की! दासत्व-प्रथा को बिलकुल आश्रय न देना ही श्रेय था।"

शेल्बी साहब ने अपनी मेम का यह पश्चात्ताप सुन कर कहा—"प्यारी, मुझे बड़ा आश्चर्य होता है! तुम तो दासत्व-प्रथा-विरोधी दल की एक सदस्य बन बैठी हो!"

"आर्थर! मैं इस दासत्व-प्रथा को कभी न्यायसङ्गत न समझती थी, न कभी दास-दासी रखने की मेरी इच्छा ही होती थी।"

शेल्बी—पर बड़े बड़े धार्मिक पादरियों ने इस प्रथा का समर्थन किया है। अभी उस दिन हम लोगों के बड़े पादरी ब्रान्सन साहब ने गिर्जा में जो उपदेश दिया था उसे तो तुमने सुना था न?

"मैं तुम्हारे बड़े पादरी का उपदेश नहीं सुनना चाहती। मैं अब ब्रान्सन का उपदेश सुनने कभी गिर्जा न जाऊँगी। पादरी और कृस्तान पुजारी ख़ुशामद के मारे, धनी बनियों की हाँ में हाँ मिलाने के लिए उनकी इच्छानुकूल उपदेश देते हैं। क्या उन में कोई स्वाधीन विचार प्रकट करने का भी साहस रखता है? अर्थ ही सारे अनर्थों की जड़ है। धन के लोभ से इस घृणित, अन्याय-पूर्ण देशाचार को सम-

र्थन करते हुए भी इन महात्माओं को लज्जा नहीं आती। केवल धनी बनियों को .खुश करने और पापी पेट को भरने के लिए वे ऐसे घृणित मतों का प्रचार करते हैं।

"लो तो अब आगे फिर कभी बहुत धर्म धर्म की दुहाई मत देना। देख न लिया कि, ये धर्मप्रचारक समय समय पर कैसे ऊटपटांग मतों का प्रचार करते हैं? उनके ये सब मत तो हमारे ऐसे पापियों को भी घृणित मालूम होते हैं। धर्म का तत्त्व समझना बहुत कठिन है। मुझ पर ऋण का बोझ न होता तो मैं कभी ऐसा काम न करता। अब तुमने समझ लिया होगा कि कैसे सङ्कट में पड़ कर मैंने यह काम किया है। तुम्हीं देख लो जैसी दशा में पड़ कर मैंने जो किया है वह युक्ति-सिद्ध है वा नहीं।" "हाँ, ठीक है; तुमने सब अवस्थानुसार ही किया है। किन्तु खेद है कि, मेरा कोई ऐसा मूल्यवान् गहना नहीं कि जिसे बेच क़र मैं इलाइजा के हृदय-रत्न, उस दुःखिनी के जीवन-सर्वस्व की रक्षा कर सकूँ। अच्छा, क्या मेरी इस घड़ी की विक्री के मूल्य से इलाइजा के बच्चे की रक्षा हो सकती है? इलाइजा के उस शिशु के लिए मैं अपना सर्वस्व देने पर भी तैयार हूँ।"

"एमिली! तुम्हारी ऐसी शोचनीय दशा देख कर मुझे बड़ा दुःख होता है। लेकिन विक्री की पक्की लिखा-पढ़ी हो चुकी है। हेली ने विक्री के दस्तावेज़ पर मेरे दस्तख़त तक करा लिये हैं। अब कोई उपाय नहीं है। हेली के हाथ में मेरे सर्वनाश की वागडोर थी, लेकिन इलाइजा के शिशु को बेच कर ही मैंने उससे छुटकारा पाया है।"

"हेली क्या बिल्कुल ही निर्दयी है?"

"निर्दयी तो नहीं कह सकता। लेकिन वैसा लोभी और अर्थपिशाच तो शायद ही दूसरा हो। वह धन के लिए अपनी स्त्री तक को किराये

पर दे सकता है; और अपनी माता तक को ख़ुशी से बेच सकता है।"

"यह जानबूझ कर भी तुमने ऐसे नराधम के हाथ टाम और इलाइज़ा के बच्चे को सौंप दिया! कितने दुःख की बात है!" "क्या करूँ? बिना बेचे गुज़र नहीं। मैं स्वयं ही ऐसे कामों से बड़ी घृणा करता हूँ पर लाचारी है। हेली कल ही आ कर इन लोगों को ले जायगा। मैं सवेरे ही घोड़े पर सवार हो दूसरी जगह चला जाऊँगा। टाम को ले जाने के समय मुझ से न रहा जायगा। तुम भी इलाइज़ा को साथ लेकर कहीं टल जाना। हम लोगों की अनुपस्थिति ही में हेली का इन लोगों को ले जाना अच्छा होगा।"

"मैं यों कपट रच कर इलाइज़ा को दूसरी जगह नहीं ले जा सकूँगी। मैं ऐसे निठुर काम में सहायता नहीं करूँगी। टाम को ले जाने के समय मैं उससे भेंट करूँगी। उसे आशीर्वाद दूँगी। पर जब मुझे इलाइज़ा की बात याद आती है तो मेरी छाती फटने लगती है। मुझे चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार दिखाई पड़ता है। तुम्हें नहीं मालूम हो सकता कि माता की गोद से शिशु को छीनने में माता को कितनी वेदना होती है!

शेल्बी साहब और उनकी मेम में जिस समय यह बातें हो रही थीं, उस समय इलाइज़ा पासवाली कोठरी में बैठी उनकी सब बातें सुन रही थी। उनकी बात-चीत समाप्त होने पर इलाइज़ा धीरे धीरे, दबे पाँवों अपने घर की ओर चली। डर से उसका हृदय धड़क रहा था। उसने रोते हुए "हे ईश्वर! हे दयामय! रक्षा करो"—कह कर घर में प्रवेश किया। खाट पर सोये हुए बालक को गोद में उठा लिया और मुँह चूम कर कहने लगी—"दुखिया के धन! तू दूसरों के हाथ बिक गया है। पर यह दुखिया प्राण रहते तुझे न छोड़ेगी।"

भय के कारण उसकी आँखों का जल सूख गया । जब हृदय बिल्-कुल सूख जाता है तो आँखों में भी जल नहीं रहता, उस समय हृदय फट कर आँखों से ख़ून बहने की तैयारी हो जाती है । इस समय इलाइजा का यही हाल है । उसका हृदय विदीर्ण होने की नौबत हो गई है । परन्तु निराशा भी कभी कभी मनुष्य के मन को ढाढ़स बँधा देती है । इस समय इलाइजा केवल साहस के बल खड़ी है । वह एक काग़ज़ और पेंसिल लेकर लिखने लगी—

"माता ! मुझे अकृतज्ञ मत समझना । बाबा के साथ तुम्हारी इस समय जो बातें हो रही थीं, वह सब मैंने आड़ में बैठ कर सुन ली हैं । मैं अपनी सन्तान की रक्षा के लिए भागने को मजबूर हूँ । तुमने मुझे सदा हृदय से प्यार किया है । मङ्गलमय ईश्वर तुम्हारा मंगल करें"—बहुत शीघ्र इस आशय का एक पत्र लिख कर वहीं खाट पर छोड़ दिया ।

बालक को सर्दी से बचाने के लिए कुछ कपड़े, एक चादर और एक शाल साथ लेकर लड़के को हृदय से लगाये हुए वह घर से बाहर हुई । पहले वह टाम के घर की ओर गई । वहाँ पहुँच कर उसने टाम के दरवाज़े की कुंडी खटखटाई । टाम बहुत रात गये तक भजन भाव किया करता था, इससे उस समय तक वह जाग ही रहा था । टाम की स्त्री क्लोई ने द्वार खोल दिया । इस समय इलाइजा को देख कर वह चकित हो गई । इलाइजा ने बड़े कारुणिक शब्दों में कहा—"टाम ! मैं हेरी को लेकर अभी भाग रही हूँ । बाबा ने हेरी को और तुम्हें, एक दास-व्यवसायी के हाथ बेंच डाला है ।" टाम और क्लोई दोनों ही इस आकस्मिक घटना को सुन कर चौंक पड़े । टाम भकुआ सा हो कर रह गया । उसके मुँह से बात न निकली । किन्तु क्लोई ने कहा कि, हम लोगों ने कौन सा अपराध किया था कि इस

तरह बेंच दिया ? इस पर इलाइजा ने मेम और शेल्बी साहब में जो बातें हुई थीं उन्हें कह सुनाया, और बोली—"ऋणी होने के कारण बेंचा है न कि किसी अपराध के लिए। पर मा इससे अत्यन्त दुःखित हुई हैं। उनका हृदय सचमुच ही दया-ममता से पूर्ण है। मैं बड़ी कृतघ्न हूँ इसी से मा को छोड़ कर इस प्रकार भागने को तैयार हो गई हूँ; पर भागने के सिवा मेरे पास और कोई उपाय नहीं है। विना भागे हेरी की रक्षा नहीं हो सकती।" इस पर क्लोई ने टाम से कहा—"तुम भी क्यों नहीं भागते ? मैं तुम्हारे कपड़े-लत्ते लाये देती हूँ, तुम्हें तो दूसरी जगह जाने का पास (Pass) भी मिला हुआ है ?"

टाम बोला—"मैं कभी नहीं भागूँगा; मेरे बेंचने से यदि अन्यान्य दास-दासियों की रक्षा होती है तो मेरा बिकना अच्छा ही हुआ। ईश्वर सर्वत्र है। कहीं क्यों न रहूँ, वह मेरे साथ है। मैं कभी विश्वासघात नहीं करूँगा। मुझ पर विश्वास करके मालिक ने ख़ुशी से मुझे यह जाने आने का पास दिया है। भला मैं धोखा देकर भागने में इसका उपयोग कैसे कर सकता हूँ ?"

टाम भागने की अनिच्छा दर्शा कर चुप रह गया और मुँह लटका कर आँसू बहाने लगा। खाट पर सोये हुए बच्चों की ओर देख कर बारम्बार आहें भरने लगा। फिर इलाइजा क्लोई चाची से कहने लगी कि आज संध्या को मेरे पति मेरे पास आये थे। उनका मालिक उन पर घोर अत्याचार करने लगा है। सताये जाने के कारण वह भी भागने का उद्योग कर रहे हैं। भेंट होने पर मैं उन से अपने भागने का वृत्तान्त कहूँगी। उन्हें भली प्रकार समझाऊँगी कि यदि इस लोक में उनसे भेंट न हुई तो परलोक में अवश्य मिलना होगा। जीते मरते वही मेरी एक मात्र गति और एक मात्र आधार हैं।"

इलाइज़ा की ये बातें पूरी होने पर क्लोई ने अश्रु-पूर्ण नेत्रों से उसका मुँह चूमा और रोते हुए उसे विदा किया ।

विकट अन्धेरी रात थी। चारों ओर भरपूर सन्नाटा था। उसी विकट काली निशा में बच्चे को गोद में लिये हुए उन्नीस वर्ष की युवती अकेली क़दम बढ़ाये जा रही है। उसके लिए चारों दिशायें समान हैं, कहीं कोई सहारा नहीं दीख पड़ता। पर पाठक! क्या आप सचमुच इलाइज़ा को निस्सहाया और शरणहीना समझते हैं? एक बार हृदय-पट खोल कर देखिए; इलाइज़ा सर्वथा अनाथा नहीं है। अनाथों के नाथ, दीनानाथ, दीनबन्धु भगवान् अब भी उसके साथ हैं। लोभी गोरे बनिये कालों से भले ही घृणा करें, पर सर्वसाक्षी परमात्मा के महान् दरबार में काले गोरों में कोई भेदभाव नहीं है—वहाँ सभी बराबर हैं।

छठा परिच्छेद ।

इलाइजा की खोज ।

रात गई, दिन निकला । प्रभात-सूर्य्य गगन में उदय हो कर गोरे, काले सब पर समान भाव से अपनी मनोहारिणी प्रभा का विस्तार कर रहा है । सारा संसार उठ कर अपने अपने कामों में लग रहा है । पर शेल्बी साहब के कमरे के किवाड़ अभी तक नहीं खुले हैं । कारण, कल रात को मेम और वह ठीक समय पर नहीं सोने पाये इसी से आज बड़ी देर से उठे । मेम बिस्तरों से उठते ही इलाइजा को पुकारने लगी । पर कोई जवाब न मिला । कुछ देर बाद उसने आन्डी नामक एक दास को इलाइजा को बुलाने भेजा । आन्डी ने इलाइजा के घर से लौट कर कहा कि उसका घर सूना पड़ा है । चीज़ें जहाँ तहाँ बिखरी पड़ी हैं, जान पड़ता है कि वह भाग निकली ।

इन बातों से शेल्बी साहब और उनकी मेम ने तुरन्त समझ लिया कि इलाइजा अपनी सन्तान को लेकर भाग गई । मेम के मुँह से अकस्मात् निकला, "परमात्मा इलाइजा के बच्चे की रक्षा करे ।"

लेकिन शेल्बी साहब यह सुन कर बहुत झुँझलाये और बोले--"प्यारी! तुम निरी ना समझ की सी बातें कर रही हो; हेली ज़रूर कहेगा कि मैंने ही षड्यन्त्र रच कर इलाइजा को भगा दिया है । उसके कहने के कई ख़ास कारण भी हैं । उसका ऐसा सोचना अकारण न होगा—क्योंकि मैंने पहले से ही इलाइजा के पुत्र को बेंचने की अनिच्छा प्रकट की थी ।" इसके बाद शेल्बी साहब नीचे के घर में आये । इधर घर की नौकर-मण्डली

में इलाइजा के भागने की वात पर वड़ा आन्दोलन आरम्भ हुआ। किसी ने कहा, कि हेली तो सुनते ही दुःख से पागल हो जायगा। किसी ने कहा, कि वह अर्थ-पिशाच यह ख़वर पा कर वड़ा ऊधम मचावेगा। और कोई बोला, कि हेली निश्चय ही गालियों की बौछार करेगा। यह वातें हो ही रही थीं कि चाबुक लिये हुए हेली वहाँ आ पहुँचा। इलाइजा के भागने की वात सुनते ही, दाँत पीस कर "हरामज़ादी, सूअर की औलाद" इत्यादि सुललित शब्दों से इलाइजा को याद करने लगा। अन्त में सहसा असभ्य की भाँति शेल्बी और उनकी मेम जिस कमरे में बैठे थे, वहाँ जाकर ज़ोर से बोला—"शेल्बी, तुमने वड़ा ज़ुल्म किया।" शेल्बी साहव ने कहा—"हेली! ज़रा भलमन्सी से वातें करो। देखते नहीं, मेरी स्त्री यहाँ वैठी है?"

पर अर्थ-पिशाच हेली को भले बुरे का ज्ञान कहाँ? उसने फिर उसी प्रकार चिल्ला कर कहा—"सचमुच तुम ने वड़ा ही ज़ुल्म किया।"

इस पर शेल्बी साहव वहुत क्रुद्ध हुए और हेली को झिड़क कर कहा—"तुम क्या निरे वेवकूफ़ ही हो! भद्र महिला के सामने यों सिर पर टोप डाटे खड़े हो!"

इतना कह कर अपने नौकर आन्डी को हेली का टोप गिरा देने की आज्ञा दी। आन्डी ने तुरन्त हेली के सिर का टोप और हाथ का चाबुक छीन लिया। तव जाकर हेली साहव मिजाज़ को ज़रा ठण्डा करके बोले, "भई! तुम्हें भलमन्सी से काम लेना चाहिए था।" इतना सुनना कहिए कि शेल्बी ने वड़े क्रोध से कड़क कर कहा, "मैंने कौनसी वेईमानी की? मेरी भलमन्सी वखानी तो अभी गर्दनियाँ देकर वाहर निकलवा दूँगा।"

अर्थ-पिशाच प्रायः कायर ही होते हैं। कमज़ोरों के सामने शेर

चने रहते हैं पर जब अपने से कोई सवाया मिल गया तो भेड़ हो जाते हैं। हेली ने शेल्बी को क्रुद्ध देख कर डरते हुए कहा, "हमारी क़िस्मत ही फूटी है, नहीं तो ऐसा क्यों होता ?"

तब शेल्बी साहब क्रोध रोक कर कहने लगे, "तुम्हारा यों नुक़सान न हुआ होता तो मैं कभी इस तरह से तुम्हें घर में न घुसने देता। पर ख़ैर, तुम्हें मेरे साथ काम पड़ने से घटी हुई है इसलिए मैं तुम्हें अपने घोड़े और आदमी देता हूँ। तुम इलाइजा को खोज कर उससे अपने ख़रीदा हुआ माल ले लो।"

शेल्बी साहब की मेम, अर्थ-पिशाच हेली की करतूत देख कर मन ही मन बहुत कुढ़ीं, और वहाँ से उठ कर चली गईं। तब शेल्बी ने आन्डी को बुलवा कर कहा, "आन्डी, तुम और साम हेली साहब के साथ घोड़ों पर चढ़ कर इलाइजा की खोज में जल्दी जाओ।"

आन्डी ने अस्तबल में पहुँच कर साम को ये सब बातें सुनाईं और घोड़े तैयार करने को कहा।

साम मालिक की आज्ञा सुनते ही झटपट घोड़ा तैयार करने लगा और कूद फाँद मचा कर कहने लगा, "इलाइजा को अभी पकड़ कर लाता हूँ—अभी लाता हूँ।"

आन्डी ने उसके कान में कहा, "अरे! तू समझता नहीं; मेम साहब नहीं चाहतीं कि इलाइजा पकड़ी जाय। घोड़ा कसने में ज़रा देर सेर कर देना।"

साम बोला, "तू ने कैसे जाना कि मेम साहब नहीं चाहतीं ?"

आन्डी ने कहा, "जब मैंने मेम साहब से इलाइजा के भाग जाने के समाचार कहे उस समय वह बोलीं—"परमात्मा इलाइजा के बच्चे की रक्षा करे।" पर साहब यह सुनकर मेम पर झुंझला उठे।"

साम बड़ा नम्बरी था। जब जान लिया कि मेम साहब इलाइजा

को पकड़ने के पक्ष में नहीं है, तब फिर वह कहाँ जल्दी घोड़ा कसता है! अस्तबल में जाकर एक बार घोड़ा खोल देता है, फिर पकड़ता है, फिर छोड़ देता है, फिर पीछे दौड़ कर पकड़ता है, योंही समय बिताने लगा। फिर अपने चढ़ने वाले घोड़े पर काठी कस कर इस ढङ्ग से उसके नीचे एक कांटा लगा दिया कि घोड़े पर चढ़ते ही काँटा चुभने से घोड़ा भड़क कर सवार को ज़मीन पर पटक दे। हेली साहब के घोड़े के ज़ीन के नीचे भी एक ऐसा ही काँटा लगा दिया।

शेल्बी ने कई बार साम को पुकार कर कहा, "साम, इतनी देर क्यों हो रही है।"

साम कहने लगा, "सरकार, बड़ा बदमाश घोड़ा है। यह जल्दी ज़ीन धरने ही नहीं देता।"

यों ही धीरे धीरे समय बीतने लगा। इधर शेल्बी साहब की मेम ने साम को बुला कर कहा, "साम! दोनों घोड़ों के पैर में न जाने क्या हो रहा है, देखना बहुत दौड़ा कर हैरान मत करना।" साम को और अक़्ल चाहे हो या न हो, पर ऐसी बातें वह बड़ी फुर्ती से समझ लेता था। मेम साहब का मतलब वह बहुत शीघ्र समझ गया। साम को घोड़ा लाने में देरी करते देख कर हेली स्वयं अस्तबल में पहुँचा। साम और आन्डी को झटपट घोड़े पर चढ़ने को कह कर वह अपने घोड़े की पीठ पर चढ़ने लगा। पर उसका पीठ पर बैठना कहिए कि घोड़ा ऐसी ज़ोर से उछला कि वह धम्म से ज़मीन पर जा गिरा। घोड़ा हेली को पटक कर मैदान की ओर भागा। आन्डी साम तथा शेल्बी के दूसरे नौकर "अरे घोड़ा भागा" "पकड़ो, पकड़ो" चिल्लाते हुए घोड़े के पीछे दौड़ने लगे। इस तरह दोपहर का समय हो आया और दोपहर के बाद साम घोड़ा पकड़ कर हेली के पास लाया। हेली ने साम को डांट बतला कर कहा, "तू ने हमारा

तीन घण्टा योंही खो दिया । अव जल्दी घोड़े पर सवार होकर हमारे साथ चल ।"

साम वोला, "आपका घोड़ा पकड़ने में जो मुसीवत मुझे उठानी पड़ी, उसे मेरा जी ही जानता है, वेशी क्या कहूँ ! आप को वड़ी जल्दी जान कर ही मैंने इतनी मेहनत उठाई है । मेरी तो जान निकल गई । आप का काम था इसलिए कर दिया ; अगर दूसरे का होता तो कभी नहीं करता । पर अव विना पेट में दाना पड़े नहीं चला जायगा । घोड़े भी वहुत थक गये हैं । कोई खटके की वात नहीं है । इलाइजा तेज़ नहीं चल सकती है, भोजन के वाद चलने पर भी उसे चुटकी वजाते पकड़ लेंगे ।

इसी समय शेल्वी साहव की मेम हेली के पास आ कर वड़ी नम्रता से वोलीं, "महाशय ! दोपहर हो चली है, अव विना खाये, भूखे प्यासे जाना ठीक न होगा । कृपा करके आज आप हमारे ही यहाँ भोजन कीजिए ।" शेल्वी साहव की मेम हेली सरीखे नर-पिशाच से वात तक करने में घृणा करती थीं । पर आज उसके साथ वैठ कर भोजन तक करने में घृणा नहीं की । हेली व्यावहारिक कामों में अपने को वड़ा चतुर समझता था, पर स्त्री की चतुराई समझना कठिन काम है । "देवो न जानाति कुतो मनुष्यः ।" जो हेली संसार को चराता फिरता है, आज वही स्त्री के फन्दे में फँस कर स्वयं ठगा गया !

सातवाँ परिच्छेद ।

माता की अद्भुत क्षमता ।

हेली मिसेज़् शेल्बी के अनुरोध पर भोजन के लिए ठहर गया। पर इधर इलाइज़ा कदम बढ़ाती चली जा रही थी। इलाइज़ा की तात्कालिक दुर्दशा सोच कर पत्थर का हृदय भी पिघल जाता है। इस संसार में इलाइज़ा का कोई नहीं है। उसका पति घोर अत्याचार से तङ्ग आ कर भागने की फ़िक्र कर रहा है। पर न भागने पाया तो आत्म-हत्या कर लेगा। अब इस जन्म में इलाइज़ा को पति के दर्शन की आशा नहीं है। यह विश्व संसार इलाइज़ा के लिए अपार समुद्र है। उसे मालूम नहीं कि सांसारिक घटना-स्रोत उसे किधर बहा ले जायगा। इस संसार-समुद्र में उसके लिए 'नाव न बोहित बेड़ा' कोई अवलम्ब, कोई ठिकाना नहीं है। वह पुत्र को गोद में उठा कर विशाल संसार-सागर में कूद पड़ी है। पर सब प्रकार से आश्रय-शून्य होते हुए भी उसके जीवन का एक लक्ष्य बना हुआ है। कोई ठिकाना न रहने पर भी यदि मनुष्य के जीवन का कोई लक्ष्य रहे तो उस लक्ष्य तक पहुँचने के उद्योग में वह किसी कष्ट को कष्ट नहीं समझता। किसी यन्त्रणा को यन्त्रणा नहीं मानता। पर जिसके जीवन का कोई लक्ष्य नहीं है, कोई उद्देश्य ही नहीं है, ऐसा मनुष्य संसार में पग पग पर कष्टों का अनुभव करता है, सब प्रकार के भोग उसके लिए दुर्भोग हो जाते हैं।

दास-व्यवसायी के हाथ से सन्तान की रक्षा करना ही इलाइज़ा

के जीवन का एक मात्र लक्ष्य है। जीवन की इस उद्देश्य-सिद्धि के लिए उसके सामने कोई भी कष्ट, कष्ट नहीं है। किसी दुःख की उसे परवा नहीं है। वह दुबली पतली इलाइजा छः बरस के बालक को गोद में लिये हुए बेतहाशा चली जा रही है। बालक पैदल चलने में समर्थ था; पर उसके छिन जाने के भय की भावना उसके मन में ऐसी जम गई थी कि, एक बार भी बालक को गोद से नीचे न उतारा। कुछ दूर चलती और पीछे घूम घूम कर देखती जाती कि कोई आता तो नहीं है। कहीं पेड़ के पत्ते गिरने की आहट सुनते ही चौंक पड़ती। और पीछे फिर कर देखती हुई, "ईश्वर रक्षा करो, ईश्वर रक्षा करो" कह कर चिल्ला उठती। बालक ने एक बार आँखें खोली थीं, पर इलाइजा ने उससे कहा, "चुप रह, नहीं पकड़ा जायगा।" बालक तत्काल उसके गले से चिपट कर निद्रित सा हो रहा। स्नेह की भी कैसी विचित्र शक्ति है! बालक के अङ्ग-स्पर्श से इलाइजा के शरीर में नया बल आ गया। मानसिक अवस्था मनुष्य को कितना बलवान् बना सकती है इसका अनुमान नहीं किया जा सकता। जो लोग यह कहते हैं कि शारीरिक बल के बिना कोई काम नहीं हो सकता वे भूलते हैं। मानसिक शक्ति और मानसिक तेज काम पड़े निर्बल को भी अत्यन्त सबल बना देते हैं। शरीर पर मन का अपूर्व प्रभाव और प्रभुत्व होता है। मानसिक बल कभी-कभी रक्तमांस और नसों को ईस्पात की भाँति सख्त और मज़बूत बना देता है। वीरशिरोमणि नेपोलियन का अपूर्व वीरत्व इसी मानसिक बल का फल था। मानसिक बल के बिना शरीर अनायास सुस्त पड़ जाता है। मानसिक बल सदैव शरीर में बिजली का सा काम करता है और शरीर में तेज बनाये रखता है। जो मानसिक बल से हीन है वही वास्तव में निर्बल है।

इलाइजा शरीर से दुर्बल थी, पर उसमें मानसिक बल की कमी न

थी । वह बालक को गोद में लिये हुए तेज़ चाल से लग भग दस बारह कोस चली गई । चण भर भी कहीं ठहर कर दम न लिया । लक्ष्य-साधन की प्रबल इच्छा ने ही इस अबला के हृदय को सबल बना दिया था। उसके आन्तरिक उत्साह ने ही उसके शरीर में यह अलौकिक पराक्रम ला दिया था । यों ही चलते चलते रात बीत चली । सड़क पर चारों ओर घोड़े-गाड़ी दौड़ने लगीं । इलाइज़ा ने यह सोच कर कि अब लड़के को गोद में लिये रहने से उस पर शायद लोग घर छोड़ कर भागी हुई होने का सन्देह न करें, उसने लड़के को गोद से उतार दिया और अपने कपड़े दुरुस्त कर लिये । बालक उसके पीछे पीछे जाने लगा । कुछ दूर पर एक बाग़ था, वहीं जाकर वह अपने साथ लाई हुई कुछ भोज्य वस्तुयें बालक को खिलाने लगी । पर स्वयं कुछ न खाया । बालक देख रहा था कि उसकी माता ने कुछ नहीं खाया ।

उस बालक ने स्वयं अपने हाथों से माता के मुँह में भोजन डाल दिया । पर इलाइज़ा से खाया नहीं गया । दुःख, भय और त्रास से उसका कण्ठ सूख गया था । बालक ने खाने को कहा । तब वह बोली, "बेटा ! जब तक तुझे किसी सुरक्षित स्थान पर लेकर नहीं पहुँचती हूँ तब तक मैं कुछ नहीं खा पी सकूँगी । बालक के खा लेने पर इलाइज़ा जिधर—ओहिओ नदी की ओर—जा रही थी उधर ही फिर चली । वह सोच रही थी, मानों, ओहिओ नदी पार करते ही उसकी सारी आशङ्कायें दूर हो जायँगी । धीरे धीरे और भी दो तीन स्थानों को लाँघ कर वह एक बिलकुल अनजान जगह में जा पहुँची । यहाँ किसी के सन्देह करने की अधिक सम्भावना न रही । इलाइज़ा अफ्रीकन दास-दासियों की भाँति काली न थी । वह अँगरेज़ पिता के वीर्य से पैदा हुई थी । देखने में वह कोई अँगरेज़ कुल-कामिनी सी जान पड़ती थी । इससे इस

अनजान स्थान में इलाइजा की विपदाशङ्का कुछ कम हो गई । पर अभी तक उस विपद की आशङ्का ने ही उसके शरीर में ताक़त दे रक्खी थी । आशङ्का घटने पर उसका शरीर भी क्रमशः शिथिल पड़ने लगा । धीरे धीरे भूख-प्यास और थकावट ने उसे मजबूर कर दिया । यहाँ किसी के पहचानने का खटका नहीं है, यह सोच कर, उसने निकट की एक दूकान में जाकर कुछ खाने को लिया और बालक के साथ खा-पीकर, फिर चलने लगी । सूर्यास्त से कुछ पहले वह ओहिओ नदी-तट के एक गांव में जा पहुँची । तट पर जाकर चाहभरी आँखों से वह बारम्बार ओहिओ नदी के पार की ओर देखने लगी । अब उसे केवल नदी पार करने की फ़िक्र पड़ी । बरफ़ गल गई थी । नाव बिना नदी पार होना असम्भव था । किनारे के पास थोड़ी ही दूर पर एक सराय दिखाई दी । वहाँ एक बुढ़िया बैठी बैठी कुछ काँटे-चम्मच साफ़ कर रही थी । इलाइजा ने बुढ़िया से पूछा कि पार जाने के लिए नाव मिलेगी या नहीं । बुढ़िया बोली, "नाव मिलने की कोई सम्भावना नहीं है।" इससे इलाइजा सर्वथा निराश हो गई। वृद्धा ने उसकी यह दशा देख कर पूछा, "क्या उस पार किसी गाँव में तुम्हारा कोई कुटुम्बी बीमार है ?" इलाइजा ने कहा, "कल मुझे ख़बर मिली कि मेरे एक बच्चे की दशा बहुत ख़राब है, इसीसे मैं घबराई हुई जा रही हूँ । यदि आज नदी पार न कर सकी तो उससे भेंट होने में भी सन्देह है ।"

बुढ़िया ने उसकी यह कातरोक्ति सुन कर एक पुरुष को बुलाया और कहा, "सालोमन, भैया ज़रा देखना तो नदी पार करने के लिए कोई नाव है क्या ?"

सालोमन ने कहा कि आज पार होने की आशा नहीं है । कल कोई नाव मिल जा सकती है । इसके बाद इलाइजा बुढ़िया के कहने

पर रात वहीं बिताने को राज़ी हो गई। और उसी सराय की एक कोठरी में जाकर बालक को एक तरफ़ सुला दिया और आप स्वयं उसकी बग़ल में बैठ कर चिन्ता करने लगी।

इधर शेल्बी साहब के घर भोजन करने के लिए ग़ुलामों के रोज़गारी हज़रत हेली साहब फँस गये। शेल्बी साहब की मेम ने क्लोई को बहुत शीघ्र भोजन बना कर लाने की आज्ञा दी। पर आज अजीब हालत है, क्लोई से झटपट रींधा ही नहीं जाता है। कभी चूल्हे की आग बुझ जाती है तो कभी बनती हुई चीज़ ही बिगड़ जाती है और वह फिर दोबारा बनानी पड़ती है। यों ही बड़ी गड़बड़ होने लगी। इधर शेल्बी साहब भोजन की शीघ्र तैयारी के लिए आदमी पर आदमी भेज रहे थे। एक दास आकर बोला कि हेली साहब देर देख कर बहुत घबरा रहे हैं। क्लोई झुँझला कर बोली—"घबड़ा रहे हैं तो मेरी बला से, चूल्हे भाड़ में जायँ, हम क्या करें।" वहाँ जैक नाम का एक दास बैठा था। वह बोला—"वाह, बस चूल्हे ही में ? वह यम के यहाँ जाने को छटपटा रहा है। उसे अभी नरक की हवा खानी पड़ेगी।" क्लोई ने फिर कहा—"उस हरामज़ादे के लिए नरक ही ठीक है; वह सैकड़ों ग़रीबों के गले पर छुरी फेरता है। वह राक्षस, बच्चे को ज़बरदस्ती मा की गोद से छीन लेता है। स्त्री को स्वामि-हीन और शिशु को पितृ-हीन करता है। ईश्वर क्या अन्धे हैं। उस पापी को अवश्य नरक की भयंकर आग में तड़पना पड़ेगा।" जैक बोला—"चाची, तू बहुत ठीक कहती है, उस नालायक़ की लाश को गीदड़ और कुत्तों से नुचते देख कर मैं बड़ा ख़ुश होऊँगा।"

इसी बीच में टाम वहाँ आ पहुँचा। उसके हृदय में अलौकिक धर्म की धारा बहती थी। टाम क्लोई से कहने लगा—"हमारी क़िस्मत

में जो बदा था सो हुआ । इसके लिए किसी दूसरे आदमी को कोसना और हृदय में उसके विरुद्ध भाव पोसना अच्छा नहीं ।"

टाम ने अपनी स्त्री से बात-चीत आरम्भ की ही थी कि एक नौकर टाम को शेल्बी साहब के पास बुला ले गया । शेल्बी ने हेली की ओर दिखा कर कहा—"टाम, मैंने इनके हाथ तुम्हें बेंचा है । यह अभी किसी काम से जा रहे हैं । आज तुम्हें नहीं ले जा सकेंगे । दो चार दिन बाद आ कर ले जायँगे । जब यह लेने आवें तब तुम तुरन्त इनके साथ चले जाना । नहीं तो—तुम्हारे तुरन्त न जाने से अपनी लिखा-पढ़ी के अनुसार इनको मुझे एक हज़ार हरजाना देना पड़ेगा । देखो इस बात में ग़ल्ती मत करना ।"

टाम बोला—"आपकी सब आज्ञा मेरे सिर माथे है । मैं आठ बरस का, आपके यहाँ आया था । आपकी माता आपको एक वर्ष का मुझे सौंप कर बोलीं 'टाम, यही भविष्य में तुम्हारा मालिक होगा; इसे यत्न से पालना ।' उस समय से मैंने आपको गोदी में खिलाया, आपको पाला-पोसा और आपका सारा काम किया । पर कहिए, आज तक क्या कभी किसी काम में मैंने आपको धोखा दिया है ?"

टाम की यह बातें सुन कर शेल्बी का सिर झुक गया । वह आँखों में पानी भर कर कहने लगे—"टाम तुमने सर्वदा बड़ी ही सचाई से मेरा काम किया है; पर मुझे फँस जाने के कारण विवश होकर तुम्हें बेंचना पड़ा ।

शेल्बी साहब की मेम ने कहा—"टाम, तुम घबराना मत, मैं रुपया इकट्ठा करके फिर तुम्हें ज़रूर इन से ख़रीद लूँगी ।"

साथ ही मेम ने हेली से भी कहा—"आप टाम को जिसके हाथ बेंचें, कृपया उसका नाम-पता हमें अवश्य लिख भेजिएगा ।"

हेली ने कहा, "मैं तो दस रुपयों के फ़ायदे के लालच से काम करता हूँ, शायद कुछ दिनों वाद फिर आप ही के हाथ वेंच दूँ ।"

शेल्बी साहव की मेम हेली सरीखे नर-पिशाच से वात करने में बड़ी घृणा करती थीं। फिर भी आज वह अनेक विषयों पर उससे वातें करने लगीं। किसी तरह समय विताना ही इस आलाप का उद्देश्य है।

दोपहर को जव दो वज गये तव साम और आन्डी घोड़े लेकर दरवाज़े पर आये। शेल्वी और उनकी मेम साहव से विदा माँग कर हेली साहव इलाइजा को पकड़ने चले। घोड़े पर चढ़ते समय हेली ने साम से पूछा—"क्या तुम्हारे मालिक के यहाँ शिकारी कुत्ते हैं ?" साम ख़ूव जानता था कि एक भी शिकारी कुत्ता नहीं है, लेकिन फिर भी दुष्टता से समय नष्ट करने के लिए वोला—"हाँ हमारे यहाँ वहुत कुत्ते हैं, आप ठहरिए, मैं अभी लाता हूँ।" और फिर कई पालतू कुत्ते लाकर उसके सामने पेश किये। हेली उन्हें देख कर वहुत जला और वोला—"अरे गदहे, यह कुत्ते हम नहीं चाहते। भागे हुए दासों को पकड़ने के लिए शिकारी कुत्ते हुआ करते हैं। तू लौंडे वड़ा वदमाश है। चल तेरे कुत्ते लाने की दरकार नहीं है।" थोड़ी दूर जाकर हेली ने कहा—"सीधा ओहियो नदी की ओर चला चल।"

साम ने वड़ी गम्भीरता से मुँह वना कर कहा—"जनाव, नदी को दो रास्ते गये हैं, एक तो अच्छा नया ख़ासा रास्ता है और दूसरा ख़राव हो जाने से अव उधर से वहुत लोगों की आवा-जाही नहीं है। वतलाइए, आप किस रास्ते से चलना चाहते हैं ?"

साम की दो रास्तों की वात सुन कर आन्डी की हँसी न रुकी। वह खिलखिला कर हँस पड़ा। पर साम फिर वड़ी गम्भीर सूरत वना

कर आन्डी को डाँट कर कहने लगा—"आन्डी, तू बड़ा बेवकूफ़ है। तू वक्त, वे वक्त, कुछ भी नहीं समझता है। यह भी क्या हँसने का वक्त है; जिसमें हेली साहब का काम हो जाय यही देखना चाहिए।" हेली से फिर कहने लगा—"जनाव, मालूम होता है, इलाइजा ख़राव रास्ते से ही गई है, क्योंकि उधर बहुत लोगों की चलाचल नहीं है। लेकिन हम लोगों को उस रास्ते से जाने में सुभीता न होगा। वह रास्ता जगह जगह से कट गया है। इससे चलिए हम लोग इस नये रास्ते से ही चलें। इस अच्छे रास्ते से जाने में ही ठीक पड़ेगा।"

हेली साम की ये सब बातें सुन कर सोचने लगा कि, इलाइजा जनशून्य रास्ते ही से भागी होगी, पर यह साला बड़ा धूर्त्त है। पहले भूल से उस रास्ते का नाम ले गया, अब शठता करके मुझे दूसरे रास्ते से ले जाना चाहता है, इससे पुराने रास्ते से ही जाना ठीक होगा। सचमुच इस संसार में वहमी (सन्देही) आदमी एकाएक झूठ सच का निर्णय नहीं कर सकते हैं। हेली ने वीहड़ (उजड़े हुए) रास्ते से ही जाना ठान कर साथियों को उसी ओर चलने की आज्ञा दी। सामने बहुत मना किया "साहव! इस रास्ते से मत चलिए। ज़रूर कहीं न कहीं भटक जायँगे। रास्ता साफ़ नहीं है। जगह जगह कट गया है।"

अब तो साम की इन वातों से हेली का सन्देह और भी वढ़ गया। वह साम को डपट कर वोला, "हम तेरी वात नहीं सुनना चाहते। इसी रास्ते से चलना होगा।"

असल में यह जन-शून्य मार्ग बहुत दिन हुए वन्द होगया था। साम यह वात ख़ूव जानता था। उसकी चालाकी न समझ कर हेली ने उसी मार्ग से जाने की ठानी है, यह देख कर वह मन ही मन ख़ुश होकर हँसने लगा। थोड़ी दूर चला और फिर वोला, "अजी

साहब ! यह रास्ता बड़ा ख़राब है। इससे चलना दुश्वार मालूम होता है।"

हेली को उसकी बातों से अकथनीय क्रोध हुआ और वह कहने लगा—"तू चीं चपड़ न कर। तेरे कहने से हम रास्ता नहीं छोड़ेंगे।"

इस पर साम चुप रह गया और अत्यन्त आनुगत्य दिखा कर बोला, "तो जिधर से आप की इच्छा हो चलिए।" यों ही चलते चलते साम और आन्डी बीच बीच में व्यर्थ फ़िज़ूल चिल्लाने लगते—"वह इलाइजा है"—"देखो देखो कपड़ा देख पड़ता है"—"वह इलाइजा देख पड़ती है;" इनकी चिल्लाहट से घोड़ा बारम्बार चौंकता था और मुफ़् में देर होती थी। अन्त में क़रीब एक घण्टे के बाद वे एक लम्बे चौड़े मैदान में पहुँचे।। आगे बढ़ने का रास्ता ही न था, जो था वह वहीं ख़तम हो गया था। तब साम ने हेली से कहा, "देख लीजिए साहब, मैंने आप से पहले ही कहा न था कि यह रास्ता बन्द हो गया है। पर आपने मेरी बात सुनी ही नहीं। अपने यहाँ के राह-घाट का हाल हम लोगों को अच्छी तरह मालूम है। आप दूसरी जगह के आदमी ठहरे। आप को इन सब बातों का क्या पता ?"

हेली क्रुद्ध होकर कहने लगा, "तू साले बड़ा बदमाश है। तूने यह सब जान सुन के किया है।"

साम ने यों डाँट खाकर धीरे धीरे कहा, "साहब, मैंने तो आप से पहले ही इस रास्ते चलने को मना कर दिया था, पर आप नहीं माने तो मैं क्या करूँ। इसमें मेरा क्या क़सूर है ?"

अब हेली क्या कहे। असल में साम ने दो बार खुल्लमखुल्ला इस रास्ते जाने को मना किया था। अब वे घोड़े घुमा कर उस अच्छे रास्ते की ओर जाने को वेग से बढ़े। सन्ध्या न हो पाई थी कि वे उसी सराय के सामने, जिसमें इलाइजा ठहरी थी, आ पहुँचे।

इलाइजा को यहाँ पहुँचे एक ही घण्टा हुआ था। अपने बच्चे को सुला कर वह खिड़की में खड़ी होकर नदी की ओर देख रही थी। इसी समय साम की नज़र उस पर जापड़ी। हेली और आन्डी साम के पीछे थे। उन्हें इलाइजा नहीं दिखाई दी। साम ने बदमाशी से हवा में अपनी टोपी फेंक दी और ज़ोर से चिल्लाने लगा—"मेरी टोपी उड़ गई" "ओ, मेरी टोपी उड़ गई" यह चिल्लाना इलाइजा को सुन पड़ा। उसने इधर आँखें घुमाते ही साम और हेली को देखा एवं तुरन्त निद्रित बालक को गोद में लेकर उछलती हुई पीछे का दरवाज़ा खोल कर भागी। हेली ने देख लिया। बस तत्काल घोड़े से उतर कर बाघ की तरह उसके पीछे लपका। उधर इलाइजा के उस थके हुए शरीर में अकस्मात्, मानों हज़ारों हाथियों का बल आगया। वह बिजली की भाँति तड़प कर निकट की ओहिओ नदी में कूद पड़ी। जल पर उस समय बर्फ़ तैर रही थी। बर्फ़ पर कूदते ही बर्फ़ सहित वह स्रोत के साथ बहने लगी। उसके बोझ से बर्फ़ के टुकड़े गलने लगे। एक के गलने पर वह कूद कर दूसरे टुकड़े पर जा पहुँचती। यों ही एक खंड से दूसरे पर, कूदती हुई जल को लाँघ कर जाने लगी। उसके जूते टुकड़े टुकड़े होगये। बर्फ़ की रगड़ से छिल कर उसके दोनों पैरों से ख़ून बहने लगा। पर बालक को उसने ऐसी दृढ़ता से पकड़ रक्खा था कि एक बार भी वह गोद से छूटने न पाया। बहुत थोड़ी देर में ही इलाइजा नदी को पार करके दूसरे किनारे पर पहुँच गई। वहाँ उसे एक आदमी खड़ा दिखाई दिया। उसने इलाइजा को हाथ पकड़ कर किनारे पर चढ़ा लिया और पूछने लगा, "तुम कौन हो? तुम तो बड़ी बहादुर जान पड़ती हो!" इलाइजा ने आवाज़ से इसे पहचान लिया। यह शेल्बी साहब के घर के पास ही कहीं खेती करता है। अतएव इलाइजा ने उसका नाम लेकर कहा, "सिम! मुझे बचाओ, मुझे बचाओ।

बता दो मैं कहाँ छिप कर रह सकती हूँ। मेरे इस बच्चे को मालिक ने बेच दिया है; ख़रीदार इसे पकड़ने आया है। सिम ! तुम भी बाल-बच्चे वाले हो।"

सिम ने कहा, "मुझसे जहाँ तक बनेगा मैं तुम्हारा उपकार करूँगा। तुम्हें कोई खटका नहीं, निश्चिन्त हो जाओ। तुम निकट के इस ग्राम में चली जाओ। सामने वह जो सफ़ेद घर दिखाई देरहा है, वहाँ जाने से तुम्हें शरण मिलेगी।"

इस पर इलाइजा सिम को हृदय से आशीर्वाद देती हुई सन्तान को छाती से लगाये हुई उसी घर की ओर चली।

इलाइजा के चले जाने पर सिम सोचने लगा कि, इसे मैंने पकड़ा नहीं, उलटा भागने का रास्ता बता दिया, इससे शेल्वी साहब कहीं मुझ पर नाराज़ न हो जायँ। बला से, हों जायँगे तो क्या है। इस आफ़त की मारी स्त्री पर क्या कोई सख़्ती कर सकता है। सिम अपढ़ गँवार है, उस पर बनावटी धर्म का प्रकाश नहीं पड़ा है। उसके हृदय में ऐसे भाव का आना असम्भव नहीं है। पर यदि कहीं वह पढ़ा लिखा वकील होता तो देश प्रचलित क़ानून के गौरव की रक्षा के लिए ज़रूर इलाइजा को पकड़ कर पुलिस के हवाले करता।

हम सिम और इलाइजा से विदा होकर अब पाठकों को हेली की ख़बर सुनाना चाहते हैं। हेली इलाइजा को जल्दी जल्दी बर्फ़ पर से जाते देख कर भौंचक्का सा रह गया, साम तथा आन्डी से बोला, "अरे उसके सिर भूत सवार है। देखो ठीक बिलइया की तरह कूदती कूदती जा रही है।"

हेली की बात सुन कर दोनों हँस पड़े। इस पर हेली दोनों को कोड़े लगाने के लिए उद्यत हुआ! वे ज़रा हट कर बोले, "साहब हमारा काम हो गया, अब हम जाते हैं। घोड़ा लेकर अधिक दूर जाने

से मेम साहब रुष्ट होंगी। यहाँ और ठहरने की ज़रूरत नहीं देख पड़ती" इतना कह कर वह दोनों हँसते हुए वहाँ से चल दिये।

आठवाँ परिच्छेद ।

पकड़ने वालों की तैनाती ।

सन्ध्या के पहले ही इलाइज़ा नदी पार हो कर दूसरे किनारे पर पहुँच गई। धीरे धीरे अन्धेरा छा गया, इससे अब वह हेली को दिखाई न पड़ी। हेली निराश होकर सराय में वापस चला आया। उस घर में अकेला बैठा बैठा अपने भाग्य को कोस कर मन ही मन कहने लगा, इस संसार में न्याय नहीं है। संसार में यदि न्याय होता तो मेरे इतने रुपयों का नुक़सान क्यों होता। इसी समय वहाँ दो आदमी और आ गये। उनमें से एक बड़ा लम्बा था। उसके चेहरे से निर्दयता टपकती थी, जान पड़ता था मानों नरक का द्वारपाल है। उसके कपड़े लत्ते और चाल चलन भी इसी बात की गवाही दे रहे थे। हेली उसे देख बहुत सन्तुष्ट हुआ और बोला—"लोकर! आज तो तुम बड़े मौक़े से आये।" इस आदमी का नाम टाम लोकर है। पहले हेली इसके साझे में काम करता था। लोकर का दूसरा साथी क़द का नाटा था। उसका नाम था मार्क। हेली ने उसे देख कर पूछा—"लोकर! वह आदमी तुम्हारा साझीदार जान पड़ता है।" इस पर लोकर ने हेली और मार्क, दोनों का आपस में परिचय करा दिया। फिर वह तीनों व्यवस्थापक सभा के मेम्बरों की भाँति टेबुल घेर कर बैठ गये। पहले हेली ने अपनी दु:ख-कहानी बड़े करुण शब्दों में आरम्भ की। बार बार वह अपने भाग्य को कोस कर कहने लगा—"औरत की जाति बड़ी नामाकूल होती है। उन्हें न्यायान्याय का

ज़रा भी विचार नहीं होता, हमने कितने रुपये देकर तो छोकड़े को ख़रीदा। और वह औरत एक छोकड़े की माया न तज सकी। देखो उस औरत का कितना अन्याय है? वह छोकड़े को लेकर भाग गई।"

हेली की बातें सुन कर लोकर का साथी मार्क बड़ी गम्भीरता से अपना मन्तव्य प्रकट करने लगा—"आज कल कृषि, वाणिज्य, शिल्प और विज्ञान इत्यादि सभी विभागों में नये नये आविष्कार होते हैं। यदि सन्तान की मोहमाया न रखने वाली एक जाति की स्त्रियों के पैदा करने की कोई कल निकल आवे तो उससे संसार का बड़ा उपकार हो सकता है। और सब भाँति के आविष्कारों की अपेक्षा ऐसी स्त्रियाँ पैदा करने का आविष्कार सब से अधिक उपयोगी होगा; इसमें कोई सन्देह नहीं है।"

हेली ने हृदय से इसका अनुमोदन करके कहा—"तुम बहुत ठीक कहते हो। क़सम है, ऐसी औरतों के पैदा हुए बिना तो रोज़ी रोज़गार करना दुश्वार है। छोटे छोटे बच्चे माताओं के सिर का एक बोझ ही हैं। भाई तुम्हीं कहो, बच्चों से औरतों को क्या लाभ होता है? कुछ भी नहीं। लेकिन वह ससुरी बच्चों को छोड़ना नहीं चाहती हैं। वह यह नहीं समझतीं कि दुःख देने के सिवा बच्चे उनका कोई फ़ायदा नहीं करते। ख़ास कर ख़रीदारों के हवाले चुपचाप लड़कों को न कर देने से कितना पाप लगता है यह उन अलहड़ों के दिमाग़ में नहीं बैठता।"

हेली की बात समाप्त होते ही मार्क फिर कहने लगा—"भाई! पिछले साल मैंने एक रोगी लड़के सहित एक दासी मोल ली थी। सोचा था रोगी लड़के को मा की गोद से लेकर बेचने में उसकी मा कोई आपत्ति नहीं करेगी। लेकिन स्त्रियों की माया अनायास समझ में नहीं आती। रोगी लड़कों पर स्त्रियों का स्नेह और अधिक

होता है । भाई, क्या कहूँ, उस रोगी लड़के के बेंचने के थोड़े ही दिनों बाद उसकी मा भी मर गई ।"

मार्क की यह बात सुनते ही हेली साहब बोले—"तुम्हारे सर की क़सम भाई, सच कहता हूँ, हम में भी एक बार ऐसी ही बीती थी । हमने एक बार एक अन्धा छोकड़ा और उसकी मा को ख़रीदा था । ख़रीदने के वक्त छोकड़े के अन्धे होने का पता नहीं था, पीछे से पता चलने पर उसे दूसरी जगह बेंच दिया । फिर क्या था ? उसकी मा ससुरी उसे गोद में लेकर नदी में डूब कर मर गई । हमारे सब रुपये पर पानी फिर गया ।"

टाम लोकर अब तक ब्रान्डी की बोतल में ही मस्त था । अब तक उसे बातें करने की फ़ुर्सत न मिली थी । जब बोतल ख़ाली कर चुका तब बोला—"भाई ! मेरे काम का तो ढङ्ग ही निराला है । लड़का लड़की, पुरुष स्त्री, कोई हो, मैं पहले से ही कह रखता हूँ कि बेचने के समय ज़रा भी रोना पीटना सुना कि मारे बेंतों के चाम खींच लूँगा । युवतियों को ख़ास तौर से समझा देता हूँ कि तुम्हारी गोद के बच्चे पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है । मैंने रुपया देकर मोल लिया है । जो जी चाहेगा करूँगा । इससे फिर किसी को चूँ करने का साहस नहीं होता । और अगर कोई हरामज़ादी ऐसी ही निकली कि समझाने पर भी रोने पीटने से बाज़ न आई तो मेरे ये मज़बूत हाथ उसे दुरुस्त करने के लिए तैयार रहते हैं ।" इतना कहते कहते उसने टेबुल पर इस ज़ोर से हाथ पटका कि टेबुल टुकड़े टुकड़े हो गया ।

हेली ने कहा—"लोकर, हंटरों से यों ख़बर लेने को हम कोई तुम्हारी अक़्लमन्दी का काम नहीं समझते । यह बातें कोई कारबार की नहीं हैं । मारना पीटना समझदार लोग कभी नहीं करते । आत्मा सब में है । चाम उधेड़ने में तुम्हारी और उसकी सब की आत्मा में

बराबर दर्द होता है। हमको इस बात का तजरबा है कि बिना मार-पीट के अपने कार बार में बेशी फ़ायदा होता है।"

हेली की यह बात लोकर को बहुत चुभी। उसने कहा—"अरे बच्चू, मेरे सामने बहुत आत्मा आत्मा मत बको। तेरी आत्मा का हाल मैं ख़ूब जानता हूँ। तेरे शरीर को पीस कर चलनी में छान डालने से भी आत्मा का एक कण नहीं निकलेगा।"

हेली ने मुँह बना कर कहा—"लोकर, इतने झुँझलाते क्यों हो? बाजबी बात कहने से तुम जल कर ख़ाक हो जाते हो।"

लोकर और भी बिगड़ कर बोला—"तेरी धर्म्म की बातें मैं नहीं सुनना चाहता। तू मुझे उपदेश देने चला है? मैं तेरी नस नस पहचानता हूँ। तू अपने मन में अपने को बड़ा धार्मिक लगाता है। लेकिन मुझे क्या ख़बर नहीं कि तेरा धर्म और भलमनसी लोगों के ठगने के लिए एक तरह का जाल है। लोगों को ऋण देते समय तू बड़ी भलमनसी दिखा कर मीठी मीठी बातें बनाता है और जब रुपया वसूल करने का वक़्त आता है तब तू गला घोंट कर आदमी को मार डालता और उसका सर्वस्व हजम कर जाता है। यही न तेरी आत्मा है?"

बात बढ़ती देख टामस लोकर के साथी मार्क ने दोनों हाथ फैला कर कहा—"भाई, इन झगड़े झंटों में क्या रक्खा है। काम की बात करो। सब के अपने अलग अलग मत होते हैं। हेली का अच्छापन उसकी दो ही चार बातों से मुझे मालूम हो गया। अब हेली ने जो बात कही है उसे झटपट तै कर डालो।" फिर हेली से बोला—"भाई! उस स्त्री की पकड़ाई क्या दोगे?"

"उस औरत से मेरा क्या मतलब, मैं तो सिर्फ़ लड़के को चाहता हूँ। उस लड़के को ख़रीद कर ही तो हमें बेवकूफ़ बनना पड़ा है।"

लोकर ने कहा—"तुम बच्चू, आज के नहीं हमेशा के बेवक़ूफ़ हो।"

मार्क—लोकर, तुम फिर टायँ टायँ करने लगे। इन सब बखेड़ों से क्या मतलब? मतलब से मतलब, देने लेने की बातें करो।

हेली—हाँ बोलो ना, तुम लोग कितना चाहते हो? हम कहते हैं, लड़के को बेच कर जो मुनाफ़ा मिलेगा, उसमें से दस रुपया सैकड़ा तुम लोगों को दे देंगे।

लोकर—अरे, अपनी ये सब चालाकियाँ रहने दीजिए, हमसे नहीं चलेंगी। तुम्हीं बड़े उस्ताद हो, उसकी खोज में सिर मारेंगे, और न पकड़ पाया तो हमारी सारी मेहनत मिट्टी में मिली? पहले हम लोगों की मेहनत के पचास रुपये हाथ पर धरो तब बात करो।

मार्क—इसमें क्या कहना है। यह तो क़ायदा ही है—कहीं बिना (Rtaining fee) रिटेनिंग फ़ी अर्थात् बयाना दिये कोई काम होता है? मेरा तो वकालत का पेशा ही ठहरा, मैं यह सब ख़ूब जानता हूँ।

बड़ी दलील और हुज्जतों के बाद हेली ने उन लोगों के हाथ में पचास रुपये सौंपे। मार्क और लोकर ने पलायनकर्तृ (भगोड़ों) के पकड़ने का बीड़ा उठाया। वकालत ही की भाँति यह पेशा भी उस समय बड़े गौरव का समझा जाता था। इनसे केवल रुपयों ही की आमद नहीं थी, यह पेशा देशहितैषिता और देशीय क़ानून के गौरव की रक्षा का समझा जाता था। अतएव उस काम का बीड़ा उठा कर उनके लज्जित होने का कोई कारण न था। हेली के रुपये लेकर वे नदी पार करने का सुयोग तकने लगे।

नवाँ परिच्छेद ।

वक्ता और वक्तृता ।

पाठक पढ़ चुके हैं कि हेली को ओहिओ नदी के किनारे छोड़ कर साम और आन्डी घोड़े लेकर घर की ओर लौट पड़े थे। राह में साम को बेतरह हँसी आ रही थी। उसने आन्डी से कहा, "आन्डी, तू अभी कल का लड़का है; आज मैं न होता तो तुझमें इतनी अक्ल कहाँ थी। देख दो रास्तों की बात बना कर मैंने हेली को दो घंटा कैसा हैरान किया। यह चाल चल कर दो घंटा देर न की जाती तो इलाइजा अवश्य पकड़ी जाती।"

इस प्रकार बातें करते हुए रात के दस ग्यारह बजे वे शेल्वी के घर पहुँच गये। घोड़ों के टाप की आहट कान में पड़ते ही मिसेज़ शेल्वी बड़े वेग से घर के बाहर आईं और उत्कण्ठा से बार बार पूछने लगीं, "हेली और इलाइजा कहाँ हैं?"

साम ने मुसकुराते हुए कहा, "हेली साहब मुँह लटकाये सरायँ में चित्त पड़े हैं।"

"और इलाइजा का क्या हुआ? वह कहाँ गई?"

"ईश्वर की कृपा से इलाइजा ओहिओ नदी पार करके कैनन प्रदेश में पहुँच गई है।"

"कैनन प्रदेश में पहुँच गई है।—सो क्या?" शेल्वी साहब की मेम ने समझा कि शायद इलाइजा की मृत्यु हो गई।

"मेम साहब, ईश्वर अपने भक्तों की रक्षा आप करता है। इला-

इजा ओहिओ नदी को मानों साक्षात् विमान पर चढ़ कर पार कर गई। मैंने अपनी ज़िन्दगी में ऐसी अद्भुत घटना कभी नहीं देखी।"
मिसेज़ शेल्वी से यों बातें करते करते साम के हृदय में धर्म-भाव लहराने लगा। वह इलाइजा के भागने के वृत्तान्त को धर्म-शास्त्र के भाँति भाँति के रूपकों से सजा कर कहने लगा। इतने ही में शेल्वी साहव ने स्वयं वाहर आकर साम से कहा, "घर के अन्दर जाकर मेम साहव से सव वातें कह" और मेम साहव से वोले, "तुम इतनी ववरा कर इस सर्दी में वाहर क्यों चली आई हो? सर्दी नहीं लग जायगी? घर में आकर सव वातें क्यों नहीं सुन लेती हो? तुम तो इलाइजा के लिए वेतरह घवरा रही हो!"

मेम साहव ने कहा, "आर्थर, मैं स्त्री हूँ, मेरे भी सन्तान है। सन्तान का स्नेह माता के सिवा दूसरा नहीं जान सकता। इलाइजा की कैसी दुर्दशा हुई और हम लोगों ने उसके साथ कैसा कठोर व्यवहार किया है, इसे सन्तान-वत्सल माता और पतिप्राणा स्त्री के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं समझेगा। सच पूछो तो इलाइजा के साथ ऐसी निर्दयता का व्यवहार करके मैं और तुम दोनों ईश्वर के सम्मुख पापभागी हुए हैं।"

"पाप! इसमें पाप की कौन सी वात है? हारे दर्जे उसे वेचना पड़ा, इसमें भी पाप है?"

"आर्थर, मैं तुमसे वहस नहीं करना चाहती। मैं अपने मन में भली भाँति समझती हूँ कि हम लोगों ने इलाइजा पर घोर अत्याचार किया है।"

इस पर शेल्वी ने मेम से और कुछ नहीं कहा, केवल साम से वोले कि अन्दर आ कर मेम साहव से इलाइजा के भागने का वृत्तान्त विस्तारपूर्वक कहे।

साम कहने लगा, "मैंने अपनी आँखों देखा है । इलाइजा विना नाव वेड़े के ओहिओ को पार कर गई । वर्फ़ के टुकड़े वह रहे थे, उन्हीं पर से होकर गई है । एक टुकड़ा डूवने पर झट से दूसरे पर कूद जाती थी । योंहीं वर्फ़ पर कूदती फाँदती हुई उस पार निकल गई । उधर एक आदमी ने हाथ पकड़ कर उसे किनारे पर कर लिया । पर उसके वाद अधिक अन्धेरा हो जाने के कारण और कुछ नहीं दिखाई दिया ।"

शेल्वी ने विस्मित होकर कहा, "यह वड़े आश्चर्य की वात है ! वहती हुई वर्फ़ पर से कूदती हुई चली गई ? मुझे तो विश्वास नहीं होता कि आदमी सहज में यों जा सकता है ।"

साम—हज़ूर, भला यों सहज में कैसे जाया जा सकता है ? ईश्वर की विशेष कृपा विना कोई इस प्रकार नहीं जा सकता । सुनिए, मैं संक्षेप में सव वृत्तान्त कहता न हूँ । आप सुन कर चकित हो जायँगे । साक्षात् ईश्वर के सहारे विना यह नहीं हो सकता । मैं, आन्डी और हेली साहव सन्ध्या के कुछ पहले ही ओहिओ नदी के इस पार पहुँचे । मैं सव के आगे आगे चलता था । वे दोनों कुछ पीछे थे । मैंने ही सवसे पहले इलाइजा को देखा । वह निकट की सराय के जंगलों के पास खड़ी थी । मैंने झूठ मूठ सर की टोपी फेंक दी, और हवा में उड़ी उड़ी करके ज़ोर से चिल्लाने लगा । ज़िन्दे की तो वात क्या इस चिल्लाहट से मुर्दा भी जाग सकता था । वस, इलाइजा हम लोगों की ओर देखते ही पिछवाड़े के दरवाज़े से भाग चली । हेली साहव की नज़र पड़ गई । वह उसके पीछे ऐसे लपके जैसे भेड़ के पीछे वाघ । इलाइजा ने जव देखा कि अव तो पकड़ी गई, कोई उपाय नहीं रहा, तो वह नदी में फाँद पड़ी, और वहती हुई वर्फ़ पर से उस पार निकल गई ।"

शेल्बी की मेम बड़े ध्यान से सब बातें सुन रही थीं। वह बोल उठीं, "भगवन् ! तुम्हारी महिमा अपार है। तुम्हें सहस्र बार धन्यवाद है। तुम्हारी ही कृपा से आज इलाइजा की जान बची।"

इतना कह कर फिर साम से पूछा, "इलाइजा का लड़का तो जीता है ?

साम बोला, "हाँ, हाँ वह जीता है। पर आज मैं न होता तो इलाइजा अवश्य पकड़ी जाती। ईश्वर भी बड़ा कारसाज़ है, अच्छे कामों के लिए वह कोई न कोई रास्ता निकाल ही तो देता है। आज सबेरे घोड़े कसने में उत्पात मचा कर हेली के दो घण्टे ख़राब किये और फिर राह में कम से कम उसे अढ़ाई कोस का बे फायदा चक्कर दिलाया और ऐसा हैरान किया कि उसे भी याद रहेगा। यह सब ईश्वर ही की कृपा समझनी चाहिए।"

शेल्बी साहब साम के मुँह से ईश-दया की यह व्याख्या सुन कर बहुत ही नाराज़ हुए और साम से कहने लगे, "फिर जो तू हमारे यहाँ रहते हुए ऐसा ईश्वर की विशेष दया का काम करेगा तो तेरी ख़ूब मरम्मत होगी। किसी से काम डाल कर इस प्रकार कपट करना बड़ा अन्याय है। मैं तुम्हारी ऐसी दुष्टता और धोखेबाज़ी के काम को कभी नहीं सराह सकता।"

मिसेज़ शेल्बी को अपने पक्ष में देख कर साम बड़ी गम्भीरता से कहने लगा, "हज़ूर ! आप या मेम साहब थोड़े ही ऐसा करती हैं। हम नौकर चाकर कभी कभी ऐसी दुष्टता किया करते हैं।"

साम के इस काम में मिसेज़ शेल्बी का भी हाथ था। अतः साम को वहाँ से शीघ्र हटाने के मतलब से मेम बोलीं, "तुम स्वयं ही समझते हो कि, ऐसी दुष्टता करना बुरा है; अतएव तुम्हारा दोष क्षन्तव्य है। तुम दोनों बहुत भूखे होगे। शीघ्र क्लोई के पास जाकर भोजन माँग लो।"

साम एक ख़ासा व्याख्यान-दाता था। शल्बी साहब जब किसी राजनैतिक सभा अथवा अन्य कहीं व्याख्यान सुनने जाया करते तो साम को साथ ले जाते थे। इस प्रकार साथ रहते रहते साम बहुत सी सभायें देख और कितने ही व्याख्यान सुन चुका था। कितनी ही जगहों में शल्बी साहब जब सभा-मण्डप में चले जाते तब साम अपनी मण्डली के दासों को लेकर बाहर दूसरी सभा किया करता, और उन में व्याख्यान दिया करता था।

इसी से उसकी वक्तृत्व-शक्ति बढ़ी चढ़ी थी। उसे मन ही मन इस बात का बड़ा दुःख रहा कि इलाइजा के भागने के सम्बन्ध में वह आज मनमानी स्पीच नहीं देने पाया। ईश्वर की विशेष करुणा की बात कहते ही शल्बी साहब ने धमका कर उसका उत्साह भङ्ग कर दिया। अब रसोईघर में जाते हुए वह मन ही मन सोचने लगा, बड़े दुःख की बात है कि ऐसा गुरुतर विषय बिना एक लम्बे व्याख्यान के योंही हाथ से निकला जा रहा है। अतः उसने निश्चय किया कि पाकशाला में दास-दासियों के सम्मुख इस विषय में अवश्य ही व्याख्यान दूँगा।

क्लोई काकी से साम की भोजन पर कभी कभी खटपट हो जाया करती थी। पर आज कड़ी भूख होने के कारण उसने मेल ही से काम लेना उचित समझा। इससे पाकशाला में पहुँच कर क्लोई को देखते ही उसके रंधन-कार्य की लम्बी-चौड़ी तारीफ़ करने लगा। साम के प्रशंसा-वाक्य क्लोई के कानों में सुधा ढालने लगे। घर में जितने प्रकार की भोज्य वस्तुयें थीं उसने सब में से कुछ कुछ साम को परोसा। इस संसार में आत्म-प्रशंसा सभी को भाती है। ऐसे आदमियों की संख्या इनी गिनी होगी—इस इनी गिनी के साथ भी शायद का पुछल्ला लगा है—जो आत्म-प्रशंसा नहीं सुनना चाहते, जिन्हें अपने ख़ुशामदपसन्द न होने का गर्व है, जो कहते हैं, हम ख़ुशामदियों

को अपने पास तक नहीं फटकने देते, उन्हें भी ख़ुशामद पसन्द है, यह सावित करने के लिए विशेष कष्ट उठाने की आवश्यकता नहीं है। आप एक वार उनसे कहिए, "अजी साहब ! आप को तो ख़ुशामद विलकुल ही पसन्द नहीं है, आप को भला कोई ख़ुशामदी अपनी बातों में क्या लावेगा।" निस्सन्देह इस ठकुरसुहाती से वह साहब तुरंत पानी पानी हो जायँगे। वास्तव में अपनी प्रशंसा किसी को बुरी नहीं लगती। लेकिन बात यह है कि जितने आदमी हैं उतनी ही तरह की ख़ुशामदें भी हैं, किसी को किसी ढङ्ग की ख़ुशामद पसन्द है और किसी को किसी ढङ्ग की।

साम जब भोजनागार में बैठ कर पेट-पूजा करने लगा तब सब दास-दासी वहाँ इकट्ठे होकर बड़े चाव से इलाइज़ा और उसके पुत्र के विषय में पूछताछ करने लगे। दास-दासियों से घर भरा हुआ देख कर साम के आनन्द की सीमा न रही और उसने एक लम्बी वक्तृता झाड़ने का दुर्लभ सुअवसर पाया। उसकी अपूर्व वक्तृत्व-शक्ति का इस प्रकार विकाश होने लगा—

"प्यारे स्वदेश-बन्धुओं ! देखो, तुम लोगों की रक्षा के लिए मैं प्रत्येक कठिन से भी कठिन कार्य में अग्रसर हो सकता हूँ। हम लोगों में से किसी एक पर भी यदि कोई अत्याचार करे तो समझना चाहिए—अनुभव करना चाहिए कि उसने हम सब पर अत्याचार किया है। तुम लोग अनुभव कर सकते हो कि इसके अन्दर एक प्रकार की गूढ़ नीति है। इसलिए प्राण देकर तुम लोगों की रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है।"

साम के यहाँ तक कहते ही आन्डी ने टोक कर कहा, "सबेरे तो तुम इलाइज़ा को पकड़वा देने को कहते थे ?"

आन्डी की बात सुन कर साम ने और अधिक गम्भीर बन कर

कहा, "आन्डी, इन सब गहरी बातों के समझने की अक्ल तुझ में नहीं है। तेरे सरीखे भोले भाले बालक के हृदय में केवल सद्भाव और सदिच्छा का प्रभाव हो सकता है। तू इन सब जटिल विषयों के नैतिक तत्त्व समझने के लायक़ नहीं है ?"

'नैतिक तत्त्व,' शब्द सुन कर आन्डी चुप हो रहा। पर साम की जीभ फिर डाकगाड़ी सी खटाखट चलने लगी।

"मैं सदा सोच समझ कर विवेक से काम लेता हूँ। विवेक ही मेरी बागडोर है। पहले मैंने देखा कि, शेल्बी साहब को इलाइजा का पकड़ा जाना अभीष्ट है; अतएव विवेक के अनुरोध से मैंने उसी के अनुसार कार्य करना निश्चय किया। फिर जब यह सुना कि मेम साहब ऐसा नहीं चाहतीं, तब मेरा विवेक दूसरे रास्ते चलने लगा। विवेक मेम साहब के पक्ष में रहने से अधिक लाभ की आशा रहती है। अतएव अब तुम लोग अनायास समझ सकते हो कि मैं नीति के रास्ते, विवेक के रास्ते और लाभ के रास्ते ही जाता हूँ। कहो आन्डी, अब असल बात समझे ?"

साम के श्रोतागण हुँकारी भरते हुए उसकी बात सुन रहे थे। यह देख कर साम से चुप न रहा गया। एक मुर्गी की टाँग मुँह में डाल कर वह फिर कहने लगा:—

"विवेक, नीति, अध्यवसाय—यह सहज विषय नहीं हैं। देखो, किसी काम को करने के लिए मैंने पहले एक रास्ता इख़्तियार किया और फिर उसी कार्य को करने के लिए दूसरे मार्ग का सहारा लेता हूँ। ऐसा करने में क्या कम अध्यवसाय और नीति ख़र्च करनी पड़ती है!"

क्लोई साम की लम्बी स्पीच से कुछ घबरा सी गई थी। अतएव लाल झंडी दिखाने के लिए बोली, "अब तुम शय्यागमन-नीति का अवलम्बन करो और दूसरों को भी सोने की छुट्टी दो।"

क्लोई की बात पर सेल ट्रेन रुक गई—साम ने वहां अपना व्याख्यान समाप्त कर दिया और सब को आशीर्वाद देकर विदा किया।

दसवाँ परिच्छेद ।

व्यवस्थापक सभा के सभ्यों की बानगी ।

जिस दिन संध्या को इलाइजा ओहिओ नदी पार हुई थी, उस दिन ७॥ बजे व्यवस्थापक सभा के सभ्य माननीय वार्ड साहब अपनी स्त्री से घर में बैठे तरह तरह की बातें कर रहे थे । नीति-विशारद माननीय वार्ड साहब और उनकी मेम की बातों की चाशनी पाठकों को चखाई जाती है। मेम ने कहा—"मैं स्वप्न में भी नहीं सोचती थी कि तुम आज घर आ सकोगे ।"

"हाँ, मेरे आने की कोई आशा नहीं थी; पर दक्षिण देश की ओर जाना है, इससे सोचा कि आज की रात घर पर बिता कर कल सवेरे चला जाऊँगा। दिन रात काम में पिसा जाता हूँ । मेरा तो नाकों दम आ गया । किस ज़ोर से सिर फटा जा रहा है !"

सिर दुखने की बात सुन कर वार्ड साहब की मेम कैम्फर की शीशी लाने के लिए उठीं । पर माननीय महोदय ने उसका हाथ पकड़ कर कहा—"दवा की आवश्यकता नहीं है, योंही आराम हो जायगा। मारे काम के जी घबड़ा उठा है। नित्य नये क़ानून की धाराओं का मसविदा गढ़ना बड़ी आफ़त का काम है ।"

मेम—आज कल व्यवस्थापक-सभा में किन किन क़ानूनों का मसविदा पेश है ?

वार्ड साहब ने बड़े अचरज में आकर मन ही मन कहा—"स्त्रियाँ भी क़ानून की ख़बर रखती हैं! (प्रकट में) आज कल किसी भारी क़ानून का मसविदा नहीं बन रहा है।"

"आप कैसे कहते हैं? मैंने पत्रों में देखा है कि व्यवस्थापक सभा से एक ऐसा कड़ा क़ानून जारी होने वाला है कि, कोई भागे हुए दास-दासियों को शरण नहीं दे सकेगा। चाहे वे भूख वा सर्दी से मर भले ही जायँ पर उन्हें कोई एक पैसे वा वस्त्र तक की सहायता न दे सकेगा। क्या यह सच है? मुझे तो विश्वास नहीं होता कि जिनके हृदय में कुछ भी दया-धर्म है वे ऐसा क़ानून जारी करेंगे। सोचिए, इससे कैसी भयङ्कर दशा हो जायगी। मान लीजिए, कोई दास वा दासी कहीं से भागी और दस दिन की राह काट कर यहाँ पहुँची; अब पेट भरने के लिए उसके पास एक पैसा तक नहीं है, न सर्दी से बचने के लिए कोई फटा कपड़ा उसके तन पर है। भला कहिए, ऐसे अनाथ और निस्सहाय मनुष्य को कौन ऐसा निर्दयी होगा जो एक समय भोजन और टिकने को स्थान देने में नाहीं करेगा? मेरा तो इस बात को सुन कर ही कलेजा काँपता है। यह क़ानून धर्म और नीति के बिल्कुल विरुद्ध है।"

वार्ड साहब हँसते हुए कहने लगे—"प्यारी, मुझे नहीं मालूम था, तुम तो एक ख़ासी नीति-विशारद पण्डिता बन गई हो!"

मेम—मैं आपके क़ायदे क़ानून अथवा राजनीति की कुछ परवा नहीं करती। पर यह मुझे स्पष्ट दिखाई देता है कि ऐसा क़ानून जारी करना केवल निर्दयता का प्रचार करना है, जिनके पालन करने के लिए यह बनाया जा रहा है उन्हें भी विवश होकर अपने हृदय की दया और धर्म को सर्वथा तिलाञ्जलि दे देनी पड़ेगी। आप ही कहिए क्या यह क़ानून धर्म वा न्याय-सङ्गत है?

इसके न्याय-सङ्गत होने में क्या सन्देह है !"

"मैं ते कभी विश्वास नहीं कर सकती कि तुम ऐसे क़ानून को न्याय-सङ्गत मानते हो। मैं समझती हूँ कि तुमने कभी ऐसे क़ानून के पक्ष में सम्मति नहीं दी होगी।"

"मैंने ते इस क़ानून का बड़े ज़ोरों से अनुमोदन किया है।"

"यह बड़ी लज्जा की बात है कि तुमने भी ऐसे क़ानून के पक्ष में राय दी है। इससे बढ़ कर घृणित और नीच क़ानून हो नहीं सकता। मैं निश्चय कहती हूँ कि मैं इस क़ानून को कभी नहीं मानूँगी। देख लेना कोई ऐसा अवसर मिले ते फिर मैं निश्चय ही इसका उल्लङ्घन करूँगी। ओह कैसा आश्चर्य है! कोई बेचारा दीन दरिद्री मनुष्य काला होने के कारण गोरों के अत्याचार से दुःखी होकर भूख से मरता मेरे द्वार पर किसी दिन आ जाय और मैं उसे एक मुट्ठी अन्न न देने पाऊँ! सर्दी से ठिठरा हुआ एक रात टिकने के लिए जगह चाहे तो मैं उसके टिकने के लिए घर के एक कोने में स्थान न देने पाऊँ! मैं नहीं जानती कि किस स्त्री का हृदय विधाता ने ऐसा पत्थर का बनाया है कि ऐसे विपद्-ग्रस्त मनुष्य को आश्रय देने में नाहीं कर दे?"

"मेरी, तुम मुझ से सुनो। मैं ख़ूब जानता हूँ कि तुम्हारा हृदय बड़ा कोमल है। दया और स्नेह का आगर है। पर कभी कभी ऐसी दया और धर्म का फल उल्टा भी हो जाता है। सर्व-साधारण के हित के विचार से हमें कभी कभी दया, माया और स्नेह-ममता को छोड़ने के लिए विवश होना पड़ता है। आज कल जो राजनैतिक आन्दोलन चल रहा है, इसमें किसी पर विशेष दया दिखलाने से मुँह मोड़े रहना बहुत आवश्यक है। इसलिए इस क़ानून को न्याय-विरुद्ध नहीं कहा जा सकता।"

"जान, मैं तुम्हारे राजनैतिक आन्दोलन को नहीं समझती।

पर यह मुझ से छिपा नहीं है कि कौन सी बात धर्म्म-विरुद्ध है और कौन सी धर्म-सङ्गत। मेरी समझ में दीनों पर दया दिखाना, भूखे को अन्न और प्यासे को पानी देना और दुःखियों का दुःख दूर करना, मनुष्यजीवन के प्रधान कर्त्तव्य हैं।"

"पर इन कर्त्तव्यों के पालन करने में यदि सर्व-साधारण का अहित होता हो तब क्या करोगी?"

"मेरा अटल विश्वास है कि कर्त्तव्य-पालन में सर्वसाधारण का अहित कभी होही नहीं सकता।"

"मेरी, सुनो मैं तुम्हें अपने कथन की सच्चाई समझाये देता हूँ, यह बहुत सहज सी बात है।"

"मैं ख़ूब जानती हूँ कि तर्क में तुम्हें कोई नहीं जीत सकता। तुम सारी रात तर्क में बिता सकते हो और सच को झूठ और झूठ को सच साबित कर सकते हो। पर इसे जाने दो। मैं तुम से पूछती हूँ कि अभी यदि तुम्हारे द्वार पर कोई भागा हुआ निराश्रित दास आकर एक मुट्ठी दाना माँगे, तो क्या तुम उसे भागा हुआ समझ कर अपने दरवाज़े से भगा देगे? ऐसे आदमी पर क्या तुम्हें दया न आवेगी?"

"ऐसे आदमी को दरवाज़े से भगा देना अवश्य बहुत खेद-जनक है। पर कर्त्तव्य के लिए क्या नहीं करना पड़ता?"

"ऐसे निठुर व्यवहार को क्या तुम कर्त्तव्य समझते हो? इसे कभी कर्त्तव्य नहीं कहा जा सकता। ग़ुलामों पर लोग ज़ुल्म करते हैं, उन्हें बहुत सताते हैं, इसी से वह भाग जाते हैं, उन पर अत्याचार न हों तो वे कभी न भागें। दास-दासी रखने वाले उन्हें न सतावें तो फिर किसी क़ानून की आवश्यकता ही न पड़े।"

"मेरी, सुनो तो, मैं तुम्हें एक युक्ति से इस क़ानून की आवश्यकता समझा दूँ।"

मेम। मैं ऐसे निठुर आचरण के सम्बन्ध में तुम्हारी युक्ति या दलीलें नहीं सुनना चाहती। मैं पहले ही कह चुकी हूँ कि तुम लोगों जैसे क़ानूनी आदमी भाँति भाँति के कुटिल तर्कों द्वारा सच को झूठ और झूठ को सच साबित कर सकते हैं।

साहब और मेम में ये बातें हो रही थीं कि इतने में काजो नाम का एक नौकर वहाँ आया और बड़ी घबराहट से बोला, "मेम साहब, ज़रा नीचे आकर देखिए, कैसा भयानक दृश्य है!"

मेम ने नीचे पहुँचते ही जो देखा उससे बहुत घबरा कर बार बार साहब को पुकारने लगीं। साहब ने वहाँ जाकर देखा कि एक दुबली सी स्त्री एक बच्चे को गोद में लिपटाये हुए उनके द्वार पर अचेत पड़ी है। उसके दोनों पैर बहुत छिले हुए हैं, उनसे लगातार ख़ून बह रहा है। उसके कपड़े चिथड़े चिथड़े हो गये हैं। वार्ड साहब देखते ही समझ गये कि वह भागी हुई दासी है, पर उन्होंने ऐसी सुन्दरी दासी कभी नहीं देखी थी। उसकी सुन्दरता और मुखश्री देख कर उनके हृदय में करुणा का स्रोत बह चला। माननीय महोदय को थोड़ी देर पूर्व का कथोपकथन सर्वथा बिसर गया। उस स्त्री को होश में लाने के लिए वह भाँति भाँति के उपाय करने लगे। जब वह अचेत थी तब उसकी छाती से बालक को उठा कर अपनी गोद में ले लिया था। सचेत होते ही जब स्त्री ने अपने बच्चे को गोद में न देखा तो "हेरी" "हेरी" करके चिल्लाने लगी। चिल्लाहट सुनते ही बालक काजो की गोद से अपनी माता की गोद में चला गया। तब वह कुछ शान्त होकर वार्ड साहब की मेम से कहने लगी, "मुझे बचाइए, मुझे शरण दीजिए, मेरे बच्चे की शत्रु के हाथ से रक्षा कीजिए।"

वार्ड साहब की मेम ने कहा, "बेटी तू मत डर, यहाँ कोई तेरा कुछ न बिगाड़ सकेगा। तू यहाँ निश्शङ्क निर्भय होकर रह।"

यह सुन कर उस रमणी ने कहा, "भगवान् आप का भला करें।" फिर मेम ने रसोई-घर के पास उसके विश्राम का प्रबन्ध कर देने की आज्ञा दी और दास-दासियों से उसकी सेवा-टहल करने के लिए कह कर भोजन करने घर में चली गईं। माननीय वार्ड साहब उस स्त्री का दुःख देख कर पिघल गये थे। वे अपनी स्त्री से जाकर बोले, "कुछ समझ में नहीं आता कि, यह स्त्री कहाँ से आई है। पर यह युवती है बड़ी सुन्दर!"

मेम बोलीं, "अभी तो वह सोई है, उठने पर उसका नाम धाम पूछूँगी।"

कुछ देर उपरान्त वार्ड साहब ने फिर कहा, "प्यारी! जो कपड़ा वह पहने है वह बहुत जीर्ण हो गया है; देखो तो तुम्हारा कोई गाउन उसके आ सकता है वा नहीं। वह तुमसे थोड़ी लम्बी है।"

वार्ड साहब की स्त्री मन ही मन हँसने लगी और सोचने लगी कि, स्वामी की क़ानूनी विद्या धीरे धीरे कमज़ोर पड़ रही है। पर, प्रकट में केवल इतना ही बोली, "अच्छा देखा जायगा।"

माननीय महोदय, कुछ देर बाद फिर बोले, "प्यारी, यह स्त्री बहुत सर्दी खागई जान पड़ती है। इसे कुछ ओढ़ने को देना चाहिए। मेरी वह पुरानी बनात इस स्त्री को दे दो।"

इतने ही में दीना नामक दासी ने आकर कहा, "मेम साहब वह स्त्री जागी है। आप से कुछ कहना चाहती है।" इस पर वार्ड साहब और उनकी मेम दोनों उस स्त्री के पास गये। मेम ने पूछा, "हम लोगों से तुम कुछ कहना चाहती हो तो कहो।"

उस स्त्री के मुँह से बोली नहीं निकलती थी। वह बार बार

लम्बी साँसें लेरही थी । और रोती जाती थी । तब वार्ड साहब की मेम उसे ढाढस देकर कहने लगी, "बेटी, डरो मत । हम तुम्हारी कोई बुराई नहीं करेंगे । तुम साफ़ साफ़ कहो, कहाँ से आई हो और क्या चाहती हो ।"

कुछ देर बाद स्त्री ने कहा, "मैं केन्टाकी से आती हूँ ।" इस पर माननीय वार्ड साहब ने उससे जिरह सी आरम्भ कर दी ।

"केन्टाकी से तुम किस तारीख़ को आई हो ?"

"इसी रात में आई हूँ ।"

"रात में कैसे आई ?"

"बरफ़ के टुकड़ों के सहारे चल कर ।"

सब लोग अचरज में आ कर कहने लगे, "बरफ़ पर से आई कैसे ?" "परमात्मा ने ही मुझे पार लगाया । पकड़नेवालों ने मेरा पीछा कर रक्खा था । ऐसी दशा में नदी पार करने के सिवा मेरे बचने की और कोई सूरत न थी ।"

वार्ड साहब का दास काजो बोला,—

बाप रे बाप ! कैसा अचरज है ! गली हुई बरफ़ टुकड़े टुकड़े हो कर जल पर तैर रही थी, उसी पर से पार चली आई ! !"

स्त्री आर्त्त स्वर से बोली, "मैं जानती थी कि बर्फ़ गल रही है । मुझे मालूम था कि इस प्रकार बहती हुई बर्फ़ पर से किसी का जाना असम्भव है । मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं नदी पार कर सकूँगी । मृत्यु को आलिङ्गन करने के लिए मैं नदी में कूदी, पर, ईश्वर की महिमा अपार है। मनुष्य उसे नहीं समझ सकता । मनुष्य नहीं जानता कि निर्बल के बल एक मात्र भगवान् हैं । ईश्वर की महिमा से क्या नहीं हो सकता। मैं केवल उसी की महिमा से नदी पार हुई ।"

इतना कह कर स्त्री आकाश की ओर इस तरह देखने लगी, मानों

वह ईश्वर-दर्शन करने की प्रतीक्षा कर रही है ।

माननीय महोदय ने पूछा, "तू क्या किसी की क्रीत-दासी थी ?"

"हाँ, पर मेरे मालिक बड़े दयालु थे ।"

"तो तेरी मालकिन तुझे बहुत सताती होंगी ।"

"नहीं, नहीं, वह तो माता की भाँति मेरा दुलार करती थीं ।"

"फिर तुमने ऐसे मालिक को छोड़ कर यह भयानक विपद का रास्ता क्यों पकड़ा ?"

यह बात सुन कर स्त्री बार्ड साहब की मेम के मुँह की ओर अश्रुपूर्ण नयनों से देखने लगी और बोल उठी, "मेम साहब ! पुत्र-शोक कितना दुःखदायी है, यह आप अवश्य समझ सकती हैं । आप को क्या कभी पुत्र-वियोग सहना पड़ा है ?" इस प्रश्न से बार्ड साहब की मेम का हृदय एक दम विदीर्ण हो गया । वह अपने आँसू न रोक सकीं । अभी एक ही महीना हुआ उनका एकलौता बेटा उन्हें छोड़ कर चलता हुआ था । मेम का रोना देख कर काजो और डीना इत्यादि सभी आँसू बहाने लगे ।

बार्ड साहब बड़े कष्ट से आँसू रोक कर हृदय के उमड़े हुए शोक के आवेग को छिपाने की चेष्टा करने लगे । वह ठहरे व्यवस्थापक सभा के सभ्य, आँसू बहाते देख कर कहीं लोग उन्हें निर्बल आत्मा न समझने लगें !

कुछ देर बाद मेम ने उस कृशाङ्गी से पूछा, "तुमने मुझ से ऐसा प्रश्न क्यों किया ? आज अनुमान एक मास हुआ मेरा हृदय-सर्वस्व हेनरी मुझे अनाथिनी करके चला गया ।"

"तब आप को मेरा दुःख मालूम हो सकता है । एक एक करके मेरी दो सन्तानें काल की भेंट हो चुकीं, अब यही एक बच्चा मेरे जीवन का आधार है । मैं पल भर के लिए भी इसे आँखों की ओट नहीं कर

सकती । लेकिन मालिक ने इस दुध-मुँहे बच्चे को दास-व्यवसायी के हाथ बेच दिया । वह निर्दयी इसे दक्षिण देश में ले जाने का उद्योग कर रहा है । यह दुधमुँहा बच्चा मा को छोड़ कर कभी नहीं रह सकता । मैं इसे कैसे छोड़ दूँगी । इसी से दास-व्यवसायी के चंगुल से बचाने के लिए मैं इसे लेकर भाग आई हूँ । लेकिन मेरे भागने के बाद ख़रीदार ने मेरे मालिक के दो दासों को साथ लेकर मेरा पीछा किया । ओहिओ नदी के उस पार अपने पकड़े जाने का उद्योग देख कर मैं प्राणों की आस छोड़ कर नदी में कूद पड़ी । नदी को पार कैसे किया यह मुझे याद नहीं । बस इतना ही स्मरण है कि इधर किनारे पर आते ही सिम नामक एक दास ने मेरा हाथ पकड़ कर तट पर उठा लिया, और उसी की राय से मैं इस घर तक चली आई ।"

तब तुमने कैसे कहा कि. तुम्हारे मालिक और मालकिन बड़े दयावान् हैं ? इस बालक को बेच कर उन्होंने तुम्हारे साथ बड़ी ही कठोरता का वर्त्ताव किया है !"

"मैं कभी अकृतज्ञ नहीं होऊँगी । मैं जब तक जीती रहूँगी कहूँगी कि मेरे मालिक और मालकिन बड़े दयालु हैं । उन्होंने मुझ पर कभी कठोरता नहीं की । मालिक ने दास-व्यवसायी के ऋण में जकड़ जाने के कारण लाचार होकर मेरे बच्चे को बेचा ।"

"क्या तुम्हारे पति नहीं है ?"

"हाँ, है । पर वह एक दूसरे का दास है । उसका मालिक बड़ा कठोर है । उसके अत्याचार से मेरा पति बड़ा कष्ट पा रहा है । सुना है वह मेरे पति को दक्षिण में बेचनेवाला है । अब इस जीवन में उससे भेंट होती नहीं दिखाई देती ।

"अब तुम कहाँ जाना चाहती हो ?"

"मैं कैनाडा जाना चाहती हूँ । यहाँ से कैनाडा कितनी दूर है ?"

मेम साहब मनही मन सोचने लगीं, "हाय ! कैसी शोचनीय स्थिति है ! यह कैसे कैनाडा पहुँचेगी ? ऊपर से बोलीं, बेटी, कैनाडा बड़ी दूर है। पर हमसे जहाँ तक हो सकेगा तेरे लिए यत्न करेंगे। आज की रात यहीं रह। कल जैसा होगा देखा जायगा।"

वार्ड साहब की मेम दीना को इसके सोने के प्रबन्ध करने के लिए कह कर अपने शयनागार को चली गईं। वहाँ पहुँचते ही मिस्टर वार्ड बोले, "प्यारी, इस स्त्री के सम्बन्ध में अब क्या करना चाहिए ? मैं बड़ी आफ़त में फँसा। इस स्त्री की तलाश में कल ख़रीदार यहाँ आवेगा अवश्य ही। मेरे यहाँ भगोड़ी दासी का निकलना बड़ा लज्जा का विषय होगा ! व्यवस्थापक सभा का सभ्य होकर, मैंहीं ने कल क़ानून बनाया कि भगोड़े दास-दासियों को जो कोई अपने यहाँ ठहरने देगा उसे दण्ड मिलेगा और आज मैंहीं उस क़ानून को तोड़ूँ। अच्छा होगा कि इस विषय में जो कुछ करना हो आज रात ही को कर डाला जाय।"

"आज रात को क्या किया जा सकता है ?"

मेम अच्छी तरह जानती थीं कि साहब का मन बड़ा दयालु है। वह अवश्य इस अनाथा का कोई न कोई ठीक ठिकाना लगा देगें। मन ही मन यह सोच कर वह चुप रह गई, और साहब का क़ानून का पक्षपातित्व स्मरण करके मन्द मन्द मुस्काने लगीं। कुछ देर बाद साहब बूट डट कर खड़े हो गये और कहने लगे, "प्यारी इसके सम्बन्ध में मैं जो कुछ करना चाहता हूँ, तुम्हें बतलाता हूँ। इसे किसी निरापद स्थान पर पहुँचा देना ठीक होगा। यहाँ से थोड़ी दूर पर वान ट्राम्प नामक मेरा एक पुराना मुवक्किल है। पहले उसके यहाँ दास-दासियों का बड़ा जमघट था; पर, समय के फेर से उसकी ऐसी काया पलट हुई कि नर-नारियों को ग़ुलाम बना कर रखना वह पाप समझने

लगा और उसने अपने सारे दास-दासियों को मुक्त कर दिया। इतना ही नहीं उसने दास-दासियों की भलाई के लिए और भी कई काम किये। आज कल उसने यहाँ से तीन चार कोस पर थोड़ी ज़मीन लेकर वहाँ भागे हुए दास-दासियों के लिए ऐसे घर बना दिये हैं जहाँ वह शरण ले सकें। वह स्वयं भी वहीं रहता है। वहाँ पहुँचा आने से कठोर दास-व्यवसायी के चंगुल से यह अभागिनी स्त्री बच सकती है। पर मेरे सिवा और किसी का रात को गाड़ी हाँक कर इसे वहाँ पहुँचा आना सम्भव नहीं।"

"क्यों, काजो तो ख़ूब गाड़ी हाँक सकता है, वह क्या नहीं पहुँचा आ सकता ?"

"वहाँ का मार्ग बड़ा दुर्गम है; राह में दो खाड़ियाँ पार करनी पड़ती हैं; काजो को रास्ते का भी पता नहीं होगा, इससे मुझे स्वयं ही जाना पड़ेगा। काजो को १२ बजे गाड़ी तैयार कर रखने को कह दो। मैं स्वयं ही इसे पहुँचा आऊँगा, लौटता हुआ कोलम्बस होता आऊँगा, जिससे लोग समझ लेंगे कि वहीं किसी काम से गया था।"

"नाथ ! दूसरों के दुःख से सदैव हृदय पसीज जाता है। तुम्हारी यह सहृदयता ही तुम्हारे ज्ञान और विज्ञता की अपेक्षा लोगों के मन में तुम पर अधिक भक्ति और श्रद्धा उपजाती है। तुम जब तब अपने को पहचानना भूल जाते हो। पर मैं तुम्हारे हृदय से ख़ूब परिचित हूँ। तुम चाहे जिस ख़याल से चाहे जैसा क़ानून क्यों न बनाओ, दूसरे क़ानूनवाज़ों की तरह तुम सर्वथा मनुष्यत्वहीन होकर कठोर काम में नहीं लग सकते। यह मैं भली भाँति जानती हूँ कि व्यवस्थापक सभा के सभी सभ्य मनुष्यत्व-हीन नहीं हैं।

माननीय वार्ड साहब अपनी स्त्री के मुख से अपनी सहृदयता की प्रशंसा सुनते ही प्रेम-पुलकित हो गये। सोचा कि जिन्हें ऐसी स्त्री का

सुख प्राप्त नहीं, उनका मनुष्य-जन्म भी वृथा ही है। यह सोचते सोचते दरवाज़े पर देखने के लिए आये कि गाड़ी तैयार हुई या नहीं। फिर मेम के पास जाकर बोले, "प्यारी मुझे एक बात याद आई। हेनरी के जो कुछ कपड़े हैं उन्हें चाहो तो इस अनाथ बालक के लिए दे डालो।"

मेम ने अपने मृत पुत्र के जो कपड़े और खिलौने इत्यादि चीज़ें थीं, उनकी एक गठरी बाँध दी। फिर रात को १२ बजे जब बार्ड साहब इलाइज़ा को लेकर गाड़ी पर चढ़ने लगे, उस समय वह गठरी इलाइजा के हाथ में दे दी। इलाइज़ा उस समय बारम्बार मेम के प्रति अपनी हार्दिक भक्ति और कृतज्ञता प्रकट करने की चेष्टा करने लगी; पर उसमें बोलने की शक्ति न थी। उसके हृदय की तात्कालिक अवस्था शब्दों द्वारा नहीं प्रकट की जासकती। वह गाड़ी में चढ़ी हुई घूम घूम कर मेम की ओर देखने लगी। उसकी आँखों में आँसू भर आये।

आज बार्ड साहब में भी क्या विचित्र परिवर्त्तन हो गया है! कल जिनकी वक्तृता से व्यवस्थापक सभा का भवन गूँजता था; कल जिसने अनेक बार इस बात को दुहराया था कि सर्वसाधारण की हित की दृष्टि से प्रत्येक छोटे बड़े का यह कर्त्तव्य है कि स्त्री-जाति की सी सहृदयता को छोड़ कर भागे हुए दास-दासियों को पकड़ा देवें। कल उन्हें स्त्री-जाति मानव-हृदय की दुर्बलताओं की खान जान पड़ी थी। पर आज वही बार्ड साहब स्वयं उस दुर्बलता के शिकार बन बैठे। केवल अख़बारों और रिपोर्टों में पढ़ कर भगोड़ों की दुर्दशा का अनुमान नहीं हो सकता है। इसी से कल तक भगोड़ा शब्द देख कर उनके हृदय में तनिक भी दया नहीं उपजती थी। पर आज सामने साक्षात् भगोड़े की दुर्दशा देखते ही उन्हें चक्कर आगया। उन्हें सच्ची स्थिति का ज्ञान हो गया। और जिस जाति की कमज़ोरी की उन्होंने

निन्दा की थी उसी ने आज उन्हें भी धोखा दिया। इससे मालूम होता है कि व्यवस्थापक सभा के सभ्य भी मनुष्यत्व से वरी नहीं हैं। उनमें भी मनुष्यत्व है। उन्हें सदैव संवाद-पत्रों और रिपोर्टों के सिवा देश की सच्ची दशा जानने का अवसर नहीं मिलता, अपनी आँखों से वे लोगों की दुर्दशा का दृश्य नहीं देखते। इसी से उनके कथन में वास्तविक वात से वहुत अन्तर होता है और जान पड़ता है कि वे मनुष्यत्व-विहीन हैं।

माननीय वार्ड साहव ने कल जो क़ानून जारी किया था, आज हाथों हाथ उस क़ानून का प्रतिफल उन्हें ख़ूब अच्छी तरह चखना पड़ा। घोर अँधेरी रात है। मूसलधार वर्षा हो रही है। रास्ता कीचड़ से लथपथ है, घोड़ा इस मार्ग से गाड़ी को खींच कर आगे वढ़ने में असमर्थ है। व्यवस्थापक सभा के माननीय सभ्य अपने नौकर काजो-सहित गाड़ी से उतर पड़े। काजो ने वण्टों घोड़े की लगाम पकड़ कर आगे वढ़ाने की कोशिश की और वार्ड साहव ने पीछे से गाड़ी का चक्का ठेला, तव कहीं जा कर वड़ी कठिनाइयों से गाड़ी आगे वढ़ी और धीरे धीरे, उस आश्रम के पास पहुँची। घर का मालिक अभी सो रहा था। उसे वड़ी कठिनता से जगाया। थोड़ी देर में आँखें मलते हुए वह गाड़ी के पास आया और माननीय वार्ड साहव को देख कर नमस्कार करने के लिए हाथ उठाया।

गृहस्वामी का नाम जान्‌वान्‌ट्रम्प था। वह पहले केन्टाकी में वसता था। इसके पास अनगिनत ग़ुलाम थे। पर अर्थ-लोलुपता और स्वार्थपरता से इसके हृदय के उत्तम और स्वाभाविक भावों का सर्वथा नाश नहीं होने पाया। इसके जी में यह वात गड़ गई कि देश-प्रचलित दासत्व-प्रथा और दासों को सताना, दास और मालिक दोनों ही की आत्मा को नीचे गिराता है। दासों की दुर्दशा सोचते सोचते

इसका हृदय पसीज गया। फिर इसने तुरन्त अपने सारे दास-दासियों को दासत्व की बेड़ी से मुक्त कर दिया। साथ ही इसे दासों के दुःख दूर करने की फ़िक्र पड़ी। इस निर्जन भूमि में अनाथ दासों को शरण देने के लिए जो स्थान बना है वह उसी चेष्टा का फल है।

वार्ड साहब ने जैसे ही इसे इलाइजा की दुरवस्था की बात सुनाई, इसने तुरन्त इलाइजा को गाड़ी से उतार कर अपने घर की एक कोठरी में उसके रहने के लिए स्थान कर दिया। उसे ढाढस दे कर कहने लगा—"बेटी! यहाँ तुम बेफ़िक्र रहो। मजाल नहीं कि यहाँ से तुम्हें कोई पकड़ ले जाय। मेरे यहाँ बहुत आदमी हैं। यहाँ पकड़ने वालों की पैठ नहीं हो सकती।"

वानट्रम्प ने माननीय वार्ड साहब से वह रात वहीं बिताने का अनुरोध किया, पर वह सम्मत न हुए। उन्होंने पहले ही से कोलम्बो होकर लौटने का निश्चय कर रक्खा था। लोगों के सन्देह करने के डर से झटपट गाड़ी पर सवार हो गये। चलते समय इलाइजा की सहायता के लिए वानट्रम्प के हाथ में एक दस रुपये का नोट देते गये।

—:०:—

ग्यारहवाँ परिच्छेद ।

परिवार से वियोग ।

गोरे बनियों की अर्थ-लोलुपता के कारण अफ़्रीका उपनिवेश के जो सब अभागे काले अमेरिका में ले जाकर दास बना कर बेंचे जाते थे उनकी स्वभाव-प्रकृति से हम भारतवासियों की किसी किसी विषय में ख़ूब समानता है । भारतवासियों की भाँति इन अभागे क्रीत-दास-दासियों में भी सन्तान-वात्सल्य, दाम्पत्य-प्रेम, पारिवारिक स्नेह और कृतज्ञता की मात्रा बहुत अधिक दिखाई पड़ती थी । परिवार से किसी एक को पृथक् करके बेचने में इन्हें कैसा भयानक कष्ट होता था, उसे क्या वज्र-हृदय, अर्थ-पिशाच गोरे बनिये कभी समझ सकते हैं ?

टाम को शेल्बी साहब ने हेली के हाथ बेच तो डाला ही था, पर हेली के इलाइजा की खोज-खाज से लौटने तक कम से कम दो तीन दिन टाम को अपने परिवार में रहने का सुअवसर मिल गया । जिस दिन हेली के साथ उसके जाने की बात थी उस दिन उसने बड़े तड़के उठ कर अपने बाल-बच्चों और स्त्री के कल्याणार्थ ईश्वर की प्रार्थना की । फिर उपासना के उपरान्त अपने सोये हुए बालकों की खाट के पास खड़ा होकर एकटक उनकी ओर देखने लगा । उसकी दोनों आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी । कुछ देर बाद एक आह भरकर वह बोल उठा—"जान पड़ता है तुम लोगों से मेरी यही अन्तिम भेंट है !" उसकी यह बात क्लोई के कान में जा पड़ी और उसका हृदय भर आया । उसने रोते हुए पति से कहा—

"तुम मुझे ईश्वर पर भरोसा रख कर शोक न करने को कहते हो, पर मैं ईश्वर पर भरोसा नहीं कर सकती। मेरे मन में कितनी ही आशङ्कायें उठ रही हैं। न मालूम वह तुम्हें कहाँ का कहाँ ले जायगा, जब तब कितना दुःख देगा। मैंम दो एक बरस में रुपये इकट्ठे कर तुम्हें फिर मोल लेने का प्रयत्न करेंगी पर उतने ही दिनों में न जाने तुम पर कितनी आफ़तें आ सकती हैं। दक्षिण गये हुओं में बहुत थोड़े ही लौट कर आते हैं। दक्षिण के चाह के बग़ीचों और तम्बाकू के खेतों में बेहद परिश्रम करके सैकड़ों ही दास-दासी असमय काल के गाल में चले जाते हैं। तुम्हीं कहो, यह सब जानते हुए मैं अपने हृदय के आवेग को कैसे रोक सकती हूँ।"

टाम ने कहा—"वह दीनबन्धु भगवान् सब जगह मौजूद है। वह मेरे साथ रह कर सदा मेरी ख़बर लेगा।"

"परमेश्वर के साथ रहते हुए भी तो समय समय पर कितनी ही घोर विपदायें आ पड़ती हैं। इसी से परमेश्वर पर भरोसा रख कर मैं अपने मन को नहीं समझा सकती।"

"हम सब मङ्गलमय ईश्वर के मङ्गल-शासन में हैं। उसकी मर्ज़ी बिना पत्ता भी नहीं हिलता। जिसे लोग विपद् समझते हैं वही सम्पद् का मूल कारण है। देखो, मुझे बेच कर मालिक ने तुम्हारे और बाल बच्चों के बचाने की चेष्टा की। तुम लोग तो निरापद रहोगे। हम सब के सब जहाँ तहाँ तीन तेरह होकर नहीं बिके यही क्या कम सौभाग्य की बात है। मालिक ने केवल मुझे ही बेचा इसके लिए मैं उनका बड़ा अनुगृहीत हूँ।"

"मुझे तो इसमें मालिक के अनुग्रहवाली कोई बात नहीं देख पड़ती। तुम्हारे ऐसे प्रभुभक्त और विश्वासी दास को बेचना कभी उचित नहीं कहा जा सकता। वह तुम्हारी प्रभुभक्ति से प्रसन्न होकर

एक बार तुम्हें दासत्व से मुक्त कर देने का वचन दे चुके हैं। पर आज उसे भूल कर ऋण से छुटकारा पाने के लिए बेखटके तुम्हें बेच डाला! गोरी जाति दूसरे के दुःख का ख़्याल कभी नहीं करती। यह सदा अपने ही सुख में मस्त रहती है। जो मनुष्य स्त्री को पति-हीन और बालकों को पितृ-हीन करता है, ईश्वर के यहाँ उसका विचार अवश्य होगा।"

"क्लोई, तुम मालिक की शान में ऐसी बातें मुँह से न निकालो। इससे मेरे हृदय को बड़ी वेदना होती है। मेरे साथ यही तुम्हारी अन्तिम भेंट है। इस समय मेरे सम्मुख ऐसी बातें मत कहो। दूसरे दासों के मालिकों से हमारे मालिक कहीं अच्छे हैं। वह दास-दासियों को व्यर्थ कभी तङ्ग नहीं करते। वह किसी को बेत नहीं मारते। किसी की विवाहिता स्त्री को कभी रखैल बना कर उसका धर्म नहीं बिगाड़ते। इसलिए ईश्वर के सम्मुख ऐसे मालिक के कल्याण के लिए प्रार्थना करना अपना कर्त्तव्य है। इसी केन्टाकी में ही देख लो सैकड़ों ही लोगों के असंख्य दास-दासियाँ हैं। ज़रा उनकी दुःख-दायक घोर यन्त्रणा से अपना मिलान तो करो।"

क्लोई फिर कुछ नहीं बोली। मनही मन सोचने लगी कि आज सदा के लिए उसके स्वामी का सुख-सूर्य्य अस्त हो जायगा। अब ऐसी एक भी सन्ध्या आने की आशा नहीं है कि जब उसको अच्छा भोजन मिलेगा। इसी से क्लोई ने स्वामी के भोजन के निमित्त भाँति भाँति की चीज़ें बनाईं और तैयार हो जाने पर बड़े प्रेम से स्वामी को खिलाईं। भोजन कर चुकने पर टाम ने अपनी दो बरस की छोटी कन्या को गोद में उठा लिया और बारम्बार उसका मुँह चूमने लगा। क्लोई उस कन्या का हाथ पकड़ कर कहने लगी, "न जाने कब इसको भी मा की गोद छोड़ कर अलग हो जाना पड़ेगा। दास-दासियों के सन्तान

होना केवल एक खेल ही है।" क्लोई की यह सब बातें समाप्त न होने पाई थीं कि शेल्वी साहब की मेम वहाँ आ पहुँचीं। टाम और क्लोई को आँसू बहाते देख कर उनकी भी आँखें डबडबा आईं। ज्यों त्यों धीरज रख कर टाम से कहने लगीं, "टाम, मैं चाहती थी कि तुम्हें कुछ रुपये दूँ। पर विचार कर देखा कि उससे तुम्हारा कोई फ़ायदा न होगा। तुम्हारे पास जो कुछ होगा उसे वह अर्थ-पिशाच दास-व्यवसायी हेली कभी हड़प किये बिना न छोड़ेगा। टाम, तुमसे मैं अब क्या कहूँ। मैं कुछ भी कहने के योग्य न रही। पर मैं तुमसे इतनी प्रतिज्ञा अवश्य करती हूँ कि रुपया जुटतेही मैं तुम्हें तत्काल छुड़ा लूँगी। जब तक रुपया नहीं इकट्ठा होता तब तक अपने को ईश्वर के हाथों में सौंप कर धीरज रखना।"

इसी समय हेली वहाँ आ पहुँचा। आते ही टाम से बोला, "चलो बच्चू, और देर करने की दरकार नहीं है।" टाम यह सुनते ही उसके पीछे पीछे जाकर गाड़ी पर सवार हो गया। क्लोई इत्यादि घर के सब दास-दासी उस गाड़ी के पास जम कर खड़े हो गये। हेली ने टाम को गाड़ी में बैठा कर लोहे की जञ्ज़ीर से उसके दोनों पैर कस दिये। इसे देख कर और सब दास-दासियों के हृदय को बड़ी सख़्त चोट लगी। वे सब मन ही मन हेली को गालियाँ देने लगे। उन लोगों की टाम पर बड़ी श्रद्धा और भक्ति थी, उसे वे अन्तःकरण से प्यार करते थे। इससे टाम को लोहे की साँकल से बाँधते देख कर वे बारम्बार उसासें भरने लगे। टाम के दो बड़े लड़के पिता की यह दशा देख कर चिल्लाने लगे। तब शेल्वी साहब की मेम ने हेली से कहा, "महाशय, टाम भागनेवाला आदमी नहीं है, इसे आप नाहक़ बाँधते हैं। इसके बन्धन खोल दीजिए।" उत्तर में हेली ने कहा, "मेम साहब, बस अब आप माफ़ कीजिए। आप के यहाँ सौदा करके मैं

पाँच सौ रुपया दण्ड भुगत चुका हूँ। अब मैं इसे ढीला नहीं छोड़ने का।"

इतना कह कर गाड़ी हाँकने की आज्ञा दी। जाते जाते टाम ने कहा, "मेम साहब, मुझे इस बात का बड़ा दुःख है कि चलते समय मास्टर जार्ज से भेंट न हुई।" टाम के बिकने की बात-चीत प्रकट होने के पहले ही जार्ज कुछ दिनों के लिए किसी आत्मीय के यहाँ चला गया था। टाम के बिकने के सम्बन्ध में अभी तक उसे कुछ पता न था। टाम के ले जाने के समय शेल्बी साहब ने पहले ही वहाँ न रहने का निश्चय कर लिया था और तदनुसार वे कहीं दूसरी जगह चले गये थे।

हेली टाम को साथ लेकर पहले एक लोहार की दूकान पर आया। वहाँ पाकेट से दो हथकड़ियाँ निकाल कर लोहार से बोला कि इसके हाथ में पहना दो। लोहार टाम को देखते ही चौंक कर बोला, "ऐं, यह तो शेल्बी साहब का टाम है! इसे क्या बेच डाला? ऐसे स्वामि-भक्त दास को भी कोई कभी बेचता है!" फिर हेली से बोला, "साहब, आप अपनी हथकड़ी अपने हाथों में ही रखिए, इसे डालने की आवश्यकता नहीं! मैं इसे ख़ूब जानता हूँ, यह बड़ा ईमानदार आदमी है।" हेली बोला, "ज़्यादा ईमानदार ही धोखा देते हैं। तुम अपनी बातें रहने दो, इसे हथकड़ियाँ पहना दो।" लोहार ने पूछा, "टाम अपनी स्त्री को छोड़ चला क्या?" उसके उत्तर में हेली ने कहा, "जहाँ यह बिकेगा वहाँ क्या और दासियाँ ही न मिलेंगी? इन लोगों को औरतों की क्या कमी है। दक्षिण देश में पैर धरते ही एक न एक को तुरन्त पटा लेगा।"

हेली से जब लोहार की ये बातें हो रही थीं, उसी समय बड़े वेग से घोड़ा दौड़ाता हुआ एक तेरह वर्ष का लड़का वहाँ आया। वह

बालक घोड़े से उतर कर एकाएक टाम के गले से लिपट गया। टाम उसे गोद में लेकर कहने लगा, "मास्टर जार्ज! मुझे बड़ा आनन्द हुआ कि जाते समय तुमसे भेंट होगई।" टाम के पैर लोहे की ज़ञ्जीर से बँधे देख कर जार्ज की आँखें लाल हो गईं। वह क्रुद्ध होकर बोला, "मैं अभी हेली बदमाश का सिर फोड़ता हूँ।" टाम ने उसे मना करके कहा, "अब तुम हेली के साथ झगड़ोगे तो वह मुझे और सतावेगा। इसलिए तुम कुछ मत बोलो।" यह सुन कर जार्ज सिर झुका कर बैठ रहा। उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी। कुछ देर बाद शान्त होकर जार्ज कहने लगा, "कैसे लज्जा का विषय है! कितनी कठोरता का व्यवहार है! बाबा ने तुम्हारे बेचने की बात मुझसे एक बार भी न कही। यदि मेरा साथी लिङ्कन मुझे तुम्हारे विक्रय की बात न कहता तो मुझे कुछ भी पता न चलता। मेरा जी चाहता है कि, मैं अपना घर-द्वार सब फूँक दूँ। यह कष्ट तो नहीं सहा जाता।" टाम ने कहा, "जार्ज ऐसी बात मत कहो। अपने पिता के विषय में तुम्हें ऐसी बात कहना उचित नहीं है।" जार्ज टाम के लिए एक मोहर (स्वर्णमुद्रा) साथ लाया था। टाम ने मोहर लेने से इन्कार करके कहा, "जार्ज, यह मोहर मेरे किस काम आवेगी? हेली साहब अभी देखते ही इसे लेलेंगे।" जार्ज ने कहा, "मैंने इसे हेली के हाथ से बचाने का उपाय सोच लिया है। इसमें एक छेद कर दिया है। उसमें डोरा डाल कर तुम्हारे गले में बाँध देने से हेली की नज़र से बची रहेगी। तुम्हारे कपड़ों के नीचे छिपी रहेगी।" इतना कह कर जार्ज ने मोहर तागे में पिरो कर टाम के गले में लटका दी। टाम बड़े स्नेह से जार्ज को उपदेश देने लगा और बोला, "बच्चा जार्ज! सदा ध्यान से अपनी माता के सद्दृष्टान्त और सदाचार पर चलना। परमात्मा संसार में सारी चीज़ें दो बार दे सकते हैं पर 'मा' दुबारा नहीं मिलती।"

इस प्रदेश में दयाधर्म्म इत्यादि सद्गुणों से भूषित कोई दूसरी स्त्री तुम्हारी माता के समान नहीं है। ऐसी स्नेहमयी जननी संसार में दुर्लभ है। कभी अपने काय-मनो-वाक्य-द्वारा उनके हृदय को मत दुखाना। देखना उनके आदर-सत्कार में कभी त्रुटि न करना; उनकी आज्ञा का उल्लङ्घन न होने पावे। मनुष्य का स्वभाव है कि युवावस्था में उसका मन पाप की ओर ढलता है। लेकिन सत्सङ्ग मनुष्य को उससे हटा कर सत्पथ की ओर लेजाता है। इसमें अणु-मात्र भी सन्देह नहीं है कि अपनी माता के आदर्श चरित्र और सत्कर्मों के प्रभाव से तुम एक बड़े पवित्र, साधु-प्रकृति मनुष्य बन सकोगे। बचपन से ईश्वर की भक्ति करना सीखो। इससे निर्विघ्न संसार में आगे बढ़ते जाओगे।"

जार्ज ने टाम के उपदेश सुन कर कहा, "टाम काका, तुम मुझे सदा सदुपदेश देते रहे हो। तुम्हारे आज के उपदेश मैं तन मन से पालन करूँगा और सदैव सन्मार्ग पर चलने की चेष्टा करूँगा। जब मैं बड़ा हो कर स्वयं काम-काज करूँगा, तब तुम्हारे रहने के लिए एक अच्छा घर बनवा दूँगा। वृद्धावस्था में तुम उसमें भले आदमियों की भाँति रहना। फिर तुम्हें दासत्व का कष्ट नहीं भोगना पड़ेगा।"

जार्ज की बात समाप्त होने के पहले ही हेली हथकड़ी लेकर गाड़ी के पास आया। उसने हथकड़ी टाम के हाथों में डाल दी। इस पर जार्ज ने कहा, "हेली, तुमने टाम को बेड़ी और हथकड़ी से जकड़ दिया है यह बात मैं अभी जाकर पिता और माता से कहूँगा।" हेली बोला, "जाओ कहदो, हमारा उससे क्या बनता बिगड़ता है!" जार्ज ने फिर कहा, "हेली, क्या तुम जन्म भर यही नीच काम करते रहोगे? क्या सदा तुम नर-नारियों का क्रय-विक्रय करोगे और कैदियों की भाँति उन्हें हथकड़ी बेड़ी से जकड़ कर यन्त्रणा देते रहोगे? क्या इस व्यवसाय के करने में तुम्हें ज़रा भी शर्म नहीं आती?" हेली

बोला, "तुम लोगों जैसे अमीर आदमी जब तक दास-दासी ख़रीदना नहीं छोड़ेंगे तब तक हम लोगों का यह पेशा बन्द नहीं होगा। तुम लोग ख़रीद सकते हो तो फिर हम लोग बेच क्यों नहीं सकते ? जो ख़रीदें वह तो बड़े अच्छे, बड़े धर्मात्मा रहे, उनका तो कोई क़सूर ही नहीं और सारा दोष हम बेचनेवालों के सिर ?"

जार्ज ने कहा, "ईश्वर से यही मनाता हूँ कि मुझे कभी यह दास-दासियों के लेने बेचने का नीच काम न करना पड़े।" इतना कह कर जार्ज चला गया। हेली ने भी टाम को साथ लेकर गाड़ी हाँकने का हुक्म दिया। जार्ज जिस मार्ग से जा रहा था, टाम की टकटकी उसी ओर लगी थी। वह मन ही मन कहने लगा, "ईश्वर इस बालक को चिरंजीवी करें। केन्टाकी प्रदेश में इसके समान उच्च हृदयवाले थोड़े ही लोग निकलेंगे।" थोड़ी दूर आगे जाकर हेली ने टाम का बन्धन खोल दिया और उससे कहने लगा, "देखो भागने की फ़िक्र न करोगे तो अब तुम्हें हथकड़ी बेड़ी नहीं पहनावेंगे।" टाम ने कहा, "मैं कभी नहीं भागूँगा"

बारहवाँ परिच्छेद ।

सताया हुआ दास ।

दिन ढल चुका है । आकाश मेघाच्छन्न है । थोड़ी बूँदां-बाँदी भी हो रही है । बटोही सन्ध्या का आगमन देख कर होटल में आश्रय लेने लगे । एक होटल केन्टाकी प्रदेश के सदर रास्ते के बहुत निकट था । यहाँ सर्दव लोगों की आवाजाही लगी रहती थी। इस होटल के सामने की कोठरियाँ औरों की अपेक्षा अधिक गन्दी थीं । बड़े आदमियों के नौकर-चाकर तथा मज़दूरों ही से ये कोठरियाँ भरी हुई थीं । पीछे की ओर की कोठरी में राह की थकावट मिटाने के लिए दो आदमी बैठे हुए हैं । उनमें एक का नाम विलसन है । विलसन ने जवानी बिता कर बुढ़ापे में पैर रक्खा है । इसी से उसमें वह जवानी का जोश नहीं है । अधिक जाड़े के कारण वह सिकुड़ गया है । दूसरा आदमी वैसा भलामानस और उतना पढ़ा लिखा नहीं है । वह भेड़ें चरा कर अपनी ज़िन्दगी बिताता है ।

थोड़ी ही देर बाद भेड़ वाले ने इस प्रकार बात-चीत का सिलसिला शुरू किया ।

भेड़ वाला—आप ने यह विज्ञापन देखा है ?

विलसन—कैसा विज्ञापन ?

भेड़वाला—यह देखिए ।

इतना कह कर उसने विलसन के हाथ में एक छपा हुआ विज्ञापन

दे दिया। विलसन चश्मा चढ़ा कर उस विज्ञापन को इस प्रकार पढ़ने लगा:—

विज्ञापन।

"कुछ दिन हुए मेरा जार्ज नामक एक दास भाग गया है। क़द में साढ़े तीन हाथ लम्बा और रंग में गोरा है। अँगरेज़ी ख़ूब अच्छी बोलता और समझ लेता है। उसके पेट और गले पर बेतों की मार के निशान हैं। उसके बायें हाथ की कलाई पर लोहे की दहकती हुई छड़ से दाग़ कर H (एच) का चिह्न कर दिया गया है। जो कोई उसे पकड़वा देगा उसे ४००) रुपया इनाम दिया जायगा। यदि कोई उसे जीता न पकड़ पावे तो मार कर कम से कम उसकी लाश हमारे यहाँ पहुँचा देने से भी उतना ही इनाम मिलेगा।"

विलसन यह विज्ञापन पढ़ कर कहने लगा—"मैं इस विज्ञापन में उल्लिखित ग़ुलाम को अच्छी तरह पहचानता हूँ। वह छः वर्ष तक मेरी अधीनता में काम कर चुका है। उसकी तीव्र बुद्धि, भलमनसी और सुशीलता देख कर मैं उस पर बहुत प्रसन्न था। उस आदमी ने पाट साफ़ करने के लिए अपनी अक़्ल से एक बड़ी अच्छी कल बनाई थी। उसकी बनाई हुई कल का बड़ा आदर हुआ। आज वह प्राय: सर्वत्र काम में लाई जाती है। कल बनाने का ठेका उसके मालिक को मिला हुआ है और इससे वह मालामाल हो गया है।"

भेंड़ वाला यह सुन कर अचम्भे में आ गया। वह बोला—"साहब! देखिए उसमें इतने गुण और यह अन्याय! आप लोगों की चाल-ढाल भी बड़ी अजीब है। आप लोग अपने ग़ुलामों को जितना दु:ख देते हैं उतना तो मैं अपनी भेड़ों को भी नहीं देता। ओह! आप लोगों के बड़े घरों की स्त्रियाँ अपने दास-दासियों की सन्तानों पर ज़रा भी दया नहीं दिखाती हैं। आप कहते हैं कि विज्ञा-

पन में जिस .गुलाम का ज़िक्र है वह बड़ा बुद्धिमान् है। उसने अपनी अक़्ल से एक कल बना डाली है। लेकिन उस तीव्र बुद्धि का उसे क्या फल मिला ? कल के बनाने का ठेका मालिक को मिला और उसके सद्गुणों के बदले में मालिक ने लोहे की छड़ से उसका हाथ दाग दिया ! वाह री भलमनसी !" वहीं एक तीसरा आदमी और बैठा था। वह कहने लगा—"इस में बेजा क्या किया। .गुलाम पर मालिक का अधिकार है, उसके साथ चाहे जैसा व्यवहार करे। .गुलाम मालिक की मर्ज़ी के मुताबिक चलें तो क्यों मारे जायँ, पर गोरे दास सहज में दुरुस्त नहीं होते।" इस आदमी की बात समाप्त न होने पाई थी कि होटल के दरवाज़े पर एक गाड़ी आ लगी। उसमें से बहुत बढ़िया कपड़े पहने हुए एक गोरा नवयुवक उतर कर होटल में आया, विलसन आदि जहाँ बातें कर रहे थे, वहीं वह पहुँच गया। उसने घर के दरवाज़े पर चिपका हुआ वह विज्ञापन देख कर अपने दास से कहा—"जिम ! कल उस होटल में जिस आदमी को देखा था वही इस विज्ञापन वाला .गुलाम जान पड़ता है।" जिम बोला—"जी हाँ। उसे पकड़ लेता तो इनाम पाता। पर पहले तो इस विज्ञापन का हाल ही न मालूम था।"

फिर नवागन्तुक युवक ने होटल के मालिक को अपना नाम हेनरी बटलर बतलाया और रात भर ठहरने के लिए एक अलग कमरे का प्रबन्ध कर देने को कहा। होटलवाला उधर अलग कमरे का प्रबन्ध करने चला गया, इधर विलसन साहब इस नवागन्तुक के चेहरे को बारम्बार घूर कर सोचने लगे कि, मैंने इसे कहीं न कहीं देखा है। यह परिचित सा जान पड़ता है। विलसन के मन की बात नवागन्तुक ताड़ गया और उसके पास जाकर बोला—"कहिए साहब पहचानते हैं ? मैं बेकलैंड ग्राम का रहने वाला बटलर हूँ।" विलसन

कुछ ठीक न कर सका इसकी बात का क्या उत्तर दें पर सभ्यता के लिहाज़ से बोला—"पहचानता हूँ।" फिर बट्लर उसका हाथ पकड़ कर उसे अपने एकान्त कमरे में ले गया। कमरे के किवाड़ भीतर से बन्द कर लिये और विलसन के मुँह की ओर ताकने लगा। कुछ देर बाद,—

विलसन—जार्ज?

बट्लर—जी हाँ।

विलसन—मुझे कभी सन्देह नहीं हुआ कि तुम ऐसे गुप्त भेष में आये हो।

बट्लर—अच्छा कहिए विज्ञापन पढ़ कर मुझे कोई मेरे इस भेष में पहचान सकता है?

विलसन—जार्ज, तुमने बड़े ही भयङ्कर मार्ग पर पैर रक्खा है। मैं तुम्हें कभी ऐसा करने की सलाह न दूँगा।

जार्ज—इसके सिवा और कोई चारा ही नहीं है।

विलसन—तुम्हारे इस प्रकार भागने पर मुझे बड़ा दुःख हुआ।

बट्लर—मैं तो तुम्हारे दुःख का कोई सबब नहीं देखता!

विलसन—क्यों तुम क्या नहीं जानते कि तुम अपने देश-प्रचलित क़ानून के विरुद्ध जा रहे हो?

जार्ज—मेरा देश? कहाँ है मेरा देश? क्या इस पृथिवी पर कोई ऐसा स्थान भी है जिसे मैं अपना देश कह सकूँ? मेरा देश क़ब्रस्तान है—जहाँ मुझे समाधि मिलेगी वही मेरा देश है। ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि शीघ्र ही मुझे उस देश में पहुँचा दे।

विलसन। राम! राम! जार्ज, मुँह से ऐसी बात निकालना बाइबल के विरुद्ध है; अतएव धर्म-विरुद्ध है। मैं इससे इन्कार नहीं करता कि तुम्हारा मालिक बड़ा अत्याचारी है। पर बाइबल की आज्ञा

को मानो तो दास-दासियों को मालिक के वशीभूत होकर रहना पड़ेगा ।

बटलर—विलसन, दासत्व-प्रथा के समर्थन में बाइबल या अन्य किसी धर्म-शास्त्र की दुहाई मत दो । यदि यह दासत्व-प्रथा सी घृणित प्रथा भी बाइबल के मत से ठीक है तो लानत है उस बाइबल को—मेरी सौ सौ ठोकरें उस बाइबल पर ! ऐसी बाइबल का नाम संसार से जितनी जल्दी मिट जाय उतना ही अच्छा । मैं सर्व-शक्तिमान् परमात्मा से जिज्ञासा करता हूँ कि अपनी स्वाधीनता की रक्षा के लिए और अत्याचार से अपना निस्तार करने के लिए भागना क्या धर्म-विरुद्ध है ? मुझे विश्वास है कि मेरा यह कार्य ईश्वर की दृष्टि में कभी धर्म-विरुद्ध न होगा ।

विलसन—तुम पर जैसे जैसे घोर अत्याचार हुए हैं उनसे तुम्हारा यों जोश में आ जाना, तुम्हारे मन में ऐसे भावों का उठना स्वाभाविक है । पर, फिर भी, मैं तुम्हारे इस कार्य्य को धर्मानुकूल नहीं कह सकता । क्या तुम्हें नहीं मालूम है कि ईसाई धर्म के महात्माओं ने मनुष्य को अपनी भली बुरी चाहे जैसी स्थिति हो उसी में सन्तुष्ट रहने का उपदेश दिया है ? हम सबको अपनी अपनी स्थिति में सन्तुष्ट रहना चाहिए ।

जार्ज—ठीक है, मैं भी तुम्हारी भाँति स्वाधीन होता तो अपनी स्थिति में ही सन्तुष्ट रहता । मनुष्य धनी हो अथवा दरिद्र, यदि प्रकृति के दिये हुए मनुष्य के स्वाभाविक अधिकार उससे कोई न छीने तो वह ईश्वर पर भरोसा करके सन्तोष कर सकता है । पर मनुष्य को प्रकृति तो मनुष्य की दी जाय और उसे जीवन बिताना पड़े पशुओं का सा और मनुष्य के स्वाभाविक अधिकारों से उसे सर्वथा वञ्चित रक्खा जाय तो ऐसी दशा में सृष्टिकर्त्ता की करुणा में उसे अवश्य ही संशय

होने लगेगा। तुम लोगों को शर्म तो नहीं आती कि प्रमाण देकर ग़ुलामों को सन्तुष्ट-चित्त रहने की सीख देते हो। तुम्हारे स्त्री-पुत्रों को तुमसे छीन कर यदि कोई जहाँ तहाँ बेच डाले तो क्या फिर भी तुम सन्तुष्ट बने रहोगे?

विलसन वटलर नामधारी गुप्तवेशी जार्ज की ऐसी बातें सुन कर एक दम अचम्भे में आ गया। मुँह से बात न निकली। थोड़ी देर बाद कहने लगा, "जार्ज! मैंने सदैव तुम्हारे साथ मित्र का सा व्यवहार किया है। तुम्हें विपत्ति से बचाने की चेष्टा की है। पर अब मैं देखता हूँ कि तुम विपत्ति के घोर समुद्र में कूद रहे हो। पकड़े गये तो फिर तुम्हारे बचने की क्या सूरत है? तब तो इससे भी अधिक दुर्दशा में पड़ोगे। ताज्जुब नहीं कि तुम्हारा मालिक तुम्हें जान से भी मार डाले।"

जार्ज—"विलसन, यह मैं ख़ूब जानता हूँ। पर पकड़े जाने पर मेरे छुटकारे का उपाय मेरी जेब में है।" यह कह कर उसने पाकेट से पिस्तौल निकाल कर कहा, "यदि पकड़ा गया तो इसी पिस्तौल से तुम लोगों के इस केन्टाकी प्रदेश में साढ़े तीन हाथ जगह लेकर दासत्व-शृङ्खला से इस शरीर को मुक्त करूँगा।"

विलसन—जार्ज, तुम तो बिलकुल सिड़ी हो गये! ओह! कैसी भयङ्कर बातें कर रहे हो! तुम आत्म-हत्या करना चाहते हो? तुम अपने देशीय क़ानून के विरुद्ध काम करने पर तुले हुए हो।

जार्ज—फिर तुम मेरे देश का नाम लेते हो? कहाँ है मेरा देश? यह तो तुम्हारा देश है। क्रीत-दासी के गर्भ से उत्पन्न मेरे ऐसे मनुष्यों के लिए क्या कहीं स्वदेश है? हम लोगों के लिए न अपना देश है, न अपना घर है; हम लोगों का स्त्री पर कोई अधिकार नहीं; यहीं तक नहीं, हमारे शरीर पर भी हमारा अधिकार नहीं है। बिना अपराध

मालिक हमें हज़ार बार पीट सकता है, पर ऐसा कोई क़ानून नहीं जो इससे हम लोगों के शरीर की रक्षा कर सके। देश में जितने क़ानून हैं सभी हम लोगों के नाश के लिए हैं। ये सब क़ानून हम लोगों के बनाये हुए नहीं हैं। न उनके बनाने में हम लोगों की राय ही ली गई है। फिर ऐसे क़ानून के विरुद्ध चलने से क्या कोई कभी धर्म-भ्रष्ट होता है? विलसन, मुझे बिल्कुल गँवार मत समझो। चौथी जुलाई की वक्तृता मुझे ख़ूब याद है। तुम्हारे क़ानून-विधाता साल में एक बार कहा न करते हैं कि प्रजा की सम्मति के बिना राजा या शासन-कर्त्ता कोई क़ानून नहीं बना सकते। पर, तुम्हीं बतलाओ, यहाँ जितने क़ानून प्रचलित हैं उनमें किसी क़ानून के बनने या प्रचार करने के पहले क्या कभी उसके विषय में हम लोगों का मत लिया गया है? जिस क़ानून के बनाने में हम लोगों का मत नहीं लिया गया उस क़ानून को मानने के लिए मैं कभी मजबूर नहीं हूँ। विलसन! मेरी जो जो दुर्दशायें हो चुकी हैं उन सब का तुम्हें पता नहीं है, इसी से तुम ऐसा कहते हो। जन्म से आज तक मैंने कैसे कैसे दुःख झेले हैं इस का वर्णन करना असम्भव है। तुम्हारे इस केन्टाकी प्रदेश के एक रईस अँगरेज़ के वीर्य से मेरा जन्म हुआ था। मेरी माता उस गोरे की क्रीतदासी थी। क्रमशः उसके सात सन्तानें हुईं। मैं ही उन सबमें छोटा हूँ। मेरी ६ बरस की उम्र में उस पाषाण-हृदय गोरे की मृत्यु हो गई। उसका कर्ज़ा अदा करने के लिए उसके घर की अन्यान्य वस्तुओं के साथ हम लोगों का भी नीलाम हुआ। एक एक करके मेरे ६ भाई-बहिनों को भिन्न भिन्न लोगों ने ख़रीदा। इसके बाद मेरी माता मुझे छाती से चिपटा कर रोते रोते मेरे वर्त्तमान मालिक से बोली, "महाशय, मुझे और इस बालक को एक साथ ख़रीदिए। मेरी छाती से इस बालक को अलग न कीजिए।" वह नर-पिशाच भला क्यों मानता,

उसने बारम्बार मेरी माता को ठोकरों से पीछे हटा कर उसकी छाती से मुझे छीन लिया, और तुरन्त मुझे बाँध कर अपने घर की ओर ले आया। मैं एक बार आँख उठा कर माता की ओर देखने भी न पाया। दो तीन बार केवल उसके आर्त्त-नाद के शब्द मेरे कानों में पड़े। इसके कई दिनों बाद मेरा मालिक मेरी बड़ी बहिन को उस व्यक्ति से, जिसने उसे नीलाम में ख़रीदा था, मोल ले आया। इस बात से पहले मैं बड़ा प्रसन्न हुआ। सोचने लगा कि, बड़ी बहिन के साथ रह कर मातृ-वियोग का शोक कुछ हलका पड़ जायगा। पर शीघ्र ही मेरी वह आशा निष्फल हुई। बड़ी बहिन मेरी माता की भाँति बड़ी सुन्दरी थी। धर्म-अधर्म का उसे बड़ा ख़याल था। मेरा मालिक उसे उपपत्नी बनाने की बहुत चेष्टा करने लगा। पर वह किसी तरह धर्म छोड़ने पर राज़ी न हुई। मालिक को इससे बड़ा क्रोध आता और वह उसे नित्य बेतों की कड़ी मार मारता था। एक दिन उसकी मार देख कर मैं शोक और दुःख से अधीर हो गया। अन्त में मेरे मालिक ने जब देख लिया कि मेरी बहिन जान निकल जाने पर भी धर्म नहीं छोड़ेगी तो उसे किसी दक्षिण-देशीय अँगरेज़-बनिये के हाथ बेच डाला। पर अब वह कहाँ है, जीती है या मर गई, यह मुझे मालूम नहीं है। इस जन्म में फिर उससे भेंट होने की आशा नहीं है। इसके बाद मैं अकेला उस कठोर-हृदय मालिक के यहाँ रहने लगा। कभी कभी मुझे भूखे ही दिन काटने पड़ते। कभी कभी उसकी खा कर बाहर फेंकी हुई हड्डियों को भूख मिटाने के लिए चूसता था। पर, मैं भोजन अथवा और किसी शारीरिक कष्ट की परवाह न करता था।

दिन रात माता और भाई बहिनों के शोक में पागल हुआ रहता था। मुझे ध्यान आता था कि मुझे प्यार करने वाला, मुझ पर दया करने वाला, मुझ से मिष्ट बोलने वाला अब इस संसार में कोई नहीं

है। बचपन में मेरी माता कहा करती थी कि विपद में ईश्वर का स्मरण करने से वह सब दुःख दूर कर देता है। माता की वह बात याद करके मैं कभी कभी ईश्वर को पुकारता था। इससे मन में कुछ आशा का सञ्चार होने से जीता रहा। कुछ दिनों बाद मालिक ने मुझे तुम्हारे कारख़ाने में लगा दिया। तुम्हारे यहाँ ही पहले पहल इस जन्म में मैंने दया और स्नेह का मुँह देखा। तुम्हीं ने पहले मेरे लिखने पढ़ने का सुभीता कर दिया था, और तुम्हारे कारख़ाने में ही रहते समय शेल्बी साहब की दासी इलाइजा से मेरा विवाह हुआ था। क्रीत-दासी होने पर भी इलाइजा का हृदय स्वच्छ और धर्म-पूर्ण था। उसके उस अकृत्रिम और अकपट प्रणय ने मुझ में फिर जान डाल दी। उसके सहवास से माता और बहिनों का शोक कुछ कुछ हलका होता गया। पर जब तक यह देश-प्रचलित घृणित क़ानून दूर न हो तब तक क्रीत-दासों को सुख की सम्भावना कहाँ? मेरे उस निर्दयी मालिक से मेरा यह सुखी जीवन बिताना नहीं देखा गया। वह द्वेषाग्नि से जल गया और इलाइजा को छोड़ कर उसने मुझे अपने घर की अपनी पुरानी उपपत्नी मीना नाम की क्रीत-दासी से विवाह करने की आज्ञा दी। भला मैं इलाइजा को छोड़ कर मीना से कैसे विवाह करता? क्या यह काम धर्म वा बाइबल के मत के अनुकूल है? धिक्कार है तुम्हारे ईसाई धर्म को; धिक्कार है तुम्हारी बाइबल को और सौ सौ धिक्कार तुम्हारे देश-प्रचलित क़ानून को! इस घृणित क़ानून की आड़ में नित्य लाखों मनुष्यों का सर्व-नाश हो रहा है और तुम मुझे इसी घृणित क़ानून का पालन करने को समझाते हो? यदि सचमुच ही इस संसार की रचना करने वाला कोई न्यायी मङ्गल-मय ईश्वर है तो इस घृणित क़ानून के विपरीत चल कर मैं उसका प्रिय-कार्य साधन कर रहा हूँ। मैं भाग कर

कठोरताओं को सदा आश्रय दिया है। केवल दयालु परिवार मिलने से ही किसी दास का कोई उपकार नहीं हो सकता।

विलसन के हृदय पर जार्ज की इन बातों का बड़ा असर हुआ। उसने पाकेट से कुछ नोट निकाल कर जार्ज के हाथ में दिये और बोला—"तुम ये रुपये लो। इस अवसर पर ये रुपये तुम्हारे बहुत काम आवेंगे।" जार्ज ने रुपया लेने से इनकार करके बड़ी नम्रतापूर्वक कहा—"विलसन, तुम ने समय समय पर मेरा बहुत उपकार किया है। मैं तुम से और रुपये नहीं लेना चाहता। यों रुपये देते रहने से तुम स्वयं ऋण में फँस जाओगे।" पर विलसन ने उसकी एक न मानी और नोट ज़बरदस्ती उसकी पाकेट में डाल दिये। लाचार जार्ज को लेने पड़े। जार्ज ने विलसन से कहा—"यदि मैं कभी तुम्हारे रुपये चुकाने लायक़ हुआ तो तुम्हें फिरते लेने पड़ेंगे।"

विलसन—तुम कितने दिनों इस प्रकार गुप्त भेष में रहोगे? तुम्हारे साथ यह काला आदमी कौन है?

जार्ज—यह आदमी भी ग़ुलाम था, एक बरस हुआ यह किसी तरह भाग कर कैनाडा चला गया था, पर इसके भागने से इसका मालिक क्रोधान्ध होकर इसकी माता को दिन रात मारने और सताने लगा। माता के कष्ट की बात सुन कर उसे चुपके से भगा ले जाने के लिए यह फिर आया है।

विलसन—तो क्या उसकी माता का उद्धार कर लाये?

जार्ज—अभी सुयोग नहीं मिला। पहले यह मुझे किसी निरापद स्थान में पहुँचा कर फिर अपनी माता के उद्धार के लिए इस प्रदेश में आकर उसे ले जायगा।

विलसन—यह तो बड़ा हिम्मत-बहादुर आदमी है भाई! पर जार्ज देखना तुम बड़ी सावधानी से रहना, कहीं पकड़ न जाना।

जार्ज—मैं दासत्व से छूट चुका हूँ। भाग कर बच गया तो भी स्वाधीनता हाथ है और पकड़ा गया तो भी समाधि-स्थान में जाकर पूरी स्वाधीनता से सुख की नींद सोऊँगा। यदि तुम कभी सुनो कि मैं पकड़ा गया हूँ, तो अपने मन में निश्चय समझ लेना कि मैं मर गया हूँ।

इन सब बातों के बाद विलसन ने जार्ज से विदा माँगी। पर घर के बाहर पैर रखते ही जार्ज ने उसे फिर पुकार कर कहा—"विलसन! मेरी एक बात सुनते जाओ। यदि मैं पकड़ा गया तो अवश्य ही मेरी जान जायगी और मालिक मुझे मुर्दे कुत्ते की तरह जल में फेंक देगा। उस समय इस संसार में मेरे लिए मेरी स्त्री के सिवा और कोई एक बून्द आँसू भी न गिरावेगा। मैं तुम्हें अपना एक फोटो देता हूँ। मेरी स्त्री से भेंट हो जाय तो उसे दे देना और कहना कि जीते मरते मैं उसी का हूँ। उसे बच्चे को लेकर कैनाडा जाने को समझा देना और सन्तान को दासत्व की शृङ्खला से बचाये रखने की चेष्टा करने को मेरी ओर से अनुरोध कर देना। उससे कहना कि दासों के मालिक चाहे जितने दयालु हों पर उनसे दासों की दुःख-यन्त्रणा दूर नहीं हो सकती। कारण, मालिक के ऋण के लिए उनके दूसरों के हाथ में जाने का सदा ही खटका बना रहता है।"

विलसन—तुम्हारी स्त्री से भेंट होने पर मैं अवश्य ये सब बातें कहूँगा। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह निर्विघ्न तुम्हें निरापद स्थान पर पहुँचने में समर्थ करें। तुम सदा ईश्वर का स्मरण करते रहना।

जार्ज—क्या संसार में कोई ईश्वर है? संसार में सदा यह अविचार और अन्याय देख कर मेरे मन में शंका उठती है कि इस संसार में न्यायी परमेश्वर नहीं है। हाँ यदि कोई ईश्वर हो भी तो वह तुम्हीं लोगों का रक्षक है। मेरा ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास नहीं होता।

विलसन—जार्ज ऐसी बातें मुँह से न निकालो। मन में कभी ऐसे संशय को स्थान मत दो। परमेश्वर प्रत्यक्ष इस संसार का शासन करता है। वह सर्वत्र व्यापक है। उस पर विश्वास करो, अपने को उसी के सहारे छोड़ कर न्याय और सत्पथ पर बढ़ते जाओ। निश्चय ही उसकी करुणा से तुम निर्विघ्न निरापद स्थान पर पहुँच जाओगे। इस संसार में व्यक्ति-विशेष या जाति-विशेष को जो कष्ट और यन्त्रणायें मिलती हैं वह सब उनके कर्मों का फल है। मनुष्यों को कभी कभी अपने बाप दादों के पाप तक का फल भोगना पड़ता है। मङ्गलमय ईश्वर पर अटल विश्वास, पूर्ण भरोसा और उसके हाथों में आत्मसमर्पण किये बिना उन कर्मों के फल से छुटकारा नहीं मिल सकता।"

जार्ज विलसन की बात सुन कर बोला—"मैं तुम्हारे इस उपदेश के अनुसार कार्य करने की चेष्टा करूँगा।"

यह कह कर एक दूसरे से विदा हुए।

—:०:—

तेरहवाँ परिच्छेद ।

दास-दासियों का नीलाम ।

हेली टाम को साथ लिये हुए चलते चलते एक नगर के निकट पहुँचा। मार्ग में दोनों ही चुप थे—कोई किसी से कुछ न बोलता था। दोनों अपनी अपनी धुन में मस्त थे। देखिए, इस संसार में लोगों की प्रकृति में कितना निरालापन दिखाई पड़ता है। दोनों एक ही जगह बैठे हुए थे। आँखों के सामने का दृश्य भी दोनों के लिए एक ही सा था। पर विचारों की लहर एक की दूसरे से बिलकुल ही न्यारी थी। उनके भिन्न भिन्न विचारों का नमूना देखिए। हेली सोच रहा था कि टाम ख़ूब लम्बा-चौड़ा और ताक़तवर मर्द है। इसे दक्षिण देश में बेचूँगा तो कम से कम दो तीन सौ रुपये नफ़े के तो ज़रूर ही मिल जायँगे। फिर तरङ्ग जो उठी तो सोचने लगा कि दास-व्यवसायियों में मेरे से दयालु मनुष्य विरले ही निकलेंगे। कारण, मैंने थोड़ी ही दूर आकर टाम के हाथ खोल दिये, केवल पैर भर बाँध रक्खे हैं। फिर संसार का व्यवहार सोच कर मन ही मन कहने लगा कि मैंने टाम के साथ इतनी भलमन्सी की है पर वह अकृतज्ञ क्रीतदास है, वह कभी मेरी इस भलमनसी की दाद न देगा।

अब टाम के विचार देखिए, वे और ही तरह के थे। टाम सोच रहा था कि मङ्गलमय परमात्मा इस संसार का शासन करता है। इसलिए अपने को उसी पूर्ण ब्रह्म के हाथों में सौंप देना चाहिए; फिर किसी अमङ्गल का कोई डर न रहेगा। मनुष्य ईश्वर के उद्देश्य

को समझने में सर्वथा असमर्थ है। इसी से वह जीवन की किसी किसी घटना को विपद या दुर्घटना समझ बैठता है। पर जब मनुष्य का मोह दूर हो जाता है तब वह समझने लगता है कि ईश्वर जो कुछ करता है सब उसके भले के लिए ही करता है। ऐसे ही भावों के सहारे टाम अपने उमड़े हुए शोक को रोकता था। टाम और हेली के ये चिन्ता-स्रोत अभी समाप्त न होने पाये थे कि वे सामने के नगर में आ पहुँचे। वहाँ हेली ने अपनी जेब से एक गज़ट निकाला और बड़ी तत्परता से उसमें छपा हुआ एक विज्ञापन इस प्रकार पढ़ने लगा।

"नीलाम"

अदालत की आज्ञानुसार आगामी मङ्गलवार २० वीं फ़रवरी को वाशिङ्गटन नगर की दीवानी कचहरी के सामने परलोक-वासी ब्रान्सन साहब का ऋण चुकाने के लिए नीचे लिखे हुए दास-दासी सबसे ऊँची डाक बोलनेवाले के हाथ बेचे जायँगे

नीलाम की सूची।

नम्बर	दास-दासी	उम्र
१	हागर (दासी)	६० बरस
२	जान	३० ,,
३	बेञ्जमिन	२१ ,,
४	सेल	२५ ,,
५	अलबर्ट	१४ ,,

दस्तख़त

२० जनवरी १८५० } सेमुअल नरिश
टामस फ्लिंट
मुन्शी अदालत।"

यह विज्ञापन पढ़ कर हेली ने टाम से कहा—"यहाँ हम और

कई दास-दासी ख़रीद करेंगे। इसलिए तुम्हें थोड़ी देर को जेलखाने में रख कर हम कचहरी जाते हैं।" यह कह कर हेली टाम को जेल में रख कर आप नीलाम घर की ओर चला गया।

दोपहर हो चली है। कचहरी में लोगों की भीड़ जमा हो रही है। विचारालय से थोड़ी ही दूर पर बिना छत का लोहे की सीकों से घिरा हुआ माल गोदाम सरीखा एक घर था। पैरों की धूल से वह घर भरा हुआ था। इस घर के एक कोने में कई काले दास-दासी बैठे हुए बातें कर रहे थे। इनमें हागर नाम की जो दासी थी, उसकी उम्र अस्सी से ऊपर जान पड़ती थी। पर असल में वह ६० से अधिक की न थी। दिन रात की बे हिसाब मेहनत और भाँति भाँति के कष्टों तथा भूख के दुःख से वह ऐसी हाड़ हाड़ हो गई थी। चलने में लकवे के रोगी की भाँति इसका सारा शरीर काँपता था। इस हतभागिनी के बग़ल में एक १४ बरस का लड़का बैठा हुआ था। हागर के और सब लड़के लड़कियों को उसके मालिक ने पहले ही जहाँ तहाँ बेच डाला था। कम से कम १०-१२ सन्तानों में केवल यही लड़का आज तक इसके साथ है। हागर बालक के गले को जकड़े बैठी थी। जब कोई ख़रीदार बालक के शरीर की जाँच करने आता तो यह बुढ़िया चौंक जाती और कहती, "हम दोनों एक साथ ही बेचे जायँगे।" इतना कह कर बालक को अधिक ज़ोर से जकड़ लेती थी। वहीं तीस वर्ष का एक और दास बैठा था वह बोला, "हागर मौसी, तुम क्यों डरती हो। मुन्शी जी तो कह चुके हैं कि वह तुम्हें और अलबर्ट को एक ही साथ बेचने का यत्न करेंगे।"

इसी समय हेली वहाँ आया। वह एक एक के शरीर की जाँच करके देखने लगा। उसने हर एक के मुँह में अँगुली डाल कर पहले दाँत गिने। फिर खड़ा करके शरीर की लम्बाई नापी। शरीर को जगह

जगह से टो टो कर देखने लगा। अन्त में देखते दिखाते हागर के पास पहुँचा और उसके चौदह वर्ष के पुत्र अलबर्ट की जाँच करने के लिए झटके से उसका हाथ खींच कर उठाया। यह देख कर वृद्धा माता बोल उठी, "साहब, हम दोनों साथ ही बेचे जायँगे, मैं अभी .खूब काम काज करने लायक़ हूँ।" हेली ने हँस कर पूछा, "तम्बाकू के खेतों या चाह के बाग़ीचों में काम कर सकेगी?" स्त्री ने कहा, "हाँ, हाँ, .खूब कर सकूँगी।" हेली ने हँसते हुए एक दूसरे ख़रीदार के निकट जाकर कहा, "हम इस छोटे छोकड़े को लेना चाहते हैं। लड़का .खूब मज़बूत है।" इस पर उस दूसरे ख़रीदार ने कहा, "मैंने सुना है कि बुढ़िया और लड़का दोनों साथ ही बेचे जायँगे।" तब हेली बोला, "बुढ़िया को तो कोई एक छदाम भी नहीं देगा, बयार से इसकी कमर टेढ़ी हो गई है। एक आँख की कानी है। ऐसी मरी हत्या को लेकर कौन अपनी जमा ग़ारत करेगा। हमें तो कोई मुफ़्त में दे तो भी हम नहीं लें। अगर बालक और बुढ़िया एक लाट में बिके तो बालक के दाम भी घट जायँगे"। हेली की यह सब बातें समाप्त न होने पाई थीं कि नीलाम का घंटा बजा। अदालत के मुन्शी सेमुअल नरिश और टामस फ्लिट नाक पर चश्मा चढ़ाये नीलाम-घर में आये। नीलाम वालों ने डाक की हाँक लगाई। वृद्धा हागर ने अलबर्ट से कहा, "बेटा! मुझे पकड़ कर बैठ जा। जिससे हम दोनों एक ही में बिक जायँ।" बालक ने आँखों में आँसू भर कर कहा, "मा, तू नाहक यों क्यों कर रही है। हम लोगों को एक साथ नहीं बेचेंगे।" हागर बोली, "ज़रूर बेचेंगे, ज़रूर, तू मुझे पकड़ कर बैठ जा।" कुछ देर बाद जब कई नीलाम हो चुके तब उस बालक को हाथ पकड़ कर खड़ा किया। यह देख बुढ़िया चिल्ला कर बोली, "दोनों को एक साथ बेचो। हम दोनों को एक साथ नीलाम करो।" पर नीलाम वालों ने

धक्का देकर उस बेचारी बुढ़िया को दूर ढकेल दिया। बालक की डाक आरम्भ हुई। एक दो तीन के बाद अन्त में हेली ने बालक को ख़रीदा। तब बालक की माता ने हेली के पास आकर कहा, "साहब, मुझे भी आप ही ख़रीद लीजिए। बालक से अलग होने पर मेरी जान नहीं बचेगी।" हेली बोला, "तुम्हें ख़रीदा जाय चाहे न ख़रीदा जाय, मरोगी तुम जल्दी ही। तुम्हारे मरने में अब ढेर दिन नहीं हैं।" उसके बाद उस बुढ़िया की डाक भी आरम्भ हुई। एक आदमी ने बहुत थोड़े दामों में उसे ख़रीद लिया। इस पर बुढ़िया ने बड़ा रोना मचाया। हाय हाय कर कहने लगी, "हाय मेरे एक बच्चे को भी मेरे सङ्ग नहीं छोड़ा। मालिक ने मरते समय कह दिया था कि इस शेष सन्तान को वह मेरी गोद से अलग नहीं करेंगे। पर हाय! लोगों ने उसे भी न छोड़ा। मुझसे छीन लिया।" उनमें एक बूढ़ा ग़ुलाम था। उसने कहा, "हागर मौसी, ईश्वर की मर्ज़ी ऐसी ही समझ कर सन्तोष करो। अब रोने धोने से क्या होगा। हम लोगों के लिए और कोई चारा नहीं है।" पर हागर को शान्ति कहाँ? वह और अधिक रोने लगी, बोली, "बतलाओ ईश्वर कहाँ है? एक बार उसे देखूँ तो सही। एक एक करके तेरह लड़के मेरी गोद से छिन गये। पर ईश्वर ने इसका कुछ भी विचार न किया!" तब बालक अलबर्ट कातर होकर कहने लगा, "माँ, रोओ मत; अपने मालिक के साथ चली जाओ। यह लोग कहते हैं कि तुम्हें ख़रीदने वाला अच्छा आदमी है।" किन्तु उस शोक-सन्तप्त माता के मन को इतने से कब प्रबोध होता। उसने फिर दौड़ कर बालक को पकड़ लिया। पागल की भाँति चिल्ला कर कहने लगी, "यही मेरा आख़िरी लड़का है। मेरा सबसे छोटा बच्चा है। इसे छोड़ कर मैं कहीं नहीं जाऊँगी।" बड़ी मुश्किल से हेली ने उसके हाथ से बालक को छीन कर अपना

रास्ता लिया। इधर वह स्त्री अचेत होकर पड़ रही। इस नीलाम में हेली ने उस बालक के सिवा और भी चार ग़ुलामों को ख़रीदा था। उन्हें साथ लेकर जेल में आया। वहाँ से टाम को लेकर सब को नदी की ओर ले गया। फिर दक्षिण देश की ओर जाने के लिए हेली अपने दासों सहित एक ष्टीमर पर सवार हुआ।

जहाज़ के ऊपरी हिस्से में दस बारह सजे सजाये कमरे थे। इन कमरों को धनाढ्य यात्रियों ने किराये पर लिया था। हँसी-ठट्ठे और दिल्लगी-मज़ाक से ये कमरे गूँज रहे थे। एक कमरे में हँसी के फुहारे से छूट रहे थे, जान पड़ता था मानों इस कमरे में किसी नये दुलहे-दुलहिन का दख़ल है। एक दूसरे कमरे में सन्तान-वत्सला माता अपने बच्चे का मुख चूम चूम कर आनन्द-मग्न हो रही थी। किसी किसी कमरे में शूर्पनखा की बहिनें अँगरेज़-कुलकामिनियाँ कई अन्य यात्रियों को अपने से अच्छे कमरों में बैठे देख कर अपने स्वामियों से लड़भिड़ रही थीं। अपने भाग्य को कोसती थीं और कार्य-कारण-भाव की कड़ी मिला कर समालोचना करते हुए अन्त में अपने इस दुर्भाग्य की जड़ अपने वर्तमान स्वामी को ही ठहराती थीं। पर इस प्रकार के सजे हुए कमरों और इस आनन्द-बहार को देख कर मन केवल क्षण भर के लिए आनन्दित हो सकता है। यह बाहरी ठाट-बाट, यह बनाव-चुनाव और कारीगरी के दृश्य मनुष्य के हृदय में कोई जीती जागती कविता की तसवीर नहीं खींच सकते।

पाठक! हमारे साथ आइए, हम आपको एक बार जहाज़ के गोदाम का दृश्य दिखावें। ज़रा लोहे की ज़ञ्जीर से जकड़े हुए अपनी प्यारी पत्नी तथा बाल-बच्चों से जन्म भर के लिए बिछुड़े हुए शोक-विह्वल टाम के मुख की ओर देखिए। माता की गोद से बिछुड़े हुए मातृ-वत्सल चतुर्दश-वर्षीय बालक की आहें तनिक कान देकर सुनिए। साथ ही हेली के दूसरे

चार ग़ुलामों की ओर तनिक ध्यान देकर देखिए कि वह क्या कह और कर रहे हैं। यहां आप को जीती-जागती कविता की छवि दिखाई देगी। इस प्रत्यक्ष काव्य के रस से आप का हृदय भर उठेगा।

हेली के चारों ग़ुलाम इस अन्धेरी गोदाम में बैठ आँसू बहा रहे हैं, और एक दूसरे को अपने दुःख की मार्मिक कहानी सुना सुना कर धीरज धरने की चेष्टा कर रहे हैं। इनमें तीस वर्ष की उम्र का एक जान नामक ग़ुलाम था। उसने टाम के ज़ञ्जीर से जकड़े हुए घुटनों पर अपना हाथ टेक कर कहा, "भाई मेरी स्त्री यहाँ से थोड़ी ही दूर पर रहती है। मेरे बिकने के विषय में उसे कुछ भी नहीं मालूम है। बहुत जी चाहता है कि जन्म भर के लिए चलते चलाते एक बार उसे देख जाऊँ। अब इस ज़िन्दगी में तो फिर उससे भेंट नहीं होगी।" इतना कहने के बाद जान रोने लगा, आँसुओं से उसकी छाती भीग गई। टाम उसे ढाढ़स दिलाने का यत्न करने लगा; पर उसकी समझ ही में न आया कि जान को कैसे समझावे। इसी समय एक बालक जहाज़ के कमरे से उतर कर नीचे आया। वह इन ग़ुलामों को देखते ही अपनी मा के पास दौड़ा गया और कहने लगा, "माँ, इस जहाज़ के गोदाम में चार ग़ुलाम बँधे बैठे हैं। वे बहुत रो रहे हैं।" बालक की माता ने उसके मुँह से यह बात सुनकर बड़े खेद से कहा, "यह दासत्व-प्रथा हमारे देश के लिए बड़ा भारी कलङ्क है। जिस मनुष्य के हृदय है, वह क्या ऐसी शोचनीय स्थिति देख सकता है?" पास ही के कमरे में एक और अँगरेज़-स्त्री बैठी थी, आँखें उसकी बिल्ली की सी थीं। वह यह बात सुन कर बोल पड़ी, "आप की समझ में क्या दासत्व-प्रथा बहुत बुरी है? मैं तो नहीं समझती कि इस में केवल दोष ही दोष हैं, कोई गुण नहीं है, इससे सर्वथा अपकार ही होता है, कोई उपकार नहीं होता। दासत्व-प्रथा में गुण भी हैं दोष भी

हैं। भलाई भी है, बुराई भी है। मान लीजिए कि आज ही सारे .गुलामों को .गुलामी की .जञ्जीर से मुक्त कर दिया गया तो क्या आप कह सकती हैं कि इससे उन्हें अधिक सुख मिलेगा ! आप अच्छी तरह .गौर से देखिए तो आप को मालूम हो जायगा कि .गुलाम लोग जिस हालत में हैं उसे वे बहुत पसन्द करते हैं, उसमें उन्हें मनमानी स्वच्छन्दता का आनन्द आता है। यदि इन्हें स्वाधीनता दे दी जाय तो इनकी दशा बहुत ही ख़राब हो जायगी।" इस सभ्य रमणी की बात सुन कर बालक की माता ने कहा, "यदि यह घृणित .गुलामी की चाल न होती तो माता की गोद से बालक को, और स्वामी से स्त्री को बिछुड़ कर ज़बरदस्ती दूसरे पुरुष के साथ न रहना पड़ता। इन सब भयानक नृशंस व्यवहारों को स्मरण करके हृदय काँप उठता है। आप एक बार विचार करके देखिए कि यदि आप की गोद से आप के बच्चे को कोई ज़बरदस्ती अलग कर दे तो आप को कितना अखरेगा, कैसा असहनीय कष्ट होगा ?"

बालक की माता की बात समाप्त होने पर वह सभ्य स्त्री हँस कर बोली, "जो स्त्रियाँ आप की भाँति हृदय के उच्छ्वास के वश में होकर काम करती हैं, उन में कई विषयों के गुणदोष की परख करने की शक्ति नहीं रहती। हृदय का उच्छ्वास विचारशक्ति को निस्तेज बना देता है और मनुष्यों के भले बुरे का ज्ञान हर लेता है। आप के हृदय में जो प्रेमभाव है, क्या काले दास-दासियों के हृदय में भी वैसे ही प्रेम का सञ्चार हो सकता है ? केवल अपने हृदय के अनुसार उनके सुख-दुःख और भले-बुरे का अन्दाज़ न कीजिए। .गुलामी की प्रथा पर मैंने बहुतेरी पुस्तकें पढ़ डाली हैं। इस विषय पर मेरी बहुत बड़े बड़े विद्वानों से बातचीत भी हुई है। मेरी समझ में, दासत्व-प्रथा में किसी प्रकार की कठोरता नहीं है। यदि .गुलामों को .गुलामी

की बेड़ी से मुक्त कर दिया जाय तो इसमें सन्देह नहीं है कि वे इससे भी अधिक आफ़त में पड़ जायँगे। मेरा तो ख़याल है कि ग़ुलामों की वर्त्तमान दशा बहुत अच्छी है।

यह सभ्य-स्त्री एक गोरे पादरी की स्त्री है। इस का स्वामी सिर से पाँव तक काले कपड़े पहने हुए पास ही खड़ा था। अपनी स्त्री को एक दूसरी स्त्री से दासत्व-प्रथा के सम्बन्ध में बातें करते देख कर उससे न रहा गया। उसने झट पाकेट से बाइबल की पोथी निकाली और इनके पास जाकर कहने लगा, "नाहक़ आप लोग तर्क-वितर्क कर रही हैं। ग़ौर से आप लोगों ने बाइबल पढ़ी होती तो इस झूठे तर्क-वितर्क की नौबत ही न आती! बाइबल में तो साफ़ साफ़ लिखा है कि कैनन देश के आदमियों को दासों के दास बन कर रहना पड़ेगा। दासत्व-प्रथा का विरोध करना क्या है बाइबल का विरोध करना है। और समझिए कि ईसाईधर्म का अपमान करना है। ऐसे धर्म-विरोधी नास्तिक-भावों को आप लोग कभी अपने हृदयों में स्थान न दीजिए। ध्यान से बाइबल पढ़िए, फिर इस में सन्देह ही नहीं रहेगा कि दासत्व-प्रथा ईश्वरीय आज्ञा है।"

पास ही एक लम्बा आदमी खड़ा हुआ इन लोगों की बातें सुन रहा था। पादरी साहब की बातें सुन कर उसने हँसते हुए वहाँ आकर कहा—"क्यों पादरी साहब! क्या सचमुच दासत्व-प्रथा ईश्वरीय आज्ञा है? तब तो हम सभी लोगों को एक एक दो दो ग़ुलाम ख़रीदने चाहिएँ।" फिर वही आदमी हेली से बोला—"सुन लीजिए भाई साहब! पादरी महाशय क्या कहते हैं। आप दासत्व-प्रथा को ईश्वरीय आज्ञा बतलाते हैं। यदि पादरी साहब की बात सच्ची हो तो इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं हो सकता कि अपनी इस नई आज्ञा का प्रचार करने के लिए ही ईश्वर ने ख़ुद आपको हमारे देश में भेजा

हैं। नित्य ही तो आप हज़ारों स्त्री-पुरुषों को यहाँ ख़रीदा वहाँ बेचा, यही कार्य कर महान् पुण्य लूट रहे हैं। न जाने आप कितनी ही माताओं की गोद से शिशुओं को छीन लेते हैं, कितनी ही स्त्रियों का सदा के लिए स्वामी से विछोह करा देते हैं। भाई साहब, आप सरीखे पुरुषों की तो देवताओं की सी पूजा होनी चाहिए।" हेली ने उत्तर दिया, "जनाब, हम बाइबल की कुछ परवाह नहीं करते। हमने तो अपनी ज़िन्दगी में कभी बाइबल पढ़ी नहीं। बाइबल पढ़ने का काम पादरियों का है। हमें तो दो पैसे के नफ़े से काम है, उसी के लिए रोज़गार करते हैं। इस पेशे में जब तक फ़ायदा है कभी नहीं छोड़ेंगे—चाहे बाइबल नहीं बाइबल का बाप कहे, नफ़ा होते यह काम नहीं छोड़ते। हाँ, अगर यह रोज़गार बाइबल के मत से भी ठीक है तो हम लोगों के लिए और भी अच्छा ही है।"

केन्टाकी प्रदेश के राजमार्ग के निकटस्थ होटल में जिस भेड़ वाले से विलसन की दासत्व-प्रथा के सम्बन्ध में बातें हुई थीं, यह लम्बा आदमी वही भेड़वाला है। यह भेड़ें चरा कर अपना जीवन-निर्वाह करता है इसी से पादरी साहब की तरह बाइबल का विशेष जानकार नहीं है। जब पादरी साहब ने बाइबल निकाल कर तर्क शुरू किया तब इसने हार मान ली और पास ही जो एक युवा पुरुष बैठा था उसके पास जा कर बैठ गया। उससे बोला—"क्यों साहब, क्या बाइबल में दास रखने की आज्ञा है? अभी पादरी साहब ने बाइबल के आधार पर बतलाया है कि काबुल देश के लोगों पर ईश्वर नाराज़ हैं इसलिए वे दासों के दास होंगे।" युवक पहले ज़रा मुस्कुरा कर बोला—"पादरी साहब ने काबुल नहीं कैनन कहा है।" फिर बड़ी घृणा प्रकट करके कहने लगा—"भाई, इन सब धर्म-ध्वजी पादरियों की बातें बस रहने ही दो। जिस बात से देश के धनी बनियों

और राजा-रईसों को सुभीता पहुँचे, उसी को पादरी साहब की वाइवल समझिए। जिन धनवानों के टुकड़ों से इन धर्म-ढोंगियों का पेट भरता है उनके स्वार्थ-सिद्ध होनेवाले मतों को ही ये सब पादरी एक मात्र ईश्वर का आदेश बतलाते हैं। क्या ये कभी वाइवल के सच्चे धर्म के प्रचार का भी साहस करते हैं? महर्षि ईसा की नज़रों में काले गोरे सब समान थे, कोई भेद-भाव न था। उन्होंने साफ़ साफ़ कहा है कि संसार की समस्त जातियों के अधिकार समान हैं। वाइवल में इस मत का कहीं उल्लेख नहीं है कि एक जाति दूसरी जाति पर अत्याचार करे। आज कल तो स्वार्थी-पन ही बस देश-प्रचलित वाइवल है। ग़ुलामों के नीलाम-घर को गिरजा समझिए। जुआड़ी-खाना न्यायालय है। चोरों का सम्मिलन-स्थल व्यवस्थापक सभा है। उस समदर्शी परमात्मा के यहाँ क्या कभी काले और गोरे में भेद समझा जा सकता है? पर इन काले वस्त्रधारी—ऊपर के गोरे और अन्दर दिल के काले—धर्मध्वजी पादरी साहवों ने वाइवल की दुहाई देकर फ़तवा दे दिया कि, परमेश्वर ने कालों को गोरों के दास होने के लिए रचा है। और उसी मत का सहारा लेकर व्यवस्थापक सभा के माननीय सभ्य वृन्द खुल्लमखुल्ला वक्तृतायें देते हुए नई नई आज्ञायें निकाल कर कहते हैं कि, काले गोरों के दास होने के लिए ही बनाये गये हैं।" इस आदमी की बात समाप्त होने के पहले ही जहाज़ एक नगर के पास जा पहुँचा। वहाँ किनारे लगने पर कई यात्री उतरने की तैयारी करने लगे। इसी समय किनारे पर से एक काली स्त्री बड़ी तेज़ी से दौड़ती हुई आकर गोदाम में घुसी और जान नामक ज़ञ्जीर से जकड़े हुए ग़ुलाम के गले से लिपट कर रोने लगी। पाठकों को समझाना नहीं पड़ेगा कि यह काली स्त्री जान की पत्नी है। जान ने टाम से इसी की बात कही थी। स्वामी के विकने की वात सुन

कर यह तीन कोस पैदल दौड़ी आई थी और किनारे पर बैठी जहाज़ की बाट देख रही थी। इसकी दुःखभरी बातों और विलाप परिताप का विशद वर्णन अनावश्यक है। ऐसे हृदय-भेदी दृश्य दास-दासियों के जीवन में सदैव दिखाई देते हैं। जहाज़ खुलने की तैयारी हुई। युवती सदा के लिए विदा होते समय स्वामी से रोती कलपती हुई कहने लगी, "जान! अब इस जन्म में तुमसे भेंट होने की आशा नहीं है। मैं ईश्वर पर भरोसा करके इस दुःख को सह लूँगी। पर, अपने भविष्य की ओर देख कर मेरा कलेजा फटा जाता है। तुम्हारे चले जाने पर सन्तानों को बेच कर रुपये बटोरने के लिए मालिक अवश्य ही मुझे दूसरे पुरुष के साथ रहने को मजबूर करेगा। पर मैं तुमसे कहे देती हूँ कि मुझे आत्म-हत्या करना स्वीकार है, मार खाते-खाते मर जाना मञ्जूर है; पर मालिक की मार के डर से दूसरा पति करके मैं उसे सन्तान बेचने का मौक़ा न दूँगी।"

इतना कह कर जान की स्त्री चली गई। जहाज़ लङ्गर उठा कर दक्षिण देश की ओर रवाना हुआ। चलते चलते जहाज़ एक दूसरे नगर के पास पहुँचा। हेली वहाँ उतरा, और थोड़ी देर बाद एक क्रीतदासी को साथ लेकर जहाज़ पर आ गया। उस दासी की गोद में एक साल भर का शिशु था। स्त्री बड़ी प्रसन्न दिखाई पड़ती थी। पर जब जहाज़ चलने लगा तब हेली ने फिर उस स्त्री के पास आ कर कुछ कहा। इस पर वह स्त्री अत्यन्त उदास हो गई। वह कहने लगी, "मैं तुम्हारी इस बात पर विश्वास नहीं करती।" हेली बोला, "इस काग़ज़ को देख तो तुझे मेरी कही बात का विश्वास हो जायगा। इस जहाज़ में बहुतेरे पढ़े लिखे आदमी हैं। जिससे तेरा जी चाहे पढ़वा कर सुन ले।" स्त्री ने कहा, "मुझे विश्वास नहीं होता कि मालिक ने मेरे साथ ऐसा छल-कपट किया है। मुझसे

तो उन्होंने कहा कि, 'तेरे स्वामी को लुविल नगर का होटल किराये पर दिया है, वहीं जाकर तुझे मज़दूरिन का काम करना पड़ेगा।' तुम्हारे हाथ मुझे लड़के सहित बेच डाला, यह तो बिलकुल नहीं कहा !" हेली बोला, "तू दक्षिण देश के बनिये के हाथ बिकना सुन कर चिल्लावेगी इसी से तेरे मालिक ने तुझे वह पट्टी पढ़ा दी है। तू इस कागज़ को जहाज़ के किसी पढ़े-लिखे आदमी को दिखाले, तुझे सच-झूठ का पता चल जायगा।" फिर हेली ने एक दूसरे आदमी से कहा, "ज़रा इस कागज़ को पढ़ कर इस औरत को सुना दीजिएगा।" उस आदमी ने पढ़ कर बतलाया कि जान फासडिक नाम के साहब ने अपनी क्रीतदासी लूसी और उसके बच्चे को हेली के हाथ बेचा है, उसी का यह दस्तावेज़ है। यह बात सुन कर वह स्त्री चीख़ उठी। उसका चीख़ना सुन कर जहाज़ के बहुत से आदमी वहाँ जमा हो गये। तब स्त्री कहने लगी, "मेरे मालिक ने मुझे तो इसके साथ यह कह कर भेजा है कि तुझे तेरे स्वामी के पास भेजते हैं। पर अब भेद खुला कि यह निरी जालसाज़ी थी। हाय ! न जाने मेरे भाग्य में क्या क्या दुःख लिखे हैं।" बस वह स्त्री आगे एक शब्द भी न बोली। हेली ने मन ही मन कहा कि चलो इतने ही में इसका झगड़ा तय हो गया।

उस स्त्री की गोद का बच्चा देखने में अच्छा हृष्ट-पुष्ट था। जहाज़ में एक आदमी था। उसने हेली से कहा, "जान पड़ता है तुम इस स्त्री को दक्षिण देश में रुई के खेतवालों के हाथ बेचने को लिये जा रहे हो। पर यह जाने रहो कि वह लोग लड़के समेत स्त्री को कभी नहीं ख़रीदेंगे। क्योंकि बालक साथ रहने से कुलियों को खेत का काम करने में बड़ी अड़चन पड़ती है। इससे तुम्हें लड़के को कहीं न कहीं दूसरी जगह बेचना ही पड़ेगा। अगर सस्ते दाम में बेचो तो मैं ही इस

लड़के को लेलूँ ।" हेली ने कहा, "हाँ, हाँ । ख़रीदार होना चाहिए, हमें बेचने में कोई उज़्र नहीं है ।" उस भलेमानस ने पूछा, "अच्छा, बोलो इसका क्या दाम लोगे ?"

हेली—छोकड़ा बड़ा तैयार है । इसका दाम बहुत होगा । माल बड़ा चोखा है ।

भलामानस—लेकिन छोटा कितना है ज़रा इसे तो देखो । लेनेवाले को कई बरस तो इसे योंही खिलाना-पिलाना पड़ेगा ।

हेली—ऐसे लड़कों के पालने में ख़र्च ही क्या होता है ? जैसे कुत्ते बिल्ली के बच्चे ज़रा बड़े होने पर चलने फिरने लगते हैं वैसे ही यह भी चलने फिरने लगते हैं ।

भलामानस—मेरी एक क्रीतदासी के बरस भर का एक बच्चा था, जो जल में डूब कर मर गया । वह इस बालक को पाल लेगी । इसी से मैं इसे लेना चाहता हूँ । दस रुपये लो तो दे डालो ।

हेली—यह माल दस रुपये में !—कभी नहीं बेचूँगा । तुम्हें ख़बर भी है, इसे छः महीने पाल कर इसके सौ रुपये खड़े करेंगे । तुम्हें लेना हो तो पचास से कौड़ी कम न लेंगे ।

भलामानस—अच्छा, तीस रुपये ले लेना ।

हेली—अच्छा तुम इतना दबाते ही हो तो इस तरह करो, न हमारे पचास न तुम्हारे तीस, पैंतालिस पर तोड़ कर लो ।

भलामानस—ख़ैर पैंतालिस ही सही ।

हेली—तुम कहाँ उतरोगे ?

भलामानस—मैं लूविल नगर में उतरूँगा ।

हेली—तो ठीक है । शाम के वक़्त जहाज़ लूविल पहुँचेगा । उस वक़्त बालक नींद में रहेगा, मज़े में ले जाना । रोवे चिल्लावेगा नहीं ।

संध्या हो गई । जहाज़ ने लूविल नगर में पहुँच कर लंगर डाला ।

जहाज़ में लूविल नगर, लूविल नगर की धूम मच गई। यात्रियों में से जो यहाँ उतरनेवाले थे, वे हड़बड़ा कर अपना अपना माल-असवाव बाँधने लगे। लूसी का स्वामी इसी नगर में काम करता था। लूसी अपने वच्चे को गोदाम में सुला कर जहाज़ के किनारे जा खड़ी हुई। नदी के किनारे सैकड़ों आदमी आते जाते थे, शायद उनमें उसका स्वामी भी हो—इसी आशा पर चाहभरी आंखों से टकटकी लगा कर वह नदी की ओर देखने लगी। ख़याल करने लगी कि जल भरने के लिए उसका स्वामी भी सम्भव है वहाँ आया हो। अनुमान घण्टे भर जहाज़ किनारे पर ठहरा रहा। पर लूसी ने अपने स्वामी को न देखा। इससे निराश होकर वह गोदाम में लौट आई। पर यहाँ देखा तो वच्चा नदारद। वह पागल की तरह अपने वच्चे को इधर उधर जहाज़ में ढूँढ़ने लगी। उसकी यह दशा देख कर हेली साहब ने धीरे धीरे उसके पास आ कर फ़रमाया. "लूसी, तेरे फिकरवाली कोई वात नहीं। तेरे लड़के को हमने एक वड़े दयावान् आदमी के हाथ वेच दिया है। वह उसे वहुत मजे में पालें पोसेंगे। लड़का साथ लिये दक्षिण देश में जाने पर तुझे वड़ा असुभीता होता, उसके लालन-पालन की ज़रा भी फ़ुर्सत नहीं मिलती। अव मैंने तेरी सारी चिन्ता मिटा दी; हम जहाँ तक होगा तेरे भले ही का उपाय करेंगे।"

हेली की वात सुन कर स्त्री पर वज्रपात सा हो गया। उसके मुँह में वात नहीं, काटो तो वदन में ख़ून नहीं। उसे ज्ञान न रहा कि वह वैठी है वा खड़ी, सोई हुई स्वप्न देख रही है या जागती है। उसका मुँह सफ़ेद पड़ गया। ऐसी शोचनीय दशा देख कर पत्थर का हृदय हो तो भी पिघल जाय। पर दिन रात दास-दासियों की ऐसी विह्वल अवस्था देखते देखते हेली का हृदय पत्थर से भी सख़्त हो गया था। उसे डर था कि स्त्री कहीं चिल्ला न उठे, तो जहाज़ भर में

हो-हुल्लड़ मचेगा । पर उसका वह डर जाता रहा । ऐसी भयानक और शोक की हालत में कण्ठ और हृदय दोनों सूख जाते हैं । उस दशा में गले से आवाज़ नहीं निकलती, आँखों में आँसू नहीं आते । उस स्त्री की ऐसी दशा हो गई मानों किसी ने उसका हृदय बरछी से छेद कर उसे एक भारी पत्थर से दबा दिया हो । न तो वह चिल्लाई, न उसकी आँखों से एक बूँद पानी ही गिरा । कठपुतली की नाईं उसके हाथ जैसे के तैसे रह गये । आँखों की पलकें ऊपर को चढ़ गईं । यह नहीं जान पड़ता था कि वह आँखों से कुछ देख रही है ।

हेली उसकी यह निस्तब्ध दशा देख कर मन ही मन प्रसन्न हुआ और सोचा कि यह स्त्री शोर-ग़ुल नहीं मचावेगी । फिर हज़रत उस स्त्री को इस तरह समझाने लगे, "लूसी, हम समझते हैं कि तेरे मन को कुछ दुःख होता है । पर तू समझदार है । इस मामूली सी बात को लेकर ख़ामख़ाह उदास होने से क्या फ़ायदा है । तू ख़ुद समझ सकती है कि ऐसा किये बिना काम नहीं चलता । दक्षिण देश में रुई के खेत में काम करने वाला सन्तान को साथ में नहीं रख सकता ।" स्त्री का कण्ठ रुक गया था । वह अस्फुट स्वर से बोली, "मुझे माफ़ करो, मैं और कुछ नहीं सुनना चाहती ।" हेली इतने पर भी चुप न रहा, फिर बोला, "लूसी, तू बड़ी अक़लमन्द है । राम-दुहाई जिसमें तेरा भला हो, वही हम करेंगे । दक्षिण देश में चल कर तुझे शीघ्र ही एक नया शौहर जुटा देंगे ।" इस पर वह स्त्री शर-विद्ध सिंहिनी की भाँति यन्त्रणा-पीड़ित कर्कश स्वर से बोल उठी—"मुझसे आप न बोलिए, मैं आप की कोई बात नहीं सुना चाहती ।" तब हेली ने समझा कि उसके तीर निशाने पर नहीं लगते; इसलिए वह अपने केबिन (कमरे)

में चला गया और वह स्त्री अपने को सिर से पैर तक कपड़े से ढाँक कर वहीं पड़ रही।

टाम उस स्त्री की ऐसी असहनीय मनोवेदना देख कर अपना दुःख एक-दम भूल गया और शोकभरे हृदय से उसके लिए ठण्ढी साँसें लेने लगा। टाम का हृदय आप ही आप इस प्रकार भर आता था। टाम ने ईसाई धर्म-ध्वजी पादरियों की भाँति बाइबल से स्वार्थपरता की शिक्षा नहीं पाई है। टाम नीति-निपुण पण्डितों की बखानी हुई राजनीति के गूढ़ तत्त्वों से बिलकुल बे-ख़बर है। टाम अमरीका-वासी श्वेतांग-शार्दूलों के नैतिक व्यवहार का मर्म समझने में सर्वथा असमर्थ है। वह मौखिक सहानुभूति प्रकट करना नहीं जानता है। शोक-विह्वला जननी के दुःख से उसका हृदय विदीर्ण होने लगा, और वह उसे धीरज बँधाने का उपाय सोचने लगा। बहुत सोच-विचार के बाद उस स्त्री के सिरहाने बैठ कर कहने लगा— "माता, तुम ईश्वर पर भरोसा रख कर अपनी हृदय-वेदना घटाने की चेष्टा करो। तुम्हारी इस दुःख-यन्त्रणा का अन्त कुछ दिनों बाद अवश्य हो जायगा।" पर स्त्री शोक से अधीर हो गई थी; उसका हृदय स्तम्भित हो गया था। टाम के सान्त्वना-वाक्य उसके कानों में न पड़े। टाम की सहानुभूति उसके हृदय तक नहीं पहुँची।

देखते देखते घोर अँधेरी रात आ पहुँची। सारे संसार में सन्नाटा छा गया। संसार के सब जीव-जन्तु निद्रा में मग्न हो गये और अपने अपने हृदय के सुख-दुःखों को उसी अनन्त तिमिर-सागर में डुबो दिया। पर सन्तान-शोक-विह्वला जननी के हृदय की आग न बुझी। पुत्र-शोक-दग्धा लूसी की आँखों में नींद नहीं है। पर-दुःख-प्रपीड़ित टाम के हृदय में भी शान्ति नहीं है। जहाज़ के सभी बालक, वृद्ध, युवा, नर-नारी

नींद में मस्त पड़े हैं, पर लूसी को चैन कहाँ ? वह बार बार पुकारती है—"हे परमात्मन् ! इस यातना से उद्धार करो, अपनी गोद में स्थान दो ।" लूसी के शब्द टाम के सिवा दूसरों के कानों में नहीं पड़े । जहाज़ पर उस समय और कोई न जागता था । इसके कुछ देर बाद जहाज़ से नदी में, धम से, किसी चीज़ के गिरने का शब्द टाम को सुनाई दिया ।

रात बीती । तड़का हुआ । ग़ुलामों को देखने के लिए हेली साहब गोदाम में पहुँचे । वहाँ लूसी न दिखाई दी । उसने एक हज़ार पर लूसी को ख़रीदा था । इससे उसे न देख कर वह पागल सा हो गया और जहाज़ में इधर उधर ढूँढ़ने लगा । पर कहीं पता न पाकर टाम के पास आ कर बोला—"तू ज़रूर लूसी की बात जानता होगा।" टाम बोला—"साहब, मैं और तो नहीं जानता । हाँ, थोड़ी रात थी तब नदी में किसी के कूदने का सा शब्द सुना था ।" यह सुन कर हेली ने समझ लिया कि, लूसी ने आत्म-हत्या करली है । पर इससे उसे कुछ दुःख न हुआ । क्योंकि बहुत बार वह दास-दासियों को आत्म-हत्या करते देखता है । इसी से इस घटना से उसके हृदय में कोई परिवर्तन नहीं हुआ । उसे सिर्फ़ अपने घाटे नफ़े ही का ख़याल हुआ । वह मन ही मन कहने लगा कि इस दफ़े काम में घाटा छोड़ नफ़ा नहीं होता दीखता । शेल्बी के यहाँ के काम-काज में पाँच सौ मिट्टी में मिले और अब पूरे एक हज़ार पर पानी फिर गया ।

पाठक ! आप कहते होंगे कि हेली बड़ा निर्दयी है । आप हेली को मन ही मन बार बार धिक्कारते और कोसते होंगे। पर इसके पहले एक बार तनिक यथार्थ बात पर विचार कीजिए । हेली अपढ़ है, और अभी तक वह सामाजिक जगत् के गहरे अन्धकूप में पड़ा हुआ है । सभ्य समाज से उसका वास्ता नहीं है । वह दास-व्यवसायी है । पर बतलाइए

किसने उसे दास-व्यवसायी वनाया है? क्या दासत्व-प्रथा का वनाने वाला हेली है? कभी नहीं। जो सुशिक्षित हैं, जेन्टिलमैन कहाते हैं, सब से आदर पाते हैं, देश के शासन की वागडोर अपने हाथ में लिये हुए हैं, जो देश के उपकार-निमित्त क़ानून गढ़ते हैं और न्यायासन पर वैठ कर इन क़ानूनों को काम में लाते हैं, वही हेली को दास-व्यवसायी वनाने वाले हैं, उन्हीं ने आज लूसी की सन्तान को उसकी गोद से अलग करा के उस निरपराधिनी अवला के प्राण लिये हैं। देश के शासनकर्त्ताओं! विचारकों! तुम ठगों को सज़ा देते हो और चोरों को जेलख़ाना, तथा ख़ूनियों को सूली पर चढ़ाते हो; पर तुम लोग स्वयं नित्य जो नर-हत्यायें करते हो, नर-नारियों पर घोर अत्याचार करते हो, दूसरों का धन-दौलत हरते हो, उन वातों पर क्या कभी भूल कर भी ध्यान नहीं देते! समझ रक्खो, परम न्यायी परमेश्वर के न्यायदण्ड से कोई वचा नहीं रह सकता। लूसी पुत्र-शोक में प्राण खोकर उसी अमृतमय के अमृत-धाम को चली गई है। वह अव मङ्गलमय ईश्वर की गोद में विराज रही है। उस न्याय-मूर्त्ति के निकट उसकी सुनवाई हो रही है। वहीं उसका न्याय होगा। पर, अरे ज्ञान-विज्ञानाभिमानी शासनकर्त्ताओं, और विचारकों! तुम लोग ऐसे विषयान्ध हो रहे हो कि पल भर भी उस अन्तिम दिन की "सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जव लाद-चलेगा वनजारा" की सुध नहीं करते। नहीं जानते कि लूसी की हत्या के अभियोग में तुम लोगों में से हर एक को उसी राजाधिराज के दरवार में कभी अभियुक्त होना पड़ेगा और वहाँ जवाव-देही करनी पड़ेगी।

—:०:—

चौदहवाँ परिच्छेद

दासत्व-प्रथा-विरोधी-दल ।

समय सदा एकसा नहीं रहता । आज जिस प्रथा को सब लोग अच्छी समझते हैं, कुछ दिनों बाद कितने ही उससे विरोध करने लगते हैं । धीरे धीरे दासत्व-प्रथा की बुराइयाँ कितनों ही को खटकने लगीं । उन्होंने दासत्व-प्रथा का विरोध करना आरम्भ किया । सन् १८६५ ईसवी में अमेरिका से दासत्व-प्रथा दूर हो गई । पर पहले दासत्व-प्रथा के विरोधियों को समय समय पर बड़े बड़े सामाजिक अत्याचार सहने पड़ते थे, और लोगों के ताने और गालियाँ सुननी पड़ती थीं । जो लोग गिर्जों में वा अन्य कहीं इस घृणित प्रथा का समर्थन करते थे, वे ही सच्चे देश-हितैषी समझे जाते थे । अमरीका में नोयर और वेष्टर सरीखे सुशिक्षित और ज्ञानी पुरुष भी इस दासत्व-प्रथा के हिमायती थे । सच्ची बात तो यह है कि स्वार्थ-परता को तिलाञ्जलि दिये बिना मनुष्य सच्ची देश-हितैपिता का मर्म नहीं समझ सकता । स्वार्थपरता पढ़े-लिखे आदमियों की अक्ल भी मार देती है । सच्चे देशहितैपी जीते जी कभी देशहितैपी नहीं कहलाते । उन्हें जन्म भर समाज में प्रचलित पाप और कुसंस्कारों से लड़ाई लड़नी पड़ती है, इसी से वे समाज के प्यारे नहीं हो सकते । इधर सैकड़ों यश के लोभी, स्वार्थ-परायण मनुष्य उनके मार्ग में काँटे बोते रहते हैं—वे लोगों में प्रचलित पापों और कुसंस्कारों का समर्थन करके देशहितैपी की पदवी

धारण कर समाज में अनुचित आदर पाते हैं। महात्मा ईसा मनुष्य-जाति के सच्चे हितैषी थे, पर उनके हाथ-पैरों में कीलें ठोंक कर उन्हें सूली दी गई। लूथर सच्चा धर्म-सुधारक था। इसी से उसे बड़े बड़े सामाजिक अत्याचार सहने पड़े थे। ऐसे सच्चे देशहितैषी और समाजसुधारकों के लिए इस जीवन में दुःख, कष्ट और दरिद्रता ही एक मात्र पुरस्कार है। पर जो लोग और व्यवसायों की भांति देशहितैपिता को भी एक व्यवसाय सा बना लेते हैं तथा लोक-प्रिय आडम्बर रचते हैं वे इस व्यवसाय की बदौलत ख़ूब माल मारते और गुलछर्रे उड़ाते हैं।

पर-दुःख-कातर, स्वार्थहीन, निरासक्त, दरिद्र क्वेकर* (Quaker) मण्डली के जिस उदार सज्जन ने पलातक दासी इलाइज़ा को शरण दी थी, क्या कोई उसे देशहितैषी अथवा परोपकारी समझता था? संसार के लोगों की आंखों पर अज्ञान का पर्दा पड़ा हुआ है, वे भला कैसे क्वेकर दल को परोपकारी समझेंगे? वे देशहितैपिता का जामा पहन कर, गले में देशहितैपिता का ढोल डाल कर तथा सिर पर देशहितैपिता का झंडा फहराते हुए नहीं घूमते। हाँ, दूसरे का दुःख देख कर उनका हृदय भर आता है। पर परमात्मा के सिवाय उनके हार्दिक भावों को कौन देख सकता है? वे आफ़त में फँसे हुए नरनारियों के आंसू अपने हाथ से पोंछ देते थे। दुखियों की आंखों में जल देख कर उनकी भी आंखें भर आती थीं। वे चुपचाप सच्चा काम करते थे। कभी परोपकार, परोपकार का ढोल न पीटते थे। यही कारण है कि दुनिया के लोग उन्हें नहीं पहचानते और उनकी लानत मलामत करते थे।

इलाइज़ा ऐसी ही एक पर-दुःख-कातरा राचेल नाम की बुढ़िया

---

* क्वेकर (Quaker) ईसाई धर्म की एक विशेष शाखा।

के पास बैठी हुई बातें कर रही थी। बुढ़िया राचेल साइमन हालीडे नाम के क्वेकर मण्डली के एक धार्मिक ईसाई की पत्नी थी। वृद्धा राचेल कहती थी, "बेटी इलाइजा! क्या तुमने कैनाडा ही जाने का निश्चय कर लिया है? यहाँ तू जितने दिन चाहे निर्भय होकर रह सकती है।"

इलाइजा—नहीं, मैं कैनाडा ही जाऊँगी; यहाँ ज़्यादा ठहरने में डर लगता है कि कहीं कोई बच्चे को मेरी गोद से छीन न ले। कल रात ही मैंने स्वप्न देखा कि एक मनुष्य आया, और मेरे बच्चे को गोद से छीन ले गया। इससे मैं बहुत भयभीत हो गई हूँ।

राचेल—बेटी! तुम यहाँ बेखटके रहो। यहाँ कोई तुम्हारे बच्चे का एक बाल तक बाँका नहीं कर सकता। यहाँ चार पाँच परिवारों के हम लोग बहुत से आदमी रहते हैं। सताये हुए मनुष्यों को शरण देना ही हम लोगों के जीवन का एक मात्र उद्देश्य है। यहाँ जितने लोग हैं वे सब अपनी जान देकर भी तुम्हारे बच्चे की रक्षा करेंगे।

इतने ही में रूथ नाम की एक युवती वहाँ आई। वह इलाइजा के पुत्र को गोद में लेकर प्यार करने लगी और उसे कई प्रकार की खाने की चीज़ें दीं, और बहिन की भाँति इलाइजा से बातें करने लगी।

रूथ बोली, "प्यारी बहिन इलाइजा, तुम्हें बच्चे समेत सकुशल यहाँ पहुँचे देख कर मुझे बड़ा आनन्द हुआ।"

अभी इलाइजा के हृदय का दुःख दूर नहीं हुआ था। इससे वह बोल कर प्रकट में तो रूथ के प्रति कुछ कृतज्ञता न प्रकाशित कर सकी। पर इन सब क्वेकर-दल की स्त्रियों के सद्व्यवहार को देख कर उसका हृदय कृतज्ञता से भर गया।

इलाइज़ा को चुप देख कर वृद्धा राचेल रूथ से बोली, "रूथ! अपने लड़के को कहाँ छोड़ा?"

रूथ—साथ ही तो लाई थी। तुम्हारी मेरी ने उसे ले लिया। वह उसे खिला रही है।

राचेल—मेरी छोटे बच्चों को बहुत प्यार करती है। इतने ही में दरवाज़ा खुला और प्रफुल्लमुखी मेरी रूथ के छोटे बच्चे को गोद में लिये हुए वहाँ आ पहुँची।

वृद्धा राचेल ने मेरी की गोद से लड़के को अपनी गोद में लेकर कहा, "रूथ! बड़ा सुन्दर बच्चा है।"

रूथ ने लजा कर कहा, "माता, उसे ऐसा ही सब कहते हैं।" वृद्धा राचेल ने रूथ से पूछा, "रूथ! अबिगेल पीटर्स कैसे हैं?

रूथ—अब तो वह बहुत अच्छे हैं। सवेरे मैं उनका कमरा झाड़ बुहार आई थी, दोपहर को मिसेज़ लियाहिल ने वहाँ जाकर उनके पथ्य और आहार का प्रबन्ध कर दिया। सन्ध्या-समय मुझे फिर जाना होगा।

राचेल—मेरा भी कल जाने का विचार है। मेरी ने उनके छोटे लड़के के लिए एक जोड़ी मोज़ा बिन रक्खा है।

रूथ ने कहा, "माता! मैंने सुना है कि हमारे हानष्टन उड की तबीयत बहुत ख़राब हो गई है। जान कल सारी रात वहीं था। कल मैं भी उनके यहाँ अवश्य जाऊँगी।"

राचेल—कल रात को अगर तुम्हें वहाँ जगना पड़े तो जान को कह देना यहाँ भोजन कर लेगा।

रूथ—अच्छा मैं यहीं भोजन करने को कह दूँगी।

इसी समय वृद्धा राचेल के स्वामी साइमन हालीडे वहाँ आ

पहुँचे । साइमन हालीडे लम्बे चौड़े और बड़े ताक़तवर जान पड़ते थे । चेहरे से उनके दया और स्नेह टपकता था । साइमन ने रूथ से पूछा, "रूथ ! कहो तुम अच्छी हो ? जान अच्छी तरह हैं ?"

रूथ—जी हाँ सब सकुशल हैं ।

राचेल ने अपने स्वामी को देखते ही पूछा, "क्यों कोई नई ख़बर मिली ?"

साइमन ने उत्तर दिया, "पीटर स्टीवन ने कहा है कि वे आज ही तीन भागे हुए दास-दासियों को साथ लेकर यहाँ पहुँचेंगे ।" राचेल ने स्वामी के मुख से यह शुभ संवाद सुन कर इलाइजा की ओर देखते हुए प्रसन्न मुख से पूछा—"सच्ची बात है ?"

साइमन ने उस प्रश्न का कोई उत्तर न दिया, बदले में पूछा, "क्या इलाइजा के पति का नाम जार्ज हेरिस है ?"

उनका प्रश्न सुन कर इलाइजा शङ्कित हो कर बोली, "हाँ" । उसे खटका हुआ कि कहीं उसके लिए विज्ञापन तो नहीं निकला है । राचेल ने इलाइजा का यह भाव जान लिया और अलग ले जाकर अपने स्वामी से पूछा, "इस प्रश्न से तुम्हारा क्या मतलब था ?"

साइमन ने कहा, "आज ही रात को इसका पति सकुशल यहाँ पहुँच जायगा । हमारे आदमियों की सहायता से इसका पति तथा एक और ग़ुलाम एवं उसकी माता भागने में सफल हो कर शरण लेने के लिए यहाँ आ रहे हैं । मुझे जैसे ही ख़बर मिली मैंने तुरन्त उनके लिए गाड़ी और आदमी भेज दिये हैं कि उन्हें निर्विघ्न यहाँ ले आवें ।"

राचेल—क्या इलाइजा को यह ख़बर नहीं सुनाओगे ? यह सुन कर तो उसके आनन्द की सीमा न रहेगी ।

साइमन इलाइजा को ख़बर सुनाने की सम्मति दे कर अपने कमरे

में चले गये। राचेल ने तुरन्त इलाइज़ा को बुला कर कहा, "बेटी, मैं तुम्हें एक ख़बर सुनाती हूँ!"

इलाइज़ा उसकी बात सुन कर बहुत घबराई; सोचने लगी, न जाने क्या आफ़त आ पड़ी है। पर राचेल ने उसे धीरज देकर कहा, "ख़बर अच्छी है, डरो मत। तुम्हारा स्वामी भागने में सफल हो गया है, आज ही रात को यहाँ आवेगा।"

इलाइज़ा के दिल पर उस समय क्या बीत रही थी, यह वही जानेगा जिसको कभी ऐसी दशा का सामना हुआ है। एकाएक यह शुभ संवाद सुन कर उसके हृदय में इतना आनन्द हुआ कि वह उस के वेग को सम्हाल न सकी। देखते देखते इलाइज़ा बेसुध हो गई। रूथ और राचेल उसे होश में लाने के लिए उसके मुँह पर जल छिड़कने लगीं। बहुत रात बीतने पर उसे होश हुआ। चेत होने पर जब इलाइज़ा ने आँखें खोलीं तो देखा कि उसके स्वामी ने उसका सिर अपनी गोद में रख रक्खा है। देखते देखते सबेरा हो गया और सूर्य उदय हो आया। राचेल सबके भोजन का प्रबन्ध करने लगी। दोपहर को सब ने मिल कर एक साथ भोजन किया। इसके पहले जार्ज ने कभी किसी सभ्य पुरुष के साथ भोजन नहीं किया था। घर के पलुये कुत्ते-बिल्लियों की तरह उसे खाना पड़ता था। दास-व्यवसायी के यहाँ जार्ज मनुष्य के आकार का एक पशु विशेष था। पर यहाँ पर-दुःखकातर साइमन हालीडे की दृष्टि में वह वास्तविक मनुष्य है। हालीडे के अकृत्रिम स्नेह और सहृदयता ने आज जार्ज के हृदय में ईश्वर के अस्तित्व पर दृढ़ विश्वास ला दिया। संसार के अन्याय और अविचारों को देख कर जार्ज को ईश्वर की करुणा पर विश्वास न होता था। उसकी यह धारणा हो गई थी कि इस संसार में निरपेक्ष ईश्वर नहीं है। पर ईश्वर-भक्त हालीडे का सदा-

चरण देख कर उसकी नास्तिकता दूर हो गई। इतने दिनों बाद जार्ज को ईश्वर पर भरोसा हुआ।

साइमन हालीडे के एक १२ वर्ष का छोटा लड़का था। उसने पिता से कहा, "बाबा ! अगर पुलिस तुम्हें पकड़ पावे तो वह तुम्हारा क्या करेगी ?" साइमन ने कहा, "पकड़ पावे तो सज़ा देगी। तब क्या तुम और तुम्हारी माता मिल कर खेती से अपनी ज़िन्दगी बसर नहीं कर सकोगे ? ईश्वर सबका रक्षक है, वह तुम लोगों की भी रक्षा करेगा।"

जार्ज ने उनकी बातें सुन कर बड़ी घबराहट से पूछा, "क्यों साहब! क्या मेरे बचाने में आप लोगों पर कोई आफ़त आने का डर है ?"

साइमन ने कहा, "तुम इससे बेफ़िक्र रहो। अच्छे कामों के लिए मैं सदा अपनी जान देने को तैयार रहता हूँ। बलवान् के अत्याचार से निर्बल की रक्षा करना ही मेरे जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य है। मेरी विपद के लिए तुम्हारे सङ्कोच करने की आवश्यकता नहीं है। मैंने तुम्हारे उपकार के लिए कुछ नहीं किया है। जिस परमात्मा की कृपा से हमें दोनों समय रोटियाँ मिलती हैं केवल उसी का यह प्रिय कार्य है। तुम यहाँ आराम करो। आज ही रात को हमारे दो आदमी तुम्हें पास के दूसरे ठिकाने पर पहुँचा आवेंगे। मुझे ख़बर लगी है कि पकड़नेवाले और पुलिस के लोग तुम्हारी खोज में यहाँ आ रहे हैं।"

जार्ज ने शङ्कित हो कर कहा, "साहब ! तब तो अभी चल देना अच्छा होगा।"

साइमन हालीडे ने उसे धीरज देकर कहा, "डरो मत। मङ्गलमय ईश्वर की कृपा से हमारे आदमी तुम्हें रात को निरापद स्थान में पहुँचा आवेंगे। दिन में यहाँ किसी आफ़त का खटका नहीं है।"

—:o:—

पन्द्रहवाँ परिच्छेद ।

इवाञ्जेलिन ।

जिस जहाज़ पर दास-व्यवसायी हेली सवार था वह चलते चलते मिसीसिपी नदी में पहुँच गया ।

इस जहाज़ पर रुई के ढेर के ढेर लदे हुए थे, दूर से यह एक सफ़ेद पहाड़ सा दिखाई देता था । जहाज़ के डेकों पर बड़ी भीड़ थी । सबसे ऊँची डेक के एक कोने में एक रुई के गट्ठे पर टाम बैठा हुआ है ।

कुछ शेल्बी साहब के कहने पर और कुछ टाम का सीधा स्वभाव देख कर, हेली का उस पर विश्वास हो गया था । पहले वह उसे हर समय अपनी आँखों के सामने रखता था और ज़ञ्जीर से जकड़े रहता था । पर जब उसने देख लिया कि टाम अपनी वर्त्तमान दशा में कोई असन्तोष नहीं प्रकट करता तब उसके बन्धन खोल दिये और उसे यथेच्छ घूमने का अधिकार दे दिया । और दासों के साथ यह रियायत नहीं थी । टाम काम न रहने पर ऊपर डेक के एक रुई के गट्ठे पर जाकर बैठ जाता और एकाग्रचित्त से बाइबल पढ़ा करता । इस समय भी वह बाइबल पढ़ रहा है ।

नदी के किनारे किनारे खेत ही खेत दिखाई पड़ रहे हैं । उनमें हज़ारों दास-दासी फूस की झोपड़ी डाल कर रहते हैं । इनसे थोड़ी ही दूर पर खेत के मालिकों के सुन्दर बङ्गले और आराम-बाग़ हैं । यह हृदय-स्पर्शी दृश्य देखते देखते टाम के हृदय में पिछली बातें

जाग उठीं। उसे अपने केन्टाकी के मालिक के खेत और उससे सटी हुई अपनी लता-पतादार कुटिया का ध्यान आ गया। सङ्गी-साथियों की शक्लें उसकी आँखों के सामने नाचने लगीं। यह उसकी स्त्री संध्या-समय का भोजन बना रही है; उसके पुत्र हँस हँस कर खेल रहे हैं, सबसे छोटा लड़का उसकी गोद में बैठा हुआ अपनी तोतली बोली से उसे ख़ुश कर रहा है—एकाएक चौंक पड़ा, देखा, पेड़-पल्लव, खेतवारी सब एक एक करके पीछे छूटे जा रहे हैं। जहाज़ के कल-पुर्ज़ों के चलने की आवाज़ फिर सुनाई देने लगी—तब उसे अपनी वर्त्तमान अवस्था का स्मरण हुआ और जान पड़ा कि अब वे सुख के दिन सदा के लिए उसे छोड़ गये। उसके हाथ में जो बाइबल थी, उस पर आँसू टपकने लगे। आँखें पोंछ कर टाम बाइबल में शान्ति के उपदेश ढूँढ़ने लगा। टाम ने बड़ी उम्र में पढ़ना सीखा था, इससे उसे जल्दी जल्दी पढ़ने का अभ्यास न था। सुनिए, वह एक एक शब्दों का अलग अलग उच्चारण करते हुए क्या पढ़ रहा है—

"अपने हृदय में-अशान्ति-मत-पैदा-होने-दो। पिता के-यहाँ-बहुत स्थान-है। मैं वहाँ तुम्हारे लिए जगह-करने-जा रहा हूँ।"

इस संसार में तुम्हारा जीवन चाहे किसी दशा में क्यों न कटे, किन्तु परम-पिता की मङ्गलमय भुजायें तुम्हारे लिए सदा फैली हुई हैं। बाइबल में यह शान्तिप्रद और आशाप्रद उपदेश पढ़ कर टाम के हृदय में धीरज आ गया। टाम बड़ा पक्का विश्वासी है। कुटिल दर्शनशास्त्र की विपाक्त युक्तियाँ और जटिल विज्ञान के तर्क वितर्क उसके स्वभाव-सिद्ध विश्वास की जड़ पर कुठार नहीं चला सकते। यह तो वह स्वप्न में भी नहीं सोचता कि बाइबल की बात भी झूठी हो सकती है। यही कारण है कि हज़ार निराशा रहने पर भी उसे आशा है, हज़ार कष्टों के रहते भी उसके हृदय में शान्ति है।

पुस्तक इस समय भी उसके सामने खुली रक्खी है। उसकी प्रत्येक पंक्ति में अतीत जीवन की सुख-स्मृति जड़ी हुई है। भविष्य जीवन की सारी आशायें भी उसी पर निर्भर हैं।

इस जहाज़ के यात्रियों में एक अर्लिन्स-निवासी धनवान् सज्जन थे। वह वारमण्ट प्रदेश से अपने घर को लौट रहे थे। उनके साथ एक पाँच छः वरस की वालिका और एक आत्मीया रमणी थी। टाम इस वालिका को वीच वीच में इधर से उधर फिरते देखता था। पर वह एक जगह नहीं टिकती थी, इससे मन भर कर टाम उसे न देख सकता था। लेकिन वालिका की मूरत इतनी मनोहारिणी थी कि उसे जो एक वार देखता था उसका जी फिर फिर, वार वार उसे देखने को चाहता था। वालिका का शरीर शैशव की सुकुमारता और अनुपम सौन्दर्य से झलक रहा था। पर सौन्दर्य के सिवाय इस वालिका में और भी कुछ विशेषता थी। सौन्दर्य से अधिक शोभाप्रद किसी अलौकिक माधुर्य से इस वालिका की मूर्त्ति चमचमा रही थी—जिससे देखने में वह साक्षात् देव-कन्या जान पड़ती थी। उसके मुख पर एक अपूर्व एकाग्रता का भाव था, उस पर एक विलक्षण कान्ति थी, जिसे देख कर शोभा के उपासक भावुक का मन स्वतः मोहित हो जाता था; जो निरे नीरस और भावहीन हैं, उनके नेत्र भी खिंच जाते थे; यद्यपि उस आकर्षण का मतलब उनकी समझ में नहीं आता था, तथापि उनके हृदय में उस मुख की छाया प्रतिविम्वित होने लगती थी। इन भावों के होते हुए भी वालिका के मुख पर विशेष गम्भीरता या विषाद के चिह्न नहीं देख पड़ते थे। वल्कि वह चपल और खिलाड़ी जान पड़ती थी। देर तक एक जगह नहीं टिकती है। अलमस्त मन ही मन गाती हुई कभी इधर और कभी उधर फिर रही है। पिता और वह आत्मीया रमणी वरावर उसकी

ताक में लगे हैं। जहाँ वह उनके पास पहुँची वह उसे पकड़ लेते हैं, पर वह फिर छुड़ा कर भाग जाती है, लेकिन वह उसे कुछ नहीं कहते हैं। वह सदा ही सादे सफ़ेद वस्त्र पहने रहती थी, तथापि बराबर नाना स्थानों में दौड़-धूप करते रहने पर भी उसके उन स्वच्छ सफ़ेद वस्त्रों में कहीं दाग़ या धब्बा नहीं लगने पाता था।

जहाज़ के मल्लाह और ख़लासी अपने अपने कामों में लगे हुए हैं, बालिका एक एक बार हर एक के पास जाकर खड़ी होती है, सरल नेत्रों से उनकी ओर देखती है और सोचती है कि इन्हें कोई दुःख तो नहीं है, इन्हें कोई पीड़ा तो नहीं है। कभी कभी बालिका भीड़ में घुस जाती है, और उसे देख कर कितने ही कोमलता-रहित शुष्क अधरों पर स्नेहमय मुसकुराहट छा जाती है। यदि कहीं बालिका को ज़रा भी ठोकर लगी या फिसलने की सम्भावना हुई तो उसी दम कितने ही कठोर हाथ उसे पकड़ कर उठा लेने के लिए फैल जाते हैं। जब वह सामने से निकलती तो सब उसके लिए मार्ग छोड़ देते हैं।

टाम स्वभाव से ही कोमल-हृदय था। सुकुमारता पर मोहित होना सहृदय निग्रो लोगों का एक जातीय गुण है। पहली बार के देखते ही टाम इस बालिका को मन ही मन प्यार करने लगा। वह इस सुकुमारी बालिका को देवदूती समझने लगा। बालिका कभी कभी हेली के जञ्ज़ीर से बँधे हुए दासों के पास खड़ी होकर खिन्न-चित्त से उनकी ओर देखती है; उनकी जञ्ज़ीरों को हाथ में लेकर हिलाती डुलाती है; अन्त में ठण्ढी साँस लेकर वहाँ से हट जाती है। टाम बालिका की ओर बड़ी उत्सुकता से देखता था और जब वह पास आती थी तब उससे बातें करना चाहता था पर पहले पहल उसकी हिम्मत न पड़ी।

बालक बालिकाओं को ख़ुश करने में टाम बड़ा पटु था। वह भाँति भाँति के बाजे, गुड़ियाँ और खिलौने बनाने में बड़ा उस्ताद था। जब वह शेल्बी साहब के यहाँ था, तब बालक बालिकाओं के लिए खिलौने बनाने की सामग्री वह सदा अपनी जेब में धरे रहता था। उनमें से कुछ चीजें अब तक उसकी जेब में पड़ी थीं।

एक दिन बालिका उसके पास आकर खड़ी हो गई। मौक़ा देख कर टाम बातचीत जमाने की इच्छा से एक एक करके जेब से भाँति भाँति की चीजें निकालने लगा। बालिका बड़ी शर्मीली थी, पहले तो वह कुछ न बोली, पर धीरे धीरे उसके मन में कौतूहल और प्रसन्नता का रङ्ग जम गया। टाम जब खिलौने बना रहा था तब वह कुछ दूर बैठी अनन्य चित्त से उसके बनाने का ढङ्ग देख रही थी। जब खिलौने बन कर तैयार हो गये तब टाम एक एक करके उन्हें बालिका के हाथ में देने लगा। बालिका सङ्कोचसहित उसके हाथ से लेने लगी। धीरे धीरे बालिका की लज्जा दूर हुई और दोनों में परिचितों की भाँति बातें होने लगीं।

टाम ने पूछा—"तुम्हारा क्या नाम है?" बालिका बोली—"मेरा नाम इवाञ्जेलिन सेन्टक्लेयर है। पर मुझे बाबा तथा सब लोग ईवा ही कहते हैं।" तुम्हारा क्या नाम है?

टाम—मेरा नाम टाम है। पर केन्टाकी में मुझे लड़के टाम-काका कहते थे।

बालिका—तो मैं भी तुम्हें टामकाका ही कहा करूँगी। टाम-काका, तुम्हारा नाम तो बड़ा प्यारा है। अच्छा काका, तुम कहाँ जाओगे?

टाम—मुझे मालूम नहीं, कहाँ जाना होगा।

बालिका—(आश्चर्य करके) एं? अपने जाने का ठिकाना भी नहीं जानते?

टाम—मुझे दासव्यवसायी जिसके हाथ बेचेगा उसी के घर जाऊँगा, और मुझे यह क्या मालूम कि वह किसके हाथ बेचेगा?

बालिका—मेरे पिता तुम्हें ख़रीद सकते हैं। हमारे यहाँ तुम सुख से रहोगे। मैं अभी जाकर पिता से तुम्हें ख़रीद लेने के लिए कहूँगी।

टाम—अच्छा, कहना।

इन बातों के ज़रा ही देर बाद जहाज़ लकड़ी लाने के लिए रुक गया। टाम कुलियों के काम में सहायता करने के लिए किनारे पर जा रहा था। इसी समय इवा अपने पिता से बातें करते करते अकस्मात् जहाज़ से नदी में गिर पड़ी। उसका पिता उसके पीछे कूदने ही वाला था कि पीछे से एक आदमी ने उसे पकड़ लिया। टाम ने इसके पहले ही जल में कूद कर इवा को पकड़ लिया था। इवा धारा में कुछ दूर बह गई थी पर टाम ख़ूब अच्छा तैराक था, वह उसे पकड़ कर तैरते हुए अनायास जहाज़ पर चढ़ आया। इवा बेहोश हो गई थी। उसके पिता उसे अपने कमरे में ले जाकर होश में लाने के लिए नाना प्रकार के उपाय करने लगे। इधर भिन्न भिन्न कमरों से स्त्रियों का दल का दल सेन्टक्लेयर के कमरे में पहुँच कर बनावटी सहानुभूति प्रकट करने लगा। इस सहानुभूति से होना तो क्या था उल्टा इवा को होश में लाने के कार्य में कुछ देर के लिए व्याघात पहुँचा। वास्तव में इस संसार में बहुतेरे रोगियों को रोगशय्या पर इन सब परोपकारियों की परोपकारिता के ही कारण असामयिक मृत्यु का शिकार बनना पड़ता है।

इवा बहुत शीघ्र होश में आगई। पर उसके शरीर में कमज़ोरी कई दिनों तक बनी रही।

चलते चलते जहाज़ अर्लिन्स पहुँचा। यात्रियों ने अपना बोरिया-बँधना बाँधना आरम्भ किया। टाम ने नीचे की गोदाम से देखा कि

इवाञ्जेलिन का हाथ पकड़े हुए सेन्टक्लेयर साहब हेली के पास खड़े बातें कर रहे हैं और जब तब हेली की बातें सुन कर हँस पड़ते हैं। कुछ पल के बाद सेन्टक्लेयर ने कहा—"अजी समझ लिया कि तुम्हारा यह काला ग़ुलाम बड़ा धर्मात्मा है। देश भर का सारा ईसाई धर्म इसी काले चमड़े में भरा है। अब यह बोलो कि इस मरको चमड़े में भरे हुए ईसाई धर्म के क्या दाम लोगे? ज़्यादा से ज़्यादा मुझे कितना ठगना चाहते हो?"

हेली—साहब, आपसे हम मज़ाक नहीं करते। तेरह सौ से एक कौड़ी कम नहीं लेंगे। आप के सर की क़सम खा कर कहते हैं हमें इन तेरह सौ में कोई बड़ा नफ़ा नहीं है, लेकिन—

सेन्टक्लेयर—लेकिन, जान पड़ता है आप तेरह सौ में बेच कर मुझ पर बड़ी मेहरबानी कर रहे हैं!

हेली—यह बालिका इस ग़ुलाम को ख़रीदने के लिए बड़ा आग्रह कर रही है, इसी से तेरह सौ में दिये देते हैं।

सेन्टक्लेयर—(हँसते हुए) जी हाँ, तो यह न कहिए कि मुझ पर नहीं, आप इस लड़की पर मेहरबानी कर रहे हैं। ख़ैर, तो अब यह बतलाइए कि टाम के ठीक दाम क्या लीजिएगा?

हेली—साहब, ज़रा एक बार माल की तो परख कीजिए। कैसा हट्टा-कट्टा लम्बा-चौड़ा मज़बूत आदमी है, क्या बड़ी खोपड़ी है। जान पड़ता है अक़्ल से भरी हुई है। आप की सौगन्द, चीज़ बड़े आला दर्जे की है। ऐसे ग़ुलामों के बड़े दाम होते हैं। अपने मालिक का सारा काम वह बड़ी ही ईमान्दारी से करता था। बड़े काम का आदमी है। एक बार इसके पहले मालिक का सार्टिफ़िकेट देख लीजिए फिर कहिएगा। यह बड़ा धर्मात्मा है। इसे केन्टाकी भर के ग़ुलाम अपना पादरी मानते थे।

सेन्टक्लेयर—(हँसते हुए) तब तो ख़ूब हुआ। हम इसे अपने घर का पादरी बना लेंगे। लेकिन हमारे यहाँ धर्म का आडम्बर बहुत थोड़ा है। इससे शायद पादरी साहब के लिए काम न मिले।

हेली—आप तो सभी बातें मज़ाक में उड़ा देते हैं। हम आप से क्या कहें?

सेन्टक्लेयर—यह कैसे? हमने आपकी कौन सी बात दिल्लगी में उड़ाई? आपही ने तो अभी फ़रमाया कि यह आदमी पादरी का काम करने की योग्यता रखता है। हाँ ज़रा दिखलाइएगा तो इसके पास किस विश्वविद्यालय वा किस लार्ड विशप का सार्टिफ़िकेट है?'

इसी समय इवाञ्जेलिन ने चुपके से अपने पिता के कान में कहा—"बाबा इसे ख़रीद लो; ये थोड़े से रुपये तुम्हारे लिए कुछ चीज़ नहीं हैं। इस आदमी को ख़रीदने की मेरी बड़ी इच्छा है।" इस पर सेन्टक्लेयर ने इवा की ठुड्ढी पकड़ कर हँसते हुए पूछा—"क्यों इवा, इसे क्या करेगी? क्या इसे घोड़ा बना कर खेलेगी?"

इवा—बाबा। मैं इसे सुख से रक्खूँगी। इसका दुःख दूर करने के लिए इसे ख़रीदना चाहती हूँ।

सेन्टक्लेयर—वाह! यह तो नई बात सुनी! इसे सुखी करने के लिए तू ख़रीदना चाहती है!

इतने में हेली साहब ने शेल्बी साहब के दिये हुए टाम के सार्टिफ़िकेट (प्रशंसा-पत्र) को निकाल कर सेन्टक्लेयर के हाथ में दिया। सेन्टक्लेयर ने अक्षर देख कर कहा—"लिखावट तो भले आदमी की सी है।" सार्टिफ़िकेट में 'धर्म' शब्द देख कर हँसते हुए कहा—"अरे भाई, इस धर्म के मारे तो देश का सत्यानाश हो जायगा। अब इस देश की ख़ैर नहीं जान पड़ती। क्रिश्चियन धर्मावलम्बी भाइयों के धर्मव्यवहार से तो नाकों दम आ ही रहा था, अब ये ग़ुलाम भी

धार्मिक बनने चले तो कहिए कुशल कहाँ ! हमारे देश में धार्मिक पादरी, व्यवस्थापक सभा के धार्मिक माननीय सभ्य, धार्मिक शासन-कर्त्ता, धार्मिक वकील और धार्मिक विचारपति नित्य प्रति धर्म का ढोंग रच कर देश भर के लोगों को चकमा दे रहे हैं। नित नई जालसाज़ी और फरेब के फन्दे देखने में आते हैं। पर ये ग़ुलाम भी अब धार्मिक बनने चले हैं यह बड़ी कठिनाई है, देख पड़ता है अब धार्मिक बन कर काम करना मुश्किल हो जायगा। आज कल तो गोरे इन ग़ुलामों के लिए धर्म का काम करते हैं, इससे काम की कमी नहीं। परन्तु अब जब ये ग़ुलाम भी धार्मिक होने लगे तो देश में ऐसा कोई आदमी ही नहीं रह जायगा कि जिस पर धर्म की मूठ चलाई जा सके। अस्तु। बोलिए आप इस धर्म की क्या क़ीमत चाहते हैं ? क्या धर्म का भाव आज कल कुछ बढ़ गया है ? किसी समाचार-पत्र में तो नहीं देखा। हाँ तो कहिए जनाब, इस धर्म के लिए क्या भेंट चढ़ानी पड़ेगी ?

हेली—असल में आप इसे ख़रीदना नहीं चाहते, यों ही मज़ाक कर रहे हैं। हम आपकी इस बात को मानते हैं कि इस दुनिया में कितने ही आदमी धर्म का जामा पहन कर लोगों पर हाथ साफ़ करते हैं लेकिन सच्चे आदमी भी दुनिया से निर्बीज नहीं हुए हैं। जो सच्चा धार्मिक है वह दुनिया को कभी धोखा नहीं देता। आप इस सार्टिफ़िकेट पर ग़ौर क्यों नहीं करते ? टाम के पहले मालिक ने इसकी कितनी बड़ाई की है, देखिए।

सेन्टक्लेयर—ख़ैर, यदि आप निश्चय-पूर्वक मुझसे यह कह सकें कि धार्मिक आदमी को ख़रीदने से परलोक में भी मैं उसके धर्म का मालिक हो सकूँगा, उसके धर्म का फल मैं भोग सकूँगा तो मैं धर्म के नाम पर तुम्हें कुछ अधिक रुपये दे सकता हूँ।

हेली—वाह साहब, भला ऐसा भी कहीं हुआ है ? परलोक में एक के धर्म का दूसरा कैसे मालिक हो सकता है ? जीते जी यह आपका ग़ुलाम है, इसलिए आपका माल है । लेकिन परलोक में इसका धर्म आपका माल कैसे होने लगा ? हम तो ऐसा ही समझते हैं, आपको बेशी पूछ ताछ करनी हो तो पादरियों से सलाह कीजिए ।

सेन्टक्लेयर—मिस्टर हेली, तब देखिए, जब इसका धर्म इसी के साथ रहेगा, मेरा उससे कोई सम्बन्ध न होगा तब उस धर्म के लिए अधिक दाम माँगना अनुचित है ।

इतना कह कर सेन्टक्लेयर ने हँसते हुए हेली के हाथ में कई क़िते नोट पकड़ा दिये । कहा,—"लीजिए, गिन लीजिए ।" हेली ने नोट गिन कर प्रसन्नतापूर्वक जेब के हवाले किये और बिक्री का दस्तावेज़ लिख कर सेन्टक्लेयर को दे दिया । सेन्टक्लेयर इवा को साथ लेकर टाम के पास आया और मुसकुराते हुए उसके कन्धे पर हाथ रख कर कहा, "आज से मैं तुम्हारा मालिक हुआ । कहो अपने नये मालिक को कैसा समझते हो ?"

टाम ने घूम कर ज्यों ही सेन्टक्लेयर की ओर देखा, उसकी आँख से आनन्द के आँसू टपकने लगे । वास्तव में जो कोई सेन्टक्लेयर के सदा हँस-मुख, प्रसन्न, स्नेहमय चेहरे की ओर देखता था उसी का हृदय आनन्द से भर जाता था । टाम ने कुछ देर बाद सेन्टक्लेयर के प्रश्न के उत्तर में कहा—"श्रीमन्, परमात्मा से आपके कल्याण के निमित्त प्रार्थना करता हूँ । वह आपको सुखी रक्खे ।" सेन्टक्लेयर ने टाम से फिर पूछा—

"तुम्हारा नाम टाम है न ? तुम गाड़ी हाँकना जानते हो ?" टाम ने कहा, "मैं अपने पहले मालिक शेल्बी साहब के यहाँ बराबर गाड़ी चलाता था ।"

यह सुन कर सेन्टक्लेयर ने कहा—

"तो ठीक है, तुम्हें गाड़ी हाँकने का ही काम दिया जायगा। लेकिन देखना बिना ज़रूरत सप्ताह में एक बार के सिवाय शराब मत पीना। नित्य शराब पीकर गाड़ी हाँकोगे तो किसी न किसी दिन जान से हाथ धोना पड़ेगा।

पहले तो टाम को यह बात सुन कर बड़ा अचम्भा हुआ फिर उसने बड़े खेद से नम्रतापूर्वक कहा, "जी, मैं कभी शराब नहीं पीता।" सेन्टक्लेयर ने टाम के ये कातर वचन सुन कर कहा—"हाँ, मैंने सुना है कि तुम शराब नहीं पीते। यह बहुत अच्छा है। पर तुम्हारे दुःखित होने की कोई बात नहीं है। मैंने तो यों ही कह दिया था। तुम्हारी बात-चीत से मालूम होता है कि तुम अच्छी तरह सब कामकाज निभा लोगे।" टाम ने कहा, "जी, मैं कोई भी काम हो उसे जी से करने की चेष्टा करता हूँ।" इसी बीच में इवाञ्जेलिन ने टाम का हाथ पकड़ कर कहा—"टाम काका, तुम्हें कोई डर नहीं। हमारे यहाँ तुम बड़े आनन्द में रहोगे। बाबा किसी को कभी कष्ट नहीं देते। बाबा से कोई बात करने आता है तो वे केवल हँसते ही रहते हैं।" सेन्टक्लेयर ने प्यार से इवा की ठुड्ढी पकड़ कर कहा, "तेरी इस प्रशंसा के लिए मैं तेरा कृतज्ञ हूँ।"

—:०:—

सोलहवाँ परिच्छेद।

टाम का नया मालिक।

यहाँ से टाम के जीवन के इतिहास के साथ और भी अनेक जीवनों का सम्बन्ध आरम्भ होता है। अतएव यहाँ उन लोगों का कुछ परिचय देना उचित है।

अगस्टिन सेन्टक्लेयर के पिता लुसियाना के एक रईस और ज़मींदार थे। अगस्टिन के पुरुषा कैनाडा-निवासी थे। अगस्टिन के पिता जन्मभूमि छोड़ कर लुसियाना चले आये और वहाँ कुछ ज़मीन लेकर बहुत से ग़ुलामों से काम लेने लगे और धीरे धीरे एक अच्छे ज़मींदार हो गये, और अगस्टिन के चाचा वारमण्ट में जा बसे और वहाँ खेती करने लगे।

अगस्टिन की माता का जन्म हिउग्नो सम्प्रदाय के एक फ़रासीसी उपनिवेशी के घर हुआ था। अगस्टिन का शरीर जन्म से ही अपनी माता की भाँति दुर्बल था। वारमण्ट का जल-वायु बड़ा अच्छा समझा जाता था, इससे बहुत बचपन में ही अगस्टिन अपने चाचा के यहाँ भेज दिया गया था।

अगस्टिन सेन्टक्लेयर में बालपन से ही कोमलता, उदारता और दयालुता के चिह्न स्पष्ट झलकते थे। ज्यों ज्यों सेन्टक्लेयर की उम्र बढ़ती गई, त्यों त्यों साथ ही साथ उसके इन गुणों की भी वृद्धि होती गई। उसकी बुद्धि बड़ी प्रखर थी, उदारता और महत्ता उसके हृदय के स्वाभाविक गुण थे; क्षुद्रता और नीचता आदि भाव उसके

किनारे नहीं फटकने पाते थे। काम-काज में भी उसका मन न लगता था। इससे उसके पिता ने सारे काम-काज का भार अपने दूसरे लड़के अलफ्रेड के हाथ में सौंप दिया था।

अगस्टिन की विश्वविद्यालय की पढ़ाई शीघ्र ही समाप्त हो गई। फिर उसके जीवन में उस लहर का सञ्चार हुआ जो एक बार सबके हृदयों को चञ्चल बना देती है। उस लहर से उसका प्रेमी हृदय नवीन अनुराग से उमड़ उठा, उसके जीवन-सरोवर में नवीन कमल खिल गया। अस्तु, रूपक जाने दीजिए, संक्षेप में सुनिए, क्या बात थी—सेन्टक्लेयर एक बुद्धिमान् रूप-गुणशीला रमणी के विशुद्ध प्रेम का पात्र हो गया। दोनों का विवाह ठहर गया। युवक अपने घर बड़े उत्साह से विवाह की तयारियाँ करने लगा। इसी बीच में उसकी प्रेमिका के अभिभावक का एक पत्र आया। उसमें लिखा था—

"यह पत्र तुम्हारे पास पहुँचने के पहले ही तुम्हारी मनोनीता कुमारी दूसरे की पत्नी हो जायगी।"

इसी के साथ सेन्टक्लेयर के वे सब प्रेम-पत्र भी वापस आये जो समय समय पर उसने अपनी प्रेमिका कुमारी को भेजे थे।

सेन्टक्लेयर इस पत्र को पा कर दुःख और अभिमान से पागल सा हो गया। हृदय की अनिवार्य यन्त्रणा के वेग से अधीर हो कर उसने निश्चय किया कि अब सारी पिछली बातों को हृदय से एक-दम भुला दूँगा। अदम्य अभिमान के कारण उसने इस बेढङ्गी कार्रवाई का कारण भी न दरियाफ़्त किया। उस पत्र के पाने के दो सप्ताह के भीतर ही उसी नगर के एक धनवान् वणिक् की अति रूपवती कन्या से उसका विवाह ठीक हो गया। यह संसार एक मात्र ख़रीद-फ़रोख़्त का बाज़ार है। विशुद्ध प्रेम और अकृत्रिम परिणय का सौदा इस बाज़ार में बहुत कम होता है, शायद ही कभी

होता हो। अगस्टिन साधारण नियमों से बाहर न था इससे उसे भी लाचार होकर इस संसार-प्रचलित लेने बेचने की प्रथा का ही अवलम्बन करना पड़ा। देखते देखते उसका विवाह हो गया। जिस स्त्री से सेन्टक्लेयर का विवाह हुआ था उसकी जमा-पूँजी—बस रुपया और सौन्दर्य्य ये ही दो चीज़ें थीं।

विवाह के उपरान्त नये दुलहा दुलहिन इष्ट मित्रों के संग हँसी ख़ुशी में दिन बिताने लगे। किन्तु एक मास भी न होने पाया था कि एक दिन अगस्टिन के नाम एक पत्र आया। पत्र के सिरनामे पर वही परिचित अक्षर थे। पत्र देख कर सेण्टक्लेयर का मुँह पीला पड़ गया, काँपते हुए हाथों से उसने पत्र ग्रहण किया। जिस समय सेन्टक्लेयर को पत्र मिला था उस समय मित्रों से उसका घर भरा हुआ था, वह एक आदमी से ख़ूब हँस हँस कर बातें कर रहा था। ज्यों त्यों वह अपनी बातें समाप्त करके चुपके से चलता बना। एकान्त में जा कर सेन्टक्लेयर ने पत्र खोला। हाय! आज इस पत्र को पढ़ कर ही क्या लाभ है?

वह पत्र सेन्टक्लेयर की पूर्व प्रेमिका के पास से आया था। इसे पढ़ कर विवाह का पूरा रहस्य और सारा भेद मालूम हुआ।

पहले जिस अभिभावक का उल्लेख किया गया है, उस नर-पिशाच नीच ने अपनी अधीनस्था इस कुमारी को अपने पुत्र के साथ ब्याहने की बड़ी चेष्टा की। पर जब कन्या किसी तरह राज़ी न हुई तो उस पर मनमाने अत्याचार करने लगा। इससे भी जब सफलता न हुई तो इस दगाबाज़ ने ऊपर वाली चाल चल कर सेन्टक्लेयर से उसका पवित्र नाता तोड़ दिया। इधर सेन्टक्लेयर का पत्र न पाने के कारण प्रेम-विह्वला कुमारी दिन दिन घबराने लगी। पत्र पर पत्र लिखे, पर उत्तर न मिला। हज़ार सोचा पर कोई कारण ढूँढ़े नहीं मिला।

धीरे धीरे उसके मन में तरह तरह के सन्देह और आशङ्कायें उठने लगीं। इसी सोच में वह दिन दिन सूखने लगी। अन्त में एक दिन उस पापी अभिभावक की शठता उसे मालूम हो गई। वह जान गई कि इस पापी नराधम ने उनके पारस्परिक प्रेम में बाधा डालने की कुचेष्टा की है।

पत्र पढ़ कर सेन्टक्लेयर को सब बातों का पता चला। पत्र का अन्तिम भाग आशा-पूर्ण वाक्यों और प्रेमोक्तियों से भरा हुआ था। रमणी लिखती है, "मैं जीते जी तुम्हारी ही हूँ।" अभागा युवा उसे पढ़ कर छटपटा कर रह गया, उसे मौत से भी अधिक दुःख हुआ! पर क्या करता? सोचा, अब दुःख करने से पुरानी बात नहीं लौटती। उसने तुरन्त उत्तर दे दिया। उसने पत्र में लिखा:—

"तुम्हारा पत्र मिला—किन्तु समय पर न मिला। अब मिलना न मिलना दोनों बराबर है। मुझे जो ख़बर मिली थी उसे मैंने सच मान लिया। उस समय मैं पागल सा हो गया था। मेरा विवाह हो गया। जो कुछ होना था हो चुका; कुछ बाक़ी न रहा। अब सब बातें जी से भुला दो। जो हो गया सो हो गया।"

इस घटना से सेन्टक्लेयर का सुख-स्वप्न भङ्ग हो गया, उसका प्रेमी हृदय शुष्क हो गया। उस काल्पनिक सुख-शान्ति-पूर्ण संसार को कल्पना से विदा करके सेन्टक्लेयर को प्रकृत संसार-पथ का पथिक होना पड़ा। वह कल्पनानुरञ्जित संसार प्रकृत संसार से कितना भिन्न है, इसका अनुभव उस संसार में प्रवेश किये बिना नहीं हो सकता।

उपन्यासों में प्रणयनिराशा और मृत्यु मानों एक साथ एक ही डोर में बँधे रहते हैं। ज्यों ही कोई प्रणय से निराश होता है, बस तुरन्त मृत्यु महारानी पहुँच कर उसके भग्न-हृदय की दारुण जलन को सदा के लिए ठंढी कर देती है।

पर प्रकृत जीवन और उपन्यास में बड़ा भेद है। प्रकृत जीवन में उपन्यास की भाँति मृत्यु इतनी पास नहीं खड़ी रहती है। संसार में नित्य कितने ही लोगों का प्रणय टूटता रहता है, पर, कहिए कितने आदमी हैं जो उसके लिए प्राण देते हैं? जीवन चारों ओर से दुःख और यन्त्रणाओं से घिर जाता है, सारी आशाओं पर पानी फिर जाता है, हृदय घोर निराशा में डूब जाता है—इतने पर भी मनुष्य नहीं मरता। जैसे समय पर पहले खाता पीता था, काम करता था, सोता घूमता था, वैसे ही अब भी सारे के सारे काम करता है। अगस्टिन के हृदय को बहुत गहरी चोट लगने पर भी संसार की इसी गति के अनुसार उसे सारे काम करने पड़ते थे। किन्तु उसकी पत्नी मेरी यदि योग्य होती तो उसका अन्धकारमय जीवन फिर भी प्रकाशमान हो सकता था। पर मेरी की अदूर-दर्शी दृष्टि अगस्टिन के हृदय तक न पहुँचती थी। उसने यह बात जानी तक नहीं कि उस हृदय पर कोई घाव लगा है। हम पहले ही कह आये हैं कि विपुल-सम्पत्ति और रूप लावण्य के सिवाय मेरी में और कोई भी गुण न था। पर इन दोनों में एक भी जी की जलन को ठण्ढा नहीं कर सकते—हृदय के घाव को नहीं भर सकते।

उस दिन वह पत्र पाने के बाद अगस्टिन एक निर्जन कमरे में जा कर पड़ रहा था। बड़ी देर के बाद पत्नी ने आ कर पूछा, "तुम्हें क्या हो गया है?"

सेन्टक्लेयर ने कहा, "मेरा सिरदर्द कर रहा है।" बुद्धिमती मेरी ने इसी को सच मान लिया। फिर और कोई बात न पूछ ताछ कर ओषधि की व्यवस्था कर दी। पर वह सिर-दर्द क्या एक दिन का था? उसके बाद अक्सर सेन्टक्लेयर को इसी प्रकार सिर-दर्द हुआ करता था। जब देखते देखते कई दिन बीत गये तब एक दिन मेरी

ने कहा, "मैं विवाह के पहले नहीं जानती थी कि तुम ऐसे रोगी हो। मैं देखती हूँ तुम्हें तो बराबर ही सिर-दर्द हुआ रहता है। मेरे फूटे भाग! अभी हाल में हम लोगों का विवाह हुआ है और अभी से मुझे लोगों के घर अकेले घूमने जाना पड़ता है, तुम साथ नहीं जा सकते। मुझे यह बड़ा नागवार मालूम होता है।"

पहले पहले तो सेन्टक्लेयर पत्नी की मोटी बुद्धि देख कर मन ही मन सन्तुष्ट हुआ। पर जब विवाहित जीवन के कुछ आरम्भिक दिन बीत गये और आदर-सत्कार का बन्धन कुछ ढीला पड़ने लगा, तब सेन्टक्लेयर ने देखा कि रूप और गुण दोनों एक साथ नहीं रहते, और कोरी लावण्यता और सौन्दर्य्य मनुष्य को अधिक दिनों तक सुख नहीं दे सकते, उनका आनन्द शीघ्र ही फीका पड़ जाता है। उसने जाना कि ऐश्वर्य की गोद में पली हुई और पिता की लाड़ली सुन्दरी से इस जीवन-यात्रा में सुख पाने की कोई सम्भावना नहीं है। जिसे लोग प्रेम कहते हैं, उस प्रेम की मात्रा मेरी के हृदय में थी ही बहुत थोड़ी; और जो नाम मात्र को थी भी, तो, वह भी अपने ही ऊपर थी, दूसरों पर नहीं। मेरी अपने पिता की एकलौती बेटी है। जन्म से वह पिता के घर नौकर-चाकर तथा कुटुम्बियों पर हुकूमत करती आई। उसे जब जिस बात की चाह हुई वह तुरन्त पूरी होती थी। उसने जब जो चाहा, वह सुलभ हो या दुर्लभ, पिता ने तत्काल उसे वही देकर राज़ी किया। दास-दासियों पर वह जैसा प्रभुत्व और उत्पात करती थी उसकी बात ही मत पूछिए। वे बेचारे हर समय मालिक की लड़की को ख़ुश रखने की चिन्ता में लगे रहते थे। कहीं तिल भर भी भूल हो जाती तो वह उन्हें बड़ा कठोर दण्ड देती थी। ऐसी दशा में पल कर मेरी का हृदय केवल अहम्मन्यता और स्वार्थ-परता का आधार हो गया था। अपने सुख के

सिवाय उसे और कुछ सुहाता ही न था, अपनी बात के आगे उसे पल भर के लिए भी दूसरे की बात का ध्यान न आता था। साथ ही उसे अपने परमसुन्दर होने का पूरा ज्ञान था।

उस का ख़याल था कि यदि वह असामान्य रूपवती न होती तो लुसियाना प्रदेश के असंख्य नवयुवक उससे विवाह करने के लिए इतनी व्याकुलता क्यों दिखाते ? पर यहाँ मूलकारण कुछ और ही था, असल में बात यह थी कि उससे विवाह करने की इच्छा रखनेवाले युवक यही सोच कर उसे शीश झुकाते थे कि जो उससे विवाह करेगा वह उसके पिता के अपार धन का मालिक होगा। मेरी अपने स्वामी का बड़ा सौभाग्य समझती थी कि उसे उसका मेरी सा स्त्री-रत्न मिला है। स्वामी के साथ व्यवहार में भी उसका यह आन्तरिक विश्वास पद पद पर झलकता था। कभी कभी वह बातों बातों में ही बड़े साफ़ तौर से स्वामी से यह बात कह भी डालती थी।

सेन्टक्लेयर के लिए ऐसी स्त्री के साथ रह कर गृहस्थी चलाना बड़ा कठिन काम हो गया। एक ओर वह अपनी पूर्व-प्रेमिका को अपने हाथों से दिये हुए आघात का स्मरण कर के दुःखी हो रहा था, अपने को मनही मन बराबर धिक्कारता था और दूसरी ओर इसी समय श्रीमती मेरी महारानी के वचन-बाण उसका हृदय खोखला करने लगे। इससे वह प्रायः काम का बहाना करके घर से चला जाया करता। पर ऐसी स्वार्थिनी स्त्री सदा स्वामी के अन्दर का सारा प्रेम सोखने की इच्छा करती रहती है। जो स्त्री स्वामी को प्यार करना नहीं जानती वह उतना ही अधिक स्वामी का प्रेम चाहती है। अतएव सेन्टक्लेयर को घर से भाग कर भी छुटकारा नहीं मिलता था।

विवाह के बरस भर बाद मेरी के एक कन्या उत्पन्न हुई।

इस कन्या का मुख-कमल देखते ही दयालु सेन्टक्लेयर का हृदय गम्भीर सन्तान-वात्सल्य से भर गया। वह कन्या ज्यों ज्यों बढ़ने लगी त्यों त्यों सेन्टक्लेयर का प्रेम भी उस पर बढ़ता गया। पर सेन्ट-क्लेयर का इस कन्या को प्राणों से अधिक प्यार करना उसकी स्त्री को असह्य हो गया! मेरी मन ही मन विचार करने लगी कि सेन्टक्लेयर के हृदय में एक तो यों ही प्रेम नहीं है, फिर मुश्किल से जो एक दो तोला था भी सो वह इस कन्या ने ले लिया। मैं तो अब स्वामी के प्रेम से बिलकुल ही ख़ाली रह गई। यह सब अला बला सोच कर वह कन्या का जैसा चाहिए वैसा लालन पालन नहीं करती थी। कन्या के जन्म लेने के उपरान्त मेरी को प्रायः सिर-दर्द हुआ रहता था। वह सदा खाट पर पड़ी टसका करती थी। कन्या के पालन-पोषण का भार दास-दासियों के ज़िम्मे कर दिया गया। बीच बीच में सेन्टक्लेयर स्वयं उसको सम्हाल लिया करता था। ४—५ वर्ष की हो जाने पर बालिका के प्रत्येक कार्य और आचरण से विशेष दया, स्नेह और ममता का भाव प्रकट होने लगा। सेन्टक्लेयर ने कन्या की ऐसी कोमल प्रकृति और सहृदयता देख कर अपनी माता के नाम पर उसका नामकरण किया। सेन्टक्लेयर की जननी बड़ी दयालु थीं। दूसरे का ज़रा भी दुःख देख कर उनका हृदय भर आता था। अगस्टिन अपनी माता पर असीम श्रद्धा और भक्ति रखता था। उसकी माता का शुभ नाम इवाञ्जेलिन था। इससे उसने अपनी कन्या का भी वही नाम रक्खा।

इधर मेरी की हालत सुनिए, उसे एक नित्य नया मन-गढ़न्त रोग होने लगा। दिन भर अहदी की तरह खटिया पर पड़े पड़े शरीर में पीड़ा होने लगती थी और वह नित्य सोचती थी कि उसे कोई नया रोग हो गया है। उन सब रोगों की चिकित्सा और सेवा

उसकी इच्छा के अनुकूल नहीं होती इसकी उसे सदा ही शिकायत बनी रहती, और इसके लिए वह सदैव स्वामी पर चिड़चिड़ाया करती । कभी कभी अभिमान से फूल कर रोने लगती और कभी अपने भाग्य को कोसती । वह अपने मन में इसे केवल विधि की विडम्बना ही समझती थी कि जो उसकी सी रूपवती, गुणवती, पुण्यवती और बुद्धिमती नारी को ऐसी दुरवस्था में पड़ना पड़ा । कभी कभी तो ऐसा होता था कि किसी किसी मनोकल्पित रोग के कारण वह लगातार तीन तीन चार चार दिन तक खाट न छोड़ती थी । इसलिए घर का सब काम दास-दासियों के ही भरोसे था । इसके सिवा इवा का भी लालन-पालन अच्छी तरह न होने के कारण वह भी कुछ दुबली हो गई थी । यह सब देख कर सेन्टक्लेयर ने घर के प्रबन्ध एवं इवा के लालन-पालन के लिए वारमन्ट से अपने चाचा की लड़की मिस अफिलिया को लाने का निश्चय किया । विचार की देर थी, फिर वह तुरन्त इवाञ्जेलिन को साथ लेकर मिस अफिलिया को लाने के लिए वारमन्ट रवाना हो गया । जहाज़ में सेन्टक्लेयर के साथ जिस आत्मीया रमणी की बात पहले कही गई है वह मिस अफिलिया ही थी । इसे साथ लेकर अगस्टिन इस जहाज़ में घर लौट रहा था ।

जहाज़ चलते चलते नवअर्लिन्स आ पहुँचा । किन्तु इन लोगों के जहाज़ से उतरने के पहले मिस अफिलिया के सम्बन्ध में दो एक बातें कहना उचित ज्ञान पड़ता है । पूछने वाले पूछ सकते हैं कि मिस अफिलिया कैसी स्त्री है ? देखने में बड़ी सुन्दरी है या कुरूपा ? यह सब जानने के लिए पाठक विशेष कर पाठिकायें अधिक उत्सुक होंगी । परन्तु उन्हें यह जान कर सन्तोष करना चाहिए कि किसी स्त्री का रूप-वर्णन करने की शक्ति हम में नहीं है । कोई युवती स्त्री

हो, जिसका हृदय स्नेह, ममता, दया, धर्म्म इत्यादि उत्तम गुणों से अलङ्कृत है, उसे हम अपनी कन्या की भाँति प्यार करते हैं। उसकी दोनों आँखें छोटी हैं या बड़ी, उसकी नाक लम्बी है या चिपटी, ये विचार ही हमारे मन में नहीं उठते। इसी लिए हम पाठकों का यह कौतूहल मिटाने में सर्वथा असमर्थ हैं। हाँ मिस अफिलिया के सम्बन्ध में इतना कह सकते हैं कि उसकी अवस्था ४५ वर्ष की है। घर के काम-काज में वह बड़ी होशियार है। उसके हर काम से उसकी सहनशीलता और फुर्तीलेपन का परिचय मिलता है। उसके सारे काम और व्यवहार नियमपूर्वक उत्कृष्टता और बड़ी परिपाटी से होते हैं। काम के लिए यदि वह कोई नियम बना लेती है तो कभी उसे नहीं तोड़ती; नियम की तो वह बड़ी ही पक्की है। असावधानी को वह बहुत बड़ा पाप समझती है। वह औरों को भी किसी काम में लापरवाही करते देख कर बहुत झुंझलाती और उन पर घृणा प्रकट किया करती है। कर्त्तव्य-पालन में वह बड़ी कठोर है। जिस काम को वह अपना कर्त्तव्य समझती है उसे पूरा करने में कोई बात उठा नहीं रखती। वह सदा विवेक से काम लिया करती है। यदि उसे "विवेक की दासी" कहा जाय तो भी अत्युक्ति न होगी। वास्तव में अँगरेज़-ललनाओं में बहुतेरी विवेक के वश में होती हैं। पर उनका वह विवेक-यन्त्र अंकुश की भाँति उन्हें चलाता है। मनुष्य-समाज में दो तरह के काम दिखाई पड़ते हैं। कुछ आदमी ऐसे होते हैं जो केवल कर्त्तव्य मान कर विवेक का आदेश पालन करते हैं। पर उसे पालन करके उनके हृदय में आनन्द की धारा नहीं बहती। और, कुछ ऐसे होते हैं जो हृदय के वेग में पड़ कर विवेक का आदेश पालन करने में उन्मत्त हो जाते हैं।

पहले प्रकार के विवेक का आदेश लोहे के चने चबाने से भी

कठिन काम है । जो लोग पहले प्रकार के विवेक के आदेश पर काम करते हैं उन्हें दुनिया कर्त्तव्य-परायण कहती है । पर दूसरे प्रकार का विवेक मनुष्य को कर्त्तव्य-प्रमत्त बना देता है । ऐसी दशा में विवेक और आवेग इन दोनों में कोई भेद नहीं रह जाता । महाराज जयसिंह को कर्त्तव्य-परायण कहा जा सकता है, पर वह कर्त्तव्य-मत्त अथवा कर्त्तव्य-प्रेमी कहलाने के अधिकारी नहीं हो सकते । दूसरी पवित्र श्रेणी में महात्मा बुद्ध, ईशा और चैतन्यादि के पवित्र नाम गिनाने योग्य हैं । कर्त्तव्य-परायण मनुष्य कल की भाँति कर्त्तव्य के अनुरोध का पालन करता है; परन्तु कर्त्तव्य-मत्त व्यक्ति हृदय के उमड़े हुए वेग से तन्मय होकर कर्त्तव्य को पूरा करता है ।

मिस अफिलिया कर्त्तव्य-परायणा थी । हम उसे कर्त्तव्य-मत्त नहीं समझते । कर्त्तव्य-पालन में वह कभी पीछे नहीं हटती, दुर्गम पर्वत उसके कर्त्तव्य-मार्ग में बाधा नहीं डाल सकता । अगाध समुद्र वा प्रचण्ड अग्नि उसे कर्त्तव्य-पालन से विमुख नहीं कर सकती । हृदय की अनिवार्य निर्बलता से वह सदा घोर संग्राम किया करती थी । यदि वह उस विकट संग्राम में कभी हार जाती तो अपनी निर्बल प्रकृति का ध्यान करके बहुत खिन्न होती थी । अतएव इन कारणों से उसका हार्दिक धर्म-विश्वास उसे प्रसन्न न बना कर उलटा कभी कभी उसके अन्तःकरण को विषाद के अन्धकार से पूर्ण कर देता था ।

पर बड़ा आश्चर्य तो यह देख कर होता है कि अफिलिया जैसी कर्त्तव्यपरायणा, धीर-गम्भीर प्रकृति वाली और विवेकानुवर्त्तिनी स्त्री, चञ्चल-मति, लघुस्वभाव और हँसोड़ अगस्टिन को प्यार करे । इन दोनों की प्रकृति में ज़रा भी समता न थी । दोनों के स्वभाव में ३६ का सा सम्बन्ध था । लेकिन मिस अफिलिया लड़कपन से ही बड़े चाव से अगस्टिन को धर्म-शिक्षा दिया करती और अपने सगे छोटे

भाई की भाँति उसका दुलार करती थी। अगस्टिन का स्वभाव चञ्चल होने पर भी वह बड़ा स्नेह-शील था। इसी से मिस अफिलिया लड़कपन से उसे प्यार करती थी और यही कारण था कि अगस्टिन के प्रस्ताव पर वह तुरन्त उसके घर जाने को राज़ी हो गई। अगस्टिन के घर का काम-काज सँभालने तथा इवाञ्जेलिन के पालन-पोषण का भार उठाने के लिए बड़ी ख़ुशी से अगस्टिन के साथ नवअर्लिन्स आ गई।

जहाज़ के नवअर्लिन्स पहुँचते ही मिस अफिलिया बड़ी फुर्ती से माल असबाब बाँधने लगी। इधर इवा से बार बार कहने लगी—"तेरी गुड़िया कहाँ है, कैंची कहाँ है, खिलौने कहाँ हैं? अपने सब खिलौने गिन डाल। कितनी लापरवाही रखती है! अभी तक इन चीज़ों को नहीं गिना?"

इवा—बूआ, अब तो हम लोग घर ही चलते हैं, इन सब चीज़ों को लेकर क्या होगा।

अफिलिया—क्या होगा? घर ले चल, वहाँ ठिकाने से रख देना। बच्चों को अपनी वस्तुएँ सावधानी से रखनी चाहिएँ।

इवा—बूआ, मुझे यह सब रखना धरना नहीं आता।

अफिलिया—अच्छा, तू देख मैं सब ठीक किये देती हूँ। एक यह तेरा बक्स है, यह खिलौना दो; कैंची तीन और फीता चार। सब चार अदद हुईं। बेटी! मैं जानती हूँ तू अकेली अपने बाबा के साथ आती तो यह सब चीज़ें खो जाती।

इवा—हाँ, मैंने यों ही कितनी ही बार कितनी ही चीज़ें खो दीं और बाबा ने वे सब चीज़ें मुझे फिर ख़रीद दीं।

अफिलिया—वाह! कैसी अच्छी कार्य-प्रणाली है! एक बार एक चीज़ को खो देना और फिर उसी को ख़रीद लेना!

इवा—बूआ, यह तो बड़ी सीधी बात है।

अफिलिया—सीधी बात है? हद दर्जे की लापरवाही है! बड़ी लापरवाही है!

यों ही बार बार "लापरवाही, लापरवाही" करते हुए सारी वस्तुएँ बक्स में भरने लगी। जब बक्स भर गया तो इवा ने कहा, बूआ! बक्स तो भर गया अब इसमें और चीज़ें नहीं समायँगी। अब क्या करोगी? यह सुन कर अफिलिया बोल पड़ी—"नहीं समायँगी? ज़रूर समायँगी; क्यों नहीं समायँगी?"

इतना कहने के बाद बक्स के कपड़ों को ज़ोर से दबाने लगी। अफिलिया का रुख देख कर मानों सन्दूक बेचारा डर गया। अफिलिया ने सारी चीज़ों को सन्दूक में रख कर हँसते हुए कहा—"अभी तो इस सन्दूक में और भी चीज़ें भरने की जगह खाली है। तू इस सन्दूक पर खड़ी हो जा, मैं चाबी बन्द कर दूँ।"

इस प्रकार अफिलिया सन्दूक से संग्राम में जीत कर इवा से बोली—"तेरे बाबा कहाँ हैं? जा, उन्हें बुला ला, कह दे हम लोग तैयार हैं।"

इवा—बाबा तो नीचे के कमरे में खड़े एक आदमी से बातें कर रहे हैं और नारंगियाँ खा रहे हैं।

अफिलिया—जा, दौड़ कर बुला ला, जहाज़ अब घाट किनारे पहुँचा ही चाहता है।

इवा—बाबा कभी जल्दी नहीं करते। बूआ, तुम इधर आओ; वह देखो अपना घर देख पड़ता है।

अफिलिया—हाँ देख लिया। जा, झटपट अपने बाबा को बुला ला। लो यह जहाज़ किनारे आ गया और अगस्टिन अब भी देर कर रहा है।

जहाज़ घाट पर आ लगा। सैकड़ों कुली जहाज़ पर चढ़ आये। उनमें से एक मिस अफिलिया से बोला—"मेम साहब! अपना बक्स मुझे दीजिए"। दूसरा कुली बोला—"मेम साहब, ये बिस्तर मैं उठाता हूँ"। तीसरा कुली बोला—"मेम साहब! यह सन्दूक मेरे सिर पर उठवा दीजिए।" कुलियों का तो यह हाल था और मिस अफिलिया अपनी सारी चीज़ें अपने सामने रख कर खड़ी ख़ज़ाने के संतरी की भाँति पहरा दे रही थी। कुली उसके मुख का रुख़ और तीव्र दृष्टि देख कर डर के मारे वहाँ से सरकने लगे। इधर अगस्टिन को देर करते देख कर अफिलिया छटपटाने लगी। अनुमान पन्द्रह मिनट के बाद बिना किसी घबराहट के अगस्टिन ने अन्यमनस्क की भाँति अफिलिया के पास आकर पूछा—"बहिन तुम तैयार हो?"

अफिलिया—अब से? मैं एक घंटे से तैयार बैठी हूँ। मैं तुम्हारे लिए बहुत उकता रही थी।

अगस्टिन—उकताने की कौन सी बात थी? अपनी गाड़ी किनारे खड़ी है। भीड़ चली जाने दो तो आराम से उतर कर चले चलेंगे।

इतना कह कर अगस्टिन ने एक कुली से कहा—"अरे, हमारा यह सामान गाड़ी पर रखवा देना।" यह सुन कर मिस अफिलिया ने कहा—"मैं उसके साथ जाकर अपने सामने सब चीज़ें ठीक से गाड़ी पर रखवाती हूँ। तुम यहाँ खड़े रहो।"

अगस्टिन—तुम्हारे साथ जाने की आवश्यकता नहीं है। वह सब आप ही ठीक से रख देगा। हम लोग साथ ही चलते हैं।

अफिलिया—लेकिन यह बैग और बक्स तो मैं कुली को न दूँगी। मैं इन दोनों को स्वयं ही ले चलूँगी।

अगस्टिन—अपनी वह उत्तर प्रदेश की चाल छोड़ दो। इस देश की रीति-नीति सीखो। बक्स और बैग तुम ढोओगी तो लोग तुम्हें

दासी समझेंगे । तुम डरो मत । सब चीज़ें तुम इस आदमी को उठाने दो । वह सब चीज़ें बड़ी सावधानी से गाड़ी पर रख देगा ।

इसी समय इवा बोली, "टाम कहाँ है ?"

अगस्टिन—टाम नीचे है । इवा ! टाम को अपनी मा के पास ले जाना । कहना कि टाम को गाड़ी हाँकने के लिए लाये हैं । अब उस शराबी कोचवान को गाड़ी नहीं हाँकने दी जायगी ।

इवा—बाबा ! टाम बड़ा अच्छा कोचवान रहेगा । वह कभी शराब नहीं पीयेगा ।

इसके बाद अगस्टिन मिस अफिलिया और इवा को साथ लेकर जहाज़ से उतर कर अपनी गाड़ी पर चढ़ा । मिस अफिलिया ने गाड़ी पर चढ़ने के पहले सब चीज़ें एक एक करके सम्भाल लीं । थोड़ी ही देर में गाड़ी एक सुसज्जित द्वार पर पहुँच गई । बाहरी दरवाज़ा पार कर गाड़ी भीतर पहुँचते ही इवा उतरने के लिए बहुत छटपटाने लगी और अफिलिया को बारम्बार कहने लगी, "बूआ, देखो हमारा घर कैसा सुन्दर है ? तुम्हारे घर ऐसा बग़ीचा नहीं है ।" अफिलिया मुस्कुरा कर बोली, "अलबत्ता घर सुन्दर है पर ईसाई का सा घर नहीं जान पड़ता । मालूम होता है किसी ग़ैरईसाई का घर है ।" सेन्टक्लेयर को अपने लिए ग़ैर ईसाई शब्द सुन कर बड़ी प्रसन्नता हुई । गाड़ी दरवाज़े पर लगते ही टाम सब से पहले उतरा और घर की शोभा देख कर आश्चर्य से चारों ओर देखने लगा । सेन्टक्लेयर के मिस अफिलिया के साथ गाड़ी से उतरने पर घर के बहुत से हब्शी दास-दासी दरवाज़े पर आ कर जमा हो गये । सेन्टक्लेयर दास-दासियों पर कभी अत्याचार न करता था । उसके घर इन दास-दासियों को किसी प्रकार की तकलीफ़ न थी । खाने पीने का सब तरह का आराम था । इससे उसके लौटने पर सबको विशेष आनन्द हुआ । उसका

हँसमुख चेहरा देखने के लिए वे सब बड़े उत्सुक थे । इन दास-दासियों में एक लम्बा पुरुष था, वह बड़ा ठाठ बाट बना कर दरवाज़े पर सब के आगे आ कर खड़ा हुआ । उसके पहनावे और रोब-दाब से मालूम हो रहा था कि वह इस घर के ग़ुलामों का सरदार है । अपने पीछे बहुत से दास-दासियों को एकत्र देख कर, उन पर रोब झाड़ने के लिए उसने बड़ा तोबड़ा सा मुँह बना कर कहा, "अरे काले भाई बहिनों ! तुम लोगों की करतूतों से मुझे कभी कभी बहुत ही शर्माना पड़ता है । अपने पैर मिला कर एक लाइन में हट कर खड़े होओ । आज तक तुम लोगों ने विलायती नियमानुसार खड़े होना तक नहीं सीखा ! तुम लोगों के इस तरह खड़े रहने से मालिक के घर में जाने का मार्ग रुक गया है ।" यह वक्तृता सुन कर सब दास-दासी एक किनारे हट कर खड़े हो गये । सेन्टक्लेयर ने दरवाज़े पर पहुँचते ही एडाल्फ नामक इस प्रधान क्रीत-दास से हाथ मिलाया और उसका नाम लेकर पूछा, "एडाल्फ ! अच्छे तो हो ?" इस प्रकार सेन्टक्लेयर द्वारा आदर पाने पर एडाल्फ ने मालिक के स्वागत के लिए जो वक्तृता कण्ठ कर रक्खी थी वह सुनाने लगा । एडाल्फ की वक्तृता सुन कर सेन्टक्लेयर ने हँसते हुए कहा, "वक्तृता ख़ूब बनी है ।" इतना कह कर तुरन्त घर में चला गया । इवा घर में जाते ही अपनी मा के कमरे में पहुँची । खाट पर लेटी हुई अपनी माता के गले से दौड़ कर लिपट गई, और बारम्बार माता का मुख चूमने लगी ; पर उसकी माता ने अपने मनोकल्पित रोग के कारण कमज़ोर बनी रहने की वजह से उसको गोद में न उठाया । बल्कि इवा के गले से लिपट कर बारम्बार मुँह चूमने से वह कुछ झुँझला कर बोली, "जा, "जा" "हो गया" "बस हो गया" "ठहर जा, ठहर जा" मेरे सिर में दर्द बढ़ जायगा ।" सेन्टक्लेयर ने अपनी स्त्री के कमरे में पहुँच कर उससे प्रेम-सम्भाषण करके उसका

मुँह चूमा और मिस अफिलिया की ओर उँगली उठा कर कहा, "प्यारी ! देखो । तुम्हारे रोग की बात सुन कर अफिलिया बहिन आई हैं ।" उसकी स्त्री खाट से नहीं उठ सकी । केवल अधखुले नेत्रों से अफिलिया की ओर एक बार देख कर बड़े धीमे और दबे स्वर से उसका स्वागत किया । सब दासियां जब कमरे के द्वार पर आ कर खड़ी हुईं तो इवा उनमें मामी नाम की एक दासी के गले से लिपट कर उसका मुँह चूमने लगी । उस वृद्धा ने इवा को अपनी छाती से लगा कर उसका मुँह चूमा, उसकी दोनों आँखों से आनन्द के आंसू बहने लगे । वह बड़ी चाह से इवा का मुँह जोहने लगी । उसने जिस प्रकार इवा को अपनी छाती से लिपटाया था उससे तो यही जान पड़ता था कि वही इवा की माता होगी । कुछ देर बाद इवा ने मामी की गोद से उतर कर घर की प्रत्येक दासी का मुख चूमा । इवा को इस भाँति दासियों का मुँह चूमते देख कर मिस अफिलिया को बड़ा अचम्भा हुआ । इस पर वह सेन्टक्लेयर से बोली, "अगस्टिन ! क्या तुम्हारे इस दक्षिण देश में दास-दासियों के साथ ऐसा ही व्यवहार किया जाता है ? पर भाई हम लोग दासत्व-प्रथा के विरोधी होते हुए भी नौकरों को इतना मुँह नहीं लगाते—इतना आदर नहीं करते । हम लोग वेतनभोगी चाकरों को कभी अपने समान नहीं समझते । दास-दासियों पर दया करना उचित है । लेकिन इतना नहीं बढ़ना चाहिए । दास-दासियों का मुँह चूमने में हम लोगों को तो घृणा आती है ।" सेन्टक्लेयर अफिलिया बहिन की क्रिश्चियन-धर्म-सम्बन्धी वक्तृता का स्मरण करके मन ही मन हँसा, प्रकट में कुछ नहीं कहा । फिर कमरे से बाहर निकल कर मामी, जिमी, पली, सूकी इत्यादि हर एक दासी का हाथ पकड़ कर कुशल पूछने लगा । किसी किसी दासी के गोद के बच्चे की ठुड्ढी पकड़ कर आदर करने लगा । सेन्टक्लेयर के चले

जाने पर इवा ने नारंगी का खाँचा उठा कर उसमें से एक एक नारंगी सब दास-दासियों के बच्चों को दी। उन लोगों को वे खिलौने भी बांट दिये जो उनके लिए लाई थी।

फिर सेन्टक्लेयर ने बराम्दे में आकर एडालफ से कहा, "एडालफ ! यह जो नया आदमी मेरे साथ आया है इसका नाम टाम है। तुम सब पर बड़ी हुकूमत दिखाया करते हो। पर देखना, ख़बरदार, इस आदमी पर कभी रोब न गाँठना। तुम्हारे जैसे काले बन्दरों के मूल्य की अपेक्षा इसके दूने दाम लगे हैं।" एडालफ ने कहा, "सरकार, आप तो ठट्ठा करते हैं।" सेन्टक्लेयर ने एडालफ के कोट की ओर देख कर कहा, "वाह ! वाह! तुमने मेरा यह कोट कैसे पहन लिया।" एडालफ कुछ शर्मा कर बोला, "हुज़ूर इस कोट में ब्रांडी के बहुत दाग़ लग गये थे। इससे बड़ी बदबू आती थी। मैंने सोचा अब आप इसे थोड़े ही पहनेंगे। इसे आप ज़रूर ही फेंक देते। इसी से मैंने पहन लिया"। एडालफ की बात पर सेन्टक्लेयर हँसने लगा। इसके बाद सेन्टक्लेयर टाम को लेकर अपनी स्त्री के कमरे में गया। स्त्री से कहा, "प्यारी ! तुम सदा शिकायत किया करती हो कि मैं तुम्हारे आराम का ख़याल नहीं करता। यह देखो, तुम्हारी गाड़ी हाँकने के लिए एक अच्छा कोचवान लाया हूँ। यह आदमी कभी शराब मुँह से नहीं लगाता। गाड़ी हाँकने में बड़ा निपुण है। यह इस तरह गाड़ी हाँकेगा कि गाड़ी में चढ़ने पर तुम्हें ज़रा भी तकलीफ़ न होगी। ऐसे आराम से लेजायगा मानों तुम समाधि-स्थान को जारही हो।" सेन्टक्लेयर की स्त्री मेरी ने फिर आँखें खोल कर एक बार टाम की ओर देखा और दबे स्वर से बोली, "कुछ दिन हमारे यहाँ रहा कि शराब पीना सीखा।"

सेन्टक्लेयर—नहीं यह कभी शराब नहीं पीयेगा। यह शराब के पास नहीं फटकता।

मेरी—न पीना तो अच्छा ही है पर मुझे यक़ीन नहीं आता।

फिर सेन्टक्लेयर ने एडाल्फ को बुला कर कहा, "एडाल्फ! टाम को रसोईघर में ले जाओ। ख़बरदार तुम्हें कहा सो याद रखना। टाम पर बहुत हुकूमत मत जनाना।" एडाल्फ के चले जाने पर सेन्टक्लेयर ने अपनी स्त्री को बुला कर कहा, "प्यारी! ज़रा इधर आओ।"

मेरी—बस रहने दो अपना यह बनावटी आदर-प्यार। तुम्हें गये पन्द्रह दिन से ज़्यादा हो गये बीच में कभी खोज-ख़बर भी ली कि मैं मरती हूँ कि जीती हूँ?

सेन्टक्लेयर—क्या इन पन्द्रह दिनों में मैंने तुम्हें पत्र नहीं लिखा?

मेरी—बस, वही दो लाइनों का एक कार्ड। ऐसी चिट्ठियाँ तो नौकर-चाकरों को लिखी जाती हैं। इतने दिनों में वही दो लाइनों का एक कार्ड मिला था।

सेन्टक्लेयर—डाक निकलने ही वाली थी इससे जल्दी में कार्ड लिख कर डाल दिया था। अब उस बीती बात पर झगड़ने से क्या लाभ है? देखो यह फोटो देखो। मैं इवा का हाथ पकड़ खड़ा था। क्यों तसवीर अच्छी हुई या नहीं?

मेरी—यों हाथ पकड़ कर क्यों खड़े हुए? कोई लड़की का हाथ इस तरह पकड़ कर खड़ा होता है?

सेन्टक्लेयर—ख़ैर, मान लो खड़े होने का ढङ्ग बुरा ही था, पर देखो तसवीर अच्छी हुई या नहीं?

मेरी—"मेरे मत से तुम्हें क्या मतलब? तुम्हें क्या मेरा कोई मत पसन्द आता है?" इतना कह कर मेरी ने तसवीर उठाकर सिरहाने डालदी! सेन्टक्लेयर मन ही मन कहने लगा, पापिनी का मन किसी तरह नहीं भरता। चूल्हे में जाय ऐसी स्त्री। (प्रकट में) "अच्छा बोलो तसवीर अच्छी हुई या नहीं।"

मेरी—सेन्टक्लेयर ! मुझे दिक न करो । तुम्हें अक्ल वक्ल तो कुछ है ही नहीं । तुम मेरा दुःख नहीं समझते । मैं इधर तीन दिनों में बड़ी कमज़ोर होगई हूँ । मुझे हल्ला-गुल्ला बिलकुल नहीं सुहाता । तुम्हारे घर में आने से मानो बाज़ार सा बैठ गया है । मेरा दम निकला जाता है । सिर-दर्द के मारे मरी जाती हूँ !

मिस अफिलिया अभी तक बिलकुल चुपचाप बैठी थी । अब सिर-दर्द की बात सुन कर उसे बातें करने का मौक़ा मिला । वह बोली, "क्या यों ही बराबर आपको सिर-दर्द सताया करता है ? मैं समझती हूँ आप सवेरे उठते ही यदि चिरायते का काढ़ा पीयें तो आप को कुछ आराम हो सकता है । इब्राहिम मेरी साहब की स्त्री इन सब रोगों की ख़ूब दवाइयां जानती थीं । उनसे मैंने सुना कि इस रोग के लिए चिरायते का काढ़ा बड़ा गुणकारी है ।" यह सुन कर सेन्टक्लेयर ने कहा, "तो कल ही मैं एक बोतल चिरायते का अर्क़ लादूँगा । अच्छा दीदी, अब तुम अपने कमरे में जाकर कपड़े-लत्ते बदल डालो ।" मामी को बुला कर कहा, "अफिलिया बहिन के लिए जो कमरा ठीक हुआ हो वह बतला दो, देखो बहिन को किसी तरह की तकलीफ़ न होने पावे । बहुत अच्छी तरह बहिन की सेवा करना ।"

—:o:—

सत्रहवाँ परिच्छेद ।

टाम की नई मलकिन ।

मिस अफिलिया के आने के कुछ दिनों बाद की बात है। एक दिन सब लोग साथ बैठे भोजन कर रहे थे, उस समय सेन्टक्लेयर ने अपनी स्त्री से नाम लेकर कहा—"मेरी ! लो अब तुम बैठी चैन की बंसी बजाओ। घर के झगड़े-झंझटों से तुम्हें छुट्टी मिल जायगी। अफिलिया बहिन घर के काम काज में बड़ी निपुण हैं। वह सारा काम विशेष नियमित रीति से करती हैं। वह घर का समस्त कार्य सम्हाल लेगी और तुम बैठी आराम करना। अब तुम घर का समस्त भार और ताला-कुञ्जी उन्हें सौंप कर निश्चिन्त हो जाओ।"

मेरी—मैं तो इससे बड़ी प्रसन्न हूँ। पर तुम्हारी बहिन को भी शीघ्र ही पता चल जायगा कि तुम्हारी गृहस्थी निभाना कितना कठिन काम है ! इस घर में उलटे हमीं लोग नौकरों के नौकर हो रहे हैं।

सेन्टक्लेयर—हाँ, मेरी बहिन को धीरे धीरे इस घर की बहुत सी बातों से जानकारी हो जायगी।

मेरी—तुम सोचते हो कि इन क्रीतदास-दासियों द्वारा हम लोगों को सुख मिलता है। लेकिन मेरे तो ये जी के जञ्जाल हो रहे हैं, ये यहाँ से विदा हो जायँ तो ही अच्छा है।

मेरी के इस कहने पर इवाञ्जेलिन ने बड़े आश्चर्य से माता की ओर देखा और कुछ देर बाद बोली—"माँ, दास-दासियों से आराम नहीं मिलता तो इन्हें छोड़ देना चाहिए। फिर इन्हें रख क्यों रक्खा है ?"

मेरी—मैं तो स्वयं नहीं बता सकती कि ये किस लिए रक्खे गये हैं। ये सब के सब एक जी की आफ़त हैं। ज़्यादा तो मैं इन्हीं की वजह से बीमार हो गई हूँ।

सेन्टक्लेयर—मेरी ! तुम कहती तो हो पर बतलाओ देखें कि यदि यह बुढ़िया दासी मामी न होती तो तुम्हें कितनी तकलीफ़ मिलती। मामी बिना एक दिन तो तुम्हारा काम चलही नहीं सकता, कहो ?

मेरी—हाँ, मामी और दास-दासियों के बीच कुछ अच्छी है, यह मैं मानती हूँ। लेकिन मामी है बड़ी ख़ुदग़र्ज़ ! इसकी स्वार्थपरता हद से ज़्यादा बढ़ी हुई है। इसी की नहीं, स्वार्थपरता इन ग़ुलामों का जातीय दुर्गुण है, स्वार्थपरता इनकी रग रग में घुसी हुई रहती है।

सेन्टक्लेयर—(मन का भाव छिपा कर, बड़ी गम्भीरता से) असल में स्वार्थपरता के बराबर दुनिया में कोई पाप नहीं है।

मेरी—मैं इस मामी की स्वार्थपरता की बात क्या कहूँ, यह ऐसी स्वार्थपरायणा है कि मैं कह नहीं सकती। मामी को अच्छी तरह मालूम है कि रात भर मेरे बदन पर हाथ न फेरा जाय और मुझे हवा न की जाय तो मुझे कल नहीं पड़ती। इतने पर भी किसी किसी रात को यह सो ही जाती है। चार पाँच रातों के बाद जब किसी रात को वह सो जाती है तो उसे जगाना इतना कठिन हो जाता है कि चिल्लाते चिल्लाते मेरे कण्ठ तालू से आ लगते हैं तब भी उस

नालायक़ की नींद नहीं टूटती । कल रात को उसे जगाने में मुझे जो कष्ट झेलना पड़ा उसे मेरा जी ही जानता है ।

इवा—माँ ! इसके पहले मामी पाँच छः रातों तक रात रात भर तुम्हारे पास बैठी जाग चुकी थी न ?

मेरी—तूने किससे सुना ? हाँ, हाँ, मामी ने तुझ से नालिश की है !

इवा—नहीं, नहीं, माँ ! मामी ने मुझसे कोई नालिश नहीं की, वह तो सिर्फ़ यही कहती थी कि पिछली रातों में तुम्हारी तबीयत बहुत ख़राब रही थी ।

सेन्टक्लेयर—पाँच छः दिनों तक लगातार एक आदमी रात भर नहीं जाग सकता । क्या मामी के बदले एक दिन जेन या रोज़ा को तुम्हारे पास रखने से काम नहीं चल सकता ?

मेरी—सेन्टक्लेयर ! मैं तो सदा से जानती हूँ कि तुम्हारे जैसे अनसमझ आदमी दुनिया में कम ही होंगे । वास्तव में तुम्हें बिलकुल समझ नहीं है । तुम्हें ज़रा भी समझ होती तो तुम ऐसे प्रबन्ध की बात कभी न कहते । जानते नहीं कि अपरिचित हाथ लगते ही मेरी नींद टूट जाती है । यह कोई बात नहीं है, मामी यदि मुझे प्यार करती होती तो वह ज़रूर जाग सकती । कितने ही ऐसे प्रभु-भक्त दास-दासियों की बातें सुनी जाती हैं कि जिन्होंने अपने मालिक के लिए अपनी जान तक न्यौछावर कर दी । लेकिन विधाता की कुछ मर्ज़ी ही ऐसी है कि मेरे भाग्य में प्रभु-भक्त दास-दासी लिखे ही नहीं ।

मिस अफ़िलिया बड़ी ही गम्भीरता के साथ सेन्टक्लेयर और मेरी की बात-चीत सुन रही थी । उसने अपने मुँह से एक अक्षर भी न कहा था । पर मेरी मिस अफ़िलिया की ओर देख कर फिर कहने लगी—"मैं मानती हूँ कि मामी ज़रूर थोड़ी भलीमानस है । वह

सदा मेरा सम्मान करती है। परन्तु उसका मन सदा ही स्वार्थ की ओर झुका रहता है । वह बस अपने स्वामी की ही बातें लेकर पागल हुई रहती है। मामी ने बचपन से मेरा लालन-पालन किया है इसी से मैं यहाँ इसे अपने साथ लेती आई। मामी का पति मेरे पिता के कारख़ाने में सुनार का काम करता है। बाबा उसे छोड़ नहीं सकते। इसी से मामी को अपने पति का साथ छोड़ कर आना पड़ा। मैंने मामी से बहुतेरा कहा कि अब उस स्वामी से मिलने जुलने का अधिक सुभीता नहीं रहेगा सो कोई दूसरा नया स्वामी बनाले। पर इस विषय में वह ऐसी हठिन है कि किसी तरह नया स्वामी नहीं करना चाहती। मुझसे बड़ी ग़लती हुई कि मैंने उसे मजबूर करके किसी दूसरे आदमी के साथ उसका विवाह नहीं करवा दिया। इसी से उसका दिमाग़ बढ़ गया है । दास-दासी चाहे अच्छे ही हों लेकिन उन्हें सदा दबाये ही रखना चाहिए।

यह बात सुन कर मिस अफिलिया ने पूछा—"क्या मामी के लड़के लड़कियाँ भी हैं?"

मेरी—हाँ काले काले भूत की शक्ल के दो लड़के हैं।

मिस अफिलिया। मुझे जान पड़ता है उन लड़कों को छोड़ आने के कारण ही वह सदा दुःखी बनी रहती है।

मेरी—पर इससे क्या? मैं क्या उन दो काले काले भूतों को अपने साथ ला सकती थी? मैं उन दोनों को साथ ले आती तो मामी तो बस उन्हीं की हो रहती। मेरा वह क्या काम करती, फिर तो सारे दिन वह उन्हीं लड़कों के पीछे फिरा करती। आप नहीं जानतीं कि मामी कैसी ख़ुदग़र्ज़ है। मैंने उससे नया पति बनाने को बहुत कहा पर उसने नहीं ही बनाया। और देखिए, वह जानती है कि मेरी तबीयत बहुत ख़राब हो रही है और उसके एक घड़ी रहे

विना काम नहीं चल सकता। लेकिन आज अगर मामी को लड़कों के पास जाने के लिए दो सप्ताह की छुट्टी दे दी जाय तो वह तुरन्त चली जायगी। इसका उसे ज़रा भी ख़याल न होगा कि मेरी तबीयत कैसी ख़राब है। मैं सदा से जानती हूँ कि इन ग़ुलामों की जाति वड़ी ही स्वार्थी होती है।

सेन्टक्लेयर—(वड़ी मुश्किल से हँसी रोक कर तथा मन का भाव छिपा कर) ओह! इतनी स्वार्थपरता! सोचने से कलेजा मुँह को आता है।

मिस अफिलिया सेन्टक्लेयर की ओर एकटक देख रही थीं, उसके चेहरे के उतार-चढ़ाव से उसने सहज में मालूम कर लिया कि सेन्टक्लेयर वड़ी कठिनाई से अपने मन का भाव छिपा कर बातें कर रहा है।

सेन्टक्लेयर की वात पूरी होने पर मेरी ने फिर कहना आरम्भ किया—"देखो, मैं मामी को सदा चाहती हूँ। मैं उसे पहनने को अच्छे कपड़े देती हूँ। जन्म भर में मैंने उसे दो तीन वार से अधिक पीटा नहीं। मैं सदा उसका तिरस्कार भी नहीं करती। अपने भोजन की वची खुची अच्छी अच्छी चीज़ें खाने को देती हूँ। इतने पर भी उसका स्वार्थीपन दूर नहीं होता और वह जी लगा कर मेरी सेवा नहीं करती। कारण यह कि सेन्टक्लेयर ने नौकर-चाकरों का पक्ष ले लेकर उन्हें इस तरह विगाड़ रक्खा है कि क्या कहूँ। सेन्टक्लेयर के निजू दास-दासी नीचे के कमरे में वैठ कर ठीक वही भोजन करते हैं जो हम लोग खाते हैं। और भी कितनी ही वातें हैं, इन्हीं सव के कारण इन दास-दासियों का दिमाग़ चढ़ गया है। ये सव वातें सेन्टक्लेयर को कहते कहते मेरे नाक में दम आ गया पर इनके कान पर जूँ भी नहीं रेंगती।

सेन्टक्लेयर—(मन के भाव छिपा कर) और मेरा तो बस कुछ हाल ही मत पूछो।

कोमल-हृदया इवान्जेलिन ये सब बातें ध्यान से सुन रही थी। उसके हृदय पर इन बातों से चोट पहुँची, उसकी आँखें डबडबा आईं। वह अपने स्थान से उठी और जाकर अपनी माता से लिपट गई।

माता चौंक कर बोली,—ऐं यह क्या,—क्या बात है?

इवा—मा! तुम एक रात मामी को सो लेने दो। मैं रात भर तुम्हारी खाट के पास बैठी रहूँगी। तुम्हें हवा करूँगी और तुम्हारे बदन पर हाथ फेरूँगी। मैं बहुत बार रात को जागती रहती हूँ, मुझे कोई कष्ट न होगा। तुम एक रात के लिए मामी को छुट्टी दे दो।

मेरी—यह बड़ी विचित्र लड़की है। ऐसी लड़की तो मैंने कभी नहीं देखी।

इवा—माँ! मैं तुम्हारे पास बैठी रहूँगी। मामी बहुत बीमार हो रही है। मैंने सुना है दस बारह दिनों से वह रात को बिलकुल नहीं सोने पाई है। इससे उसका सिर नहीं उठता है, उससे खड़ा नहीं हुआ जाता है।

मेरी—मैं मामी की सब चालाकियाँ जानती हूँ। वह भी आज कल बिलकुल और दासियों की तरह ही हो गई है। मैं उसकी सब चालाकियाँ भुला दूँगी। फिर मिस अफिलिया की ओर देख कर बोली। नौकर-चाकरों पर कभी मेहरबानी नहीं करनी चाहिए। इन्हें तनिक भी कोई तकलीफ़ हुई कि यह काम नहीं करना चाहते—काम से जी चुराने लगते हैं। पर मैं इस समय बीमारी से कितनी यन्त्रणा पा रही हूँ यह किसी को क्या मालूम। मैं किसी के सामने अपना दुःख नहीं प्रकट करती। चुप-चाप कष्ट सहना मैं अपना कर्त्तव्य समझती हूँ।

मेरी की ये सब बातें सुन कर मिस अफिलिया की तो अक़्ल ही मारी गई। उस समय इस बात की तरकीब ही न सूझी कि अपनी भावज से किन शब्दों में सहानुभूति दिखलावे। उसकी भाभी ने अपने भाग्य को कोसते हुए जिस ढङ्ग से दुर्दशा की व्याख्या की थी, उसके लिए उसे सहानुभूति-प्रकाशक वाक्य ही न मिले; इससे लाचार वह चुप ही रही। मिस अफिलिया की यह सङ्कट-दशा देख कर सेन्टक्लेयर की हँसी न रुकी। पर मेरी अपने पति को यों हँसते देख कर बड़ी नाराज़ हुई। और बहुत सताये हुए आदमी की भाँति कहने लगी—"मैं जब अपनी बीमारी की बात कहती हूँ तभी सेन्टक्लेयर हँसने लगते हैं। यह कभी मेरा कष्ट नहीं समझेंगे। सेन्टक्लेयर की समझ में मेरी यह अस्वस्थता कुछ है ही नहीं, भगवान् ही मेरे इस कष्ट को जानता है।"

मेरी के इतना कह चुकने के बाद सेन्टक्लेयर ने पाकेट से घड़ी निकाल कर देखी और फिर घड़ी पाकेट में रख कर कहा—"आज मेरा एक जगह निमन्त्रण है, वक़्त हो गया है।" इतना कह कर घर के बाहर चला आया। इवा भी अपने पिता के पीछे पीछे बाहर चली गई। सेन्टक्लेयर के जाने पर भी मेरी की बातों का सिलसिला नहीं टूटा। वह फिर अफिलिया से कहने लगी—"देख न लिया, सेन्टक्लेयर का बात-बर्ताव! उनके मन में एक बार भी इस बात की चिन्ता नहीं होती कि मैं कैसी असह्य पीड़ा भोग रही हूँ। आशा भी नहीं कि वह इस जन्म में कभी मेरे दुःख से दुःखी होंगे। क्या सेन्टक्लेयर ने कभी ख़याल किया है कि मैं वर्षों से कैसी अस्वस्थता में पड़ी हूँ। हाँ, मैं यदि दूसरी शिकायत करने वाली स्त्रियों की भाँति होती और सदा अपने कष्ट की बातों से उन्हें दिक़ करती तो वह ख़ूब समझते। शिकायत करने वाली स्त्री के पाले पड़ कर आदमी को आटे दाल का

भाव मालूम हो जाता है। पर मैं तो चुपचाप अपने मन की व्यथा मन ही में रख लेती हूँ। और यही कारण है कि सेन्टक्लेयर सोचने लगे हैं कि मैं सब कष्ट सह सकती हूँ।"

मिस अफिलिया को ठीक समझ ही में न आया कि इसका क्या उत्तर देना चाहिए।

वह जब इधर उत्तर देने की बात सोच रही थी उधर मेरी आँखों में जल भर कर और फिर पोंछ-पाँछ कर घर गृहस्थी की बातें कहने लगी। घर के साज-सरञ्जाम, खाने-पीने, कपड़े-लत्ते आदि की बाबत विस्तारपूर्वक मिस अफिलिया को समझाया। इसके बाद बोली—"मैं समझती हूँ कि मैंने सब बातें तुम्हें बतला दी हैं; अब मुझे बीमारी का दौरा होने पर मुझ से कुछ पूछने की आवश्यकता न रहे, सब काम मज़े में चला जाय। केवल इवा की बाबत कहना है—उसकी सदा देख रेख रहनी चाहिए।

मिस अफिलिया। वह तो बड़ी सूधी लड़की जान पड़ती है। मैंने तो कोई ऐसी सूधी लड़की ही नहीं देखी।

मेरी—इवा एक अद्भुत लड़की है! मेरी प्रकृति से तो वह ज़रा भी मिलती जुलती नहीं है। फिर मेरी ने ऐसी आह भरी मानों सचमुच यह एक दुर्भाग्य का विषय हो।

मिस अफिलिया ने मन ही मन कहा—अच्छा ही है कि वह तुम्हारी प्रकृति से नहीं मिलती जुलती है।

मेरी—इवा सदैव नौकरों के साथ रहती है; और मैं समझती हूँ बच्चों के लिए यह बुरा नहीं है। मैं भी बचपन में अपने पिता के दास-दासियों के बच्चों के साथ खेला करती थी, इससे मुझे कोई हानि नहीं हुई। पर इवा में बड़ा दोष यह है कि वह दास-दासियों के बच्चों को अपने ही समान समझती है। इस दोष के लिए मना करना दूर

रहा, उलटा सेन्टक्लेयर उसे इस विषय में उत्साहित करते रहते हैं। असल बात तो यह है कि वह मुझे छोड़ कर इस पृथिवी पर के जीव मात्र का आदर करते हैं।

मिस अफिलिया की चुप्पी ज्यों की त्यों रही।

मेरी फिर बोली, "यहाँ तो नौकरों को कोई कहनेवाला ही नहीं है—जो मन में आता है, करते हैं, जो नहीं आता, नहीं करते। पर मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि नौकरों का दिमाग़ कभी बढ़ने नहीं देना चाहिए, सदा उन पर शासन रखना चाहिए। बचपन से ही सदा मेरा यही स्वभाव रहा है। पर इवा इसके बिलकुल विपरीत है। मेरी समझ में नहीं आता कि इवा जब बड़ी होकर घर-गृहस्थी चलाने लायक़ होगी तो वह क्या करेगी। उसकी क्या गति होगी। मैं भी सदा नौकरों पर दया रखती थी और अब भी सदा रखती हूँ पर उनका जो स्थान है उन्हें उसी पर रहना होगा। पर इवा इसे बिलकुल नहीं समझती; वह जानती ही नहीं कि नौकरों से हमारा दर्जा ऊँचा है! आप ने अभी अभी सुना तो कि वह रात भर मेरे पास जगने को तैयार है और मामी को सोने की छुट्टी दिलाती है! इसी से मैं कहती हूँ कि इवा पर सदा नज़र रखनी चाहिए नहीं तो उसे ऐसी भूल करने की आदत पड़ जायगी।"

मिस अफिलिया ने कहा, "मैं समझती हूँ इसे तो आप स्वीकार करेंगी कि आपके नौकर हैं तो मनुष्य ही; और उन्हें थक जाने पर अवश्य आराम देना चाहिए।"

मेरी—अवश्य, निस्संदेह। आप क्या समझती हैं कि मैं इन्हें विश्राम का अवकाश नहीं देती? मैं सदा इन्हें सोने की छुट्टी देती हूँ। पर, आप मामी के सोने की क्या कहेंगी, वह तो निद्रा का अवतार ही है; वह काम करते करते, हवा करते करते, सीते सीते,

और खड़ी खड़ी, हर कहीं और हर कभी सो जाती है। क्या दास-दासियों का यह आचरण कभी सहा जा सकता है ? बहिन, मैं प्रायः अपने लिए किसी को नहीं कहती। मेरा स्वभाव ही नहीं है कि मैं अपनी शारीरिक अस्वस्थता के लिए किसी को कुछ कहूँ सुनूँ। और इन सब बातों के लिए झगड़ने की मुझ में हिम्मत भी नहीं रह गई है। किन्तु आप के भाई मेरा कष्ट नहीं समझते। इसी से मैं इतना भोगती हूँ। मेरा विश्वास है कि आप का भाई मन का साफ़ आदमी है लेकिन् पुरुषों की जाति ही स्वार्थपरायण है, और स्त्रियों की ओर से बे परवाह है। मेरा तो यही विश्वास है।

ये सब बातें सुन कर मिस अफिलिया ने पहचान लिया कि उसकी भावज किस कँड़े की स्त्री है। अतएव अब वह हर एक बात कहने के पूर्व विदेशी राजदूत की भाँति उसके फलाफल की विवेचना करने लगी। उसने मन ही मन निश्चय किया कि जब तक बिना बोले काम चलेगा तब तक नहीं बोलूँगी। किन्तु लाचार यदि बोलना ही पड़ा तो बहुत कम बोल कर चुप हो रहूँगी! यह विचार कर वह चुप ही रही और पास ही पड़े हुए ऊन और काँटों को उठा कर मोज़े बुनने लगी।

मेरी मिस अफिलिया के मन की बात बिलकुल न समझी। स्वार्थी आदमी किसी बात के सम्बन्ध में दूसरे के मन के भाव नहीं समझ सकता। वह अपनी ही अपनी गाता है। अतएव मेरी ने फिर बातें करनी आरम्भ कर दीं और अफिलिया को घर के गूढ़ तत्त्व बतलाने लगी। वह फिर बोली, "आप देखिए, मैं अपने विवाह के बाद अपनी निजी सम्पत्ति, और उसी के साथ अपने क्रीत दास-दासियों को, अपने संग यहाँ ले आई। क़ानूनन मुझे अपने नौकरों के साथ अपनी इच्छानुसार बर्त्ताव करने का अधिकार है। सेन्टक्लेयर अपने नौकरों

से चाहें जैसा वर्ताव कर सकते हैं किन्तु मेरे काम में सेन्टक्लेयर को दख़ल देने का अधिकार नहीं है। सेन्टक्लेयर का दास-दासियों के साथ बड़ा अद्भुत वर्ताव है ! इन दास-दासियों को उन्होंने एकदम बाबू बना दिया है। दास-दासियों को वह कभी दण्डगृह में नहीं भेजते। दण्डगृह में बेत खाये बिना दास-दासी क्या कभी दुरुस्त रह सकते हैं ? सेन्टक्लेयर का कहना है कि दास-दासियों को या तो वही मारें या मैं ही, दूसरा कोई नहीं मार सकता। पर मैं ऐसी कमज़ोर हो गई हूँ कि सदा इन्हें ठोकना मेरे लिए असम्भव है। और स्वयं सेन्टक्लेयर, कुसूर हो जाने पर भी कभी इन पर हाथ नहीं उठाते। कहिए कैसी भयानक दशा है ?"

अफिलिया ने बहुत संक्षेप में कहा कि मैं इस विषय में कुछ नहीं जानती। हमारे उत्तर प्रदेश में दासत्व-प्रथा नहीं है। ईश्वर को धन्यवाद है कि मुझे यह सब बातें नहीं जाननी पड़ीं।

मेरी—"पर, यहाँ आप कुछ दिनों रहेंगी तो आपको सब पता चल जायगा। आप को मालूम हो जायगा कि ये अभागे दास-दासी कैसी आफ़त की पुड़िया हैं।" इतना कहते कहते मेरी के निर्बल शरीर में तत्काल बल आ गया और वह बड़ी तेजस्विता से फिर कहने लगी, "आप देखेंगी कि इन दास-दासियों को लेकर काम चलाने में कैसी विपद है ! पर सेन्टक्लेयर से इन बातों की शिकायत करना वृथा है। वह तो कहते हैं कि "हमीं लोगों ने उन्हें दुष्टता और शठता सिखाई है। "हमीं लोगों के दोष से इन्होंने ऐसी बुरी शिक्षा पाई है। "हमीं लोगों ने इन्हें बिगाड़ा है। हम लोगों को भी ईश्वर ने दास बनाया होता तो हम भी ऐसे ही बुरे होते।" परन्तु मैं इन बातों का कुछ भी मतलब नहीं समझती। हमने इन दास-दासियों को कैसे बुरा बनाया ? हमने इन्हें कैसे बिगाड़ा ?

अफिलिया। यह तो आप मानती हैं कि हमें और दास-दासियों को ईश्वर ने एक ही तरह के रक्त-मांस से बनाया है।

मेरी—मैं यह नहीं मानती। ये काले नीच जाति के हैं।

अफिलिया—इनमें आत्मा तो है ?

मेरी—हाँ, इसे मैं स्वीकार करती हूँ। इनमें आत्मा है बेशक; इसमें कोई भी सन्देह नहीं कर सकता। पर, ये गोरों के तुल्य कदापि नहीं हैं। काला क्या कभी गोरे के समान हो सकता है ? यह बिलकुल असम्भव है। सेन्टक्लेयर का कहना है कि उनके बिछुड़ने से मुझे जितना कष्ट होता है मामी को भी अपने स्वामी से बिछुड़ कर ठीक उतना ही कष्ट हो रहा है। यह भी कोई तुलना है। मामी अपने स्वामी पर मेरे जितना प्यार कभी नहीं कर सकती है। मामी के साथ मेरी तुलना कभी नहीं हो सकती। पर सेन्टक्लेयर के से अविचारी मनुष्य इन बातों को नहीं समझ सकते। वह सोचते हैं कि मेरा इवा पर जितना स्नेह है मामी का भी अपने दोनों गन्दे भुतहे लड़कों पर उतना ही स्नेह है। जान पड़ता है यही सोच कर उन्होंने एक दिन मुझ से कहा था कि मामी को अपने लड़कों को देख आने के लिए एक सप्ताह की छुट्टी दे दो। यह बात सुन कर मुझे बड़ा क्रोध आया। मेरे शरीर की ऐसी नाज़ुक हालत और इस समय मामी को छुट्टी ! भर सक मैं बरदाश्त ही करती हूँ। पर सेन्टक्लेयर की बात या बर्ताव असह्य हो जाने से मेरा ग़ुस्सा नहीं रुकता। मैंने सब प्रकार के कष्ट और यातनायें चुपचाप सहने का प्रण कर लिया है। न मैं क्रोध करूँगी न कभी कोई बात कहूँगी। पर सेन्टक्लेयर की उस दिन की बात मुझ से सहन न हो सकी। उस दिन मुझे बड़ा ही क्रोध आया। उस समय जो मेरे मुँह में आया बक गई। उसके बाद तीन दिन तक हम लोगों की बोल-चाल बन्द

रही । परन्तु तब से सेन्टक्लेयर ने मामी को छुट्टी देने की बात न उठाई ।

मिस अफिलिया इन बातों के उत्तर में कुछ कहनेवाली थी। पर अकस्मात् न मालूम क्या सोच कर नहीं बोली। उसने वहाँ से उठने का विचार किया। कोई समझदार होता तो उसके रुख़ से उसके मन की बात ताड़ जाता। पर मेरी को इतनी अक़्ल कहाँ थी। उसने अपनी बातों का सिलसिला न तोड़ा। बोली, "अब तो आपने समझ लिया होगा कि इस घर का प्रबन्ध करना कितना कठिन है। यहाँ की भाँति जिस घर में दास-दासियों पर शासन नहीं रहता, जहाँ दास-दासी मनमाना काम करते हैं, जो चाहते हैं पाते हैं, उस घर का भी कोई ठीक ठिकाना है ! मैं अपनी नाज़ुक हालत में भी चाबुक सिरहाने रखती हूँ। पर अपनी निर्बलता के कारण मैं पाँच छः से अधिक चाबुक लगाने से थक जाती हूँ। और लोग जैसा करते हैं उनकी तरह सेन्टक्लेयर अगर इन्हें दण्डगृह में भेजते रहते तो मेरा दुःख छूट जाता।"

अफिलिया—दण्डगृह किसे कहते हैं ?

मेरी—दास-दासियों को दुरुस्त करने के लिए यहाँ दण्डगृह बने हुए हैं। वहाँ दास-दासियों को बेतें लगाने के लिए म्यूनिसिपिलिटी की ओर से आदमी नियत हैं। एक आदमी के बेंत लगाई के चार पैसे लेते हैं। चालिस पचास बेंतों के लिए तो कोई पैसा नहीं ख़र्च करता, अपने हाथ से ही काम चला लेता है। पर जब सौ दो सौ बेत लगवाने होते हैं, तब इन दास-दासियों को दण्डगृह भेजने से ही ठीक रहता है।

अफिलिया—तुमने कहा न कि, सेण्टक्लेयर स्वयं कभी किसी को नहीं मारते। फिर क्या वे दास-दासियों को दण्डगृह में भेजते हैं।

मेरी—पुरुषों के शासन का दूसरा ढङ्ग है। उनकी ज़रा सी तिरछी नज़र से दास-दासी काँप जाते हैं। वे एक बार आँख उठा कर देखते हैं तो सारे ग़ुलाम सकुचा जाते हैं। और असल में सेन्ट-क्लेयर चाहें तो सहज में इन्हें सीधा रख सकते हैं। पर वह बड़े ही आलसी हैं। कुछ नहीं करते। नहीं तो उनके कहने का जितना असर होता है उतना मेरे पीटने का भी नहीं होता।

इतने ही में सेन्टक्लेयर ने घर में आते हुए कहा—"बस वही पुराना आलस्य का राग अलापा जा रहा है। बड़े खेद की बात है कि इन आलसी दास-दासियों को अपने आलस्य के लिए महा-नरक में पड़ना पड़ेगा। तुम देखो बहिन, मेरे और मेरी सरीखे कामकाजी का उदाहरण पाकर भी ये बेईमान आलस्य नहीं छोड़ते। कैसे आक्षेप की बात है?

मेरी—सेन्टक्लेयर, तुम अपनी बातें रहने दो, तुम बड़े नाक़िस आदमी हो।

सेन्टक्लेयर—एं! मैं भी नाक़िस आदमी हूँ? क्यों, मैं तो अपनी समझ में ठीक ठीक ही कह रहा था। तुम जो आलस्य को महापाप समझती हो, मैं तो तुम्हारे उसी मत का समर्थन कर रहा था।

मेरी—मैं तुम्हारे ये सब ताने समझती हूँ।

सेन्टक्लेयर—तुम क्या मेरी बातों को ताना समझती हो?

मेरी—तुम्हें सदा मेरा जी दुखाने में आनन्द आता है। मुझे कष्ट दिये बिना तुम्हारा मन नहीं भरता!

सेन्टक्लेयर—मेरी! जाने दो इन सब झगड़ों को। आओ, यहाँ बैठो, थोड़ी देर के लिए मेल कर लिया जाय। आज एडाल्फ से झगड़ कर मैं बहुत तङ्ग हो गया हूँ।

मेरी—एडाल्फ ने क्या किया? यह ग़ुलाम बहुत सिर चढ़ गया

है। मैं चाहती हूँ उसे एकदम मेरे सिपुर्द करदो। मैं उसकी सारी शेख़ी भुला दूँगी।

सेन्टक्लेयर—एडाल्फ अब ऐसा अमीर बन गया है कि कोट और रूमाल विना हज़रत का काम ही नहीं चलता। वह मेरे कपड़ों का लागू हो रहा है, सन्दूक़ से जो ही मन में आता है निकाल कर डाट लेता है और पूछने पर एक न एक बहाना बना देता है। इसीसे आज मैंने उसे समझा दिया।

मेरी—क्या समझाया?

सेन्टक्लेयर—यही कि मैं मालिक हूँ और वह नौकर—उसे ऐसी मनमानी नहीं करनी चाहिए। और मैंने उससे यह भी कहा कि अगर उसे अच्छे अच्छे कपड़े पहनने का शौक़ ही है तो मैं उसे अलग एक दर्जन रूमाल ख़रीद दूँगा; और कोट तो कई अभी दे आया हूँ। आगे को उसे मैंने ख़बरदार कर दिया कि मेरे किसी कपड़े पर मन न चलावे।

मेरी—आह, सेन्टक्लेयर! न जाने तुम कब नौकरों पर शासन करना सीखोगे? क्या तुम उन्हें एकदम बिगाड़ कर धर देने पर ही तुले बैठे हो?

सेन्टक्लेयर—मुझे तो अपने किये में कोई दोष नहीं दिखाई देता। मैंने कभी उसे कोई ऐसी शिक्षा नहीं दी कि वह चोरी न करे, अब डाटने डपटने पर भी उसकी जो आदत पड़ गई है वह नहीं छूटेगी। ऐसी दशा में यही अच्छा जान पड़ा कि उसे कुछ कपड़े अलग दे दिये जायँ तो उसे चोरी करने की आवश्यकता ही न रहेगी।

इसी बीच में मिस अफिलिया ने कहा—"तो फिर तुमने अपने नौकर-चाकरों को अच्छी सीख क्यों नहीं दी?"

सेन्टक्लेयर—दीदी! सच पूछो तो मेरे आलस्य के कारण ही ऐसा हुआ है।

मिस अफिलिया ने कहा—"मैं समझती हूँ तुम लोग जो .गुलाम रखने वाले हो, उनके सिर एक बड़ी जवाबदेही का काम है। मैं तो सारे संसार के अधिकार के बदले में भी ऐसे दायित्व को नहीं स्वीकार कर सकती। तुम लोगों को इन्हें शिक्षा देनी चाहिए, पवित्र ईसाई धर्म में दीक्षित करना चाहिए, इनकी आध्यात्मिक और नैतिक उन्नति का उपाय करना चाहिए। यदि तुम लोग ऐसा नहीं करते हो तो निश्चय ईश्वर के यहां तुम्हें जवाब देना पड़ेगा। ये बातें मिस अफिलिया ने ऐसे जोश से कही थीं मानों सुबह से वह चुपचाप बैठी हुई मेरी की बातें सुनते सुनते ऊब गई थी और अब एकाएक बाढ़ सी आ गई।

सेन्टक्लेयर ने कहा— दीदी! जाने दो इन बखेड़ों में क्या धरा है। लो मैं पिआनो बजाता हूँ, तुम एक अच्छा सा गीत गाओ।

इसके बाद सेन्टक्लेयर पिआनो के पास बैठ कर बजाने लगा। दो एक गीत हो जाने पर सेन्टक्लेयर ने कहा, "दीदी! बात तो तुमने बहुत अच्छी कही। यह उपदेश दे कर तुमने तो अपना कुछ कर्त्तव्य पूरा कर लिया। पर मुझे उपदेश देना न देना दोनों बराबर हैं, कोई उपदेश मेरे हृदय तक नहीं पहुँचता।" ये बातें सुन कर मेरी ने कहा, "मैं इन उपदेशों की कोई ज़रूरत नहीं देखती। मेरा विश्वास है कि .गुलामों के लिए, हम अधिक से अधिक जितना कोई कर सकता है, करते हैं, कोई अधिक करता हो तो मुझे बतलाओ। मैंने भी इन दास-दासियों को बहुत समझाया, उपदेश दिये, धर्म-कथायें सुनाईं, पर इनके आचरण में ज़रा भी फ़र्क नहीं पड़ा। सच तो यह कि कोयले को हज़ार बार धोने से भी वह काले का काला ही रहता है। चाहने

को ये चाहें तो हर इतवार को गिर्जा जा सकते हैं, और हमारे कोई कोई दास-दासी जाते भी हैं, पर कोई फ़ायदा नहीं होता। मैं तो पहले ही कह चुकी हूँ कि यह अत्यन्त नीच जाति है और सदा यों ही रहेगी। इनमें किसी भी प्रकार की उन्नति नहीं होने की। अफिलिया बहिन ! मैं इन बातों को परख चुकी हूँ और आपने अभी नहीं देखा है। मैं उन्हीं के बीच में जन्मी और बड़ी हुई हूँ, और मैं सब जानती हूँ।"

मिस अफिलिया अपने पहले बोलने को ही पर्य्याप्त समझ कर अब न बोली। सेन्टक्लेयर मुँह से सीटी बजाने लगा।

सेन्टक्लेयर को सीटी बजाते देख कर मेरी ने बिगड़ कर कहा, "सेन्टक्लेयर, मैं तुम्हारी यह सीटी नहीं सुनना चाहती। इससे मेरे सिर में दर्द होने लगता है।

सेन्टक्लेयर—अच्छा मैं सीटी नहीं दूँगा। और कहो, और मुझे क्या क्या करने को मना करती हो।

मेरी—मैं चाहती हूँ मेरे दुःख में तुम थोड़ी सहानुभूति दिखाया करो; तुम कभी मेरे लिए अनुभव नहीं करते।

सेन्टक्लेयर—मेरी प्यारी दोपदाता सुन्दरी ! तुम क्या कहती हो?

मेरी—तुम्हारे इस तरह बातें करने का ढङ्ग ठीक नहीं है।

सेन्टक्लेयर—तब जैसे तुम कहो—बतलाओ कैसे बातें की जायँ ? मैं तुम्हारी आज्ञानुसार तुम्हारे बतलाये हुए ढङ्ग पर ही बातचीत करूँगा—मैं तुम्हें सन्तुष्ट करने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ हूँ।

इसी समय बाहर के बरामदे से हँसने के शब्द सुन कर सेन्टक्लेयर बाहर चला गया। अफिलिया भी उसके पीछे पीछे हो ली। बरामदे में पहुँच कर देखा कि इवा टाम की गोद में बैठी हुई है। टाम के गले में फूलों की माला डाल कर इवा बड़ी प्रसन्नता से हँस रही है। और पूछती है,—"टाम काका ! कहो अब तुम कैसे लगते हो ?"

टाम को बच्चे बहुत प्यारे मालूम होते थे। वह बड़े स्नेह से इवा के मुख की ओर देख कर धीरे धीरे हँस रहा था। अफिलिया ने इवा को टाम के गले में इस प्रकार माला डालते देख कर कहा, "सेन्टक्लेयर ! इवा को नौकरों के साथ इतना हिलने देना अच्छा नहीं है।"

सेन्टक्लेयर—क्यों, इसमें हर्ज क्या है ? तुम लोग कुत्तों को भी तो प्यार करती हो, उसका मुँह चूमती हो। फिर क्या इन दास-दासियों को उनसे भी गया बीता समझती हो ?

अफ़िलिया—तुम्हारा कहना ठीक है। लेकिन देश में जो चाल चल रही है उसके संस्कार हृदय पर जमे हुए हैं। ईसाई धर्म के किये भी ये संस्कार दूर नहीं हो सकते।

सेन्टक्लेयर—यद्यपि तुम्हारे उत्तर-प्रदेश में दासत्व-प्रथा नहीं है, फिर भी तुम्हारे यहाँ के लोग दास-दासियों को नीच जाति का समझ कर उनसे घिन करते हैं। तुम्हारे यहाँ उन्हें कीट-पतङ्ग से अधिक ऊपर नहीं समझा जाता। तुम्हारे यहाँ उनके सुधार के लिए पादरी रक्खे जाते हैं पर ग़ुलामों को छूने में घृणा की जाती है। जैसे बिल्ली-कुत्तों को मेज़ पर भोजन नहीं करने दिया जाता, बल्कि उन्हें खाने को दूर डाल दिया जाता है, वैसे ही तुम्हारे यहाँ भी उन्हें दूर से ही आध्यात्मिक आहार दिया जाता है और उनकी उन्नति का उद्योग किया जाता है। अफ़्रीका में इनके उद्धार के लिए पादरी भेजे जाते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि तुम लोगों द्वारा शीघ्र ही संसार का उद्धार हो जायगा।

अफ़िलिया—हाँ भैया, इसमें कुछ न कुछ सचाई ज़रूर है, इस से मैं इन्कार नहीं कर सकती। यह हृदय पर जमे हुए कुसंस्कारों की माया है।

सेन्टक्लेयर—मुझे तुम्हारे उन कुसंस्कारों के सम्बन्ध में कुछ

वक्तव्य नहीं है। पर हमारे देश में इन सब दास-दासियों को समय समय पर अपने बच्चों से अलग रहना पड़ता है। इससे इनमें से बहुतेरे छोटे छोटे बच्चों को गोद में लेकर बड़े ख़ुश रहते हैं। इसीसे मैं इवा को इनकी गोद में जाने से नहीं रोकता।

अफ़िलिया—दोनों पर इवा बड़ी दया करती है। टाम को इवा बहुत प्यार करती है। इवा बड़े प्रेम से टाम का गान सुनती है। वह टाम के साथ बड़ी प्रसन्न रहती है। टाम भी उसे बहुत प्यार करता है। इवा सचमुच देवबाला है। उसे देखने वाले का हृदय आनन्द से भर जाता है। तुम्हारा यह दासत्वप्रथा-कलुषित दक्षिण प्रदेश मरुभूमि समान है और इवा उसमें विकसित गुलाब की भाँति सौरभ-विस्तार कर रही है। सेन्टक्लेयर ! दास-दासियों के संबन्ध में तुम्हारा मत सुन कर तुम मुझे एक सच्चे धर्मप्रचारक जान पड़ते हो।

सेन्टक्लेयर—मैं और धर्मप्रचारक ! मुझ से और धर्म से क्या नाता ?

अफिलिया—नाता नहीं तो मुँह से ऐसी बातें क्यों कहते हो ?

सेन्टक्लेयर—कहने और करने में बड़ा फ़र्क़ है। ज़बानी जमा-ख़र्च में क्या लगता है। दीदी ! अपना अपना काम बाँट लेना बड़ा अच्छा होता है। मुँह से कहने का काम मेरा रहा और करने का तुम्हारा।

सेन्टक्लेयर के घर टाम के दिन बड़े सुख से बीतने लगे। टाम सदैव इवा के साथ रहता था क्योंकि वह उसे बहुत प्यार करती थी। सेन्टक्लेयर अपने दास-दासियों को सजे बजे देखना पसन्द करता था। इससे उसने टाम को भलेमानसों के से कपड़े पहनने को दिये थे। टाम जब उन वस्त्रों को पहने हुए इवा को साथ लेकर घूमने जाता था तो अनजान आदमी उसे कार्थेज का लार्ड बिशप समझते थे। टाम के ज़िम्मे कभी कभी घुड़साल देखने के सिवाय और कोई काम न था।

अठारहवाँ परिच्छेद ।

गिरजा

आज रविवार है। मेरी इन दिनों कपोल-कल्पित रोगों से सदा खाट पर पड़ी रहने पर भी प्रति रविवार को गिर्जा अवश्य जाया करती थी। इससे गिर्जा के पादरी साहब मेरी की बड़ी तारीफ़ किया करते थे। वह मेरी की तारीफ़ में सदा कहा करते कि, "स्त्रियों में मिसेस सेन्टक्लेयर आदर्श-धर्मपालिका है। रोग, शोक, आँधी, पानी, चाहे जो हो, वह गिर्जा जाने से नहीं चूकती। उसकी प्रबल धर्म-तृष्णा रविवार के दिन उसके दुर्बल शरीर में बिजली की तरह बल भर देती है।" मेरी मणि-मुक्ता-खचित रविवार के अति सुन्दर वस्त्र धारण करके गिर्जा जाने की तैयारी करने लगी। मेरी का यह स्वभाव था कि गिर्जा जाने वाले दिन यदि कोई दास वा दासी उसके वस्त्र लाने में विलम्ब कर देती तो वह कोड़ों की मार से उसकी पीठ लाल करके छोड़ती। उस समय उसके हाथ यन्त्र की नाईं चलते थे। बाहर गाड़ी खड़ी हुई है। अफिलिया और इवा को साथ लिये हुए मेरी कोठे से उतर रही थी। बीच ही में मामी मिल गई, इवा उससे बातें करने लगी। मेरी और अफिलिया गाड़ी में जा बैठीं। इवा को देर करते देख कर मेरी उसे बार बार पुकारने लगी। पाठक! आप मामी के साथ इवा की बातों को सुनना चाहते होंगे। लीजिए सुनिए:—

इवा—मामी! मैं जानती हूँ तुम्हारे सिर में बड़ी भयानक पीड़ा है।

मामी—मिस इवा! ईश्वर तुम्हें सुखी करें। मेरे सिर में बड़ा दर्द होता है। पर तुम इसके लिए रंज मत करो।

इवा—मामी! आज तुम्हें गिर्जा जाने की छुट्टी मिल गई यह जानकर मुझे बड़ी ख़ुशी हुई। यह कहकर उस बाला ने मामी के गले में हाथ डाल दिया और फिर बोली—"मामी, तुम मेरी यह नासदानी लेलो, इसके सूँघने से तुम्हारे सिर का दर्द मिट जायगा।"

मामी—नहीं बच्ची, मैं तुम्हारी यह सोने की सुन्दर नासदानी लेकर क्या करूँगी? मेरे पास यह क्या अच्छी लगेगी? मैं इसे नहीं लूँगी।

इवा—नहीं क्यों? तुमको इससे फ़ायदा होगा और मेरे पास बेमतलब पड़ी है। माँ सिर-दर्द के लिए इसे सदा काम में लाया करती हैं, और तुम्हें भी यह लाभ पहुँचावेगी। मेरी प्रसन्नता के लिए तुम्हें यह अवश्य लेनी पड़ेगी।

इतना कहकर नासदानी मामी की चोली में डाल कर और उसे चूमते हुए इवा अपनी माँ के पास भाग गई।

उसकी माँ ने बड़े क्रोध से पूछा—"इतनी देर कहाँ खड़ी रही।"

इवा—मैं मामी को अपनी नासदानी देने को ठहर गई थी। मैंने वह नासदानी उसे देदी।

मेरी बहुत बिगड़ कर बड़ी अधीरता से बोली—"इवा! अपनी वह सोने की नासदानी मामी को! कब तुझे अक्ल आवेगी। जा और उसे लौटा कर अभी ला।

इवा की आँखें नीची हो गईं, उसे बड़ा रञ्ज हुआ, और वह धीरे धीरे लौटी।

सेन्टक्लेयर ने, जो वहाँ मौजूद था, कहा—"मेरी! मैं कहता हूँ, इवा को अपनी इच्छानुसार कार्य करने दो; वह चाहे जो करेगी।"

मेरी—सेन्टक्लेयर! संसार में कैसे उसका बेड़ा पार होगा?

सेन्टक्लेयर—सो तो ईश्वर जानता है। पर, स्वर्ग में वह मुझसे और तुमसे अच्छी रहेगी।

इस पर इवा ने धीरे से सेन्टक्लेयर के कान में कहा—"आह! बाबा, ऐसा मत कहो। इससे माँ को बड़ी वेदना होती है।" मिस अफिलिया ने सेन्टक्लेयर की ओर घूम कर कहा—"क्यों भैय्या! तुम भी गिर्जा चलते हो?"

सेन्टक्लेयर—तुम्हें इस पूछने के लिए धन्यवाद! मैं नहीं जाऊँगा।

मेरी—मैं बहुत चाहती हूँ कि सेन्टक्लेयर भी सदा गिर्जे जाया करें। पर उनका हृदय बिलकुल धर्म-शून्य है। वास्तव में यह बड़े खेद का विषय है।

सेन्टक्लेयर—मैं तुम लोगों के गिर्जा जाने का मतलब ख़ूब जानता हूँ। लोगों में वाहवाही लूटने और धार्मिक कहलाने ही की इच्छा से तुम लोग गिर्जा जाती हो। यदि मैं कभी गिर्जा गया भी तो उसी गिर्जे में जाऊँगा जहाँ मामी जाती है। कम से कम उस गिर्जे में जाकर सोने की गुञ्जायश तो नहीं रहती।

मेरी—ओफ! मेथोडिस्टों का गिर्जा! बड़ा भयङ्कर है! वहाँ के गुलगपाड़े की भी कोई हद है। वहाँ के पादरी कितना शोर मचाते हैं।

सेन्टक्लेयर—पर तुम्हारे उस सूने मरुभूमि सरीखे गिर्जे से तो वह सदा अच्छा है। फिर इवा से पूछा, "इवा, तू भी क्या गिर्जा जाती है? आओ, यहीं घर रहो, हम दोनों खेलेंगे।

इवा—बाबा! मैं भी गिर्जा जाऊँगी।

सेन्टक्लेयर—क्या वहाँ बैठे बैठे तेरा जी नहीं घबराता।

इवा—हाँ, कुछ कुछ जी घबराता है। और कभी कभी नींद भी आने लगती है। पर मैं जागते रहने की चेष्टा किया करती हूँ।

सेन्टक्लेयर—तब वहाँ क्यों जाती है ?

इवा—बाबा ! बुआ कहती हैं कि हमें ईश्वर की प्रार्थना करनी चाहिए। वह हम लोगों को बहुत प्यार करते हैं। वही हम लोगों को सब कुछ देते हैं। गिर्जा में ईश्वर की प्रार्थना के समय जी नहीं घबराता। केवल पादरी साहब की वक्तृता के समय ऊँघ आने लगती है।

सेन्टक्लेयर कन्या की बात सुन कर और उसका सरल विश्वास देख कर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कन्या का मुँह चूम कर कहा—"जाओ, बेटी जाओ। मेरे लिए भी ईश्वर से प्रार्थना करना।"

इवा—अवश्य, मैं सदा ही करती हूँ।

यह कह कर वह गाड़ी पर अपनी मा के पास बैठ गई। सेन्टक्लेयर ने पाँवदान पर खड़े होकर उसका हाथ चूमा। फिर गाड़ी गिर्जा की ओर चली गई। सेन्टक्लेयर की आँखों से हर्ष के आँसू बहने लगे। मन ही मन बोला—"इवाञ्जेलिन ! तुमने अपने इवाञ्जेलिन नाम को सार्थक किया। तू मेरे लिए वास्तव में एक इवाञ्जेल (Evangel) अर्थात् स्वर्गीय बाला है।

गाड़ी में मेरी इवा को समझाने लगी। बोली, "इवा, तू देख, नौकरों पर दया दिखाना उचित है पर यह ठीक नहीं है कि उनसे अपने बराबर वालों अथवा सम्बन्धियों का सा व्यवहार किया जाय। मान ले आज अगर मामी बीमार पड़ जाय तो तू क्या उसे अपने बिछौने पर लेटने देगी ?"

इवा—हाँ, यह तो बड़ा अच्छा होगा। क्योंकि मेरे बिछौने पर रहने से मैं बड़े आराम से उसकी दवा तथा पथ्य-पानी की ख़बर रख सकूँगी। मेरे बिस्तरे मामी के बिस्तरों से अच्छे और नरम हैं। उन पर उसे अच्छी नींद आवेगी।

मेरी इवा का यह उत्तर सुन कर अपने भाग को कोसने लगी।

और बोली, "मैं इसे कैसे समझाऊँ ? मैंने क्या कहा और यह क्या समझी"।

अफिलिया—तुम्हारी बात को इसने कुछ भी नहीं समझा।

इवा कुछ देर तो उदास सी दिखाई दी। पर, सौभाग्य से बच्चों के मन पर किसी बात का प्रभाव देर तक नहीं ठहरता। इससे ज़रा ही देर में गाड़ी की खिड़की से इधर उधर की चीज़ें देख कर उसका मन बदल गया और वह फिर पूर्ववत् प्रफुल्लित हो गई।

\+ + + + + + +

यह लोग जब गिर्जे से लौटे और सब लोग भोजन करने बैठे तब सेन्टक्लेयर ने मेरी से पूछा—"कहो, आज गिर्जा में किस विषय पर व्याख्यान हुआ ?"

मेरी—आज पादरी साहब का धर्मोपदेश बड़ा ही हृदयग्राही हुआ। यह उपदेश तुम्हारे सुनने लायक़ था। यह बिलकुल मेरे मत से मिलता हुआ था।

सेन्टक्लेयर—तो मैं समझता हूँ आज का उपदेश किसी गम्भीर विषय पर हुआ होगा ?

मेरी—हाँ, सामाजिक बातें और ऐसे विषयों पर मेरा जो मत है, उसीसे मेरा मतलब है। पादरी साहब ने कहा—'ईश्वर प्रत्येक चीज़ को उपयुक्त समय पर परिस्फुटित करते हैं।' बाइबल के इस वचन की व्याख्या की। अपनी व्याख्या में उन्होंने बड़ी स्पष्टता से बतलाया कि ईश्वर ही ने दुनिया में दरिद्र और धनी दोनों बनाये हैं। अतएव इस बात को मानना चाहिए कि संसार में ऊँच नीच का भेद ईश्वर ही का लगाया हुआ है। उसकी इच्छा से कुछ आदमी प्रभुत्व करने को और कुछ उनकी ग़ुलामी करने को पैदा हुए हैं। उन्होंने अकाट्य युक्तियों द्वारा इस विषय को ऐसी ख़ूबी के साथ प्रतिपादन करते हुए

कहा—"जो लोग ग़ुलामी की चाल की बुराइयाँ दिखला कर उसके विरुद्ध चिल्लाहट मचाते हैं वह भूलते हैं, वे ईश्वर की शासन-प्रणाली को बिलकुल नहीं समझते । उन्हें बाइबल का बिलकुल ज्ञान नहीं है।" उन्होंने बड़ी उत्तमता से यह भी दिखाया कि यह ईश्वरीय नियम है कि मनुष्य-मण्डल के अधिकारों में सदा भेद रहेगा । कालों को गोरों की सेवा करनी चाहिए, न करेंगे तो उन्हें पापभागी बनना पड़ेगा । ईश्वर जो करते हैं सबके भले के लिए करते हैं । अतएव यह ग़ुलामी की चाल, ग़ुलाम और मालिक दोनों ही के भले के लिए है । सेन्टक्लेयर! तुमने आज के उपदेश सुने होते तो बहुत कुछ सीखते ।

सेन्टक्लेयर । मुझे उपदेशों की आवश्यकता नहीं है । मुझे यहीं बैठे बैठे चुरुट पीते हुए विचार करने में बड़ी शान्ति मिलती है । ख़ास कर तुम्हारे गिर्जे में चुरुट पीने की मुमानियत है यह बड़ी आफ़त है ।

मिस अफिलिया—क्यों ? क्या तुम इन विचारों से सहमत नहीं हो ?

सेन्टक्लेयर—कौन-मैं ? मैं ऐसे विषयों में इन धार्मिक विचारों की ज़रा भी परवाह नहीं करता; मैं ऐसे धर्म से कोई वास्ता नहीं रखता । यदि मुझे इस ग़ुलामी की चाल पर कहना पड़े तो मैं साफ़ कहूँगा कि इस ग़ुलामी की चाल से हमारा फ़ायदा है, हमें आराम है इससे इसका रहना बहुत आवश्यक और उचित है । दासों बिना काम नहीं चलता, बिना मेहनत मशक़्क़त के धन की गठरी हाथ नहीं आती, इससे दासत्व-प्रथा को हम नहीं उठाना चाहते ।

मेरी—अगस्टिन ! मैं समझती हूँ तुम्हारी धर्म पर तनिक भी आदर-बुद्धि नहीं है । तुम्हारी बातें सुन कर हृदय काँपता है ।

अगस्टिन—हृदय काँपता है ! सच है । पर, मैं तो सच्ची सच्ची कहना जानता हूँ । ये सब अपने अपने मतलब की बातें हैं । अच्छा,

पादरी लोग कहते हैं कि दासत्व-प्रथा ईश्वरेच्छित है और इसकी ज़रूरत है इसी से इसकी उत्पत्ति हुई है। ठीक है मुझे भी पादरी साहब से एक चीज़ की व्यवस्था लेनी है। जब मैं किसी दिन तास खेलने में अधिक रात तक जगा रहता हूँ तो मुझे ब्रान्डी पीने की ज़रूरत पड़ती है। पादरी साहब बतलावें कि जब ब्रान्डी पीने की ज़रूरत पड़ती है, तो वह ज़रूरत ईश्वर ही की बनाई हुई है इसलिए ब्रान्डी क्यों नहीं पीनी चाहिए। फिर पादरी साहब कहते हैं, सब चीज़ों का उपयुक्त समय होता है। उपयुक्त समय पर सभी चीज़ें अच्छी होती हैं। मेरी समझ में ब्रान्डी पीने के लिए सन्ध्या ही का समय बड़ा उपयुक्त होता है।

संध्या और ब्रान्डी दोनों ही ईश्वर की बनाई हुई चीज़ें हैं। दोनों में जब इतना मेल है तो मैं समझता हूँ कि पादरी साहब ज़रूर ब्रान्डी पीने की आज्ञा देंगे।

अफिलिया—ख़ैर, इन बातों को जाने दो। यह कहो कि तुम दासत्व-प्रथा को उचित समझते हो या अनुचित ?

सेन्टक्लेयर—मैं दासत्व-प्रथा की भलाई बुराई पर कुछ नहीं कहना चाहता। यदि मैं इस प्रश्न का उत्तर दूँ तो मैं समझता हूँ कि तुम मुझे बहुत कोसोगी। मैं उन आदमियों में से हूँ जो आप शीशे के घर में बैठ कर दूसरों पर ढेला फेंकते हैं, पर मैं स्वयं कभी ऐसा घर नहीं बनाता कि दूसरे उस पर ढेला फेंकें। तात्पर्य यह कि मैं स्वयं दोषी होते हुए भी दूसरों का दोषान्वेषण करता हूँ पर मैं कभी किसी के सामने अपना मत नहीं प्रकट करता कि जिसमें कोई मुझ पर दोषारोपण कर सके।

मेरी—बस इनकी सदा ऐसी ही बातें करने की आदत है। तुम्हें इनसे किसी बात का ठीक उत्तर नहीं मिलेगा। सच तो यह

कि धर्म से इनका वास्ता ही नहीं है। जिसका धर्म पर प्रेम होगा वह क्या कभी ऐसी बातें मुँह से निकाल सकता है ?

सेन्टक्लेयर—धर्म ! देखा तुम्हारा धर्म ! क्या तुम लोग सचमुच गिर्जे में धर्म की बात सुनने जाती हो ? समाज-प्रचलित स्वार्थपरता का तथा मनुष्य के अभ्यस्त पापों का बाइबल से जोड़ तोड़ बिठाना ही हमारे देश का ईसाई धर्म है ! देश में फैले हुए किसी भी अत्याचार और अन्याय को बाइबल में लिखा बतला दिया कि वह धर्म का अङ्ग बन गया ! तुम लोग मनुष्य के पापों को धर्म का रूप देने की फ़िक्र करती हो ! पर मैं जब धर्म की ओर दृष्टि डालता हूँ, तो अपने से ऊपर ही, न कि नीचे, देखता हूँ। मैं अपने पापों को कभी धर्म का जामा पहनाने की चेष्टा नहीं करता। जो पाप है वह पाप ही रहेगा, चाहे तुम करती हो चाहे मैं, उसे बाइबल से लाख बार सिद्ध करने की चेष्टा करो, तो भी वह कभी पुण्य नहीं हो सकता।

अफिलिया—तो तुम इस पर विश्वास नहीं करते कि ग़ुलामी की प्रथा बाइबल की रू से ठीक है ?

सेन्टक्लेयर—जिस स्नेहमयी जननी की प्रतिमूर्त्ति सदा मेरे हृदय में बसी रहती है, बाइबल उसकी बड़ी प्यारी पुस्तक थी। बाइबल पर उनकी अटल श्रद्धा और भक्ति थी। बाइबल द्वारा उनका जीवन गठित हुआ था। पर उन्हें दासत्व-प्रथा से बड़ी घृणा थी। इससे दासत्व-प्रथा बाइबल से सिद्ध है, इसे मैं कभी नहीं मानता। विचार किया जाय तो क्या यूरोप, क्या अमरीका, क्या अफ़्रीका, ऐसा कोई देश न ठहरेगा कि जहाँ के मनुष्य-समाज में किसी न किसी प्रकार की बुराइयाँ न घुसी हुई हों। जो लोग समाज में फैले हुए नीति-विरुद्ध व्यवहारों को बाइबल से सिद्ध करने में अपनी सारी शक्ति ख़र्च करते हैं

और इन्हें धर्म-सङ्गत ठहराते हैं वे लोग सचमुच अपनी गाढ़ी स्वार्थपरता के कारण मोह के दलदल में फँसे हुए हैं। दासत्व-प्रथा के विना सहज में हम लोग धनी नहीं हो सकते, मौज नहीं कर सकते, इसी से अपने सुख के लिए, अपने स्वार्थ की दृष्टि से, हम लोग दासत्व-प्रथा को आवश्यक वतलाते हैं। पर जो लोग सच्ची बात पर पर्दा डाल कर ग़ुलामी के वाइवल-सिद्ध होने की पुकार मचाते हैं, मेरी समझ में वे सरासर सत्य की हत्या करते हैं।

मेरी—तुम वड़े नास्तिक हो गये हो।

सेन्टक्लेयर—यदि आज रुई का चालान रुक जाय और हमारे देश की रुई का भाव एकदम गिर जाय तो फिर दासत्व-प्रथा की ज़रूरत न रहेगी। उस समय वाइवल का अर्थ भी वदल जायगा। आज वाइवल के मत से दासत्व-प्रथा उचित है, पर रुई का वाज़ार मन्दा हो जाय तो ग़ुलामों को सीधे अफ़्रीक़ा लौटा देना ही आकाशवाणी माना जाने लगेगा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि रुई के भाव के साथ साथ वाइवल का मत भी वदल जायगा।

मेरी—मैं दासत्व-प्रथा को धर्म-विरुद्ध नहीं मानती। ईश्वर को धन्यवाद है कि मेरे हृदय में तुम्हारी भाँति नास्तिकता के भाव नहीं भरे हैं।

इसी समय हाथ में एक सुन्दर फूल लिये हुए इवा वहाँ आई। सेन्टक्लेयर ने उससे पूछा, "अच्छा इवा, तू वतला कि तुझे वारमन्ट का दास-दासी-शून्य अपनी वूआ का घर अच्छा लगता है या अपना घर, जहाँ ग़ुलाम भरे पड़े हैं।

इवा—निश्चय अपना ही घर अच्छा है।

सेन्टक्लेयर—यह कैसे ?

इवा—हमारे घर वहुत आदमी हैं, वे सब मुझे प्यार करते हैं, और मैं उन्हें प्यार करती हूँ, इसी से हमारा घर अच्छा है।

मेरी—बस इसे प्यार ही प्यार की सूझी रहती है । हर घड़ी प्यार ! ऐसी बेअक्ल लड़की तो मैंने कहीं नहीं देखी । कहती है दास-दासियों को प्यार करती हूँ ! दास-दासियों से और प्यार !

इवा—क्यों बाबा ! मेरी यह प्यार की बात बेजा है ?

सेन्टक्लेयर—बेटी ! संसार इसे बुरी समझता है । यहाँ निःस्वार्थ प्रेम का कोई पारखी नहीं है । अच्छा, बतला तू भोजन के समय से अब तक कहाँ थी ?

इवा—मैं टाम के कमरे में थी, उसका गाना सुन रही थी । वहीं दीना चाची ने मुझे भोजन दे दिया था ।

सेन्टक्लेयर—टाम का गाना सुनती थी ?

इवा—हाँ, वह बहुत अच्छे गीत गाता है ।

सेन्टक्लेयर—सचमुच ?

इवा—हाँ, हाँ । और मुझे भी अपने गीत सिखावेगा ।

सेन्टक्लेयर—टाम तुम्हें गाना सिखलावेगा ? गाने के लिए उस्ताद तो बड़ा अच्छा पाया ।

इवा—हाँ हाँ, वह मुझे अपना गाना सुनाता है । मैं उसे अपनी बाइबल पढ़ कर सुनाती हूँ और वह मुझे उसका अर्थ समझाता है ।

मेरी ने हँसते हुए कहा, टाम बाइबल सिखलावेगा ! क्या मजे की बात है !

सेन्टक्लेयर—ऐसा मत कहो, टाम मेरी समझ में धर्म की शिक्षा देने के लिए अवश्य उपयुक्त आदमी है । धर्म के लिए वह बहुत व्याकुल रहता है और उसका हृदय भी बड़ा धार्मिक है । कल मुझे घोड़े की जरूरत थी, इससे मैं धीरे धीरे उसके कमरे की ओर गया । वहाँ जाकर देखा कि टाम आँखें बन्द किये हुए ईश्वर के ध्यान में निमग्न है । मुझे यह जानने की बड़ी उत्कण्ठा हुई कि टाम कैसे ईश्वर की

आराधना करता है। पर मैंने अब तक कभी ऐसी सरल प्रार्थना नहीं सुनी थी। बड़ी व्याकुलता से उसने ईश्वर से मेरे कल्याण की प्रार्थना की। उस समय उसका चेहरा देखने से वह सचमुच एक पूरा महात्मा जान पड़ता था। मैंने बहुतेरे पादरियों को प्रार्थना करते सुना है। किन्तु ऐसी विश्वास-पूर्ण प्रार्थना कभी नहीं सुनी।

मेरी—शायद उसने जान लिया होगा कि तुम सुनते हो, इससे तुम्हें ख़ुश करने के लिए उसने ढोंग रचा होगा। मैंने पहले भी कई बार उसकी ठगविद्या की बात सुनी है।

सेन्टक्लेयर—उसने मेरी मनस्तुष्टि की कोई बात नहीं निकाली। उसने निष्कपट-चित्त से ईश्वर के सन्मुख अपने मनोभाव प्रकट किये। उसने ईश्वर से इसी बात की प्रार्थना की कि मुझ में जो सब दोष हैं, वह दूर हो जायँ। इससे यह बात मन में नहीं लाई जा सकती कि वह ढोंग करता था।

अफिलिया—मैं आशा करती हूँ कि तुम्हारे हृदय पर इसका अच्छा असर होगा।

सेन्टक्लेयर—मैं समझता हूँ तुम्हारी और टाम की राय मेरे विषय में मिलती जुलती है। अच्छा, मैं अपना चरित्र सुधारने की चेष्टा करूँगा।

उन्नीसवाँ परिच्छेद ।

दासत्व-शृङ्खला उन्मोचन की चेष्टा ।

अब हम थोड़ी देर के लिए टाम से विदा होते हैं और पाठकों को जार्ज, इलाइजा, जिम और उसकी वृद्धा माता का वृत्तान्त सुनाते हैं।

संध्या का समय निकट है। जार्ज अपने लड़के को गोद में लिये हुए और अपनी स्त्री इलाइजा का हाथ अपने हाथ में पकड़े हुए बैठा है। दोनों चिन्ता-मग्न और गम्भीर जान पड़ते हैं, उनके गालों पर आँसुओं के चिह्न देख पड़ते हैं।

जार्ज ने कहा, "हाँ, इलाइजा, मैं जानता हूँ, तुम जो कहती हो सब सच है। तुम्हारा हृदय स्वर्गीय भावों से पूर्ण है। इसके विपरीत, मेरा हृदय बिल्कुल शुष्क है। लेकिन मैं तुम्हारे वचन-पालन की चेष्टा करूँगा। मैं तुमसे निश्चय कहता हूँ कि स्वतन्त्र हो जाने पर मैं एक ईसाई का सा श्रद्धालु हो जाऊँगा। सर्वशक्तिमान् ईश्वर जानता है कि मैंने कभी अपने मन में बुरे विचारों को स्थान नहीं दिया। जब जब मुझ पर घोर अत्याचार हुए तब तब मैंने उसी का नाम लेकर अपने मन को धीरज दिया। और अब मैं सारी पिछली सख्तियों और अत्याचारों को मन से भुला दूँगा। अपनी बाइबल पढ़ूँगा और सज्जन बनने की चेष्टा करूँगा।

इलाइजा—और जब हम कैनेडा पहुँच जायँगे, तब मैं तुम्हारी सहायता करूँगी। मैं बहुत अच्छे कपड़े सीना जानती हूँ; मैं बढ़िया धुलाई और इस्त्रिरी का काम भी कर सकती हूँ। हम दोनों वहाँ कुछ न कुछ करके अपना जीवन-निर्वाह कर लेंगे।

जार्ज—हाँ, इलाइजा, मुझे पेट की इतनी चिन्ता नहीं है। इस बच्चे को और तुम्हें साथ लेकर जहाँ कहीं रहूँगा वहीं मेरे लिए स्वर्ग है। मैं अधिक नहीं चाहता। ईश्वर से इतनी ही प्रार्थना है कि तुम से वियोग न हो। इस बालक को कोई हम से न छीन सके। सोचने की बात है कि ये नर-पिशाच गोरे बच्चे को माता की गोद से छीन कर और पति से स्त्री को अलग करके बेच डालते हैं, इससे इन अभागे गुलामों के हृदयों को कितना कष्ट पहुँचता है। ऐसी दशा हो जाने पर कि तुम पर और इस बच्चे पर मेरा अपना कहने का अधिकार हो जाय। इसके सिवाय मैं ईश्वर से और कुछ नहीं माँगता। यद्यपि मैंने गत २५ वर्ष की अवस्था तक प्रति दिन कठिन परिश्रम किया है और उसके लिए कौड़ी भी नहीं पाई, न मुझे रहने के लिए झोंपड़ी ही थी न अपनी कहने के लायक़ एक बालिश्त ज़मीन ही, पर इतने पर भी वे यदि मेरा पिंड छोड़ दें तो मुझे सन्तोष है—मैं उनका कृतज्ञ रहूँगा। मैं कमा कर तुम्हारे मालिक को तुम्हारा और अपने इस लड़के का मूल्य भेज दूँगा। और अपने पुराने मालिक का तो मैं कुछ भी क़र्ज़दार नहीं हूँ। उसने मुझे जितने में ख़रीदा था उससे पँचगुना उसने मेरे द्वारा अदा कर लिया। इलाइज़ा! स्वाधीनता बड़ा अमूल्य रत्न है। कहा है, "सर्वं आत्मवशं सुखम्"—"पराधीन सुख सपनेहु नाहीं"—पर चिरपराधीन स्वाधीनता का सुख नहीं जान सकता। मिश्री खाये बिना उसका स्वाद नहीं जाना जा सकता। इसी भाँति जो सदा से पराधीन है वह स्वाधीनता की महिमा नहीं समझ सकता। इस विपद की दशा में रहते हुए भी तुमसे स्वाधीनतापूर्वक बातें कर रहा हूँ, इतने ही से मेरा हृदय आनन्द से नाच रहा है। आज स्वाधीनता ने मुझ में फिर जान डालदी है। परमात्मा करे संसार में कोई पराधीन न रह जाय। कोई स्वाधीनता के स्वाद से वञ्चित न रहे। संसार में किसी जाति को परा-

धीनता की जञ्ज़ीर में न जकड़े रहना पड़े । इलाइज़ा ! पराधीनता की बेड़ी से सर्वथा मुक्त हो जाने के लिए मैं बहुत छटपटा रहा हूँ ।

इलाइज़ा—पर हम अभी संकट के पार नहीं हुए हैं । अभी कैनाडा दूर है ।

जार्ज—यह सत्य है । पर स्वाधीनता की वायु मन्द मन्द लहराती जान पड़ती है और उसके स्पर्श मात्र से मैं सजीव सा जान पड़ता हूँ ।

इसी समय बाहर किसी के बात-चीत करने की आवाज़ सुनाई दी । तुरन्त ही किसी ने दरवाज़ा खड़खड़ाया । इलाइज़ा ने जाकर दरवाज़ा खोल दिया ।

बाहर से साइमन हालीडे एक कुयेका सम्प्रदायी भाई को साथ लिये हुए अन्दर आये । इस दूसरे आदमी का नाम साइमन हालीडे ने फ़ीनियस बतलाया । फ़ीनियस लम्बा चौड़ा आदमी था, चेहरा देखने से कार्यदक्ष, चालाक और लड़ाका जान पड़ता था । साइमन हालीडे की भाँति इसके मुख पर प्रशान्त भाव न था । यह उस ढङ्ग के आदमियों में था जो जितना होते हैं उससे अपने को अधिक समझते और प्रकट करने की कोशिश करते हैं । पर दिल का साफ़ था ।

साइमन हालीडे ने अन्दर आकर कहा, "जार्ज, बड़ी आफ़त है ! तुम्हें पकड़ने के लिए आदमी तैनात हुए हैं । फ़ीनियस ने उनकी कुछ कुछ बातें सुनी हैं । अच्छा होगा कि उसी के मुँह से सारी बातें सुनो ।"

फ़ीनियस ने कहना आरम्भ किया । वह बोला, "मेरा सदा से यह मत है कि आदमी को सर्वदा एक कान खुला रख कर सोना चाहिए, उससे बड़ा लाभ होता है । पिछली रात को मैं एक होटल में ठहरा था, वहाँ एक कमरे में अपने बिस्तरे पर सोया पड़ा था पर अपने

सिद्धान्तानुसार मैं नींद में ऐसा बेहोश नहीं हो गया था जैसा अक्सर लोग हो जाया करते हैं कि नींद में कोई उनके सिरहाने का तकिया भी खींच लें जाय तो उन्हें पता न लगे । हाँ, तो मुझे मालूम हुआ कि मेरे कमरे के बगलवाले कमरे में कुछ लोग बैठे शराब पीरहे हैं और बातें कर रहे हैं । मुझे उनकी बातें सुनने की उतनी परवाह नहीं थी पर जब मैंने उन्हें क्वेका वालों का नाम लेते सुना तो मेरे जी में खटका हुआ और मैं ध्यान से उनकी बातें सुनने लगा । उनमें से एक ने कहा, "ज़रूर वे भगोड़े दास-दासी क्वेका वालों के गाँव में ही छिपे हैं । जल्दी चल कर उस युवा पुरुष को गिरफ़ार करना चाहिए । उसे केन्टाकी ले चल कर उसके मालिक को सौंपना होगा । उसका मालिक ज़रूर ही उसे मारडालेगा । उसकी ऐसी सज़ा हो जाने पर फिर ग़ुलाम लोग भागने का दुस्साहस नहीं करेंगे ।पर, उस युवक के लड़के को जिस दास-व्यवसायी ने ख़रीदा था, उसी को दिया जायगा, ख़ूब माल मिलेगा । और उस युवक की स्त्री को दक्षिण में बेच कर सहज में सोलह सतरह सौ मार लिए जायँगे । वह स्त्री बड़ी सुन्दरी है । जिम और उसकी माता को उनके पहले मालिकों के यहाँ लेजाने से वे ज़रूर हमें ख़ूब इनाम देंगे ।" इस आदमी की बातों के आभास से मुझे यह भी जान पड़ा कि उनके साथ पुलिस के दो सिपाही भी हैं और तुम लोगों की गिरफ़ारी के लिए उनके पास वारंट है । इनमें से एक जो नाटा है, वह ज़रूर वकील है । क्योंकि वह बड़ी क़ानूनी बातें लगाता है । उसने निश्चय किया है कि वह अदालत में जाकर झूठमूट कह देगा कि इलाइजा उसी की ख़रीदी हुई दासी है। फिर उसकी बात पर जब इलाइजा उसकी हो जायगी तो वह उसे दक्षिण में ले जाकर बेच डालेगा ।.पुलिस के सिपाहियों के सिवाय उनके साथ और भी कई आदमी हैं । मैं बड़ी शीघ्रता से यहाँ आया हूँ, मैं समझता हूँ

वह सवेरे सात या ज़्यादा से ज़्यादा आठ बजते बजते यहाँ पहुँच जायँगे । इसलिए अब जो करना हो जल्दी किया जाय ।

इस वार्त्तालाप के उपरान्त यह मण्डली जिस विचित्र ढङ्ग से खड़ी थी उस दृश्य का फ़ोटो लेने लायक़ था । राचेल हालीडे के चेहरे पर बड़ी चिन्ता छा गई । फ़ीनियस भी बड़ी गहरी चिन्ता में मग्न जान पड़ता था । इलाइज़ा अपने स्वामी के गले में हाथ डाले खड़ी हुई उसकी ओर निहार रही थी । जार्ज की आँखों में सुर्ख़ी छा गई थी और उसकी ऐसी दशा होगई थी, मानों उसकी आँखों के सामने उसकी स्त्री का नीलाम होरहा हो और उसका लड़का किसी दास-व्यवसायी को बेचा जारहा हो ।

इलाइज़ा बड़ी दीनता से बोली—"जार्ज, अब क्या उपाय होगा ?"

जार्ज—मैं उपाय जानता हूँ । यह कह कर वह कोठरी के अन्दर गया और अपनी पिस्तौल लाकर बोला—"जब तक मेरे हाथ में पिस्तौल है किसी का कुछ डर नहीं । जब तक मुझमें जान है, कोई गोरा तुम्हारा एक बाल तक नहीं छू सकता ।"

साइमन हालीडे ने एक ठण्ढी साँस लेते हुए उससे कहा—"मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि ऐसा मत करना ।"

इस पर जार्ज ने साइमन से कहा—"महाशय, आपने पिता की भाँति हम लोगों को शरण दी है, इसके लिए हम सब आपके कृतज्ञ हैं । पर यहाँ यदि पकड़ने वालों से हम लोगों का किसी प्रकार का झगड़ा हो गया तो देश-प्रचलित घृणित क़ानून के अनुसार आपको भी दण्ड-भागी होना पड़ेगा । इसलिए मैं चाहता हूँ कि आगे जाकर पकड़नेवालों से मुक़ाबला हो, जिसमें आप पर किसी तरह की आपत्ति आने का अंदेशा न रहे । पकड़नेवालों से भेंट होने पर हम उनके छक्के छुड़ा देंगे । उन स्वार्थी, नर-पिशाच, विवेक-हीन गोरों के ख़ून की

नदी बहा देंगे। जिम बल में दैत्य सा है और बड़ा साहसी तथा मरने मारने को सदा तैयार है, मुझे भी किसी का भय नहीं है।

फ़ीनियस जो अब तक खड़ा बातें सुन रहा था, बोला—"हाँ भाई, तुम बहुत ठीक कहते हो। पर तुम्हें एक गाड़ी हाँकनेवाले की तो ज़रूरत पड़ेगी ही क्योंकि तुम्हें तो रास्ता मालूम नहीं। मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।"

जार्ज—पर, मैं नहीं चाहता कि तुम इस आफ़त में पड़ो।

फ़ीनियस—(साश्चर्य) आफ़त! कैसी होती है? जब आफ़त आवे तो ज़रा कृपा करके मुझसे भी उसकी जान-पहचान करा देना।"

साइमन ने कहा—"फ़ीनियस बड़ा साहसी और बुद्धिमान् आदमी है। वह जी जान से तुम लोगों की रक्षा करेगा। जार्ज, इतनी जल्दबाज़ी की ज़रूरत नहीं है। ज़रा धीरज से काम लो, युवकों का ख़ून बहुत जल्दी उबल उठता है।

जार्ज—मैं पहले किसी पर आक्रमण नहीं करूँगा। मैं उनसे केवल इतना ही कहूँगा कि वह मुझे इस देश से जाने दें, और मैं शान्तिपूर्वक चला जाऊँगा; पर यदि उन्होंने मेरे कार्य में किसी प्रकार की बाधा डाली तो वह हैं और यह पिस्तौल, मैं बिना उनकी जान लिए न छोड़ूँगा। उनकी जान लेने पर माता और बहिन के वियोग का जो दुःख मुझे हरदम सता रहा है उसकी शान्ति हो जायगी। माता और भगिनी का स्मरण होते ही उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली। उमड़े हुए शोक से उसका गला भर आया। वह अस्फुट-स्वर से कहने लगा—"बीती बात याद करके मेरा कलेजा फटा जाता है। मेरी एक बड़ी बहिन थी। उसे मेरे उस नीच मालिक ने दक्षिण में बेच डाला। अब मेरी स्त्री और पुत्र को मेरे हृदय से अलग करके बेचना चाहता है। जब ईश्वर ने मुझे स्त्री-पुत्र की रक्षा

के लिए ये दो दृढ़ भुजायें दी हैं तो यदि मैं उनके लिए इनका उपयोग न करूँ तो ये व्यर्थ हैं । मैं निश्चय कहता हूँ कि मेरी देह में प्राण रहते मेरी स्त्री और पुत्र को कोई मुझसे अलग नहीं कर सकता । क्या आप इस आचरण के लिए मुझे दोषी कहेंगे ?

साइमन—कभी नहीं । इन स्वार्थी नर-पिशाच गोरों के सिवाय और कोई तुम्हारे इस आचरण को बुरा नहीं कह सकता । सीधे से सीधा आदमी भी इतना अत्याचार नहीं सहन कर सकता । धिक्कार है इस पाप और अत्याचार-पूर्ण संसार को, पर उससे अधिक धिक्कार है उन पाखंडियों को, जिनकी स्वार्थपरता और अर्थ-तृष्णा के कारण इस संसार में पाप और अत्याचार फैला हुआ है ।

फ़ीनियस अब तक मौनी बना बैठा था । साइमन की बात समाप्त होने पर वह बोला—"भाई जार्ज, ईश्वर ने मेरी इन दो भुजाओं में भी कुछ बल दिया है । मित्र ! मुझे विश्वास है कि काम पड़े ये भुजाएँ तुम्हारे लिए इस शरीर से अलग हो जाने को भी तैयार रहेंगी ।"

साइमन ने कहा—"फ़ीनियस ! जार्ज पर जैसे जैसे अत्याचार हुए हैं, उससे उसके मन में बदला चुकाने की प्रवृत्ति का आना स्वाभाविक है । पर, तुम शान्त रहो । सताये हुए अपने भाई-बहिनों की सहायता के लिए सदा प्राण देने को प्रस्तुत रहना चाहिए । और अत्याचार के विरुद्ध इसी प्रकार कटिबद्ध रहना ठीक है । पर अपने नेताओं ने इस विषय में इससे बहुत अच्छा मार्ग अनुसरण करने की सलाह दी है । उनका कहना है कि मनुष्य को कोई कार्य क्रोधान्ध होकर नहीं करना चाहिए । क्रोध और द्वेष दोनों मन के विकार हैं । अत्याचार को दूर करने के लिए इन दोनों शत्रुओं के वश में होकर कोई कार्य करना उचित नहीं है । क्रोध के समय मनुष्य को भले बुरे का ज्ञान नहीं रह जाता । इसलिए जो

कुछ सोचना हो, करना हो, सब शान्ति से होना चाहिए। ईश्वर से हम लोगों को प्रार्थना करनी चाहिए कि हम भटकने न पावें।"

फ़ीनियस पर इस उपदेश का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। किन्तु तो भी वह अपनी प्रचण्ड प्रकृति को वश में करने की चेष्टा करने लगा। पहले कह आये हैं कि फ़ीनियस एक भीम-प्रकृति का मनुष्य है; बड़ा संग्राम-प्रिय है। काम पड़े वह साक्षात् यमराज की भाँति लड़ता है। विपद् किसे कहते हैं यह तो वह स्वप्न में भी नहीं सोचता। असल में युद्ध के लिए कोरे शारीरिक बल की ही आवश्यकता नहीं है। लड़ाई के लिए मानसिक बल भी बहुत ज़रूरी है। जो मौत के मुँह में जाने से डरता है वह कायर संग्राम के लिए उपयुक्त नहीं है। उसे कभी देव-दुर्लभ वीर की पदवी नहीं मिल सकती। वीर की जान हथेली पर रहती है, मौत उसके लिए खेल की वस्तु है। फ़ीनियस मृत्यु से कभी नहीं डरता था। पहले तो वह और भी आग-बबूला था, अब कुछ शान्त प्रकृति का हो गया है। प्रेम की छूत वज्र-हृदय को भी कोमल बना देती है, कुयेका—सम्प्रदाय की किसी सुशिक्षिता, सहृदया युवती के प्रेम में फँसने के बाद फ़ीनियस की प्रकृति कुछ ठंढी हो गई है। फ़ीनियस की परोपकार-वृत्ति बड़ी प्रबल है। दूसरे का भला होता हो तो वह अपनी जान दे सकता है। पर अब पहले का सा भाव नहीं है। पहले वह बिना सोचे विचारे बिना बात की लड़ाई मोल ले लेता था, किन्तु अब अपनी प्यारी के प्रशान्त मुख-कमल का स्मरण आते ही फ़ीनियस अपनी दुर्दम्य प्रकृति को वश में करने की चेष्टा करता था। अब वह सदुपदेश के सन्मुख सिर झुकाता है। ज्ञानी और महात्माओं के वाक्यों पर बड़ी श्रद्धा रखता है। फ़ीनियस को उबले देख कर साइमन की सहधर्मिणी वृद्धा राचेल ने मुस्कुरा कर कहा—"फ़ीनियस किसी

काम के लिए कटिबद्ध हो जाय और फिर कोई उसे उसके इरादे से हटा दे, क्या मजाल थी। लेकिन अब उसका हृदय प्रेम की पवित्र डोर से बँधा हुआ है। इस समय उसका दुर्दम्य मन क़ैदी बना हुआ है।" राचेल की बात समाप्त हो जाने पर जार्ज ने साइमन से कहा—"ख़ैर, आप जो कहते हैं वह सब ठीक है, पर यहाँ से भागने के सिवाय बचने की और क्या सूरत है? जहाँ तक हो यहाँ से जल्दी ही टल जाना अच्छा है।"

इस पर फ़ीनियस ने कहा—"हाँ, यह ठीक है। अभी यहाँ से निकल चलने से फिर पकड़ने वालों की दाल न गलेगी। मैं तो दो घण्टा रात रहे ही जल्दी से वहाँ से चल दिया था। वह सब आज सवेरे तुम लोगों की तलाश में निकलेंगे। यहाँ से अभी निकल चला जाय तो वे हम लोगों से चार कोस पीछे रहेंगे। मैं अभी जाकर माइकलक्रास को बुला लाता हूँ। वह पीछे रह कर पकड़ने वालों का भेद लेता रहेगा। हम लोग कुछ आदमी गाड़ी पर चढ़ कर आगे बढ़ चलेंगे।"

फ़ीनियस जब माइकलक्रास को बुलाने चला गया तब साइमन बोले—"जार्ज, फ़ीनियस बड़ा चतुर और कामकाजी आदमी है। तुम इसी की सलाह पर चलना। वह अपनी सामर्थ्य भर तुम्हारी भलाई से नहीं चूकेगा।"

जार्ज—और तो और, मुझे इस बात का बड़ा खेद हो रहा है कि हम लोगों के लिए आपको किसी आफ़त में न फँसना पड़े।

साइमन—हम लोगों के लिए तुम कोई चिन्ता मत करो। हमने जो कुछ किया है, अपने कर्त्तव्य के अनुरोध से किया है। कर्त्तव्य-पालन में प्राण भी जायँ तो कोई चिन्ता नहीं। फिर साइमन ने राचेल की ओर घूम कर कहा—"राचेल, अब शीघ्र इन लोगों के खान-पान

का प्रवन्ध हो जाना चाहिए। हम अपने घर से इन लोगों को भूखा न जाने देंगे।"

जब राचेल अपने बाल-बच्चों को लेकर भोजन बनाने की जल्दी में लगी हुई थी उस समय जार्ज और उसकी स्त्री अपने छोटे कमरे में बैठे परस्पर गलबाहीं डाले हुए कुछ ही देर में होने वाले अपने वियोग के सम्बन्ध में सजल नेत्रों से बातें कर रहे थे।

जार्ज ने कहा—"इलाइज़ा ! जो लोग मित्रों से घिरे हुए हैं, धन धान्य, गृह तथा अनेकानेक सम्पत्तियों से पूर्ण हैं उन्हें स्त्री-पुत्र का वियोग ऐसा दुःखदायी नहीं होता होगा। उनके सुख के अनेक साधन हैं पर तुम्हारे और इस सन्तान के सिवाय संसार में मेरे और कुछ नहीं है। तुम से ब्याह होने के पूर्व इस जगत् में मेरी उस बिचारी दुखियारी माता और बहिन के सिवाय और कोई प्राणी मुझे स्नेह-दृष्टि से देखने वाला न था। जिस दिन प्रातःकाल मेरी बड़ी बहिन एमिली को सौदागर ख़रीद कर ले गया उस दिन का ध्यान करके मुझे अपार दुःख होता है। मैं दालान में पड़ा सो रहा था, उस समय उसने रोते हुए आ कर मेरा हाथ पकड़ कर उठाया और बोली—"जार्ज, आज तेरी अन्तिम हिताकांक्षिणी जा रही है। अभागे बालक, तेरी क्या गति होगी ?" मैं उठ खड़ा हुआ और उसके गले से लिपट कर रोने चिल्लाने लगा; वह भी बहुत रोई। वे अन्तिम स्नेह के शब्द मैंने सुने थे, आज मुझे दस वर्ष हो गये, मेरा हृदय जल जल कर ख़ाक हो गया। तुम्हारे प्रेम से मेरे मुर्दा तन में कुछ जान आ गई थी। बीती बातों को भुला कर मैं नवीन मनुष्य बन गया। इलाइज़ा ! अब मुझे मरना क़बूल है पर मैं उन लोगों को तुझे अपने पास से कदापि न ले जाने दूँगा। मुझे इस जीवन की कोई परवाह नहीं है। जीना है तो सुख से, अपनी स्त्री-पुत्र-सहित,

नहीं तो इन से रहित होकर जीने में क्या आनन्द रक्खा है ! यों कुत्तों की मौत मरने की अपेक्षा वीरों की भाँति, अत्याचारियों को—जो हमें सताते हैं, उन नरपिशाच गोरों से लड़ कर—उन्हें मार कर मरना हज़ार दर्जे अच्छा है ।

इलाइजा ने सिसकते हुए कहा—"हे परमात्मन्, दीनबन्धो ! हम पर दया करो । हम इतना ही माँगते हैं कि हम सब को इस देश से निर्विघ्न पार कर दो ।"

जार्ज—क्या ईश्वर की इन अत्याचारियों से सहानुभूति है ? क्या वह इनके अत्याचारों को देखता है ? वह क्यों हम लोगों पर इतना अन्याय होने देता है ? और वे अत्याचारी गोरे हम से कहते हैं कि बाइबल में ग़ुलामी लिखी है । वास्तव में शक्ति ही सब कुछ है । उनके पास धन है, जन है, वे स्वस्थ हैं, और सब तरह से सुखी हैं, जो चाहते हैं करते हैं । संसार की बुरी से बुरी बात को ये "धर्म" का फ़तवा दिला लेते हैं । इनका धर्म केवल ढोंग के सिवाय और कुछ नहीं है । क्रिश्चियन कहलाने पर भी इनमें क्रिश्चियन का एक भी गुण नहीं है । जो बेचारे ग़रीब सच्चे क्रिश्चियन हैं, जिनमें ईसा की सी सहनशीलता है, उन्हें यह धूल में लुटाते हैं और ठोकरें लगाते हैं, जहाँ तक बनता है उन्हें सताते हैं । ये उन्हें ख़रीदते हैं और बेचते हैं, उनके जिगर के ख़ून का, उनकी आहों का, और उनके आँसुओं का सौदा करते हैं; और ईश्वर उन्हें इसकी आज्ञा देता है ।"

जार्ज की ये बातें सुन कर रसोई-घर से साइमन ने पुकार कर कहा—"भाई जार्ज, धीरज रक्खो । मेरी बात सुनो । ईश्वर बड़ा न्यायी है । सांसारिक मायामोह में फँसे रहने के कारण हम उसकी लीलाओं को नहीं समझ सकते । तुम यह मत समझो कि जो बड़ा धनी है, ऐश्वर्यवान् है, जो बहुत लोगों पर हुकूमत करता है, वह बड़ा

सुखी है। धन के नशे में बावले, विषय-मदान्ध, अत्याचारी और दूसरों पर प्रभुता करने वालों को इस संसार में तनिक भी सुख नहीं मिलता। आठ पहर चौंसठ घड़ी उनके हृदय में अशान्ति की आग जला करती है। यदि तुम्हें उनके हृदय की वास्तविक स्थिति का पता होता तो तुम यों धन-सम्पत्ति और ऐश्वर्य के लिए ईश्वर से शिकायत न करते। तुम नहीं जानते कि अनेक अवसरों पर विपद्, दुःख और दरिद्रता ही मनुष्य को पवित्र सुख और शान्ति प्रदान करती है। ऐश्वर्य के मद में मतवाला होकर मनुष्य ईश्वर को भूल जाता है—और अन्त में दुर्लभ मानव-जीवन के महत्त्व को खो बैठता है। पर विपद् और संकट मनुष्य को बहुधा ईश्वर की ओर ले जाते हैं। अतः दरिद्रता और वह विपद् जो मनुष्य को ईश्वर की याद कराते रहें ऐश्वर्य और प्रभुत्व से हज़ार दर्जे अच्छी हैं, जो मनुष्य को ईश्वर का स्मरण न होने दे। विश्वास और भक्ति की भी क्या अलौकिक शक्ति है!

साइमन ने अपने हृदय के गम्भीर विश्वास के साथ जार्ज को यह उपदेश दिया था। जार्ज के मन पर इसका असर हुआ और उसे इससे शान्ति मिली। इसके पहले जार्ज ने कितने ही क्रिश्चियन पादरियों के कितने ही उपदेश सुने थे पर उसके मन पर उनका कोई प्रभाव न पड़ा। इस कान सुने और उस कान निकाल दिये। बात तो यह है कि यदि स्वयं उपदेश देने वाले के मन में विश्वास और भक्ति न हो तो वह चाहे जितना गला फाड़ फाड़ कर उपदेश दिया करे किसी पर उसका कुछ असर नहीं होता। और जिस उपदेशक का अपने सिद्धान्त पर अटल विश्वास है और जो अपने सिद्धान्त पर स्वयं चलता है, जिसे अपने सिद्धान्त से पूरी लगन है, उसकी बात में, उसके उपदेश में जादू का असर होता है। सच्चा उपदेशक अपने विश्वास की तस्वीर खींच कर रख देता है, क्या मजाल

कि किसी के हृदय पर उसकी बात का असर न हो । साइमन ऐसे ही आदमियों में थे, उनका जीवन ही परोपकार के निमित्त था । ईश्वर पर उनकी अगाध भक्ति और श्रद्धा थी । वह सम्पूर्ण कार्य्यों को ईश्वर-निमित्त करते थे, फिर भला उनके उपदेश का असर जार्ज के हृदय पर क्यों न होता । ऐसे परोपकारी के उपदेश तो पत्थर को भी मोम बना देते हैं ।

फिर राचेल प्रेम से इलाइज़ा का हाथ पकड़ कर उसे भोजन कराने ले गई । वे सब लोग भोजन करने बैठे ही थे कि रूथ वहाँ पहुँची । रूथ और इलाइज़ा के परिचय का उल्लेख पहले हो चुका है । रूथ अपने साथ कुछ ऊनी मोज़े और कुछ भोजन की सामग्री लाई थी उसे इलाइज़ा को देकर बोली—"बहिन, तुम्हारे बच्चे के पैर ख़ाली देख कर कई दिन हुए मैंने ये मोज़े बना रक्खे हैं । अभी सुना कि तुम लोग यहाँ से चले जाओगे इसी से बड़ी हड़बड़ी में हेरी के लिए ये मोज़े और कुछ खाने को बना कर लाई । बच्चों को हर वक्त कुछ न कुछ खाने को चाहिए ही ।"

इतना कह कर रूथ ने हेरी को गोद में लेकर उसका मुँह चूमा । खाने की चीज़ें उसकी जेब में डाल दीं ।

इलाइज़ा बोली—"बहिन ! तुम मुझ पर बड़ी कृपा करती हो । मैं इसके लिए तुम्हारी बड़ी कृतज्ञ हूँ और हृदय से तुम्हें धन्यवाद देती हूँ ।"

राचेल ने कहा—"रूथ, आओ, तुम भी कुछ खा लो ।"

रूथ—"नहीं मैं इस समय नहीं ठहर सकती । मैं लड़के को जान को दे आई हूँ और चूल्हे पर भात चढ़ा आई हूँ; मेरे ज़रा भी देर करने से जान की बेपरवाही से भात ख़राब हो जायगा । और बच्चा रोया तो पास पड़ी हुई सारी चीनी वह उस लड़के को ही दे देगा ।

जब होता है वह ऐसा ही करता है।" (जान रूथ का स्वामी था) इतना कह कर रूथ इलाइज़ा और जार्ज से विदा लेकर चली गई।

थोड़ी देर में सब के खा पी चुकने के बाद, एक बड़ी गाड़ी आई और सब लोग उसमें चढ़ बैठें। फ़ीनियस ने सब को ठीक से बैठा दिया। इलाइज़ा और जिम की वृद्धा माता गाड़ी के अन्दर बैठीं। जिम और जार्ज सामने बैठ गये। फ़ीनियस पीछे बैठा। जार्ज ने जिम से ज़रा मन्द पर दृढ़ स्वर में पूछा—"जिम, तुम्हारी पिस्तौल तो ठीक है न?"

जिम—हाँ सब ठीक है।

जार्ज—उन लोगों से भेट होने पर अवश्य तुम उसका उपयोग करोगे ही?

जिम—(छाती फुला कर और एक गहरी साँस लेकर) "इसमें भी क्या कलाम है। तुम क्या सोचते हो प्राण रहते मैं उन्हें अपनी माँ को फिर ले जाने दूँगा?"

गाड़ी चलने की तैयारी होने पर साइमन ने कहा—"मेरे बन्धुओं, ईश्वर तुम्हारी रक्षा करें। तुम लोगों के सकुशल पहुँच जाने की ख़बर पाकर मुझे बड़ा आनन्द होगा।" इस पर गाड़ी में से सब बोले—"ईश्वर आपका भला करें।"

गाड़ी में बात-चीत करने का सुभीता न था, एक तो राह ख़राब, दूसरे पहियों की घड़घड़ाहट। हेरी अपनी माता की गोद में शीघ्र ही सो गया। पर भय के मारे बुढ़िया और इलाइज़ा की आँखें बन्द नहीं हुईं। बड़ी तरद्दुद और उत्कण्ठा में उनका समय बीत रहा था। थोड़ी रात रहे जब मालूम हुआ कि गाड़ी ५, ७ कोस निकल आई है, तब धीरे धीरे उन लोगों की चिन्ता घटी। इस समय इलाइज़ा को कुछ तन्द्रा सी आ रही थी। फ़ीनियस सारी रात गाड़ी के पीछे

खड़ा रहा । मार्ग की थकावट दूर करने के लिए वह रात भर तरह तरह के गीत गाता रहा था ।

रात को तीन बजे के क़रीब पीछे से जार्ज के कानों में घोड़ों के टाप सुनाई दिये । जार्ज ने फ़ीनियस को यह बात जनाई । उसने भी ध्यान से सुना । फिर बोला, मैं समझता हूँ, माइकल होगा । मैं उसके घोड़े की टाप पहचानता हूँ । फिर वह सिर उठा कर पीछे घूम कर देखने लगा ।

एक आदमी सवार सरपट घोड़ा दौड़ाये दूर से आता हुआ दिखाई दिया ।

फ़ीनियस बोला—"हाँ हाँ, वही तो हई है—"

जार्ज और जिम दोनों उछल कर गाड़ी से बाहर आ गये । सब चुप-चाप खड़े आगन्तुक की बाट देख रहे थे । अब वह एक दर्रे में उतर गया जहाँ से वह उसे नहीं देख सके; पर शीघ्र ही फिर वह उन्हें पहाड़ की चोटी पर दिखाई दिया ।

फ़ीनियस बोला—"है है, माइकल ही है ! यह लो आ गया ।"

माइकल ने कहा—"फ़ीनियस ! तुम लोग यहाँ तक आ गये ?"

फ़नियस—कहो, क्या ख़बर है—वे आ रहे हैं ?

माइकल—हाँ पीछे चले आ रहे हैं । साले दस बारह हैं, शराब के नशे में चूर, लाल लाल आँखें मानों जंगली भेड़िये हों ।

इन बातों का समाप्त होना कहिए कि पीछे से घोड़ों के टापों की खटाखट सुनाई देने लगी ।

तब फ़ीनियस गाड़ी से कूद पड़ा और घोड़ों की लगाम ज़ोर से खींचते हुए गाड़ी को रास्ते से हटा कर एक पहाड़ की जड़ में लगा दिया । अब वे सब पीछा करने वाले साफ़ साफ़ दिखाई देने लगे । इलाइजा चिल्लाने लगी और बड़ी दृढ़ता से लड़के को अपनी गोद में

चिपका लिया। जिम की वृद्धा माता—"हे भगवन् बचाओ। हे भगवान् बचाओ! बचाओ!" करने लगी। जार्ज और जिम पिस्तौल दुरुस्त करके नीचे खड़े हो गये। फीनियस ने सब से कहा, तुम लोग सब गाड़ी से उतर आओ और इस चट्टान पर चढ़ चलो। और माइकल से कहा कि तुम शीघ्र गाड़ी लेकर आमारिया के घर की ओर चले जाओ और उसे तथा उसके पुत्रों को साथ लेते आना।

फिर फीनियस ने हेरी को इलाइजा की गोद से लेकर अपने कन्धे पर चढ़ा लिया और जल्दी जल्दी चट्टान पर आगे आगे चढ़ने लगा। बहुत शीघ्र यह लोग चट्टान पर चढ़ गये। वहाँ पहुँच कर फीनियस बोला—"अब तो तुम लोग मेरे मार्ग से गाड़ी हटा लेने और इस चोटी पर चढ़ आने का मतलब समझ गये होगे। मेरे यहाँ के सब घाट-बाट जाने हुए हैं। यह चोटी ऐसी है कि यहाँ एक आदमी पिस्तौल हाथ में लेकर खड़ा हो जाय तो वह सौ आदमियों को हरा सकता है। इस शिखर पर एक साथ दो आदमियों के चढ़ने का रास्ता ही नहीं है। जो कोई हिम्मत करके आने की कोशिश करेगा उसी को गोली मार कर गिरा दिया जायगा।"

जार्ज ने कहा—"ठीक है मैं तुम्हारी चतुराई की प्रशंसा करता हूँ। पर अब तुम बैठ जाओ। हमारा मामला है, जो कुछ बुरा भला होगा हम समझें-बूझेंगे, हम लड़-भिड़ लेंगे।"

फीनियस ने हँस कर कहा—"अच्छा तुम अकेले ही लड़ना। यहाँ से लड़ने में कई आदमियों की आवश्यकता भी नहीं पड़ेगी, एक ही आदमी काफ़ी होगा। मैं खड़ा खड़ा तमाशा देखूँगा। देखो ज़रा नीचे की ओर देखना, वे सब खड़े खड़े क्या सलाह कर रहे हैं। सब बिल्ली की सी आँख निकाल रहे हैं, उनके घूरने से ऐसा जान पड़ता है, मानों एक ही छलाँग में ऊपर आकर हम लोगों को खा

लेंगे। अच्छा पहले ज़रा इनसे पूछा ते जाय कि ये हज़रत लोग क्यों तशरीफ़ लाये हैं; और क्या चाहते हैं? और अगर कहें कि तुम लोगों को गिरफ़ार करने आये हैं ते कह दिया जाय कि सीधे से अपना रास्ता लो नहीं ते सब अपनी अपनी जान से हाथ धो बैठोगे। इस बात पर यदि लौट जायँ ते फिर झगड़ा बढ़ाने की ज़रूरत ही न रहेगी।"

पकड़ने वालों में दो ते पाठकों के पूर्व-परिचित टाम लोकर और मार्क ही हैं। ये दोनों सब से आगे खड़े थे। उनके पीछे दो कान्सटेबल थे। साथ में और भी कई मतवाले थे। इनमें से एक मतवाले ने कहा—"दादा लोग अच्छी जगह पहुँच गये हैं।"

टाम लोकर—हाँ, यह रास्ता रहा। सब इसी रास्ते चढ़े हैं। मैं भी इसी रास्ते चढ़ता हूँ। आज साले नहीं भागने पावेंगे। जल्दी में कहीं कूदे ते हड्डियाँ चूर चूर हो जायँगी।

मार्क—अरे लोकर, ज़रा सम्भल कर आगे बढ़ो। चट्टान की आड़ से किसी ने गोली दागी ते जहन्नुम रसीद ही होना पड़ेगा।

टाम लोकर—अह, तुम्हें जब हो तब जान ही की पड़ी रहती है। मारे डर के सिकुड़े जाते हो। क्या ख़तरा है? ये हब्शी ग़ुलाम बेचारे क्या खाकर गोली चलावेंगे। एक धमकी में ते रोते रोते नीचे उतर आवेंगे।

मार्क—क्यों, जानकी क्यों नहीं पड़ी रहेगी। रुपयों के लिए जान दूँगा? जान है ते जहान है। ग़ुलाम समझ के मत भूलो। कभी कभी ये काले ग़ुलाम ही दैत्य की तरह युद्ध करते हैं। एक काला तीन गोरों को जहन्नुम की राह दिखा सकता है।

इसी समय जार्ज ने उनके सामने की एक चोटी पर आकर बड़े धीर, शान्त और स्पष्ट शब्दों में कहा:—

सज्जनों, आप लोग कौन हैं ? क्या चाहते हैं ?

लोकर—"हम लोग भग्गू .गुलामों के एक दल को पकड़ने आये हैं। पहला जार्ज हेरिस, इलाइज़ा हेरिस और उनका लड़का, तथा जिम सेलडन और उसकी बुड्ढी माँ। हमारे साथ गिरफ़ारी के परवानों सहित पुलिस के अफ़सर आये हैं। तुम्हीं न केन्टाकी प्रदेश के शेल्वी परगने के हेरिस साहव के .गुलाम जार्ज हेरिस हो ?"

जार्ज—मैं ही जार्ज हेरिस हूँ। केन्टाकी के एक हेरिस साहव मुझे अपनी सम्पत्ति समझते हैं। पर इस समय मैं स्वतन्त्र हूँ, परमेश्वर के राज्य में स्वाधीनतापूर्वक विचरता हूँ; और मेरे स्त्री-पुत्र पर भी मेरे सिवाय और किसी का अधिकार नहीं है। जिम और उसकी माता भी यहीं हैं। अपनी रक्षा के लिए हम लोगों के पास शस्त्र हैं, और हम लोग इनका उपयोग करेंगे। तुम्हारी .खुशी तुम ऊपर आओ। पर, जान रक्खो जो कोई पहले ऊपर चढ़ा वह हमारी गोली का निशाना बन कर यमपुर की राह नापेगा। उसके बाद फिर जो कोई आवेगा, उसकी भी यही गति होगी और अन्त में एक एक करके सब को जान से हाथ धोना पड़ेगा।"

मार्क बोला—"आओ, आओ, जल्दी नीचे उतर आओ। खड़े खड़े बकवाद मत करो। तुम्हारे बोलने की जगह नहीं है। तुम देखते हो पुलिस क़ानूनन हमारे साथ है। हम लोग क़ानून से चले हैं, तुम लोगों के पकड़ने का हमें अधिकार है। लो बहुत चीं-चपड़ न करो, जल्दी नीचे उतर आओ।"

जार्ज—अजी मैं .खूब जानता हूँ कि तुम लोग क़ानून से चले हो, और शक्तिमान् हो। तुम चाहते हो कि मेरी स्त्री को ले जाकर न्यूअर्लिन्स में वेच डालो, और मेरे लड़के को एक वकरी के बच्चे की भांति किसी व्यवसायी के क़साईख़ाने में बेच डालो, और जिम

तथा उसकी माता को उसके उसी नर-पिशाच मालिक को ले जाकर सौंप दो, वहाँ वह इस बुढ़िया को बेत फटकारेगा और इसी के सामने इसके लड़के की जान मारेगा, यही तुम्हारा मतलब है। जहन्नुम में गया तुम्हारा क़ानून। मैं ऐसे क़ानून पर लात मारता हूँ, जो केवल ग़रीबों को सताने और धनियों को फ़ायदा पहुँचाने के लिए बना हो। लानत है तुम्हारे उस क़ानून पर, और उस क़ानून के अनुसार चलने वालों और विचार करने वालों पर भी हज़ार हज़ार लानत। हम इस क़ानून की ज़रा भी परवाह नहीं करते, न हम इसे अपना क़ानून मानते हैं, न हम तुम्हारे मुल्क ही को अपना समझते हैं। हम लोग यहाँ विस्तीर्ण आकाश के नीचे खड़े हुए उतने ही स्वाधीन हैं जितने तुम लोग हो। हम भी उसी ईश्वर के बनाये हुए हैं जिसके तुम। हम मरते दम तक अपनी स्वाधीनता के लिए लड़ेंगे। स्वाधीनता या मृत्यु, यही मेरा मूलमन्त्र है।

उपरोक्त बातें कहते समय जार्ज को बड़ा जोश आ गया। उसका चेहरा बहुत भयङ्कर हो गया। आँखों में क्रोध की लाली छा गई, मानों उनसे आग की चिनगारियाँ बरस रही हों। उसके दोनों होंठ फरकने लगे, और उसके दाहिना हाथ उठा कर बोलने के समय ऐसा जान पड़ने लगा, मानों वह देश में फैले हुए अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध परम पिता जगदीश्वर के सिंहासन के सन्मुख अपील करता हुआ न्याय का पक्ष समर्थन कर रहा है।

यदि किसी अँगरेज़ युवक ने इँग्लेण्ड से अमेरिका को भागते हुए ऐसी वीरता प्रकट की होती तो इतिहास में स्वर्णाक्षरों में उसका नाम लिखा जाता, पर क्रीत-दासी के गर्भ से उत्पन्न ग़ुलाम जार्ज की वीरता को गोरे इतिहास-लेखक कब स्वीकार करने लगे ?

जार्ज की यह बातें और मुख का विकट भाव देख कर पकड़ने

वाले सहम गये। वास्तव में कभी कभी सत्साहस और दृढ़ प्रतिज्ञा बड़े बड़े बलवानों की छाती भी दहला देती है। मार्क को छोड़ कर और सब की हिम्मत जाती रही । उसने निशाना ताक कर जार्ज पर गोली चलाई । और मन ही मन सोचने लगा कि इसकी लाश इसके मालिक को देकर उससे विज्ञापन में लिखा हुआ इनाम वसूल कर लूँगा।

जार्ज उछल कर पीछे हट गया—इलाइजा चीख़ उठी—गोली उसके पास से सनसनाती हुई निकल गई। जार्ज ने कहा—"इलाइजा, डरो मत। कोई ख़तरे की बात नहीं है।"

फ़ीनियस ने आगे बढ़ कर जार्ज से कहा—"अब इलाइजा को समझाने बुझाने का समय नहीं है। इन दुष्टों का मार्ग बन्द करना चाहिए। ये बड़े ही कमीने हैं।"

जार्ज—जिम, देखो तुम्हारा पिस्तौल ठीक है न ? जो कोई पहला आदमी चढ़ने की चेष्टा करेगा, उस पर मैं फ़ायर करूँगा; दूसरे को तुम लेना, बस यही क्रम रहेगा, एक मैं, और एक तुम। एक आदमी के लिए दो गोलियाँ व्यर्थ नहीं की जायँगी।

जिम—अगर तुम्हारा निशाना चूक गया तो फिर क्या करना होगा ?

जार्ज ने जोश से कहा, ऐसा नहीं होगा, मैं ज़रूर निशाना लगाऊँगा।

फ़ीनियस ने मन ही मन जार्ज के साहस को सराहा।

मार्क का निशाना चूका देख कर उनका दल उपाय सोचने लगा कि, क्या किया जाय ?

लोकर बोला—"मैं इन काले हब्शियों से कभी नहीं डरा, न अब डरता हूँ। इतना कह कर वह पहाड़ पर चढ़ने लगा। और लोग

उसके पीछे पीछे चलने लगे। कुछ दूर जाते ही जार्ज ने लोकर को ताक कर गोली मारी, जो उसकी भुजाओं पर पड़ी। पर वह चोट खा कर भी लौटा नहीं, पागल साँड़ की तरह आगे ही बढ़ता गया। तब फ़ीनियस ने आगे बढ़ कर कहा, "मित्र, यहाँ तुम्हारी ज़रूरत नहीं है, नीचे ही चलो।" इतना कह कर उसने उसको ढकेल दिया। लोकर एकदम वहाँ से लड़खड़ाता हुआ नीचे गिरा। इतनी ऊँचाई से गिरने पर वह अवश्य मर जाता पर बीच में एक पेड़ पर अटक जाने के कारण उसके ऊपर से गिरने का वेग कुछ घट गया था। इससे वह मरा तो नहीं पर ज़ख्मी होकर बेहोश हो गया।

मार्क—ईश्वर कुशल करें, सब के सब साक्षात् दैत्य हैं। भागो भागो, लौट चलो।

अब तक कान्स्टेबल देवता चुप थे पर लौटते समय भागने में वह भी बड़ी तेज़ी दिखाने लगे। यह उस श्रेणी के मनुष्य थे, जो मारवों के पीछे और भागनेवालों के आगे रहते हैं।

फिर मार्क ने कान्स्टेबलों को बुला कर कहा—"भाई! तुम लोग इसे देखना-सुनना मैं अभी और कान्स्टेबलों को लिये आता हूँ।" इतना कह कर वह घोड़े पर चढ़ कर नौ दो ग्यारह हुआ।

उनमें से एक ने कहा—"क्या तुम ने कभी ऐसा अधम कीट देखा था? अपने ही काम के लिए हम लोगों को लाया और बेईमान, हम लोगों को इस आफ़त में फँसा कर आप साफ़ चलता बना। ख़ैर, चलो उस बेचारे वीर लोकर की तो ख़बर ली जाय कि मरता है या जीता।

लोकर के पास आ कर उनमें से एक बोला—"कहो हम लोगों के साथ चल सकोगे? क्या तुम्हें बड़ी चोट लगी है?"

लोकर—क्या पता। एक बार मुझे उठा कर तो देखो। यह कोयेका वाला साला न होता तो मैं और सभों को आनन-फानन में पकड़ लेता।

फिर दोनों ने किसी तरह पकड़-धकड़ कर लोकर को घोड़े पर लादा । पर घोड़े का हिलना था कि वह धड़ाम से ज़मीन पर आ रहा । यह दशा देख कर दोनों सिपाहियों ने सोचा कि ते तमाम रक़म का मिलना तो जहन्नुमरसीद हुआ ही दीखता है, इसे लेकर सारी रात आफ़त में भी कौन फँसे ? यह सोच कर उन दोनों कान्सटेबलों ने लोकर को उसी दुर्दशा में छोड़ कर अपनी अपनी राह नापी । लोकर मुर्दे की भाँति वहीं पड़ा रहा ।

लोकर को छोड़ और सब के चले जाने पर वह दल नीचे उतरा । इधर माइकल स्टीफन, आमारिया और दूसरे दो कोयेकरों को साथ लेकर गाड़ी समेत वहाँ पहुँच गया । इलाइज़ा ने पहाड़ के नीचे आते ही लोकर को देख कर कहा—"इसे देखना चाहिए कि इसमें साँस बाक़ी है या नहीं ? मैं तो भगवान् से यही मनाती हूँ कि यह मरा न हो ।"

फ़ीनियस—(मुस्कुरा कर) "बुरे काम का बुरा नतीजा ।" लेकिन इसके उन नालायक़ साथियों को क्या कहा जाय, जो इस बेचारे को इस दशा में छोड़ कर चल दिये ।

इलाइज़ा—यह बेचारा घावों की पीड़ा से छटपटा रहा है । हम लोगों को इसकी सेवा का यत्न करना चाहिए ।

जार्ज—निश्चय इसकी जीवन-रक्षा का उपाय किया जायगा । शत्रु पर दया करना क्रिश्चियन-धर्म का एक अङ्ग है ।

फ़ीनियस—मैं इसे ले जाकर किसी कोयेकर के यहाँ रक्खूँगा । फिर सेवा-शुश्रूषा और दवा-पानी से आराम हो जाने पर इसे इसके घर पहुँचा दूँगा । इसे यों छोड़ चलना महा नीचता का कार्य होगा । देखूँ तो इसकी क्या दशा है ।

फ़ीनियस लोकर के निकट जाकर उसके शरीर की जाँच करने

लगा। पहले फ़ीनियस एक नामी शिकारी था। इससे वह घाव की मरहम-पट्टी तथा बहते हुए रक्त-प्रवाह को रोक देने की विधि ख़ूब जानता था। वह अपनी जेब से रूमाल निकाल कर लोकर के घावों पर पट्टी फाड़ फाड़ कर बाँधने लगा। लोकर ने कहा—"मार्क !" फ़ीनियस हँस कर बोला—"मार्क कहाँ? वह तो तुम्हें छोड़ कर भाग गया, कान्स्टेबल भी चलते बने। हम लोग अब तक तुम्हारे शत्रु थे, पर अब हम लोगों को अपना शुभचिन्तक समझो। जहाँ तक हो सकेगा तुम्हारी पीड़ा दूर करने का यत्न करेंगे।"

लोकर—मैं बचता नहीं जान पड़ता। साले नीच कुत्ते मुझे छोड़ कर चले गये। मेरी मा मुझसे सदा कहा करती थी कि ये साथी विपद् में तेरा साथ न देंगे। उसकी बात आज सच्ची हुई। जिम की माता ने कहा—"इसके मा है—ओफ़! उसे कितना कष्ट होगा। हे ईश्वर! इसे जीवनदान दो।"

लोकर ने फीनियस से अपना हाथ झटक कर छुड़ा लिया और तड़कने-भड़कने लगा। तब फ़ीनियस ने कहा—"मित्र, ज़रा धीरज रक्खो, तड़को भड़को मत।

लोकर बोला—"तुम्हीं ने न मुझे ढकेल दिया था!"

फ़ीनियस—हाँ, अगर मैं तुम्हें न ढकेल देता तो तुम हम सबों को नीचे ढकेल देते। अब उन बातों को जाने दो। मुझे ज़रा तुम्हारे घावों पर पट्टी लगा लेने दो। अब धक्का-मुक्की का काम नहीं है। अब मैं तुम्हारी भलाई ही करूँगा। चलो, तुम्हें किसी कोयेका-परिवार में ले चल कर पहुँचा देता हूँ, वहाँ तुम्हारी बहुत अच्छी सेवा होगी। इतनी अच्छी कि शायद तुम्हारी माता भी उससे बढ़ कर नहीं करती।

लोकर शारीरिक-यन्त्रणा के कारण अचेत हो गया। सब ने उसे पकड़ पकड़ा कर गाड़ी में सुलाया। फिर सब लोग गाड़ी पर बैठे,

गाड़ी चल पड़ी। जिम की माता ने लोकर का सिर अपनी गोद में रख लिया। इलाइजा जार्ज और जिम सब उसके लिए काफ़ी जगह छोड़ छोड़ कर बैठे।

जार्ज ने फ़ीनियस से पूछा—"आप क्या सोचते हैं कि यह बच जायगा ?"

फ़ीनियस—हाँ, ज़रूर बच जायगा। बेहोश तो यह ज़्यादा ख़ून निकल जाने की वजह से हो गया है। निस्सन्देह यह बहुत शीघ्र अच्छा हो जायगा।

जार्ज—मुझे आप की बात सुन कर बड़ा हर्ष हुआ। यद्यपि मैंने अपनी जान बचाने के लिए इस पर गोली चलाई थी, फिर भी यदि मेरे हाथ से इसकी मौत हो जाती तो सदा के लिए मेरे दिल में इसकी कलक रह जाती। अब कहो, इसका करोगे क्या ?

फ़ीनियस बोला—"हमारे कोयेका सम्प्रदाय में प्रान्डमय स्टिफन नाम की एक वृद्धा रमणी है। वह बड़ी दयालु है। इसे उसके यहाँ पहुँचा देने से इसकी ख़ूब सेवा-शुश्रूषा होगी।

एक घण्टे के बाद सब लोग एक साफ़ स्वच्छ घर के सामने पहुँचे। लोकर को सब लोगों ने पकड़ कर उतारा और वहाँ उस घर में उसे बहुत अच्छे और मुलायम बिस्तरे पर सुला दिया। वहाँ बड़ी मुस्तैदी से उसकी सेवा होने लगी।

अब इस समय हम इन सब लोगों को यहीं छोड़ कर अगले परिच्छेद में टाम की बातें लिखेंगे।

—:o:—

बीसवाँ परिच्छेद ।

सदाचार और सुशीलता का सभी ठौर आदर होता है । जिसके हृदय में धर्मभाव और साधुभाव का राज्य है, उसके लिए इस संसार में, किसी दशा में विपद् और कष्ट का भय नहीं है । ऐसे आदमी को सब प्यार करते हैं । सचमुच सद्भाव के प्रभाव से पाषाण हृदय भी नरम पड़ जाता है । दया, स्नेह, सच्चे त्याग और निःस्वार्थ प्रेम के सन्मुख सदा लोगों का सिर झुका रहता है । इसी से टाम अपने निष्कपट, सरल व्यवहार के कारण दिन दिन अपने मालिक की आँखों में चढ़ता गया ।

सेन्टक्लेयर रुपये-पैसे के मामले में बड़ा लापरवाह था । वह अपने आय-व्यय का कोई लेखा जोखा न रखता था । उसका एडाल्फ नामी ग़ुलाम ही बाज़ार-घाट तथा खर्च-वर्च का काम किया करता था । और वह भी अपने मालिक के समान ही लापरवाह आदमी था । बे हिसाब खर्च करता था । पर टाम के आने पर सेन्टक्लेयर मौके मौके से उससे काम लेने लगा । किन्तु उसकी चतुराई और ईमान्दारी देख कर सेन्टक्लेयर ने शीघ्र ही अपने रुपये-पैसे एवं खर्च-वर्च का कुल काम उसके हाथ में दे दिया ।

अपने हाथ से खर्च-वर्च का अधिकार निकल जाने के कारण एडाल्फ कुछ उदास हुआ और मुँह बनाने लगा । इस पर सेन्टक्लेयर ने कहा, "नहीं नहीं एडाल्फ, तुम यह काम टाम ही को करने दो । तुम केवल खर्च ही करना जानते हो; और टाम खर्च और आमद

दोनों को समझता है। यदि हम इस काम के लिए किसी ऐसे आदमी को नियत न करें तो योंही करते करते एक दिन रुपयों का तोड़ा हो जा सकता है।

टाम सेन्टक्लेयर का काम बड़ी ही ईमानदारी से करता था। उससे कभी किसी खर्च का हिसाब नहीं पूछा जाता था। वह यदि चाहता तो बेईमानी से बहुत रुपये बना लेता; पर वह अधर्म की कौड़ी लेना महापाप समझता था।

टाम सेन्टक्लेयर को मालिक जान कर उसका बड़ा सम्मान करता था। पर इस सम्मान के भाव ने दूसरा ही रङ्ग पकड़ा। टाम बूढ़ा और सेन्टक्लेयर नौजवान था। टाम गम्भीर और सेन्टक्लेयर चञ्चल-चित्त था। इससे सेन्टक्लेयर के सम्बन्ध में टाम के हृदय में पितृ-वात्सल्य का सञ्चार होने लगा। टाम ने देखा कि सेन्टक्लेयर का हृदय तो बड़ा दयालु है; किन्तु वह कभी बाइबल नहीं पढ़ता, न कभी उठते बैठते ईश्वर-भजन ही करता है, गिर्जा जाकर ईश-वन्दना भी नहीं करता, सदा हँसी ख़ुशी में मग्न रहता है। थियेटर में जाने का उसे बड़ा शौक़ है। कभी कभी अपने तुल्य चञ्चल-चित्त युवकों में बैठ कर ख़ूब ही शराब पी कर पागल बन जाता है। ये सब बातें देख कर टाम के मन में बड़ा दुःख होता था। ऐसा दयालु, सरल प्रकृति, सहृदय युवक ईश्वर से अलग-थलग पड़ा है, उपासना-हीन जीवन व्यतीत कर रहा है, टाम के लिए यह बड़े ही कष्ट का विषय था। वह नित्य अपनी प्रार्थना में ईश्वर से विनती करता —"हे भगवन्, इस युवक की मति सुधार दो, इसका हृदय पलट दो। इसके हृदय में धर्म तथा अपनी भक्ति की तृष्णा उत्पन्न करदो।"
एक दिन की बात है, सेन्टक्लेयर ने कहीं बहुत अधिक शराब पी ली और बड़ी रात गये गिरता पड़ता घर आया। उस समय टाम और

एडाल्फ ने उसे गाड़ी से उतार कर खाट पर सुलाया । एडाल्फ़ सेन्टक्लेयर की यह दशा देख कर हँसने लगा । पर टाम कुछ न बोल सका, उसकी आँखों से आँसू झरने लगे । एडाल्फ टाम का यह भाव देख कर और भी दाँत चिचारने लगा । किन्तु, टाम को उस रात बिल्कुल नींद न आई । वह रात भर बैठा ईश्वर से मालिक के सुधार के लिए प्रार्थना करता रहा । सवेरे सेन्टक्लेयर ने टाम को कहीं भेजने के लिए बुलाया । टाम जब आकर खड़ा हुआ तो उसकी आँखें डबडबाई हुई थीं । सेन्टक्लेयर ने टाम को कुछ रुपये देकर किसी काम के लिए जाने को कहा, किन्तु टाम वहाँ ही खड़ा रहा । तब सेन्टक्ले-यर ने पूछा, टाम ! क्या मैं कुछ भूल गया हूँ ।"

टाम । नहीं, मुझे कहते डर लगता है ।

सेन्टक्लेयर ने हाथ का अखबार टेबुल पर डाल दिया, तथा चाह का प्याला भी छोड़ दिया और टाम की ओर देखने लगा, पूछा, "क्यों टाम ! मामला क्या है ? तुम्हारा चेहरा देख कर तो जान पड़ता है मानों कोई बड़ी भारी विपद् आ पड़ी है ।"

टाम—प्रभु ! मुझे बड़ा दुःख हो रहा है । मैं समझता था कि मालिक सदा सब के साथ समान व्यवहार करते हैं ।"

सेन्टक्लेयर—तो क्या तुम्हारा यह ख़याल ठीक नहीं उतरा ? अब बोलो तुम क्या चाहते हो ? मैं समझता हूँ तुम कोई चीज़ चाहते होगे वह तुम्हें नहीं मिली होगी, यह उसी की भूमिका है ।

टाम—प्रभु ! इस दास पर तो आपकी सदा ही कृपा बनी रहती है । अपने विषय में मुझे आपसे कोई शिकायत नहीं करनी है । किन्तु एक आदमी से आपका व्यवहार अच्छा नहीं होता ।

सेन्टक्लेयर । क्यों, मैंने किससे बुरा बर्ताव किया ? अपना मतलब खोल कर कहो ।

टाम—गत रात्रि की घटना का स्मरण करके मुझे बड़ा खेद होता है। आप सब पर दया करते हैं, केवल अपने ऊपर आप बड़े निर्दयी हैं।

सेन्टक्लेयर ने मुस्कुरा कर कहा, "ओह, यह न कहो, यह बात है?"

टाम ने सिर झुका कर बड़ी नम्रता से आँखों में आँसू भर कर पैरों पड़ कर कहा—"प्रभु, यही बात थी, जो मैं आपसे कहना चाहता था। मेरे प्यारे नवयुवा प्रभु! मुझे भय है कि यह सब कुछ—सब कुछ—शरीर और आत्मा का सत्यानाश कर देगा। बाइबल में लिखा है कि यह बला सर्प से भी भयङ्कर और बुरी है। मेरे प्यारे प्रभु!"

टाम का गला भर आया और उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह चली।

सेन्टक्लेयर की भी आँखें भर आईं। उसने कहा, "टाम, उठो। तुम भी निरे ना समझ हो, तुम्हें ज़रा भी अक्ल नहीं है। मैं इस योग्य नहीं हूँ कि मेरे लिए कोई रोवे।"

पर टाम नहीं उठा। वह इस भांति सेन्टक्लेयर की ओर ताकने लगा मानों उसके नेत्र विनती कर रहे हैं।

कोमल-हृदय सेन्टक्लेयर टाम की यह दशा देख कर बोला, "टाम! लो, मैं आज से प्रतिज्ञा करता हूँ कि फिर कभी इतनी शराब नहीं पीऊँगा। फिर कभी बुरों का साथ न दूँगा। मैं अपने चरित्र से आप घृणा करता हूँ। मैं अपने जीवन को पाप-जीवन समझता हूँ। तुम बे फ़िक्र रहो, मैं अब फिर बुरा काम नहीं करूँगा।"

इतना कह कर सेन्टक्लेयर ने टाम का हाथ पकड़ कर उसे उठाया।

सेन्टक्लेयर की प्रतिज्ञा सुन कर टाम को बड़ा संतोष हुआ और वह आंखों का जल पोंछता हुआ चला गया।

टाम के चले जाने पर सेन्टक्लेयर विचारने लगा कि मैंने आज जो प्रतिज्ञा की है, उसे कभी नहीं तोड़ूँगा। सचमुच उस दिन से फिर सेन्टक्लेयर ने मद्यपान छोड़ ही दिया। सेन्टक्लेयर स्वभावतः इन्द्रियासक्त अथवा कुप्रवृत्तिवश न था। लड़कपन से ही लोग उसे सच्चरित्र समझते थे। पर, इधर संसार से उसे विराग सा हो गया था, संसार की टेढ़ी गति देख कर किसी काम में उसका मन न लगता था। उसके जीवन का कोई लक्ष्य न था। उसका यह लक्ष्य-शून्य-जीवन घटना-चक्र के अनुसार चलता था। इसी से समय काटने के लिए उसे जब जैसा संग मिलता वह उसी में रम जाता और हँसी-ख़ुशी मनाता था। महीनों की कौन कहे, वर्षों के वर्ष योंही विना कष्ट के बीत जाते थे।

—:o:—

इक्कीसवाँ परिच्छेद ।

गृहप्रबन्ध ।

सेन्टक्लेयर के यहाँ दास-दासियों की एक वड़ी संख्या थी । पर वहुत दास-दासियों के होने से ही क्या होता है ? जिस घर के काम-काज किसी नियम से नहीं होते, वहाँ वहुत दास-दासियों के रहते हुए भी काम ठीक से नहीं होता, किसी तरह का आराम नहीं मिलता । किन्तु दास-दासियों को कामों के नियम वतलाना, उनका पालन करने के लिए उन्हें उपदेश देना, यह सव काम घरवालियों का होता है । हरएक घर एक विद्यालय के समान है, गृहिणियाँ ही इस घर की मास्टर हैं । पर जैसे वहुत से स्कूल और कालेजों के मूर्ख और अदूरदर्शी मास्टर शिक्षा देने का ढङ्ग नहीं जानते, न उन्हें वालकों का मन गठित करना आता है, न किसी नये विषय के मन पर विठा देने का ही शऊर होता है, वह केवल वेतों की मार के सहारे शिक्षा देते हैं। वैसे ही वहुत से घरों की श्रीमतियाँ भी होती हैं । वे नौकरों के साथ वर्त्ताव करना विल्कुल नहीं जानतीं । हर दम नौकरों से रूठ कर उन पर मुँह फुलाये रहती हैं, और उन पर चिड़चिड़ाया करती हैं । उनके इस ढङ्ग से, प्रायः उनके पतियों के लिए घर में रहना और बैठना दुश्वार हो जाता है । और कितने ही तो घर छोड़ कर यारदोस्तों में बैठ हँसी-ख़ुशी में अपना अधिकांश समय विताने लगते हैं । इसी कारण कितने ही नव-युवक वुरे संसर्ग में पड़ कर अपना अमूल्य जीवन विगाड़ लेते हैं !

अमेरिकान्तर्गत दासत्व-प्रथा प्रचलित प्रदेशों में सुगृहिणियों का सर्वथा अभाव तो नहीं था। शेल्वी साहब की मेम को ही लीजिए, वह एक अच्छी गृहिणी थीं। उनके चरित्र के प्रभाव से कितने ही दास-दासी सुधर गये थे। इलाइजा और टाम का चरित्र ही इस बात का उत्तम प्रमाण है। पर सेन्टक्लेयर की गृहिणी मेरी वैसी नहीं है। वह बहुत सख्त मास्टर है। बेतों की मार ही उसके शिक्षा देने का एक मात्र साधन है। इस बात से सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि उसके घर के दास-दासी निस्सन्देह सुख देने की जगह दुःख-दायी होंगे। मिस अफिलिया की कार्यदक्षता का बखान पहले किया जाचुका है। वह सेन्टक्लेयर के घर के प्रबन्ध का भार अपने हाथों में लेकर दास-दासियों के काम को ढङ्ग से चलाने की चेष्टा करने लगी। इसके लिए उसने कई तरह के नियम बनाये। पर सेन्टक्लेयर के दास-दासियों की तो आदत बिगड़ी हुई थी, वह कभी नियम से चले नहीं थे; इसलिए मिस अफिलिया का सब कामों को नियम सहित कराने का ढङ्ग उन्हें बहुत अखरा। वे उन नियमों के विरुद्ध चलने लगे। उन्होंने सोचा कि आज यह नियमों की नई बला कहाँ से सिर आ पड़ी, इन नियमों के मारे तो उनका मनमानी करने का पुश्तैनी अधिकार छिन जायगा। पहले सेन्टक्लेयर के यहाँ इन दास-दासियों के कार्य्यों का कोई निरीक्षण न करता था। खूब मनमानी मालिक की चीज़ें बिगाड़ते थे। प्रायः ऐसा होता था कि बरतन साफ़ करने के लिए तौलिये की दरकार है, पर कौन तलाश करने का कष्ट उठावे; झट मालिक का कोई अच्छा कपड़ा लेलिया और बरतन साफ़ कर डाले। अफिलिया जब इस अन्धेर-खाते को बन्द करने का यत्न करने लगी तो उन्हें अखरना था ही।

करने को अफिलिया ने बहुत कुछ प्रबन्ध किया भी, पर वह जैसा

चाहती थी, वैसा होना उस घर में कठिन था। उसने घरके सब विभागों में सुधार करने की चेष्टा की थी, पर नहीं हो सका। तब हार कर एक दिन सेन्टक्लेयर से बोली—"अगस्टिन! भाई, तुम्हारे इस घर में किसी प्रकार का नियम ठीक रखना जितना कठिन काम है, उतना कठिन और कोई भी काम नहीं है।"

सेन्टक्लेयर—निस्सन्देह नहीं है।

मिस अफिलिया—ऐसा अन्धेरखाता और लूट तो मैंने कहीं नहीं देखी।

सेन्टक्लेयर—मैं भी कहूँगा कि तुमने नहीं देखी।

मिस अफिलिया—तुम्हें यदि भोगना पड़े तो तुम जानो।

अगस्टिन—प्यारी जीजी, मैं तुम्हारी बात मानता हूँ, तुम बहुत दुरुस्त कहती हो। पर इसका कोई उपाय नहीं है। हम जब अपने आराम के लिए कुछ मनुष्यों को पशुओं की हालत में अपने घर रखते हैं तो इसका भला और बुरा जो नतीजा होगा सब हम्हीं को सहना पड़ेगा। ये ऐसे ही हैं कि, बेत मारने वाले से सीधे रहते हैं और जो इनसे नहीं बोलता उसे ये उलटा सताते हैं। इन दास-दासियों को ख़ूब मालूम है कि मैं बेत नहीं लगाऊँगा, इससे ये मनमानी करते हैं। मैंने भी सोच रक्खा है करने दो, जो चाहें, कहाँ तक करेंगे, मैं नहीं बोलूँगा।

अफिलिया—पर यों इस बदतरतीबी से समय और चीज़ सब नष्ट हुआ जाता है।

अगस्टिन—हाँ बहन, तुम उत्तर-प्रदेश के लोग, समय का मोल और सदुपयोग जानते हो। पर ऐसे आदमियों का क्या, जो जन्म के ही आलसी हैं। खाना और पड़ कर सो रहना, समय मिले थोड़ा पढ़ लेना यही जिनका काम है। मैं तो तुमसे भी कहता हूँ नाहक

इन लोगों के साथ माथा-पच्ची करती हो; इनमें नियम-वियम कुछ होना है नहीं। छोड़ दो, इन्हें अपनी मनमानी करने दो।

अफिलिया—पर अपनी हानि और अपरिमित व्यय का भी तो ख़्याल करना चाहिए।

अगस्टिन्—हाँ यह ठीक है। जहाँ तक तुमसे हो सके बन्दोबस्त करो, सब चीज़ों में ताला-कुञ्जी रक्खो, पर छोटे-मोटे अपव्यय की खोज मत रक्खो, उससे कोई बड़ा लाभ नहीं।

अफिलिया—मुझे यह देख कर बड़ा कष्ट होता है कि ये दास-दासी बहुत ईमानदार नहीं है। तुम्हारी समझ में क्या ये पूरे विश्वासी हैं?

मिस अफिलिया ने बड़ा गम्भीर मुख बना कर यह प्रश्न किया था पर सेन्टक्लेयर इस पर बहुत ठठा कर हँसा।

सेन्टक्लेयर—बहन तुम कहती हो विश्वासी! इनसे विश्वासी होने की क्या उम्मेद की जा सकती है? फिर वह ईमानदार होने ही क्यों लगे? संसार में उनके ईमानदार होने के लिए साधन ही क्या हैं?

अफिलिया—तुम इन्हें शिक्षा क्यों नहीं देते?

सेन्टक्लेयर—शिक्षा! तुम समझती हो मैं कैसी शिक्षा दूँगा? मैंने इनकी शिक्षा के लिए योग्य आदमी चुन रक्खा है। मेरी इन्हें शिक्षा देने की यथेष्ट शक्ति रखती है। यदि उसे इनकी शिक्षा का पूरा पूरा भार सौंप दिया जाय तो वह मारे बेतों के इनका चमड़ा उधेड़ लेगी; लेकिन फिर भी उससे इनकी कपटता दूर होना असम्भव है।

अफिलिया—तो क्या इनमें कोई एक भी ईमानदार नहीं है?

सेन्टक्लेयर—एक आध एक आध होते हैं, पर वे ऐसे होते हैं कि जिन्हें विधाता ने ऐसा सरल, सच्चा और विश्वासी बनाया है कि

उन्हें सैकड़ों प्रतिकूल शक्तियाँ भी प्रकृति-भ्रष्ट नहीं कर सकतीं । पर साधारणतः ज़रा समझ आते ही दासों के बच्चे कपट और छल सीख जाते हैं, क्योंकि वह देखते हैं कि इनके विना उनका गुज़र होना मुश्किल है । और आगे चल कर वही कपट और छल उनके लिए आवश्यक और स्वाभाविक हो जाता है । उनसे किसी अच्छे गुण की आशा करना न्याय-सङ्गत नहीं है । उन्हें इसके लिए दण्ड नहीं मिलना चाहिए । ग़ुलामों को जिस स्थिति में रक्खा जाता है, उसमें रह कर कोई भी आदमी ईमानदार हो नहीं सकता । बस, हमारे यहाँ टाम ही ग़ुलामों में एक ऐसा है जिसका ईमानदारी के लिए उदाहरण दिया जा सकता है,—वह तो एक नैतिक आश्चर्य है !"

अफिलिया—अच्छा, परलोक में इनकी आत्मा की क्या गति होगी ?

सेन्टक्लेयर—मैं परलोक की बात नहीं जानता; मैं तो केवल वर्त्तमान जीवन की बात कह रहा हूँ । सच तो यह है कि अपने फ़ायदे के लिए हम लोग इन कालों को यहीं नरक का मज़ा चखा रहे हैं, परलोक की कौन सोचता है ?

अफिलिया—यह बड़ी ही भयानक दशा है ! तुम लोगों को इसके लिए स्वयं लज्जित होना चाहिए !

सेन्टक्लेयर—वड़ी लज्जावाली बात तो नहीं है । इसमें क्या है—"पञ्च सरीखे कीजे काज, हारे जीते नाहीं लाज ।" संसार भर जिस काम को करता है उसके करने में शर्म नहीं आती, चाहे वह भला हो या बुरा । फिर यह दासत्वप्रथा है कहाँ नहीं, सारे संसार में छाई पड़ी है । "ऊँचे चढ़ कर देखा और घर घर यही लेखा" जहाँ देखो, वहाँ यही कथा है, नीच जातियों की देह, आत्मा और शक्ति उच्च जातियों के फ़ायदे के लिए पिसती है, काम में लाई जाती है । यही बात

इँग्लेंड में भी है । मेहनत मज़दूरी कर करके मरते हैं गरीब लोग, और उनकी बदौलत चैन करते हैं अमीर । बस, बात यह है कि जो बात सर्वत्र होती है वही हमारे यहाँ भी होती है पर उसका रूप दूसरा है ।

अफिलिया—वरमन्ट में तो ऐसा नहीं होता ।

सेन्टक्लेयर—हाँ न्यू इँग्लेंड और स्वतन्त्र रियासतों में यह बात नहीं है, पर अधिकांश स्थल इससे बचे हुए नहीं हैं । अच्छा चलो, भोजन का घण्टा बज गया, थोड़ी देर के लिए अपने इस विषय को किनारे रख कर हम लोग भोजन कर आवें ।

ज्योंही मिस अफिलिया रसोई-घर में घुसी, उसने सुना कुछ दासों के छोटे छोटे बच्चे चिल्ला रहे हैं—"यह देखो घिघियाती हुई प्रू आ रही है ।"

मिस अफिलिया ने एक लम्बी सी दुबली पतली काली औरत को एक टोकरी में बिस्कुट और रोटियाँ भरे हुए रसोई-घर में आते हुए देखा । उसे देख कर सेन्टक्लेयर की रसोइयाँदारिन दीना ने कहा—"अहा, प्रू ! तुम आई हो ।"

प्रू ने अजब ढङ्ग से नाक भौं सिकोड़ रक्खा था, उसकी आवाज़ भी झल्लाई हुई थी । वह अपनी टोकरी को सिर से उतार कर दोनों घुटनों का सहारा ले कर ज़मीन पर बैठ गई और कहने लगी, "हे भगवान् मुझे मौत दो !"

मिस अफिलिया—"तुम मौत क्यों चाहती हो ?"

उस स्त्री ने आँखें नीचे किये हुए ही रुखाई से कहा—"इस दु:ख से छुटकारा पाने के लिए मैं मरना चाहती हूँ ।"

उसकी बातें सुन कर एक कपड़ों से बनी ठनी हुई वर्णसङ्कर दासी ने सिर हिलाते हुए कहा—"प्रू, तुम ऐसी शराब पिये

बिना क्या दुबली हुई जाती हो कि पहले तो शराब पीती हो, फिर बेतें खाती हो ।"

प्रू ने तीव्र दृष्टि से उस दासी की ओर देख कर कहा, भगवान् ने चाहा तो तेरी भी कभी मेरी ही सी हालत होगी । उस दिन मुझे बड़ी ख़ुशी होगी । और तब मैं देखूँगी कि अपनी मानसिक यन्त्रणा को भुलाने के लिए तू मेरी ही भाँति शराब पीती है वा नहीं ।

दीना ने कहा—"प्रू, इधर आ, अपनी बिस्कुट रोटी हमें दिखला । मिस अफिलिया लेंगी ।"

मिस अफिलिया ने दो दर्जन बिस्कुट और रोटियाँ लीं ।

दीना ने जेक से कहा—"देखो उस ताक पर पुरानी सुराही में टिकट रक्खे हुए हैं ले तो आना ।"

मिस अफिलिया—टिकट—क्या मतलब के हैं ?

दीना—हम प्रू के मालिक से टिकट ख़रीद लेते हैं और रोटियाँ ले कर हिसाब से टिकट लौटा देते हैं ।

प्रू—और घर पहुँचने पर वे मेरे टिकट और दाम गिनते हैं अगर कभी पूरे न हुए तो मार मार कर वे मुझे अधमरी कर देते हैं ।

पूर्वोक्त दासी जेन ने कहा—"अच्छा करते हैं, तू उनकी रोटियाँ बेच कर शराब पी डालती है, पीटेंगे नहीं । मिस साहब, यह बराबर रोटियाँ बेच कर शराब पी डालती है ।

प्रू—हाँ, यह तो मैं करती हूँ और करूँगी । इसके बिना मैं ज़िन्दा नहीं रह सकती । शराब पी कर यन्त्रणा को भुलाने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं है ।

मिस अफिलिया—तू बड़ी खोटी और मूर्ख है । मालिक के रुपये चुरा कर अपने को पशु बनाना कितना बुरा काम है ।

प्रू—"मिस साहब, आप जो कहती हैं, ठीक है। पर मैं शराब पीऊँगी—हाँ मैं पीऊँगी। हे भगवन्! मुझे मौत दे दो, मौत दे दो, मौत देकर मेरे दुःखों का अन्त कर दो।" यह कहते हुए वह बुढ़िया रोटी की टोकरी सिर पर उठा कर धीरे धीरे घर के बाहर चली। पर जाने के पूर्व उसने एक बार उस वर्णसङ्कर दासी जेन को घूरा। जेन उस समय खड़ी खड़ी अपने कान के झूमक हिला रही थी। बुढ़िया ने उससे कहा—"तू बहुत इतराती है, अपने को तू बड़ी ख़ूबसूरत लगाती है बहुत टीमटाम करती है और दूसरों को तुच्छ समझती है। देखना घबड़ा मत, भगवान् चाहेंगे तो तेरी यह सारी टीमटाम निकल जायगी, तू भी मेरी ही तरह दुःख में पड़ेगी और बेंतों से पिट कर दर दर भीख माँगती फिरेगी। तब देखूँगी, तू शराब पीती है कि नहीं—शराब पी पी कर पिटती है कि नहीं। पिटेगी और ख़ूब पिटेगी—तब तेरे इस ताने तिश्ने और नाज़-नख़रे का तुझे उचित फल मिलेगा।" यह कहते हुए ईर्ष्या भरी आवाज़ से ख़ूब गर्जगर्जा कर बुढ़िया चली गई।

एडाल्फ कुछ काम से वहीं आ कर खड़ा था, उसने कहा—"इस बूढ़े पशु को देख कर घिन होती है! मैं अगर इसका मालिक होता तो इसे और भी काटता।"

दीना—तू और अधिक क्या काटता। उसकी पीठ पर ऐसी कोई जगह ही नहीं है कि जहाँ घाव न हो। उस बेचारी को इन घावों पर पट्टी बाँधने के लिए एक फटा सा कपड़ा तक तो नसीब नहीं होता।

जेन बोली—"मेरी राय है कि ऐसे ओछे आदमियों को भले-मानसों के घर नहीं आने देना चाहिए।" फिर उसने बड़े चोंचले से एडाल्फ से अपना सिर भिड़ा कर कहा—"मिस्टर सेन्टक्लेयर, तुम्हारी क्या राय है?"

एडाल्फ मालिक के कपड़ों ही तक पर हाथ साफ़ न करता था, उसने मालिक का नाम भी अपना-लिया था। वह सब दास-दासियों से कहता था कि मुझे मिस्टर सेन्टक्लेयर कहा करो, मैं तुम लोगों का सरदार हूँ।

एडाल्फ ने कहा—"मिस बेनायर, मैं तुम्हारी राय से सहमत हूँ।" बेनायर सेन्टक्लेयर की स्त्री मेरी का दूसरा नाम था और जेन उसकी ख़ास दासियों में से थी।

जब रसोईघर में प्रू से बातें हो रही थीं उस समय हम लोगों का टाम भी वहीं खड़ा था। बुढ़िया के टोकरी लेकर चलने पर वह भी उसके पीछे पीछे हो लिया। उसने देखा कि क्षण क्षण में बुढ़िया चीख़ती है। थोड़ी दूर जाकर एक दरवाज़े पर टोकरी उतार कर वह सिर पर का फटा पुराना कपड़ा ठीक करने लगी। उस कपड़े से उसके कन्धे भी पूरे नहीं ढके जाते थे। टाम ने बुढ़िया के दुःख पर तर्स खा कर कहा—"लाओ अपनी टोकरी मुझे दे दो, मैं ले चलूँगा।"

प्रू—तुम्हें क्यों? मैं किसी की सहायता नहीं चाहती।

टाम—तुम बीमार जान पड़ती हो, अथवा किसी कष्ट में हो या और कोई बात है।

प्रू ने थोड़े में कहा, "मैं बीमार नहीं हूँ।"

टाम—मैं तुम्हारा शराब पीना छुड़ाना चाहता हूँ। क्या तुम नहीं जानती हो कि यह शरीर और आत्मा दोनों का सत्यानाश करदेती है।

प्रू—मैं जानती हूँ कि मुझे नरक-भोगी होना पड़ेगा। तुम्हारे यह सब बतलाने की आवश्यकता नहीं है। मैं कुत्सित हूँ, मैं दुष्ट हूँ, मैं सीधी नरक को जाऊँगी। हे भगवन्! मैं चाहती हूँ मुझे शीघ्र वहाँ पहुँचा दो।

टाम उसकी पागल की सी बातें सुनकर तथा बार बार उसका मौत का आवाहन करना सुन कर बहुत चौंका। उसने सोचा अवश्य यह बहुत अधिक सताई गई है, इसी से इसे जीना भार हो रहा है। टाम का हृदय पिघला, आंसू निकल आये।

बोला, "परमात्मन् ! इस बेचारी पर दया करो !" उससे पूछा "तुम ने कभी ईसा का नाम सुना है ?"

प्रू—ईसा, वह कौन है !

टाम—हम लोगों का मुक्ति-दाता स्वामी।

प्रू—मैं समझती हूँ ईश्वर का नाम सुना है, उसके न्याय और नरक की बात भी सुनी है।

टाम—पर क्या तुम्हें कभी किसी ने भगवान् ईसा के विषय में नहीं बतलाया कि वह हम अभागे पापियों को प्यार करते थे, और हम लोगों के लिए अपनी जान तक देदी।

प्रू—मैं उसकी बाबत कुछ नहीं जानती। मेरी बूढ़ी मा के मरने के बाद कभी किसी ने मुझे प्यार नहीं किया।

टाम—पहले तुम कहाँ रहती थी ?

प्रू—केन्टाकी में। एक आदमी ने मुझे लड़का पैदा करके बाज़ार में बेचने के लिए रक्खा, लड़का पैदा होकर जहाँ ज़रा बड़ा होता वह उसे तुरन्त बेच डालता। मेरी सन्तानों के बिकने पर मुझे कैसा अपार दुःख होता था, मैं कितना रोती चिल्लाती थी, पर वह पापी ज़रा भी न पिघलता था।

मुझे जो जो कष्ट उसने दिये उनका मैं क्या वर्णन करूँ। जान पड़ता है विधाता ने संसार में सब से अधिक दुःख भोगने के लिए मुझी को उपजाया है। फिर अन्त में उस आदमी ने मुझे एक दास-व्यवसायी के हाथ बेच डाला और उस से मेरे वर्तमान मालिक ने मुझे ख़रीदा।

टाम—तुम्हें यह शराब पीने की वान कब पड़ी ?

प्रू—इस बदक़िस्मती की कथा भी कहती हूँ। मैं जब यहाँ आई तो मेरी गोद में एक चार पाँच मास का बच्चा था। मैंने समझा कि इस एक को तो पाल पोस कर मैं बड़ा कर सकूँगी क्योंकि मालिक दास-व्यवसायी नहीं था। मेरा वह बच्चा बड़ा हृष्ट-पुष्ट था, कभी न रोता था, जहाँ बिठा देती बैठा खेला करता। पर यहाँ आने के कुछ ही दिनों बाद मलकिन को सङ्क्रामक ज्वर हुआ और मैंने उसकी सेवा की; मुझे भी वही ज्वर हो गया और उससे मेरा सारा दूध सूख गया। बिना दूध के बच्चे की हड्डी हड्डी निकल आई। मैंने मलकिन से उसके लिए थोड़ा दूध ख़रीद देने को कहा, पर उसने एक पैसा भी देना स्वीकार न किया। उलटा ग़ुस्से हो कर बोली—"दासी के लड़के के लिए दूध ख़रीदा जायगा !" मैं चुप हो रही। मुझे रात को उसकी सेवा के लिए कमरे के अन्दर रहना पड़ता था, पर रात को लड़का रो कर उसकी नींद ख़राब करेगा, इससे लड़के को मुझे अपने साथ न रखने देती। उसे नीचे छोड़ कर मैं कमरे में जाती। एक दिन रात को आप ही आप रोते रोते वह लड़का मर गया। तब से बराबर मैं जहाँ रहती हूँ उस लड़के के रोने की आवाज़ मेरे कानों में आती है। उस चिल्लाहट को अपने कानों से बाहर रखने के लिए ही मैं शराब पीने लगी। मैं अवश्य शराब पीऊँगी। शराब के लिए नरक में जाना पड़े तो भी मैं शराब पीना नहीं छोड़ूँगी। मालिक कहते हैं कि मैं नरक में पड़ूँगी, और मैं उनसे कहती हूँ कि मैं इसी समय नरक में पड़ी हुई हूँ।

टाम को इस स्त्री की बात सुन कर बड़ा दुःख हुआ, वह ठण्ढी साँस लेने लगा।

कुछ देर बाद टाम ने कहा, "अरी दुखियारी ! क्या तूने कभी सुना नहीं है कि ईसा की तुझ पर कितनी कृपा है, और वह तेरे ही

लिए मरे हैं। क्या तूने नहीं सुना कि वह तेरी सहायता करेंगे और तू अन्त में स्वर्ग में पहुँच कर शान्ति की अधिकारिणी बन सकेगी?"

प्रू—मैं, स्वर्ग में जाऊँगी? स्वर्ग ता वही न, जहाँ सफ़ेद चमड़े वाले जाते हैं! मान लो, यदि वहाँ उन सबों ने मुझे पकड़ पाया? बल्कि मैं नरक में जाऊँगी और वहाँ मालिक और मालकिन से दूर रहूँगी। मेरे लिए नरक ही अच्छा है। इतना कह कर वह पागल की भाँति बड़बड़ाती हुई अपनी टोकरी उठा कर चल खड़ी हुई।

टाम लौटा, और दुःखित हृदय से धीरे धीरे घर को आया। आँगन में इवा से उसकी भेंट हुई। उसके सिर पर एक फूलों का ताज शोभा पा रहा था, और वह बड़ी प्रसन्न जान पड़ती थी। उसने टाम को देखते ही कहा, "ओह टाम! तुम कहाँ गये थे? मैं तुम्हें बड़ी देर से ढूँढ़ रही थी।" उसने उसका हाथ पकड़ कर कहा, "बाबा ने कहा है कि वह मेरा टट्टू मेरी छोटी गाड़ी में जोत कर मुझे घुमाने लेचलो।" पर, टाम, बात क्या है? तुम उदास दीख पड़ते हो?"

टाम ने खिन्न चित्त से कहा, "मेरा जी बहुत दुःख पा रहा है। पर, खड़ी रहो मैं तुम्हारे लिए गाड़ी लिये आता हूँ।"

इवा—लेकिन मुझसे कहो, टाम, मामला क्या है? मैंने देखा, तुम बूढ़ी प्रू से बातें कर रहे थे।

टाम ने सीधे-सादे शब्दों में उस स्त्री की रामकहानी इवा को सुना दी। उसकी दुःख-गाथा सुन कर, और बालकों की भाँति इवा ने न तो विस्मय ही प्रकट किया, न आँसू ही बहाये। उसके गालों पर पीलापन छा गया, और उसकी आँखें प्रभाहीन हो गईं। उसने अपने कलेजे पर दोनों हाथ रख कर ज़ोर से ठण्ढी साँस ली।

इवा—टाम, मेरे लिए घोड़ा मत लाना। मैं घूमने नहीं जाऊँगी।

"क्यों, घूमने क्यों नहीं जाओगी?"

इवा ने कहा, "टाम, ये बातें मेरे हृदय में चुभ जाती हैं।" उसने फिर दुहरा कर कहा, "इन बातों से मेरे हृदय में बड़ी चोट लगती है। मैं घूमने नहीं जाना चाहती।" यह कह कर वह लौट पड़ी और घर में चली गई।

बाईसवाँ परिच्छेद ।

विश्वव्यापी दासत्वप्रथा ।

कुछ दिनों बाद बूढ़ी प्रू की जगह एक दूसरी स्त्री बिस्कुट और रोटियाँ लेकर आई, उस समय मिस अफिलिया रसोईघर में थी। दीना ने उस स्त्री से पूछा, "क्योंरी, तू आज रोटी कैसे लाई, प्रू क्या हुई ?"

"प्रू अब नहीं आवेगी।" उस स्त्री ने यह बात ऐसे ढङ्ग से कही जैसे इसमें कोई रहस्य हो।

दीना—क्यों नहीं आवेगी ? क्या वह मर गई ?

उस स्त्री ने मिस अफिलिया की ओर देखते हुए कहा, "हम लोगों को ठीक ठीक हाल मालूम नहीं है। वह नीचे के तहख़ाने में है।"

मिस अफिलिया के रोटियाँ लेलेने के बाद दीना उस स्त्री के पीछे पीछे दरवाज़े तक गई।

उसने पूछा, "प्रू कहाँ है कुछ तो कह।" वह स्त्री कहना चाहती थी, पर डर से नहीं कहती थी। अन्त में दबी ज़बान से चुपके चुपके बोली।

"अच्छा देख, तू किसी से कहना मत। प्रू ने एक दिन फिर शराब पी ली, इस पर उन लोगों ने उसे नीचे के तहख़ाने में बन्द कर के दिन भर रख छोड़ा, और मैंने लोगों को कहते सुना कि उसके शरीर पर मक्खियाँ भिनभिना रही हैं और वह मरी पड़ी है।"

यह बात सुन कर दीना ने विस्मय से हाथ उठाया और पीछे हटी। पीछे हट कर देखती है तो इवाञ्जेलिन उसके पास खड़ी है। इवा की आँखें स्थिर हैं, मुहँ सूख गया है, गाल और होठों की सुर्ख़ी ग़ायब होकर सफ़ेदी छारही है।

दीना चिल्ला उठी, "दादा रे दादा! भगवान् बचावें! इवा बेहोश हो रही है। अरे हम लोगों को क्या पड़ी थी, जो उसे यह सब बातें सुनने दीं? मालिक को पता लगने से वह बड़े ख़फ़ा होंगे।"

बालिका ने दृढ़ता से कहा—"मुझे बेहोशी नहीं होगी। और मुझे यह बातें सुननी क्यों नहीं चाहिएं! कष्ट की बातें सुनने में मुझे उतनी पीड़ा नहीं होगी जितनी प्रू को कष्ट सहने में!

दीना—नहीं, तुम सरीखी कोमल नन्ही बालिकाओं को ये कष्ट-कथायें नहीं सुननी चाहिएं। इन बातों से तुम्हें बड़ी पीड़ा होती है। इवा ने फिर ठण्ढी साँस ली, और बड़े विषण्ण चित्त से पैर धरती हुई दुमंज़िले कमरे में चली गई।

मिस अफिलिया ने प्रू की कहानी की बड़ी सरगर्मी से पूछताछ की। दीना ने जो कुछ सुना था उसे ख़ूब नमक मिर्च लगा कर कहा। टाम ने भी अपनी पहले दिन की तहक़ीक़ात सुनाई।

सेन्टक्लेयर जिस कमरे में बैठा अख़बार पढ़ रहा था, उसमें जाकर पैर रखते ही मिस अफ़िलिया घृणा से बोल उठी, "ओफ़! कैसा बीभत्स काण्ड है! कैसा जघन्य व्यापार है!"

सेन्टक्लेयर ने कहा, "कहो जीजी, आज कौन सा अधर्म का पहाड़ टूट पड़ा?"

मिस अफिलिया—तुम्हारे लिए कोई बात ही नहीं है! मैंने तो ऐसी बात कभी नहीं सुनी। उन लोगों ने मारे कोड़ों के प्रू को मार डाला! मिस अफ़िलिया ने इस बात को बहुत विस्तार-पूर्वक वर्णन किया।

सेन्टक्लेयर ने अपना अख़बार पढ़ते पढ़ते कहा, "मैंने तो पहले से समझ रक्खा था कि किसी दिन यही होना है।" अफिलिया—तुमने समझ रक्खा था और इसके प्रतीकार का कोई उपाय नहीं किया ! क्या तुम्हारे यहाँ ऐसे पाँच भले मानस नहीं हैं कि जो मिल कर इन निठुराइयों के निवारण करने का यत्न करें ?

सेन्टक्लेयर—जो अपने दास-दासियों की जान लेता है वह स्वयं अपना माल नष्ट करता है, इसमें दूसरे को बोलने का कोई अधिकार नहीं है। अपना नुक़सान नफ़ा हरएक आदमी दूसरे की अपेक्षा अच्छी तरह समझता है, भरसक अपने दास-दासियों को मार कर अपना नुक़-सान कोई नहीं करता। पर प्रू पैसे चुरा चुरा कर शराब पीती थी, इससे उसके मालिक का बहुत नुक़सान होता था, इसी से मार डाला होगा।

मिस अफिलिया—अगस्टिन ! वास्तव में यह बड़ा ही भयङ्कर और जघन्य व्यापार है ! निश्चय इसके लिए तुम्हें ईश्वर का कोप-भाजन बनना पड़ेगा।

सेन्टक्लेयर—प्यारी जीजी ! मैंने कभी ऐसा नहीं किया। पर मैं दूसरों को नहीं रोक सकता, यदि मुझ में सामर्थ्य होती तो मैं रोकता। यदि नीच पशुतुल्य मनुष्य अपनी इच्छानुसार यह अत्याचार करते हैं तो कहो मैं उसमें क्या करूँ ? क़ानूनन प्रत्येक आदमी अपने अपने दास-दासियों पर पूर्ण अधिकार रखता है; दास-दासियों को जान से मार कर भी कोई दण्ड नहीं पा सकता। जब क़ानून ने उन्हें इतना अधिकार दे रक्खा है तो कोई क्या कर सकता है ? इससे अच्छा सब से भली चुप, उधर से अपनी आँख कान बन्द किये बैठे हैं, जो होता है सो होता है।

मिस अफिलिया—कैसे तुम अपनी आँखों और कानों को इधर

से बन्द कर लेते हो ? तुम कैसे चुपचाप ये अत्याचार होने देते हो ? इस भयङ्कर आचरण की कैसे उपेक्षा की जा सकती है ?

सेन्टक्लेयर—बहिन ! तुम क्या आशा करती हो ? देखो, यह एक मूर्ख, आलसी, हिताहित-ज्ञानरहित चिर-पराधीन मनुष्यजाति दूसरी अतिशय स्वार्थ-परायण अर्थ-पिशाच मनुष्यजाति के पञ्जे में फँसी हुई है। इन स्वार्थियों के हाथ में जब इतनी असीम क्षमता दे दी गई है, तब ऐसे भयङ्कर और कठोर आचरणों का होना अवश्यम्भावी है। ऐसे समाज में एकाध सज्जन हो कर ही क्या कर सकते हैं ? मेरी अकेले की ऐसी शक्ति नहीं है कि इस देश भर के ग़ुलामों को ख़रीद कर उन्हें दुःख से मुक्त कर दूँ।

यह बातें कहते हुए सेन्टक्लेयर का सदा-प्रफुल्ल मुख कुछ देर के लिए कुम्हला गया। उसकी आँखें डबडबाई सी जान पड़ीं। पर तुरन्त उसने अपना मानसिक भाव छिपा कर मुस्कुराते हुए कहा—"बहिन, तुम वहाँ यमराज की नानी का सा मुँह बनाये क्या खड़ी हो ? इधर आओ। तुम ने देखा क्या है ! इस संसार भर के पाप, अत्याचार और सख़्तियों का हिसाब लगा कर सोचा जाय तो जीना मुश्किल हो जाय। इस संसार में कुछ भी अच्छा न लगे।" यह कह सेन्टक्लेयर लेट गया और अख़बार पढ़ने लगा।

मिस अफिलिया ज़मीन पर उदास होकर बैठी बैठी मोज़ा बुनने लगी। उसके हाथ चलते थे पर जब वह उन बातों को सोचने लगी तो एकाएक उसके हृदय में आग भभक गई और अन्त में वह फूट उठी।

अगस्टिन, मैं तुम्हारी भाँति इस विषय की उपेक्षा नहीं कर सकती। मेरा मत है कि इस प्रथा का समर्थन करना तुम्हारे लिए बहुत ही घृणाजनक है।

सेन्टक्लेयर—क्यों बहिन ! तुम ने फिर वही पचड़ा छेड़ा ?

अफिलिया ने और तेज़ी के साथ कहा—"मैं कहूँगी कि इस प्रथा का समर्थन करना तुम्हारे लिए बहुत ही घृणाजनक है।"

सेन्टक्लेयर—प्यारी बहिन ! मैं इसका समर्थन करता हूँ ? किस ने कहा, मैं इसका समर्थन करता हूँ ?

अफिलिया—निस्सन्देह, तुम इसका समर्थन करते हो—तुम सब जितने दक्षिणी हो वे सब। यदि नहीं, तो बतलाओ तुम ने दासों के लिए क्या किया ?

सेन्टक्लेयर—क्या तुम मुझे संसार में कोई ऐसा निर्दोषी मनुष्य बतलाओगी कि जो किसी काम को बुरा समझ लेने पर फिर उसे नहीं करता ? क्या तुम ने कभी ऐसा काम नहीं किया या नहीं करती हो, जिसे तुम बिल्कुल ठीक नहीं समझती हो ?

अफिलिया—यदि कभी करती हूँ तो मैं उसके लिए अनुताप करती हूँ।

सेन्टक्लेयर ने अपनी नारंगी छीलते छीलते कहा—"मैं भी ऐसा ही करता हूँ। सारा समय इसके अनुताप ही में तो बीतता है।"

अफिलिया—फिर अनुताप करने के बाद उस काम को क्यों करते जाते हो ?

सेन्टक्लेयर—मेरी भली मानस बहिन ! तुम क्या कभी अनुताप करने के बाद फिर कभी उस बुरे काम को नहीं करती हो ?

अफिलिया—केवल ऐसी दशा में जब मैं बहुत लोभ में पड़ जाती हूँ।

सेन्टक्लेयर—हाँ, तो मैं बड़े लोभ ही में फँसा हुआ हूँ। जो मुश्किल तुम्हें पड़ती है वही मुझे भी।

अफिलिया—पर मैं सदा अपने दोष को दूर करने की चेष्टा किया करती हूँ।

सेन्टक्लेयर—ठीक, मैं भी दस वर्षों से चेष्टा कर रहा हूँ, पर

अभी तक मैंने अपने कितने ही दोष दूर नहीं कर पाये । तुम कहो बहिन ! तुम क्या सब पापों से मुक्त हो चुकी हो ?

इस बार मिस अफिलिया ने बड़ी गम्भीरता से बुनने के काम को किनारे डाल कर कहा—"भाई अगस्टिन, मुझ में अनेक दोष हैं, उनके लिए तुम मेरी भर्त्सना कर सकते हो । तुम्हारा कथन यथार्थ है । अपनी कमज़ोरी के विषय में मुझ से अधिक कोई दूसरा अनुभव नहीं कर सकता । पर मैं तुम से कहूँगी कि मैं अपना यह दाहिना हाथ काट कर फेंक दे सकती हूँ पर अपने दोष की उपेक्षा कभी नहीं कर सकती । जिस काम को मैं बुरा समझती हूँ उसे सदा कभी नहीं करती रह सकती ।"

अगस्टिन—बहिन, क्या तुम्हें मेरी बात पर रोष आ गया ? तुम तो जानती हो मैं सदा का दुष्ट लड़का था । मुझे सदा तुम्हारे खिझाने में आनन्द आया करता था । तुम्हारा स्वभाव कितना पवित्र है, सो क्या मैं नहीं जानता ? तुम्हारी सहृदयता क्या मैं भूल गया हूँ ? पर, बहिन, तुम ज़रा आवश्यकता से अधिक भली हो, इतनी भली कि तुम्हारे मरने का ख़याल करके मुझे बड़ा कष्ट होता है ।

अफिलिया ने मत्थे पर हाथ रख कर कहा—"अगस्ट ! यह बड़ा गम्भीर विषय है, हँसी-मज़ाक की बात नहीं है ।"

सेन्टक्लेयर—हाँ हिसाब से गम्भीर विषय है । पर इतनी गर्मी में मैं तो गम्भीर होने से रहा । गर्मी तो गर्मी उस पर मच्छरों का उपद्रव, इस समय मनुष्य इतनी उच्चनैतिक आलोचना नहीं कर सकता । सेन्टक्लेयर ने एकाएक अपने आप उठ कर कहा—"मैंने अब समझा कि तुम्हारे यहाँ के—उत्तर वाले लोग, हम दक्षिण वालों से क्यों अधिक धार्मिक होते हैं । इसका कारण यह जान पड़ता है कि तुम्हारे वहाँ यहाँ के इतनी गर्मी नहीं पड़ती । लो मुझे इस नूतन आविष्कार के लिए बधाइयाँ दो ।"

अफिलिया—अगस्ट ! तुम एक बने बनाये ख़फ़ी दिमाग़-सिड़ी हो।

सेन्टक्लेयर—मैं खफ़ी-दिमाग़ हूँ ? ठीक है, होऊँगा, कोई ताज्जुब की बात थोड़े ही है; पर अब मैं एक बार गम्भीर बनता हूँ; पर तुम ज़रा यह नारंगी की टोकरी मुझे उठा देना;—देखो, तुम मेरे लिए थोड़ा कष्ट करो, मैं भी तो गम्भीर बनने में कितना कष्ट उठाऊँगा।

अफिलिया—मैं तो तुम्हें गम्भीर बनते नहीं देखती ?

सेन्टक्लेयर—ठहरो। मैं अब गम्भीर हो रहा हूँ।

इतना कहने के बाद सचमुच ही उसका चेहरा गम्भीर हो गया। और वह बड़ी संजीदगी से, अपने भाव प्रकट करने लगा,—

बहिन, मेरा जहाँ तक ख़्याल है इस दासत्वप्रथा के प्रश्न पर कोई मतभेद नहीं हो सकता। पर हमारे यहाँ के अर्थलोभी गोरे ज़मीन्दार स्वार्थवश दासत्वप्रथा को न्यायसङ्गत बतलाते हैं; और इनके टुकड़ों पर बसर करनेवाले ख़ुशामदी पादरी इन्हें ख़ुश रखने के लिए इसे बाइबल से साबित करने को तैयार रहते हैं; वकील और नीति के पण्डित अपना मतलब गाँठने के लिए ख़ूब वागाडम्बर फैला कर इस जघन्य रीति का समर्थन करते हैं। अपने मतलब के लिए यह लोग, भाषा, नीति और धर्मशास्त्र का मनमाना अर्थ लगाते हैं। इस काम में इनकी अक़्ल की दौड़ देख कर हैरान होना पड़ता है, पर सच तो यह है कि चाहे इसे बाइबल से सिद्ध किया जाय, अथवा क़ानून की दुहाई दी जाय, वा कितनी ही युक्तियाँ दिखाई जायँ, दुनिया कभी उन पर विश्वास नहीं कर सकती। यह घृणित दासत्वप्रथा बिल्कुल नारकीय प्रथा है और नरक से निकली हुई है।"

अगस्टिन बड़ी उत्तेजना से ये बातें कह रहा था। मिस अफि-लिया को इस पर बड़ा विस्मय हुआ और वह अपना बुनना छोड़ कर सेन्टक्लेयर का मुँह देखने लगी।

सेन्टक्लेयर उसे विस्मित देख कर फिर कहने लगा,—"तुम मेरी बात पर विस्मित सी जान पड़ती हो। पर मैं आज जब कहने ही बैठा हूँ तो सब बातें खोल कर कहता हूँ। इस सर्व-जन-घृणित दासत्व-प्रथा का मूल कारण देखना चाहिए, इसके ऊपर के सारे आवरणों को अलग करके देखना चाहिए कि यह है क्या ? वास्तव में, हम भी मनुष्य हैं और कुऐशी* भी मनुष्य हैं। पर वह बेचारे मूर्ख और निर्बल हैं और हम बुद्धिमान् और सबल हैं, हम छल-बल में पक्के हैं, इससे हम उनका सर्वस्व हर लेते हैं, और उसमें केवल जितना हमारा जी चाहता है उन्हें लौटा देते हैं। जो काम गन्दा, कठिन और अप्रिय जान पड़ता है, उसे हम कुऐशियों से कराते हैं। क्योंकि हमें परिश्रम करना पसन्द नहीं, अतः कुऐशी, हमारे लिए पिसेंगे। हमें धूप अखरती है, कुऐशी धूप में जलेगा। कुऐशी रुपये कमावेगा और हम उसे ख़र्च करेंगे। हमारे जूतों में कीचड़ न लगे इसके लिए कुऐशी अपने हाथ से कीचड़ उठाकर मार्ग साफ़ रक्खेगा। यहाँ तो कुऐशी को हमारी इच्छा के अनुसार चलना ही है, उसके इहलोक परलोक के स्थान के निर्णय का ठीका भी हम्हीं लोगों के हाथ में है। हमारी कोई स्वार्थ-सिद्धि होती हो तो उसे अवश्य नरक में जाना पड़ेगा। हमारे देश के क़ानून का मतलब इसके सिवा और कुछ नहीं है। दासत्वप्रथा के अपव्यवहार का हल्ला मचाना पागलपन है। इतनी बड़ी कुप्रथा का और क्या अपव्यवहार हो सकता है ? इस घृणित रिवाज का जारी होना ही मनुष्य-शक्ति का घोरतर अपव्यवहार है। और इस पाप से यह पृथ्वी क्यों नहीं रसातल को चली जाती ? इसका कारण यह है कि हम में से सब

---

* जो लोग दास बनाये जाते थे।

जङ्गली जानवर ही नहीं है, आदमी बन कर पैदा हुए हैं, दया नाम की कोई चीज़ भी थोड़ी बहुत हम में से कुछ के हृदय में है, और हमें क़ानून ने दासों पर जो असीम क्षमता दी है उसका पूरा पूरा प्रयोग हम नहीं करते। इस देश का नीच से नीच दास-स्वामी ग़ुलामों के साथ चाहे जितना बुरा वर्ताव करता हो, चाहे जितने अत्याचार करता हो, सब, क़ानून की सीमा के अन्दर ही है।

यह कहते कहते सेन्टक्लेयर उबल सा गया—उठ कर फ़र्श पर जल्दी जल्दी टहलने लगा। उसका सुन्दर चेहरा सुर्ख़ हो गया, और उसके विशाल नेत्रों से आग सी निकलने लगी। इसके पहले मिस अफि-लिया ने कभी उसकी ऐसी प्रकृति नहीं देखी थी, इससे वह विस्मित होकर चुपचाप उसकी ओर देखती रही। सेन्टक्लेयर ने एकाएक मिस अफिलिया के सामने रुक कर कहा, "इस विषय पर कुछ कहने या सोचने का कोई फल नहीं है। पर, मैं तुमसे कहता हूँ, कोई समय ऐसा था, जब मैं सोचता था कि यदि सारी पृथ्वी रसातल में चली जाय और यह भीषण अन्याय और अविचार चिरान्धकार में लुप्त हो जाय, तो मैं सानन्द इसके साथ रसातल को चला जाऊँगा। जब जब मैं जहाज़ की यात्रा में या अपने खेतों के दौरे के समय सैकड़ों नीच, निठुर पशुप्रकृति गोरों को अन्याय-प्राप्त धन द्वारा उन असंख्य स्त्री-पुरुष और बालक-बालिकाओं को ख़रीद कर उन पर मन-माना अत्याचार करते देखता हूँ तो मेरी छाती फट जाती है—मैं मन ही मन अपने देश को कोसता हूँ और सारी मनुष्यजाति को सरापता हूँ।"

मिस अफिलिया—अगस्टिन्! अगस्टिन्! मैं समझती हूँ तुमने बहुत कहा, मैंने कभी अपने जीवन में, दासत्वप्रथा के विरुद्ध ऐसे ज्वलन्त घृणापूर्ण वाक्य उत्तर प्रदेश में भी नहीं सुने।

अफिलिया की बात सुनकर सेन्टक्लेयर के मुख का भाव बदल गया। उसने स्वाभाविक व्यङ्ग के साथ कहा—"उत्तर प्रदेश में! तुम्हारे उत्तर प्रदेशीय लोगों का ख़ून बहुत ही सर्द है; तुम लोग हर बात में ठण्ढे हो। हृदय के आवेग द्वारा उत्तेजित होकर हम लोगों की भाँति अन्याय के विरुद्ध घोर आन्दोलन करके आकाश-पाताल नहीं गुँजा सकते। तुम्हारे उत्तर प्रदेश में निम्नश्रेणी के लोगों से क्या सच्ची सहानुभूति रक्खी जाती है?

पाठक ज़रा ध्यान से देखिए तो आपको मालूम हो जायगा कि संसार भर में यह दासत्वप्रथा छाई हुई है, संसार में कोई स्थान ऐसा नहीं है, कोई जाति ऐसी नहीं है, जहाँ, जिसमें यह घृणित प्रथा किसी न किसी रूप में प्रचलित न हो। ज़रा मनुष्यसमाज के मानसिक भावों की जाँच तो कीजिए कि प्रत्येक मनुष्य के अन्दर क्या भाव काम कर रहे हैं? दूसरों पर प्रभुत्व, दूसरों को नीचे रख कर स्वयं ऊपर जाना, यही मनुष्यों के मन का एक सार्वभौमिक भाव है। इसी लिए समाज में जहाँ देखिए सबल निर्बल को सताता है, पण्डित मूर्ख पर प्रभुत्व जमाता है। बड़े आदमी अपने से ओछी श्रेणी के मनुष्यों का ख़ून चूस चूस कर मोटे बन रहे हैं। अपने से ऊपर वाली श्रेणी के कारण निम्न श्रेणी के लोग बड़े दुःख से दिन बिता रहे हैं।

मिस अफिलिया ने उत्तर प्रदेश की बात सुन कर कहा—"ठीक है, पर यहाँ एक प्रश्न उठता है—"

सेन्टक्लेयर—मैं तुम्हारे प्रश्न को समझ गया। तुम यही न कहना चाहती हो कि यदि मैं दासत्वप्रथा का अनुमोदन नहीं करता तो फिर मैं क्यों इन दास-दासियों को रख कर अपने सिर पाप की गठरी लादता हूँ? ठीक है, मैं तुम्हारे ही शब्दों में इसका उत्तर दूँगा, तुम

बचपन में मुझे बाइबल पढ़ाने के समय कहा करती थीं कि हमारे पाप पुरुष-परम्परा से हमारे पीछे लगे हुए हैं। वही बात इन दासों के सम्बन्ध में भी है, ये पुरुष-परम्परा से मुझे मिले हैं। मेरे दास मेरे पिता के थे, और तो क्या, मेरी माता के भी थे; अब वे मेरे हैं। मेरे पिता, तुम जानती हो कि पहले न्यूइँग्लेंड से यहाँ आये थे; और उनकी प्रकृति बिल्कुल तुम्हारे पिता के समान ही थी। वह सब तरह से प्राचीन रोमनों की भाँति न्यायी, तेजस्वी, महानुभाव और दृढ़प्रतिज्ञ मनुष्य थे। तुम्हारे पिता न्यूइँग्लेंड में ही रह कर पत्थर और चट्टानों पर शासन करते हुए कमाने खाने लगे और मेरे पिता लूसियाना आ कर अगणित नर-नारियों पर प्रभुत्व फैला कर उन्हीं के परिश्रम से अपनी जीविका निर्वाह करने लगे। मेरी माता,—कहते कहते सेन्टक्लेयर उठ खड़ा हुआ और कमरे के दूसरे सिरे पर लटकती हुई अपनी माता की तसवीर के पास आ कर खड़ा हो गया और बड़े भक्तिभाव से उस चित्र की ओर देख कर कहने लगा—"वह देवी थीं!" मेरी ओर इस तरह क्या देखती हो?—तुम जानती हो मेरे कहने का तात्पर्य क्या है? यद्यपि माता ने मनुष्य का तन धारण किया था पर जहाँ तक मेरा अनुभव है, मैंने देखा और समझा है, उनमें ज़रा भी मानसिक दुर्बलता और भ्रम का लेश न था। अपने, पराये, दास दासी, सभी की यही राय है। बहिन! माता ने ही मुझे कट्टर नास्तिकता के हाथ से उबारा। मेरी माता एक जीती-जागती धर्मशास्त्र थीं। और उस धर्मशास्त्र की सत्यता में मैं सन्देह नहीं कर सकता। यह कहते हुए सेन्टक्लेयर का हृदय एकदम उछल उठा, वह अपने को भूल कर हाथ जोड़ कर माता के चित्र की ओर देखते हुए—"माँ, माँ" कह कर पुकारने लगा। और फिर सहसा,

अपने को सँभाल कर वह लौट आया और अफिलिया के पास एक कुर्सी पर बैठ कर फिर कहना आरम्भ किया—

"मेरा भाई और मैं यमज थे—जुड़ं हुए पैदा हुए थे। लोग कहा करते हैं कि जुड़ं हुए पैदा होने वाले दो भाईयों में विशेष समानता होती है; पर हम दोनों में सब विषयों में भिन्नता थी। उसकी गठन रोमनों की भाँति दृढ़ थी, आँखें दोनों काली और ज्योति-पूर्ण थीं, सिर के बाल घने और काले थे, शरीर का रंग गोरा था। मेरी आँखें नीली, बाल सुनहले, देह की गठन ग्रीकों की सी और रंग सफ़ेद है। वह कामकाजी और चतुर था; मैं भावुक और कामकाज में बिल्कुल भोंदू था। वह बराबर वालों तथा मित्रों के साथ बड़ी सज्जनता का व्यवहार करता था, पर अपने से ओछे लोगों पर बड़ा रोब रखता था। उसकी इच्छा के विरुद्ध काम करने वाले पर वह कभी दया न करता था। हम दोनों ही सत्यवादी थे; उसकी सत्यप्रियता साहस और अहङ्कारजन्य थी, और मेरी सत्यनिष्ठा भावुकता से उत्पन्न हुई थी। हम दोनों एक दूसरे को चाहते थे। वह पिता का प्यारा था, और मैं माता का दुलारा। मैं बड़ा भावुक था। हर बात का मैं सूक्ष्मता से निरीक्षण करता था, नेक सी बात से मेरा हृदय छिद जाता था। मेरे इस भाव से उसकी व पिता की ज़रा भी सहानुभूति न थी। पर माता मेरे हृदय को समझती थीं और मेरे भाव से पूर्ण सहानुभूति रखती थीं। इसी से अलफ़्रेड से झगड़ने पर जब पिता मुझे तीखी निगाह से देखते थे तो मैं माता के कमरे में जाकर उसके पास बैठ जाता था। मा की उस समय की वह स्नेहदृष्टि मुझे आज भी याद आती है। माँ सदा सफ़ेद वस्त्र पहना करती थीं। मैं जब कभी बाइबल के "रेवेलेशन्स" अंश में निर्मल, शुभ्र वस्त्रधारी देवताओं का वर्णन पढ़ता हूँ तो मुझे अपनी माता का स्मरण हो आता है। अनेक

विषयों में माता बड़ी पारदर्शिनी थीं। संगीत में उनकी बड़ी पहुँच थी। माँ जब आर्गन पर अपने देव-कण्ठ से गातीं तब मैं उनकी गोद में सिर रख कर कितना चिल्लाता, कितने स्वप्न देखता, कितना सुख पाता, उसका वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।"

"उन दिनों दासत्वप्रथा का विषय इतना विवादास्पद नहीं था; कोई व्यक्ति स्वप्न में भी इसे हानिप्रद नहीं समझता था।

मेरे पिता जन्म से ही जात्यभिमानी थे। मुझे जान पड़ता है, इस लोक में जन्म लेने के पूर्व पिता आध्यात्मिक जगत् की किसी उच्च श्रेणी में थे; और वहीं से अपनी कुलमर्यादा और अहङ्कार को साथ लेकर उतरे थे। नहीं तो दरिद्र और उच्च-कुल-रहित के घर जन्म लेकर भी ऐसा कुलाभिमान होना पूर्व संस्कार के सिवाय और क्या कहा जा सकता है। मेरे भाई ने पिता की प्रकृति पाई थी।

"तुम जानती हो जाति कुलाभिमानियों के हृदय में सार्वभौमिक प्रेम का स्थान नहीं हो सकता, उनकी सहानुभूति समाज की एक निर्दिष्ट सीमा के पार नहीं जा सकती। इँग्लेण्ड में यह सीमा की रेखा एक जगह टिकी हुई है, ब्रह्मा में दूसरी जगह, और अमेरिका में और दूसरी जगह; पर इन सब देशों के जाति-कुलाभिमानियों की दृष्टि इससे आगे कभी नहीं बढ़ती। इस श्रेणी के लोग केवल अपने बराबर वालों से ही सहानुभूति रखते हैं। वह अपनी श्रेणीवालों के लिए जिन बातों को अत्याचार और अन्याय में गिनते हैं, दूसरी श्रेणीवालों के लिए उन बातों को कुछ भी नहीं समझते। पिता की दृष्टि में "रङ्ग" सीमा-निदर्शक था। गोरों को वह अपनी श्रेणी का समझते थे और उनके साथ उनका व्यवहार भी न्याय-संगत और आदर्श था। पर इन विचारे ग़ुलामों को वह मनुष्य नहीं समझते थे, वह इन्हें मनुष्य और पशुओं की मध्य श्रेणी का जीव मानते थे। मैं

समझता हूँ कि अगर कोई उनसे पूछता कि इन ग़ुलामों में आत्मा है या नहीं तो वह बड़े सन्देह में पड़ कर,—"हाँ" में इसका उत्तर देते। मेरे पिता आध्यात्मिक आलोचना की कुछ परवाह नहीं करते थे; धर्म पर भी उनकी वैसी श्रद्धा न थी। वह समझते थे कि कोई ईश्वर है, पर वह ईश्वर उच्च जाति के लोगों का ही रक्षक है।

"मेरे पिता के कपास के खेत में कम से कम पाँच सौ ग़ुलाम काम करते थे इनके कार्य की देख रेख के लिए स्टब नाम का एक वारमन्ट (माफ़ करना) प्रदेशीय नर-पिशाच रखवाला था। वह ग़ुलामों को दिन-रात सताया करता था। वह व्यक्ति माता को और मुझे एक आँख न सुहाता था, पर पिता उसे चाहते और उसका विश्वास करते थे, इससे ग़ुलामों को वह जितना चाहता सताता और मारता था।

"उस समय मैं बच्चा ही था, पर उसी समय से साधारण मनुष्यों पर मेरा बड़ा प्रेम हो गया था। मैं सदा खेत और घर के ग़ुलामों की झोपड़ियों में जाया करता था, और उनकी सब तरह की शिकायतें सुन कर आता और माता से कहता था। फिर हम दोनों मिल कर उनका दुःख दूर करने का उपाय सोचते थे। हम लोगों की चेष्टा से ज़ुल्म कुछ कम होने लगे। हम जब कभी ग़ुलामों का दुःख थोड़ा भी दूर करने में सफल हो जाते तो हमारे हर्ष की सीमा न रहती। इन सब बातों पर स्टब ने जाकर मेरे पिता से कहा कि उससे प्रबन्ध नहीं हो सकेगा, उसका इस्तीफ़ा मंज़ूर हो जाना चाहिए। मेरी माता पर पिता का ख़ूब अनुराग था, पर पिता जिस काम को आवश्यक समझते थे, उसमें कभी पीछे हटनेवाले न थे; अतएव उन्होंने सम्मानसूचक पर स्पष्ट शब्दों में मेरी माता से कहा कि घरेलू दास-दासियों पर उनका पूरा अधिकार है, पर खेत के ग़ुलामों के

सम्बन्ध में उनकी कोई बात न मानी जायगी। वह कहा करते कि मेरी माता ही क्या, स्वयं ईसा की माता मेरी भी आकर उनके काम में व्याघात डालें तो वह ऐसी ही खरी सुनावें।

"उसके बाद भी माता कभी कभी पिता से स्टव के अत्याचार की बातें कहा करती थीं। पिता अविचलित चित्त से माता की बात सुनते थे और अन्त में कह देते थे कि वह स्टव को नहीं छुड़ा सकते, उसका सा कार्य-दक्ष और बुद्धिमान् आदमी दूसरा नहीं मिलेगा। फिर स्टव इतना ज़्यादा सख़्त भी नहीं है, यों कभी कभी थोड़ी बहुत सख़्ती कर लेता है, उसके लिए उसे दोष नहीं दिया जा सकता; बिना शासन के काम बिगड़ जाता है; कहीं की शासनप्रणाली देख लो कोई भी निर्दोष न मिलेगी, आदर्श शासनप्रणाली इस संसार में है ही नहीं। जिन लोगों का हृदय मेरी माता की भाँति कोमल और ममतामय है, जिनकी प्रकृति महान् है, वे जब चारों ओर अत्याचार अविचार और दुःख-यन्त्रणायें देखते हैं और उसे निवारण नहीं कर सकते तो उन्हें कैसी मानसिक वेदना होती है, इसका हाल अन्तर्यामी भगवान् के सिवाय दूसरा नहीं जान सकता। वे जिसे अन्याय समझते हैं, दूसरा कोई उसे अन्याय नहीं कहता, वे जिसे भीषण निष्ठुरता समझते हैं, उसे दूसरे दस निष्ठुरता नहीं मानते। इसी से लाचार वे चुपचाप अपने मन का दुःख मन ही में मारे बैठे रहते हैं। इस पाप-सन्ताप-कलुषित पृथ्वी में उनका जीवन सदा दुःख का आधार बना रहता है। मेरी माता ने जब देखा कि वह दुःखी दासों का दुःख दूर नहीं कर सकतीं तो वह निरा हो गईं। लेकिन हम दोनों को भविष्य में निठुर न होने देने के ख़याल से हम दोनों भाइयों को अपने विचारों और भावों की शिक्षा देने लगीं। शिक्षा के सम्बन्ध में तुम चाहे जो

कुछ क्यों न कहो पर मैं समझता हूँ कि मनुष्य की जन्म से जैसी प्रकृति होती है वह सहज में नहीं बदलती । अलफ्रेड जन्म से ही हुकूमत-पसन्द और जात्यभिमानी था । उस पर माता के उपदेशों और अनुरोधों का कोई फल न होता था, मानों संस्कारवश अलफ्रेड की युक्तियाँ और तर्क दूसरा पक्ष समर्थन करते थे, पर मेरे हृदय में माता के वाक्य अच्छी तरह जमने लगे । उनका जीता-जागता विश्वास, उनके हृदय की गाढ़ी भक्ति, उनके प्रत्येक उपदेश के साथ साथ मेरे हृदय में जमती जाती थी । वह सदा मुझे समझाया करती थीं कि—“मनुष्य धनी हो वा दरिद्र, उसके धनी वा दरिद्र होने से उसकी आत्मा का महत्त्व नहीं नष्ट हो जाता ।” एक दिन आकाश के तारे दिखा कर मुझे कहने लगीं,—“बेटा अगस्टिन ! आकाश में जो लाखों तारे दिखाई दे रहे हैं किसी समय उनका अन्तर्धान हो जाना सम्भव है, उनका नाम निशान मिट जा सकता है, सारा संसार भी नष्ट हो जा सकता है, सूर्य पूर्व से पश्चिम में उदय हो सकता है, पर एक आत्मा का चाहे वह कितना ही दीन और दरिद्र क्यों न हो, नाश नहीं हो सकता । धनी, निर्धन, पण्डित, मूर्ख, सब अमर रहेंगे और मङ्गलमय ईश्वर की गोद में सदा सुख-शान्ति पावेंगे । प्रत्येक दीन दरिद्री के लिए उसकी भुजायें सदा पसरी रहती हैं ।”

“माता के कमरे में बहुतसी तसवीरें थीं । उनमें एक तसवीर थी, जिसमें ईसूमसीह के अन्धे को आँखें देने का दृश्य दिखाया गया था, उस तसवीर को दिखा कर माता कहा करतीं कि, “देखो अगस्टिन, परम धार्मिक ईशू की दीन पर कितनी दया है । वह अपने हाथों से बिचारे दुःखी अन्धे की सेवा-शुश्रूषा कर रहे हैं । अन्धे को आराम करने की चेष्टा कर रहे हैं ।” यदि मुझे अधिक दिन तक ऐसी स्नेह-मयी दयालु जननी के सङ्ग का सौभाग्य रहता तो मैं अवश्य एक

बहुत उच्च श्रेणी का मनुष्य होता, यदि युवावस्था तक भी मुझे माता का सङ्ग मिला होता तो मेरा जीवन ऐसा सुगठित हो जाता कि फिर मैं इन दास-दासियों के उद्धार के लिए अपने प्राणों की मोह-माया तज सकता था, देश-सुधार का व्रत धारण कर सकता था। पर मेरा दुर्भाग्य कि, मुझे तेरह वर्ष की अवस्था में ही उत्तर की ओर जाना पड़ा और जननी का साथ छोड़ना पड़ा। यही कारण है कि मैं आशानुरूप जीवन नहीं प्राप्त कर सका।"

सेन्टक्लेयर सिर पर हाथ धर कर ज़रा देर तक चुप रहा। वह फिर कहने लगा—

"इस संसार के कामों में क्या कहीं सत्यधर्म-भाव, न्यायानुगत-आचरण और निःस्वार्थ प्रेम दिखाई पड़ता है? लड़कपन में मैंने भूगोल में पढ़ा था कि सब जगह का जल-वायु भिन्न भिन्न प्रकार का होता है, इसी से भिन्न भिन्न स्थानों में भिन्न भिन्न प्रकार के पेड़ पल्लव उत्पन्न होते हैं। यही हाल मनुष्य-समाज के आचरण और मतामत का है। जिस देश का जैसा आचार-व्यवहार होता है, सामाजिक दशा के अनुसार वहाँ के लोगों का वैसा ही चरित्र बन जाता है। हमारे देश में दासत्व-प्रथा प्रचलित है। इसीसे यहाँ के लोग इस प्रथा में कोई बुराई या सख़्ती नहीं समझते। पर इँग्लैंड वालों के कानों में जब इस प्रथा की सख़्तियों की बात पहुँचती है तो उनकी छाती दहल जाती है। इस संसार में क्या शिक्षित और क्या गँवार, अधिक लोग ऐसे ही होते हैं कि जिनका निज का कोई स्वतन्त्र मत नहीं होता। वे प्रवाह के साथ बहते हैं। वे अवस्था के दास होते हैं, देश प्रचलित अवस्था उन्हें जिस ओर लेजाती है उसी ओर आँख कान बन्द करके बहे चले जाते हैं।

उनमें स्वाधीनतापूर्वक किसी विषय की भलाई बुराई की परख

करने की शक्ति नहीं होती। तुम्हारे पिता उत्तर-प्रदेश के दासत्व-प्रथा-विरोधी सम्प्रदाय के साथ रहते थे इससे दासत्व-प्रथा के विरोधी हो गये थे और मेरे पिता इस दासत्व-प्रथा-प्रचलित देश में रहते थे इससे उक्त प्रथा के पक्षपाती थे। पर इस देश और सङ्ग-भेद से उत्पन्न हुई भिन्नता के सिवाय उनमें और किसी प्रकार की भिन्नता नहीं थी। और बातों में, उनकी प्रकृति की पूरी समता थी। दोनों जात्यभिमानी और हुकूमत-पसन्द आदमी थे।"

मिस अफिलिया सेन्टक्लेयर की इस बात का प्रतिवाद करने जा रही थी। पर सेन्टक्लेयर ने उसे रोक कर कहा,

"जो तुम कहना चाहती हो उसका शब्द शब्द मैं जानता हूँ। मैं यह नहीं कहता कि वे बिल्कुल एक ही से थे। मैं मुक्त-कंठ से स्वीकार करता हूँ कि तुम्हारे और मेरे पिता के कामों में भिन्नता थी। पर इसमें कोई सन्देह नहीं कि स्वभाव दोनों का एकही सा था। इस संसार में दो तरह के आदमी होते हैं, एक वह जो वृथा अभिमान में फूल कर लोगों के साथ बात तक नहीं करते, मनुष्यों को मनुष्य नहीं गिनते, अपने को सब से बड़ा और दूसरों को अपने से तुच्छ समझते हैं, और दूसरे वे, जो इन सब दुर्गुणों के रहते हुए भी लोगों के सामने सदा यह साबित करने की फ़िक्र में लगे रहते हैं कि उनमें अहङ्कार की छूत भी नहीं है। इसीलिए वे छोटे बड़े सब का ऊपर से आदर-सत्कार करते हैं, खुले खाते आत्माभिमानियों की निन्दा करते हैं, पर हैं वे भी वैसे ही जात्यभिमानी जैसे पहले श्रेणी वाले। एक खुल्लमखुल्ला दूसरों से घृणा करके अपने हार्दिक अभिमान को तृप्त कर लेते हैं और दूसरी श्रेणीवाले वैसा अवसर न पाने के कारण अपने हार्दिक अभिमान को तृप्त करने के लिए दूसरे उपाय की शरण लेते हैं। इन दो श्रेणी के मनुष्यों में जितना भेद है उतना ही भेद

तुम्हारे और मेरे पिता के आचरणों में भी था। तुम्हारे पिता जात्यभिमान से घृणा दिखा कर अपने हृदय के महत्त्व का परिचय देते थे। और मेरे पिता सहस्रों मनुष्यों के मस्तक पर पाँव धर कर अपनी श्रेष्ठता साबित करते थे। दोनों यदि लुसियाना में ज़मीन्दार होते तो बिल्कुल ही एक प्रकृति के होते इसमें कोई सन्देह नहीं है।

अफ़िलिया—अगस्टिन ! तुम कैसे निन्दक आदमी हो !

अगस्टिन—मैं पिता और चाचा की निन्दा की नीयत से ये बातें नहीं कहता। लेकिन मेरी किसी पर झूठी भक्ति भी नहीं है। विशेष कर मुझे अपने जीवन की घटनाओं के विवरण में इसका उल्लेख करना पड़ा। पर अब फिर मैं अपनी रामकहानी चलाता हूँ :—

"पिता मरते समय सारी सम्पत्ति हम दोनों भाइयों के लिए छोड़ गये, और उसको आपस में बाँट लेने का भार हमहीं लोगों पर रहा। हम दोनों भाइयों ने बड़ी सफ़ाई से आपस में बाँट बखरा कर लिया। मैं कहूँगा कि आपस वालों के साथ उत्तम व्यवहार करने में अलफ्रेड सरीखा आदमी इस संसार में शायद ही दूसरा होगा। हम दोनों ने खेत का काम उठा लिया। थोड़े ही दिनों में अलफ्रेड खेत के काम में बड़ा पक्का अनुभवी और पारदर्शी मनुष्य बन गया।

"पर दो वर्षों के परिश्रम से मैंने समझ लिया कि मुझ से यह काम पार नहीं पड़ेगा। क्योंकि कम से कम सात सौ कुली हमारे खेतों में काम करते थे। इन्हें पीट पीट कर काम लेना, इनकी देख रेख के लिए शैतान से बढ़ कर परिदर्शक चुनकर रखना, इत्यादि सैकड़ों तरह के ऐसे काम थे, जिनसे मुझे बड़ी घृणा हुई। यह पैशाचिक व्यवहार मुझे असह्य होगया। मुझे अपनी जननी के वचनों का ध्यान आने लगा कि इन काले दीन दुःखी ग़ुलामों में भी हमारी ही सी आत्मा है, ये भी उसी मिट्टी के बने हैं जिसके हम। इन्हें सताने से उतना ही दुःख

मिलता है जितना हमें। यह सब बातें सोच कर तथा दास-दासियों की यन्त्रणा देख कर मेरा हृदय पिघल जाता था। मैं ईश्वर से प्रार्थना किया करता था कि इस पाप-ताप-पूर्ण संसार से मुझे शीघ्र उठा कर माता के पास पहुँचा दो। भला ऐसी मानसिक दशा में क्या कभी किसी का काम में जी लग सकता है? धीरे धीरे मेरे दिल में यह ख़याल बँधने लगा कि इन ग़ुलामों का सत्यानाश हमीं लोगों के हाथों से हो रहा है। ईश्वर ने इन्हें मनुष्य बनाया है, पर हमने इन्हें पशुओं से बदतर बना डाला है। वास्तव में ऐसी पराधीन अवस्था में रह कर मनुष्य क्या मनुष्यत्व को पहुँच सकता है? मनुष्य की स्वाधीन इच्छा में बाधा पड़ते ही वह मनुष्यत्व-विहीन हो जाता है। यह सब सोचते सोचते मैंने खेत का काम छोड़ने का सङ्कल्प कर लिया।"

अफिलिया—अगस्टिन! मेरा सदा से यह विश्वास था कि तुम सब लोग इस दासत्वप्रथा को बाइबल से सिद्ध समझते हो। तुम लोगों की दृष्टि में दासत्व-प्रथा ईश्वरीय विधान है।

अगस्टिन—हम लोगों का अभी यहाँ तक पतन नहीं हुआ है। अलफ्रेड, जो इतना सख़्त आदमी है, जो अबाध्य होने पर दासों की जान लेने तक में संकोच नहीं करता, जो दासों को किसी प्रकार के मानुषिक अधिकार हैं, इस बात को बिलकुल स्वीकार नहीं करता, वह भी इस दासत्व-प्रथा को तो बाइबल-अनुमोदित वा ईश्वरादिष्ट विधान नहीं समझता। इस विषय में उसका यह मत है कि संसार में ज़ब तक एक श्रेणी के मनुष्य आत्म-विहीन होकर पशुओं की भाँति काम न करें तब तक मनुष्यसमाज की उन्नति नहीं होती, संसार की सभ्यता आगे नहीं बढ़ती। उसका कथन है कि मनुष्यसमाज को अधिकतर उन्नत बनाने के लिए बलवान् और

बुद्धिमानों का निर्बल और मूर्खों पर प्रभुत्व करना आवश्यक है। अपने इस मत के समर्थन में वह कहता है कि दासत्व-प्रथा है कहाँ नहीं, सारे विश्व में तो छाई हुई है। अमेरिका के ज़मीन्दार अपने ग़ुलामों से जैसा सख़्त बर्त्ताव करते हैं, इग्लेंड के बड़े आदमी और महाजन लोग दूसरी तरह से अपने देश के मज़दूरों से ठीक वैसा ही व्यवहार करते हैं। लेकिन वह इसमें कोई बुराई नहीं समझता। वह कहता है कि मनुष्यसमाज की गठन-प्रणाली को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि जब तक एक श्रेणी के लोग अन्य श्रेणी के लोगों का दासत्व न करें तब तक किसी प्रकार सामाजिक उन्नति और सभ्यता का विकाश सम्भव नहीं है। उसके मतानुसार संसार की सभ्यता-वृद्धि के लिए निर्बल और मूर्खों को सदा बलवान् और बुद्धिमानों के अधीन रहना पड़ेगा; आजन्म उन्हें पशुवत् कार्य करना पड़ेगा और बलवान् तथा बुद्धिमानों के आराम के लिए अपने शरीर को कष्ट देना पड़ेगा। पर मैं अलफ्रेड की इन युक्तियों को सारवान् नहीं समझता। स्वार्थी मनुष्य ही अपने मन के समझाने के लिए ऐसी युक्तियों का सहारा लेते हैं।"

मिस अफिलिया—भला, इँगलेण्ड के मज़दूरों के साथ तुम्हारे यहाँ के ग़ुलामों की तुलना कैसे हो सकती है? तुम्हारे यहाँ की तरह न वह बेचे ही जाते हैं, न उनका सौदा ही किया जाता है, न वह अपने कुटुम्ब से अलग ही किये जाते हैं, न उन्हें कोई ऐब ही लगाये जाते हैं।

अगस्टिन—बहिन! हम कोड़ों की मार से ग़ुलामों को मारते हैं, पर इँगलेण्ड-वाले मज़दूरों का सारा धन चूस कर उन्हें भूखों मारते हैं। हम लोग ग़ुलामों के बाल-बच्चों को उनके माता-पिता से अलग करके बेचते हैं; पर इग्लेंड के मज़दूरों के बाल-बच्चे आहार बिना

भूखों मरते हैं। इसमें कौन बुरा और कौन अच्छा है, यह नहीं कहा जा सकता।

अफिलिया—पर तुम्हारी इस युक्ति से दासत्व-प्रथा का पाप नहीं दूर होता। दूसरी जगह कोई बुराई होती हो तो क्या उसका उल्लेख कर के तुम अपने यहां के अत्याचार का समर्थन कर सकते हो?

अगस्टिन—मैंने दासत्व-प्रथा के समर्थन के अभिप्राय से इस विश्व-व्यापी अत्याचार का उल्लेख नहीं किया है। मैंने तो उन्हीं युक्तियों को दोहराया है जिनके बल पर अलफ्रेड दासत्व-प्रथा का समर्थन करता है। मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि हमारे यहाँ की यह ग़ुलामी की चाल हद से ज़्यादा घृणित है। और यह भी सही है कि अन्य देशों में निम्न श्रेणी के मनुष्यों पर जो अत्याचार होते हैं उनसे हज़ार गुना भारी अत्याचार, और उत्पीड़न हमारे यहाँ के ग़ुलामों को सहना पड़ता है। हमारे देश के गोरे इन कालों को निरा पशु समझते हैं, क्रीत दासियों के गर्भ से सन्तान पैदा करके उन्हें भेड़ बकरियों की भाँति बेचते हैं। ऐसा हृदय कँपानेवाला व्यापार और कहीं नहीं दिखाई पड़ता। और देशों में निर्बल को सताने के लिए छल बल की दरकार होती है पर यहाँ कोई ज़रूरत नहीं, जैसे जी चाहे निर्बल को सताया जा सकता है, उनके प्राण तक ले लेने में भी कोई क़ानून किसी तरह की बाधा नहीं डालता।

अफिलिया—आज मैंने दासत्व-प्रथा के सम्बन्ध में तुम से बहुत सी नई बातें सुनीं। मैंने इस विषय में कभी इतना नहीं सोचा था।

अगस्टिन—मैंने इँग्लेंड के अनेक स्थानों पर घूम कर वहाँ के निम्न श्रेणी के लोगों की अवस्था का ख़ूब अनुभव किया है। उनकी दुर्दशा देख कर हृदय पिघल जाता है। अलफ्रेड सदैव बड़े अहङ्कार से कहा करता है कि उसके ग़ुलाम इँगलेण्ड के मज़दूरों से अधिक सुखी हैं।

अलफ़्रेड सचमुच अपने दास-दासियों को खाने पहनने का कष्ट नहीं देता। यों वह बहुत कठोर-प्रकृति भी नहीं है। कोई उसका कहा नहीं मानता तभी वह आग-बबूला होकर उसकी जान तक लेने में नहीं हिचकता। उसके कहे पर चलने से वह किसी को कभी नहीं पीटता। जब हम दोनों भाई साथ खेत का काम करते थे तो मैंने अलफ़्रेड से बड़ा अनुरोध किया कि इन दास-दासियों की शिक्षा के लिए एक पादरी रखदो। अलफ़्रेड का ख़याल था कि कुत्ते बिल्लियों के लिए पादरी रखने से जो नतीजा होता है वही इन ग़ुलामों के लिए पादरी रखने से होगा। फिर भी उसने मेरी प्रसन्नता के लिए ग़ुलामों की शिक्षा के लिए एक पादरी रख दिया। हर रविवार को पादरी साहब आ कर उन्हें धर्मशिक्षा दिया करते। लेकिन पराधीनता में पड़े पड़े इन ग़ुलामों की आत्माएं जड़ हो गई हैं—पशु-तुल्य हो गई हैं। सदुपदेश और सत्शिक्षा का इनके जड़ हृदय पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं होता। बहिन, तुम मुझे इन ग़ुलामों को शिक्षा देने के सम्बन्ध में अक्सर कहा करती हो। लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि जब तक इन्हें दासत्व की जञ्ज़ीर से मुक्त करके स्वाधीनता नहीं दी जायगी तब तक इन्हें शिक्षा देने का कोई नतीजा न होगा। इन में कुछ धर्म-भाव जीवित देख पड़ता है, पर उस धर्म-भाव में किसी प्रकार की वीरता और निर्भीकता का भाव नहीं है। यह भयभीत प्रकृति से उत्पन्न धर्म-भाव है।

अफिलिया—हां, तुमने खेतों के काम से कब सम्बन्ध छोड़ा सो तो कहा ही नहीं।

अगस्टिन—हां, दो बरस तक मैंने अलफ़्रेड के साथ खेत का काम किया। पर इतने दिनों के अनुभव से ही मुझे मालूम हो गया कि मेरे लिए यह काम बड़ा कठिन है; और अलफ़्रेड ने भी जान लिया

कि मुझ से कोई काम नहीं होता। मेरे सन्तोष के लिए अलफ़्रेड कुलियों को नाना प्रकार की सुविधायें भी देने लगा, पर मेरा मन किसी तरह राज़ी न हुआ। मुख्य बात यह थी कि मैं कुलियों के साथ जैसा बर्ताव करने को कहता था, वैसा करने से काम में पूरी हानि होने की सम्भावना थी। मैं कुलियों से पशुओं की भांति काम लेना बिलकुल न चाहता था। मनुष्य को पशु बना कर धन बटोरने का फ़िक्र करना मुझे अत्यन्त घृणित मालूम होने लगा। विशेष कर मैं स्वयं बड़ा आलसी हूँ, इससे स्वभावतः मुझे आलसी कुलियों पर भी तरस आ जाता था। आलस्य करने पर भी मैं उन्हें कभी मारने नहीं देना चाहता था। ऐसी दशा में मैंने विचारा तो यही उचित जान पड़ा कि मुझसे कुछ होना जाना तो है नहीं, केवल मेरे द्वारा अलफ़्रेड के कामों में और अड़चन पड़ती है, इससे उस काम को मैंने बिलकुल ही छोड़ दिया। अलफ़्रेड ने सब खेत ले लिये और मैंने मकान और नक़द सम्पत्ति पाई।

अफिलिया—इसके बाद फिर अपने दासों को तुमने क्यों नहीं मुक्त कर दिया?

अगस्टिन—मेरा हृदय इतना उन्नत न था। मैंने सोचा कि इन्हें रुपये कमाने ही की कल न बनाना ही बस है, घर रख कर इनका भरण-पोषण करने से कोई दोष न होगा। ख़ास कर इनमें से बहुतेरे हमारे पुराने नौकर हैं। मैं उन्हें बहुत चाहता था, और वे भी मुझे चाहते थे। और जिन नये लोगों को तुम देखती हो ये सब उन्हीं पुराने ग़ुलामों के वंशज हैं। ये हमारे घर से किसी तरह हटना नहीं चाहते। ये यहीं पैदा हुए, यहीं बड़े हुए, इससे मुझ पर इनकी बड़ी ममता हो गई है। बहिन! मेरे जीवन में कोई समय था जब मैं बड़े बड़े ख़याली पुलाव पकाता था, मैं सोचा करता था कि इस संसार

में मैं कुछ न कुछ करूँगा ज़रूर, योंही उठल्लू की तरह जीवन नहीं बिताऊँगा। मेरी देश-सुधारक बन कर जन्मभूमि से दासत्व-प्रथा का कलङ्क दूर करने की पूरी इच्छा थी। पर कोई इच्छा पूरी न हुई। जान पड़ता है युवावस्था में सब के मन में ऐसी ही तरङ्गें उठा करती हैं। पर जब संसार की बेड़ी में पाँव पड़ जाता है तो युवावस्था के सब मन्सूबे जहाँ के तहाँ रह जाते हैं। वह भी भेड़ों में मिल कर भेड़ हो जाते हैं—जैसे सब दिन काटते हैं वैसे ही वे भी काटने लगते हैं।

अफिलिया—फिर तुमने अपने जीवन के इस महान् उद्देश्य को छोड़ क्यों दिया? अभी क्या बिगड़ा है, अबसे तुम अपने उद्देश्य-साधन के लिए यत्न कर सकते हो।

अगस्टिन—(ठण्डी साँस लेकर) युवावस्था के आरम्भ में ही मेरी आशा-लता पर पाला पड़ गया। जैसे जीवन की मैं आशा करता था, उसे मैं न प्राप्त कर सका; इसी से किसी काम में मेरा उत्साह नहीं रह गया; अब तो घटना-स्रोत के साथ बह रहा हूँ—पूर्णरूप से अवस्था का दास बन रहा हूँ; संसार की वर्त्तमान अवस्थाओं और वर्त्तमान घटनाओं के पीछे खिँचा चला जारहा हूँ। बल्कि अलफ्रेड मुझसे सौगुना मज़े में है। वह अर्थ-संग्रह को ही जीवन का एक मात्र उद्देश्य समझता है और अपने उसी विश्वास के अनुसार काम भी कर रहा है। पर मेरा जीवन व्यर्थ ही जारहा है "धोबी का कुत्ता घर का न घाट का"।

अफिलिया—भैया, यों लक्ष्यहीन जीवन बिता कर क्या तुम शान्ति प्राप्त कर सकते हो?

अगस्टिन—शान्ति!—कहाँ? अपने इस पाप-जीवन से मुझे स्वयं घृणा है। अपने आचरण और व्यवहार से मैं स्वयं सन्तुष्ट नहीं हूँ। ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि शीघ्र ही मुझे यहाँ से उठा कर

जननी से मिला दे। इस दासत्व-प्रथा के सम्बन्ध में मैं कभी अपना मत नहीं प्रकट करता पर आज तुमने बड़े आग्रह से वारम्बार पूछा तब मुझे अपने मन की इतनी बातें तुमसे कहनी पड़ीं। इस देश में ऐसे बहुत से आदमी हैं, जो मेरी ही तरह इस दासत्व-प्रथा को हृदय से घृणा करते हैं। इस दासत्व-प्रथा के कारण सारे देश का सत्यानाश हुआ जारहा है। तरह तरह के पाप और व्यभिचार हमारे समाज में घुसते जाते हैं। नैतिक वायु दूषित होकर नाना प्रकार के मानसिक रोग उत्पन्न कर रही है। इस घृणित दासत्व-प्रथा के कारण केवल ग़ुलामों का ही बुरा नहीं हो रहा है, बल्कि जो लोग इन्हें अपने घर रखते हैं, इन पर प्रभुत्व करते हैं, उनकी इनसे भी अधिक हानि हो रही है। मानसिक रोग भी कई शारीरिक रोगों की भाँति संक्रामक (एक से दूसरे को लगजाने वाले) होते हैं। इन ग़ुलामों की गिरी हुई मानसिक अवस्था संक्रामक रोग की भाँति हमारे सभ्य-समाज का नाश कर रही है। यह बनी हुई बात है कि जहाँ कहीं अथवा जिस किसी जाति में किसी एक श्रेणी के लोग बिल्कुल गिरी हुई दशा में जीवन बिताते हैं, वहाँ अथवा उस जाति के सब लोगों की अन्तरात्मायें उन गिरी हुई दशावाले लोगों की छूत से धीरे धीरे कलुषित हो जाती हैं। समाज में एक श्रेणी के लोगों की अवनतावस्था अन्य अन्य श्रेणी के लोगों को भी अवनति की ओर आकर्षित करती है। पर हमारे यहाँ इन ग़ुलामों की अवनतावस्था सभ्य लोगों के जीवन को जितना कलुषित करती है, वैसी दशा और कहीं नहीं है। कारण यह कि हमें दिन रात इनके साथ बिताना पड़ता है, क्योंकि इन्हें आठ पहर चौंसठ घड़ी घर ही में रखना पड़ता है, पर इँग्लेंड में यह बात नहीं। वहाँ ग़रीब मज़दूरों के साथ रईस, ज़मींदार और महाजनों को रहना नहीं पड़ता। वहाँ काम लिया, दाम दिया और चलो। और यहाँ तो ये दिन रात घर

में बने रहते हैं, अतः इनके जीवन के बुरे उदाहरण, इनसे मालिकों का कठोर व्यवहार, हमारे बाल-बच्चे दिन रात देखते रहते हैं। इन बुरे उदाहरणों का फल उनके जीवन पर पड़े बिना नहीं रह सकता, इससे उनके चरित्र बिगड़ जाते हैं और मन कलुषित हो जाते हैं। यदि इवा जन्म से ही देव-बाला सरीखी निर्मल-प्रकृति न होती तो अवश्य इनके साथ से बरबाद हो जाती। हैज़े के रोगी के पास रहने से जैसे हैज़ा होने का डर रहता है वैसे ही इन्हें घर में रख कर सदैव अपने बुरा होने का डर है। हमारे यहाँ के राजकर्मचारी इन्हें शिक्षित नहीं बनाना चाहते। वे कहते हैं कि शिक्षा पाते ही इनकी आँखें खुल जायँगी और फिर ये तत्काल अपनी स्वाधीनता के लिए विद्रोही बन खड़े होंगे। पर इन अक्ल के अंधों को यह बात नहीं सूझती कि शिक्षा पाने से तो यह स्वाधीनता के लिए विद्रोही होंगे और दासत्व की बेड़ी काटने की चेष्टा करेंगे, पर बिना शिक्षा के कौन सी भलाई हो रही है। भीतर ही भीतर उससे भी अधिक नाश हुआ जारहा है, इसका उन्हें ख़याल ही नहीं है। सचमुच इन क़ानून-रचयिताओं और वकीलों से मनुष्य-समाज की जितनी हानि होरही है उतनी और किसी श्रेणी के लोगों से नहीं होती।

अफ़िलिया—तुम सोचते हो इस दासत्व-प्रथा का अन्तिम फल क्या होगा?

अगस्टिन—पता नहीं। पर एक बात निश्चित है कि इनकी आँखें खुल रही हैं और इनकी दृष्टि स्वाधीनता की ओर पड़ रही है। यह स्पष्ट दिखाई देरहा है कि थोड़े ही दिनों में बड़ा भारी सामाजिक-विप्लव होनेवाला है। संसार के सभी देशों में निम्न-श्रेणी के लोगों में नवजीवन का सञ्चार दिखाई दे रहा है। मेरी माता कभी कभी कहा करती थीं कि जगत् में शीघ्र ही स्वर्ग-राज्य होगा; उस समय ईसा

मुकुट धारण करके इस संसार में राज्य करेंगे; तब संसार में दुःख, कष्ट और यन्त्रणा का नाम भी न रहेगा। सारे संसार में शान्ति छा जायगी। मेरी माता ने मुझे जो प्रार्थना सिखलाई थी उसमें यह वाक्य भी था, "हे पिता संसार में आप का राज्य हो।" कभी कभी मैं इन बेचारे ग़ुलामों की आह और उत्तेजित भाव देख कर सोचता हूँ कि अब शीघ्र ही संसार में वह राज्य होने वाला है। विगत फ़्रेञ्च-विप्लव की आलोचना करने से अनायास मालूम हो जाता है कि संसार में बहुत थोड़े ही दिनों में समानाधिकार की दुन्दुभि बजनेवाली है।

अफ़िलिया ने अपना बुनने का काम छोड़ कर कहा, "मैं तो कभी कभी सोचती हूँ कि तुम इसी स्वर्ग-राज्य में विचरते हो।"

अगास्टिन—हाँ, मेरी बातों से तो यही जान पड़ेगा, पर कार्य देख कर मालूम होगा कि मैं घोर नरक में पड़ा हुआ हूँ।

ये बातें हो रही थीं कि भोजन की घण्टी हुई।

भोजन के समय मेरी ने प्रू की मृत्यु की घटना का उल्लेख कर के कहा—"दीदी, मैं समझती हूँ तुम हम सब लोगों को जंगली जानवर समझती हो!"

अफ़िलिया—प्रू के साथ जैसा व्यवहार हुआ है उसे मैं अवश्य पशु-तुल्य व्यवहार समझती हूँ। लेकिन मैं तुम सब लोगों को जंगली जानवर नहीं समझती।

मेरी—तुम्हें नहीं मालूम कि इस ग़ुलाम जाति में कोई कोई ऐसे पाजी होते हैं कि वह किसी तरह वश में नहीं होते। ऐसे पाजियों का मरना ही भला है। मुझे ऐसे लोगों से ज़रा भी सहानुभूति नहीं होती। मालिक के कहने पर चलें और भले बनने का यत्न करें तो इन लोगों को मार खा कर कभी न मरना पड़े।

इवा ने कहा, "माँ, वह बेचारी बड़ी दुःखित थी, इसी से वह अपना दुःख भूली रहने के लिए शराब पीती थी।"

मेरी—तू पड़ी रहने दे वह सब दुख की बातें। दास-दासियों को दुःख क्या! मैं तो दिन रात शारीरिक दुःख में पड़ी रहती हूँ, पर शराब नहीं पीती। मुझसे अधिक दुःख उसे क्या होगा? पर सच्ची बात तो यह है कि ग़ुलामों की जाति ही बड़ी पाजी होती है। कितने तो ऐसे होते हैं कि हज़ारों बेत मारो तब भी सीधे नहीं होते। मुझे याद है, मेरे पिता के यहाँ एक ग़ुलाम बड़ा ही आलसी था। काम से बहाना करके दलदल में पड़ा रहता था, चोरी करता था, तथा और भी कितने ही बुरे बुरे काम करता था। उसे बहुत मार पड़ती पर उसका चाल-चलन न सुधरा। अन्त में एक दिन कोड़ों की मार से उसकी चमड़ी उधड़ गई, फिर भी वह भटकते भटकते दलदल में चला गया और वहीं मर गया। अब कोई क्या करे, पिता तो दासों के साथ बड़ी दया का वर्त्ताव करते थे।

सेन्टक्लेयर—मैं ने एक बार एक बदमाश ग़ुलाम को सीधा किया था। कितने ही मालिक और खेतों के परिदर्शक उससे हार चुके थे।

मेरी—तुमने! अच्छा, बतलाओ, मैं भी सुन कर बड़ी ख़ुशी होऊँगी कि तुमने भी इस जन्म में कभी कोई ऐसा काम किया था।

सेन्टक्लेयर—अच्छा, मैंने जिसे वश में किया था, वह आदमी बड़ा बलवान् था। सूरत-शक्ल में दैत्य सा था। बड़ा स्वाधीनता-प्रिय और तेजस्वी था। किसी से नहीं दबता था। वह ठीक अफ़्रीकन सिंह सा था। लोग उसे सीपिओ कहते थे। बहुतों के हाथ के नीचे वह रहा पर किसी से सीधा न हुआ। अन्त में अलफ़्रेड ने उसे ख़रीदा, क्योंकि उसने सोचा कि वह इसे दुरुस्त कर लेगा। एक दिन सीपिओ खेत के ओवरसियर को लतिया कर जंगल में भाग गया। उसी समय मैं

अलफ्रेड से भेंट करने गया था, यह बात मेरे खेत का साझा छोड़ देने के बाद की है। अलफ्रेड इस घटना से बड़ा क्रुद्ध हो रहा था। मैंने उससे कहा कि उसके निज के दोष से ऐसा हुआ है; मैं उसे सहज ही वश में कर सकता हूँ। और यह तै हुआ कि वह पकड़ कर दुरुस्त करने के लिए मुझे सौंप दिया जायगा। उसे पकड़ने के लिए पाँच छः आदमी शिकारी कुत्ते और बन्दूकें साथ ले कर चले। हरिन के शिकार करने में मनुष्य जैसे उत्साही रहता है, वैसे ही मनुष्य का शिकार प्रचलित रहने पर मनुष्य के शिकार में भी मनुष्य उत्साही हो जाता है। मैं भी थोड़ा उत्साही हो गया था, पर, मेरा भाव उसे शिकारियों से बचा कर वश में करने ही का था। ख़ैर, हम लोगों के इस दल ने उसका पीछा किया। कुछ देर तक तो वह भागा और उछला, पर, थोड़ी ही देर में एक बेत के झोंपे में उलझ कर पकड़ा गया, तब उसने घूँसों से लड़ना आरम्भ किया, और मैं तुम से कहता हूँ कि वह बड़ी ही भयङ्करता से लड़ा। उसने केवल घूँसों से तीन कुत्तों को मार गिराया, पर अन्त में हम लोगों की गोली की चोट खा कर वह पृथ्वी पर मेरे पैरों के पास गिर पड़ा। उसका सारा शरीर लहू-लुहान हो गया। उसने आँख उठा कर मेरी ओर देखा। उसकी आँखों में वीरता की ज्योति और निराशा का अन्धकार दोनों दिखाई पड़ते थे। मैंने अलफ्रेड के आदमियों को उसे मारने से मना किया और मैं अलफ्रेड से उसे ख़रीद कर ले आया। यहाँ वह एक ही पक्ष में इतना सीधा हो गया कि मेरे लिए जान तक देने को मुस्तैद था।

मेरी—ऐसा तुमने उस पर कौन सा जादू फेंका था ?

सेन्टक्लेयर—मुझे उसके लिए कुछ अधिक नहीं करना पड़ा। मैं उसे साथ ला कर अपने निजी कमरे में ले गया और उसके लिए बहुत

अच्छे बिछौने कर दिये, उसकी मरहम-पट्टी की, और अपने हाथों से उसकी सेवा करता रहा । और आरोग्य होने पर मैंने उसे मुक्तिपत्र देकर कहा कि उसका जी चाहे जहाँ चला जाय ।

अफिलिया—क्या वह चला गया ?

सेन्टक्लेयर—नहीं । उस मूर्खराम ने उस काग़ज़ के दो टुकड़े करके फेंक दिये और मुझे छोड़ कर जाने से इनकार किया । मैंने ऐसा साहसी और विश्वासी नौकर कभी नहीं पाया । थोड़े दिनों बाद वह ईसाई हो गया, और बच्चों की तरह सीधा हो गया । यहाँ हैज़े का बड़ा प्रकोप हुआ । मैं भी इस रोग के पाले पड़ा । उस समय उसने मेरे लिए अपनी जान की बाज़ी लगा दी थी । क्योंकि मेरे बचने की आशा न देख कर घर के जितने लोग थे सब भाग गये, पर वह निर्भीक-चित्त से जी-जान से मेरी सेवा करता रहा । उसी के यत्न और परिश्रम से मैं जीता बच गया । पर अफसोस ! इसी सिल-सिले में कुछ ही दिनों बाद उसे भी हैज़ा हो गया और बहुत यत्न करने पर भी मृत्यु के हाथ से वह न बच सका । इसकी मृत्यु से मुझे जितना दुःख हुआ उतना कभी नहीं हुआ था ।

सेन्टक्लेयर जब यह बातें कह रहा था, उस समय इवा धीरे धीरे उसके पास आ कर खड़ी हो गई थी । वह बड़ी उत्सुकता से आँखें फाड़ कर अति एकाग्रता से पिता की ओर देख रही थी । सेन्टक्लेयर की बात समाप्त होते ही वह उससे लिपट कर रोने लगी; उसका सारा शरीर काँपने लगा ।

सेन्टक्लेयर ने कहा—"इवा, प्यारी बच्ची ! क्या हुआ ?" और फिर कहा "इवा को ये बातें नहीं सुनानी चाहिएं । वह बहुत ही कमज़ोर है ।"

तब इवा ने आत्मसंयम करके कहा—"नहीं बाबा, मैं कमज़ोर नहीं हूँ; पर ये बातें मेरे हृदय में बहुत चुभती हैं।"

सेन्टक्लेयर—इवा! तुम्हारे कहने का क्या तात्पर्य्य है?

इवा—बाबा, मैं तुम्हें समझा नहीं सकती। मेरे मन में बहुतेरे विचार चक्कर लगाया करते हैं। शायद किसी दिन मैं तुम से कहूँगी।

सेन्टक्लेयर ने कहा—"बेटी, चाहे जितना सोचती विचारती रहो—केवल रो कर अपने बाबा का जी मत दुखाना। लो यह देखो तुम्हारे लिए मैं कैसी बढ़िया सेब लाया हूँ।"

इवा पिता के हाथ से सेब ले कर मुस्कुराई; किन्तु उस समय भी उसके होंठ काँप रहे थे। सेन्टक्लेयर उसका हाथ पकड़ कर उसे बरामदे में ले गया और तरह तरह की चीज़ें दिखा कर उसे फुसलाने लगा। कुछ ही क्षणों के बाद दोनों की हँसी के शब्द सुनाई दिये, मानों दोनों खेल रहे हैं।

बड़ों की बातें कहते कहते हम अपने मित्र टाम की बात भूले जा रहे हैं, पर पाठक यदि हमारे साथ अस्तबल की कोठरी में चलें तो टाम की कुछ ख़बर जान सकते हैं। टाम की यह कोठरी बहुत ही साफ़ सुथरी है। उसमें एक चारपाई, एक कुर्सी और और एक छोटी टेबुल रक्खी है, उस पर एक बाइबल और एक भजनों की पुस्तक पड़ी है। टाम इसी कोठरी में बैठा हुआ किसी गहरी चिन्ता में मग्न है। सामने एक स्लेट पड़ी है। स्त्री, पुत्र और कन्या आदि के लिए टाम का मन बहुत व्याकुल हो रहा है। उनका समाचार जानने के लिए उसने इवा से एक लेटरपेपर माँग लिया है और पत्र-लेखन जैसे दुस्साध्य कार्य्य में प्रवृत्त हो रहा है! पूर्व मालिक के लड़के जार्ज से टाम ने थोड़ा थोड़ा लिखना सीखा था; लेकिन सब अक्षर अब उसे याद नहीं हैं, जो याद हैं, उनमें भी कौन कहाँ रखना चाहिए

यही समझ में नहीं आता। टाम बड़ी कठिनाइयों से स्लेट पर पत्र-रचना कर रहा था, इसी समय चिड़ियों की तरह फुदकती हुई इवा चुपके से आकर उसके पीछे खड़ी हो गई और कन्धे पर से झाँक कर बोली—"अहा, टाम काका! यह तुम क्या तमाशा कर रहे हो?"

टाम ने कहा—"मिस इवा! मैं अपनी बेचारी बुढ़िया स्त्री तथा अपने छोटे बच्चों को पत्र लिखने की कोशिश कर रहा हूँ। पर मैं देखता हूँ कि मुझसे नहीं होगा।"

इवा—टाम! मैं चाहती हूँ कि मैं तुम्हारी सहायता करती। मैंने कुछ लिखना सीखा था। पिछले साल मैं सब अक्षर बनाना जानती थी, पर जान पड़ता है अब मैं सब भूल गई हूँ।

इसके बाद दोनों पास बैठ कर एक मन से पत्र-रचना में लग गये। दोनों की विद्या की दौड़ बराबर ही है। बड़ी चिन्ता और बड़ी राय और सलाह के बाद एक एक शब्द रचा जाने लगा।

अन्त में इवा ने बड़े उत्साह से कहा—"टाम काका, ख़ूब अच्छी चिट्ठी बन गई। तुम्हारी स्त्री और लड़के इसे पा कर बड़े ख़ुश होंगे! ओह बड़ी शर्म की बात है कि तुम को इन लोगों को छोड़ कर आना पड़ा! मैं किसी दिन बाबा से कहूँगी कि वह तुम्हें उन लोगों के पास लौट जाने दें।"

टाम ने कहा—"मेरी मलकिन ने कहा है कि रुपया जुटते ही वह मुझे फिर ख़रीद लेंगी। प्रभु-पुत्र जार्ज ने कहा है कि वह स्वयं आकर मुझे ले जायँगे। यह देखो उन्होंने स्मरण-चिह्न की भाँति मुझे यह मुद्रा दी है।" फिर उसने कपड़ों के भीतर से मुद्रा बाहर निकाल कर दिखलाई।

इवा—हाँ हाँ, तब वह ज़रूर आ कर तुम्हें ले जायँगे। मुझे बड़ी ख़ुशी होती है।

"इसी से मैं पत्र लिख कर उन्हें अपना पता बतला देना चाहता हूँ और अपनी कुशल लिख देना चाहता हूँ। इससे मेरी क्लोई को बड़ा सन्तोष होगा, चलते समय वह मेरे लिए कितनी रोई थी!"

इतने ही में सेन्टक्लेयर ने दरवाज़े से आते हुए आवाज़ दी "टाम!"

टाम और इवा दोनों चौंक पड़े।

सेन्टक्लेयर ने अन्दर आ कर और स्लेट देख कर कहा—"क्या हो रहा है?"

इवा बोली—"यह टाम की चिट्ठी है। मैं लिखने में इसकी सहायता कर रही हूँ। क्या यह अच्छी नहीं हुई?

सेन्टक्लेयर—मैं तुम्हारा साहस नहीं भङ्ग करना चाहता। पर मेरी समझ में अच्छा होता कि टाम मुझ से अपनी चिट्ठी लिखा लेता। मैं घूम कर आऊँगा तो लिख दूँगा।"

इवा—उसकी यह बड़ी ज़रूरी चिट्ठी है, वह लिखावेगा। क्योंकि उसकी मलकिन ने उसे रुपया भेज कर फिर ख़रीद लेने का वादा किया है, वह अभी अभी मुझ से कहता था।

सेन्टक्लेयर ने मन ही मन सोचा कि, यह केवल फुसलाने की बात है। जो लोग ज़रा दयालु होते हैं, वह दासों को बेचने के समय ऐसी ही बातें कह कर झूठ मूठ उसे समझा देते हैं। पर प्रकट में उसने इस पर कुछ नहीं कहा—केवल टाम को घोड़ा कस लाने की आज्ञा दी।

संध्या को लौट कर सेन्टक्लेयर ने टाम की चिट्ठी लिख कर डाक में छुड़वा दी।

इधर मिस अफिलिया घर के कामों में लगी रहती थी। दीना से ले कर दास बच्चे तक सब कहते थे "मिस अफिलिया अजब

ढङ्ग की स्त्री है।" क्योंकि उसके नियमों के मारे वे सब तङ्ग आ रहे थे।

उच्च श्रेणी के दास-दासियों, अर्थात् एडाल्फ, रोज़ा और जेन की तो राय थी कि वह भली स्त्री ही नहीं है; क्योंकि उसके हावभाव बड़े आदमियों के से नहीं हैं। इस पर उन्हें बड़ा आश्चर्य होता था कि मिस अफिलिया सेन्टक्लेयर की चचेरी बहिन है। मेरी का कहना था कि अफिलिया दीदी दिन रात जिस तरह काम में लिपटी रहती हैं, उसे देखने से ही आदमी को थकावट आ जाती है।

तेईसवाँ परिच्छेद ।

टप्सी ।

एक दिन सवेरे जब मिस अफिलिया घर के काम काज में लगी हुई थी, उस समय सेन्टक्लेयर ने उसे सीढ़ी के पास खड़े होकर पुकारा ।

सेन्टक्लेयर—बहिन, नीचे आओ, मैं तुम्हें दिखलाने के लिए एक चीज़ लाया हूँ ।

मिस अफिलिया ने नीचे आकर पूछा—"कहो क्या दिखलाते हो ?" "यह देखो तुम्हारे लिए मैंने एक चीज़ ख़रीदी है ।" यह कह कर सेन्टक्लेयर ने एक आठ नौ बरस की हब्शी लड़की को खींच कर उसके सामने किया ।

वह लड़की बहुत ही काली थी । वह अपने चञ्चल नेत्रों से कमरे की हर चीज़ को बड़े आश्चर्य से देख रही थी । अत्याचार-निपीड़ित अन्तरस्थित नीचता और दुष्टता जिस प्रकार बाहरी गम्भीर भाव के आवरण से ढकी रहती है, ठीक वैसा ही बाहरी गम्भीर भाव और बाहरी विनय इसके मुख पर झलक रही थी । इसका कपड़ा बड़ा मैला कुचैला और फटा पुराना था । शरीर में भी यह दुबली पतली और महा-गन्दी थी । इसे देख कर मिस अफिलिया ने पूछा,

"अगस्टिन ! क्या सोच कर इसे ख़रीदा है ?"

सेन्टक्लेयर—यही कि तुम इसे सिखाओ पढ़ाओ और कर्तव्य का ज्ञान कराओ । इसका नाम टप्सी है । यह ख़ूब नाचती गाती है ।

इसके वाद सेन्टक्लेयर ने टप्सी को कहा,—"टप्सी, यह तेरी नई मलकिन हैं । मैं इनके हाथ में तुझे सौंपता हूँ । देखना इन्हें ख़ुश रखना ।"

टप्सी दुष्ट-बुद्धि-समाच्छादित गम्भीरता का भाव धारण करके बोली—"जो आज्ञा ।"

सेन्टक्लेयर ने फिर कहा—"टप्सी, तुझे भली मानस बनना पड़ेगा ।"

उसने फिर कहा—"जो आज्ञा ।"

मिस अफिलिया ने सेन्टक्लेयर से कहा—"अगस्टिन ! तुम्हारा घर आगे ही इन ग़ुलामों और उनके बच्चों से भरा पड़ा है । इनके मारे घर में पैर रखने की तो जगह नहीं है । सवेरे उठ कर देखती हूँ, कोई दरवाज़े के पास पड़ा है, तो दो एक टेबुल ही के नीचे से सिर निकाल रहे हैं । कोई सीढ़ी पर पड़ा हुआ है, कोई कहीं, कोई कहीं । फिर इतनों के होते हुए भी यह एक और नई आफ़त क्यों ख़रीद लाये ?"

अगस्टिन—मैंने तुम से कहा न ?—सिखाने पढ़ाने के लिए । तुम शिक्षा पर बहुत वक्तृता दिया करती हो इससे मैंने कहा कि इसे तुम्हें दूँगा कि तुम इसे ख़ूब सिखा पढ़ा कर अपने साँचे में ढालो और इसे कर्त्तव्य का ज्ञान कराओ ।

अफिलिया—मैं उसे नहीं चाहती, आगे ही जितने हैं कम नहीं हैं, उन्हीं के लिए कर सकूँ तो बहुत है ।

अगस्टिन—बस यही तुम्हारा क्रिश्चियनों का धर्म है ! एक सभा गढ़ ली और दो चार ग़रीब लड़कों को (जो दरिद्रता के मारे पढ़ नहीं सकते) पादरी बना कर धर्म-प्रचार करने विदेश में भेज दिया । इन बेचारों को जन्म-भर विदेश में गला फाड़ फाड़ कर मरना पड़ता है ।

तुम लोग स्वयं दो एक को सिखा पढ़ा कर ईसाई बनाओ तो जानूँ कि अलबत्ता तुम लोग धर्म पर श्रद्धा रखती हो। पर स्वयं तुमसे परिश्रम करना नहीं पार लगेगा, मुँह से चाहे जो कह लो। काम पड़े कहोगी ये मैले हैं, बड़े गंन्दे हैं, इनसे तो तबीयत घिनाती है।

अफिलिया—मेरा कहने का तात्पर्य यह नहीं था। इसे शिक्षा देने में अवश्य धर्म का काम है। पर तुम्हारे घर में तो यों ही बे-हिसाब दास-दासी भरे पड़े हैं, वही मेरा समय और दिमाग़ चाटने के लिए काफ़ी हैं। एक और नवीन लाये बिना कौनसी ही हानि हुई जाती थी।

सेन्टक्लेयर—ख़ैर बाबा, तुम रास्ते पर आई, यही बहुत है। सुनो, मैं इसे केवल तुमसे शिक्षा दिलाने के लिए ही नहीं लाया हूँ। पड़ोस में हमारे एक साहब हैं। वह मरद-बीबी दोनों के दोनों भारी शराबी हैं। यह लड़की उन्हीं के यहाँ थी। वह दिन रात इसे पीटते और यह चिल्लाया करती। इसकी चिल्लाहट के मारे घर के सामने से जाना दुशवार था। इसी से मैंने ख़रीद लिया। इसमें कुछ अक़्ल जान पड़ती है। चेष्टा करके देखो कि तुम इसे सिखा पढ़ा कर आदमी बना सकती हो कि नहीं। मैं एकदम इसे तुम्हारी सम्पत्ति कर दूँगा। तुम इसे अपना उत्तरी ईसाई धर्म सिखलाओ। मुझ में तो शिक्षा देने की योग्यता है नहीं। तुम कुछ कर सको तो यत्न करके देखो।

अफिलिया—अच्छा, मैं भरसक यत्न करूँगी।

जैसे कोई दुर्गन्धित और सड़ी हुई चीज़ को उठाने के लिए बेमन से आगे बढ़ता है, वैसे ही मिस अफिलिया उस बालिका के पास जाकर बोली—"ओफ़! कितनी गन्दी है! आधे बदन पर कपड़ा ही नहीं है।"

सेन्टक्लेयर—उसे नीचे ले जाकर नहला धुला कर साफ़ करलो और कपड़े पहना दो ।

मिस अफिलिया उसे नीचे रसोई-घर के पास ले गई ।

उसे देख कर दीना बोली—"मेरी तो अक्ल ही काम नहीं करती कि मालिक ने इसे काहे के लिए ख़रीदा है । मैं इसे अपने पास न रहने दूँगी ।"

जेन और रोज़ा ने बड़ा सा मुँह बना कर कहा—"हम इसे कभी अपने पास न आने देंगी । समझ में नहीं आता कि इस एक हवशिन को ख़रीदने की क्या दरकार पड़ी थी ।" रोज़ा अंग्रेज़-पुरुष और हवशी स्त्री के मेल से जन्मी थी, इससे वह देखने में काली न थी । पर दीना काली थी । इससे वह रोज़ा के बालिका को काली हब्शिन कहने पर अपने ऊपर रोज़ा का ताना समझ कर बहुत चिढ़ कर बोली, "चल चल, तू बड़ी गोरी है न ? दोग़ली कहीं की—न काली न गोरी, किसी में नहीं, न इस घाट न उस घाट । मैं काली ही रहूँगी, तुझ दोग़ली से तो कहीं अच्छी ।"

मिस अफिलिया ने देखा कि कोई उस बालिका को नहीं छूना चाहता, उसका बदन धोना और कपड़े पहिनाना तो दूर की बात है । तब ईसाई धर्म के अनुरोध से लाचार होकर वह स्वयं ही उसका शरीर मलने लगी । बड़ी अनिच्छा से जेन ने उसके इस कार्य में कुछ मदद की ।

चिर-अत्याचार-निर्पीड़ित, सर्वथा अयत्न और अनादर से प्रतिपालित हब्शी बच्चे का शरीर पहले पहल धोने से उससे कितनी गन्दगी निकलती है इसका वर्णन करना सुरुचि-सङ्गत न होगा । वास्तव में इस संसार में हज़ारों नर-नारियों को ऐसी ही गन्दगी में जन्म बिताना पड़ता है, जिसे सुन कर भी दूसरों को घिन आती है ।

पाठक और पाठिकाओं को आश्चर्य होता होगा कि मिस अफि-लिया ने भले घर में जन्म लेकर कैसे ऐसे मलिनता-पूर्ण शरीर को अपने हाथों से साफ़ किया होगा। हम पहले ही कह आये हैं कि मिस अफिलिया अत्यन्त कर्त्तव्य-परायणा स्त्री थी। कर्त्तव्य से वह कभी पीछे न हटती थी। कर्त्तव्य के अनुरोध पर वह मानाभिमान, इच्छा, घृणा सब को न्योछावर कर सकती थी। विशेष कर इस लड़की की पीठ और कन्धों पर कोड़ों की मार के दाग़ और घाव देख कर उसके मन में बड़ी दया उत्पन्न हो गई थी।

जेन बोली—"देखिए, इसकी पीठ पर कोड़ों की मार के कितने दाग़ हैं। सचमुच यह बड़ी आफ़त होगी। मैं हब्शी बच्चों से इसीलिए घृणा करती हूँ। मुझे आश्चर्य है कि मालिक ने इसे क्या जान कर ख़रीदा।"

मिस अफिलिया ने उसे अच्छी तरह नहला धुला कर साफ़ कपड़े पहनने को दिये। नये वेश में सुसज्जित होने पर अफिलिया ने कहा, "अब यह ज़रा ज़रा ईसाई सी जान पड़ती है।" फिर मन ही मन उसका शिक्षाक्रम निश्चय करके पूछने लगी।

"टप्सी, तू कै बरस की है?"

टप्सी ने दांत चियार कर कहा, "मालूम नहीं।"

अफिलिया—"तू अपनी उम्र का हाल नहीं जानती? तुझसे कभी किसी ने नहीं बतलाया? तेरी मा कहाँ है?"

टप्सी ने फिर खीस निकाल कर कहा—"मेरे मा कभी नहीं थी।"

अफिलिया—तेरे कभी मा नहीं थी? इसके क्या माने, तू कहाँ जन्मी थी?

टप्सी—मैं कभी नहीं जन्मी थी।

अफिलिया। तुझे मेरी बातों का उत्तर इस तरह नहीं देना

अपने ही सोने के कमरे में रखती थी और उसे खाट विछाने का काम दे रक्खा था। पर टप्सी से मिस अफिलिया को कितना कष्ट पहुँचता था इसे उसका जी ही जानता था। पर उसमें हद दर्जे की सहिष्णुता भी थी, इससे वह घबराई नहीं।

पहले दिन मिस अफिलिया ने टप्सी को विछौना करने का ढङ्ग और उसकी बारीकियाँ बतलाना आरम्भ किया।

मिस अफिलिया—टप्सी, मैं आज तुझे बतलाती हूँ कि मेरे विछौने कैसे विछाना। देख ले, अच्छी तरह सीख ले।

टप्सी—(बड़े उत्साह से) जो आज्ञा।

अफिलिया—टप्सी, इधर देख, यह चादर की सीधी परत है, यह उल्टी; तुझे याद रहेगा न ? उल्टी ओर से मत विछाना।

टप्सी—(बड़े ध्यान से) जो आज्ञा।

मिस अफिलिया जिस समय उसे विछौने विछाने का ढङ्ग सिखा रही थी उस समय टप्सी ने धीरे धीरे उसके फीते और दस्ताने चुरा कर अपनी आस्तीन में छिपा लिये। फिर अफिलिया ने कहा—"अच्छा, अब तो तुझे बतला दिया, विछा कर दिखला।"

टप्सी बड़ी चतुरता से विछौने करने लगी। यह देख कर अफिलिया बड़ी प्रसन्न हुई। लेकिन दुर्भाग्यवश अकस्मात् टप्सी की आस्तीन से फीता बाहर निकल पड़ा। अफिलिया यह देख कर बोल उठी—"अरी यह क्या ? तू बड़ी खोटी है, तू ने चोरी करना सीखा है ?" यह कह कर फीता उसके आस्तीन से निकाल लिया। लेकिन टप्सी इससे ज़रा भी न झेंपी। बड़ी गम्भीर बन कर खड़ी रही। और ज़रा देर बाद, मानो कोई बात ही न हो, इस ढङ्ग से बोली—"मेम साहब का फीता मेरी आस्तीन में कैसे आ गया ?"

अफिलिया—तू बड़ी दुष्ट है, मुझ से झूठ मत बोल, तू ने अवश्य फीता चुराया था।

टप्सी—मेम साहब, मैं निश्चय कहती हूँ मैंने इसके पहले कभी ऐसा फीता नहीं देखा था।

अफिलिया—टप्सी, तू नहीं जानती कि झूठ बोलना बड़ा पाप है।

टप्सी—मेम साहब, मैं कभी झूठ नहीं बोलती। मैं सच ही सच कहती हूँ।

अफिलिया—टप्सी, तू इस तरह झूठ बोलेगी तो मैं तुझे कोड़े लगाऊँगी।

टप्सी—दिन भर बेंत लगाने से भी कोई दूसरी बात नहीं हो सकेगी। मैंने कभी यह फीता नहीं देखा था। आपने बिछौने पर रक्खा था सो मेरी आस्तीन में चला गया।

टप्सी के यों बारम्बार झूठ बोलने से मिस अफिलिया को ऐसा ग़ुस्सा आया कि उसने कुर्सी से उठ कर उसे पकड़ कर झकझोरा और कहा—"फिर कभी मुझ से झूठ मत बोलना।" लड़की को झकझोरने से उसकी दूसरी आस्तीन से दस्ताने निकल पड़े।

मिस अफिलिया ने कहा—"अब बोल ! अब भी कहेगी कि तैंने दस्ताने नहीं चुराये ? फीता तो आप से आस्तीन में चला गया और ये दस्ताने किस ने तेरी आस्तीन में ठूँस दिये ? टप्सी ने दस्तानों की चोरी स्वीकार कर ली, पर फीते की चोरी से इनकार ही करती रही।

मिस अफिलिया—टप्सी, अगर तू सब स्वीकार कर ले तो इस बार तुझे चाबुक नहीं लगाऊँगी।"

इस पर टप्सी ने सब चीज़ों की चोरी स्वीकार कर ली और अपनी भूल के लिए बहुत पछतावा करने लगी।

मिस अफिलिया ने कहा—"मैं जानती हूँ तू ने घर की और भी चीज़ें चुराई होंगी। कल मैंने तुझे घर में बहुत बार इधर से उधर फिरते देखा था। अगर कोई चीज़ चुराई हो तो सही सही बतला दे, मैं तुझे नहीं मारूँगी।

टप्सी—मेम साहब, मैंने इवा के गले का हार चुराया है।

अफिलिया—अरी दुष्टा! और बोल!

टप्सी—मैंने रोज़ा के कान की बाली चुराई है।

अफिलिया—जा अभी इसी दम दोनों चीज़ें ला।

टप्सी—मेरे पास नहीं हैं, मैंने फूँक डालीं।

अफिलिया—फूँक डालीं! झूठ बोलती है। जा झटपट ला, नहीं कोड़े खायगी।

टप्सी ने बहुत रोते टसकते हुए कहा कि अब वह नहीं ला सकती। सब चीज़ें जल गईं।

मिस अफिलिया—तूने उन चीज़ों को जलाया क्यों?

टप्सी—मैं बड़ी पापिन हूँ, दुष्ट हूँ इसी से ऐसा किया।

ठीक इसी समय इवा अपना हार गले में पहने हुए वहाँ आई।

मिस अफिलिया ने कहा—"क्यों इवा, तुम ने अपना हार कहाँ पाया?"

इवा—पाया? खोया कहाँ था, यह तो मेरे गले ही में पड़ा है।

अफिलिया—कल तुम ने इसे पहन रक्खा था?

इवा—हाँ बूआ! यह सारी रात मेरे गले ही में पड़ा रहा। सोते समय मैं इसे उतार कर रखना भूल गई थी।

मिस अफिलिया बड़े चक्कर में पड़ी। इतने में रोज़ा अपनी बाली झुलाती हुई आ पहुँची। उसे देख कर मिस अफिलिया को और भी अचरज हुआ। उसने बड़ी निराशा से कहा—"हे राम, मैं इस लड़की

को लेकर क्या करूँगी । फिर बोली—"टप्सी, तू ने जो चीज़ें नहीं चुराईं उनके लिए झूठ मूठ कैसे कह दिया कि मैंने चुराई हैं ?"

टप्सी ने आँखें मलते हुए कहा—"मेम साहब, आपने मुझे सब स्वीकार करने को कहा, इसी से मैंने सब स्वीकार कर लिया ।"

अफिलिया—लेकिन मैंने तुझ से यह तो नहीं कहा था कि जो नहीं किया है उसे भी स्वीकार कर ले । यह भी वैसी ही बड़ी झूठ है जैसी दूसरी ।

टप्सी ने बड़ी सरलता और आश्चर्य से कहा—"यह बात है ?" इस पर रोज़ा ने टप्सी की ओर तीव्र दृष्टि से देख कर कहा—"भला यह सच कहेगी ? मैं इसकी मालिक होती तो मारे कोड़ों के इसका चमड़ा उधेड़ लेती ।"

इवा ने आज्ञा के ढङ्ग से कहा—"चुप रहो रोज़ा ! मैं तुम्हारी ऐसी बातें सुनना पसन्द नहीं करती ।"

रोज़ा ने कहा—"मिस इवा, तुम बड़ी दयालु हो । इन निगारों से व्यवहार करना नहीं जानती हो । ये जितने ही काटे जायँ उतने ही सीधे रहते हैं, मैं तुम से कहती हूँ ।"

इवा ने क्रुद्ध हो कर—"रोज़ा ! हुश ! ख़बरदार—ऐसी बात मुँह से फिर कभी न निकालना ।"

रोज़ा सकपका गई । और "मिस इवा ने अपने पिता की प्रकृति पाई है" कहती हुई बाहर चली गई ।

इवा खड़ी टप्सी को देखती रही ।

पाठक आप जो इन दो बालिकाओं को आमने सामने खड़ी देखते हैं ये पराधीनता और स्वाधीनता के दो जीते-जागते उदाहरण हैं । स्वाधीन बालिका में कितने सद्गुण हैं और पराधीन बालिका का कितना पतन हुआ है । स्वाधीनता का उत्तम और पराधीनता के बुरे फल

का कैसा अच्छा चित्र है । चिर-स्वाधीनता की गोद में पली हुई इवाञ्जेलिन हृदय की उमंग से उमड़े हुए सरल और स्नेह-भाव से टप्सी को उपदेश दे रही है । और टप्सी शुष्क-हृदय से बनावटी विनय दिखला कर सन्दिग्ध-चित्त से उसकी बातें सुन रही है । कितना भेद है ! इवा कहती है—"टप्सी, तू चोरी क्यों करती है ? तुझे जो चीज़ चाहिए मैं अपनी दे दूँगी, तू फिर चोरी मत करना ।"

यह पहला ही अवसर था कि टप्सी ने ऐसे मधुर और स्नेह-पूर्ण वचन सुने । इसके पहले कोई उससे इस मधुरता से नहीं बोला था । इस स्नेह-सम्भाषण से उसका हृदय पिघलने लगा, उसकी आँखों से दो एक बूँद आँसू भी गिर पड़े । पर तुरन्त ही प्राचीन कठोर भाव ने आकर फिर उसके हृदय पर अधिकार कर लिया । उसने दाँत दिखला कर इवा की बात हँसी में उड़ा दी । उसे इस बात का बिल्कुल विश्वास नहीं हुआ कि इवा उसे अपनी चीज़ें दे सकती है ।

पाठक ! टप्सी के मन में ऐसे भावों का उदय होना स्वाभाविक है । उसे इस जन्म में न किसी ने प्यार किया न दया दिखलाई । उसे कोड़ों की मार और ऊपर से तिरस्कार के सिवाय कभी और कुछ नसीब न हुआ । भला ऐसी दशा में पली हुई लड़की इवा की उन सरलता-पूर्ण बातों पर सहसा कैसे विश्वास ला सकती है ? उसे इवा की बातें मज़ाक सी जान पड़ीं ।

मिस अफिलिया ने टप्सी को शिक्षा देने के अनेक ढङ्ग सोचे, अनेक उपाय किये, पर कोई विधि कारगर न हुई । टप्सी की दुष्टता और पाजीपन किसी तरह कम न हुआ । हार कर एक दिन मिस अफिलिया ने सेन्टक्लेयर से कहा—"मेरी तो समझ में ही नहीं आता, बिना कोड़े लगाये मैं कैसे उसे राह पर लाऊँ ?"

सेन्टक्लेयर—तब तुम अपने दिल की सबूरी के लिए उसे कोड़े ही लगाओ । मैं तुम्हें उस पर पूरा अधिकार देता हूँ, तुम चाहे जो करो ।

अफिलिया—लड़के बिना मार के सीधे नहीं होते, पिटने से ही उनकी अक़्ल दुरुस्त होती है ।

सेन्टक्लेयर—हाँ हाँ, ज़रूर ज़रूर । जो तुम उचित समझा करो । पर, मैं तुम से एक बात कहता हूँ; मैंने देखा है, इस लड़की पर बड़े कोड़े पड़ते थे, लोहे की छड़ें गर्म करके यह पीटी जाती थी, लतियाई जाती थी, मुकियाई जाती थी, फिर भी इसका स्वभाव दुरुस्त न हुआ । इसी लिए इसे जब तक और ज़्यादा मार न पड़ेगी तब तक दो चार कोड़ों से इसका कुछ न होगा ।

अफिलिया—तब बोलो, क्या उपाय हो ?

सेन्टक्लेयर—तुम्हारा प्रश्न टेढ़ा है, मैं चाहता हूँ तुम आप ही इसका उत्तर सोच लो । मुझे ऐसे लोगों की दवा नहीं मालूम है कि जिन्हें कोड़े खाने पड़ते हैं और जो कोड़े खा कर भी नहीं सुधरते ।

अफिलिया—मेरी तो अक़्ल ही काम नहीं करती । मैंने कभी ऐसी लड़की नहीं देखी ।

सेन्टक्लेयर—क्यों । बस, तुम मुझ को ही दोष देने के लिए हो ? मुझे तो तुम बहुत लानत मलामत किया करती हो कि इन दास-दासियों को शिक्षा नहीं देते, इनका सत्यानाश कर रहे हो । अब क्या हो गया ? तुमसे एक छोटी मोटी आत्मा का भी उद्धार करते नहीं बनता ? मैं तुम से यह भी कहे देता हूँ कि कोड़ों की मार से इनका सुधार कभी नहीं हो सकता । कोड़ों की मार ठीक अफ़ीम की मात्रा की तरह हो जाती है । रोज़ रोज़ उसकी मात्रा बढ़ानी पड़ती है । अन्त में बढ़ते बढ़ते उसका ठिकाना नहीं रहता । अ॒ की मौत

क्यों हुई? रोज़ उसके मालिक को कोड़ों की संख्या बढ़ानी पड़ती थी। यों ही बढ़ाते बढ़ाते अन्त में कोड़ों ही से उसकी जान लेली। इसी से मैं अपने दास-दासियों को कोड़े नहीं लगाता। मेरे यहाँ के दास-दासी भी बिगड़े हुए हैं। पर कोड़ों की मार से वे नहीं सुधारे जा सकते। उन्हें मार कर और तो कुछ होता नहीं है, अपनी भी प्रकृति पशुओं की सी बना लेनी है।

अफिलिया—यह तुम्हारे यहाँ की दासत्व-प्रथा की बलिहारी है।

सेन्टक्लेयर—बेशक, मैं तो ख़ुद कहता हूँ। पर अब तो यह बुरे बन गये। अब इनके लिए क्या होना चाहिए?

अफिलिया—यह तो मैं नहीं कह सकती। लेकिन मैंने जब इनके सुधार को कर्त्तव्य मान लिया है तो मैं जी जान से टप्सी के सुधार का यत्न करूँगी। इसके बाद मिस अफिलिया टप्सी के सुधार के लिए बड़ा परिश्रम करने लगी। वह अपने कई घण्टे इस काम में लगा देती थी। किसी कष्ट की परवाह न करती थी। इस मेहनत का नतीजा यह हुआ कि टप्सी ने जल्दी ही किताब पढ़ना सीख लिया। पर और कामों में उसका नटखटपन ज्यों का त्यों रहा। सिलाई सीखने के समय कभी वह सुई तोड़ डालती, कभी तागे का गोला नोच डालती, कभी कूद कर पेड़ पर चढ़ जाती। ये सब उत्पात देख कर मिस अफिलिया ने सोचा कि इसके संग का कुछ बुरा प्रभाव इवा पर न पड़े। उसने सेन्टक्लेयर से इस की चर्चा की तो सेन्टक्लेयर ने इसे हँसी में उड़ा दिया और कहा कि इवा पर किसी की सङ्गत का बुरा प्रभाव नहीं पड़ सकता। कमल पर जैसे जल असर नहीं कर सकता वैसे ही इवा के हृदय को कोई बुराई स्पर्श नहीं कर सकती।

पहले घर के दास-दासी टप्सी से घृणा करते थे, वह उनके

पास नहीं फटकने पाती थी, पर अब, सब उससे चौंकते हैं । वह बड़ी धूर्त थी, जो कोई उसे ना.खुश करता उसका वह नाक में दम कर देती । चुपके से उसके कपड़े कैंची से या दाँत से काट देती, नहीं स्याही ही पोत देती, अथवा उसकी कोई चीज़ ही चुरा लेती। किसी से छिपा नहीं था कि यह सब टप्सी की करतूत है । पर कोई उससे बोल न सकता था, क्योंकि उसके विरुद्ध कोई प्रत्यक्ष प्रमाण न मिलता था । और बिना प्रत्यक्ष प्रमाण के सन्देह का लाभ मुलज़िम को उठाने देने की पक्ष-पातिनी मिस अफिलिया दण्ड न देती थी ।

यही नहीं कि टप्सी दास-दासियों को ही तङ्ग करती हो, वह अफिलिया को भी बहुत दिक करती थी । एक दिन मिस अफिलिया अपने कपड़ों की कुञ्जी बाहर भूल गई । वह कहीं टप्सी के हाथ लग गई । उसने सन्दूक़ से मिस अफिलिया का बहुत बढ़िया दुशाला निकाल कर उसे सिर पर लपेट लिया और कुर्सी पर बैठे कर आइने में मुँह देखने लगी । मिस अफिलिया ने कमरे में आ कर जब यह हाल देखा तो बड़े .गुस्से में भर कर बोली, "यह तू क्या कर रही है ?"

टप्सी—मैं कुछ नहीं जानती । मैं बड़ी दुष्ट हूँ ।

अफिलिया—मेरी समझ में नहीं आता कि तेरे साथ मैं किस तरह पेश आऊँ ?

टप्सी—मेम साहब, मुझे बेत मारिए, मेरे पहले मालिक भी बेत लगाते थे ।

अफिलिया—टप्सी, मैं तुझे बेत नहीं लगाना चाहती, तू अपनी इच्छा से ही सुधर सकती है । तू इस तरह की दुष्टता छोड़ क्यों नहीं देती ?

टप्सी—मेम साहब, मैंने सदा बेत खाये हैं, मैं समझती हूँ मेरे लिए यही ठीक दवा होगी ।

मिस अफिलिया कभी कभी टप्सी को बेंत लगाने लगी। बेंत लगाते समय वह बहुत चीखती और तरह तरह के स्वाँग रचती थी। पर छूटते ही दूसरे लड़कों से जाकर कहती कि "मिस अफिलिया का बेंत मारने का ढङ्ग अच्छा नहीं है। उनकी मार तो मुझे मालूम ही नहीं होती। मेरे पहले मालिक की मार से तो चमड़ा निकल आता था, वह ख़ूब बेंत मारना जानते थे।"

मिस अफिलिया प्रति रविवार को टप्सी को धर्म-शिक्षा दिया करती थी। टप्सी की स्मरण-शक्ति बड़ी अच्छी थी। वह अनायास सब कण्ठ कर लेती थी।

एक दिन सेन्टक्लेयर ने मिस अफिलिया से कहा, "बहन, इस धर्म-शिक्षा से क्या लाभ होता है?

अफिलिया—इससे बालकों को बड़ा लाभ होता है।

सेन्टक्लेयर—उनकी समझ में तो कुछ आता न होगा; फिर बिना समझे क्या उपकार होगा?

अफिलिया—अब नहीं समझेंगे, लेकिन बड़े होने पर समझेंगे तब विशेष उपकार होगा।

सेन्टक्लेयर—तुमने बचपन में मुझे ऐसी ही शिक्षा दी थी। पर अब बड़े होने पर भी मेरा कोई उपकार न हुआ।

अफिलिया—तुम बचपन में सीखने में बड़े अच्छे थे। मुझे तुमसे बड़ी आशा थी।

सेन्टक्लेयर—पर अब तो उन आशाओं पर पानी फिर गया होगा? अच्छा बहन! अब टप्सी के लिए आशा करो।

अब टप्सी अफिलिया के सामने खड़ी होकर अपना धर्म-पाठ सुनाने लगी:—

"हम लोगों के आदि-पुरुष आदम और हौआ, पूर्ण स्वाधीनता के

साथ उच्च-प्रदेश में विचरने लगे, फिर ईश्वर की आज्ञा का उल्लङ्घन करने के कारण वे वहाँ से गिरा दिये गये।"

इतना कह कर टप्सी कौतूहल-पूर्ण दृष्टि से देखने लगी।

अफिलिया ने कहा, "टप्सी क्या हुआ ?"

टप्सी—मेम साहब, क्या केन्टाकी में रहते थे ?

अफिलिया—इससे क्या मतलब ?

टप्सी—जी, क्या हम लोगों के आदि-पुरुष केन्टाकी से गिराये गये थे ? मेरे पहले मालिक कहा करते थे कि हम लोगों को केन्टाकी से ख़रीद कर लाये थे।

सेन्टक्लेयर ठठा कर हँसा और बोला, "बहन ! इन्हें जो पढ़ाओ उसका अर्थ जब तक न समझा दोगी तब तक यह योंही मनमाना अर्थ लगाते रहेंगे।

अफिलिया—(झुँझला कर) तुम रहने दो। तुम्हारे हँसने से पढ़ाने में बाधा पड़ती है।

"अच्छा माफ़ करो, अब मैं हँस कर बाधा नहीं डालूँगा।"

यह कह कर सेन्टक्लेयर अख़बार पढ़ने लगा। पर मिस अफिलिया की शिक्षा-प्रणाली ऐसी अनोखी थी कि सेन्टक्लेयर को बीच बीच में हँसी आये बिना न रहती थी और अफिलिया उसके हँसने पर बहुत चिढ़ती थी।

यों ही टप्सी अफिलिया से धर्म-शास्त्र और लिखना पढ़ना सीखने लगी, पर उसका पाजीपन ज़रा भी कम न हुआ। दूसरे सब दास-दासी उस पर बहुत चिढ़ते थे। पर कोई कभी उसे मारने आता तो वह दौड़ कर सेन्टक्लेयर की कुर्सी के नीचे छिप जाती थी। दयालु सेन्टक्लेयर किसी को उसे मारने न देता था।

चौबीसवाँ परिच्छेद ।

शेल्बी-परिवार ।

हम समझते हैं यदि यहाँ टाम के पूर्व घर केन्टाकी का थोड़ा सा वर्णन किया जाय तो पाठकों को अरुचिकर न होगा ।

गर्मी के दिन हैं । दोपहर की सख़्त गर्मी के कारण शेल्बी साहब अपने कमरे की सब खिड़कियाँ खोले हुए बैठे चुरुट पी रहे हैं । उनकी मेम पास बैठी हुई कोई बढ़िया सिलाई का काम कर रही हैं । मेम के बड़ी उत्सुकतापूर्वक शेल्बी साहब की ओर देखने से प्रकट हो रहा है, मानों वह अपने मन की कोई बात कहने के लिए मौक़ा ढूँढ़ रही हैं । थोड़ी देर बाद मेम ने कहा, "तुम्हें मालूम है क्लोई ने टाम की चिट्ठी पाई है ?"

शेल्बी—हाँ, पत्र आया है ? जान पड़ता है टाम को वहाँ दो एक बन्धु मिल गये हैं । वह कैसे हैं ?

मेम—मेरा अनुमान है कि उसे किसी बहुत अच्छे परिवार वालों ने ख़रीदा है । वे टाम से बड़ी मेहरबानी का बर्त्ताव करते हैं और उसे कुछ ज़्यादा करना धरना नहीं पड़ता ।

शेल्बी—यह बड़े आनन्द की बात है । मैं समझता हूँ अब टाम दक्षिण को छोड़ कर मुश्किल से यहाँ आना चाहेगा ।

मेम—रहने को कहते हो, वह यहाँ आने के लिए उकता रहा है । उसने पत्र में दरियाफ़्त किया है कि उसके ख़रीदने के लिए रुपये जुट गये या नहीं ।

शेल्बी—मुझे तो रुपये जुटने की आशा नहीं जान पड़ती । कर्ज़ बड़ी बुरी बला है, एक बार हो जाने के बाद फिर उसका चुकना पहाड़ हो जाता है । एक का लिया दूसरे को दिया, दूसरे से तीसरे को, इसी उलट-फेर में पड़ा हुआ हूँ ।

मेम—मैं समझती हूँ कर्ज़ चुकाने का एक उपाय हो सकता है । मान लो हम अपने सब घोड़े बेच डालें और खेत का कुछ अंश बेच दें ।

शेल्बी—एमिली ! यह बड़ी शर्म की बात होगी । केन्टाकी भर में तुम अच्छी स्त्री हो, लेकिन तुम काम-व्यवहार की बात नहीं समझ सकती हो; स्त्रियाँ कभी काम-व्यवहार की बात नहीं समझती हैं ।

मेम—ख़ैर, मैं समझूँ या न समझूँ, इससे कोई मतलब नहीं । तुम मुझे अपने ऋण की एक सूची दो तो मैं उपाय करके देखूँ कि कोई रास्ता निकल सकता है या नहीं ।

शेल्बी—एमिली ! मुझे नाहक तङ्ग मत करो । मैं कहता हूँ, तुम काम-व्यवहार की बावत कुछ नहीं जानती हो ।

मेम स्वामी की बात सुन कर फिर कुछ न बोली । ठण्ढी साँस लेकर चुप हो रही । पर शेल्बी साहब यदि अपनी स्त्री की सलाह पर चलते तो सहज में ऋण से उनका छुटकारा हो जाता । उनकी स्त्री बड़ी बुद्धिमती और मितव्ययी थी । उन्होंने काम-काज का भार स्त्री के हाथ में सौंप दिया होता तो कभी उनकी यह दुर्दशा न होती । पर वह तो सदा इसी फेर में पड़े रहते थे कि स्त्रियों को काम-काज की बात समझने की अक़्ल ही नहीं होती ।

मेम मन ही मन सोचने लगी कि मैंने टाम को फिर ख़रीद कर कर अपने यहाँ रखने का वचन दिया है, अब भला मैं कैसे उस

प्रतिज्ञा से भ्रष्ट होऊँ। कहा है—"अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति।" सज्जन अपनी अंगीकृत बात से कभी इन्कार नहीं करते। इन्हीं विचारों में गोते खाती हुई फिर स्वामी से बोली—"अनाथा दु:खिनी क्लोई स्वामी के शोक में बड़ा दु:ख पा रही है। उसका हृदय बैठा जाता है। देख कर मेरा जी भर आता है। क्या इन रुपयों के इकट्ठे करने की कोई सूरत नहीं हो सकती?

शेल्बी—तुम्हारी यह शोचनीय दशा देख कर मुझे दु:ख होता है, पर हम लोगों का इस प्रकार अंगीकार करना ही अन्याय हुआ है। टाम वहाँ एक दो वरस में कोई दूसरी स्त्री रख लेगा; तुम क्लोई से कह दो, अच्छा होगा, वह भी यहाँ किसी से अपना सम्बन्ध जोड़ ले।

मेम—मिस्टर शेल्बी! मैंने अपने यहाँ के नौकरों को शिक्षा दी है कि उनका भी विवाह-बन्धन उतना ही पवित्र है जितना हमारा। मैं क्लोई को ऐसी सलाह देने का विचार भी मन में नहीं ला सकती।

शेल्बी—प्यारी! तुमने इन्हें उपयुक्त शिक्षा नहीं दी। इनकी दशा के विरुद्ध इन पर नैतिक शिक्षा का बोझ लाद दिया।

मेम—मैंने इन्हें बाइबल की नीति सिखलाई है। उसमें मैंने कौन सी बुराई की?

शेल्बी—एमिली! मैं तुम्हारी धर्म-सम्बन्धी बातों में दखल नहीं देना चाहता; मेरा केवल इतना ही कहना है कि ये लोग उस शिक्षा के बिलकुल ही अनुपयुक्त हैं, इनकी दशा उस शिक्षा का भार वहन करने योग्य नहीं है।

मेम—वास्तव में इन लोगों की दशा बहुत ख़राब है। और यही कारण है कि मैं जी से इस दासत्व-प्रथा से घृणा करती हूँ। पर यह बात पक्की समझो कि मैं इन निराश्रितों को वचन देकर कदापि उसे भङ्ग न करूँगी। मैं गाना सिखाने का काम करके रुपये एकत्र करूँगी

और उससे टाम का पुनरुद्धार करके अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा करूँगी।

शेल्बी—एमिली, तुम अपने को इतना मत गिराओ। मैं तुम्हारे इस कार्य का कभी समर्थन नहीं कर सकता।

मेम—गिराने को कहते हो। और प्रतिज्ञा-भङ्ग करने से मेरा पतन नहीं होगा? उससे सौगुना पतन होगा।

शेल्बी—अपने वह स्वर्गीय नैतिक भाव रहने दो।

शेल्बी और उनकी स्त्री में ये बातें हो रही थीं कि इसी बीच में क्लोई ने आकर पुकारा—"मेम साहब, ज़रा इधर आइए तो।" मेम ने बाहर जाकर पूछा—"क्लोई, क्या कहती हो?" उसने मेम से कहा—"कहिए तो आज एक मुर्ग़ी का शोरबा बना दूँ।"

मेम ने कहा—"जो तुम्हारी इच्छा हो बना लो। कोई चीज़ होने से काम चल जायगा।"

क्लोई को जब मेम साहब से कोई बात कहनी होती तो वह अच्छे भोजन की बात उठा कर भूमिका बाँधती थी। आज भी उसने अपनी कोई बात कहने के लिए यह भूमिका बाँधी थी। अन्त में हँसते हुए बोली—"मेम साहब! आप रुपया इकट्ठा करने के लिए गाने का काम सिखाने का कष्ट क्यों उठावेंगी? इससे साहब की बदनामी होगी। कितने ही लोग हैं कि अपने दास-दासियों को किराये पर देकर रुपये वसूल करते हैं। इन इतने दास-दासियों को बैठे बिठाये मुफ़्त में भोजन देने से क्या फ़ायदा?

मेम—अच्छा क्लोई, किसे किराये पर देना चाहिए?

क्लोई—मैं और किसी को किराये पर देने को नहीं कहती। साम कहता था कि लूविल नगर में एक हलवाई है, वह मिठाई बनाने के काम के लिए कोई अच्छा आदमी खोजता है। मैं वहाँ जाऊँ तो

वह प्रति सप्ताह मुझे चार डालर देगा । यहाँ का काम सैली चला लेगी । वह सब तरह का भोजन बनाना सीख गई है ।

मेम—अपने बच्चों को छोड़ कर वहाँ जाओगी ?

क्लोई—दोनों लड़के तो बड़े हो गये हैं, अब वह काम-काज कर लेते हैं । छोटी बच्ची है उसे सैली पाल लेगी ।

मेम—लूविल दूर बहुत है ।

क्लोई—उसी के पास शायद कहीं मेरा बूढ़ा है ।

मेम—नहीं क्लोई ! टाम लूविल से बहुत दूर है—दो तीन सौ कोस परे है । पर, तुम लूविल जाना चाहो तो मुझे उसमें कोई आपत्ति नहीं है । तुम मिठाई वाले के यहाँ जो कुछ वेतन पाओ वह सब अपने स्वामी को फिर खरीदने के लिए जमा कर रखना, उसमें से मैं तुम्हें कौड़ी भी न खर्च करने दूँगी ।

क्लोई—मेम साहब ! मैं आपके गुणों का बखान नहीं कर सकती । मैंने यही सोचा है कि बूढ़े के छुड़ाने के लिए सब रुपया जमा करती जाऊँगी । सप्ताह पीछे चार डालर मिलेंगे । मेम साहब, साल भर में के सप्ताह होते हैं ?

मेम—बावन ।

क्लोई—तो साल भर में चार डालर सप्ताह के हिसाब से कितने डालर होंगे ?

मेम—दो सौ आठ डालर ।

क्लोई—तो के बरस काम करके बूढ़े के दामों भर के रुपये होंगे ?

मेम—चार पाँच बरस । पर चार पांच बरस तुझे नहीं काम करना पड़ेगा । कुछ रुपये मैं भी दे दूँगी ।

क्लोई—पर मेरे हाथ पांव रहते आप रुपयों के लिए गाना सिखाने का काम क्यों करेंगी ?

मेम—अच्छा तुम कब जाना चाहती हो ?

क्लोई—कल साम उधर जाने को है, मैं उसी के साथ जाना चाहती हूँ, आप अनुमति पत्र (Pass) लिख दे तो चली जाऊँ ।

मेम—मैं अभी लिखे देती हूँ ।

यह कह कर मेम अपने स्वामी के पास गई और उनकी अनुमति से पास लिख कर क्लोई को दे दिया । क्लोई बड़ी ख़ुशी से अपने कपड़े लत्ते बाँधने लगी । वहाँ शेल्वी साहब का पुत्र खड़ा था । उसे देख कर बोली ।"मास्टर जार्ज, मैं लूविल जाती हूँ । वहाँ चार डालर हफ़्ते के मिलेंगे । वे सब मैं तुम्हारी माता के पास बूढ़े को छुड़ा लाने के लिए अमानत की तरह जमा करती जाऊँगी ।"

जार्ज—तुम कब जाओगी ?

क्लोई—मैं कल साम के साथ जाऊँगी । मास्टर जार्ज, तुम अभी बूढ़े को जो जवाब दो उसमें ये सब बातें साफ़ साफ़ लिख देना ।

जार्ज—मैं अभी लिखने जाता हूँ । अपने नये घोड़े की ख़रीद की बात भी लिखूँगा ।

क्लोई—ज़रूर ज़रूर; उसमें क्या बोलना है । तुम चलो, मैं तुम्हारे भोजन के लिए कुछ लाती हूँ । अब न मालूम फिर कितने दिनों बाद तुम्हें अपने हाथ का बनाया भोजन कराना नसीब होगा ।

पच्चीसवाँ परिच्छेद।

पुष्प की कुम्हलाहट।

दिनों के बाद महीने, और महीनों के बाद वर्ष, योंही देखते देखते सेन्टक्लेयर के यहाँ टाम के दो वर्ष बीत गये। टाम ने अपने घर जो पत्र भेजा था कुछ ही दिनों बाद उसके उत्तर में मास्टर जार्ज का पत्र आ पहुँचा। इस पत्र को पा कर टाम को असीम आनन्द हुआ। क्लोई के टाम के उद्धार के निमित्त लूविल नौकरी करने जाने की बात, और टाम के दोनों पुत्र मोज़ और पिटे बड़े आनन्द में हैं और कुछ कुछ काम-काज करने लायक़ हो गये हैं, उसकी छोटी कन्या का भार सैली को सौंपा गया है, यह सब बातें इस पत्र में लिखी हुई थीं। जार्ज अपने नये घोड़े की ख़रीद की बात भी लिखना नहीं भूला था। यह पत्र पाने के बाद से, जब टाम को फ़ुर्सत मिलती तभी वह इसे सामने रख कर बड़ी चाह से पढ़ने की चेष्टा करता था। इवा और टाम में बड़ी देर तक इस बात पर आलोचना होती रही कि इस पत्र को शीशे के साथ एक सुन्दर चौखटे में जड़वा कर दरवाज़े पर लटकाना ठीक होगा या नहीं। अन्त में बहुत सोच-विचार के बाद यह राय क़ायम रही कि ऐसा करने से पत्र के दोनों अंश नहीं दिखाई पड़ेंगे, इससे चौखटे में जड़वाना ठीक नहीं।

टाम और इवा का सौहार्द दिन दिन बढ़ता गया। टाम इवा को बहुत प्यार करता था, जब बाज़ार में जाता उसके मनोरञ्जन के लिए जो कोई अच्छी वस्तु पाता ख़रीद लाता। इवा को वह कभी फूलों

का सुन्दर गुच्छा, कभी सुन्दर सुन्दर फूल चुन कर उसकी माला बना कर देता । इवा जब टाम के पास बैठ कर बाइबल पढ़ती और धर्म-चर्चा करती, उस समय वह उसे मनुष्य नहीं जान पड़ती थी, वह उसे देवकन्या समझ कर मन ही मन उसकी आराधना करता था ।

गर्मी की ऋतु आजाने के कारण सेन्टक्लेयर शहर छोड़ कर वहाँ से कुछ दूर झील के किनारे अपना जो उद्यान था वहीं सपरिवार जा कर रहने लगा । यहाँ नित्य संध्या के समय इवा और टाम बैठ कर बाइबल की चर्चा किया करते थे ।

एक दिन रविवार को संध्या समय वहीं टाम के पास बैठी हुई इवा बाइबल पढ़ रही थी । उसमें उसने पढ़ा "स्वर्ग-राज्य बहुत पास है ।" यह पढ़ कर उसने कहा—"टाम काका मैं जाऊँगी ।"

टाम—कहाँ जाओगी ?

इवा—स्वर्ग-राज्य में ।

टाम—स्वर्ग कहाँ है ?

इवा ने आकाश की ओर अँगुली उठा कर कहा—"यह स्वर्ग है, मैं जल्दी यहीं जाऊँगी ।"

यह सुन कर टाम के मन को बड़ा धक्का बैठा । आज कल इवा का शरीर सूखते देख कर टाम के हृदय में बड़ी चिन्ता रहा करती थी । विशेष इस बात से कि, मिस अफिलिया कहा करती है कि इवा को जिस ढङ्ग की खाँसी की बीमारी हो रही है, वह बीमारी किसी दवा से आराम नहीं होती; इस समय वह बात भी टाम के हृदय में जाग उठी । टाम इवा को देवकन्या समझता था । उसका ख़याल था कि उसके मुँह से कभी कोई असत्य वचन नहीं निकलते । इससे आज की बात सुन कर टाम के हृदय में किस भाव का उदय हुआ होगा, इसका पाठक सहज में अनुमान कर सकते हैं ।

क्या कभी किसी के घर इवा सरीखे बच्चे हुए हैं ? हाँ हुए हैं; पर उनका नाम समाधि के पत्थरों पर ही खुदा हुआ मिलता है; उनकी मधुर मुसक्यान, उनके स्वर्गीय-सुधावर्षी नयन, उनके असाधारण वाक्य और आचरण गुप्त धन की भाँति केवल उनके स्नेही व्याकुल-प्राण आत्मीयों ही के मन-मन्दिर में छिपे पड़े रहते हैं। कितने ही घरों की बात सुनी जाती है कि उस घर से एक बच्चा जाता रहा, उसका रंग-ढङ्ग ऐसा सुन्दर और सुहावना था कि उसके सामने और बालकों के रूप-गुण बिल्कुल तुच्छ हैं। जान पड़ता है मानों विधाता ने मनुष्यों के पापी मन को स्वर्ग की ओर खींचने के लिए वहाँ एक विशेष श्रेणी का देव-दूतों का दल रख छोड़ा है। वे थोड़े दिनों के लिए शिशु के रूप में जन्म ले कर मृत्यु-लोक में आते हैं, और चारों ओर के विपथगामी हृदयों को अपने स्नेह-बन्धन में इस तरह जकड़ लेते हैं कि जब वह अपने स्वदेश स्वर्ग को जाने लगें तो वे विपथगामी हृदय भी उन्हीं के साथ स्वर्ग को जा सकें। जिस शिशु के नेत्रों में यह आध्यात्मिक ज्योति देख पड़े, जब उसकी बातों में साधारण शिशुओं से कुछ विशेषता, मधुरता और विज्ञता का आभास पाओ तो जान लो कि वह इस जगत् में घर बनाने नहीं आया है, उसे बहुत दिनों तक इस पृथिवी पर रखने की आशा में मत रहो; क्योंकि उसके ललाट में विधना के अक्षर हैं, उसके नेत्रों में अमृत की किरणें हैं।

इसी से तो स्नेह-धन इवा ! घर की एक मात्र उज्ज्वल तारा ! तू भी चली जा रही है; पर वे जो तुझे प्राणों से भी अधिक प्यार करते हैं, इस बात को नहीं जानते।

मिस अफिलिया के अकस्मात् झील के किनारे आ कर इवा को पुकारने पर टाम और इवा की बातें बन्द हो गईं। मिस अफिलिया ने कहा—

"इवा—इवा! बच्ची, बड़ी ओस गिर रही है; यह बाहर बैठने का समय नहीं है।"

इवा और टाम दोनों झटपट अन्दर चले गये।

मिस अफिलिया बच्चों के पालन पोषण के काम में बड़ी पारदर्शी थी। बच्चों के रोग वह बहुत सहज में जान लेती थी। इवा की सूखी खांसी देख कर उसके मन में बड़ा खटका लग गया था। ऐसे रोग से उसने कितने ही बच्चों का जीवन नष्ट होते देखा था। वह अपनी आशङ्का कभी कभी सेन्टक्लेयर पर प्रकट करती थी, लेकिन वह इसकी बात पर ध्यान नहीं देता; उल्टा कभी कभी असन्तुष्ट होकर कहता, "बहिन, तुम्हारी ये सब आशङ्कायें मुझे नहीं भातीं; योंही ज़रा सी खटपट देख कर तुम लोग ज़मीन आसमान एक करने लगती हो। इवा बढ़ रही है, इसी से वह दुबली जान पड़ती है। सदा, लड़के जब बढ़ते हैं तो कमज़ोर हो ही जाते हैं।।"

पर अफिलिया ने फिर कहा, "अगस्टिन, उसकी खाँसी बहुत बुरी है। इस रोग से जेन, एलेन और सेन्डर तीन को तो मैंने मरते देखा है।"

सेन्टक्लेयर—तुम अपनी यह फालतू बातें रहने दो। उसे रात को बाहर न निकलने दिया करो और बहुत ज्यादा खेलने मत दिया करो, इसीसे वह अच्छी हो जायगी।

कहने को उसने अफिलिया को इस प्रकार कह कर टाल दिया पर उसके मन में खटका लग गया और बेचैनी छागई। उसने अपने मन में कहा, रोग न सही पर इसकी यह धर्म-सम्बन्धी गम्भीर विषयों की बातें करना बड़े आश्चर्य में डालता है और मन में शङ्का उत्पन्न कर देता है। वह सोचता कि यह कैसे आश्चर्य की बात है कि कहाँ इतनी बड़ी बालिका को अपने खेल-कूद में ही मस्त रहना चाहिए, और

कहाँ अभी से दूसरे का दुख देख कर इवा का हृदय विदीर्ण होने लगता है। जब इवा बड़े दुःख से संसार में छाये हुए अत्याचार और उत्पीड़न की बात सोच कर खेद प्रकट करती और रोने लगती उस समय सेन्टक्लेयर उसे ज़ोर से अपनी छाती से लिपटा लेता। मानों वह समझता कि मैं इसे अपने हृदय से कभी अलग न होने दूँगा, मानों हृदय में लिपटाये रहने से मौत इसे न ले जा सकेगी।

पर सेन्टक्लेयर! यह तुम्हारी बड़ी भूल है! तुम ज़रा भी नहीं समझते! पाप और अत्याचारों की खान यह संसार,—द्वेष, हिंसा और स्वार्थपरता आदि का घर,—यह विवाद और कलह परिपूर्ण कार्य-क्षेत्र,—जहाँ मनुष्य मनुष्य के साथ जंगली भेड़िये का सा वर्त्ताव करता है,—जहाँ निस्स्वार्थ प्रेम की गन्ध और अकृत्रिम प्रणय की झलक शायद ही कभी देखी जाती हो, ऐसा स्थान इवा की सी कोमल-हृदया, पर-दुःख-कातरा देवबाला के लिए नरक-तुल्य है; यह स्थान इवा के रहने योग्य कदापि नहीं है। तुम भूले हुए हो, क्या ज़ोर से लिपटा लेने से तुम उसे इस संसार में रख सकोगे? परम पिता जगदीश्वर की भुजायें उसके लिए खुली हुई हैं, वही उसके लिए उपयुक्त स्थान है। तुम उसे कदापि यहाँ न रख सकोगे। कदापि नहीं।

इवा ने एक दिन एकाएक अपनी माँ से कहा, "हम लोग अपने ग़ुलामों को पढ़ना क्यों नहीं सिखाते। ?"

मेरी—क्या सवाल है! कोई उन्हें पढ़ना नहीं सिखाता।

इवा—क्यों नहीं सिखाते?

मेरी—इसलिए कि उससे उनका कोई मतलब न सिद्ध होगा। वे संसार में केवल काम करने के लिए बनाये गये हैं उस काम में पढ़ने से उन्हें किसी तरह की मदद न मिलेगी।

इवा—माँ, मेरी समझ में बाइबल हर एक व्यक्ति को स्वयं ही

पढ़नी आनी चाहिए। वे पढ़ लेंगे तो बाइबल तथा और आगे आप ही पढ़ते रहेंगे।

मेरी—इवा तू बड़ी अनोखी लड़की है।

इवा—बूआ ने टप्सी को बाइबल पढ़ना सिखलाया है।

मेरी—हाँ, पर तू देखती है टप्सी क्या बाइबल पढ़ कर बड़ी सुधर गई? उसकी सी तो पाजी लड़की ही मैंने नहीं देखी।

इवा—मामी का बाइबल से बड़ा प्रेम है, वह चाहती है कि वह उसे पढ़ लेती। और जब मैं उसे पढ़ कर नहीं सुना सकूँगी तब वह क्या करेगी?

इवा जिस समय ये बातें कर रही थी उस समय उसकी माँ एक सन्दूक की चीज़ें ठीक ठाक कर रही थी। इवा की बातें समाप्त होने पर उसकी माँ ने कहा,

"इवा, ये सब बातें जाने दे; तुझे जन्म भर इन नौकरों के सामने बाइबल पढ़ते ही न बीतेगा। बड़ी होने पर सज धज कर कर समाज में जाना आना पड़ेगा। तब फिर तुझे बाइबल पढ़ने का समय न रहेगा। यह देख, यह हीरे का हार मैं तुझे बाहर जाने आने लगने पर दूँगी। मैं पहले पहल जिस दिन यह हार पहिन कर न्यौते में गई थी, उस दिन मैं तुझ से कहती हूँ इवा, कितनों की आँखें मैंने चकाचौंध कर दी थीं।"

इवा ने उस हार को हाथ में लेकर अपनी मा से पूछा, "मा, क्या हार बड़ा क़ीमती है?"

मेरी—निश्चय ही बड़ा क़ीमती है; पिता ने यह फ़्रांस से मँगवाया था। एक साधारण गृहस्थ की सारी सम्पत्ति भी इसके सामने कुछ नहीं है।

इवा—मैं इसे इस शर्त पर लेना चाहती हूँ कि जो मेरे जी में आवेगा सो इसका करूँगी।

मेरी—तू इसका क्या करना चाहती है ?

इवा—मैं इसे बेचूँगी और स्वतन्त्र देश में एक ज़मीन ख़रीदूँगी और फिर वहाँ अपने सब ग़ुलामों को ले जाकर मास्टर रख कर उन्हें पढ़ना लिखना सिखाऊँगी।"

इवा की बातें उसकी मा की हँसी के मारे बीच में ही रह गईं।

"बोर्डिंग स्थापित करूँगी?" "उन्हें तू पिआनों बजाना और मखमल पर बेल बूटे काढ़ना नहीं सिखलावेगी?"

इवा ने बड़ी दृढ़ता से कहा, "मैं उन्हें बाइबल पढ़ना, पत्र लिखना, और पत्र पढ़ना सिखलाऊँगी। माँ, मैं जानती हूँ वह अपने पत्र अपने हाथ से लिख नहीं सकते, अपने पत्र आप पढ़ नहीं सकते, इससे उनके मन में बड़ा कष्ट होता है। टाम को, मामी को, बहुतों को इससे दुःख होता है।

मेरी—चुप रह चुप रह, तू निरी लड़की ही है! तू इन सब बातों के विषय में कुछ जानती बूझती नहीं है—तेरी बातों से मेरा सिर दुखने लगता है।

इवा चुप हो रही। मेरी की आदत थी कि जब कोई उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ बातें करने लगता तो उसका सिर दुखने लगता था।

छब्बीसवाँ परिच्छेद ।

हेनरिक ।

जब अगस्टिन अपने झीलवाले मकान में था उस समय सेन्ट-क्लेयर का भाई अलफ्रेड अपने बारह वर्ष की उम्र के बड़े बेटे हेनरिक को साथ ले कर वहाँ आया और दो तीन दिन रहा ।

यह बड़े आश्चर्य की बात थी कि इन दोनों यमज भ्राताओं में परस्पर किसी तरह की समानता,—न रङ्ग-रूप में न विचार ही में—न होने पर भी परस्पर बड़ा स्नेह था । प्रकट में ये दोनों आपस में परस्पर एक दूसरे के विचारों का मज़ाक उड़ाया करते थे, पर इनमें आन्तरिक प्रेम कम न होता था । दोनों हाथ मिला कर बाग़ में टहलते और ख़ूब बातें किया करते थे ।

अलफ्रेड का बड़ा पुत्र हेनरी बड़ा सभ्य और तेजस्वी बालक जान पड़ता था । कोमल-हृदया इवाञ्जेलिन को देखते ही उसका उस पर बड़ा स्नेह और प्रेम हो गया ।

इवा के लिए एक सफ़ेद रङ्ग का बड़ा अच्छा टट्टू था । सन्ध्या के समय इवा को घुमाने के लिए टाम ने वह टट्टू लाकर बराम्दे के पास खड़ा किया । इधर डडो नामक एक तेरह वर्ष का बालक हेन-रिक के लिए एक काला अरबी टट्टू लेकर आया ।

हेनरिक ने घोड़ा देख कर डडो पर लाल लाल आँखें निकाल कर डाँटते हुए कहा, "क्यों बे ससुरे हरामज़ादे, यह क्या ? आज सबेरे तैंने मेरे घोड़े को मला नहीं ।"

डंडा ने बड़े विनीत भाव से उत्तर दिया—"सरकार, वह आपही लोट कर धूल में हो गया।"

हेनरिक ने चाबुक उठा कर बड़े क्रोध से कहा—"चुप रह सूअर। ज़बान निकालता है। मारूँगा चाबुक, साले की चमड़ी उधेड़ लूँगा।" इतना कह कर हेनरिक ने तुरन्त डंडा के मुँह पर पाँच सात चाबुक जड़ दिये।

वह "सरकार" "सरकार" कह कर चिल्लाने लगा।

पर हेनरिक ने एक न सुनी और बराबर कोड़े लगाये गया। फिर एक हाथ पकड़ कर ऐसी ठोकर मारी कि वह धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ा। तब उसे छोड़ कर बोला—

"सूअर! अब तू मेरे सामने मुँह खोलने का मज़ा पा गया? घोड़ा ले जा, उसे ठीक से साफ़ करके ला। मैं तेरी ख़ूब ख़बर लूँगा।"

टाम ने कहा—हुज़ूर वह आपसे कहना चाहता था कि सबेरे मैंने घोड़ा मला था, इस वक्त रास्ते में लाते समय वह जोश में था इससे आप ही ज़मीन पर लोट कर धूल में हो गया। मैंने सबेरे उसे घोड़ा साफ़ करते देखा था।"

हेनरिक—तुम चुप रहो, तुम से कौन पूछता है। फ़ुज़ूल अपनी बक बक लगाये हो।

यह कह कर हेनरिक इवा के पास जाकर बोला—"प्यारी बहिन, मुझे बड़ा खेद है कि उस पाजी के कारण तुम्हें भी इंतज़ार करना पड़ा। आओ, जब तक वह आवे तब तक यहाँ बैठ जायँ, यह क्या बहिन? तुम इतनी उदास क्यों हो।"

इवा—तुमने बिचारे डंडा के साथ यह बड़ा ज़ुल्म किया! तुम—तुम बड़े बेरहम और पापी हो।

हेनरिक ने बड़े आश्चर्य से कहा—"बेरहम-पापी! तुम क्या कह रही हो प्यारी इवा!"

इवा—जब तुम ऐसी बेरहमी का काम करते हो तो मैं नहीं चाहती कि तुम मुझे प्यारी इवा कह कर पुकारो।

हेनरिक—प्यारी बहिन! तुम डडो को नहीं जानती हो। इसके बिना वह सीधा नहीं रह सकता। वह बड़ा झूठा और बहानेबाज़ है। इन लोगों को दुरुस्त रखने का यही ढङ्ग है—इन सालों को मुँह नहीं खोलने देना चाहिए। बाबा इसी ढङ्ग से इन पर शासन करते हैं।

इवा—पर टाम काका ने तो कहा कि यह उसका क़सूर नहीं था, आकस्मिक बात थी। टाम काका कभी झूठ नहीं बोलता।

हेनरिक—तो वह बुड्ढा हब्शियों में एक असाधारण आदमी है। डडो तो बेहिसाब झूठ बोलता है।

इवा—मार के डर से वह झूठ बोलना सीखता है।

हेनरिक—क्यों इवा, तुम तो डडो पर बड़ी कृपा दिखाती हो, इससे मेरा चित्त बड़ा उद्विग्न होता है।

इवा—पर तुम उसे बिना क़सूर मारते हो।

हेनरिक—अच्छा तुम्हें दुःख होता है तो मैं आगे से उसे तुम्हारे सामने नहीं पीटूँगा। मुझे नहीं मालूम था कि काले ग़ुलाम को भी मारते देख कर तुम्हें कष्ट होता है।

इवा को सन्तोष नहीं हुआ पर उसने देखा कि अपने विचार हेनरिक को समझाने का यत्न करना व्यर्थ है, कोई फल नहीं होगा।

डडो घोड़ा लेकर शीघ्र ही आ पहुँचा।

हेनरिक ने बड़ी कृपा की दृष्टि से कहा—"डडो इस बार तू ख़ूब जल्दी घोड़ा ले आया। इधर आ, मिस इवा का घोड़ा पकड़ ले, मैं उसे सवार करा दूँ।"

हेनरिक बराबर वालों से बड़ी भलमन्सी और शिष्टाचार से वर्तता था।

इवा ने घोड़े पर चढ़ते समय देखा कि बालक शारीरिक पीड़ा से रो रहा है। इवा ने डडो को घोड़ा पकड़ने के लिए धन्यवाद दिया और कहा, "यह बड़ा अच्छा लड़का है।" पर हेनरिक से कुछ न बोली।

यह मार का दृश्य बाग़ में घूमते हुए सेन्टक्लेयर और अलफ्रेड ने भी देखा। यह देख कर अगस्टिन का चेहरा लाल हो गया। उसने अलफ्रेड से बड़े व्यङ्ग से कहा—"अलफ्रेड! मैं समझता हूँ यही वह शिक्षा है जिसे हम लोग साधारण—तन्त्र-प्रणाली की शिक्षा कहा करते हैं?"

अलफ्रेड—जब हेनरिक को जोश आ जाता है तो वह शैतान हो जाता है।

अगस्टिन—मेरे ख़याल में तुम समझ रहे हो कि वह यह बहुत अच्छा काम सीख रहा है।

अलफ्रेड—मेरे किये यह सब निवारण नहीं हो सकता। मैं या मेरी स्त्री दोनों इस विषय में चुप रहते हैं। पर यह डडो छोकरा भी बड़ा बदमाश है। चाहे जितना मारो सीधा नहीं होता।

अगस्टिन—और मैं समझता हूँ हेनरिक को साधारण—तन्त्र-प्रणाली की शिक्षा देने का यही ढङ्ग है। क्योंकि उसका पहला सूत्र है—"सब मनुष्य जन्म से स्वतन्त्र और समान हैं।"

अलफ्रेड—यह फ़ज़ूल की बातें हैं। फ्रान्स में भी एक बार ऐसा ही आन्दोलन उठा था। समानाधिकार की बात केवल शिक्षित और उच्च श्रेणी के लोगों में ही चल सकती है, इन नीचों में नहीं।

अगस्टिन—पर आँखें खुलने पर वे सब बदला चुका लेते हैं। फ्रेन्च-विप्लव का मूल कारण जानते हो? हाँ, इन निम्न-श्रेणी के

लोगों की कभी आँखें न खुलने पावें तो बात दूसरी है। अलफ्रेड ने बड़े ज़ोरों से पृथिवी पर पैर मार कर मानों वह निम्न-श्रेणी के लोगों के सिर पर ही पैर मार रहा हो, कहा—"ज़रूर इन लोगों को गिरा कर रखना होगा।"

अगस्टिन—जब ये अत्याचार-पीड़ित निम्न श्रेणी के लोग उठ खड़े होंगे तो देश को मिट्टी में मिला देंगे। रईसों और बड़े आदमियों का प्रभुत्व जड़ से खो देंगे। तुम्हें क्या सेन्ट-डोमिंगो की हक़ीकत मालूम नहीं है कि क्या हुआ था?

अलफ्रेड—आह, कहाँ की बात! हम लोग यहाँ सब ठीक कर लेंगे। इन "जन-साधारण की शिक्षा" "मजदूरों की शिक्षा" के जगह जगह खुराफ़ात होने वाले हल्लों पर ध्यान नहीं देने से फिर यहाँ विप्लव की कोई सम्भावना न रहेगी। इन सब को शिक्षा न देने से फिर कोई अड़चन नहीं होने की।

अगस्टिन—अब वे दिन गये। अब शिक्षा का प्रवाह किसी के रोके नहीं रुक सकता। तुम लोगों को उचित है कि उन्हें शिक्षा देकर उनका उच्च-नैतिक जीवन बना दो।

अलफ्रेड—रहने दो अपना यह उच्च-नैतिक जीवन। ये नीच लोग सदा इसी अवस्था में रहेंगे।

अगस्टिन—यह ठीक है, पर इन्हें अच्छी शिक्षा नहीं मिलेगी तो यह कभी न कभी उत्तेजित होकर रक्त की नदी बहा देंगे। क्या तुम नहीं जानते कि सोलहवें लुई की हत्या के बाद फ्रान्स की क्या हालत हुई? अलफ्रेड! मैं कहे देता हूँ कि वह समय अब दूर नहीं है जब ये निम्न-श्रेणी के लोग खड़े होकर संसार को अराजकता से पूर्ण कर देंगे। रईस और बड़े लोगों को अपने रक्त द्वारा जगत् में छाये हुए अत्याचार और उत्पाड़न का प्रायश्चित्त करना पड़ेगा।

अलफ़्रेड ने हँसते हुए कहा, "अगस्टिन, तुम तो एक ख़ासे वक्ता हो गये। मैं कहता हूँ तुम एक काम करो, जगह जगह घूम कर इस विषय पर व्याख्यान देना आरम्भ कर दो। इससे पैग़म्बर की तरह लोग तुम्हें पूजेंगे। पर मालूम होता है कि तुम्हारे इस मनोकल्पित स्वर्ग-राज्य के आने के पहले ही मैं मर जाऊँगा। मुझे यह सब देखना नसीब न होगा।

अगस्टिन—फ़्रान्स के रईस लोग निम्न-श्रेणीवालों से बड़ी घृणा करते थे। पर अन्त में उन्हीं निम्न-श्रेणीवालों ने उन लोगों पर आधिपत्य जमाया था। ज़रा ख़याल करो अभी उस दिन हइटी में क्या हो गया है।

अलफ़्रेड—हइटीवालों का क्या ज़िक्र कर रहे हो, वे भी क्या अँग्रेज़ हैं? वे अँग्रेज़ होते तो क्या भला उनकी ऐसी दुर्दशा हो सकती थी! संसार में सर्वत्र अँग्रेज़ों का प्रभुत्व रहेगा। अँग्रेज़ सब लोगों पर हुकूमत करेंगे। भला हम लोगों के (अँग्रेज़ों के) साथ किसी जाति की तुलना हो सकती है?

अगस्टिन—बहुत अँगरेज़ अँगरेज़ करके मत कूदो। एक बार इन कालों की आँख खुलने दो तो देखना कि तुम लोगों को अपने अत्याचारों का प्रायश्चित्त करना पड़ता है या नहीं। तब फिर लाचार होकर तुम लोगों को यहाँ से दुम दबा कर भागना पड़ेगा। यहाँ छिपने तक को शरण न मिलेगी।

अलफ़्रेड—तुम्हारी यह सब पागलपन की बातें हैं।

अगस्टिन—पागलपन की बातें! क्या बाइबल की बात का तुम्हें स्मरण नहीं है? जहाँ लिखा है, मनुष्य स्वप्न में भी विपद् का ख़याल न करता था, पर अकस्मात् एक दिन बाढ़ आई और उन लोगों को बहा कर मृत्यु के मुँह में डाल दिया! मैं तुमसे अनुरोध करता हूँ कि बाइबल की इस बात को सदा याद रखना।

अलफ़्रेड ने हँसते हुए कहा, "अगस्टिन, तुम पैग़म्बरी का जामा पहन कर जगह जगह व्याख्यान देते फिरो तो अच्छा होगा। हम लोगों का फ़िक्र तुम मत करो। हम में यथेष्ट सामर्थ्य है। हम अनायास अपनी रक्षा आप कर लेंगे। इन निम्न-श्रेणी के लोगों को सदा इसी गिरी हुई हालत में ही रहना पड़ेगा। ये लोग सदा हमारे पैरों तले ही रहेंगे। हम में इनका शासन करने के लिए पूरी शक्ति है।

अगस्टिन—क्यों नहीं, तुम्हारा लड़का इसी शक्ति की शिक्षा पा रहा है। पर तुम लोगों की शक्ति तो क्रोध के साथ काफ़ूर होकर उड़ जाती है। तुम नहीं जानते ठण्ढा लोहा गरम लोहे को काटता है। जो अपने को नहीं सम्हाल सकता वह दूसरों पर शासन क्या करेगा?

अलफ़्रेड—मैं मानता हूँ कि हमारे यहाँ की शिक्षा-प्रणाली कुछ बुरी है। लड़कपन से ही हमारी सन्तानें इन काले दासों पर प्रभुत्व करना सीख जाती हैं। दूसरों को भी कोई अधिकार है यह समझने का उन्हें मौक़ा ही नहीं मिलता। पर किसी किसी विषय में हमारे यहाँ की शिक्षा बहुत अच्छी भी होती है। बच्चे बचपन से ही ख़ूब साहसी और तेजस्वी होते हैं। क्रीतदासों के बहुत से ऐब उनको स्पर्श नहीं कर सकते। हृदय में भरा हुआ प्रभुत्व का भाव उन्हें अनेक दोषों से दूर रखता है।

अगस्टिन ने व्यङ्गोक्ति के भाव से कहा—"इस प्रकार प्रभुत्व करने की इच्छा क्या क्रिश्चियन धर्म के अनुकूल है?"

अलफ़्रेड—अनुकूल है या प्रतिकूल, इस पर मैं बहस नहीं करना चाहता। पर इसमें कोई सन्देह नहीं हो सकता कि हमारे देश की सामाजिक अवस्था लोगों को साहसी और तेजस्वी बना देती है।

अगस्टिन—यह हो सकता है।

अलफ़्रेड—अगस्टिन, ये फ़ज़ूल की बातें हैं, इनसे नतीजा कुछ नहीं निकलता। कम से कम हम लोग पाँच सौ बार तो इस पुराने विषय पर तर्क-वितर्क कर चुके होंगे। चलो, बैठ कर शतरञ्ज खेलें।

दोनों भाई बरामदे में आकर बैठ गये और शतरञ्ज खेलना आरम्भ कर दिया। खेलते समय अलफ़्रेड ने कहा, "मैं तुमसे कहता हूँ कि अगस्टिन, यदि तुम्हारे से विचार मेरे होते तो मैं अपने विचारों के प्रचार के लिए कुछ यत्न करता।"

अगस्टिन—हाँ, मैं कह सकता हूँ कि तुम करते—तुम काम-काजी आदमी हो—लेकिन मैं ?

अलफ़्रेड—(चुटकी लेकर) अपने निज के दास-दासियों ही की दशा क्यों नहीं सुधारते ?

अगस्टिन—यह भी क्या सम्भव हो सकता है ? एक बड़ा भारी पहाड़ उनके सिर पर रख दो तो भी उनका सीधे खड़े रहना सम्भव है, पर हम लोगों के समाज में फैली हुई कुशिक्षा, कुदृष्टान्त, असदाचरण और अत्याचारों के नीचे रह कर उनका सुधरना कभी सम्भव नहीं है। समाज में फैले हुए पापों और कुशिक्षाओं से नैतिक वायु दूषित हो जाती है। इसलिए जब तक नैतिक वायु शुद्ध न हो तब तक किसी एक आदमी के किये धरे लोगों का कुछ सुधार नहीं हो सकता। कितनी ही विजित जातियों को उच्च शिक्षा मिलती है, पर उस शिक्षा से क्या पराजित जाति कभी उन्नत हो सकती है ?

अलफ़्रेड—तो तुम देश-सुधार का व्रत ग्रहण करो।

इसके बाद दोनों खेल में बिल्कुल लवलीन गये। कुछ देर बाद हेनरिक और इवा घोड़ों पर घर लौटे। घोड़ों के तेज़ आने के कारण इवा कुछ क्लान्त हो गई थी। पर उसके इस क्लान्ति-चिह्न-मण्डित मुख-

कमल पर अपरूप सौन्दर्य विकसित हो रहा था । ऋतु बदलने पर जिस प्रकार प्रकृति नये रूप में सजधज कर मनुष्यों के हृदय में नये नये भाव उत्पन्न करती है, उसी प्रकार राग, द्वेष, हिंसा-रहित धर्म और पवित्रता-पूर्ण निर्मल चरित्र रमणियों के मुख-कमल से एक एक अवस्था में एक एक प्रकार के अलौकिक सौन्दर्य का भाव विकसित होता है । इवा के इस क्रान्ति-चिह्न-मण्डित मुखमण्डल से शान्ति और प्रेम का भाव टपक रहा था ।

अलफ्रेड ने उसे इस भाव में देखते ही विमोहित होकर कहा, "क्या अपूर्व रूप-माधुरी है । अगस्टिन, तुम्हारी इवा की रूप-माधुरी से संसार मोह जायगा ।"

लेकिन अगस्टिन ने निराश हृदय से कहा, "हाँ, वह सर्व-सुलक्षणी है, पर कौन जाने ईश्वर के मन में क्या है" यह कहते हुए उसने दो चार क़दम आगे बढ़ कर इवा को घोड़े से गोदी में उतार कर, पूछा—

"बेटी इवा ! तुम बहुत तो नहीं थक गई हो"?

बालिका ने कहा, "नहीं बाबा ।" पर उसके हल्के कठिन साँस लेने से उसके पिता को खटका हुआ । उसने कहा, "बेटी, तुम घोड़ा इतना तेज़ क्यों हाँकती हो ? तुम जानती हो कि यह तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए हानिकर है ।" यह कह कर उसे एक कोच पर लिटा दिया ।

सेन्टक्लेयर ने कहा—"हेनरिक ! तुम इवा को देखना । देखो, जब इवा तुम्हारे साथ रहे तब घोड़ा इतना तेज़ मत दौड़ाया करो ।" हेनरिक ने इवा के पास बैठ कर अपने हाथ में उसका हाथ लेते हुए कहा, "मैं फिर कभी ऐसी भूल न करूँगा ।"

इवा शीघ्र ही स्वस्थ हो गई । उसके पिता और चाचा उन दोनों बच्चों को एक सङ्ग छोड़ कर खेल में लग गये । हेनरिक ने कहा, "इवा,

मुझे बड़ा खेद है कि बाबा बस अब यहाँ दो ही दिन और ठहरेंगे, फिर हम लोग चले जायँगे। तुमसे न मालूम फिर कब भेंट होगी। यदि मैं तुम्हारे पास रहता तो भला बनने का यत्न करता और डडो को कभी न मारता। मैं डडो के साथ बुरा सलूक नहीं करता हूँ; पर तुम जानती हो मैं ज़रा तेज़ मिज़ाज हूँ। मैं असल में उससे बुरा बर्ताव नहीं करता। उसे कभी कभी पाई पैसे भी दे देता हूँ। तुम देखती हो वह अच्छे कपड़े पहनता है। मैं समझता हूँ सब बातों पर विचार करके डडो बड़े मज़े में है।"

इवा—तुम्हें केवल भोजन-वस्त्र और पैसे दिये जायँ, पर संसार में कोई तुम्हें स्नेह करनेवाला न हो तो क्या तुम अपने को सुखी समझोगे?

हेनरिक—मैं? बेशक, नहीं समझूँगा।

इवा—तो तुम देखते हो कि तुम डडो को उसके सारे आत्मीयों से पृथक् करके ले आये हो, और अब उसे कोई भी स्नेह करनेवाला नहीं है—ऐसी दशा में पड़कर कोई भी व्यक्ति सुखी नहीं रह सकता।

हेनरिक—इसमें हमारा क्या चारा। मैं उसकी मा को तो ला नहीं सकता, और न मैं स्वयं ही उसे प्यार कर सकता हूँ।

इवा—तुम क्यों नहीं कर सकते?

हेनरिक—(खिलखिला कर हँसते हुए) डडो को प्यार! उस पर मैं थोड़ी दया करूँ यही काफ़ी है। तुम क्या अपने नौकरों को प्यार करती हो?

इवा—निस्सन्देह मैं प्यार करती हूँ।

हेनरिक—कैसी अनोखी बात है!

इवा—क्या बाइबल हम लोगों को नहीं बतलाती कि हमें हर एक आदमी को प्यार करना चाहिए?

हेनरिक—वाइवल की वात क्या कहती हो ! वाइवल में तो ऐसी ऐसी कितनी ही वातें लिखी पड़ी हैं; लेकिन कोई उन्हें करने का विचार भी करता है ? तुम जानती हो इवा, कोई आदमी वाइवल का कहा नहीं करता ।

इवा कुछ देर तक नहीं वोली । उसकी आँखें स्थिर और चिन्ता-युक्त हो गईं । फिर वह वोली—"प्यारे भाई, मेरी एक वात मानो जैसे हो तुम ग़रीव डडो को प्यार करना, उस पर दया करना ।

हेनरिक—प्यारी वहिन, तुम्हारे अनुरोध से मैं किसी चीज़ को प्यार कर सकता हूँ । तुम सरीखी प्रेममय शान्त और मधुर वालिका मैंने कहीं नहीं देखी । मैं अव कभी डडो को न मारूँगा ।"

इवा को उसके वचनों से शान्ति मिली, उसने कहा—"मुझे वड़ा प्रसन्नता हुई कि तुम ऐसा अनुभव करते हो । प्यारे हेनरिक ! मैं आशा करती हूँ कि तुम्हें अपनी वात का स्मरण रहेगा ।

फिर भोजन की घण्टी हुई और सव लोग भोजन के लिए उठ गये ।

सत्ताईसवाँ परिच्छेद ।

मृत्यु के पूर्व-लक्षण ।

दो दिन के बाद अलफ्रेड पुत्र सहित सेन्टक्लेयर से विदा होकर अपने घर गया । जब तक अलफ्रेड वहाँ था तब तक सब लोग हँसी ख़ुशी में भूले हुए थे । इस बीच में इवान्जेलिन के स्वास्थ्य की ओर किसी ने ध्यान न दिया । एक तो वह पहले ही से अस्वस्थ थी, इधर हेनरिक के साथ खेल-कूद में उसे बहुत अधिक श्रम पड़ने के कारण वह और भी थक गई । उसका शरीर इतना निर्बल हो गया कि उसमें चारपाई से उठने की शक्ति न रही । अब तक तो सेन्टक्लेयर ने मिस अफिलिया की बातों पर ध्यान न दिया था, पर अब उसने डाक्टर को बुला कर इवा को दिखलाया । और उसके हृदय में भी भाँति भाँति की आशङ्कायें होने लगीं ।

सेन्टक्लेयर की स्त्री मेरी कभी भूल से भी अपनी लड़की के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में कुछ न पूछती थी । इधर उसने मुहल्ले की स्त्रियों से दो तीन नये रोगों की चर्चा सुनी थी । बस, अब उन्हीं नये रोगों के सब लक्षण अपने शरीर में देखने लगी । इससे वह इन अपने ही मनोकल्पित रोगों के झगड़ों में ऐसी बेतरह उलझी रहती थी कि उसे और किसी के बीमार आराम की खोज करने की फ़ुर्सत कहाँ । उसे कन्या की सुध लेने का तनिक भी अवकाश न था, वह तो अपने ही रोगों की चिन्ता में लगी रहती थी कि कैसे उनसे पिण्ड छूटेगा । साथ ही उसमें एक और भी विशेष गुण था, वह समझती थी कि संसार में किसी व्यक्ति को उसके जितनी पीड़ा नहीं हो सकती; और रोग

जितने होते हैं उसी को होते हैं। दूसरे किसी के रोग को तो वह एक काम करने का निरा वहाना और आलस्य भर समझती थी। उसका ख़याल था कि असल रोग उसी को होते हैं।

मिस अफिलिया ने इवा के रोग के सम्बन्ध में कई वार मेरी की आँखें खोलने की चेष्टा की, पर सव व्यर्थ गई।

वह कहती थी—"मैं तो उसे कुछ हुआ नहीं देखती हूँ। वह मज़े में खेलती-कूदती है।

अफिलिया—तुम उसकी खाँसी नहीं देखती हो?

मेरी—खाँसी के सम्बन्ध में आपके कहने की आवश्यकता नहीं है, मैं ख़ुद उस विषय में वहुत जानती हूँ। मैं जव इवा के वरावर थी तो मेरे घर वाले समझते थे कि मुझे यक्ष्मा हो गया है। रात रात भर मामी मेरे पास वैठी रहती थी। इवा की खाँसी उसके सामने कोई चीज़ नहीं है।

अफिलिया—लेकिन वह दिन दिन कमज़ोर होती जा रही है।

मेरी—मैं वर्षों ऐसी ही कमज़ोर थी। वह कुछ वात नहीं है।

अफिलिया—नित्य रात को उसका शरीर गरम हो आता है, इवा को नित्य रात को ज्वर चढ़ता है।

मेरी—वैसा तो मुझे दस वर्षों तक था। ज्वर के मारे रात को इतना पसीना निकलता था कि सारे कपड़े तरवतर हो जाते थे। सवेरे घण्टों वैठ कर मामी उन्हें सुखाती थी! इवा को कोई वैसा ज्वर नहीं है।

फिर मिस अफिलिया मेरी से इवा के सम्वन्ध में कुछ न कहती थी। पर अव इवा जव इतनी कमज़ोर हो गई कि चारपाई से नहीं उठ सकती और उसके लिए डाक्टर वुलाया गया तव एकाएक मेरी का सन्तान-वात्सल्य प्रकट हुआ।

मेरी कहने लगी—"मैं तो पहले ही जानती थी कि सेन्टक्लेयर की उदासीनता का यह फल मुझे भोगना पड़ेगा। मुझे सन्तान-शोक देखना पड़ेगा। एक तो मैं अपने ही रोगों के मारे मर रही हूँ तिस पर भी यह सन्तान-शोक! आदमी के इससे ज़्यादा और क्या फूटे भाग होंगे! न सात न पाँच, मेरे यह एक बच्ची, उसका यह हाल हुआ!" यह सब बातें कह कर वह दास-दासियों पर अपने दिल का बुख़ार निकालने लगी। मामी ने इवा के पालन में लापरवाही की है, यह कह कर उसे ख़ूब कोसा। फिर अभिमान से मुँह फुला कर मेरी सेन्टक्लेयर के सामने रोने लगी।

सेन्टक्लेयर ने कहा—"प्यारी मेरी, ऐसी बातें मुँह से न निकालो। इवा अवश्य आराम हो जायगी। उसे ऐसा क्या हुआ है?

मेरी—सेन्टक्लेयर, तुम्हें मातृस्नेह का क्या पता? तुम मेरा हृदय कभी नहीं समझ सके। अब भी तुम नहीं जान सकते कि अपनी सन्तान के लिए मेरा जी कितना छटपटा रहा है।

सेन्टक्लेयर—पर ऐसी बातें मत करो, इस तरह छटपटाने वाली कोई बात नहीं है।

मेरी— यह दशा देख सुन कर मेरा जी तो तुम्हारी तरह नहीं मान सकता। सब बातों में तुम जैसे वज्र-हृदय हो मैं तो वैसी नहीं हूँ। सन्तान के नाम से यही एक लड़की है, इसकी बीमारी देख कर क्या मैं बरदाश्त कर सकती हूँ।

सेन्टक्लेयर—तुम घबराओ मत। इवा का शरीर बड़ा कोमल है, इसीसे अधिक गर्मी और हेनरिक के साथ खेल कूद में अधिक परिश्रम पड़ने के कारण उसकी तबियत ख़राब हो गई है। डाक्टर साहब कहते हैं कि वह शीघ्र ही चङ्गी हो जायगी।

मेरी—मेरा यह पाजी हृदय जान कर भी इस बात को नहीं

समझता। मैं भी चाहती हूँ कि तुम्हारी तरह बिना घबराये सुख से रह सकती तो अच्छा था, पर क्या करूँ जी नहीं मानता।

दो तीन सप्ताह इवा कुछ आराम हो गई। वह उठ कर फिर चलने फिरने लगी। कभी कभी पहले की भांति बाग़ में जाकर टाम के साथ बैठती थी। उसके पिता को यह देख कर बड़ा आनन्द हुआ। पर मिस अफिलिया और चिकित्सक की दृष्टि में बीमारी कुछ भी न घटी थी। इवा स्वयं भी मन ही मन समझती थी कि, इस पाप और अत्याचार-पूर्ण संसार को उसे शीघ्र ही छोड़ना पड़ेगा।

भला कहिए तो मनुष्य के हृदय में मृत्यु का संवाद कौन पहुँचाता है? मरणासन्न के कान में कौन कह जाता है कि अब इस संसार में तुम्हारी दिन-घड़ियाँ पूरी हो चुकी हैं? इवा को किसने कहा कि अब शीघ्र ही उसे यह संसार छोड़ना पड़ेगा? यदि कहिए कि मनुष्य के अन्दर बैठा हुआ अनन्त सुख का अभिलाषी, ईश्वर सामीप्य का प्रयासी, अमृत का अधिकारी, अविनाशी आत्मा पहले ही से मृत्यु का आगम जान जाता है।—तो फिर सब लोग क्यों नहीं जान लेते? कोई जानता है, बहुत नहीं जानते, इसका क्या कारण है? इसके उत्तर में इतना ही कहा जा सकता है कि विषयासक्त सांसारिक जीवों के कान विषय-कोलाहल से बहरे हुए रहते हैं, उनकी आंखें मोहान्धकार से ढकी रहती हैं; इस पाप-परिपूर्ण संसार में रहने की उत्कट इच्छा मृत्यु-चिन्ता को उनके हृदय में प्रवेश नहीं करने देती; इसी से विषयासक्त जीव पहले से मृत्यु का आगमन नहीं जान सकते, मृत्यु के आगमन की ध्वनि उन्हें कभी नहीं सुनाई देती। किन्तु पर-दु:ख-प्रपीड़िता, पवित्र-हृदया इवाञ्जेलिन के कान सांसारिक कोलाहल से बहरे नहीं हुए थे, अपने सुख की इच्छा कभी उसके हृदय में स्थान न पाती थी, यह संसार उसे दु:खमय जान पड़ता था, इसी से उसे परम पिता जगदीश्वर

का, उसके दुःख-निवारण करने के लिए अपने धाम को बुलाने का सन्देशा साफ़ सुनाई पड़ा । उसे इसका तनिक भी खेद न हुआ कि यह संसार छोड़ना पड़ेगा । उसके हृदय को कुछ आघात पहुँचाने वाली बात थी तो इतनी ही कि उसे स्नेहमय पिता को छोड़ना होगा, और उसकी मृत्यु से उसके पिता शोक में पागल हो जायँगे ।

एक दिन टाम को बाइबल सुनाते हुए इवा ने कहा "टाम काका, मैं जान गई कि ईसा ने क्यों हम लोगों के लिए प्राण दिये थे "।

टाम—कैसे ?

इवा—ऐसे कि मेरे हृदय में भी उस भावका अनुभव होता है ।

टाम—वह कौनसा भाव है, मिस इवा !—बात मेरी समझ में नहीं आती।

इवा—मैं तुम्हें समझा कर नहीं बतला सकती । लेकिन मैंने जब उस जहाज़ में तुम्हें तथा अन्यान्य जञ्ज़ीर से जकड़े हुए दास-दासियों को—जिनमें कोई अपने बच्चों से कोई अपने पतियों से, कोई अपनी माताओं से, बिछुड़ने के कारण विलाप कर रहे थे—देखा, और जब मैंने बिचारी प्रू की बाबत सुना, ओह ! वह कैसा भयङ्कर काण्ड था !—और बहुत अवसरों पर मैंने इस बात का अनुभव किया है कि यदि मेरे मरने से यह सब दुःख-दर्द से छूट सकें तो मैं आनन्द से इनके लिए मर जाऊँ । इवा ने अपना दुबला पतला हाथ टाम पर रखते हुए जोश से कहा, "टामकाका ! यदि मेरे मरने से इनका दुःख दूर हो जाय तो मैं मर जाऊँगी ।"

टाम विस्मित होकर उसका मुख निहारने लगा । पर अपने पिता के पाँव की आहट सुन कर इवा उठ कर बराम्दे में चली गई ।

तनिक देर के बाद टाम जब मामी से मिला तो उसने कहा, "मामी ! अब इवा को इस संसार में रखने का यत्न करना वृथा है ।" उसके भाल पर विधना के अक्षर हैं ।"

मामी ने अपने हाथ ऊपर को उठाते हुए कहा, "हाँ हाँ, यह तो मैं हमेशा से कहती आती हूँ। वह बचने वाली लड़की नहीं है, ऐसे होनहार बच्चे बहुत दिन नहीं जीते! वह हम सब लोगों को अनाथ कर जायगी।

इवा अपने पिता के पास आई। उसके पिता ने उसे स्नेह सहित हृदय से लगा कर कहा, "इवा बेटी, आज काल तो तुम अच्छी हो न?

इवा ने आकस्मिक दृढ़ता से कहा, "बाबा, बहुत दिनों से मैं तुमसे कुछ कहना चाहती हूँ। अब अधिक निर्बल होने के पूर्व ही मैं उन बातों को कह डालना ठीक समझती हूँ।"

यह बात सुन कर सेन्टक्लेयर का हृदय काँप उठा। इवा ने पिता की गोद में बैठ कर कहा, "बाबा, अब मेरे यहाँ रखने के सब यत्न वृथा हैं। मेरे तुम्हें छोड़ जाने का समय बहुत निकट आ रहा है। मैं वहाँ जा रही हूँ जहाँ से फिर कभी नहीं लौटा जाता!" यह कह कर उसने ठण्डी साँस ली।

इवा की इन बातों से सेन्टक्लेयर के हृदय में बरछी सी पार हो गई। पर ऊपर से उसने प्रसन्नता-पूर्वक कहा, "इवा बेटी, तुम्हें झूठा सन्देह हो गया, इन सब चिन्ताओं को छोड़ो। यह देखो, मैं तुम्हारे लिए कैसा अच्छा खिलौना लाया हूँ।"

इवा ने खिलौने को हाथ से रख कर कहा, "बाबा, तुम अपने को छलना में मत डालो!—मैं ख़ूब जानती हूँ कि मैं अब अच्छी नहीं होऊँगी, मेरे जाने में अधिक दिनों की देर नहीं है। बाबा! मुझे यह संसार छोड़ने में ज़रा भी कष्ट नहीं जान पड़ता, केवल तुम्हारी और बन्धु-बान्धवों की बात सोच कर कष्ट होता है, नहीं तो मैं यहाँ से जाने में बड़ी प्रसन्न हूँ। अनेक दिनों से मैं यह लोक छोड़ने की इच्छा कर रही हूँ।

सेन्टक्लेयर—प्यारी बच्ची, "तेरे इस छोटे से मन में इतनी उदासीनता क्यों भरी हुई है ? तेरी प्रसन्नता के लिए तुझे जो चाहिए वह सब हमारे घर तैयार है और तुझे मिल सकता है ।

इवा—बावा ! मैं स्वर्ग ही में जाकर रहना चाहती हूँ । केवल तुम्हारे लिए मेरे प्राण दग्ध होते हैं । बावा, यहाँ ऐसी बहुत सी बातें हैं जो मेरे जी को कष्ट देती हैं, जो मुझे बड़ी भयङ्कर जान पड़ती हैं । इसी से मैं स्वर्ग में ही जाना चाहती हूँ; पर मैं तुम्हें नहीं छोड़ना चाहती—इससे मेरे हृदय को बड़ी पीड़ा हो रही है !"

सेन्टक्लेयर—क्यों इवा, वे कौन सी बातें हैं जो तुझे दुःख देती हैं और भयङ्कर लगती हैं ।

इवा—बावा ! नित्य ही तो वे बातें होती हैं । मुझे अपने इन बेचारे दास-दासियों के लिए बड़ा कष्ट होता है; वे मुझे बड़ा प्यार करते हैं, मुझे वह बहुत चाहते हैं । मैं चाहती हूँ कि वे सब स्वतन्त्र हो जायँ ।

सेन्टक्लेयर—क्यों बेटी इवा, क्या तुम समझती हो वे हमारे यहाँ आराम से नहीं हैं ?

इवा—हाँ, बावा, पर तुम्हें कुछ हो जाय तो उनका क्या होगा ? बावा, तुम्हारे सरीखे बहुत थोड़े आदमी होते हैं । अलफ्रेड चाचा तुम्हारे जैसे नहीं हैं, मा तुम्हारे जैसी नहीं हैं; उसके बाद उस बेचारी प्रू के मालिक की बात सोचो ! ओफ़ ! और और लोग अपने दास-दासियों पर कितना, कैसा भयानक अत्याचार करते हैं, और कर सकते हैं !" इतना कहते कहते इवा थरथराने लगी ।

सेन्टक्लेयर—बेटी, तुम बड़ी कोमल-हृदय हो, दूसरों के दुःख देख कर तुम्हारे हृदय में बड़ी चोट लगती है । मुझे खेद है कि मैंने सदा तुम्हें ऐसी बातें सुनने दीं ।

इवा—ओफ़ बाबा, तुम्हारी इस बात से मेरा कलेजा फटा जाता है। जब संसार में बेचारे दूसरे लोग केवल कष्ट और दुःख सह सह कर ही जी रहे हैं तब तुम मुझे इतनी सुखी बना कर जीवित रखना चाहते हो। ऐसा कष्ट से बचाना चाहते हो कि किसी के कष्ट की कहानी भी नहीं सुनने देना चाहते—यह बड़ी स्वार्थपरता जान पड़ती है। मुझे ऐसी बातें जाननी चाहिएं और अनुभव करनी चाहिएं! ऐसी बातें मेरे हृदय में चुभ जाती हैं, अन्दर घुस जाती हैं; मैंने बैठे बैठे इन बातों को बहुत बहुत सोचा है। बाबा, क्या इन सब दासों को स्वतन्त्र कर देने का कोई उपाय नहीं है?

सेन्टक्लेयर—बेटी, यह बड़ा कठिन प्रश्न है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह प्रथा बहुत बुरी है। बहुत लोग इसे बुरी से बुरी प्रथा समझते हैं, और मैं स्वयं इसे अति निकृष्ट मानता हूँ। मैं हृदय से चाहता हूँ कि इस पृथिवी पर एक भी मनुष्य गुलाम न रहता; सब स्वतन्त्रता का सुख भोगते; पर इसका उपाय मेरी समझ में नहीं आता।

इवा—बाबा! तुम तो बड़े अच्छे आदमी हो, सब पर दया करते हो, सब को प्यार करते हो। तुम क्या लोगों के घर घूम घूम कर सब को नहीं समझा सकते कि यह दासत्व प्रथा बड़ी घृणित है, इसे उठा देना चाहिए? बाबा, जब मैं मर जाऊँगी, तब तुम मेरा ख़याल करके मेरे लिए इसे करोगे। मुझ से यह होता तो मैं ही करती।

इवा की बात सुन कर सेन्टक्लेयर ने कहा, "इवा, तुम मरोगी? बच्ची, मुझसे ऐसी बातें मत कहो। तुम्हारे सिवा मेरे इस संसार में और है ही क्या?"

इवा—बाबा, उस बेचारी प्रू के उस लड़के के सिवा और क्या था? सन्तान के शोक में वह पागल हो गई थी। उसकी मृत्यु के बाद भी वह उसका रोना सुनती थी। बाबा, तुम मुझे जितना प्यार करते

हो उतना ही ये बेचारे गुलाम अपने बच्चों को करते हैं। ओफ़! उनके लिए कुछ करो! हमारे यहाँ मामी है वह अपने बच्चों को प्यार करती है, जब वह उनकी चर्चा करती है तो उसकी आँखों से आंसू झरते मैंने देखे हैं। और टाम भी अपने बच्चों को प्यार करता है। बाबा, यह बड़ी भयङ्कर बातें हैं, मुझसे सहन नहीं होतीं।

सेन्टक्लेयर ने अत्यन्त दुःखित होकर कहा, "इवा बेटी, तुम रो रो कर अपने जी का नाश मत करो; यों मरने की बात न निकालो, तुम जो चाहती हो सो मैं करूँगा।" इवा ने तत्काल कहा, "बाबा! तुम मुझसे प्रतिज्ञा करो कि टाम को मेरी मृत्यु होते ही मुक्त कर दोगे"।

सेन्टक्लेयर—बेटी, जो कुछ तुम कहोगी सो मैं कर दूँगा।

इवा ने अपने पिता का गला पकड़ कर कहा, "बाबा, मैं चाहती हूँ कि हम दोनों साथ ही जाते।"

सेन्टक्लेयर—कहाँ बेटी?

इवा—उसी अमृत-धाम में, उसी स्वर्ग-राज्य में, जहाँ रोग, शोक और दुःख-यन्त्रणाओं का नाम निशान नहीं है। जहाँ कोई किसी को नहीं सताता, सब सबको प्यार करते हैं।

इवा ने इस स्वर्ग-राज्य की बात ऐसे सरल विश्वास से कही मानों वह वहाँ अनेक बार गई हुई है। वह फिर बोली, "बाबा, तुम वहाँ नहीं जाना चाहते?"

सेन्टक्लेयर ने इवा को हृदय से और सटा लिया, पर मुँह से चुप रहा।

इवा ने फिर बड़ी दृढ़ता और शान्ति से कहा, "तुम ज़रूर मेरे पास आओगे।"

सेन्टक्लेयर—मैं तुम्हारे बाद ज़रूर ही आऊँगा। मैं तुम्हें कदापि न भूलूँगा।

सेन्टक्लेयर इवा को छाती से लिपटाये चुप चाप बैठा रहा। देखते देखते संध्या का समागम हुआ। चारों ओर से इवा की प्रशान्त मूर्त्ति और विशाल नेत्रों पर घोर अन्धकार छा गया। इससे अब इवा का वदन सेन्टक्लेयर को नहीं दिखाई देता था। पर उसकी सुरीली मधुर वाणी देववाणी की भाँति उसके कर्ण-कुहरों में गूँजने लगी। उसे अपने गत जीवन की सम्पूर्ण बातें स्मरण हो आईं, अपनी माता की प्रार्थना याद आई। अपने बाल्य जीवन की बातें, संसार में प्रवेश करने के बाद जगत् हित के साधन की इच्छा के जड़ से उखड़ जाने की बातें एक एक करके याद आने लगीं। यों ही देर तक बैठे बैठे सेन्टक्लेयर बहुत सी बातें याद करता और सोचता रहा, पर मुँह से कुछ न बोलता था।

अन्त में जब बहुत अन्धेरा हो गया, तब इवा को गोद में उठा कर अपने सोने के कमरे में ले गया और दास-दासियों को विदा करके अपने ही साथ इवा को सुलाया और नींद आने तक उसे गीत गाकर सुनाता रहा।

अट्ठाईसवाँ परिच्छेद ।

प्रेमाग्नि के संस्पर्श से पत्थर पिघल जाता है ।

रविवार का दिन था। दोपहर बीत चुकी थी। सेन्टक्लेयर अपने घर के बराम्दे में बैठा सिगरेट पीरहा था। बराम्दे के सामने वाले कमरे में उसकी स्त्री मेरी एक गद्दीदार कुर्सी पर बैठी हुई थी। मेरी के हाथ में एक बड़ी सुन्दर जिल्ददार भजनों की पुस्तक थी। मेरी का ख़याल है कि रविवार के दिन धर्म-पुस्तक पढ़ी न जासके तो कम से कम हाथ ही में रहे। खुली हुई पुस्तक सामने पड़ी थी, मेरी उसे पढ़ती नहीं है, केवल कभी कभी आँख उठा कर देख लेती थी।

इवा को साथ लेकर मिस अफिलिया किसी मेथोडिस्टों के गिरजे में गई थी। अतएव अगस्टिन और मेरी के सिवा वहाँ और कोई न था। कुछ देर बाद मेरी ने कहा, "अगस्टिन! मुझे हृद् रोग सा होगया जान पड़ता है। अतः अपने उस पुराने डाक्टर पोसी साहब को बुलवाने से ही काम चलेगा।"

अगस्टिन—उसके बुलाने की क्या ज़रूरत पड़ी है। जो डाक्टर इवा की दवा करता है, वह भी तो बड़ा अच्छा जान पड़ता है।

मेरी—मैं ऐसी नाज़ुक बीमारी में नये डाक्टर पर विश्वास नहीं कर सकती। मैं देखती हूँ मुझे यह रोग दिन दिन बढ़ता जारहा है। दिन भर बदन दर्द किया करता है और कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

सेन्टक्लेयर—तुम्हारा ख़ाली सन्देह भर ही है, मेरी समझ में तुम्हें कोई हृद्रोग नहीं है।

मेरी—यह तो मुझे पहले से ही पता था कि तुम्हारी समझ में

कुछ नहीं होगा। इवा को ज़रा सी खांसी या और कोई तुच्छ सा रोग हो जाता है तो भी तुम घबड़ा जाते हो, पर, मेरा तुम्हें कभी ख़याल तक नहीं होता।

सेन्टक्लेयर—यदि तुम चाह कर हृद्रोग का आवाहन करती हो तो मैं उसमें कोई बाधा न दूँगा। तुम्हारी दृष्टि में यदि यह रोग बड़े आदर की सामग्री है तो ठीक है, मेरी इसमें क्या हानि है।

मेरी—तुम्हें विश्वास हो या न हो, मैं निश्चय कहती हूँ कि इधर कई दिनों तक इवा की बीमारी के झगड़ों में लगे रहने के कारण मेरा यह रोग बहुत बढ़ गया है।

सेन्टक्लेयर प्रकट में चुप रह कर चुरुट खींचने लगा। मनही मन कहने लगा, तुम इवा की बीमारी के झगड़ों में लगे रहने को कहती हो, पर कभी एक दिन भ्रम से भी तो उसकी ख़बर नहीं ली!

इसके कुछ देर बाद मिस अफिलिया इवा को साथ लेकर घर लौटी। वह गाड़ी से उतरते ही सीधी अपने कमरे में चली गई। इवा अपने पिता की गोद में जाकर बैठ गई और गिर्जे के उपदेश की चर्चा करने लगी।

इतने ही में मिस अफिलिया के कमरे से बड़ी तर्जन गर्जन सुनाई दी।

सेन्टक्लेयर ने कहा, "टप्सी ने न जाने आज कौन सा नया उत्पात रचा है। बहिन बहुत बिगड़ रही हैं। मैं देखता हूँ।"

पर तुरन्त ही मिस अफिलिया बहुत गुस्से में भरी हुई टप्सी का गला पकड़ कर घसीटती हुई लाई।

सेन्टक्लेयर ने पूछा, "कहो आज क्या मामला है?"

अफिलिया ने कहा, "मामला यह है कि अब मैं इस आफ़त से अधिक परेशान नहीं होना चाहती! बरदाश्त के बाहर बात है; यह

रक्त-मांस का शरीर कहाँ तक सहेगा! मैंने कहा, कहीं खेलने भाग जायगी इससे उसे भजनों की पुस्तक देकर, दरवाज़े में ताला लगा गई थी। लेकिन कैसी पाजी छोकरी है। मेरे जाने के बाद तलाश करके मेरी चावी निकाल ली और मेरे बक्स से रेशमी कपड़े निकाल कर उन्हें काट-कूट कर गुड़ियों के कपड़े सी डाले। मैंने मेरी ज़िन्दगी में ऐसा पाजीपन नहीं देखा।"

मेरी ने कहा, "मैंने तो तुमसे कहा दीदी, कि कठोर शासन के विना ये दुरुस्त नहीं हो सकते।" फिर सेन्टक्लेयर की ओर तिरस्कृत दृष्टि से देख कर बोली, "यदि मेरा वश चलता तो मैं उसे बाहर निकलवा कर कोड़े लगवाती और इतने बेशुमार कोड़े लगवाती कि वह ज़मीन पर लोट लोट जाती।"

सेन्टक्लेयर—इसमें मुझे ज़रा भी सन्देह नहीं है। वास्तव में स्त्रियों का शासन बड़ा ही प्रेम-पूर्ण और मृदुल होता है! मैं अपने इस देश में ऐसी दस स्त्रियाँ भी नहीं देखता कि जिनका वश पड़े एक घोड़े या एक ग़ुलाम को अधमरा न कर डालें;—पुरुषों की मैं क्या कहूँ।

मेरी—सेन्टक्लेयर! तुम्हारी इस बेढङ्गी प्रणाली से नौकरों को शिक्षा देने का कोई फल न होगा। दीदी बुद्धिमान् स्त्री हैं, और अब वह समझती हैं कि मैंने जो कहा सो ठीक है वा नहीं।

दूसरी स्त्रियों की भाँति अफिलिया को भी कभी कभी क्रोध आ जाता था। विशेषतः टप्सी उसे जितना दिक़ करती थी उससे क्रोध आना स्वाभाविक था। पर मेरी जब उसकी बुद्धिमत्ता की प्रशंसा करने लगी तो उसे लज्जा मालूम हुई और उसका क्रोध कम हो गया।

उसने कहा, "नहीं मेरी इस लड़की के साथ ऐसा कठोर वर्ताव करने की कभी इच्छा न होगी। पर अगस्टिन, मेरी अक़्ल काम नहीं करती। इस लड़की को क्या करूँ। मैंने इसे बहुतेरा सिखलाया पढ़ाया; मैं

इसे समझाते समझाते हार गई। मैं हर तरह से इसे सज़ा देकर भी देख चुकी पर पहले ही की तरह यह जैसी की तैसी बनी हुई है।"

सेन्टक्लेयर ने बुला कर कहा, "टप्सी बन्दरी इधर आ।"

टप्सी उसके सम्मुख आकर काली काली आंखें निकाल कर मट् मट् ताकने लगी। उसकी आंखों से भय और धूर्त्तता टपकती थी।

सेन्टक्लेयर—क्योंरी टप्सी, तू इतना पाजीपन क्यों करती है?

टप्सी - जान पड़ता है मेरा मन बड़ा ख़राब है; मिस् फीली ते यही कहती हैं।

सेन्टक्लेयर—तू नहीं देखती है कि मिस अफिलिया ने तेरे लिए कितना कष्ट उठाया है? वह कहती है कि उसने यथासाध्य सब कुछ करके देख डाला है।

टप्सी—जी हां सरकार! पुरानी मलकिन भी यही कहा करती थीं। वह मुझे बहुत कोड़े लगाती थीं, मेरे बाल नोच लेती थीं, दरवाज़े से मेरा सिर टकरा देती थीं पर उससे मैं ज़रा भी नहीं सुधरी। मैं समझती हूँ अगर मेरे सिर का बाल बाल नोच लिये जाय ते भी मेरा कुछ सुधार न होगा। मैं बड़ी पाजी हूँ। मैं हबशी के सिवा और कुछ नहीं हूँ, कोई उपाय नहीं है!

अफिलिया— अब मैं इसे सुधारने की आशा छोड़े देती हूँ। जितना सह चुकी बहुत है अब और यन्त्रणा नहीं सही जायगी।

सेन्टक्लेयर—अच्छा, मैं तुमसे केवल एक ही बात पूछना चाहता हूँ।

अफिलिया—क्या?

सेन्टक्लेयर—यही कि, जब तुम्हारे धर्मशास्त्र में इतनी भी ताक़त नहीं है कि अपने पास रख कर एक अज्ञानान्ध बालिका का उद्धार कर सको, ते ऐसे ऐसे हज़ारों अज्ञानियों के उद्धार के लिए बेचारे दो एक पादरियों के भेजने से क्या मतलब सिद्ध होता है? मैं समझता हूँ कि

तुम्हारे उन सहस्रों अज्ञानियों में से यह लड़की एक ख़ास नमूने की भाँति है।

मिस अफिलिया ने तत्काल इस बात का कुछ उत्तर न दिया। इवा ने, जो वहां चुपचाप खड़ी हुई यह सब बातें सुन रही थी, टप्सी को अपने पीछे पीछे आने का इशारा किया। फिर वह दोनों पास ही एक शीशे का कमरा था,—जिसमें बैठ कर सेन्टक्लेयर पढ़ा करते थे, उसमें चली गईं।

उन दोनों के अदृश्य होने पर सेन्टक्लेयर ने कहा, "देखना चाहिए इवा क्या करती है"।

यह कह कर वह बढ़ा और शीशों पर जो पर्दा पड़ा हुआ था, उसका एक कोना उठा कर झांकने लगा। एक क्षण के बाद उसने अपने होठों पर अँगुली रख कर इशारे से मिस अफिलिया को भी बुलाया। वे दोनों बालिकायें फ़र्श पर आमने सामने बैठी हुई हैं। टप्सी के चेहरे पर उसका स्वाभाविक बेपरवाही, और बेलाग तथा अन्यमनस्कता का भाव दिखाई दे रहा है, पर इवा का मुख स्नेह और आग्रह से चमक रहा है, और उसकी बड़ी बड़ी आंखें अश्रुपूर्ण हैं।

इवा टप्सी से बोली, "टप्सी, तेरा स्वभाव काहे से इतना ख़राब हो गया है? तू सुधरने की चेष्टा क्यों नहीं करती? क्यों टप्सी, तू क्या किसी आदमी को प्यार नहीं करती?"

टप्सी—मुझे मालूम नहीं प्यार किस चीज़ को कहते हैं, मैं चीनी को प्यार करती हूँ, और ऐसी ही जो मीठी चीज़ें होती हैं।

इवा—तू अपने बाप-मा को प्यार करती है?

टप्सी— आप तो जानती हैं मेरे कोई नहीं है। मिस इवा, मैं आप से पहले कह चुकी हूँ।

इवा—हाँ हाँ, ठीक है, तुमने कहा था। क्या तुम्हारे कोई नहीं है, भाई, बहिन, चाचा, चाची या—

टप्सी—नहीं, नहीं, कोई ,नहीं—मेरे कभी कोई हुआ ही नहीं।

इवा—पर टप्सी, यदि तू सुधरने की चेष्टा भर करे तो सुधर सकती है।

टप्सी—किसी तरह मैं हवशी के सिवा और कुछ नहीं हो सकती। अगर मेरा यह काला चमड़ा उतर कर सफ़ेद आ जाय तो मैं सुधरने का यत्न करूँ।

इवा—टप्सी, काली होने से क्या हुआ, लोग तुझे प्यार कर सकते हैं। अगर तू सुधर जाये तो मिस अफिलिया तुझे बहुत चाहेंगी।

यह बात सुनकर टप्सी ने स्वाभाविक रीति से दांत चियार कर खीस निकालदी, इसके माने यह थे कि तुम्हारी इस बात पर विश्वास नहीं होता।

इवा—तू क्या इस बात पर विश्वास नहीं करती ?

टप्सी—नहीं, मुझे देख कर ही उन्हें घृणा आती है, क्योंकि मैं हवशी हूँ। मुझे छूने से वह ऐसा चौंकती है जैसे उनपर कोई मेढ़क गिर पड़ा हो। कोई ऐसा नहीं है जो हवशियों को प्यार कर सके और हवशी भी कुछ हो नहीं सकते, जैसे के तैसे ही रहेंगे।

सीटी बजाना आरम्भ करके उसने कहा, "मैं परवाह नहीं करती।"

इवा का हृदय उथल पड़ा। उसने अपना शीर्ण शुभ्र हस्त टप्सी के कन्धे पर रखकर कहा, "टप्सी, अभागी टप्सी! मैं तुझे प्यार करती हूँ। मैं तुझे इसलिए प्यार करती हूँ कि तू अनाथ है, तेरे कोई मात-पिता नहीं है, न कोई बन्धु बान्धव हैं; मैं तुझे इसलिए प्यार करती हूँ कि तू बड़ी ही दु:खिनी और सताई हुई बालिका है। मैं तुझे प्यार करती हूँ और चाहती हूँ कि तू सुधर जाय। टप्सी, मैं बड़ी अस्वस्थ हूँ, और मैं सोचती हूँ कि मैं अब अधिक दिन नहीं बचूँगी; और तेरा यह नटखटपन देखकर मेरे जी को सचमुच बड़ी पीड़ा होती है।

मैं अब बहुत थोड़े दिनों की मेहमान हूँ। मैं चाहती हूँ कि और न सही केवल मेरा ख़याल कर के ही तू सुधरने की चेष्टा कर।

काली बालिका की आँखें आँसुओं से भर आईं और उस हिमसरीखे शुभ्र हस्त पर टपाटप बड़ी बड़ी बूँदें गिरने लगीं। उसी क्षण में सत्य विश्वास की एक किरण, स्वर्गीय प्रेम की एक किरण, उस ज्ञानान्ध अविश्वास-पूर्ण बालिका की आत्मा में प्रविष्ट हुई। टप्सी दोनों घुटनों के बीच सिर रख कर रो रही है और वह लावण्यमयी बालिका ज़रा झुक कर स्नेह-भरे नयनों से उसे देख रही है,—मानों कोई ज्योतिमान् देवदूत झुक कर किसी पापात्मा का पाप-पङ्क से उद्धार कर रहा है, इस बात की हूबहू तसवीर सी देख पड़ती है।

इवा ने कहा "अभागी टप्सी, क्या तू नहीं जानती कि ईश्वर हम सब को समान भाव से प्यार करते हैं? वह जितना मुझे प्यार करते हैं ठीक उतनाही तुझे भी। वह ठीक वैसे ही तुझे प्यार करते हैं जैसे मैं करती हूँ—बल्कि मुझसे अधिक, क्योंकि वह मुझसे बढ़ कर हैं। वह सुधरने में तेरी सहायता करेंगे; और अन्त में तू स्वर्ग में पहुँच सकती है, और सदा के लिए देवदूत हो सकती है। तेरा काला चमड़ा इसमें कोई बाधा न डालेगा, सफेद चमड़े वालों के लिए जैसे यह सब बाते हैं वैसे ही तेरे लिए। टप्सी, इन बातों को सोच!—टामकाका जिन ज्योतिर्मय आत्माओं के भजन गाता है तू भी उन आत्माओं की भाँति एक आत्मा हो सकेगी।"

टप्सी—प्यारी मिस इवा! प्यारी मिस इवा! मैं यत्न करूँगी, मैं यत्न करूँगी; मैंने पहले कभी इसकी परवाह नहीं की।

सेन्टक्लेयर ने इस समय पर्दा छोड़ कर मिस अफिलिया से कहा, "यह दृश्य देख कर इस समय मुझे अपनी माता का स्मरण आता है। उन्होंने मुझसे सच कहा था कि यदि हम अन्धे को आँख देना चाहते

हैं तो हमें ईसा के पथ पर चलना पड़ेगा। उन्हें अपने पास बुला लो और अपने हाथ उन पर रक्खो।"

मिस अफिलिया ने कहा; "हवशियों पर मुझे सदा से एक प्रकार की घृणा सी है। और यह सच्ची बात है कि मैं कभी इस बालिका को अपना शरीर-स्पर्श करने देने को तैयार नहीं हो सकती; पर मैंने नहीं सोचा था कि वह मेरे मन के भाव को ताड़ती है।"

सेन्टक्लेयर—यह बच्चे बहुत शीघ्र मन की बात ताड़ लेते हैं। उनसे मन के भाव छिपाना कठिन है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि किसी बालक को यदि तुम मन से घृणा करती हो तो ऊपर से उसके उपकार की चाहे जितनी चेष्टा क्यों न करो, वास्तव में उसकी चाहे जितनी भलाई क्यों न करो, जब तक उस पर तुम्हारा स्नेह भाव न होगा तब तक तुम्हारा वह रत्ती भर भी कृतज्ञ न होगा। यह बड़े अचरज की बात है पर आश्चर्य की बात होने पर भी है सच्ची।

अफिलिया—समझ में नहीं आता कि मैं इस भाव को कैसे दूर करूँ। ये हवशी मुझे अच्छे नहीं लगते, खासकर यह लड़की–कैसे मैं इस घृणा के भाव को दूर करूँ?

सेन्टक्लेयर—मालूम होता है इवा ने इस भाव को दूर कर दिया है।

अफिलिया—हाँ, वह कैसी प्रेममयी है! मानों प्रेम का अवतार ही है! उसने ईसा की सी प्रकृति पाई है। मेरी इच्छा होती है कि मैं भी उसकी सी होती! इवा से मैं बहुत कुछ सीख सकती हूँ।

सेन्टक्लेयर— हाँ, बड़े हो जाने से ही मनुष्य सब बातों का पण्डित नहीं बन जाता। बच्चों तक से उसे बहुतेरी बातें सीखने को रह जाती हैं।

उनतीसवाँ परिच्छेद ।

मृत्यु ।

इस संसार में सच्चा वीर कौन है ? जिसने अपनी दृढ़ भुजाओं के प्रताप से अनेक राजाओं का गर्व खर्व किया है, सहस्रों नर-नारियों पर आधिपत्य जमाया है, क्या वह सच्चा वीर है ? जिसके भय से निर्बल सदा थरथराते, कांपते रहते हैं, जिसकी निर्दयता को स्मरण कर रोमाञ्च हो आता है, क्या वह सच्चा वीर है ? नहीं, कभी नहीं। वीर वह है जो मौत से ज़रा भी नहीं डरता, सदा सुख-शान्ति से मरने को तैयार रहता है; वीर वह है जो संसार की भलाई के निमित्त, जन-साधारण के हितार्थ अपने जीवन का वलिदान करने में ज़रा भी सङ्कोच नहीं करता। सच्चा वीर वही है जो किसी को न सता कर जग में प्रेम का प्रवाह वहा कर मनुष्यों के अदम्य हृदयों को अपने वश में कर सकता है ।

इस छोटी नन्हीं वालिका को देखिए। यह अपने रोग की यन्त्रणा से अत्यन्त पीड़ित है, पर इसे अपनी ग़म नहीं, उसके लिए कोई दुःख नहीं प्रकट करती, न ज़रा सी आह ऊह या शिकायत ही है, पर दूसरों का दुःख देख कर आंसू वहा रही है, दूसरों के दुःख के ध्यान में अपनी पीड़ा भूल गई है। क्या इसके जीवन में सच्ची वीरता के लक्षण नहीं दिखाई देते ?

पाठक ! आइए, इवाञ्जेलिन के सोने के कमरे में चलें, देखें इवाञ्जेलिन क्या कर रही है, उसकी चिन्तायें क्या हैं ?

तीसरे पहर का समय है। इवा अपनी चारपाई पर पड़ी हुई

है। सामने उसकी छोटी बाइबल धरी हुई है। उसे कभी खोलती, कभी बन्द करती है, कभी थोड़ी देर तक पढ़ती है। इसी समय एका-एक उसे बराम्दे से अपनी माता की कर्कश आवाज़ सुनाई दी।

"क्यों री बदमाश! यहाँ खड़ी क्या उत्पात मचा रही है! बतला, तूने यह फूल क्यों तोड़ा?" इसी के बाद इवा को एक ज़ोर के तमाचे की आवाज़ सुनाई दी।

फिर उसने टप्सी को बोलते हुए सुना, "मेम साहब, ये सब मिस इवा के लिए—"

"मिस इवा का नाम लेकर कैसा अच्छा बहाना बनाती है! तू समझती है वह तेरे फूल चाहती है। तू किसी काम की नहीं है हबशिन! भाग अभागी यहाँ से।"

शक्ति न रहने पर भी क्षण भर में इवा अपनी खाट से उठ कर बराम्दे में आ पहुँची।

इवा—ओः, माँ, उसे मत भगाओ! मुझे फूल बड़े अच्छे लगते हैं; ये सब मुझे दे दो; मैं चाहती हूँ!"

मेरी—क्यों इवा, तेरा कमरा तो इस समय फूलों से भरा पड़ा है।"

इवा—"मुझे और चाहिएँ। टप्सी, वह सब फूल यहाँ ले आ।" टप्सी अब तक हाथ से सिर पकड़े खड़ी थी, इवा की बात सुन कर उसने धीरे धीरे जाकर बड़े सङ्कोच से फूल इवा के हाथ में दिये। टप्सी के चेहरे पर अब वह पहले का सा निस्सङ्कोच बेलाग और बेपरवाही का भाव नहीं दिखाई देता।

इवा ने उन फूलों को देख कर कहा, "बड़ा सुन्दर ग़ुलदस्ता बनाया है!"

वास्तव में टप्सी ने बड़े यत्न से भाँति भाँति के फूल और पत्तियाँ

चुन कर .गुलदस्ता बनाया था। इवा की बात सुन कर उसका मुख प्रफुल्ल हो गया।

इवा ने कहा, "टप्सी, तू बड़ी सुन्दरता से फूल सजाती है। मेरा एक खाली फूलदान पड़ा है, मैं चाहती हूँ कि तू इसके लिए कुछ फूलों का .गुलदस्ता नित्य बना लिया कर।" मेरी ने कहा, "बड़ी अनोखी बात है! वह क्या .गुलदस्ता बनावेगी?"

इवा—माँ, तुम्हारा इसमें क्या बिगड़ता है? जैसा टप्सी का जी चाहेगा बना लेगी, तुम उसे मत रोको।

मेरी—बेटी, अवश्य तू जो चाहे कर। फिर टप्सी से कहा, "टप्सी, इवा जो कहे सो करना।"

टप्सी ने सिर झुका कर आज्ञा ग्रहण की। फिर जब वह जाने लगी तो इवा ने देखा कि उसकी आँखों से आंसू बह रहे हैं।

इवा ने अपनी माँ से कहा, "माँ, तुम देखती हो, मैं जानती हूँ कि बेचारी टप्सी मेरे लिए कुछ करना चाहती है!"

मेरी—कुछ नहीं, करना धरना क्या चाहती है, वह ख़ाली उत्पात करना चाहती है। वह जानती है कि फूल तोड़ने की मनाही है, इसीसे वह तोड़ती है। पर तुम्हें यदि उसका फूल तोड़ना अच्छा लगता है, तो उसमें क्या हर्ज है?

इवा—माँ, मेरी समझ में टप्सी में पहले से अब बहुत फ़र्क़ है; वह सुधरने की बड़ी चेष्टा कर रही है।

मेरी ने बेपरवाही से हँस कर कहा, "अभी बहुत देर है। चेष्टा करने से यदि सुधरा जा सकता है तो अभी उसे बहुत दिनों तक चेष्टा करनी पड़ेगी।"

इवा—माँ! तुम तो जानती हो कि हर एक चीज़ सदा उसके प्रतिकूल रही है।

मेरी—यहाँ आये बाद तो उसके लिए सब कुछ अनुकूल है।

उसे कितना समझाया गया, कितने उपदेश दिये गये, आदमी किसी के लिए जहाँ तक कर सकता है, किया गया। फिर भी वह जैसी की तैसी है, और ऐसी ही रहेगी; तुम उसे नहीं सुधार सकती हो।

इवा—माँ, हम लोग बड़े स्नेह और यत्न से पलते हैं, हमारे माता-पिता, बन्धु-बान्धव सब हमको प्यार करते हैं, इसीसे हमें भले बनने का मौका रहता है, पर उस बेचारी को बचपन से ही कोई प्यार वा स्नेह करनेवाला नहीं था। फिर वह कैसे सुधरे ?

मेरी ने जमुहाई लेते हुए कहा, "यही होगा। जाने दो, देखो, आज कैसी गर्मी है।"

इवा—माँ, क्या तुम्हें विश्वास नहीं होता कि टप्सी भी कभी सुधर कर स्वर्गीय प्रकृति प्राप्त कर सकती है ?

मेरी—(ठठा कर) स्वर्गीय प्रकृति ! तुम्हारे सिवा और कोई इस बात तक पर विश्वास नहीं कर सकता कि वह सुधर भी सकती है।

इवा—पर माँ ! क्या ईश्वर ने उसे नहीं रचा है ? हम लोगों की भाँति टप्सी भी क्या ईश्वर की सन्तान नहीं है ?

मेरी—हाँ, यह हो सकता है। मैं मानती हूँ कि ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को बनाया है। अच्छा मेरी सूँघनेवाली शीशी कहाँ है ?

माता के मुँह से ऐसी बात सुन कर इवा ने आर्द्र स्फुट स्वर से कहा, "ओह कैसे दुःख की बात है !"

मेरी ने कहा, "दुःख की क्या बात है ?"

इवा—माँ, ये हबशी अच्छी शिक्षा मिलने से, स्नेह-पूर्वक इनसे व्यवहार करने से ये स्वर्गीय प्रकृति प्राप्त कर सकते थे, पर ये लोग बाल-बच्चों सहित नरक की ओर जारहे हैं, नित्य इन का पतन हो रहा है, कोई इनकी सहायता करनेवाला नहीं है।

मेरी—हम लोग इनकी सहायता नहीं कर सकते, इसकी चिन्ता

कर के मरना बेफ़ायदा है। मैं नहीं जानती कि इनके प्रति हमारा क्या कर्त्तव्य है; हमें अपने सुख-वैभव के लिए ईश्वर का कृतज्ञ होना चाहिए। नाहक़ औरों की चिन्ता करना व्यर्थ है।

इवा—मैं तो अपने सुख से सन्तुष्ट नहीं रह सकती। मुझे इन दीन-दुखियों की दशा देख कर बड़ी पीड़ा होती है।

मेरी—तुम्हारी यह बड़ी अनोखी पीड़ा है। मेरा, विश्वास है कि अपने धर्म के अनुसार यही ठीक है कि हम अपने सुख-वैभव के लिए ईश्वर के कृतज्ञ रहें।

पाठक, जान पड़ता है मेरी ने ऐंगलो इंडियनसंहिता से क्रिश्चियन-धर्म की शिक्षा पाई थी; इसीसे उसने बाइबल की दश आज्ञाओं (Ten commandments) पर एक दम हरताल फेर दी थी।

इवा ने अपनी माता से कहा, "माँ, मैं अपने सिर के कुछ बाल कटवाना चाहती हूँ।"

मेरी—क्यों?

इवा—मैं अपने प्रेमियों को इसमें से कुछ बाल अपने हाथ से देजाना चाहती हूँ। क्या तुम बूआ को बुला कर मेरे बाल नहीं कटवा दोगी?

मेरी ने दूसरे कमरे से मिस अफिलिया को पुकार कर बुलाया।

अफिलिया के आने पर इवा ने अपने घुँघराले बालों को हाथ में लेकर उन्हें खेल से हिलाते हुए कहा, "बूआ आओ, भेड़ को मूँड़ दो।"

सेन्टक्लेयर उसी समय इवा के निमित्त कुछ फल लिये हुए कमरे में आया और बोला, "यह क्या होरहा है!"

इवा ने कहा, "बाबा, मैं बूआ से अपने सिर के बाल कटवा रही हूँ—बहुत बढ़ गये हैं, इससे मेरे सिर में गर्मी चढ़ जाती है। इसके अतिरिक्त मैं कुछ बाल बांट भी जाना चाहती हूँ।"

मिस अफिलिया अपनी कैंची लेकर आई।

सेन्टक्लेयर—देखना जीजी, बड़ी होशियारी से काटना, वालों की शोभा मत बिगाड़ देना। नीचे नीचे के जो दिखाई नहीं पड़ते हैं सो काट दो। इवा के घुँघुराले वालों का मुझे अभिमान है।

इवा ने उदासी से कहा, "यह क्यों ?"

सेन्टक्लेयर—हाँ, तुम्हारे वाल उस समय सुन्दर रहने चाहिएँ जब मैं तुम्हें लेकर तुम्हारे चाचा के खेत पर हेनरिक को देखने चलूँगा।

इवा—वहाँ मैं कभी नहीं जाऊँगी, वावा, मैं उससे वहुत अच्छे देश को जारही हूँ। तुम मेरी वात का विश्वास करो! वावा! तुम क्या देखते नहीं हो कि मैं दिन दिन थकती जारही हूँ।

सेन्टक्लेयर—इवा, तुम मुझे दवा कर ऐसी भयङ्कर वात पर क्यों विश्वास कराना चाहती हो ?

इवा—केवल इसलिए कि यह सत्य है वावा; और, यदि तुम इस पर अब विश्वास कर लोगे, तो कदाचित् तुम इसके सम्वन्ध में मेरी भाँति अनुभव करोगे।

सेन्टक्लेयर चुप होकर व्यथित-हृदय से कतरे हुए कुञ्चित केशों की ओर देखने लगा। इवा वालों का एक एक गुच्छा उठा कर उत्सुकता से देखने लगी और उन्हें अँगुलियों के चारों ओर गुमेटने लगी और वीच वीच में शङ्कित होकर पिता के मुख की ओर निहारने लगी।

मेरी ने कहा, "अन्त में मुझे जिसका खटका था वही हुआ! जिस सोच से दिन दिन मेरा शरीर क्षय हुआ जाता है, मेरी आयु नष्ट हुई जाती है, वही हुआ। कोई मेरे दुःख-दर्द का साथी नहीं है। सेन्टक्लेयर, वहुत जल्द तुम देखोगे कि मैं ठीक कहती थी। सेन्टक्लेयर

ने बड़े तीखे और रूखेपन से कहा, "निस्सन्देह तभी तुम्हें शान्ति मिलेगी!"

मेरी रूमाल से अपनी आँखें ढक कर लेट गई।

इवा की नीली चमकीली आँखें एक वार पिता पर फिर माता पर पड़ने लगी। यह दृष्टि शान्त दृष्टि है, जीवन्मुक्त आत्मा की गूढ़दर्शी दृष्टि है; आज उसने अपने पिता और माता की प्रकृति का पूर्ण अनुभव पाया।

उसने हाथ के इशारे से पिता को अपने पास बुलाया। वह आकर उसके पास बैठ गया।

इवा ने कहा, "बाबा, मेरी शक्ति दिन दिन क्षीण होती जारही है, और मैं जानती हूँ कि मुझे शीघ्र ही इस संसार को छोड़ना पड़ेगा। कुछ बातें ऐसी हैं जो मैं तुमसे कहना चाहती हूँ और कुछ काम भी ऐसे हैं जिन्हें करना मेरा कर्त्तव्य है, उन्हें करने के लिए भी मैं तुमसे प्रार्थना करने वाली हूँ; और तुम इस बात से ऐसे नाराज़ हो कि मुझे एक शब्द भी मुँह से नहीं निकालने देते। पर मेरे जी को ये बातें बहुत खलती हैं, मैं कहे बिना नहीं रह सकती। तुम अब अपनी प्रसन्नता से मुझे कहने की आज्ञा दो!"

सेन्टक्लेयर ने एक हाथ से आँखें पोंछते हुए और दूसरे से इवा का हाथ पकड़ते हुए कहा, "मेरी बच्ची, मैं राज़ी हूँ, जो कहना हो कहो"।

इवा—अच्छा बाबा, यदि तुम मेरी बात मानते हो तो, मैं अपने सब नौकरों को इकट्ठे यहाँ देखना चाहती हूँ। मुझे उनसे कुछ बातें कहनी हैं।

सेन्टक्लेयर ने बड़ी सहिष्णुता से कहा, "अच्छा।"

मिस अफिलिया ने सब दास-दासियों को बुलवा भेजा। थोड़ी ही देर में सारे दास-दासी उस कमरे में आकर इकट्ठे हो गये।

इवा तकिये के सहारे लेटी हुई है, उसके मुक्त केश मुख के चारों ओर बिखरे हुए हैं, दोनों आंखों के किञ्चित् रक्ताभ हो जाने से शीर्ण शरीर का शुभ्र वर्ण और भी शुभ्र दिखाई दे रहा है। नेत्रों से मानों आत्मा की उज्ज्वल ज्योति निकल रही है। बालिका एकाग्रता से प्रत्येक दास दासी का मुख देख रही है।

दास-दासियों का जी सहसा उमड़ उठा। वह आध्यात्मिक कान्तिमय मुख, कतरे हुए पास पड़े लम्बे बाल, सेन्टक्लेयर का शोक-सन्तप्त मुख, मेरी की आह, ये सब बातें उनके कोमल हृदय में चुभ गईं; और सब के सब घोर विषाद से ठण्ढी सांसें लेने लगे। थोड़ी देर के लिए घर में स्मशान का सा सन्नाटा छा गया।

इवा ने अपना सिर उठाया और घुमा कर बड़े आग्रह से एक नज़र सब पर डाली। सब के मुखों पर उदासीनता और भय के चिह्न थे। दासियाँ कपड़ों से मुँह ढांक ढांक कर सिसकने लगीं।

इवा ने कहा, "मेरे प्यारे बन्धुओं, मैं तुम्हें प्यार करती हूँ। इसलिए मैंने तुम सब को बुलवाया है, मैं तुम सब को हृदय से चाहती हूँ; और मुझे तुम लोगों से कुछ बातें कहनी हैं, मैं चाहती हूँ कि तुम लोग सर्वदा उन्हें याद रक्खोगे, क्योंकि मैं तुम्हें छोड़ रही हूँ। अब मैं बहुत ही थोड़े दिनों की मेहमान हूँ।"

उसके इतना कहने के बाद, रोने पीटने चिल्लाने और सर्द आहों से वह घर इस तरह भर गया कि उस बालिका की कमज़ोर आवाज़ सुनने की सम्भावना न रही। वह कुछ देर चुप रही फिर ऐसे स्थिर कण्ठ से बोली कि सब के सब चुप हो गये और वह कहने लगी—

"यदि तुम लोगों का मुझ पर हार्दिक प्रेम है तो तुम्हें मेरे बोलने में विघ्न नहीं डालना चाहिए। मेरा कथन ध्यान से सुनो। मैं तुम्हें तुम्हारी आत्माओं के सम्बन्ध में कुछ कहना चाहती हूँ। तुम में से

बहुतेरे, मुझे दुःख है कि बड़े बेपरवाह हैं। तुम लोग केवल इस जगत् की बातें सोचते रहते हो। मैं चाहती हूँ कि तुम लोग इस बात का स्मरण करो कि इसके अतिरिक्त एक और सुन्दर जगत् है, जहाँ ईसा रहते हैं। मैं वहाँ जाती हूँ, तुम्हें भी वहाँ जाने का अधिकार है। पर यदि तुम वहाँ जाना चाहते हो तो तुम्हें तुम्हारा निकम्मा, चिन्ता शून्य और बेपरवाह जीवन नहीं बिताना चाहिए। तुम्हें अपना सुधार करना चाहिए। तुम्हें स्मरण रखना चाहिए कि तुममें से प्रत्येक मनुष्य स्वर्गीय जीवन प्राप्त कर सकता है। तुम भले बनने की कोशिश करोगे तो ईश्वर तुम्हारी सहायता करेंगे। ईश्वर सदा भले कामों का सहायक होता है। तुम्हें ईश्वर की प्रार्थना करनी चाहिए और तुम्हें पढ़ना चाहिए।

इतना कहते हुए बालिका कुछ रुक कर करुणादृष्टि से उन लोगों की ओर देख कर फिर दुःखित हृदय से बोली, "हाय प्यारे बन्धुओं! कितने परिताप का विषय है कि तुम पढ़ना नहीं जानते! तुम्हें कितना दुःख है!" इसके बाद ही उसने तकिये से मुँह छिपा लिया और सिसकने लगी। जिन्हें लक्ष्य करके इवा ये बातें कह रही थी, जो उसे चारों ओर से घेरे हुए खड़े थे, वे सबके सब भी रो पड़े।

इवा उन लोगों का अवरुद्ध क्रन्दन शब्द सुन कर आत्म-संवरण करके अपना अश्रुपूर्ण मुख उठा कर उज्ज्वल मृदुल मुसक्यान से बोली, "कोई चिन्ता नहीं। मैंने सदा तुम लोगों के लिए प्रार्थना की है, और मैं जानती हूँ कि तुम्हारे पढ़ना न जानने पर भी अपना सुधार करने में ईश्वर तुम लोगों की सहायता करेंगे। तुम उस ईश्वर से सहायता माँगो, और अपने सुधार की चेष्टा करो, जब तुमसे बन सके धर्म-पुस्तक पढ़ना। मुझे आशा है कि मैं तुम सब लोगों को स्वर्ग में देखूँगी।

इवा की बात समाप्त होने पर टाम, मामी और कुछ प्राचीन भृत्यों ने धीरे धीरे कहा, "पिता की इच्छा पूर्ण हो।" इनमें जो बहुत छोटे और चिन्ता-हीन थे, उनका हृदय भी उस समय दुःख से भर गया और घुटनों में सिर रख कर सिसकने लगे। इवा ने कहा, "मैं जानती हूँ। तुम सब मुझे प्यार करते हो।" इतने ही में चारों ओर से हाँ, हाँ, अवश्य अवश्य और 'ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे' की ध्वनि उठने लगी।

इवा—हाँ, मैं जानती हूँ, मैं जानती हूँ, तुम सब मुझे प्यार करते हो। तुममे से एक भी ऐसा नहीं है जिसने मुझे स्नेह न किया हो; और मैं चाहती हूँ कि तुम्हें कोई ऐसी चीज़ दे जाऊँ कि उसे जब तुम देखो तो मुझे स्मरण करते रहो। मैं तुम सबको अपने बालों की एक एक लट देती हूँ; और जब तुम इसे देखना तो सोचना कि मैं तुम लोगों को प्यार करती थी, मैं स्वर्ग में चली गई हूँ और मैं चाहती हूँ कि तुम सबको वहाँ देखूँ"।

जब रोते और सिसकते हुए वे सब दास-दासी उस नन्हीं बालिका को घेरे खड़े हुए थे और वे उसके बालों को उसके प्यार का अन्तिम चिह्न समझ कर बड़े प्रेम और भक्ति से ले रहे थे, उस दृश्य का वर्णन करना असम्भव है। कोई रोता हुआ ज़मीन पर लोटा जाता था, कोई वाष्पावरुद्ध कण्ठ से ईश्वर से बालिका के मङ्गल की प्रार्थना कर रहा था, कोई उसके कपड़ों का सिरा चूम रहा था, जिसके मन में जैसे आता था बालिका के लिए अपना शोक और प्रेम दिखलाता था।

जब सब लोग स्मरण-चिह्न स्वरूप बालों की लटें पा चुके तो मिस अफिलिया ने यह समझ कर कि भीड़ रहने से रोगी को बेचैनी होगी, उन सभों को इशारे से बाहर जाने को कहा।

अन्त में सब चले गये, केवल टाम और मामी दो रह गये।

इवा ने कहा, "टाम काका ! यह एक सुन्दर गुच्छा तुम्हारे लिए मैंने रख छोड़ा है। यह सोच कर बड़ा ही हर्ष होता है कि मैं तुम्हें स्वर्ग में देखूँगी—मुझे इसका पूर्ण विश्वास है।" फिर सस्नेह अपनी बूढ़ी धाय मामी से लिपट कर बोली, "मामी ! तुम बड़ी सूधी, और बड़ी दयालु हो, मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूँ। मैं जानती हूँ कि तुम भी स्वर्ग में पहुँचोगी।"

मामी ने ज़ोर से रोते हुए कहा, "बच्ची, तेरे बिना मैं कैसे जीऊँगी। तुझे छाती से लगा कर मैं अपनी सन्तानों का दुःख भूली हुई थी।"

मिस अफिलिया ने मामी और टाम को धीरे से वहाँ से बाहर कर दिया, और सोचा कि सब चले गये; पर जैसे ही वह घूमी, उसने देखा कि टप्सी वहाँ खड़ी थी। मिस अफिलिया ने एका एक कहा, "तू कहाँ से आ पड़ी ?" टप्सी ने आँखों से आँसू पोछते हुए कहा, "मैं यहीं थी।" मिस इवा, मैं सदा से बुरी लड़की हूँ; पर क्या आप मुझे भी अपने बालों की एक लट नहीं देंगी।"

इवा—हाँ, टप्सी, तुझे ज़रूर दूँगी। यह ले—जब जब इन बालों को देखना तब तब अपने मन में सोचना कि मैं तुझे प्यार करती थी और जी से चाहती थी कि तू एक भली लड़की हो जाय ! टप्सी ने अकपट-चित्त से कहा, "मिस इवा, मैं भली बनने की चेष्टा कर रही हूँ। पर भली बनने का काम बड़ा कठिन है ! मेरी समझ में मुझे भली बनने का अभ्यास ही नहीं है।"

इवा—इसे ईश्वर जानते हैं टप्सी; ईश्वर तुझे प्यार करते हैं। वह तेरी सहायता करेंगे।

टप्सी रोते हुए धीरे से वहाँ से चली गई। बालों का गुच्छा उसने अपनी छाती में यत्न से छिपा लिया।

सब के चले जाने पर मिस अफिलिया ने किवाड़ बन्द कर लिये।

इन सब बातों के समय मिस अफिलिया की आँखों से भी लगातार आँसुओं की धारा बह रही थी, पर वह बुद्धिमती रमणी अपने शोक को रोक कर रोगी को आराम पहुँचाने की चिन्ता कर रही थी। और चारों ओर की रोआरोहट से कहीं रोगी का रोग बढ़ न जाय इस डर से वह स्वयं चुप बैठी थी।

सेन्टक्लेयर भी एक हाथ से आँखें ढाँपे हुए चुपचाप कन्या के पास बैठे थे। सबके चले जाने पर भी वह उसी तरह बैठे रहे।

इवा ने पिता के हाथ पर अपना हाथ रखते हुए कहा, "बाबा!" सेन्टक्लेयर सहसा चौंक उठा, उसका सारा शरीर रोमाञ्चित हो गया, लेकिन कुछ बोला नहीं।

इवा ने फिर पुकारा, "बाबा!"

सेन्टक्लेयर ने तीव्र-यन्त्रणा-पीड़ित कण्ठ से कहा—"अब नहीं सहा जाता। विधाता मुझ पर बड़े निर्दयी हैं"।

मिस अफिलिया ने कहा, "यह ईश्वर की चीज़ है। क्या उसे अधिकार नहीं है कि इसका जो चाहे करे?"

"शायद ऐसा ही हो—लेकिन इससे कष्ट सहना कुछ सहज तो नहीं होता।" बड़े शुष्क और कठिन स्वर से, अश्रु-सहित नेत्रों से सेन्टक्लेयर ने यह बात कह कर मुँह फेर लिया। इवा ने उठ कर पिता की गोद में अपना सिर धरते हुए कहा, "बाबा! तुम्हारी बातें सुन कर मेरा हृदय विदीर्ण हुआ जाता है। तुम इतना दुःख मत करो।"

इवा को रोते हुए देख कर सबको बड़ा भय हुआ। उसके पिता की चिन्ता-धारा दूसरी ही ओर बह चली।

सेन्टक्लेयर ने कहा, "मेरी प्राण, इवा! चुप रह। मुझे भ्रान्ति हो गई थी, मैंने अन्याय किया। तुम 'जो सोचने को, जो करने को

कहोगी मैं वही सोचूँगा, वही करूँगा। तुम मेरे लिए दुःख मत करो, सिसको मत। मैं ईश्वर को आत्मसमर्पण करूँगा। ईश्वर पर दोषारोप करके मैंने बड़ा अन्याय किया. फिर कभी ऐसी बात मुँह से न निकालूँगा।

इवा बहुत थकित की भाँति अपने पिता की गोद में पड़ी रही और वह उसे प्यारे प्यारे शब्दों से सान्त्वना देने लगा।

मेरी वहाँ से उठ कर अपने सोने के कमरे में चली गई, वहाँ उसे बारम्बार मूर्च्छा होने लगी।

इवा के पिता ने विषाद से मुस्कुरा कर कहा, "इवा, मुझे तो तुमने बालों की एक भी लट नहीं दी।"

इवा ने हँस कर कहा, "बाबा, तुम्हारे तो सभी हैं"। तुम्हारे और माँ के ही हैं और बूआ जितनी लटें चाहें उन्हें तुम दे देना। मैंने केवल अपने दास-दासियों को अपने हाथ से दिये हैं, क्योंकि बाबा, तुम जानते हो मेरे चले जाने के बाद उन्हें शायद कोई न देता, और मुझे आशा है कि इन बालों को देखकर वे मेरा स्मरण करेंगे... "बाबा, तुम क्रिश्चियन हो या नहीं।" इवा ने सन्देह से यह बात पूछी।

सेन्टक्लेयर—तुम क्यों पूछती हो ?

इवा—तुम ऐसे भले मानस होकर भी क्रिश्चियन नहीं हो इस पर मुझे आश्चर्य है।

सेन्टक्लेयर—क्रिश्चियन के क्या गुण होते हैं, इवा ?

इवा—जो क्राइस्ट को सब चीज़ों से अधिक प्यार करे।

सेन्टक्लेयर—क्या तुम करती हो इवा ?

इवा—निस्सन्देह।

सेन्टक्लेयर—तुमने तो कभी उसे देखा नहीं ?

इवा—नहीं देखने से क्या बनता बिगड़ता है? मेरा उस पर विश्वास है, और कुछ दिनों में मैं उसे देख भी लूँगी।"

यह कहते कहते इवा का मुख आनन्द से उज्ज्वल होगया। सेन्टक्लेयर ने और कुछ न कहा। यह भाव उसने पहले अपनी माता में देखा था, पर उसके अपने हृदय में कोई ऐसा भाव नहीं था।

इसके बाद इवा का रोग दिन दिन बढ़ता गया, अब उसके जीने की कोई आशा न रही। मिस अफिलिया दिन रात सिरहाने बैठी उसकी सेवा-शुश्रूषा करती थी। इस विपद के समय उसकी असाधारण धीरता, शुश्रूपा-तत्परता और बुद्धिमत्ता देख कर कोई भी उसे मन ही मन सराहे बिना नहीं रह सका। वह ठीक समय पर औषध-पानी देने में, रोगी के कमरे को स्वच्छ और सुखदायक बनाने में बड़ी पक्की थी। रोगी का कोई काम हो उसे वह बड़ी ख़ुशी से करती थी, किसी काम से नाक भौंह न सिकोड़ती थी। किसी काम में वह ज़रा भी त्रुटि न करती थी। जो लोग पहले मन ही मन मिस अफिलिया पर कुलबुलाते थे वे भी कहने लगे कि वास्तव में मिस अफिलिया एक ही स्त्री है, यह यहाँ न होती तो एक दिन भी इवा की सेवा-शुश्रूषा करना भारी हो जाता।

टाम इवा के कमरे में अधिक रहता था। वह कभी इवा को गोद में उठा कर बराम्दे में टहलाता, कभी प्रभात-कालिक शीतल मन्द सुगन्ध वायु सेवन कराने के लिए बाग में ले जाता और कभी कभी वृक्षों के नीचे बैठ कर पूर्व की भाँति इवा को उत्तम उत्तम भजन सुनाता था।

इवा का पिता भी प्रायः उसे गोद में लेकर घुमाता था, पर उसका शरीर विशेष सबल न होने के कारण वह जल्दी थक जाता था। तब इवा कहती थी, "बाबा, मुझे टाम की गोद में दे दो। वह मुझे

गोद में लेना चाहता है, मेरे लिए कुछ कर सकने पर उसे बड़ा आनन्द होता है।"

सेन्टक्लेयर—सोई बात यहाँ भी है।

इवा—बाबा, तुम तो मेरे लिए सभी कुछ करते हो, मैं तो तुम्हारी हूँ ही। तुम रात भर मेरी खाट के पास बैठे रहते हो और टाम बिचारा केवल मुझे गोद में लेकर घूमने और भजन गाने पाता है। बाबा! उसे मुझे लेकर घूमने में तनिक भी कष्ट नहीं होता।

इवा की सेवा करने की इच्छा केवल टाम ही को नहीं रहती थी और भी घर के सब दास-दासी उसके लिए जी से कुछ करना चाहते थे और उन बिचारों से जो कुछ होता था करते भी थे।

मामी इवा की सेवा करने के लिए बहुत छटपटाती थी। पर उसे कोई अवसर ही न मिलता था, क्योंकि दिन रात मेरी उसे अपनी ही टहल बन्दगी से फुर्सत न देती थी। मेरी कहती कि कन्या की पीड़ा के कारण उसका मन बड़ा बेचैन हो गया है, उसकी यन्त्रणा के मारे कोई चैन नहीं लेने पाता था। रात को मेरी मामी को कम से कम बीस बार जगा कर तङ्ग करती थी। कभी पैर दबवाती, कभी सिर पर जल डलवाती; कभी रूमाल ढुँढ़वाती; कभी कहती जा देख आ इवा के कमरे में कैसा शोर हो रहा है; कभी कहती रोशनी आ रही है पर्दा डाल दे; कभी कहती अँधेरा है, पर्दा उठा दे। दिन में भी मामी को इवा के कमरे को छोड़ कर, और इधर उधर चारों ओर दौड़ाती रहती थी, इससे मामी कभी कभी छिप कर क्षण भर के लिए इवा को देख आती थी।

एक दिन मेरी ने कहा, "इस समय अपने शरीर के विषय में विशेष सावधान रहना मैं अपना कर्त्तव्य समझती हूँ। एक तो मैं योंही कमज़ोर, तिस पर इवा की सेवा-शुश्रूषा और सम्हाल का सारा भार मुझ पर।"

सेन्टक्लेयर—क्यों प्यारी, सचमुच ? मैं तो समझता था कि वहिन ने तुम्हें उस भार से छुट्टी दे रखी है।

मेरी—ठीक है तुम मर्द हो, मर्द की सी बातें करते हो। तुम्हें पता नहीं कि सन्तान की पीड़ा माता के मन पर कैसा असर डालती है। भला ऐसी दशा में माँ का मन चिन्ता-रहित हो सकता है ? हाय ! मेरे मन की दशा को कोई नहीं समझता। सेन्टक्लेयर, मैं तुम्हारी तरह वेपरवाह वन कर नहीं रह सकती।"

सेन्टक्लेयर को मेरी की वात पर ज़रा हँसी आई! इस दुःख के अवसर पर भी हँसी आने से आप सेन्टक्लेयर को निर्दयी न समझें। ऐसी उज्ज्वल शक्ति की लहरों में उस क्षुद्र आत्मा की परलोक-यात्रा आरम्भ हुई थी। ऐसे शीतल-मन्द-सुगन्ध पवन के झोंके खाती हुई वह जीवन की क्षुद्र नौका स्वर्ग की ओर अग्रसर हो रही थी कि इस वात का ध्यान तक न आता था कि यह सव उसकी मौत के सामान हैं। वालिका को कोई विशेष शारीरिक यन्त्रणा न थी; गुप्त रीति से शनैः शनैः दिन दिन उसकी निर्वलता वढ़ती जाती थी, शान्ति और पवित्रता की एक मधुर तरङ्ग वालिका के चारों ओर उछल रही थी; उसके मुख की वह सात्विक ज्योति, हृदय की वह गम्भीर स्नेह-राशि, आत्मा का वह जीवित विश्वास, प्राणों की वह स्थिर प्रफुल्लता देख कर किसी के हृदय में अशान्ति न रहने पाती थी। सेन्टक्लेयर के हृदय में एक अद्भुत और नवीन शान्ति का विकाश हो रहा था। यह शान्ति ईश्वर-निर्भरता के भाव से उत्पन्न हुई शान्ति न थी, तो क्या यह आशा थी ? असम्भव। यह भूत भविष्य से सर्वथा निराली वर्त्तमान की एक शान्तिमयी अवस्था है। यह शान्ति सेन्टक्लेयर के मन को ऐसी अच्छी लगी कि अव भविष्य सोचने की इच्छा ही नहीं होती।

अपनी आसन्न मृत्यु के सम्वन्ध में इवा के अपने हृदय में जो

पूर्वाभास प्राप्त हुआ था उसे विश्वासी परिचारक टाम के सिवा और कोई न जानता था। इवा पिता का हृदय दुखने के डर से उससे अपनी दशा छिपाती थी पर टाम से वह अपनी कोई बात कहने में न सकुचाती थी। मृत्यु के कुछ ही पूर्व जब शरीर से आत्मा का बन्धन ढीला पड़ने लगता है, तब हृदय को आपही आप मृत्यु की ख़बर लग जाती है। इवा ने जब जान लिया कि मृत्यु बहुत निकट आगई है, तो उसने टाम को यह बात जनाई। उस दिन से टाम अपनी कोठरी में न सोकर इवा के कमरे के पास बराम्दे में लेटा रहता था कि जिसमें काम पड़े तुरन्त वहाँ पहुँच जा सके।

मिस अफिलिया ने एक दिन उससे कहा, "टाम! तुम कुत्ते की तरह इधर उधर क्या पड़े रहते हो? मैं तो समझती थी कि तुम एक सभ्य की भाँति अपनी कोठरी में सोते होगे।"

टाम—हाँ, मैं अपने कमरे में ही सोया करता हूँ पर अब—

अफिलिया—अब क्या?

टाम—जी, ज़रा धीरे बोलिए, सेन्टक्लेयर साहब न सुन लें। पर अब आप जानती हैं कि दुलहे की ख़बर रखने के लिए किसीको जागना चाहिए

अफिलिया—तुम्हारे कहने का क्या मतलब है?

टाम—आप जानती हैं बाइबल में लिखा है, "अर्ध रात्रि के समय वहाँ बड़ा शोर-गुल हुआ, देखो दुलहा आ पहुँचा।" मिस फीली, मैं हर रात को उसी की बाट देखता हूँ। मैं यहाँसे हटकर नहीं सो सकता।

अफिलिया—क्यों, टाम काका, तुम ऐसा क्यों सोचते हो?

टाम—मिस इवा मुझसे बहुत सी बातें कहती है। परमात्मा आत्मा के पास अपना दूत भेजते हैं। मिस फीली, यह पवित्र बालिका

जब स्वर्ग में जाने लगेगी तब स्वर्ग के सारे द्वार खुल जायँगे, हम सब स्वर्ग की उज्ज्वल प्रभा का दर्शन पा कर कृतार्थ होंगे। उस समय मैं पास ही रहना चाहता हूँ।

अफिलिया—टाम काका, क्या मिस इवा ने तुमसे कहा है कि और दिनों की अपेक्षा आज उसे अधिक तकलीफ़ है?

टाम—नहीं, पर आज सवेरे उसने मुझसे यह कहा था कि मैं परलोक के बहुत पास पहुँच गई हूँ। देवदूत उसे सन्देशा सुना गये हैं।

कोई रात के १० बजे होंगे जब मिस अफिलिया और टाम में यह बातें हुईं। उस समय मिस अफिलिया बाहरी दरवाज़ा बन्द करने आई थी।

मिस अफिलिया थोड़े में घबराने वाली स्त्री न थी, सहज में उसका मन अधीर होनेवाला न था। पर टाम की वे गम्भीर, विश्वास-पूर्ण बातें सुन कर वह बड़ी चकराई। और दिनों की अपेक्षा उस दिन संध्या से ही इवा अधिक प्रसन्न और स्वस्थ जान पड़ती थी। इवा बिछौने पर बैठी यह ठीक कर रही थी कि अपने गहने किसे देगी तथा अपनी चाह की और चीज़ें किसे देगी। उस दिन बहुत दिनों के बाद इवा के शरीर में थोड़ी सी शक्ति देख पड़ी थी। उस दिन संध्या को सेन्टक्लेयर ने कमरे में आने पर उसे और दिनों से स्वस्थ और सबल देख कर कहा, "इवा आज बहुत अच्छी जान पड़ती है। बीमारी के बाद ऐसी अच्छी किसी दिन नहीं जान पड़ी थी।" फिर रात को सोने के लिए जाते समय मिस अफिलिया से कहा, बहिन, ईश्वर की कृपा से आज इवा और दिनों से अच्छी जान पड़ती है। आशा है शीघ्र ही आराम हो जायगी।" इतना कह कर सेन्टक्लेयर अपने कमरे जाकर सुख की नींद सोया।

देखते देखते आधी रात का समय आ पहुँचा। घर में सब सो रहे थे। पर अफिलिया की आँखों में नींद का नाम न था। वह बड़ी एकाग्रता से इवा का मुख निहार रही थी। क्षण क्षण पर मुख का भाव देख रही थी। एकाएक इवा के मुख का भाव ऐसा बदला, मानो अब उसके लिए स्वर्ग से दूत आ पहुँचे। यह अवस्था देखते ही मिस अफिलिया तत्काल दरवाज़ा खोल कर बाहर आई। टाम बाहर बैठा हुआ था। रात को उसने पल भर को आँखें नहीं बन्द कीं। अफिलिया ने उसे देखते ही कहा, "टाम जल्दी से डाक्टर को लाओ। क्षण भर की भी देर मत करो।" टाम उधर डाक्टर के यहाँ गया, इधर मिस अफिलिया ने आ कर सेन्टक्लेयर के दरवाज़े की कुंडी हिलाई।

उसने कहा, "भैया, जल्दी बाहर आओ।"

इन शब्दों का कान में पड़ना कहिए कि सेन्टक्लेयर के हृदय पर साँप सा लोट गया, उसने समझ लिया कि उसके सत्यानाश की घड़ी आ पहुँची। वह झटपट इवाञ्जेलिन के कमरे में पहुँचा।

वहाँ जाकर देखा तो इवाञ्जेलिन के मुख पर कष्ट का कोई चिह्न न था, सदा का सा एकाग्र तथा मधुर-भाव बालिका के मुख पर विराज रहा था। तब कैसे अनुमान हुआ कि आज इवा की घड़ी पूरी हो गई है? उसके शरीर में एकदम सुस्ती दौड़ गई थी, हाथ पैर बर्फ़ की भाँति ठण्डे हो गये थे। केवल मुख-कमल आध्यात्मिक ज्योति के कारण ज्यों का त्यों खिला हुआ था, ज़रा भी नहीं मुरझाया था।

बड़ी जल्दी टाम डाक्टर को लेकर पहुँच गया। डाक्टर ने दबी ज़बान से मिस अफिलिया से पूछा, "यह दशा कितनी देर से पलटी है?"

अफिलिया—आधी रात के बाद अवस्था पलटने लगी थी।

डाक्टर के घर में प्रवेश करने पर लोगों का शोर-गुल सुन कर मेरी

जाग उठी और तत्काल इवा के कमरे में आ कर ज़ोर से कहने लगी, "सेन्टक्लेयर ! दीदी ! क्या हुआ ?" सेन्टक्लेयर ने अवरुद्ध और टूटे हुए स्वर से कहा, "चुप रहो ! और होता क्या ? इवा विदा हो रही है।"

मामी ने ये शब्द सुने और रोते हुए सारे नौकर-चाकरों को जगा दिया। घर के सब लोग जाग उठे। बराम्दे में भीड़ लग गई। घर में केवल दौड़-धूप का शब्द सुनाई देने लगा। पर सेन्टक्लेयर ने न कुछ कहा न सुना, चुप एक-टक निद्रित बालिका के मुख की ओर निहारता रहा।

थोड़ी देर के बाद आप ही आप बोला, "बेटी, यदि एक बार जाग पड़ती। यदि एक बार और इस मुख की मधुर वाणी सुन लेता।" यह कह कर उसने इवा के कान के पास मुँह लेजाकर कहा, "बेटी इवा।" यह शब्द सुन कर उन दोनों सुधावर्षी सुदीर्घ नेत्रों का पर्दा हट गया। उसने सिर उठा कर बोलने की चेष्टा की। पर शरीर बेदम था।

सेन्टक्लेयर ने कहा, "इवा ! तू मुझे पहचानती है ?" बालिका ने अस्फुट स्वर से कहा, "बाबा ! और बड़े कष्ट से अपनी दोनों छोटी छोटी भुजायें उठा कर पिता के गले में डाल दीं। पर देखते देखते वह दोनों हाथ लटक गये। इस समय पल भर के लिए उसके चेहरे का भाव विकृत हुआ। यह अन्तिम घड़ी है। आत्मा देह को छोड़ कर जाने की तैयारी में है। इवा के मुख-कमल पर पल भर के लिए भयङ्कर यन्त्रणा के चिह्न देख कर सेन्टक्लेयर का धीरज हाथ से जाता रहा। उसे कष्ट से साँस लेते देख कर बोल उठा, "अरे टाम ! यह भयङ्कर कष्ट सहा नहीं जाता। इवा का कोई कष्ट मेरे प्राण नहीं सह सकते। मेरी जान गई, तुम प्रार्थना करो, जिसमें यह सङ्कट शीघ्र टल जाय।

टाम की आँखों से आँसुओं की झड़ी लगी हुई थी। वह अपने मालिक की यह दशा देख कर आकाश की ओर मुख करके परमेश्वर से प्रार्थना करने लगा। विश्वास और भक्ति में भी क्या अद्भुत शक्ति है! टाम की प्रार्थना सुनी गई। पल भर में इवा की वह यन्त्रणा दूर हो गई। टाम बोल उठा, "धन्य भगवन्! धन्य पिता! सारी यन्त्रणाओं का अन्त आगया है।" बालिका के वह दोनों सुदीर्घ नेत्र स्वर्ग की ओर लगे हुए हैं। वह विशाल और स्थिर दृष्टि से पुकार कर कह रही है—संसार के सारे कष्ट और यन्त्रणायें दूर हो गईं।

सेन्टक्लेयर ने धीरे से कहा, "इवा!"

उसने नहीं सुना।

फिर उसके पिता ने कहा, "इवा, कहो तुम क्या देख रही हो?

वह मुख-कमल फिर सुमधुर हास्य से खिल उठा, बालिका ने अस्फुट स्वर से कहा, "अहा! प्रेम—आनन्द—शान्ति तत्काल देह जीवन-शून्य हो गई।

आत्मा ने मृत्यु को पार करके अमरत्व प्राप्त किया! निर्मल प्रकृति देव-बाला ने पाप और अत्याचार-पूर्ण संसार से कूच कर भगवान की गोद में आसरा लिया।"

—:o:—

तीसवाँ परिच्छेद ।

मृत्यु के उपरान्त ।

इवाञ्जेलिन की निर्मल आत्मा मङ्गलमय के मङ्गल धाम को चली गई; और जीवन-रहित अनित्य देह घर में पड़ी हुई है। उसके शयनागार की पत्थर की मूर्त्तियाँ और चित्रादि सब सफ़ेद वस्त्रों से ढके हुए रक्खे हैं। घर में गहरा सन्नाटा है, केवल बीच बीच में पैरों की मन्द मन्द आहट सुन पड़ती है। बन्द खिड़कियों से बाहर का धुँधला प्रकाश अन्दर आ कर घर के सन्नाटे को और भी बढ़ा रहा है।

बिस्तरे सफ़ेद चादर से ढके पड़े हैं, और उन्हीं पर नन्हीं बालिका सोई हुई है। पर यह वह नींद है, जो कभी खुलने की नहीं।

बालिका की देह-लतिका पूर्व की भाँति श्वेत वस्त्र धारण किये हुए पड़ी है; उषा की किरणें यवनिका को पार करके मृत्यु छाया-वृत तुषार-शीतल देह पर उज्ज्वलता फैला रही हैं, मस्तक एक ओर को झुका पड़ा है—मानों बालिका सचमुच सो रही है;—केवल वह समग्र आनन्द-व्यापिनी शोभा, आनन्द और शान्ति की अपूर्व सम्मिलनश्री देखने से ही पता लगता है कि, यह निद्रा क्षणिक नहीं है, यह निद्रा आत्मा का अनन्त पवित्र विश्राम है।

इवा ! तुझ सरीखों की मृत्यु नहीं होती, न मृत्यु की छाया है, न अन्धकार; प्रातःकाल के प्रकाश में जिस प्रकार शुक्र छिप जाता है, उसी प्रकार तू लोगों की आँखों की ओट हो गई है। बिना युद्ध तू ने गढ़ जीत लिया, बिना विरोध राजमुकुट ग्रहण कर लिया।

सेन्टक्लेयर शय्या के पास खड़ा हुआ एकटक कन्या की ओर देख रहा है, मानों वह किसी विचार में मग्न हो कर सोच रहा है। पर कौन जाने क्या सोच रहा है ? जब से "वह चल बसी" यह शब्द सेन्टक्लेयर के कान में पड़े हैं, तब से उसे चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार दिखाई देता है। उसके चारों ओर सब लोग बातचीत कर रहे हैं, उसकी ध्वनि भर उसके कान में पड़ती है। किसी के कुछ पूछने पर वह अन्य-मनस्कता से उत्तर देता है। जब उससे पूछा गया कि इवा की देह को कब और कहाँ समाधि दी जायगी, तब उसने झल्ला कर उत्तर दिया "मैं नहीं जानता।"

एडाल्फ और रोज़ा मृत बालिका के कमरे और शय्या को भाँति भाँति के पुष्पों से सुसज्जित कर रहे हैं, इनकी आँखों से आँसुओं की धारा बह रही है, स्वभाव लघु होने पर भी इनका हृदय कोमल है।

घर में अब भी पहले दिन के फूलों के ढेर के ढेर सजे पड़े हैं। इवा की टेबुल पर उसके यत्न-रक्षित पुष्पाधार (ग़ुलदस्ते) में केवल एक गुलाब की कली है। एडाल्फ और रोज़ा अपनी जाति-गत अद्भुत शोभानुभावुकता से घर को सुसज्जित कर रहे हैं। सेन्टक्लेयर चिन्तित-चित्त खड़े हैं, इतने में रोज़ा एक डलिया फूल लेकर फिर घर में आई, पर सेन्टक्लेयर को सामने देख कर सम्मान से तनिक पीछे हट गई; पर सेन्टक्लेयर ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया, यह देख कर फिर आगे बढ़ी और मृत देह के चारों ओर फूलों को बड़ी सुन्दरता से सजा दिया और एक सुन्दर पुष्प बालिका के शुभ्र हस्त में देकर चली गई; सेन्टक्लेयर स्वप्नाभिभूत की भाँति देखता रहा।

इतने में टप्सी अपने आञ्चल में एक फूल छिपाये हुए वहाँ आई। रोते रोते उसकी दोनों आँखें सूज गई थीं। रोज़ा ने उसे देखते ही चिटक कर चुपके से कहा, "भाग, भाग, यहाँ तेरा क्या

काम पड़ा है ।" टप्सी ने आञ्चल से एक अर्द्धविकसित गुलाब निकाल कर कातरता से कहा, "देख मैं यह कैसा सुन्दर फूल लाई हूँ ! मुझे जाने दे मैं वहाँ इसे रक्खूँगी ।" रोज़ा ने दृढ़ता से कहा, "भाग जा ।"

सहसा सेन्टक्लेयर ने पृथिवी पर पैर पटक कर कहा, "उसे मत रोक, आने दे ।"

रोज़ा पीछे हट गई । टप्सी ने धीरे धीरे बिस्तरे के पास आकर वह फूल मृतक के पैरों तले रख दिया और पृथिवी पर लोट कर ज़ोर ज़ोर से रोने चीखने लगी ।

मिस अफिलिया झट से वहाँ पहुँची और उसे उठा कर समझाने की चेष्टा करने लगी । पर उसकी चेष्टा बेकार हुई । टप्सी रो रो कर कहने लगी, "मिस इवा ! मिस इवा ! मैं भी तुम्हारे साथ जाना चाहती हूँ—मैं भी जाना चाहती हूँ ।"

बालिका का मर्म-भेदी क्रन्दन सुन कर सेन्टक्लेयर का सफ़ेद पथराया हुआ चेहरा सहसा सुर्ख़ हो गया, इवा की मृत्यु के उपरान्त यही पहले पहल उसकी आँखों से आँसू गिरे ।

मिस अफिलिया ने स्नेहपूर्वक मिष्टता से कहा, "टप्सी, रो मत । मिस इवा स्वर्ग में गई है, वहाँ वह देवता हुई है ।"

टप्सी ने सिसकते हुए कहा, "मुझे तो वह नहीं दिखाई पड़ती है—अब मुझे वह कभी नहीं दिखाई पड़ेगी !"

पल भर के लिए सब चुप हो रहे ।

टप्सी ने फिर कहा, "मिस इवा मुझे प्यार करती थी, मिस इवा ने स्वयं कहा था कि, वह मुझे प्यार करती है । हाय ! हाय ! अब तो मेरा कोई न रहा—अब मुझे कौन प्यार करेगा ?"

सेन्टक्लेयर ने ठण्ढी साँस लेकर मिस अफिलिया को कहा,

"वहिन, टप्सी को सचमुच इवा प्यार करती थी । तुम इस बेचारी वालिका को समझा कर शान्त करो ।"

मिस अफिलिया अश्रु-पूर्ण नेत्रों से टप्सी को घर के वाहर लेजा कर उससे कहने लगी, "टप्सी, दुःखिनी वालिका ! मैं तुझे प्यार करूँगी । इवा ने मुझे प्यार करने की शिक्षा दी है । मैं उस प्यारी प्रेम-मयी वालिका सी कोमल हृदया नहीं हूँ, तो भी तुझे प्यार करूँगी, तुझे स्नेहदृष्टि से देखूँगी, अच्छी सीख सिखाऊँगी और तुझे सुमार्ग पर लाने की चेष्टा करूँगी ।"

मिस अफिलिया के अति सरलता और स्नेह-पूर्वक इस प्रकार वोलते ही आज टप्सी का हृदय मिस अफिलिया की ओर खिँच गया । वास्तव में सरलस्नेह की पहचान वहुत शीघ्र हो जाती है । अकपट प्रेम और अकृत्रिम स्नेह के प्रभाव से पत्थर का हृदय भी मोम हो जाता है ।

टप्सी का परिवर्तन देख कर सेन्टक्लेयर अपने आप कहने लगा, "हा मेरी इवा ! वहुत थोड़े दिनों ही इस संसार में रह कर तूने इतना अच्छा काम कर लिया, इतने पाषाण-हृदयों को कोमल वनाया; पर मैंने अपनी इतनी वड़ी ज़िन्दगी व्यर्थ ही गँवाई—कुछ भी न किया धरा । ईश्वर के सामने मैं जीवन के इस अपव्यवहार के लिए क्या जवाव दूँगा ।"

देखते देखते अच्छी तरह दिन चढ़ आया । चारों ओर से आत्मीय स्वजन और पड़ोसियों के आने से घर भर गया । मधुर प्रतिमा इवाञ्जेलिन की देह "कफिन" (Coffin) में रख कर उसका मुँह वन्द किया गया । उद्यान में जहाँ वैठ कर इवा और टाम वाइवल पढ़ा करते थे, वहीं एक नन्हा सा कफिन समाधिस्थ किया गया । सेन्टक्लेयर खड़ा खड़ा देखने लगा । सोचा—यह स्वप्न है

या सच्ची घटना! क्या सचमुच आज मेरी प्राणाधार इवा पृथिवी के गर्भ में रख दी गई? नहीं, सेन्टक्लेयर! तुम्हारी इवा पृथिवी में नहीं समाई। यह तो उसकी अनित्य देह है—पुराना वस्त्र है। आज इवा ने पुराना वस्त्र त्याग कर नये भेष से सज कर स्वर्ग को कूच किया है। कौन है जो उसका अमरत्व मिटा सके? इवा से मृत्यु का क्या सम्बन्ध? संसार के पापी नरों के लिए जो मृत्यु है, इवा के लिए वह जीर्ण वस्त्र का त्याग है।

अन्त्येष्टि-क्रिया पूरी हुई। सब पूर्व की भाँति अपने अपने धन्धों में लग कर भूल गये कि उन्हें भी किसी दिन इस संसार से विदा होना होगा।

इवा की जननी मेरी बड़ा विलाप और रोना-पीटना करने लगी। इस विलाप और रोने-पीटने के समय घर भर के नौकरों को उसकी सेवा में हाज़िर रहना पड़ता था। इवा की मृत्यु के कारण सारे दास-दासियों को असह्य शोक हुआ था, पर उन्हें अपने शोक में रोने-धोने की फ़ुरसत ही न मिलती थी, मेरी सब के नाकों दम किये रहती थी। मालूम होता है, मेरी समझती थी कि संसार में दुःख, शोक तथा प्यार और किसी के हृदय में प्रवेश नहीं कर सकता। यह सब केवल उसी की बपौती है। जब तब मेरी कहा करती थी कि उसके स्वामी की आँखों से एक बूँद आँसू तक तो गिरा ही नहीं, उसका स्वामी एक बार भी उसे धीरज बँधाने नहीं आया, उसने एक बार भी उसके इस शोक में सहानुभूति नहीं प्रकट की, उसके स्वामी जैसा कठोर-हृदय आदमी इस संसार में दूसरा नहीं है।

कभी कभी ये आँखें और कान मनुष्य को बड़ा धोखा देते हैं। ये दोनों इन्द्रियाँ केवल बाहरी विषयों को ही देखती हैं, अन्तःकरण का गूढ़ भाव कभी नहीं देख सकतीं। इसीलिए जो लोग केवल

वाहरी वातों पर ही दृष्टि डाल कर भले बुरे का फैसला कर लेते हैं वे सहज में धोखा खा जायँगे, इसमें संदेह ही क्या है? टाम और अफिलिया के सिवा मेरी की यह वाहरी रोआ-रोहट सुन और देख कर सेन्टक्लेयर के घर के कई दास-दासी समझते कि, इवा की मृत्यु का मेरी को ही सबसे अधिक दुःख हुआ है। सचमुच ऊपर से मेरी अत्यन्त अस्थिर हो गई थी और अपने मरने के दिन निकट कह कर चिल्लाने लगी। दास-दासी उसकी दवा-पानी पथ्य-परहेज़ और सेवा-शुश्रूषा में इस तरह फँसे रहते थे कि वे इवा को स्मरण करने के लिए अवकाश ही न पाते थे।

पर ईश्वर के दृढ़-विश्वासी, धर्मात्मा, सहज में ज्ञान-चक्षुओं से मनुष्य के अन्दर का निगूढ़ भाव तुरन्त ताड़ जाते हैं। वे कभी वाहरी इन्द्रियों के चकमे में नहीं आते, वे दिव्य चक्षुओं से सब कुछ देख लेते हैं। टाम सेन्टक्लेयर के हृदय का गहरा शोक सहज में जान गया। इसी से वह इवा की मृत्यु के उपरान्त कभी अपने मालिक का सङ्ग न छोड़ता था। कभी कभी सेन्टक्लेयर वड़े उदास मुख से, इवा के कमरे में वैठ उसकी छोटी वाइवल को उठा कर खोलता, फिर वन्द करता,—यद्यपि उसमें से कुछ पढ़ता नहीं, उस समय उसके हृदय में कैसी विकट यन्त्रणा होती थी, इसे टाम के सिवा और कोई न समझ सकता था। ऐसे निःशब्द आन्तरिक शोक से हृदय जितना जलता है; मेरी की वाहरी चिल्लाहट से उसका शतांश भी नहीं जलता।

कुछ दिनों वाद सेन्टक्लेयर अपना वाग़ वाला घर छोड़ कर परिवारसहित नगर वाले मकान में आ गया। अपने हृदय की असह्य शोक-यन्त्रणा को हल्की करने के लिए वह हर समय किसी न किसी काम में लगा रहता। वह पहले की भाँति सब से हँसता वोलता था। यदि वह शोक-चिह्न धारण न किये होता तो कोई जानता भी नहीं कि उसकी सन्तान की मृत्यु हो गई है।

एक दिन मिस अफिलिया से मेरी ने शिकायत के ढङ्ग से कहा, "वहिन, सेन्टक्लेयर भी क्या अजीव आदमी हैं। मैं समझा करती थी कि संसार में यदि सेन्टक्लेयर किसी को सब से अधिक प्यार करते हैं तो बस इवा को; पर वह उसे भी बड़ी जल्दी में भूल गये जान पड़ते हैं। कभी भूल कर भी उसका नाम नहीं लेते। मैंने सोचा था कि उन्हें इसका वहुत शोक होगा। पर मेरा यह ख़याल ग़लत निकला।

अफिलिया बोली, "बात यह है कि अथाह जल अन्दर ही अन्दर ज़ोरों से बहा करता है।"

मेरी—मैं इन बातों को नहीं मानती; यह सब कोरी बातें ही बातें हैं। यदि मनुष्य के मन में दुःख होगा तो वह उसे अवश्य प्रकट करेगा—विना प्रकट किये रहा ही न जायगा। पर मनुष्य के मन में किसी बात के लिए दुःख होना दुर्भाग्य की निशानी है। भगवान् ने यदि मुझे भी सेन्टक्लेयर की भाँति निर्दयी बनाया होता तो काहे को। मुझ में थोड़ी स्नेह-ममता है यही मेरी जान मारे लेती है!

मामी ने कहा, "मेम साहब, आप यह क्या कहती हैं, साहब दिन दिन शोक में सूखे जा रहे हैं। उन्हों ने इवा की मृत्यु के उपरान्त किसी दिन पेट भर भोजन नहीं किया।" फिर उसने आँसू बहाते हुए कहा, "मैं जानती हूँ, साहब मिस इवा को कभी नहीं भूल सकते; साहब ही क्या, उस नन्ही प्यारी बालिका को कोई भी नहीं भूल सकता!"

मेरी—यह सब होने पर भी, वह मेरा कभी ख़याल नहीं करते। उन्हों ने मुझसे कभी सहानुभूति का एक शब्द भी नहीं कहा, वे यह बात नहीं जानते कि पिता की अपेक्षा मा को सन्तान का कितना अधिक दुःख होता है।

मिस अफिलिया ने गम्भीरता से कहा, "हर एक का हृदय ही अपने अपने दुःख को जानता है, दूसरा दूसरे के दुःख को क्या समझेगा।"

मेरी ने कहा, "मेरे मत से भी यह ठीक है। मुझे जितना दुःख है उसे दूसरा कौन समझेगा। इवा समझती थी, सो चली गई!" इतना कह कर वह अपने पलंग पर लेट गई और बड़ी बेसब्री से सिसकने लगी।

इधर यह बातें हो रही थीं उधर सेन्टक्लेयर के लाइब्रेरी के कमरे में और ही चर्चा थी।

पहले कहा जा चुका है कि इवा की मृत्यु के बाद टाम सदा अपने मालिक के पीछे पीछे लगा रहता था। आज सेन्टक्लेयर अपनी लाइब्रेरी वाले कमरे में गये। टाम बाहर बैठा बाट देखता रहा। जब देर होने पर भी वे बाहर न निकले तो टाम धीरे धीरे कमरे के अन्दर गया। वहाँ जा कर देखा कि उसके मालिक इवा की नन्ही बाइबल मुख पर रखे हुए पड़े हैं। वह चुपचाप उनकी आरामकुर्सी के पास जाकर खड़ा हो गया। सेन्टक्लेयर उसे देखते ही उठ बैठा। टाम के मुख की ओर आंखें फेरते ही दयालु सेन्टक्लेयर का हृदय भर आया। टाम का सरलता और साधुता-परिपूर्ण मुख-मण्डल स्वामी के दुःख में एक दम मलिन पड़ गया है। उस मुख से कोई वाक्य नहीं निकल रहा है। पर मुख की कातरता और कारुण्य भाव प्रभु के दुःख में स्पष्ट रूप से सहानुभूति प्रकट कर रहा है।

कुछ देर बाद सेन्टक्लेयर ने कहा, "टाम, इस संसार में सब कुछ असार है।"

टाम—मैं जानता हूँ प्रभु, सब कुछ असार है। पर स्वर्ग की ओर जहाँ इस समय हम लोगों की इवा है ईश्वर की ओर दृष्टि डालने से कल्याण होगा।

सेन्टक्लेयर—टाम! मैं स्वर्ग की ओर दृष्टि डालता हूँ, ईश्वर की ओर देखने की चेष्टा करता हूँ, पर मुझे कुछ नहीं

दिखाई देता। यदि कुछ देख पड़ता तो मन को सन्तोष दिला सकता ।

टाम ने ज़ोर से ठण्ढी साँस ली ।

सेन्टक्लेयर ने फिर कहा, "टाम, मैं समझता हूँ कि ईश्वर निर्मल-चरित्र शिशुओं को और तुम सरीखे सरल और साधु-प्रकृति के लोगों को ही दिव्य दृष्टि देता है। हम ऐसों को नहीं। इसीसे तुम लोग स्वर्ग की बातें जान सकते हो।"

टाम—प्रभु! बाइबल का भी यही मत है। ज्ञानाभिमानी और क़ानूनियों को ईश्वर के दर्शन नहीं होते। बालक की भाँति जिनका चित्त सरल है उन्हीं को भगवान् के दर्शन मिलते हैं।

सेन्टक्लेयर—टाम, बाइबल पर मेरा विश्वास नहीं है। अपनी सन्दिग्ध प्रकृति के कारण किसी बात पर मेरा विश्वास नहीं जमता। मैं चाहता तो हूँ कि बाइबल पर मेरा विश्वास जम जाय पर ऐसा नहीं होता।

टाम—प्रभु, आप ईश्वर से प्रार्थना कीजिए कि "हे भगवन्! मेरे मन के सन्देहों को दूर कर।"

सेन्टक्लेयर टाम की यह बात सुनकर स्वप्न में पड़े हुए मनुष्य की भाँति बोल उठा, "कोई बात कुछ समझ में नहीं आती। क्या संसार का यह प्रेम, प्यार, विश्वास और भक्ति सभी निरर्थक है? क्या मृत्यु के साथ साथ इन सब का नाश हो जाता है? क्या मेरी इवा नहीं है? क्या स्वर्ग नहीं है? क्या ईश्वर नहीं है? क्या कुछ नहीं है?"

टाम ने घुटने टेक कर कहा, "प्रभु, सब कुछ है। मैं निश्चय जानता हूँ, सब कुछ है। आप इन सब पर विश्वास करने की चेष्टा कीजिए, अभी कीजिए।

सेन्टक्लेयर—"तुमने कैसे जाना कि ईश्वर है ? तुमने कभी ईश्वर को देखा नहीं ।"

टाम—मैंने अपनी आत्मा के अन्दर उसे जाना है । इस समय भी वह मेरे अन्दर है । प्रभु ! जब मैं अपने बाल-बच्चों से अलग करके बेच डाला गया, उस समय मैं एकदम निराश हो गया था । मेरे मन में तनिक भी बल बाक़ी न रहा और तब मैंने निराश होकर ईश्वर को पुकारा । अकस्मात् मेरे मन में शान्ति आ गई और मेरे अन्दर से आवाज़ आई कि "टाम ! डरो मत, मैं तुम्हारे साथ हूँ ।" इससे मेरे सारे दुःखों का अवसान हो गया और हृदय में आशा का सञ्चार हो गया । प्रभु ! क्या अपने आप मन में ऐसा भाव आ सकता है ? अन्दर बैठे हुए परमात्मा ने ही मेरे मन को बल दिया था ।

ये सब बातें कहने के समय टाम का हृदय भक्ति और प्रेम से भर गया । उसकी दोनों आँखों से पानी की गङ्गा-यमुना बहने लगीं । उस समय सेन्टक्लेयर ने उसके कन्धे पर अपना सिर धर कर और उसके काले हाथ पकड़ कर कहा, "टाम, तुम मुझे प्यार करते हो ?"

टाम—प्रभु ! यदि मेरे प्राण देने से भी ईश्वर में आपकी भक्ति और विश्वास हो जाय तो यह दास अभी सहर्ष अपने प्राण देने को प्रस्तुत है ।

सेन्टक्लेयर—अरे भोले भाई ! मेरे लिए जान ! मैं तो तुम्हारे जैसे साधु और सहृदय मनुष्य के स्नेह-योग्य भी नहीं हूँ ।

टाम—प्रभु, मेरी अपेक्षा ईश्वर आपको हज़ार दर्जे प्यार करते हैं ।

सेन्टक्लेयर—टाम, तुम यह कैसे जानते हो ?

टाम—मेरी आत्मा में इसका अनुभव होता है । प्रभु, मिस इवा

मुझे बड़ी सुन्दरता से बाइबल पढ़ कर सुनाया करती थी। उसके बाद किसी ने नहीं सुनाई। आप कृपा करके थोड़ा पढ़ें।

सेन्टक्लेयर ने बाइबल से लाजरस के उद्धार का वृत्तान्त पढ़ा।

टाम बड़े भक्ति-भाव से हाथ जोड़े सुन रहा था। समाप्ति पर सेन्टक्लेयर ने पूछा, "टाम, क्या तुम्हें ये बातें सच्ची जान पड़ती हैं?"

टाम—प्रभु, मुझे यह सब बातें प्रत्यक्ष देख पड़ रही हैं!

सेन्टक्लेयर—टाम, मैं चाहता हूँ मुझे तुम्हारी आँखें मिल जातीं।

टाम—ईश्वर आप पर अवश्य दया करेंगे।

सेन्टक्लेयर—लेकिन टाम, तुम जानते हो कि तुमसे मेरा ज्ञान (वाक़फियत) बहुत बढ़ा चढ़ा है, मैं यदि तुमसे कहूँ कि मैं इस बाइबल पर विश्वास नहीं करता तो इससे क्या तुम्हारे हार्दिक विश्वास को कुछ ठेस पहुँचेगी?

टाम—एक रत्ती भर भी नहीं।

सेन्टक्लेयर—क्यों टाम, तुम तो जानते हो कि मैं तुमसे अधिक पढ़ा लिखा और जानकार हूँ।

टाम—प्रभु, अभी आपही ने कहा है कि ईश्वर को ज्ञानाभिमानी और अक्ल-अजीर्ण रोग वाले लोग नहीं देख सकते, बालकों के से सरल विश्वासियों को ही भगवान् के दर्शन मिलते हैं। अब जान पड़ता है आप मेरे हृदय की परीक्षा ले रहे हैं। यह आपके हृदय के सच्चे भाव नहीं हैं।

सेन्टक्लेयर—हाँ, मैंने तुम्हारी परीक्षा के लिए ही ऐसा कहा था। मैं बाइबल पर अविश्वास नहीं करता। निस्सन्देह धर्मशास्त्र युक्ति-संगत है। पर खेद का विषय है कि मेरा स्वभाव बिगड़ा हुआ है।

टाम—प्रभु, केवल प्रार्थना से सुधर जायगा।

सेन्टक्लेयर—टाम, तुम कैसे जानते हो कि मैं प्रार्थना नहीं करता ।

टाम—प्रभु ! क्या आप प्रार्थना करते हैं ?

सेन्टक्लेयर—मैं करता, पर किसके सामने करूँ, कुछ तो नहीं दिखाई देता । किन्तु टाम, तुम इस समय प्रार्थना करो, मैं सुनता हूँ ।

इस पर बड़े भक्ति-भाव से टाम ईश्वर की प्रार्थना करने लगा । उसकी सरल प्रार्थना से सेन्टक्लेयर का हृदय भर आया । प्रार्थना की धारा में उसका मन स्वर्ग की ओर वह चला । उसने प्रत्यक्ष ही अनुभव किया कि इवा अमृतमय की अमृत गोद में विराज रही है ।

टाम की प्रार्थना समाप्त होने पर सेन्टक्लेयर ने कहा, "टाम, तुम जब तब मेरे सामने ऐसी ही प्रार्थना किया करो । पर इस समय तुम मुझे थोड़ी देर एकान्त में रहने की छुट्टी दो, मैं दूसरे समय तुमसे अधिक बातें करूँगा ।

टाम चुपचाप उस कमरे से चला गया ।

—:०:—

इकतीसवाँ परिच्छेद ।

पुनर्मिलन ।

समय किसी की बाट नहीं देखता, हफ़्तों पर हफ़्ते, महीनों पर महीने और वर्षों पर वर्ष निकले जा रहे हैं। संसार भर के नर-नारियों को अपनी छाती पर लाद कर काल का प्रवाह अनन्त-सागर की ओर दौड़ा जा रहा है। इवा की भी नन्हीं सी जीवन-नौका अनन्त-सागर में समा गई। दो चार दिन घर बाहर, सभी ने शोक मनाया और आँसू बहाये। पर ज्यों ज्यों समय बीतता गया, त्यों त्यों लोग अपने दुःख को भूलते गये। जो जिस धन्धे को करता था वह उसी में लग गया। गाना-बजाना, खाना-पीना सभी ज्यों का त्यों होने लगा। पर देखना यह है कि क्या सभी एक से हैं, क्या सेन्टक्लेयर के जीवन की गाड़ी भी उसी चाल से चल रही है ?

इस संसार में केवल इवा ही सेन्टक्लेयर की जीवन-सर्वस्व थी। उसका इवा ही के लिए जीना, इवा ही के लिए धनसग्रंह करना, इवा ही के लिए कामकाज, और इवा ही के लिए सब कुछ था। इवा के मरने से उसका जीवन लक्ष्य-शून्य हो गया। अब वह संसार में किसके लिए जीये और सांसारिक झंझटों में किसके लिए फँसे ?

क्या आशायें टूट जाने पर मनुष्य संसार में सचमुच लक्ष्यहीन—उद्देश्यहीन हो जाता है ? क्या सांसारिक तुच्छ आशाओं के अतिरिक्त मनुष्य-जीवन का अन्य कोई महान् उद्देश्य नहीं है ? नहीं, यह बात तो नहीं, इन्हीं उद्देश्यों तक तो बस नहीं है।

पर सेन्टक्लेयर मनुष्यजीवन के महान् उद्देश्य से बिल्कुल अनभिज्ञ न था। इसी से उसका जीवन सर्वथा लक्ष्यहीन नहीं हुआ। ख़ास कर इवा के अन्तिम शब्द हर घड़ी उसके कानों में गूंजते थे। सोते—जागते, उठते—बैठते, हर समय इवा का वह सुमधुर वाक्य उसे याद आता। उसे हर समय यही दिखाई पड़ता मानों इवा अपने नन्हे नन्हे हाथों की उँगलियों के इशारे से उसे जीवन-मार्ग—स्वर्ग-पथ दिखा रही है। पर उसका चिर-सहचर आलस्य और उसका वर्त्तमान शोक उसके कर्त्तव्य मार्ग स्वर्ग की ओर अग्रसर होने में बाधा डालता। उसमें इन सब बाधाविघ्नों को पार करके भी जीवन के महत् उद्देश्य-साधन की शक्ति थी। यद्यपि वह देश-प्रचलित किसी प्रकार की धर्मोपासना में योग न देता था, तथापि वह बचपन से ही बड़ा सूक्ष्मदर्शी और भावुक था। उसके मन में सदा नये नये भावों की आमद लगी रहती थी। वास्तव में इस संसार में कभी कभी ऐसा होता है कि जो लोग लोक और परलोक की तनिक भी परवाह नहीं करते, बल्कि काम पड़े उनके मानने वालों की निन्दा करने तक से नहीं चूकते, उन्हीं के मुख से कभी कभी धर्म के ऐसे गूढ़ तत्त्व सुने जाते हैं कि दंग रह जाना पड़ता है। मूर, बायरन और गेटे जन्म भर धर्म पर अपनी अनास्था ही दिखलाते रह गये। पर इन्हों ने धर्म के कई ऐसे जटिल तत्वों की जिन्हें बहुत से धर्म गुरुओं ने समझा तक नहीं, ऐसी सुन्दर व्याख्या की है कि वह देखते ही बनती है।

धर्म से सेन्टक्लेयर का कभी द्वेष न था। पर वह जानता था कि धर्म का पालन खाँड़े की धार पर चलने के समान है; मानसिक बल-रहित मनुष्यों के लिए वह सर्वथा असाध्य है। इससे धर्म ग्रहण करके पालन न करने की अपेक्षा तो यही अच्छा कि धर्म के पचड़े में पड़ा ही न जाय। यही सोच कर वह सदा इन धर्म-चर्चाओं से किनारे

रहता था। पर अब उस धर्म के अनुसरण के सिवा उसके जीवन का और लक्ष्य ही क्या रह गया? अब वह इवा की छोटी बाइबल को बड़े प्रेम से पढ़ने लगा, और दास-दासियों के विषय में अपने कर्त्तव्य की बात सोचने लगा। अब उसने इस बात को अच्छी तरह से समझ लिया कि इवा का कहना बिल्कुल सच था, इन दास-दासियों को गुलामी की जञ्ज़ीर से मुक्त कर देना ही ठीक है। उसने अपने नगर वाले मकान में आते ही सब से पहले टाम को दासत्व से मुक्त करने का पक्का निश्चय किया। इसके लिए उसने अपने वकील से मुक्ति-पत्र का मसविदा बनाने को कहा। टाम आज कल हर समय उसी के साथ लगा रहता है। टाम इवा का बड़ा प्यारा था, इस लिए उसे देख कर जितनी जल्दी इवा का स्मरण होता था उतना और किसी के देखने से नहीं। इसी से सेन्टक्लेयर टाम को इवा के स्मृति-चिह्न की भाँति हर घड़ी अपने साथ रखता था।

एक दिन सेन्टक्लेयर ने टाम से कहा, "टाम, मैं तुम्हें दासत्व की बेड़ी से मुक्त कर दूंगा। तुम केन्टाकी के लिए तैयार रहना। अपनी चीज़-वस्तु ठिकाने से कर रखना।"

यह बात सुनते ही टाम का चेहरा प्रफुल्लित हो गया, वह हाथ उठाकर बोला, "भगवान् आपका भला करें।" पर सेन्टक्लेयर टाम की इस प्रसन्नता के भाव से मन ही मन दुःखी हुआ। उसने यह नहीं सोचा था कि टाम उसे छोड़ कर जाने के लिए इतना आग्रह प्रकट करेगा। उसने शुष्कता-पूर्वक टाम से कहा, "टाम, तुमने तो हमारे यहाँ कभी कोई तकलीफ़ नहीं पाई, फिर तुम हमारा घर छोड़ कर जाने की बात पर इतने खुश क्यों हुए?

टाम—प्रभु, यह आपका घर छोड़ कर जाने की प्रसन्नता नहीं है। यह प्रसन्नता इस बात की है कि मैं स्वाधीन हो जाऊँगा।

सेन्टक्लेयर—स्वाधीन हो जाने की अपेक्षा क्या इस समय तुम यहाँ अधिक सुखी नहीं हो ?

टाम—प्रभु, कभी नहीं ।

सेन्टक्लेयर—क्यों टाम, जैसा अच्छा तुम यहाँ खाते पहनते हो और जिस आराम से रहते हो, स्वाधीन होकर तुम इतने आराम से रहने भर की कमाई तो नहीं कर सकोगे ?

टाम—प्रभु ! आपका कथन सत्य है। पर स्वाधीनता स्वाधीनता ही है। स्वाधीनता में मोटा—महीन, बुरा—भला जो कुछ मिले सब अच्छा है। पराधीनता के मेवा मिष्टान्न भी दो कौड़ी के हैं। इसी से कहा है, "पराधीन सपने सुख नाहीं।" यह मनुष्य का स्वाभाविक भाव है।

सेन्टक्लेयर—मैं मानता हूँ, यही बात होगी। पर तुम्हें अभी यहाँ एक मास और ठहरना होगा।

टाम—प्रभु ! मैं आपको इस कष्ट में छोड़ कर नहीं जाऊँगा। आप जब तक रखना चाहें यह दास आपकी सेवा में रहेगा। यदि मेरा यह शरीर आपके किसी काम आ जाय तो इससे अधिक सौभाग्य की बात मेरे लिए और क्या होगी ?

सेन्टक्लेयर ने उदासीनता से बाहर की ओर नज़र डालते हुए कहा, "टाम, तुम मेरे इस कष्ट का अवसान होने पर जाओगे ? मेरे इस कष्ट का अवसान कब होगा ?

टाम—जब ईश्वर में आपकी भक्ति होगी और धर्म में चित्त लगेगा।

सेन्टक्लेयर—तब तक तुम यहाँ ठहरना चाहते हो ? नहीं, नहीं, मैं तब तक तुम्हें यहाँ नहीं अटकाऊँगा। तुम्हें शीघ्र ही छुट्टी दे दूँगा। तुम अपने घर पहुँच कर अपने बाल-बच्चों से मिलना जुलना और उन्हें मेरा आशीर्वाद कहना।

टाम ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से कहा, "प्रभु ! मेरा अटल विश्वास है कि वह दिन शीघ्र ही आवेगा। और आप के हाथ से ईश्वर अपना कोई काम करावेगा।"

सेन्टक्लेयर—मुझसे ईश्वर का काम ? अच्छा टाम, बतलाओ, तुम्हारी समझ में वह कौन सा—काम है ?

टाम—क्यों प्रभु, मैं तो निरा दीन हीन मूर्ख हूँ, किन्तु परमेश्वर ने मुझे भी अपना काम करने को सौंपा है। फिर मालिक सेन्टक्लेयर तो विज्ञ हैं, ऐश्वर्यशाली हैं, बन्धु-बान्धव सहित हैं, वह चाहें तो ईश्वर के कितने ही प्रिय कार्य कर सकते हैं।

सेन्टक्लेयर ने मुसकुराते हुए कहा, "टाम, तुम्हारी समझ में ईश्वर को अपने कुछ काम मनुष्य से कराने की ज़रूरत पड़ा करती है।"

टाम—हम जब किसी मनुष्य के लिए कुछ करते हैं तो वह ईश्वर ही के लिए करते हैं। क्योंकि सभी मनुष्य उसकी सन्तान हैं।

सेन्टक्लेयर—टाम ! तुम्हारा यह धर्म-शास्त्र हमारे यहाँ के पादरियों के मत से कहीं अच्छा जान पड़ता है।

कुछ लोग सेन्टक्लेयर से मिलने आ गये, इससे उसकी और टाम की बातें यहीं बन्द हो गईं।

मेरी इवा के शोक में बड़ी ही अधीर हो गई थी। पर उसमें एक विशेष गुण था कि जब वह किसी शोक पर दुःख से स्वयं अधीर होती थी तो दास-दासियों को उससे सौगुना अधीर कर सकती थी। इवा जीते जी इस अत्याचार से दास-दासियों की रक्षा करने की चेष्टा किया करती थी। पर अब इन बेचारे निस्सहायों की रक्षा कौन करेगा ? इसी से इवा के लिये दास-दासी बहुत दुःखित होते थे। विशेष कर मामी इवा के कारण अपने बाल-बच्चों से अलग पड़े

रहने के दुःख को भूली हुई थी। इवा की मृत्यु के बाद वह दिन-रात चुपचाप रोया करती थी। इस शोक की दशा में कभी कभी मेरी की टहल-बन्दगी में कुछ भूल हो जाती तो उसके लिए मेरी उसे सदा घोंटा करती थी।

मिस अफिलिया को इवा की मृत्यु बहुत अखरती थी; पर वह चुपचाप, गम्भीर-भाव से उस दुःख को सहन करने लगी। वह पहले ही की भाँति सदा काम में लगी रहती थी, पहले की अपेक्षा अब अधिक यत्न से टप्सी को पढ़ाने सिखाने लगी। अब वह टप्सी को अपनी कन्या की भाँति प्यार करती है, हबशी जान कर उससे घृणा नहीं करती। टप्सी का चरित्र भी धीरे धीरे सुधरने लगा। यह नहीं कि वह एक ही दिन में भली बन बैठी हो। पर इवा के आचरण से उसका मन बहुत कुछ पलट गया था। पहले उसकी मानसिक जड़ता इस क़िस्म की थी कि उस पर कोई उपदेश असर न करता था पर अब यह भाव दूर हो गया।

एक दिन मिस अफिलिया ने टप्सी को पुकारा तो वह झटपट अपने कपड़ों में कोई चीज़ छिपाती हुई चली आ रही थी।

रोज़ा ने उसे तत्काल पकड़ कर कहा, "बोल इसमें क्या है? मालूम होता है तैने कोई चीज़ चुराई है? कपड़ों में जल्दी जल्दी क्या छिपा रही थी?"

टप्सी अपनी छिपाई हुई चीज़ को दोनों हाथों से दृढ़ता-पूर्वक दबाये हुए थी। रोज़ा हाथ छुड़ाने के लिए ज़ोर से उसे खींचने लगी। पर टप्सी ने हाथ नहीं छोड़ा। वह ज़मीन पर लोट कर चिल्लाने लगी। साथही रोज़ा को एक लात जड़ दी। टप्सी का चीख़ना सुन कर अफिलिया और सेन्टक्लेयर नीचे आये तो रोज़ा ने कहा, "उसने कुछ चुराया है।" टप्सी ने सिसकते हुए कहा, "मैंने कुछ नहीं चुराया।"

मिस अफिलिया ने दृढ़ता से कहा, "तेरे हाथ के नीचे जो कुछ हो मुझे दे दे।"

पहले तो टप्सी ने देने में आनाकानी की, पर दुबारा माँगने पर उसने अपने कपड़ों में से एक फटे हुए मोज़ों की पोटली निकाल कर उसके हाथ में दी।

उसमें से इवा की दी हुई एक छोटी सी पुस्तक और इवा की वह बालों की लट निकली। यह चीज़ें देख कर सेन्टक्लेयर की आँखें भर आईं।

टप्सी रो रो कर कहने लगी, "मेरी ये सब चीज़ें मुझसे मत छीनिए।"

सेन्टक्लेयर की आँखों से आँसू झरने लगे। टप्सी को सान्त्वना देकर बोला, "तेरी यह सब चीज़ें कोई नहीं लेगा।" इतना कह कर वे सब चीज़ें उसे लौटा कर वह अफिलिया सहित वहाँ से चला गया।

उसने अफिलिया से कहा, "बहन, मुझे जान पड़ता है अब तुम टप्सी का चरित्र सुधारने में सफल होओगी। जिस हृदय में शोक और दुःख का आघात लगता है वह सहज में सुपथ पर लाया जा सकता है। तुम्हें अब इसके साथ ख़ूब कोशिश करनी चाहिए।"

अफिलिया ने कहा, "पहले से टप्सी बहुत सुधरी है। मुझे अब इसके विषय में पूरी आशा होगई है। पर मैं तुमसे एक बात पूछती हूँ कि यह है किसकी, तुम्हारी या मेरी?

सेन्टक्लेयर—क्यों मैं तो तुम्हें सौंप चुका हूँ।

अफिलिया—क़ानूनन वह मेरी नहीं है। मैं क़ानूनन उसे अपनी बनाना चाहती हूँ।

सेन्टक्लेयर—बहन, तुम इसे क़ानूनन लेना तो चाहती हो पर तुम्हारे यहाँ का दासत्व-प्रथा-विरोधी दल इसके लिए तुम्हारी निन्दा करेगा।

अफिलिया—इसमें क्या है, मैं वहाँ जाकर इसे स्वाधीन कर दूँगी । मैं इसके लिए इतना परिश्रम कर रही हूँ, यदि इसे अपने साथ न ले जा सकी तो मेरी सारी मेहनत बेकार है ।

सेन्टक्लेयर—बहन, बाद को अच्छा नतीजा होगा, इसके लिए पहले एक बुरा काम करना—मैं तो इसका अनुमोदन नहीं कर सकता ।

अफिलिया—हँसी-ठट्ठा छोड़ कर ज़रा सोचो । यदि उसे दासत्व से छुटकारा न दिया जा सके तो सारी धर्म-शिक्षा देना व्यर्थ है । तुम यदि सचमुच इसे मुझे देना चाहते हो तो एकदम पक्की लिखा-पढ़ी कर दो ।

सेन्टक्लेयर—अच्छा, अच्छा कर दूँगा ।

इतना कह कर सेन्टक्लेयर ने समाचार-पत्र पढ़ना आरम्भ कर दिया ।

अफिलिया—मैं चाहती हूँ अभी हो जाय ।

सेन्टक्लेयर—तुम्हें इतनी क्या जल्दी पड़ी है ?

अफिलिया—जो काम करना है, उसके लिए यही समय है, उसमें फिर का क्या काम ? कहा है "कालिह करै सो आज कर, आज करै सो अब । पल में परलय होयगी फेर करेगा कब ॥" यह लो क़लम-दावात और लिखना है सो अभी लिख दो ।

सेन्टक्लेयर का स्वभाव आलसी था । 'कर दूँगा' ही उसके मुँह से सुनने में आता था, 'करता हूँ' शब्द का प्रयोग वह कभी न करता था । अतएव अफिलिया की जल्दी से कुछ झुँझला कर उसने कहा, "बहन, कहो न, क्या हुआ है, ऐसी क्या छटपटी पड़ी है ? तुम मेरी बात का विश्वास नहीं मानती हो ? तुमने तो ठीक उस यहूदी का सा व्यवहार आरम्भ कर दिया ।"

अफिलिया—मैं काम को एकदम 'रैट' कर लेना चाहती हूँ ।

कल्ह को तुम्हारी मृत्यु हो जाय, तुम ऋणग्रस्त हो जाव, तो टप्सी को नीलाम-घर का ही मुँह देखना पड़े ।

सेन्टक्लेयर—वाजवी है, तुम बड़ी आगम-बुद्धि हो । तुमसे जान नहीं बचने की ।

इतना कह कर सेन्टक्लेयर ने तुरन्त एक दानपत्र लिख मिस अफिलिया के हाथ में सौंप कर कहा, वरमंट-कुमारी, इसे लो । कहो, अब तो कुछ स्याह सफ़ेद करना बाक़ी नहीं रहा ?

मिस अफिलिया—यह काम की बात हुई । पर, इस पर किसी की गवाही भी तो होनी चाहिए ?

ओफ़, इस विपद का पार नहीं है । इतना कह कर सेन्टक्लेयर ने दरवाज़ा खोल कर पुकारा, मेरी ! बहन तुम्हें गवाह बनाना चाहती हैं, ज़रा यहाँ आकर इस काग़ज़ पर दस्तख़त तो बना देना ।"

मेरी ने उस काग़ज़ को पढ़ कर कहा, "यह क्या ? कैसी दिल्लगी की बात है ? इसकी भी लिखा-पढ़ी ? लेकिन मैं समझती थी कि दीदी अपनी धर्म-भीरुता के कारण दास रखने जैसा बुरा काम नहीं करेंगी । पर ख़ैर, यदि इसके लिए इनकी चाह है तो हम लोग बड़ी प्रसन्नता से इनकी इच्छा पूरी करेंगे ।"

इतना कह कर मेरी काग़ज़ पर हस्ताक्षर बनाकर चली गई ।

सेन्टक्लेयर ने वह काग़ज़ अफिलिया को सौंपते हुए कहा, "आज से टप्सी का शरीर और आत्मा तुम्हारी मिलकियत हुई ।

अफिलिया—वह तो जैसे तब थी वैसे अब है । ईश्वर के सिवा और किसी को क्षमता नहीं कि उसे मुझे दे सके, पर अब मैंने उसकी रक्षा करने का अधिकार हासिल कर लिया है ।

सेन्टक्लेयर—ख़ैर, अब वह बनावटी क़ानून के अनुसार तुम्हारी चीज़ हुई ।

यह कह कर सेन्टक्लेयर अपने कमरे में चला गया। मिस अफिलिया भी उस काग़ज़ को यत्न से अपने संदूक़ में बन्द करके सेन्टक्लेयर के कमरे में गई। मिस अफिलिया को मेरी के साथ देर तक बैठ कर बातचीत करना न भाता था।

मिस अफिलिया वहाँ जाकर बुनने का काम उठा कर बैठ गई। उसने सहसा सेन्टक्लेयर से कहा, "अगस्टिन, तुम्हारे बाद तुम्हारे ग़ुलामों की क्या गति होगी, इसका भी तुमने कोई बन्दोवस्त किया है ?

अगस्टिन—नहीं।

अफिलिया—तब तुम्हारा उन्हें इस समय यह सब आराम देना व्यर्थ है, उल्टा उनके साथ बदसलूकी है।

सेन्टक्लेयर प्रायः इस विषय को स्वयं सोचा करता था; पर अभी तक उसने कोई बन्दोवस्त नहीं किया था।

बोला, "मैं इन लोगों के लिए कोई प्रबन्ध करूँगा।"

अफिलिया—कब ?

सेन्टक्लेयर—इसी बीच में किसी दिन।

अफिलिया—मान लो यदि पहले ही तुम्हारा शरीर-पात हो जाय तो ?

सेन्टक्लेयर ने अपने हाथ का अख़बार रख कर उसकी ओर देखते हुए कहा, "बहन, ऐसा क्या हुआ है ? क्या तुम्हें मेरे शरीर में हैज़े या प्लेग के लक्षण दिखाई दे रहे हैं, जो तुम मेरे बिल्कुल अन्तिम समय का बन्दोवस्त आरम्भ किये देती हो ?

सेन्टक्लेयर उठा और अख़बार को किनारे रख कर धीरे धीरे बरामदे की ओर चला गया। उसे ऐसी बातें अच्छी न लगती थीं। इसीसे वह उठ गया था। लेकिन आपही आप यन्त्र की भाँति उसके मुँह

से "मृत्यु!" शब्द निकलने लगा। वह सोचने लगा कि जगत् में कोई ऐसा आदमी नहीं जिसकी मृत्यु न होगी, यह एक साधारण बात है, फिर भी हम मृत्यु को भूले हुए हैं, यह बड़े आश्चर्य की बात है। इसी पर ठीक कहा है "अहन्यहनि भूतानि गच्छन्ति यममन्दिरम्। शेषाः स्थिरत्वमिच्छन्ति किमाश्चर्यमतःपरम्।" आज मनुष्य बड़ी बड़ी आशाओं के पुल बांध रहा है, घमण्ड से ऐंठा जा रहा है और कल्ह ही उसे मौत ने आ दबोचा, सदा के लिए वह चल बसा। और सारे विचार धरे के धरे रह गये। यह सब सोचते हुए जाते जाते उसने बराम्दे के दूसरी ओर टाम को देखा। टाम अपने सामने बाइ-बल रक्खे हुए, बड़े ध्यान से उसका एक एक शब्द पढ़ रहा था।

उसने अलमस्त की तरह टाम के पास बैठ कर कहा, "टाम, कहो तो मैं तुम्हें बाइबल पढ़ कर सुनाऊँ ?"

टाम ने कहा, "यदि प्रभु कृपा करके पढ़ें तो बहुत अच्छा है। आपके पढ़ने से बहुत साफ़ साफ़ समझ में आवेगी।

सेन्टक्लेयर ने पुस्तक उठा ली और उस स्थल को पढ़ने लगा जहाँ टाम ने बड़े बड़े चिह्न लगा रक्खे थे। विषय यह था:—

"जब सारे देवदूतों से घिरे हुए ईश्वर-पुत्र सिंहासन पर बैठ कर विचार करने लगेंगे, उस समय सब जातियाँ उनके सामने इकट्ठी होंगी, उस समय वह पुण्यात्माओं में से पापियों को छाँटेंगे। फिर उन पापियों को समुचित दण्ड देकर कहेंगे, "नराधमो! मुझसे दूर हो; मुझे प्यास होने पर तुमने पानी नहीं दिया, भूखे होने पर अन्न नहीं दिया, नङ्गे होने पर वस्त्र नहीं दिया और जेल में पड़े रहने पर मेरी सुध न ली।"

पापी लोग यह सुन कर कहेंगे—"भगवन्, हमने कब आपको भूखे, प्यासे, नङ्गे और जेल में पड़े देख कर आपकी सुध नहीं ली ?"

यह सुनकर वह कहेंगे—हमारे इन अत्यन्त दीन हीन भ्राताओं पर तुम लोगों ने जो अत्याचार किये हैं, सख्तियाँ की हैं, वह सब मुझी पर बीती हैं ।”

बाइबल से यह सब बातें पढ़ते हुए सेन्टक्लेयर का मन हिल उठा। उसने इन लाइनों को मन ही मन फिर पढ़ा और एकाग्रता से सोचने लगा । फिर टाम से बोला, “टाम, मेरे ही ऐसे आनन्द और सुख में जीवन बिताने वाले लोग—जो स्वयं मौज में मस्त हैं और अपने दूसरे भूख प्यास से तड़प तड़प कर मरने वाले दीन भ्राताओं पर आँख उठा कर भी नहीं देखते, वही तो ईश्वर के विचार से दण्ड पावेंगे ?”

टाम ने कुछ उत्तर न दिया ।

सेन्टक्लेयर चिन्ता में डूबा हुआ बराम्दे में इधर उधर टहलने लगा । वह अपनी चिन्ता में ऐसा डूब गया कि उसे चाय की घण्टी की आवाज़ भी नहीं सुनाई दी । टाम ने दो बार घण्टी की याद दिलाई, तब जाकर वह चाय पीने गया । चाय पीने के समय वह चिन्तानिमग्न था । चायपान समाप्त हो जाने के बाद वह, उसकी स्त्री और मिस अफिलिया चुपचाप बैठक में आये ।

आते ही मेरी पलंग पर लेट गई और देखते देखते निद्रित हो गई । अफिलिया अपने बुनने के काम में लग गई । सेन्टक्लेयर पिआनो के पास जा कर धीरे धीरे एक करुण-सुर बजाने लगा । वह उस समय भी चिन्ता-शून्य न था । उसे देख कर जान पड़ता था, मानों वह बाजे के अन्दर बैठ कर स्वयं बोल रहा है । कुछ देर बाद उसने दराज़ से एक पुरानी पुस्तक निकाली और उसके पन्ने उलटते उलटते मिस अफिलिया से कहा, “देखो, इधर आओ, यह मेरी मा की एक पुस्तक है । यह माता के हस्ताक्षर हैं ।”

अफिलिया उठ कर आई ।

सेन्टक्लेयर ने कहा, "मा यह सङ्गीत प्रायः गाया करती थी। मुझे ऐसा जान पड़ रहा है मानों इस समय मैं माता का गाना सुन रहा हूँ।" इतना कह कर सेन्टक्लेयर ने 'डिस इरि' नाम का एक पुराना बड़ा गम्भीर लेटिन गीत गाया।

टाम बराम्दे में बैठा था। गाना सुन कर वह दरवाज़े के पास आकर खड़ा हो गया। गाने का कुछ भी अर्थ उसकी समझ में न आया पर गाने और बजाने की तान पर उसका हृदय खिँच उठा। विशेषतः सेन्टक्लेयर जब उस सङ्गीत का अधिक करुण अंश गाने लगा तो वह एकदम मोहित हो गया।

गीत समाप्त होने पर सेन्टक्लेयर सिर पर हाथ धर कर स्थिरचित्त से कुछ सोचने लगा। कुछ देर बाद उठ कर घर में टहलने लगा। फिर मिस अफिलिया के निकट आकर उसने कहा, "बहन! परलोक-सम्बन्धी विश्वास मनुष्य के हृदय में क्या ही अपूर्व शान्ति ला देता है। केवल शान्ति ही नहीं, यह विश्वास मनुष्य को संसार के अत्याचार, अन्याय और सब प्रकार के कष्ट सहने में समर्थ बनाता है। इस विश्वास के बल पर आशा लगी रहती है कि कभी तो एक दिन इन सब दुःखों का अन्त होगा।

अफिलिया—पर, हम लोगों सरीखे पापियों के लिए यह बड़ी भयङ्कर वस्तु है।

सेन्टक्लेयर—मेरे लिए तो सचमुच ही भयङ्कर है। मैं आज टाम को बाइबल से परलोक के विचार का विषय पढ़ कर सुना रहा था। पढ़ते पढ़ते मेरा कलेजा थर्रा उठा। मेरा ख़याल था कि बुरा काम करना ही पाप है, और बहुत बुरे कामों के फल से ही लोग स्वर्ग से वञ्चित रहते हैं; पर बाइबल का यह मत नहीं है। वास्तव में अच्छे काम न करना ही घोर पाप है, इसी पाप के लिए परलोक में दण्ड भोगना पड़ता है।

अफिलिया ने कहा, "मैं समझती हूँ कि जो सत्कर्म नहीं करता उसे असत्कर्म करना ही पड़ेगा । सत् और असत् दोही ठहरे, तीसरा कोई मार्ग ही नहीं है। इच्छा हो सन्मार्ग से जाओ, नहीं असन्मार्ग से जाना ही पड़ेगा ।

सेन्टक्लेयर व्याकुल चित्त से आपही आप कहने लगा, "तो-तो जिस आदमी ने अपने मन, अपनी उच्च शिक्षा को, समाज के अभावों को जानने और ज़ोरों से उसका बखान करते हुए भी, समाज की भलाई में नहीं लगाया, जिसने बिलकुल उदासीन दर्शक की भाँति सैकड़ों मनुष्यों की यन्त्रणा और दुर्दशा देख कर भी कार्यक्षेत्र में पैर नहीं रक्खा और स्वप्न-सागर में बह रहा है, उसके सम्बन्ध में क्या कहा जायगा ?"

अफिलिया—मैं तो कहती हूँ उसे अपनी पिछली बातों को भूल कर इसी क्षण से कार्य में लग जाना चाहिए ।

सेन्टक्लेयर ने मुस्कुराकर फिर कहा, "बहन, तुम ठीक ठिकाने पर असल काम की बात को पकड़ती हो । तुम कभी मुझे सोचने विचारने का ज़रा भी समय नहीं देना चाहती । तुम मेरी दीर्घ चिन्ता के प्रवाह को घुमा कर प्रकृत वर्त्तमान की ओर ले जाती हो । तुम्हारी आँखों के सामने एक विराट वर्त्तमान पड़ा हुआ है ।"

अफिलिया—मेरा तो यह मत है कि जो कुछ करना हो वह अभी कर डालना चाहिए । इस वर्त्तमान मुहूर्त्त के सिवा और किसी समय पर मनुष्य का अधिकार नहीं है ।

सेन्टक्लेयर—उस प्यारी नन्ही इवा ने, मुझे काम में लगाने के लिए, मेरी भलाई के लिए जी-जान से यत्न किया था ।

इवा की मृत्यु के सम्बन्ध में सेन्टक्लेयर ने और कभी अधिक चर्चा नहीं की थी; पर आज अत्यन्त गहरे शोक को बलपूर्वक दबा कर ये कई बातें कह डालीं । उसी समय फिर कहा, धर्म के

विषय में मेरा यह मत है कि तब तक कोई मनुष्य धर्मात्मा कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता जब तक कि वह सब प्रकार के सामाजिक और राजनैतिक अत्याचारों, दुःखों और कष्टों को दूर करने के लिए आत्मोत्सर्ग नहीं करता, देश-प्रचलित सारी कुरीतियों को जड़ से दूर उखाड़ फेंकने का यत्न नहीं करता, संसार का दुःखदारिद्र्य दूर करने की चेष्टा नहीं करता, संसार के समस्त नर-नारियों को समान अधिकार दिलाने के संग्राम के लिए प्रस्तुत नहीं होता, और उस संग्राम में जीवन की मोह-ममता तज कर प्राण विसर्जन करने पर कटि-बद्ध नहीं होता ।

"पर यहाँ तो जो धर्म-प्रचारक कहलाते हैं, जिन्हों ने लोगों को धर्मात्मा बना देने का बीड़ा उठा रक्खा है, वे निर्बल पर सबल के अत्याचारों की एवं अन्यान्य सारी सामाजिक बुराइयों की उपेक्षा करते हैं। यही कारण है कि समझदारों को उनके कार्यों पर आस्था नहीं रहती ।"

मिस अफिलिया—यदि तुम सब जानते बूझते हो तो फिर तुम्हीं यह सब काम क्यों नहीं करते ?

सेन्टक्लेयर—मैं जानता बूझता सब हूँ, पर मेरी सहृदयता यहीं तक है कि मैं स्वयं कुछ करूँ धरूँगा नहीं, दूध सी सफ़ेद शय्या पर पड़ा रहूँगा और पादरियों की चाहे सब के सब धर्म-वीर ही क्यों न हों, चाहे सत्य के लिए प्राण ही देने वाले क्यों न हों, निन्दा करता रहूँगा और उन पर वाक्य-बाण बरसाता रहूँगा। दूसरों को कर्त्तव्य के पीछे, धर्म के पीछे, प्राण तक दे डालना चाहिए, इसे मैं ख़ूब समझता हूँ और जो अपना कर्त्तव्य पालन नहीं करते उनकी निन्दा भी ख़ूब करना जानता हूँ। पर मुझसे जो कुछ कहो तो नहीं होने का ।

अफिलिया—अब आगे से क्या तुम्हारे जीवन का दूसरा ढङ्ग होगा?

सेन्टक्लेयर—आगे की जाने भगवान्। हाँ, पहले से अब साहस बढ़ गया है। क्योंकि अब सोने खाने को कुछ रहा नहीं, सर्वस्व हार चुका। और जिसका हाथ खाली है उसे विपद का क्या डर?

अफिलिया—तो तुम करना क्या चाहते हो?

सेन्टक्लेयर—मैं अपने निज के दास-दासियों को दासत्व से मुक्त करके उनकी उन्नति की चेष्टा करूँगा। फिर शनैः शनैः जिसमें देश भर से यह कुप्रथा उठ जाय इसका उपाय सोचूँगा।

अफिलिया—तुम क्या सोचते हो कि देश भर अपनी इच्छा से इस प्रथा को छोड़ देगा?

सेन्टक्लेयर—यह मैं नहीं कह सकता। लेकिन हाँ, आज कल त्याग स्वीकार और निस्स्वार्थ प्रेम के दृष्टान्त बहुत जगह देखे जाते हैं। उस दिन युरोप में हँगरी के ज़मीन्दारों ने लाखों की हानि सह कर प्रजाओं को कर माफ़ कर दिया। उनकी प्रजा बिल्कुल पराधीन थी। उन्हें स्वाधीनता दे दी गई। क्या हमारे देश में ऐसे दो चार सहृदय मनुष्य नहीं मिलेंगे, जो जातीय गौरव और न्याय के लिए अर्थ की हानि को सहर्ष सहन करलें?

मिस अफिलिया—मुझे विश्वास नहीं होता, अँगरेज़ जाति बड़ी अर्थ-पिशाच होती है—बल्कि फ्रेंच इनसे अधिक सहृदय होते हैं।

इसके बाद सेन्टक्लेयर ने अफिलिया से कहा, "न मालूम आज क्यों मुझे बार बार अपनी माता का स्मरण आ रहा है। मुझे मालूम हो रहा है मानों वह मेरे बहुत निकट है।"

इतना कह कर वह कुछ देर घर में टहला, फिर बोला, ज़रा बाहर घूम आऊँ और आज की खबरें भी सुनता आऊँ।

इसके वाद सेन्टक्लेयर टोपी हाथ में लेकर वाहर निकला।

टाम उसके पीछे पीछे हो लिया।

सेन्टक्लेयर ने उसे देख कर कहा, "तुम्हारे साथ जाने की आवश्यकता नहीं है। मैं शीघ्र ही लौटूँगा।"

टाम लौट कर वराम्दे में बैठ गया। उस समय रात के नौ वजे थे। चाँद की शीतल चाँदनी पृथिवी पर चारों ओर छिटकी हुई थी। टाम वहीं बैठा बैठा सोचने लगा कि अब उसके दासत्व की वेड़ी छूटने में अधिक विलम्ब नहीं है। वह दस ही पाँच दिन में घर चला जायगा! सोचते सोचते उसे अपने स्त्री-पुत्रों का स्मरण हुआ, मन में नई नई आशायें उठने लगीं; वह सोचने लगा कि अपने शारीरिक परिश्रम से द्रव्य कमा कर अपनी पत्नी और सन्तानों को दासत्व से छुड़ा लेगा। इस विचार के साथ उसके हृदय में आनन्द की लहरें उठने लगीं। फिर अपने मालिक सेन्टक्लेयर की सहृदयता का स्मरण करते ही उसका हृदय कृतज्ञता से भर गया। इसके कुछ ही देर वाद इवा का स्मरण हुआ। जान पड़ा मानों स्वर्ग की देव-वालाओं से घिरी हुई इवा उसके सामने खड़ी हुई है। यों ही सोचते-विचारते टाम को नींद ने आ घेरा। स्वप्न में उसे दिखाई पड़ने लगा कि नाना प्रकार की पुष्प-मालायें धारण किये हुए इवा उसके पास आ रही है। उसका मुख-कमल वहुत चमक रहा है, उसकी दोनों आँखों से अमृत की वर्षा हो रही है। पर उसके मुख की ओर निहारते ही वह स्वर्ग की ओर उड़ी, उसके कपोल-युगल पर लालिमा छा गई, उसकी आँखों से ऐश्वरिक ज्योति निकलने लगी और पल भर में वह अन्तर्ध्यान हो गई।

इवा के नयनों की ओट होते ही वह जग उठा, जगते ही उसने घर के द्वार पर वहुत लोगों का शोर-गुल सुन कर, जल्दी जल्दी

जाकर दरवाज़ा खोला । दरवाज़ा खोलते ही उसने देखा कि कुछ लोग कपड़ों से ढकी हुई एक लाश लिए खड़े हैं । मृत कल्प व्यक्ति के मुख की ओर दृष्टि जाते ही टाम निराशा और दुःख के मारे चीख़ उठा । जो लोग मुमुर्षु व्यक्ति को कन्धे पर लाद कर लाये थे, उन्होंने घर में जाकर जहाँ अफिलिया बैठी थी वहाँ उसे उतार कर सुला दिया ।

सेन्टक्लेयर सन्ध्या के समाचार-पत्र पढ़ने के लिए किसी चाय-ख़ाने में गया था । जब वह वहाँ बैठ कर पत्र पढ़ रहा था तो उसने देखा कि दो भलेमानस शराब के नशे में मतवाले हुए आपस में मार-पीट कर रहे हैं । सेन्टक्लेयर तथा और दो एक मनुष्य उन्हें छुड़ाने की चेष्टा करने लगे । पर इनमें से एक के हाथ में एक तेज़ छुरा था, एकाएक वह छुरा सेन्टक्लेयर की बग़ल में घुस गया । वह तत्काल मूर्छित हो कर गिर पड़ा । तब कुछ लोगों ने उसे कन्धे पर लाद कर उसके घर पहुँचा दिया ।

सेन्टक्लेयर की यह दशा देख कर घर के सारे दास-दासी रोने चीख़ने लगे । सब की बुद्धि मारी गई, कोई पृथिवी पर लोट लोट कर रोने लगा, कोई उन्मत्त की तरह रोते हुए इधर से उधर दौड़ने लगा । केवल मिस अफिलिया और टाम विशेष प्रत्युत्पन्न-मति से सेन्टक्लेयर को चेत कराने के लिए भाँति भाँति के उपाय करने लगे । अफिलिया के आज्ञानुसार टाम ने तत्काल एक शय्या तैयार की और सेन्टक्लेयर को उस शय्या पर लिटा कर दवा से उसे होश में लाने की चेष्टा करने लगा । कुछ देर के बाद सेन्टक्लेयर को चेत हुआ, और आँखें मल कर एक एक करके सबको देखने लगा । सबके अन्त में कमरे में टँगी हुई अपनी माता की तसवीर पर जाकर उसकी दृष्टि अड़ गई, वह एकटक उसी की ओर निहारने लगा ।

शीघ्रही डाक्टर आया और उसके घावों की देख-भाल करने लगा। डाक्टर के चेहरे का उतार-चढ़ाव देख कर लोगों ने समझ लिया कि उसके जीने की कोई आशा नहीं है। डाक्टर घावों पर पट्टी बाँधने लगा, टाम और मिस अफिलिया दोनों बड़ी धीरता से सेन्टक्लेयर की सहायता करने लगे। और सब दास-दासी वहीं बैठे बैठे रोने धोने लगे। डाक्टर ने कहा कि रोगी के पास शोर-ग़ुल नहीं होना चाहिए, इन दास-दासियों को कमरे से बाहर करके रोगी को एकान्त में रखना चाहिए।

इसी समय सेन्टक्लेयर ने फिर आँखें खोलीं, जिन सब दास-दासियों को डाक्टर और अफिलिया ने बाहर निकल जाने को कहा था, उनके मुख की ओर देखते हुए ठण्डी साँस लेकर उसने कहा, "अभागे ग़ुलामों!" ये शब्द मुँह से निकलते समय ऐसा जान पड़ता था मानों उसके हृदय में आत्मग्लानि की आग धधक रही है। दासों में एडाल्फ वहाँ से किसी तरह जाने पर राज़ी न हुआ, वहीं पृथिवी पर लोट रहा। दूसरे दास-दासियों को जब मिस अफिलिया ने बहुत समझाया कि उनके वहाँ से न हटने से सेन्टक्लेयर को बड़ी तकलीफ़ होगी, तब वह बिल्कुल अनिच्छा-पूर्वक वहाँ से हटे।

सेन्टक्लेयर की बोली एकदम रुक गई। वह आँखें बन्द करके पड़ा रहा। उसके चेहरे से मालूम हो रहा था, मानों दुर्विषह अनुताप की आग में उसका हृदय जल रहा है। टाम उसकी बग़ल में घुटने टेक कर बैठा हुआ था। सेन्टक्लेयर ने कुछ देर बाद टाम के हाथ पर हाथ धर कर कहा, "टाम! दुःखी टाम!"

टाम ने बड़ी व्याकुलता से कहा, "प्रभु, क्या चाहते हैं?"

सेन्टक्लेयर ने उसका हाथ दबाते हुए कहा, "मेरी मृत्यु का समय आगया है। प्रार्थना करो।"

यह बात सुन कर डाक्टर ने कहा, "एक पादरी क्यों न बुला लिया जाय ?"

सेन्टक्लेयर ने सिर हिला कर असम्मति प्रकट की और टाम से फिर कहा, "टाम, प्रार्थना करो।"

गम्भीर विषाद-पूर्ण दुःख-भाराक्रान्त हृदय से, बड़ी व्याकुलता-पूर्वक टाम परलोक गमनोन्मुख आत्मा के कल्याण के लिए प्रार्थना करने लगा। टाम की प्रार्थना समाप्त होने पर भी सेन्टक्लेयर उसका हाथ पकड़े हुए उसकी ओर देखता रहा, पर कुछ बोल न सका। धीरे धीरे उसकी आँखें मुँदने लगीं, लेकिन टाम का हाथ वह पकड़े ही रहा। उसकी अन्त घड़ी आ गई। उस अनन्त अमृत-राज्य के दरवाज़े पर गोरा हाथ बड़े स्नेह के साथ काले हाथ को पकड़े रहा।

मृत्यु के समय भी उसके मुँह से माता का वह प्रिय सङ्गीत निकलने लगा। उसके दोनों होंठ हिलते देख कर डाक्टर ने कहा, "इनका चित्त विक्षिप्त हो गया है।"

तब सेन्टक्लेयर ने तनिक ज़ोर से कहा, "नहीं विक्षिप्त नहीं हुआ है, बल्कि साम्यावस्था को प्राप्त हो रहा है, असत्य से सत्य की ओर जारहा है, अपने घर में प्रवेश कर रहा है।"

ये कई बातें कहने में जो ज़ोर पड़ा था, उसी से सेन्टक्लेयर का शरीर एकदम निस्तेज होगया। मृत्यु की मलिन छाया ने उसके मुख-मण्डल को ढक लिया। पर इस मलिन छाया के साथ साथ प्रशान्त शान्ति के विकाश से उसके मुख पर मधुर कान्ति छा गई। जान पड़ने लगा मानों स्वर्ग से किसी दयालु आत्मा ने अकस्मात् उतर कर शान्ति की मृदुल प्रभा से उसके मुख-मण्डल को अनुरञ्जित कर दिया है।

मृत्यु के समय सेन्टक्लेयर के मुँह से और कोई बात न निकली।

मुख से "जननी" शब्द कहते ही उसके प्राण निकल गये; मानों सामने ही अपनी माता को देख कर दुध-मुँहा बच्चा उसकी गोद में कूद पड़ा।

बत्तीसवाँ परिच्छेद

अनाथ और अनाथायें ।

गुलामों के मालिक के मर जाने पर या क़र्ज़दार हो जाने पर उन गुलामों पर बड़ी विपद आ पड़ती है। इस दशा में पहले मालिक के उत्तराधिकारी या उनके महाजन इन अभागे निस्सहाय अनाथ गुलामों को प्रायः नीलाम कर डालते हैं। उस समय माता की गोद से बालक को और स्वामी के पास से स्त्री को अलग होना पड़ता है।

जिस बच्चे के मा-बाप मर जाते हैं और उसका पालन-पोषण उसके आत्मीय स्वजन करते हैं; उसे देशप्रचलित क़ानून के अनुसार मनुष्य के अधिकारों से वञ्चित नहीं होना पड़ता। पर क्रीत दासों को किसी प्रकार के मानवीय स्वत्व नहीं प्राप्त हैं। घर की अन्यान्य वस्तुओं की भाँति इनकी भी ख़रीद-फ़रोख़्त होती है।

सेन्टक्लेयर की मृत्यु से उसके दास-दासी बड़े सोच में पड़ गये। सभी के मन में यह चिन्ता होने लगी कि आगे न जाने कैसे निर्दयी मालिक के हाथ में पड़ना पड़ेगा। सेन्टक्लेयर का सा दयालु मालिक इस दासत्व-प्रथा-प्रचलित देश में सर्वथा दुष्प्राप्य है। ऐसे सहृदय मालिक को खो कर दास-दासियों को कितना शोक हुआ होगा, इसका सहज में अनुमान किया जा सकता है।

मेरी सेन्टक्लेयर ने आत्म-प्रश्रय (अपना दुलार) द्वारा शरीर और मन को बिल्कुल निकम्मा कर लिया था। अतएव स्वामी की मृत्यु के समय धीर चित्त से उसकी परिचर्या करना तो दूर रहा, उसके सामने

खड़ी भी न हो सकी, उस समय भय के कारण वह बारम्बार बेहोश होने लगी। जिसके साथ मेरी पवित्र विवाह-बन्धन से बँधी थी, वह बिना पत्नी से बोले चाले सदा के लिए विदा हो गया।

मिस अफिलिया ने अन्तिम समय तक तन मन से यथा-शक्ति सेन्टक्लेयर की सेवा-शुश्रूषा की। बस अफिलिया के सिवा इन बेचारे दीन गुलामों पर और कोई करुणा की दृष्टि डालने वाला न था। इसी से सबके सब अब व्याकुल-चित्त से मिस अफिलिया की ओर देखते थे।

सेन्टक्लेयर की लाश क़ब्र में गाड़ने के समय उसकी छाती पर एक स्त्री का एक छोटा सा चित्र और उसी के पीछे एक गुच्छा बालों का लगा हुआ मिला। गाड़ने के समय वह सैकड़ों आशाओं का, स्वप्नमय तरुण जीवन का स्मृति-चिह्न उस जीवन-शून्य वक्षःस्थल पर ही रख दिया गया।

टाम का मन परलोक की चिन्ता में डूब गया। इस समय एक बार के लिए भी उसके मन में यह बात न आई कि सेन्टक्लेयर की आकस्मिक मृत्यु के कारण अब उसे जन्म भर के लिए दासत्व की बेड़ियों में ही जकड़े रहना पड़ेगा। उसने मालिक की मृत्यु के समय बड़े भक्ति-भाव और विश्वास के साथ परमात्मा की प्रार्थना की। उसे इस बात का विश्वास हो गया कि परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली; इससे उसे अन्दर ही अन्दर बड़ी शान्ति प्राप्त हुई।

काले वस्त्रों के आडम्बर, पादरियों की अभ्यस्त प्रार्थना और बाह्य-गम्भीरता के साथ सेन्टक्लेयर की अन्त्येष्टि-क्रिया समाप्त हुई। फिर सदा से जो होता आया है कि, "इसके बाद क्या करना होगा?" वही प्रश्न सब के सामने आया।

उदास–दास-दासियों से घिर कर शोक-सूचक काले वस्त्रों के नमूने

देखते हुए मेरी के मन में यही प्रश्न उत्पन्न हुआ। मिस अफिलिया के मन में यह प्रश्न उत्पन्न होते ही उसने उत्तर में अपने पिता के घर लौट जाने की ठानी। पर उन अनाथ गुलामों के मन में यह प्रश्न उठते ही उनकी जान सूख गई। जिसके हाथ में उनकी लगाम पड़ी थी उसकी कठोरता किसी से छिपी न थी। वे ख़ूब जानते थे कि अब तक सेन्टक्लेयर के कारण ही वह उन पर अत्याचार नहीं करने पाती थी—पर अब जान बचने की कोई सूरत न रही।

सेन्टक्लेयर की अन्त्येष्टि-क्रिया के एक पक्ष बाद की बात है, एक दिन मिस अफिलिया अपने कमरे में बैठी हुई काम कर रही थी, इतने में किसी ने धीरे से उसका दरवाज़ा खटखटाया। उसने दरवाज़ा खोल कर देखा कि बाहर सुन्दर वर्ण-सङ्कर युवती रोज़ा खड़ी है,—पहले हम इसकी चर्चा बीच बीच में कर आये हैं, उसके बाल बिखरे हुए हैं और रोते रोते आँखें सूज आई हैं।

रोज़ा उसके पैरों पर गिर पड़ी और कपड़े का कोना पकड़ कर रोते हुए कहने लगी, "मिस फीली, मेरी तरफ़ से मेरी साहबा को दो बातें कहिए, मेरी जान बचाइए। वह बेत लगवाने के लिए मुझे दण्ड-गृह में भेज रही हैं—यह देखिए।" इतना कह कर उसने मिस अफिलिया के हाथ में एक काग़ज़ दिया।

इस काग़ज़ में दण्ड-गृह के कार्याध्यक्ष को लिखा गया था कि रोज़ा को पन्द्रह कोड़े लगाये जायँ।

मिस अफिलिया ने कहा, "बात क्या थी?"

रोज़ा ने कहा—"मिस फीली, आप जानती हैं, मेरा मिजाज़ बड़ा ख़राब है, थोड़े ही में मुझे क्रोध आ जाता है। मैं मिस मेरी साहबा का कपड़ा अपने बदन पर पहिन कर देख रही थी, इस पर उन्होंने मेरे गाल पर एक थप्पड़ जमा दिया। मुझे क्रोध आया। बिना सोचे-विचारे

जो भला बुरा मुँह से निकला बक गई। इस पर मलकिन ने कहा, "देख अब तेरा सिर चढ़ना कैसा उतारती हूँ, तब समझेगी कि मैं कौन हूँ, इतने दिनों आदर पा पा कर तू बहुत ऐंठ गई है, तेरा यह घमण्ड अधिक दिन नहीं टिकेगा।"

काग़ज़ हाथ में लिये हुए खड़ी खड़ी मिस अफिलिया सोचने लगी।

रोज़ा ने कहा, "मिस फीली, आप देखें, मैं मार से नहीं डरती। यदि मेरी साहबा या आप घर में बिठाकर मुझे पचास बेंत लगावें, उसमें कोई लज्जा नहीं। पर आदमी के पास भेजना, और वह भी—ऐसा भयङ्कर नीच—कैसी शर्म की बात है!"

मिस अफिलिया ने पहले भी यह सुन रक्खा था कि दासत्व प्रथावलम्बी प्रदेशों में दासों के मालिक बालिका और युवती दासियों को बड़ी नीच प्रकृति वाले पुरुषों के पास दण्ड देने को भेजते हैं। मिस अफिलिया ने कई बार सुना था कि इन अभागियों को इस तरह दण्ड मिलने में लज्जा, शीलता और यहाँ तक कि मनुष्यत्व तक को तिलाञ्जलि दे देनी पड़ती है। पर यों दण्ड मिलने से स्त्रियों को कैसा भयङ्कर कष्ट होता है, यह बात कानों से सुन कर हृदय में बैठी नहीं थी। पर आज भय और दुःख से विवर्णमुख, कम्पित-देह रोज़ा को देख कर सब बातें हृदय में अङ्कित हो गईं।

साधु-स्त्री-जनोचित, न्यू इँग्लेण्ड की स्वाधीन-प्रकृति-सुलभ घृणा से उसका चेहरा लाल हो गया। किन्तु चिराभ्यस्त, आत्म-संयम और परिणामदर्शिता के साथ उसने काग़ज़ को दृढ़ रूप से अपने हाथ में लेकर रोज़ा से कहा, "बच्ची, तुम यहाँ बैठो, मैं तुम्हारी मलकिन के पास जाती हूँ।"

कमरे में जाते हुए वह अपने आप कहती जाती थी, "कैसी शर्म की बात है! कैसा भयङ्कर विषय है! कैसा पैशाचिक काण्ड है!"

अफिलिया ने जाकर देखा, मेरी अधमूँदे नयनों से कुर्सी पर बैठी हुई है, मामी पीछे खड़ी उसके बाल झार रही है और जेन ज़मीन पर बैठी उसके पैर दबा रही है।

मिस अफ़िलिया ने उससे पूछा, "कहिए आज आपकी तबियत कैसी है?"

यह प्रश्न सुनते ही मेरी ने ठण्ढी साँस लेकर आँखें बन्द करते हुए कहा, "न जाने बहिन; मालूम होता है जैसी बराबर रहती हूँ वैसी ही हूँ।" यह कह कर उसने एक बढ़िया रूमाल से आँखें पोंछीं।

मिस अफिलिया ने इस ढङ्ग से जैसे कोई बहुत मुश्किल बात कहता हो, शुष्क कण्ठ से कहा, "मैं रोज़ा के सम्बन्ध में तुमसे कुछ कहने आई हूँ।"

अब मेरी की आँखें ख़ूब खुल गईं, मुँह लाल हो गया और वह कर्कश स्वर से बोली, "रोज़ा के सम्बन्ध में क्या बात है?"

"वह अपने अपराध के लिए बहुत पछता रही है।"

"पछता रही है, वह पछता रही है? अभी बहुत पछताना पड़ेगा। मैं थोड़े में छोड़ने वाली नहीं हूँ। मैंने बहुत दिनों तक इस छोकड़ी की धृष्टता सही, अब की मैं इसे ख़ूब दुरुस्त करूँगी, इसे धूल में मिला दूँगी।"

"क्या तुम उसे और किसी प्रकार की सज़ा नहीं दे सकती हो, जो इससे कम लज्जाजनक हो?"

"मेरा तो मतलब ही उसे शर्म दिलाने से है; यही तो मैं चाहती हूँ। यह छोकड़ी जन्म से अपनी शीलता, सौन्दर्य और भली स्त्रियों की सी रीति-नीति की शेख़ी में ऐंठ कर अपनी असली दशा को भूल गई है। अब मैं इसकी सारी शेख़ी और ठाठ निकाल दूँगी।"

"पर बहिन, सोच कर देखने की बात है, किसी युवती स्त्री की लज्जा और कोमलता को नष्ट करना, उसके बहुत शीघ्र पतित होने का मार्ग साफ़ कर देना है।"

घृणा के साथ हँस कर मेरी ने कहा, "लज्जाशीलता। ऐसे लोगों की लज्जाशीलता और चरित्र की कोमलता मैं उसे सिखला दूँगी कि फटे हुए टुकड़े पहन कर राह में जो स्त्रियाँ ठोकरें खाती फिरती हैं, उनसे वह किसी अंश में अच्छी नहीं है। मेरे सामने उसके यह भलमन्सी के ठाठ-बाट नहीं चलने पावेंगे।

मिस अफिलिया ने ज़ोर के साथ कहा, इस निर्दयता के लिए तुम्हें ईश्वर के यहाँ जवाब देना पड़ेगा।

"निर्दयता! बतलाओ, इसमें क्या निर्दयता है? मैंने केवल पन्द्रह कोड़े लगाने को लिखा है सो भी हल्के हल्के। मैं इसमें कुछ निर्दयता नहीं देखती।"

मिस अफिलिया ने कहा, "निर्दयता नहीं है! मेरा विश्वास है कि इस दण्ड की अपेक्षा स्त्रियाँ मृत्यु को कहीं अच्छा समझेंगी।"

मेरी—बहिन, तुम्हारा जैसा हृदय जिसका है, उसके हृदय में ऐसा भाव आ सकता है, पर इन सब दासियों को ऐसा दण्ड भोगने का अभ्यास है; उनकी अक़्ल ठिकाने रखने का केवल यही एक मात्र उपाय है। एक बार माफ़ कर देने से तो यह सिर पर चढ़ जाते हैं। मैं अब तक इन्हें छोड़ती गई, इसीसे यह बिगड़ गये। मैं अब इन्हें ठीक करूँगी। जो कोई क़सूर करेगा, तुरन्त उसे दण्डगृह में कोड़े लगाने भेज दूँगी।

जेन जो मेरी के पैर दाब रही थी, यह बात सुन कर उसकी तिल्ली चौंक उठी, उसने सोचा यह अन्तिम बात उसी को सुना कर कही गई है, शायद रोज़ा के बाद उसी की पारी आवे।

मिस अफिलिया को मेरी की बात पर बड़ा क्रोध आया । उसका शरीर काँपने लगा । पर उसने सोच कर देखा कि मेरी के साथ झगड़ा करने का कोई नतीजा न होगा, इससे वह वहाँ से उठ कर अपने कमरे में चली गई । रोज़ा के दुःख से वह इतनी दुःखी हुई कि रोज़ा से लौट कर यह बात नहीं कह सकी कि मेरी ने उसकी बात नहीं रक्खी ।

कुछ देर बाद एक काला ग़ुलाम मेरी की आज्ञानुसार रोज़ा को पकड़ कर दण्डगृह में ले गया । रोज़ा कितनी ही रोई चिल्लाई, पर मेरी का वज्र-हृदय न पसीजा ।

एडाल्फ पर मेरी बड़ा खार खाये हुए थी । पर सेन्टक्लेयर की वजह से किसी दासदासी पर वश न चलता था, इसीसे अब तक वह एडाल्फ को किसी प्रकार का दण्ड न दे सकी थी । सेन्टक्लेयर की मृत्यु से एडाल्फ एकदम निराशा के समुद्र में डूब गया । अब वह हर-दम मेरी के डर से कांपा करता था । मेरी ने सेन्टक्लेयर के भ्राता अल-फ्रेड और अपने वकील से सलाह करके यह निश्चय किया कि वह सेन्ट-क्लेयर के मकान और सब ग़ुलामों को बेच डालेगी, केवल जो ग़ुलाम उसके निज के हैं उन्हें अपने साथ ले पिता के घर जाकर रहेगी । एडाल्फ ने यह बात सुन पाई और एक दिन टाम से जाकर कहा, "टाम, क्या तुम्हें मालूम है कि मलकिन हम लोगों को बेंच डालेगी ?

टाम—तुमने किससे सुना ?

एडाल्फ—मेरी जब वकील से बातें कर रही थी तो मैंने पर्दे की ओट से सब बातें सुनी थीं । टाम, अब कुछ ही दिनों में हम सब लोग नीलाम-घर भेज दिये जायँगे ।

टाम ने ठण्ढी साँस लेकर कहा, "जो ईश्वर की मर्ज़ी होगी ।"

एडाल्फ बोला, "अब ऐसा दयालु मालिक नहीं मिलेगा । लेकिन

मेम साहब के पास रहने से तो दूसरे के हाथ बिकना ही अच्छा है ।"

टाम घूमकर खड़ा हो गया; उसका हृदय विषाद से भरा हुआ था। कहाँ वह स्वाधीन होने की ख़ुशियाँ मना रहा था, और शीघ्र ही अपने बाल बच्चों से मिलने की आशा में फूला न समाता था और कहाँ यह विपद का पहाड़ उस पर टूट पड़ा। नाव किनारे लगते लगते डूब गई। स्वाधीन होने की जो कितनी ही आशाएं थीं, वह आज जाती रहीं। टाम स्वाधीनता को बड़ा अमूल्य धन समझता था, फिर भी वह ईश्वर के भरोसे धैर्यपथ से न डिगा, ऊपर को सिर उठा हाथ जोड़ कर कहने लगा, "भगवन्, तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो।" पर यह वाक्य कहते समय उसका हृदय विदीर्ण होने लगा।

कुछ देर बाद टाम मिस अफिलिया के कमरे में गया। इवा की मृत्यु के उपरान्त मिस अफिलिया टाम पर विशेष स्नेह दिखाती थी।

टाम ने मिस अफिलिया से कहा, "मिस फीली, मालिक सेन्टक्लेयर ने मुझे दासत्व से मुक्त कर देने का वचन दिया था। वकील से इस मामले में उन्होंने मसविदा बनाने को भी कह दिया था। अब आप यदि मेम साहब से कहें तो वह मालिक के वचनों को पूरा कर सकती हैं।"

मिस अफिलिया—टाम, मैं तुम्हारे लिए कहूँगी, अपने भर सक यत्न करूँगी। पर मुझे आशा नहीं कि मेरी-सेन्टक्लेयर कुछ करे—कोशिश बेफ़ायदा होगी।

मिस अफिलिया टाम को विदा करके सोचने लगी कि शायद रोज़ा के लिए अनुरोध करते समय उसके मुँह से कुछ कठोर बातें निकल गई थीं, इसीसे मेरी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया,

इससे आज मीठी मीठी बातों से मेरी को राज़ी करूँगी। शायद इस तरह वह टाम को छोड़ने पर सम्मत हो जाय। यह सोच कर वह मेरी के कमरे में गई।

मेरी खाट पर लेटी पड़ी थी और जेन उसे तरह तरह के काले कपड़ों के नमूने दिखा रही थीं।

मेरी ने उन नमूनों में से एक चुन कर कहा, "यह ठीक है, लेकिन मैं ठीक नहीं कह सकती कि यह पूर्ण शोकसूचक होगा या नहीं।"

जेन ने तत्काल कहा, "आप क्या कहती हैं! अभी उस दिन मिस्टर जेनरल डरवन साहब के मरने पर उनकी मेम ने यही कपड़ा पहना था। पहनने पर यह बहुत खुलता है। इससे दर्शकों का मन खिंच उठता है।"

मेरी ने मिस अफिलिया से कहा, "आपकी समझ में यह कपड़ा कैसा है?"

मिस अफिलिया—यह अपने अपने यहाँ की रीति पर निर्भर है। मेरी अपेक्षा इसे तुम अच्छी तरह जानती हो।"

मेरी ने कहा, "असल में मेरे लायक एक भी पोशाक नहीं है। पर अगले ही सप्ताह मैं जाने वाली हूँ, इससे कोई एक पसन्द कर लेना पड़ता है।"

मिस अफिलिया ने कहा, "तुम इतनी जल्दी जाओगी?"

मेरी—हाँ, अलफ्रेड और वकील की राय है कि घर का माल-असबाब तथा दास-दासी सब नीलाम कर डालना ही ठीक है।

मिस अफिलिया—मैं तुमसे एक बात कहने वाली थी। अगस्टिन ने टाम को स्वाधीन कर देने का वचन दिया था। यहाँ तक कि उसके लिए मसौदा बनने की भी बातचीत होगई थी। मैं आशा करती हूँ कि तुम यत्न करके वकील से शीघ्र ही मुक्तिपत्र लिखवा लोगी।

मेरी—मैं कभी ऐसा नहीं करूँगी! टाम के पूरे दाम आवेंगे, वह इस तरह किसी भाँति नहीं छोड़ा जा सकता। फिर उसे स्वाधीनता की ऐसी ज़रूरत ही क्या धरी है? स्वाधीन होने पर वह वर्त्तमान दशा से अच्छी दशा में तो रह न सकेगा।

मिस अफिलिया—पर उसकी स्वाधीन होने की बड़ी इच्छा है, और उसके मालिक ने उसे स्वाधीन कर देने का वचन दिया था।

मेरी—टाम की इच्छा हो सकती है। ये तो जन्म भर असन्तुष्ट ही बने रहते हैं, जो इन्हें नहीं मिलता उसकी ये बराबर ही इच्छा किया करते हैं। मैं तो सदा से दासत्व-उन्मोचन के विपक्ष में हूँ। जब तक यह हबशी किसी मालिक की अधीनता में रहते हैं, तब तक अच्छे रहते हैं, पर स्वाधीनता मिलते ही ये आलसी हो जाते हैं, शराब पीना आरम्भ कर देते हैं, और नीचे गिरते चले जाते हैं। मैंने सैकड़ों बार यही बात देखी है। इन्हें स्वाधीन करने में इनका उपकार नहीं बल्कि इनका बिगाड़ करना है।

मिस अफिलिया—पर टाम भलामानस, परिश्रमी, और धार्मिक है।

मेरी—ओह! मुझे तुम्हारे कहने की ज़रूरत नहीं है। मैंने वैसे वैसे सैकड़ों देख डाले हैं। पराधीनता में ही वे अच्छे रहते हैं, यह सार बात है।

मिस अफिलिया—पर ख़याल करो, जब तुम इसे नीलाम करोगी तो हो सकता है कि कोई निर्दयी आदमी इसे ख़रीद ले जाय।

मेरी—यह सब फ़ज़ूल की बातें हैं। नौकर अच्छा हो तो सैकड़ों में एक भी मालिक बुरा नहीं मिलता। मालिकों की लोग नाहक़ झूठी शिकायत करते हैं। मैं जन्म से इसी दक्षिण प्रदेश में हूँ। पर अब तक ऐसा एक भी मालिक नहीं देखा कि जो अपने दासों के साथ उपयुक्त

व्यवहार न करता हो । मैं इस पर विश्वास नहीं करती कि टाम का भविष्यत् मालिक उससे निर्दयता का व्यवहार करेगा ।

अफिलिया—ख़ैर । पर मैं जानती हूँ कि तुम्हारे पति की अन्तिम इच्छा टाम को स्वाधीन कर देने की थी, उसने इवा की मृत्यु के समय इवा से भी इस बात की प्रतिज्ञा की थी कि टाम को बहुत शीघ्र स्वाधीनता दी जायगी । फिर कोई कारण नहीं देख पड़ता कि तुम अपने स्वामी और कन्या की इच्छा का इस तरह दलन करो ।

इस पर मेरी ने रूमाल से अपना चेहरा ढक लिया और लगी सिसक सिसक कर रोने । बेहोशी के डर से बार बार एमोनिया की शीशी सूँघते सूँघते भरे हुए गले से कहने लगी, "जो होता है, मुझसे लड़ने ही चलता है, कोई मेरे दुःख का ख़याल नहीं करता । मैंने कभी नहीं सोचा था कि तुम मेरे मन में फिर शोक की याद दिला कर कटे पर नमक छिड़कने आओगी । तुम्हें भी मुझे सताने ही की सूझी, तुम्हें मेरा जी दुखाने में तनिक भी कुण्ठा न हुई । पर मेरी सोचता कौन है ? मेरी दशा को समझता कौन है ? सब को अपने अपने सुख की पड़ी है । मेरे एक कन्या थी, उसे भी भगवान ने उठालिया, उसके बाद मेरे पति ठीक मेरे मन के से पति—मेरे मन का सा आदमी मिलना भी दुर्घट है, उनकी भी मृत्यु हो गई । तुम्हारे मन में ज़रा भी मोह माया नहीं है, इसी से तुमने मेरी कन्या और स्वामी की मृत्यु का उल्लेख करके मेरे शोक की अग्नि में घृत डाल दिया !"

मेरी और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी, बेहोशी के लक्षण दिखाई दिये, मामी से कहने लगी,—

खिड़की खोल दे, कपूर की शीशी ला, मेरे सिर पर जल ढाल, मेरे कपड़े ढीले करदे ।

चारों ओर बड़ा शोर-गुल मचा, इसी बीच में मिस अफिलिया किसी तरह जान बचा कर अपने कमरे की ओर भागी ।

मिस अफिलिया ने देखा कि मेरी से बकवाद करना फ़ज़ूल है। बेहोशी बुलाने की मेरी में अद्भुत क्षमता है। इसके बाद जब कभी दास-दासियों के सम्बन्ध में उसके सामने सेन्टक्लेयर और इवा की इच्छा की चर्चा की जाती तो वह एक बड़ा बखेड़ा खड़ा कर लेती थी। मिस अफ़िलिया ने टाम के छुटकारे का और कोई उपाय न देख कर मिसेज् शेल्बी को टाम के दुःख की सारी बातें साफ़ साफ़ लिखदीं और उसे शीघ्र छुड़ा ले जाने का विशेष अनुरोध किया।

इसी के दूसरे दिन टाम, एडाल्फ तथा अन्य छः दास नीलाम करने के लिए नीलाम-घर में भेज दिये गये ।

तैंतीसवाँ परिच्छेद

ग़ुलाम-बिक्री की आढ़त।

ग़ुलाम-बिक्री की आढ़त! शायद पाठक यह नाम सुन कर ही चौंकें और मनही मन कल्पना करने लगें कि यह बड़ा विकट स्थान होगा और मालगोदामों की तरह न मालूम कितना अँधेरा और बहुत मैला-कुचैला होगा? पर नहीं, यह बात नहीं है। सभ्यता की उन्नति के साथ साथ लोग सभ्य प्रणाली और चतुराई से दुष्कर्म करना सीखते हैं। दास-व्यवसायी लोग इस बात की बड़ी फ़िक्र रखते थे कि मनुष्यरूपी सम्पत्ति—जीवात्मारूपी माल के दाम बाज़ार में किसी प्रकार कम न आवें। बिकने के पहले वे ग़ुलामों को अच्छा खाने और अच्छा पहनने को देते थे, उन्हें कोई रोग न होने पावे, इस ओर भी पूरी दृष्टि रखते थे। इसीसे न्यू अर्लिन्स के दास-व्यवसायी आढ़तिये अपने स्थानों को बड़ा साफ़-सुथरा रखते थे। इन सब आढ़त-घरों के सामने सजे सजाये खुले हुए बरामदे थे। वहाँ ग़ुलामों को एक कतार से खड़ा किया जाता था। बाहरी आदमी देखते ही समझ लेता था कि इस घर में नरनारियों का सौदा होता है।

आढ़तिये ख़रीदारों को बड़ी आवभगत से बुला कर ग़ुलामों को परखाते थे। पर इस घर में चल कर आप क्या देखेंगे? आप देखेंगे कि स्वामी, स्त्री, पिता, माता, बालक—ये एक दूसरे से सदा के लिए बिछुड़ जाने की बात सोच सोच कर बिलख रहे हैं। स्त्री पति के कन्धे पर सिर धर कर कह रही है—हा विधाता! जन्म भर के लिए

हम लोगों का वियोग हो जायगा। ईश्वर करें कि हम दोनों को एक ही आदमी मोल ले।" कहीं पति स्त्री का गला पकड़ कर कह रहा है—"मेरा यह जीवन वृथा है। मैंने क्यों यह मानव तन पाया?" जननी बच्चे को हृदय में चिपका कर बारम्बार उसका मुख चूमती है और सिर पीट कर कहती है—"परमेश्वर, मुझे क्यों सन्तान दी? मृत्यु! तुम कहाँ छिप गई हो!"—बच्चे दृढ़ता से अपनी माताओं के कपड़े पकड़े हुए हैं, वे सोचते हैं, बस, इतने ही से उन्हें कोई अलग न कर सकेगा। इन दृश्यों को देख कर पत्थर का कलेजा भी पिघल जाता है। पर उन अर्थलोलुप नरपिशाच अँगरेज़ बनियों के हृदय की कठोरता की हद ही नहीं है।

जो मनुष्यात्मा अमृत का अधिकारी है, विश्वपति की अमृत-क्रोड़ जिन प्रत्येक आत्माओं के लिए खुली हुई है, धन के लोभ से आज उन्हीं आत्माओं के सौदे हो रहे हैं! यह घृणित सौदा करनेवाली वही गोरी जाति है जो सभ्यता की लम्बी लम्बी डींगें हाँकती है और दूसरी जातियों को ठग बतला कर स्वयं बड़ी शहन्शाह बनती है।

टाम, एडाल्फ तथा सेन्टक्लेयर के और आधे दर्जन दास-दासी स्केग साहब की ग़ुलाम-बिक्री की आढ़त में पहुँचाये गये। यहाँ और भी बहुतेरे दास-दासी आये हुए हैं। इन सभों को हर समय ख़ुश रखने के लिए आढ़त के मालिकों की बड़ी चेष्टा रहती है। उदास-मुख देखने से कहीं ग्राहक दाम कम न लगावें, इसीलिए भाँति भाँति के उपायों से इन्हें हँसाने का यत्न हो रहा है। चारों ओर हँसी ठट्ठे तमाशे हो रहे हैं। पर क्या टाम के से आदमी को इस दशा में हँसी आ सकती है? एक तो इवा और सेन्टक्लेयर का शोक ही उसके हृदय को फूँक रहा है, तिस पर अपनी यह दुर्दशा; कोई भी, जिसमें मनुष्यात्मा है, इस दशा में नहीं हँस सकता।

टाम़ दूसरे दास-दासियों से कुछ दूर जाकर घर के एक कोने में बड़े उदास चेहरे से अपने संदूक़ का सहारा लेकर वैठ गया। पर आढ़तवाले किसी को उदास वैठने देनेवाले न थे। वे इन्हें .खुश रखने के लिए वजाने को वाजा देते थे और नाचने गाने का हुक्म देते थे। इनमें जो अभागे .ग़ुलाम, स्त्री, स्वामी, सन्तान वा पिता, माता से विछुड़ने के दुर्निवार शोक के कारण हँसी .खुशी मनाने में भाग न लेते थे, वे "वदमाश" गिने जाते थे। इन सव वदमाशों को नाना प्रकार का दण्ड भोगना पड़ता था। यदि ख़रीदारों के सामने ये हँस-मुख वन कर न खड़े होते थे तो इनकी जानकी साँसत कर डाली जाती थी।

स्केग साहव की आढ़त का सहकारी कार्याध्यक्ष साम्वो नामक एक हवशी था। यह सदा सवको हँसाने की फ़िक्र में रहता था; और जिनको उदास वैठे पाता था उन पर कोड़े फटकारता था। पाठक यहाँ, पूछ सकते हैं कि हवशी होकर यह अपने स्वजातीय मनुष्यों पर इतना अत्याचार क्यों करता था? सुनिए, संसार में जो जाति पराधीन और पराजित होती है उस जाति के लोगों का सर्वथा पतन हो जाता है, वे महा स्वार्थी और नीच हो जाते हैं। स्वयं कोई पद या अधिकार पा जाने से भिन्नजातीय मालिक को .खुश करने के लिए .खुशामद के मारे निष्कारण अपने ही भाइयों को सताने में अपनी शेख़ी और वड़प्पन समझते हैं। हमारे यहाँ हिन्दुस्तान में ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है। इसी से अशिक्षित साम्वो अपने ही भाइयों पर जो अत्याचार करता था उसके लिए हम उसे अपराधी नहीं समझ सकते।

साम्वो ने जव देखा कि टाम अलग एक कोने में जाकर उदास वैठा है तो वह झट उसके पास पहुँच कर वोला, "तुम क्या करटा है?"

टाम ने शान्ति से कहा, "कल मेरा नीलाम होगा।" टाम को हँसाने के लिए साम्बो बहुत खिलखिला कर हँसते हुए बोला, "हमारा भी काल्ह नीलाम होगा।" साम्बो ने अपने मन में जाना कि उसने यह बड़े मज़ाक की बात कही, टाम इस पर ज़रूर हँस पड़ेगा। इसके बाद एडाल्फ के कन्धे पर हाथ धर कर बोला, "यह शब लोग, काल्ह नीलाम होगा।"

एडाल्फ ने बहुत चिटक कर कहा, "मेहरबानी करके मुझसे परे रहो।" इस पर साम्बो ने कहा, "बाप रे बाप, यह तो गोरा हवशी है, इसे तो तमाखूवाले के यहाँ तमाखू बेचने बैठा दिया जाय तो बड़ा अच्छा रहे।"

एडाल्फ—देखो, तुमसे कहता हूँ हट जाओ, क्या नहीं हटोगे?

साम्बो—हमारा गोरा हवशी लोग को बड़ा जल्दी गुस्सा आता है।

यह कह कर हाथ नचा नचा कर एडाल्फ की नक़ल करने लगा और व्यंग से बोला, "मालूम होटा है यह कोई बड़ा आदमी के इहाँ था।"

एडाल्फ—हाँ, मैं जिसके यहाँ था वह तेरे ऐसे छप्पन ग़ुलाम ख़रीद सकते थे।

साम्बो—दादा रे दादा! तब तो यह कोई बहुत ही बड़ा आदमी होगा।

एडाल्फ ने अभिमान सहित कहा, "मैं सेन्टक्लेयर के परिवार में था।"

साम्बो—हाँ, बड़े आदमी न होते तो यह घर की टूटी फूटी चाहदानियाँ यहाँ क्यों बिकने आतीं।

इस टट्ठे से एडाल्फ को बड़ा क्रोध आया, वह साम्बो पर बेतरह झपटा, दूसरे लोग यह देख कर तालियाँ बजाने लगे; इससे बड़ा शोर-

गुल मचा । शोर सुन कर आढ़त के प्रधानाध्यक्ष साहब हाथ में चाबुक लिये वहां पहुँचे, उसे देख कर सब अपनी अपनी जगह पर जा हटे । साम्बो ने उसे देख कर कहा, "सरकार, पहलेवाला लोग में कोई गुल गपाड़ा नेईं करता । मुँई शब को शीदा कर दिया, एई जो नया गुलाम लोग आया हैं, एई लोग बड़ा उत्पात करता है ।"

इस पर अध्यक्ष साहब बिना पूछ ताछ के टाम और एडाल्फ को दो चार लात घूसे जमा कर चलते बने । और जाते हुए फरमा गये कि, "देखो सब लोग चुप चाप सो जाओ, शोर मत मचाना ।"

दासों के घर का दृश्य पाठकों ने देख लिया, अब पाठकों को दासियों की दशा जानने का कौतूहल हो सकता है । आइए, हमारे साथ इन घर में चलिए, यहां आपको बहुत सी दासियां दिखाई देंगी । इनमें बूढ़ी भी हैं और जवान भी, अधेड़ भी हैं और लड़की भी, सभी तरह की हैं । अस्सी बरस की बुढ़िया से लेकर तीन वर्ष की लड़की तक । देखिए, यह एक दस बरस की लड़की किस तरह कराह कराह कर रो रही है । कल इसकी माता का नीलाम हो गया है, आज कोई इसकी ओर आंख उठा कर भी देखनेवाला नहीं है । बालिका "मां मां" करके चिल्ला रही है, पर कोई उसे पूछनेवाला नहीं है ।

और देखिए, यह अस्सी पार किये हुए, अत्यधिक मेहनत के कारण वात-व्याधि-ग्रस्त बुढ़िया बैठी हुई चुप चाप रो रही है । तीन बार इसकी डाक बोली गई, लेकिन बेकाम समझ कर किसी ने इसे न खरीदा । इसके पांच छः लड़के लड़कियों को कई लोग खरीद ले गये हैं । शोकयुक्ता जननी उन्हीं के लिए आंसू बहा रही है ।

और देखिएगा ? चलिए अभी देखते चलिए, अभी क्या हुआ है ? यह देखिए ये दो स्त्रियां साधारण स्त्रियों से कुछ दूर परे बैठी हैं ।

ये कपड़े लत्ते से भलीमानस सी जान पड़ती हैं। रंग भी इनका क़रीब क़रीब अँगरेज़ों का सा ही है। इनमें एक की उम्र ४५ की होगी। इसके अङ्ग .खूब गठीले हैं। इसके पासवाली दूसरी युवती की अवस्था पन्द्रह वर्ष की होगी। इन दोनों के चेहरों से जान पड़ता है कि दूसरी पहली की कन्या है। पहली स्त्री अँगरेज़ पिता और हवशी माता के संयोग का फल है। युवती भी निस्सन्देह अँगरेज़ वीर्य से ही उत्पन्न हुई जान पड़ती है। इनके कपड़ों का रङ्ग-ढङ्ग तथा हाथों की कोमलता पर ध्यान देने से पता चलता है कि इन्होंने कभी तकलीफ़ नहीं भोगी है। कल इन दोनों का नीलाम होगा।

ये न्यूयार्कनिवासी क्रिश्चियन-चर्च के एक धर्मात्मा मेम्बर साहब की ओर से नीलाम के लिए आई हैं। इनके दाम के हक़दार वही धर्मात्मा मेम्बर साहब ही होंगे। पर वह साहब जैसे धार्मिक क्रिश्चियन हैं, उससे इस बात में कोई शक नहीं रह जाता कि इन रुपयों में से वह कुछ तो गिर्जा बनाने के लिए और कुछ लार्ड विशप साहब के ख़र्च के लिए ज़रूर ही देंगे।

उन दोनों स्त्रियों में माता का नाम सूसन और कन्या का एमेलिन है। ये नव अर्लिन्स की एक सहृदय और सम्भ्रान्त महिला की दासी थीं। उसने इन्हें बड़ी लाग से .खूब लिखाया पढ़ाया था। पर बहुत अधिक फ़.जूलख़र्ची के कारण उसका एकलौता लड़का न्यूयार्क की बी० ऐण्ड० कम्पनी का बहुत कर्ज़दार हो गया। उस कम्पनी ने नालिश करके उस पर डिग्री करा ली; अब डिग्री में अचल सम्पत्ति की कुड़की और नीलाम में बड़ा ख़र्चा और परेशानी की बात बतला कर कम्पनी के वकील ने अस्थावर सम्पत्ति कुड़क करा कर नीलाम कराने की सलाह दी। अस्थावर सम्पत्ति में दास-दासी ही सर्वापेक्षा अधिक मूल्यवान् होते हैं। पर एक बड़ी अड़चन पड़ी, कम्पनी के साहब

उत्तर-प्रदेश के और एक खास तौर के क्रिश्चियन हैं । वह भला नर-नारियों का सौदा करने की प्रथा का सहारा कैसे लें । इस मामले को लेकर बड़ी लिखा पढ़ी चलने लगी । अस्थावर सम्पत्ति बेचे बिना ३०००० हजार रुपयों के जल्दी वसूल करने की सम्भावना नहीं । एक ओर तीस हजार अखण्ड मण्डलाकार, और दूसरी ओर क्रिश्चियन धर्म की होड़ बदी है, देखिए, किसकी जीत होती है । अन्त में तीस हजार ही की जीत पक्की रही । इरनली के साहब ने वकील को अस्थावर सम्पत्ति कुड़क करा कर नीलाम कराने का पत्र लिखा । वकील ने पत्र पाते ही सूसन और उसकी कन्या एमेलिन को कुड़क करके गोदाम में भेज दिया । उन्हीं दोनों मा-बेटियों को आप यहाँ गोदाम में बैठी चिन्तयुक्त हुई देख रहे हैं ।

एमेलिन कहती है, "माँ, तुम मेरी जाँघ पर सिर रख कर थोड़ा आराम करलो ।

सूसन—बेटी, मुझे नींद नहीं आवेगी । जान पड़ता है हम लोगों के संयोग का यह अन्तिम दिन है ।

एमेलिन—माँ, तुम ऐसा क्यों कहती हो, शायद हम दोनों को कोई एक ही आदमी खरीद ले ।

सूसन—बेटी एम, इसकी कोई आशा नहीं । मैं झूठी आशा दिला कर मन को भुलाना नहीं चाहती ।

एमेलिन—क्यों, वह नीलामवाला तो कहता था कि हम दोनों एक ही सी हैं, इससे दोनों को एक ही डाक कर देगा ।

सूसन की उम्र अधिक होने के कारण उसका अनुभव भी बहुत था, वह आदमियों को देख कर ताड़ जाती थी कि कौन कैसा है ? उस आदमी के चेहरे का रङ्ग ढङ्ग देख कर उसकी बातें सुन कर उसके होश उड़ गये । उस गोदाम का रक्षक जब एमेलिन का हाथ पकड़ कर

और उसके सुन्दर बालों को हिला डुला कर देखते हुए कहने लगा कि "यह माल बड़ा चोखा है, इसके ख़ूब दाम आवेंगे—" तभी सूसन की जान निकल गई। सूसन का हृदय बहुत धार्मिक था, इससे यह सोचकर उसका हृदय दहकने लगा कि उसके गर्भ से जन्मी हुई कन्या को कोई लम्पट पिशाच-प्रकृति अँगरेज़ ख़रीद कर उपपत्नी बनावेगा।

एमेलिन ने फिर कहा, "माँ! तुम रसोई बहुत अच्छी बनाना जानती हो, बड़ा अच्छा हो कि किसी भले घर में तुम्हें रसोइया-दारिन का और मुझे दर्ज़ी का काम मिल जाय, तो हम लोगों के दिन बड़े मज़े में कटें"।

सूसन—मैं चाहती हूँ कि तेरे सर के सब बाल पीछे की ओर सीधे सीधे कर दूँ।

एमेलिन—क्यों माँ। ऐसा करने से तो मैं अच्छी नहीं लगूँगी। क्या कोई भला आदमी ऐसे बाल देख कर ख़रीदेगा?

सूसन—हाँ, ख़रीद सकता है।

एमेलिन—कैसे ख़रीदेगा?

सूसन—भले आदमी साफ़ और सीधे-सादे लोगों को अधिक पसन्द करते हैं, बनाव सिँगार और ठाठ-बाठ उन्हें नहीं रुचता, ठाठ बाठ देख कर तो लम्पट ही रीझ कर बड़े आग्रह से ख़रीदते हैं। बेटी, यह सब बातें मैं तुझसे ज़्यादा जानती हूँ। बेटी, मैं तुझ से यह कहती हूँ कि अगर हम लोग अलग अलग बिकें तो तू जहाँ रहे अपने धर्म से रहना, मेरी इस बात को याद रखना कि प्राण देना पर धर्म न खोना। यदि कदाचित् कोई गोरा तेरा धर्म भ्रष्ट करने पर तुल ही जाय तो आत्म-हत्या करके अपने धर्म की रक्षा करना। मेम साहब के उपदेशों को मत भूलना। अपनी बाइबल और भजनों की पुस्तक सदा साथ रखना। ईश्वर को मत भूलना, वह सदा तेरी रक्षा करेगा।

सूसन बड़े निराश-हृदय से कन्या को उपदेश दे रही थी। वह सोचती थी कि, कल उसकी परम सुन्दरी पवित्र-हृदया कन्या को, जिस किसी नीच अँगरेज़ के पास धन होगा वही ख़रीद लेगा। वह वारम्वार कहने लगी, "मेरी आँखों की तारा एमेलिन आज यदि सुन्दर न होकर कुरूप होती और शिक्षित न होकर मूर्ख होती तो अच्छा था।"

इस समय ईश्वर की प्रार्थना करने और उस पर भरोसा रखने के सिवा और किसी तरह धीरज नहीं आ सकता। पर आज तक इस गोदाम से न मालूम ईश्वर से ऐसी कितनी ही जीवित प्रार्थनायें और पुकारें हुई हैं जिनका ठिकाना नहीं। क्या ईश्वर इनकी प्रार्थनायें नहीं सुनता है? क्या वह इन्हें भूल गया है? कदापि नहीं। वह परम-न्यायी, परम करुणामय, दीनदयाल, भगवान् किसी छोटी सी छोटी आत्मा तक को एक पल के लिए भी नहीं भूलता है। अरे पाखण्डी, निर्मोही, अर्थपिशाच गोरे बनियों! तुम सब को निश्चय ही इस पाप का उचित फल भोगना पड़ेगा। तुम नहीं तो, तुम्हारी सन्तानें अपने रक्त से इस पाप का प्रायश्चित्त करेंगी। जिस बाइबल को तुम सब अपना धर्म-शास्त्र कहते हो, उसी बाइबल में लिखा है, "गले में पत्थर बाँध कर समुद्र में डूब जाने से जो हानि होती है, उससे भी अधिक हानि उन लोगों को उठानी पड़ेगी जो एक छोटी से छोटी भी आत्मा का अपमान करते हैं।

देखते देखते रात गहरी हो चली। सूसन और उसकी कन्या हृदय के पट खोल कर ईश्वर को पुकारने लगी, नाना प्रकार के भजन गाने लगी।

हा सूसन! हा एमेलिन! तुम जन्म भर के लिए एक दूसरी से विदा माँग लो। आज की रात्रि की समाप्ति के साथ साथ तुम्हारा भी सुखचन्द्र छिप जायगा।

सवेरा हुआ । सब लोग अपने अपने काम में लग गये । स्केग साहब आज के नीलाम का प्रबन्ध करने लगे । बिकने के लिए आये हुए दास-दासियों को तरतीब से खड़ा करने लगे; नीलाम बोलने के पहले ख़रीदारों के अन्तिम दिखाव के लिए सब को एक पाँति में खड़ा किया ।

स्केग साहब एक हाथ में चुरुट और दूसरे में नीलाम की पुस्तक लिये हुए इधर से उधर टहल कर देखने लगे । देखते देखते सूसन और एमेलिन के पास जाकर बोले, "तेरे वह घुंघुराले बाल क्या हुए ?"

एमेलिन ने सकपका कर उसकी ओर देखा । उसकी माता ने कहा, "मैंने इसे बाल साफ़ करके जूड़ा बाँधने को कहा था । बल खाये हुए बाल उड़ उड़ कर मुँह पर पड़ते थे, जूड़ा उससे बहुत साफ़ और अच्छा दीखता है ।"

स्केग ने चाबुक सम्भाल कर उसे धमकाते हुए कहा, "जा जल्दी, जैसे बाल थे वैसे करके ला ।" उसकी माता से कहा, "तू जाकर ठीक करादे । घुंघुराले बाल रहने से एक सौ रुपये ज़्यादा मिलेंगे ।"

धीरे धीरे नीलाम-घर भर गया, ख़रीदार आपस में तरह तरह की बातें करने लगे । एक ख़रीदार एडाल्फ का बदन जाँच कर देख रहा था तब तक किसी ने कहा, "ओहो अलफ़्रेड ! कहो, तुम कहाँ चले ?"

अलफ़्रेड—भाई, मुझे एक अरदली की ज़रूरत है । मैंने सुना सेन्टक्लेयर के ग़ुलाम बिक रहे हैं, इससे यहाँ ख़रीदने आया हूँ ।

उस आदमी ने कहा, "सेन्टक्लेयर के ग़ुलाम ख़रीदोगे ? मैं तो कभी ऐसा काम नहीं कर सकता । सेन्टक्लेयर के यहाँ के ग़ुलाम आदर पा पा कर बिगड़ कर दो कौड़ी के हो गये हैं ।"

अलफ़्रेड—इसका मुझे डर नहीं । मेरे हाथ में पड़ते ही इनकी बाबूगिरी हवा हो जायगी । दो दिन में समझ जावेंगे कि मैं सेन्टक्लेयर नहीं हूँ । यह आदमी शक्ल सूरत का अच्छा है, इसी को लूँगा ।

वह आदमी· वह बड़ा फ़जूलख़र्च है ।

अलफ्रेड—हमारे यहाँ ?, इसकी दाल नहीं गलने की । दो बार दण्डगृह की हवा खिलाई कि इसके होश ठिकाने आयें ।

टाम बड़ी दीनता से हर एक ख़रीदार का मुँह निहारने लगा । वह देखने लगा कि इनमें कोई दयालु ख़रीदार भी है या नहीं । पर जितने आदमियों को उसने देखा उसमें कोई अच्छा न जान पड़ा, किसी के चेहरे पर क्रोध झलक रहा है, कोई देखने में बड़ा निर्दयी मालूम पड़ता है, कोई इन्द्रियासक्त ही दिखाई देता है । यों ही सैकड़ों ही मुख देखे पर सेन्टक्लेयर की सी मधुर और प्रशान्त मूर्त्ति कहीं न दिखाई दी ।

नीलाम आरम्भ होने ही को था कि एक नाटा, मज़बूत सा आदमी आया और सब ग़ुलामों को टो टो कर बदन में हाथ लगा लगा कर देखने लगा । इसके चेहरे से मालूम होता था मानों नरक का द्वारपाल है । इसे देखते ही टाम का हृदय भयभीत हुआ और बड़ी घृणा सी आई । इस आदमी ने एक एक करके सब दास-दासियों को परखा और अन्त में टाम के पास पहुँच कर उसके मुँह में उँगली डाल कर दाँत देखने लगा, फिर पैरों की ताक़त देखने के लिए उसे कुदवाया । परीक्षा समाप्त होने पर टाम से बोला, "सबसे पहले तू कहाँ के दास-व्यवसायी के यहाँ था ?

टाम—केन्टाकी में साहब ।

ख़रीदार—वहाँ क्या करता था ?

टाम—अपने मालिक के खेत का काम देखता था ।

ख़रीदार—ठीक है ।

टाम से हटकर वह एडाल्फ़ के पास पहुँचा, पर घृणा से उसके मुख की ओर देखकर जहाँ सूसन और एमेलिन खड़ी थी वहाँ जा

पहुँचा । उसने अपना वज्र सा कठोर हाथ फैलाकर एमेलिन को अपने निकट खींच लिया। एमेलिन भय से थर्रा उठी । उसने उसके कन्धे, छाती और भुजाओं पर हाथ लगा कर उसकी शारीरिक दशा देखी, और सतृष्ण नयनों से बारम्बार उसकी ओर देखने लगा । फिर गरदनियाँ देकर उसे उसकी माता की ओर ढकेल कर चलता बना ।

जिस समय यह नर-पिशाच सरीखा ख़रीदार एमेलिन को देख रहा था, उस समय उसकी माता का हृदय भय और शङ्का से काँप रहा था । एमेलिन स्वयं भी इसका मुख देख कर बहुत डरी और रोने लगी ।

एमेलिन का रोना देख कर नीलाम वाले बहुत बिगड़े और बोले, "यहाँ रोना झीकना मचावेगी तो डंडे पड़ेंगे ।"

नीलाम आरम्भ हुआ । पहले एडाल्फ नीलाम की चौकी पर खड़ा किया गया, दो चार डाक बोलने के बाद उसे अलफ्रेड ने ख़रीद लिया । यों ही एक एक करके सेन्टक्लेयर के सब दास-दासियों को भिन्न भिन्न लोगों ने ख़रीद लिया । अन्त में टाम की बारी आई ।

टाम नीलाम की चौकी पर खड़ा होकर इधर उधर देखने लगा । पाँच छः डाक होने के बाद वह भी बिक गया । जिस नाटे से मज़बूत आदमी को देख कर टाम को भय और घृणा हुई थी उसीने उसे ख़रीदा, दाम चुका कर उसे नीचे उतारा और गला पकड़ कर एक किनारे थोड़ी दूर पर बिठा दिया ।

इसके बाद सूसन का नीलाम हुआ । पर नीलाम की चौकी से उतरते समय वह सतृष्ण नयनों से पीछे फिर कर अपनी कन्या की ओर देखने लगी । उसकी कन्या ने उसकी ओर हाथ पसारा । सूसन ने अपने ख़रीदार से बड़ी दीनतापूर्वक कहा, "प्रभु, कृपा करके मेरी कन्या को भी आप ही ख़रीद लीजिए ।"

उसका ख़रीदार औरों से कुछ सहृदय जान पड़ता था। उसने कहा,

"कोशिश करूँगा । पर इसके दाम ऊँचे जायँगे । आशा नहीं कि मैं उतने दाम देसकूँ ।"

एमेलिन नीलाम की चौकी पर खड़ी की गई । उसका वह सरलता-पूर्ण मुख-कमल शङ्का से पीला पड़ गया । पर इससे उसके सौन्दर्य में कुछ कमी न हुई, उलटा एक अनुपम नवीन सौन्दर्य का भाव उसके मुख पर छा गया । यह देखकर उसकी माता मनही मन पछता कर कहने लगी, इससे तो अच्छा था कि यह कुरूप ही होती । एमेलिन को ख़रीदने की इच्छा से बहुत लोगों ने डाकें बोलीं । एमेलिन की माँ का ख़रीदार भी दो तीन डाक बढ़ा । पर देखते देखते डाक इतनी बढ़ी कि उसने अपनी हिम्मत से बाहर दाम बढ़े देखकर, मौन साध ली । योंही धीरे धीरे कई ख़रीदार चुप हो गये । अन्त में केवल दो आदमियों की लाग-डाँट रह गई । इनमें एक वही टाम का ख़रीदार और दूसरा इस प्रदेश का एक धनी और कुलीन पुरुष था । अन्त में अन्तिम डाक पर टाम के ख़रीदार ने ही एमेलिन को ख़रीदा । नरपिशाच साइमन लेग्री उस सरल-हृदया सच्चरित्रा पञ्चदश वर्षीया बालिका के जीवन का मालिक हुआ । इस दुरात्मा के हाथ से एमेलिन की रक्षा करने वाला दीनबन्धु भगवान् के सिवा और कोई नहीं है ।

सावधान एमेलिन ! अपनी माता का अन्तिम उपदेश सदा याद रखना, प्राण देना, पर धर्म मत खोना ।

एमेलिन के इस प्रकार बिक जाने पर उसकी माता बहुत बिलख बिलख कर रोने लगी । उसकी माता का ख़रीदार कुछ सहृदय था इससे वह मनही मन कुछ दुःखित हुआ । पर ऐसे दृश्य आठ पहर चौंसठ घड़ी इन लोगों की आँखों के सामने फिरा करते हैं, इससे इनका कलेजा पक जाता है । अतएव वह आनन्दपूर्वक अपनी ख़रीदी हुई सम्पत्ति सूसन को लेकर अपने घर का राही हुआ ।

इस नीलाम के दो दिन वाद क्रिश्चियन फ़र्म वी० ऐंड० को के वकील नें सूसन और एमेलिन की विक्री के रुपयों में से अपना कमीशन और नीलाम का ख़र्च काट कर वाक़ी रुपये उस कम्पनी के क्रिश्चियन मालिक को भेज दिये। यदि रुपयों की चेक की पुस्तक पर ये शब्द लिख दिये जाते तो अच्छा था "तुलसी हाय ग़रीव को हर से सही न जाय।"

चौंतीसवाँ परिच्छेद ।

नाव का मार्ग ।

रेड नदी में एक छोटी सी नाव पाल डाले दक्षिण की ओर बढ़ी चली जा रही है। नाव से कई दास-दासियों के रोने और सिसकने की आवाज़ आरही है। टाम इन्हीं के बीच में हाथ पैर जञ्जीर से जकड़े हुए बैठा है। पर उसका हृदय हथकड़ी-बेड़ियों से भी अधिक दुःख के बोझ से पिसा जा रहा है। उसके सारे आशा-भरोसों पर पानी फिर गया। पीछे छूटते हुए नदी के तट के वृक्षों की भांति, उसके सामने जो कुछ था, वह एक एक करके पीछे छूट गया, अब वह नहीं देख पड़ेंगे, अब वह नहीं लौटेंगे। केन्टाकी का घर, स्त्री, पुत्र, कन्या, वह दयालु प्रभु परिवार; आज कहां है ? सेन्टक्लेयर का घर, उस घर की वह विपुल-शोभा-समृद्धि, इवा का वह देवोपम मुखचन्द्र, वह उन्नत-चेता, सुन्दर, प्रफुल्लमूर्त्ति, कोमलप्राण सेन्टक्लेयर,—वह परिश्रम-रहित जीवन, वह सुख के विश्राम-दिवस—सब एक एक करके जाते रहे, अब उनकी जगह रहा क्या ?—स्वप्न की सी स्मृति।

टाम के नये खरीदार मिस्टर लेग्री साहब ने न्यू अर्लिन्स की कई आढ़तों से आठ दास-दासी खरीदे थे। इनमें दो दो को एक बन्धन में जकड़ रक्खा था। लेग्री कुछ दूर नाव पर चलने के बाद राह में नदी के मुहाने पर सब को साथ लेकर पाटरेट नामक जहाज़ पर सवार हुआ। सब दास-दासियों को सवार करा लेने के बाद वह टाम के पास आया। टाम सेन्टक्लेयर के यहां सदा अच्छे अच्छे कपड़े पहना करता था। बेचने के पहले आढ़तवालों ने टाम को अपना सबसे अच्छा कपड़ा

पहनने का हुक्म दिया था। उसने उस समय अपना जो बढ़िया कपड़ा पहना, वह अभी तक उसके बदन पर था। लेग्री ने ,आकर उससे कहा, "खड़ा हो।"

टाम खड़ा हो गया।

लेग्री ने उससे वह बढ़िया कपड़ा उतार देने को कहा। टाम उतारने लगा। पर हाथ शृङ्खलाबद्ध थे इससे वह झटपट न उतार सका। इस पर लेग्री ने स्वयं ज़ोर से उसके कपड़े खींच कर उतारे।

फिर वह सेन्टक्लेयर की दी हुई उसकी बक्स की ओर घूमा। इसे उसने पहले ही खोल कर देख लिया था, इससे उसमें से पुराना कोट और फटा पतलून निकाल कर टाम को पहनने को दिया। टाम इस पतलून को घुड़साल में काम करने के वक्त के सिवा और कभी न पहनता था। इस समय लेग्री की आज्ञानुसार वह फटी पुरानी पतलून उसे पहननी पड़ी। फिर लेग्री ने उसके बूट उतरवा कर एक जोड़ी फटा जूता पहनने को दिया। वह भी उसने पहन लिया।

इस जल्दी में भी कपड़ों की बदला-बदली में टाम ने अपने पहले कोट की पाकेट से बाइबल निकाल ली थी, नहीं तो उसे इससे भी हाथ धोना पड़ता। कपड़े उतारते ही लेग्री उसमें टटोलने लगा कि क्या क्या है। कोट की पाकेट से इवा का दिया हुआ एक रेशमी रूमाल निकला, उसे उसने तुरन्त अपनी जेब के हवाले किया। फिर दूसरी जेब से एक प्रार्थना-पुस्तक निकली। टाम जल्दी में इसे निकालना भूल गया था। लेग्री इस पुस्तक को देखते ही क्रोध से जल उठा, बोला, "क्योंरे! तेरा गिर्जे से ताल्लुक रहता है?"

टाम ने दृढ़ता से कहा, "जी सरकार!"

लेग्री—मैं तेरे यह सब पाखंड जल्दी ही निकाल दूँगा। मैं अपने खेत के कुली-कबाड़ियों को भजन उपासना नहीं करने देता। इसे

दिल में खूब नक़्श कर लेना । अब तू अपने मन में समझ ले कि मैं ही तेरा गिर्जा और मैं ही तेरा सब कुछ हूँ, जो मैं कहूँगा सो ही तुझे करना पड़ेगा ।

लेग्री ने बड़ी लाल लाल आँखें करके टाम से ये बातें कहीं । उस समय टाम चुप था, पर उसकी अन्तरात्मा कह रही थी, "नहीं, कभी नहीं, न तू मेरा गिर्जा है न सिरजा है । इस समय बाइबल का वह वाक्य, जो सदा इवा उसके सामने पढ़ा करती थी, उसे याद पड़ा । जान पड़ा मानों उसे धीरज दिलाने के लिए कहीं से आवाज़ आ रही है; "डरना मत; क्योंकि मैंने तेरा उद्धार किया है । मैंने तुझे अपना नाम दिया है । तू मेरा ही होगा ।"

पर लेग्री के कानों में यह ध्वनि नहीं पड़ी । पापपूर्ण कर्णों में यह ध्वनि प्रवेश नहीं कर सकती । ज़रा देर लेग्री टाम के नीचे किये हुए चेहरे की ओर देखता रहा, फिर दूसरी ओर को चल दिया । उसने टाम का सन्दूक लेकर उसमें जितने अच्छे अच्छे कपड़े थे उन्हें नीलाम करना आरम्भ कर दिया । सेन्टक्लेयर ने टाम को कई मूल्यवान् वस्त्र दिये थे । अर्थपिशाच लेग्री ने लोभ में पड़ कर टाम का जो कुछ था, सब नीलाम कर डाला, यहाँ तक कि सन्दूक भी बेच दिया । और जो कुछ मिला, सब हड़प गया । क़ानून की रीति से दासों का किसी चीज़ पर अधिकार नहीं है । इसी से जब टाम को लेग्री ख़रीद चुका तो उसके सारे माल असबाब का भी वही धनी हो गया । इस नीलाम के समय टाम पर कितनी ही फब्तियाँ उड़ीं ।

माल असबाब नीलाम कर चुकने के बाद लेग्री फिर टाम के पास पहुँचकर बोला, "टाम, मैंने तेरा जो कुछ असबाब का झंझट था सब नीलाम में पार कर दिया । अब जो कपड़े तेरे पास हैं उन्हें सम्भाल कर रखना । एक बरस के पहले मेरे यहाँ दूसरे कपड़े नहीं

मिलेंगे । मैं अपने यहाँ के हबशियों को साल में केवल एक बार कपड़े देता हूँ ।"

इसके बाद लेग्री जहाँ एमेलिन दूसरी स्त्री के साथ जञ्जीर में बँधी बैठी थी वहाँ पहुँचा । लेग्री ने एमेलिन की ठुड्ढी पकड़ कर कहा, "मेरी प्यारी, उदासीनता छोड़ो ।"

पर वह सच्चरित्रा बालिका भय और घृणा से उसकी ओर देखने लगी, यह देख कर उसने कहा, "इस तरह मुँह बनाने से काम नहीं चलेगा । यह सब ढङ्ग छोड़ो । मेरे सामने सदा ख़ुश रहना पड़ेगा सुनती है न ?" फिर एमेलिन के साथ जञ्ज़ीर से बँधी हुई दूसरी स्त्री को धक्का देकर बोला, "अरी बुढ़िया ! यह हाँड़ी सा मुँह बनाये क्या पड़ी है ? तुझसे कहता हूँ, ज़रा हँस बोल, यह मुँह बनाना छोड़ ।"

फिर दो चार क़दम पीछे हट कर और पुनः आगे बढ़ कर बोला, "मैं तुम सभों से कहता हूँ, मुँह उठा कर एक बेर मेरी ओर देखो, ठीक मेरी आँखों की ओर ताको, (ज़ोर से पृथ्वी पर पैर पटक कर) एक बार, एक नज़र से मेरी ओर देखो ।"

मारे डर के सब की आँखें उसकी ओर लग गईं । फिर वह लोहे का मुद्गर सा अपना मुक्का दिखा कर कहने लगा, "ज़रा इस मुक्के की ओर देखो । यह मुक्का लोहे से भी सख़्त है । हबशियों को ठोकते ठोकते हाथ ऐसा कड़ा हो गया है ।" इतना कहते कहते अपना वह मुक्का बँधा हुआ हाथ टाम के मुँह के पास लेगया, टाम डर कर पीछे सरक गया। फिर वह कहने लगा, "मैं तुम सभों को समझाये देता हूँ, मैं खेत में रखवाला नहीं रखता, सब काम ख़ुद ही देखता सुनता हूँ । तुम सभों को अच्छी तरह काम-काज करना पड़ेगा । जब जो बात बोलूँगा, उसका तुरन्त तामील करना पड़ेगा । इसी ढङ्ग से मैं काम लेता हूँ । मेरे यहाँ दया माया का कोई वास्ता सरोकार नहीं है । इसे

तुम लोग ख़ूब समझ लो । मुझे वह सब दया मया दिखलाना पसन्द नहीं है ।

उसकी बातें सुन कर दास-दासियों की जान सूख गई और सब ठण्ढी सासें लेने लगे । कुछ देर बाद वह शराब पीने के लिए जहाज़ के दूसरे कमरे में जाने लगा । उसके पास ही कोई भलामानस आदमी खड़ा था, उससे वह कहने लगा, "मैं अपने हबशियों के साथ इसी रकम के व्यवहार आरम्भ करता हूँ । मेरी यह चाल है कि ख़रीद कर लाते ही मैं उन्हें सब समझा देता हूँ कि किस रकम से इन्हें मेरे साथ रहना होगा ।" उस अपरिचित भलेमानस ने बड़े ग़ौर से मानों कोई विज्ञानविद् पण्डित किसी नई वस्तु की जाँच कर रहा हो—लेग्री की ओर देखते हुए कहा, "बेशक ।" लेग्री फिर कहने लगा, "हाँ, बेशक । मैं ऐसे नाज़ुक हाथोंवाला खेतिहर नहीं हूँ कि कुलियों को कोड़े लगाने का काम रखवाले को सौंपूँ । यह देखिए, मेरी मुट्ठी और अँगुलियाँ कैसी फ़ौलाद की मानिन्द हैं । इस जगह का हाथ का मांस पत्थर सा कड़ा हो गया है । और कोई बात नहीं, यह केवल हबशियों को ठोकते ठोकते ऐसा हो गया है ।"

उस अपरिचित ने लेग्री का हाथ देख कर कहा, "बेशक बहुत कड़ा हो गया है । पर मैं समझता हूँ इस अभ्यास से तुम्हारा हृदय इससे भी सख़्त हो गया है ।

लेग्री ने हँसते हुए कहा, "हाँ, क्यों नहीं, यह तो ठीक ही है । मैं काम में दया मया की परवाह नहीं करता ।

अपरिचित—तुमने बहुत अच्छे दास-दासी ख़रीदे हैं ।

लेग्री—हाँ, अच्छे ही हैं । यह जो टाम देख पड़ता है, इसकी सब लोगों ने तारीफ़ की थी । इसके लिए मुझे कुछ ज़्यादा देना पड़ा । पर इससे काम भी ख़ूब लूँगा । लेकिन इसने कुछ बुरी सीखें

सीख रक्खी हैं। धर्म की ओर इसका बड़ा झुकाव है। पर यह सब मैं जल्दी ही निकाल बाहर करूँगा। यह अधेड़ दासी ख़ूब सस्ते में हाथ लगी। मैं समझता हूँ उसे कोई बीमारी होगी। सोचता हूँ दो बरस बचेगी, और दो बरस में मैं ख़ूब मेहनत लेकर अपनी क़ीमत भर निकाल लूँगा। बहुत से खेतिहर बीमार पड़ जाने पर मर जाने के डर से कुलियों से अधिक काम नहीं लेते। पर मेरा वैसा हिसाब नहीं है। बीमार हो या अच्छा, बँधा हुआ काम करना ही पड़ेगा। थोड़ा थोड़ा काम करके चार बरस जीने से जो नतीजा निकलता है, ज़्यादा मेहनत करके दो बरस जीने से भी वही नतीजा निकलता है। एक हबशी से थोड़ा काम लेकर उसे ज़्यादा दिन जिलाने से कोई फ़ायदा नहीं होता। ज़्यादा मेहनत लेने से जल्दी मर जाय तो फिर उसके बदले में एक और नया ग़ुलाम ख़रीद लेने से अधिक नफ़े की उम्मेद रहती है।

अपरिचित—तुम्हारे खेत में ग़ुलाम साधारणतः कै वर्ष जीते हैं?

लेग्री—इसकी कोई हद नहीं, कोई कुछ कम कोई ज़्यादा। लेकिन मामूली तौर से जवान रहे तो छः सात बरस और चालीस के पार रहे तो दो तीन बरस से ज़्यादा नहीं टिकते। पहले बीमार पड़ने पर मैं भी हबशियों को दवा दिया करता और कम्बल देता। लेकिन आख़िर में नतीजा कुछ नहीं निकलता, नाहक में चीज़ों की बरबादी होती। अब इन सब अडङ्गों से मैं पाक साफ़ रहता हूँ, बीमारी में भी काम लेता हूँ; मर जाने पर और नये ख़रीद लेता हूँ। इससे हर तरह की सहूलियत रहती है।

वह अपरिचित आदमी लेग्री के पास से हट कर थोड़ी दूर पर बैठे हुए एक युवक के पास जाकर बैठ गया। वह देर से इन लोगों की सारी बातें सुन रहा था।

उस पहले आदमी ने इस युवक से कहा, "दक्षिण प्रदेश के सभी खेतिहर इस आदमी की भाँति सख़्त नहीं हैं।"

युवक—ऐसा न होना ही अच्छा है।

पहला आदमी—यह आदमी तो महा नीच और बदमाश है। इसका व्यवहार सच मुच ही पशुओं का सा है।

युवक—पर आपके देश के क़ानून की यह ख़ूबी है कि वह ऐसे ही निठुर और नीच आदमियों को असंख्य नर-नारियों के जीवन का अधिकारी बनने का अवसर देता है। ऐसा कोई क़ानून आपके यहाँ नहीं है कि ऐसे निठुर आदमियों के अत्याचार से इन बेचारे ग़ुलामों की किसी तरह रक्षा हो सके। खेतवालों में अधिकांश ऐसे ही निठुर होते हैं।

पहला आदमी—खेतवालों में जहाँ बुरे बहुत हैं वहाँ भले भी हैं।

युवक—दलील के लिए मान भी लिया जाय कि आप के खेतवालों में भले भी हैं, तो मैं कहता हूँ कि इस अत्याचार और निठुरता के सर्वांश में वही दोषी हैं। क्योंकि ऐसे ही दो चार भलेमानसों के कारण यह घृणित प्रथा अब तक दूर नहीं हुई। यदि सभी खेतवाले लेग्री साहब सरीखे होते तब फिर भी क्या यह दासत्व-प्रथा बनी ही रहती?

इधर जब इन दोनों में आपस में ये बातें हो रही थीं उस समय जहाज़ में दूसरे स्थान पर एक जञ्जीर में जकड़ी हुई एमेलिन और लूसी भी आपस में बातें कर रही थीं। पाठकों को हम उनकी बातें भी सुनाते हैं।

एमेलिन—तुम किसके यहाँ रही?

लूसी—मैं एलिस साहब के यहाँ थी। तुमने शायद उन्हें देखा होगा।

एमेलिन—क्या वह तुम्हारे साथ अच्छा बर्ताव करते थे ?

लूसी—बीमार पड़ने के पहले तो वह बहुत अच्छा बर्ताव करते थे। पर बीमारी होने के बाद वह बड़े चिड़चिड़े स्वभाव के हो गये और सबसे रूखा व्यवहार करने लगे। मुझे रात रात भर उनकी सेवा-शुश्रूषा के लिए जगना पड़ता था। पर एक दिन मुझे नींद आ गई, इस पर उन्होंने ग़ुस्सा कर कहा कि "तुझे किसी ख़ूब सख़्त आदमी के हाथ बेचेंगे।"

एमेलिन—तुम्हारा कोई दुःख दर्द का साथी है ?

लूसी—मेरा पति है। वह लुहार का काम करता है, मालिक ने उसे एक दूसरी जगह किराये पर दे रक्खा है। मेरे चार लड़के हैं। लेकिन मुझे ऐसा जल्दी नीलाम-घर में भेज दिया कि मैं अपने स्वामी या लड़कों के साथ एक बार भेंट भी न करने पाई।

यह कहते कहते लूसी रोने लगी। किसी का दुःख देख कर मनुष्य के मन में स्वभावतः उसे धीरज देने की इच्छा होती है। एमेलिन लूसी की दुःख-गाथा सुन कर उसे कुछ धीरज दिलानेवाली बात कहना चाहती थी पर उसकी समझ में न आया कि क्या कहे। इस भयङ्कर मालिक के डर से वह दोनों इतनी डरी हुई थीं कि हृदय से कोई बात ही न उपजती थी।

घोर सङ्कट के समय मनुष्य को धार्मिक विश्वास, बड़ी सान्त्वना देता है। लूसी अपढ़ होने पर भी धर्म में बड़ा विश्वास रखती थी। एमेलिन ने भी धर्म के विषय में नियमित शिक्षा पाई थी। और उसका हृदय धर्म भाव से परिपूर्ण था। पर ये जैसी दुर्दशा में पड़ गई हैं, जैसे राक्षस प्रकृति लम्पट अँगरेज़ के हाथ में पड़ी हैं, वैसी दशा में धार्मिक से धार्मिक मनुष्य भी ईश्वर पर भरोसा रख कर सान्त्वना प्राप्त कर सकता है वा नहीं इसमें सन्देह है।

जहाज़ धीरे धीरे बढ़ने लगा और अन्त में एक छोटे क़स्बे के पास आ कर लङ्गर डाला। लेग्री अपने दास-दासियों को साथ लेकर वहीं उतरा।

पैंतीसवाँ परिच्छेद ।

नरक-स्थल ।

एक अति दुर्गम और बीहड़ रास्ते से एक टुटही गाड़ी चली जा रही है। उसके पीछे पीछे टाम तथा और कई .गुलाम बड़े कष्ट से मार्ग पार कर रहे हैं। गाड़ी के अन्दर हज़रत साहब लेग्री बैठे हुए हैं। पीछे की ओर माल असबाब तथा दो स्त्रियाँ बँधी हुई माल असबाब से सटी बैठी हैं। यह दल लेग्री साहब के खेत की ओर जा रहा है।

यह जनशून्य मार्ग यों ही बटोही मात्र के लिए कष्टकर था; पर स्त्री, पुत्र, पिता-माता से बिछुड़े हुए .गुलामों को यह और भी कष्टप्रद जान पड़ता था। इस दल में केवल लेग्री साहब ही ऐसे थे जो मौज में मस्त चले जा रहे थे। बीच बीच में थोड़ी ब्रांडी उड़ाते जाते थे। थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर लेग्री साहब को बड़ा नशा चढ़ आया, उससे उत्तेजित होकर उसने .गुलामों को गाने का हुक्म दिया। भला उन दुःखी हृदयों से कहीं सङ्गीत की ध्वनि निकल सकती है! ये सब परस्पर एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। लेकिन लेग्री ने उन पर चाबुक फटकारते हुए कहा, "गाओ सूअर, देर क्यों करता है।"

तब टाम ने गाना आरम्भ किया:—

मेरे यरूशलम सुख-धाम।
　　कितना मधुर तुम्हारा नाम॥
नाश कब होगा दुःख का फन्द।
　　लहूँगा तव-दर्शन-आनन्द॥

लेग्री को टाम का यह गाना बिल्कुल पसन्द न आया, उल्टा वह .गुस्से से उस पर चाबुक चला कर बोला, "रहने दे तेरे यह भजन सजन, मैं नहीं सुनना चाहता, मैं एक मज़ेदार गीत सुनना चाहता हूँ।" इस पर लेग्री के साथ उसका जो एक पुराना नौकर था वह गाने लगा:—

"तुमको कहता कौन मनुष्य बाबा तुम राक्षस अवतार।
हरते हृदय-हारिणी-पत्नी पति की गर्दन मार। बाबा०
कपि स्वभाव हनुमत के चेले, यह सब हैं तब पापड़ बेले,
स्वाँग सभ्यता के वश खेले, केवल सभा मँझार। बाबा०
ईसा मूसा का सिर खाया, और सकल उपदेश भुलाया,
इब्राहीम दास दल भाया, थे जो कई हज़ार। बाबा०

उस हब्शी .गुलाम के इस तरह गला फाड़ फाड़ कर चिल्लाने पर लेग्री साहब ऐसे मस्त हुए कि .खुद भी उसी के सुर में सुर मिला कर डेकरने लगे। रास्ते भर मालिक और नौकर दोनों योंही गाते हुए चले जाते थे। थोड़ी देर बाद लेग्री ने एमेलिन की ओर घूम कर उसके कन्धे पर हाथ धरते हुए कहा, "प्यारी जान, अब हमारा घर आ पहुँचा।"

लेग्री ने जब एमेलिन का तिरस्कार किया था, तब वह बहुत ही डरी थी। पर जब इस नीच ने प्यारी जान कह कर उसके कन्धे पर हाथ लगाया तब उसने सोचा कि इस मधुर व्यवहार की अपेक्षा लेग्री यदि उसे ठोकर मारता तो कहीं अच्छा था। लेग्री की आँखों का भाव देखते ही एमेलिन की छाती धड़धड़ाने लगी। लेग्री के छूने से वह और पीछे सरक गई और पूर्वोक्त रमणी के साथ सट कर उसकी ओर ऐसी कातर दृष्टि से देखने लगी जैसे सङ्कट के समय बच्चा माता की ओर देखता है।

फिर लेग्री ने उसके कान छूकर कहा, "तुमने कभी झूमक नहीं पहना?"

एमेलिन—जी नहीं।

लेग्री—तुम यदि मेरी बात सुनो तो मैं घर चल कर तुम्हें एक जोड़ा झूमक दूँगा। तुम्हारे इतने डरने की ज़रूरत नहीं है। मैं तुमसे कोई बहुत मेहनत वाला काम न लूँगा। तुम मेरे साथ मौज में रहोगी, बड़े आदमियों की तरह रहोगी—सिर्फ़ मेरी बात माननी पड़ेगी।

योंही बातें होते होते गाड़ी लेग्री के खेत के पास जा पहुँची। पहले इस खेत का मालिक एक अँगरेज़ था। वह लेग्री जितना नीच न था। उस समय यह जगह भी देखने में आज जैसी बेडौल न थी। लेकिन उसका दिवाला निकल जाने पर लेग्री ने बड़े सस्ते में यह खेत ख़रीद लिया था। इस समय यह जगह बिल्कुल नरक समान दिखाई पड़ती है।

गाड़ी जब घर के फाटक पर पहुँची तो तीन चार दास-शिकारी कुत्ते खड़खड़ाहट सुनकर भूँकते हुए बाहर निकले। यदि पीछे से वहाँ का एक हब्शी ग़ुलाम इन कुत्तों को न डाँटता और लेग्री उतर कर इन्हें न पुचकारता तो ज़रूर ये कुत्ते टाम और नवीन आये हुए दासों को नोच लेते।

लेग्री ने टाम एवं अन्य ग़ुलामों की ओर घूम कर कहा, "देखते हो कैसे बेढब कुत्ते हैं। अगर किसी ने यहाँ से भागने की फ़िक्र की तो यह कुत्ते बोटी बोटी नोच डालेंगे।"

फिर लेग्री ने पुकारा, "साम्बो!" इस पर एक नर पिशाच सा हब्शी सामने आकर खड़ा हो गया।

लेग्री ने पूछा, "काम काज तो ख़ैरियत से चलता है?"

साम्बो—जी हज़ूर बड़ी ख़ैरियत से।

फिर "कुइम्बो" कहते ही और एक नरपिशाच वहाँ आ पहुँचा। वह अब तक एक किनारे खड़ा अपने मालिक का मन अपनी ओर खींचने की चेष्टा कर रहा था।

लेग्री ने पूछा, "तुझसे जो काम करने को बतलाया था, वह सब हुआ ?"

कुइम्बो—हाँ सब हो गया।

यह दो काले पिशाच लेग्री के खेत के प्रधान कार्याध्यक्ष थे। बहुत दिनों से निठुर आचरण करते करते अब यह ऐसे नृशंस हो गये हैं कि कोई भी नीचातिनीच कर्म करने में यह नहीं हिचकते। लेग्री ने शिकारी कुत्तों से भी बढ़कर इन्हें खूँख्वार बना दिया था। दासत्व-प्रथा प्रचलित देश में ये हब्शी अँगरेज़ों से भी अधिक नृशंसाचार करने लगते। और कोई कारण नहीं, केवल इन हब्शियों की आत्मा का सीमा से अधिक पतन हो गया था। संसार में चाहे जिधर नज़र उठा कर देखिए, अत्याचार-पीड़ित या चिर-पराजित जाति के लोगों के मन में किसी प्रकार का वीरोचित भाव नहीं जमने पाता। ऐसी जाति के हृदय में नीचता, ख़ुदगर्ज़ी, ईर्ष्या-द्वेष और हिंसादि विविध प्रकार के दोष अपना घर कर लेते हैं। इसीलिए हब्शी ग़ुलाम वर्त्तमान समय के अनेकानेक हिन्दुस्तानियों की भाँति अपने भाइयों पर कठोर से कठोर अत्याचार करते भी मन में शङ्का नहीं खाते थे।

लेग्री ने अपने खेत का काम ख़ूबी से चलाने के लिए एक बड़ी चाल खेल रक्खी थी। वह इस बात को ख़ूब जानता था कि अत्याचार-पीड़ित जाति के लोगों में परस्पर—एक दूसरे के साथ सहानुभूति नहीं होती। साम्बो कुइम्बो से खार खाता था और कुइम्बो साम्बो से जलता था। मौक़ा पड़े कोई किसी की बुराई करने से न चूकता था। खेत के और ग़ुलाम इन दोनों से द्वेष रखते थे। लेग्री साम्बो का क़सूर कुइम्बो से और कुइम्बो का साम्बो से जान लेता था।

लेग्री के, और उसके सामने उसके दोनों पारिषद् साम्बो और कुइम्बो को खड़े होने से जान पड़ता था, मानों तीन भयानक दानव

खड़े हैं। जङ्गली .ख़ूँख़्वार पशुओं से भी इनकी प्रकृति निकृष्ट है। उनकी वह भयावनी शक्लें, डरावनी आँखें और कर्कश आवाज़ सर्वथा इस स्थान के उपयुक्त जान पड़ती है।

लेग्री ने साम्बो से कहा, "साम्बो, इन सभों को ठिकाने पर ले जा। यह औरत तेरे लिए लाया हूँ। मैंने तुझसे वादा किया था कि अबकी तेरे लिए एक गोरी मेम लाऊँगा, ले लेजा।

इतना कह कर एमेलिन की जञ्ज़ीर से बँधी हुई लूसी को खोल कर साम्बो की ओर ढकेल दिया।

लूसी चौंक कर पीछे हट कर बोली, "सरकार! नवअर्लिन्स में मेरा बूढ़ा पति है।"

लेग्री—तो फिर क्या हुआ? यहां तुझे एक खसम नहीं चाहिए? मैं यह सब लकड़पेंच नहीं सुनता। (चाबुक उठा कर) जा चुपचाप साम्बो के साथ हो ले। फिर एमेलिन से बोला, "प्यारी आओ, तुम मेरे साथ अन्दर चलो।"

लेग्री ने आँगन में खड़े होकर जब एमेलिन को 'प्यारी' कहा, उस समय घर के झरोखे में से एक स्त्री का चेहरा बाहर झाँकते हुए दिखाई दिया। दरवाज़ा खोलकर लेग्री के अन्दर जाते ही उस स्त्री ने .गुस्से से उसे दो चार बातें सुनाईं। इस पर लेग्री ने कहा, "तेरा साझा, चुप रह—जो मेरे जी में आवेगा करूँगा। एक छोड़ के तीन लाऊँगा।"

टाम अश्रुपूर्ण नेत्रों से एमेलिन की ओर देख रहा था, उसने लेग्री की उपरोक्त बातें सुनी थीं, पर आगे न सुन सका, क्योंकि वह शीघ्रही साम्बो के साथ चला गया।

लेग्री के दासों के रहने का स्थान बड़ा ही मैला कुचैला और गन्दा था। घुड़साल की तरह फूस की एक एक छोटी टपरी थी। उन सब

गन्दी टपरियों को देख कर टाम की जान सूख गई। वह पहले ख़ुद ही एक टपरी में इधर उधर घूम कर अपनी बाइबल धरने के लिए एक ताख़ देखने लगा। फिर साम्बो से बोला, इनमें से मुझे कौनसी झोपड़ी मिलेगी।

साम्बो—"अभी तो मालूम नह । सब झोपड़ा तो बन्द पड़ा है, तुम कहाँ रखा जायगा सो तो नहीं जानता।"

बड़ी देर के बाद टाम को एक जगह मिली, पर वह कैसी जगह थी, अब इसके बतलाने की आवश्यकता नहीं है।

× × × × × ×

साँझ को सब दास-दासी खेत से अपनी अपनी झोपड़ी को लौटे। इनमें से हर एक के बदन पर फटे-पुराने कपड़े थे, शरीर धूल से लथपथ थे, मुँह बिल्कुल चिचुके हुए थे। अकाल-पीड़ित लोगों की भाँति भूख-प्यास से घबड़ा कर यह झोपड़ियों में घुसे। सुबह से शाम तक ये खेत में काम पर पिसे, बीच बीच में कितनी ही बार कारिन्दे की लातें और चाबुकें खाईं। अब इस वक़्त यहाँ आकर इन्हें खाने के लिए एक एक पाव गेहूँ दिया गया। उसी गेहूँ को पीसकर इन्हें रोटियाँ पकानी पड़ेंगी। टाम अपना साथी होने लायक़ कोई आदमी ढूँढ़ने की गरज से हरएक पुरुष और स्त्री का मुख ग़ौर से देखने लगा। पर यहाँ उसे एक बालक तक में मनुष्यात्मा की गन्ध न मिली। पुरुष-पशुओं की तरह खूँख्वार, ख़ुदगर्ज़ और बेरहम हैं; स्त्रियाँ बहुत सताई हुई और कमज़ोर हैं, उनमें दूसरी जो कुछ सबल हैं, वे निर्बलों को ढकेल कर अपना काम बनाती चली जा रही हैं। किसी के मुख पर दया का तो चिह्न तक नहीं है, यहाँ दूर तक कहीं दया का पता नहीं लगता। हरएक दूसरे को वैर भाव से घूर रहे हैं। सब को अपने अपने पेट की चिन्ता पड़ी है। वास्तव में घोर

अत्याचार सहते सहते इनका कलेजा पत्थर सा कठिन हो गया है; भूख-प्यास के सिवा मानव प्रकृति की अन्य सब प्रकार की स्वभाव-सिद्ध आकाङ्क्षायें मिट गई हैं। सन्ध्या को हरएक को जो गेहूँ मिलता, उसे सब अलग अलग पीसते हैं। दासों के हिसाब से चक्कियों की संख्या बहुत कम है। इससे बड़ी रात तक चक्कियों की घरघराहट चला करती है। जो बलवान् थे वह सबसे पहले अपना काम बना लेते, निर्बलों के भोजन बनाने की पारी सबके अन्त में आती थी।

लेग्री ने साम्बो को जिस अधिक अवस्था वाली स्त्री को सौंपा था, उसकी ओर साम्बो ने एक थैली गेहूँ फेंक कर पूछा, "तेरा नाम क्या है?"

स्त्री ने कहा, "लूसी।"

साम्बो—अच्छा, लूसी, आज से तुम मेरी औरत हो। यह गेहूँ ले जाकर मेरे और अपने खाने के लिए रोटियाँ पका लो।

लूसी—मैं तुम्हारी स्त्री नहीं हूँ, कभी होने की भी नहीं। तुम यहाँ से जाओ।

साम्बो—फिर ऐसा कहेगी तो डण्डे से सिर फोड़ दूँगा।

लूसी—तेरी ख़ुशी, अभी मार डाल, जितनी जल्दी मौत आवे उतनाही अच्छा। अब तक मर गई होती तो अच्छा था।

साम्बो जब उसे मारने चला, तब कुइम्बो ने, जो कई स्त्रियों को ढकेल कर अपना गेहूँ पीस रहा था, कहा, "ख़बरदार, साम्बो आदमी मार कर काम का नुक़सान करते हो! मैं मालिक से कह दूँगा।"

इस पर साम्बो ने कहा, "मैं भी मालिक से कह दूँगा कि तू चार स्त्रियों को ढकेल कर अपना गेहूँ पीस रहा था।"

टाम को सारे दिन पैदल चलना पड़ा था, इससे वह थक कर चूर हो गया, भूख से तबीयत परेशान है, पर ठिकाना नहीं कि कब खाना नसीब होगा। कुइम्बो ने उसके हाथ में एक थैली गेहूँ थम्हा कर कहा, "ले यह गेहूँ, जा रोटी बना खा। यह एक हफ़्ते की ख़ूराक है।" टाम क़रीब आधी रात तक निरखता रहा पर उसकी गेहूँ पीसने की बारी न आई। रात के १ बजे चक्की ख़ाली हुई तो उसने देखा कि दो रोगी स्त्रियाँ चक्की के पास बैठी हुई हैं, वह बहुत थकी हुई हैं। उनके शरीर में बल नहीं है, यहाँ बहुत पहले आने पर भी अब तक उन्हें किसी ने गेहूँ न पीसने दिया। टाम ने उठकर पहले उनका गेहूँ ख़ुद पीस दिया, फिर अपना पीसा। यहाँ यह पहली ही बात थी, इसके पहले यहाँ कभी दया का पाँव नहीं पड़ा था। यहाँ के लिए यह एक अलौकिक बात थी। बहुत ही मामूली दया का काम होने पर भी टाम का यह आचरण देख कर उन दोनों स्त्रियों का हृदय कृतज्ञता से भर गया। उनका वह श्रम-क्लिष्ट कठोर मुख स्त्री-सुलभ ममता के भाव से परिपूर्ण हो गया। बदले में उन्होंने टाम की रोटियाँ बना दीं। जब वह दोनों रोटियाँ बना रही थीं, उस समय टाम ने चूल्हे के पास बैठ कर अपनी बाइबल निकाली। उसके हाथ में पुस्तक देख कर एक स्त्री ने कहा, "तुम्हारे हाथ में वह क्या है?"

टाम—बाइबल।

स्त्री—दीनबन्धु! केन्टाकी छोड़ने के बाद अब तक बाइबल के दर्शन नहीं हुए थे।

टाम ने चाव से कहा, "तुम क्या पहले केन्टाकी में थीं?"

स्त्री—हाँ, वहीं थी, और अच्छी थी, कभी सोचा भी नहीं था कि ऐसी दुर्दशा में पड़ना होगा।

दूसरी स्त्री ने कहा, वह कौनसी पुस्तक बतलाई?

टाम—बाइबल।

दूसरी स्त्री—बाइबल क्या कहलाती है?

पहली स्त्री ने कहा, "तुमने क्या कभी इस पुस्तक का नाम नहीं सुना? केन्टाकी में मेरी मलकिन कभी कभी यह पुस्तक पढ़ा करती थी, तब मैं भी कभी कभी सुना करती थी। यहां तो केवल गालीगलौज और मूड़ कपार और क़सम ही सुनने में आती है। अच्छा, तुम पढ़ो ज़रा, सुनूँ।"

टाम बाइबल में से पढ़ने लगा, "थके मान्दे, भार से दबे हुए मनुष्यो! तुम मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।"

पहली स्त्री—यह तो बड़ी मनोहर बातें हैं। यह बातें कौन कहता है?

टाम—ईश्वर।

पहली स्त्री—वह कहाँ मिलेंगे, पता लग जाता तो मैं उनके पास जाती। उनके पास गये बिना मुझे विश्राम नहीं मिलेगा। मेरा शरीर बहुत थक गया है; तिस पर साम्बो मुझे नित्य धमकाता और कोड़े लगाता है। कोई दिन ऐसा नहीं होता कि आधी रात के पहले खाना नसीब हो जाय। खा कर ज़रा आंख झपकी कि सवेरा हुआ ही दीखता है और चट से खेत में जाने का घण्टा बज जाता है। यदि परमेश्वर का पता मालूम हो जाता तो उनसे यह सब बातें जाकर कहती। हा भगवन्! अब तो यह कष्ट नहीं सहा जाता।

टाम—ईश्वर यहाँ भी है, और सर्वत्र है।

स्त्री—मेरा तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं जमता। ऐसी बातें बहुत बार सुनी हैं कि ईश्वर यहाँ है, वहाँ है, पर न मालूम कहाँ है कि हम लोगों का दुःख देख कर वह कुछ नहीं करता धरता। मैं अब झोपड़ी में पड़ कर सोती हूँ। यहाँ ईश्वर कदापि नहीं है।

यह कह कर वह स्त्री चली गई। टाम अकेला बैठा हुआ प्रार्थना करने लगा।

नीले आकाश में जैसे यह चन्द्रमा उदय होकर चुपचाप गम्भीरता पूर्वक जगत् का निरीक्षण कर रहा है, उसी प्रकार परमात्मा चुपचाप गम्भीर भाव से जगत् के पाप, ताप और अत्याचारों को देख रहा है। जिस समय यह काला ग़ुलाम हाथ में बाइबल लिये हुए निस्सहाय दशा में उसको पुकार रहा था, उस समय उसकी हर बात उस परमात्मा के कानों तक पहुँच रही थी। वह घट घटव्यापी, अन्तर्यामी है। पर ईश्वर यहाँ मौजूद हैं, इसका विश्वास उस गँवार स्त्री को कोई कैसे करावे? भला इस अत्याचार और यन्त्रणा में पड़ी हुई ऐसी गँवार स्त्री के लिए ईश्वर पर विश्वास करना कब सम्भव हो सकता है।

टाम के मन को आज उपासना के अन्त में पूर्ण शान्ति नहीं मिली, वह बड़े उद्विग्न चित्त से सोने गया। पर घर की गन्दी वायु और दुर्गन्ध के मारे उसकी वहाँ ठहरने की इच्छा न होती थी, लेकिन करे क्या, बेतरह थका हुआ था, जाड़ा भी सता रहा था, लाचार जाकर पड़ रहा। सोते ही आँखें लग गईं। स्वप्न आया, मानो झील के किनारे बाग़ में वह चौतरे पर बैठा हुआ है और इवा बड़ी गम्भीरता से उसके सामने बाइबल पढ़ रही है।

"जब तुम जल पर से पैदल जाओगे तब मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। और जल तुम्हें डुबा न सकेगा। अग्नि में जब कूदोगे तब भी मैं तुम्हारे साथ रहूँगा, इससे अग्नि तुम्हें जला न सकेगी। मैं तुम्हारा एक मात्र विधाता और परमेश्वर हूँ।"

ये शब्द मधुर सङ्गीत की भाँति टाम के कानों में गूँजने लगे। मानो इवा सोने के रथ पर चढ़ी हुई बारम्बार स्नेह-दृष्टि से उसकी

ओर देखती हुई आकाश में उड़ रही थी और रथ से उस पर फूलों की वर्षा कर रही थी ।

टाम की आँखें खुल गईं । लेकिन यह कैसा स्वप्न है ? अविश्वासी इसे स्वप्न समझ कर झूठ मान सकता है; पर जिस दयालु बालिका ने जीते जी सदा दूसरों के दुःख पर आँसू बहाये, क्या वह मृत्यु के बाद दुःखी को धीरज देने नहीं आ सकती ? क्या यह असम्भव है ? कदापि नहीं ।

छत्तीसवाँ परिच्छेद ।

कामी ।

टाम ने बहुत ही थोड़े समय में लेग्री के खेत के काम का ढङ्ग और वहाँ का रंग-ढंग समझ लिया। कार्य में वह बड़ा चतुर था, और अपने पूर्वाभ्यास तथा चरित्र की साधुता के कारण किसी कार्य में भूल अथवा लापरवाही न करता था। उसका स्वभाव भी शान्त था, इससे उसने मन ही मन सोचा कि यदि मेहनत करने में हीला-हवाला न किया जाय तो कदाचित् कोड़ों की मार न सहनी पड़े। वहाँ के तरह तरह के अत्याचार और उत्पीड़न देख कर उसकी छाती दहल गई। पर वह ईश्वर को आत्मसमर्पण कर धीरज धर काम करने लगा। उसका मन कभी सर्वथा निराश न होता था। उसका दृढ़ विश्वास था कि ईश्वर सदा उसकी रक्षा करेगा। किसी न किसी तरह वह मङ्गलमय पिता बेड़ा अवश्य पार लगावेगा।

लेग्री साहब टाम का काम काज विशेष ध्यान देकर देखने लगे और शीघ्र ही इस बात को समझ लिया कि, टाम काम में बड़ा चतुर मनुष्य है। पर टाम पर उसका जो विद्वेष भाव था, वह किसी तरह न टला। इसका मूल तत्त्व क्या है, यह लेग्री सरीखे मनुष्य की समझ के बाहर था। झूठे का सच्चे पर, पापी का पुण्यात्मा पर और अधर्मी का धर्मात्मा पर एक प्रकार का स्वभाव-सिद्ध द्वेषभाव होता है। यही कारण है कि संसार में परम धार्मिक देश-सुधारक अपने ही देशवालों की दृष्टि में खटकते हैं और जिन के लिए वह अपनी जान न्योछावर करने को तैयार रहते हैं, वही लोग उनकी जान के गाहक बन जाते हैं।

लेग्री इस बात को भलीभाँति समझ गया था कि वह ग़ुलामों के साथ जो कठोर वर्त्ताव और अत्याचार करता है, उसे टाम बड़ी घृणा की दृष्टि से देखता है। पर संसार का नियम है कि भले बुरे सभी प्रकार के लोग दूसरों की प्रशंसा के भूखे रहते हैं, जब तक दूसरे लोग उनके आचरण और मत का अनुमोदन न करें तब तक उनके जी को सन्तोष नहीं होता। अतएव कभी कभी ऐसा भी होता है कि एक ग़ुलाम तक का प्रतिकूल मत असह्य हो जाता है। इसके सिवा लेग्री ने यह भी देखा कि, टाम जब तब अन्यान्य दास-दासियों पर दया प्रकट करता है, उनको कोई कष्ट होने पर वह स्वयं दुःखित होता है। लेग्री के खेत में दास-दासियों में परस्पर कभी सहानुभूति के चिह्न नहीं दिखाई पड़े थे; इससे टाम का आचरण उसे असह्य हो गया। लेग्री टाम को परिदर्शक के काम पर नियुक्त करने के लिए ही इतने अधिक दामों पर ख़रीद कर लाया था, लेकिन जिस आदमी की प्रकृति अत्यन्त कठोर न हो वह परिदर्शक के काम के लिए नहीं चुना जा सकता। परिदर्शक को सदा कुलियों की पीठ पर कोड़े लगाने का काम करना पड़ता है। टाम और काम काज में पक्के होने पर भी इस अत्यावश्यक गुण से सर्वथा वञ्चित था। इससे लेग्री साहब ने सोचा कि, टाम का हृदय कठिन और निठुर बनाने के लिए शीघ्र ही उपाय करना होगा। बिना विलम्ब हृदय निठुर बनाने की नवीन शिक्षा-प्रणाली का उपयोग किया गया।

एक दिन प्रातःकाल जब सब दास-दासी खेत पर जाने के लिए जुटे, उस समय टाम ने इस दल में आश्चर्य के साथ एक नई स्त्री को देखा। टाम का ध्यान उसकी ओर खिँच गया। स्त्री लम्बी और कमनीय है, उसके हाथ पैर सुकुमार हैं, उसके वस्त्र भलेमानसों के से हैं। उम्र पैंतालीस चालीस के लगभग होगी। इसके मुख का भाव

ऐसा है कि जिसने एक बार देख लिया वह सहज में नहीं भूल सकता। इसके मुख के भाव से ऐसा जान पड़ता है मानों इसके जीवन का इतिहास अनेक कष्टकर और अद्भुत घटनाओं से भरा हुआ है। इसका प्रशस्त ललाट, विशाल उज्ज्वल नेत्र, टेढ़ी और घनी भौंहें मुख-मण्डल को शोभायमान कर रही हैं। इसके अंगों की गठन से जान पड़ता है कि यह रमणी युवावस्था में बड़ी सुन्दर और लावण्यवती थी। लेकिन शोक और दुःख के चिह्नों ने अब उस सौन्दर्य को बिगाड़ दिया है। इसके चेहरे पर घोर विक्षेप, नैराश्य और अहङ्कारजन्य एक अद्भुत सहिष्णुता का भाव झलक रहा है।

वह स्त्री कहाँ से आई और कौन है, टाम को इसका कुछ भी पता न था। पर वह स्त्री खेत को जाते समय बराबर टाम की बगल से चल रही थी। मालूम होता था, खेत के अन्य दास-दासी इसे भली प्रकार जानते थे। क्योंकि उन नीचप्रकृति जीर्ण-शीर्ण-वस्त्रावृत कुलियों में कोई उसे देख कर मुस्कुराया, किसी ने मज़ाक उड़ाया, कोई उसे घूरने लगा और किसी किसी ने बड़ा आनन्द मनाया। एक ने कहा, "क्यों बीबी! अन्त में आ न गई ठिकाने पर! मैं बड़ा ख़ुश हुआ।

दूसरा—अब न मालूम होगा बीबी, कि यहाँ गुलछर्रे नहीं उड़ते हैं।

तीसरा—देखना है कैसा काम करती है! काम न करने से इसकी भी कोड़ों से ख़बर ली जायगी।

चौथा—इसकी पीठ पर कोड़े लगें तो मैं बड़ा ख़ुश होऊँगा।

उस स्त्री ने इन सब फब्तियों की कुछ भी परवाह न की, वह अपनी उसी गम्भीर चाल से चलती रही, मानों वह कुछ सुनती ही नहीं। टाम सदा से सभ्यों में रहा, इसकी चाल-ढाल से उसने

समझ लिया कि ज़रूर यह कोई सभ्य स्त्री होगी । पर इसकी यह दुर्दशा क्यों हो रही है, इसका कुछ निर्णय न कर सका । स्त्री बराबर टाम की बग़ल से चलती थी पर टाम से एक शब्द भी न बोली ।

टाम शीघ्र ही खेत पर पहुँच कर काम में लग गया, पर वह स्त्री इससे बहुत दूर न थी, इससे वह बीच बीच में आंख उठा कर उसके काम की ओर देखता जाता था । उसने देखा कि वह बड़ी फुर्ती से काम कर रही है, औरों की अपेक्षा वह बहुत शीघ्र और आसानी से कपास चुनने लगी; पर जान पड़ता था कि वह बड़ी विरक्ति, घृणा और अभिमान के साथ यह काम कर रही है ।

टाम की बग़ल में ही नीलाम में उसके साथ की ख़रीदी हुई लूसी नाम की दासी बैठी कपास चुन रही थी । यहाँ आने के बाद यह स्त्री बहुत ही कमज़ोर और बीमार हो गई । वह कपास बीनती जाती है, और छिन छिन में मृत्यु को बुलाती जाती है, कभी कभी एकदम पृथ्वी पर पसर जाती है । टाम ने उसके पास सरक कर चुपके से अपनी डलिया में से थोड़ी कपास निकाल कर उसकी डलिया में डाल दी ।

लूसी ने आश्चर्य के साथ देखते हुए कहा, "अरे, नहीं नहीं, ऐसा मत करो, इसके लिए तुम आफ़त में पड़ जाओगे ।"

ठीक इसी समय वहाँ साम्बो आ पहुँचा । लूसी ने इसे उपपति नहीं बनाया, इससे वह उस पर बड़ा नाराज़ था । उसने आते ही लूसी को एक ठोकर जड़ी । लूसी बेहोश हो गई । तब साम्बो टाम के पास जाकर उसके मुँह और पीठ पर चाबुक फटकारने लगा ।

टाम चुप चाप अपना काम करता रहा । पर लूसी को अचेत हुई देख कर परिदर्शक का एक दूसरा साथी नौकर कहने लगा, "अभी इस हरामज़ादी को होश कराता हूँ ।" इतना कह कर

जेब से एक आलपीन निकाल कर उसके सिर में चुभो दी। वह स्त्री कराह उठी। परिचालक बोला, "उठ हरामज़ादी, मुझसे यह सब ढङ्ग नहीं चलेगा, मैं तेरी सब बदमाशी निकाल दूँगा।"

लूसी होश में आ कुछ उत्तेजित सी होकर तेज़ी के साथ कपास इकट्ठी करने लगी।

उस आदमी ने कहा, "देख अगर इसी तरह जल्दी जल्दी काम न करेगी तो तुझे यमराज के घर पहुँचा दूँगा।"

टाम ने सुना वह कहती है, "जल्दी भेज दो जान बचे।" फिर सुना, "हे भगवन्! हे परमात्मन्! अब कितना! क्या इस दुनिया से मुझे नहीं उठा लोगे?"

टाम जानता था कि यदि शाम तक लूसी डलिया भर कपास न दे सकी तो इसकी जान की ख़ैरियत नहीं, लेग्री मारे कोड़ों के चमड़ा उधेड़ लेगा। अतएव उसके लिए अपनी आफ़त की कुछ भी परवाह न करके उसने अपनी सारी रुई उसकी डलिया में डाल दी।

लूसी—अरे ऐसा मत करो। तुम नहीं जानते कि इसके लिए वह तुम्हारी कितनी साँसत करेंगे।

टाम ने कहा, "मैं तुम्हारी अपेक्षा अच्छी तरह साँसत सह सकता हूँ" इतना कह कर वह फिर अपनी जगह पर जा डटा। यह एक क्षण भर की बात थी।

एकाएक पूर्वोक्त अपरिचित रमणी काम करते करते टाम के इतनी निकट आ गई थी, कि उसने टाम के अन्तिम शब्द सुने, और फिर पल भर अपनी बड़ी बड़ी काली आँखें उन लोगों पर गड़ा कर देखने लगी; उसके बाद अपनी डलिया से थोड़ी कपास लेकर टाम की डलिया में डाल कर बोली, "तुम अभी यहाँ का रीति-क़ायदा बिल्कुल नहीं जानते हो। यहाँ एक महीना तो बीतने दो, फिर

दूसरे की सहायता करना तो दूर रहा, अपनी ही जान बचानी मुश्किल हो जायगी।"

पर एक परिचालक थोड़ी दूर पर उस स्त्री की यह कार्रवाई देख रहा था। वह चाबुक लिये हुए वहाँ पहुँच कर एक विजय के स्वर से बोला, "हाँ हाँ, क्या करती हो? मैं तुम्हारी सारी कार्रवाई देखता हूँ। तुम इस समय मेरे वश में हो, यह सब चाल नहीं चलेगी।"

उस स्त्री ने बड़ी कड़ी नज़र से परिचालक को ओर देखा। उसके ओंठ फड़कने लगे और आँखों से चिनगारियाँ बरसने लगीं। वह परिचालक को डाँट कर बोली, "सूअर, पाजी! आ तो एक बार मेरे पास, देखूँ तेरी हिम्मत! अब भी मुझमें इतनी क्षमता है कि शिकारी कुत्तों से तेरी बोटी बोटी नुचवा कर जीता गड़वा दूँ! तू मेरे सामने रोब दिखाने आया है?"

परिचालक उसकी बातों से सहम कर बोला, "शैतानी, तब तू यहाँ काम करने क्यों आई है? मिस कासी, तुम मेरी कोई हानि न करना।"

रमणी—तू हट जा यहाँ से दूर।

परिचालक वहाँ से हट कर दूसरी ओर कुलियों का काम देखने चला गया।

वह स्त्री फिर तेज़ी से अपने काम में लग गई। उसका गज़ब का फुर्तीलापन देख कर टाम चौंधिया गया। दिन डूबने के पहले ही उसकी डलिया भर गई और बीच में उसने कई बार अपनी कपास टाम की डलिया में भी डाल दी थी। संध्या के बाद अधिक अन्धकार हो जाने पर सब कुली सिर पर अपनी डलिया उठाये हुए कपास की गोदाम पर जहाँ तौल होता था, पहुँचे। लेग्री वहाँ बैठा दो परिचालकों से घुल घुल कर बातें कर रहा था।

लेग्री—इस काले गुलाम टाम को ठीक करना चाहिए। यह जल्दी रास्ते पर नहीं आवेगा, बड़ी मेहनत लेगा।

हब्शी परिचालक खीस निकाल कर हँसने लगा। पर, कुइम्बो बोला, "हुज़ूर ही से यह ठीक होगा, आप जिस ज़ोर से चाबुक लगाना जानते हैं शैतान भी वैसा नहीं जानता।"

लेग्री—इसे सिखाने का सबसे अच्छा और सीधा उपाय यह होगा कि इसे दूसरी स्त्रियों को कोड़े लगाने का भार सौंपा जाय।

कुइम्बो—हाँ सरकार, लेकिन वह यह बात कभी नहीं मानेगा, मार-पीट करने के लिए वह कभी तैयार न होगा। उसका वह धरम-पना दूर करना सहल नहीं है।

लेग्री—मैं आज ही उसका धरमपना निकाले देता हूँ।

इतने में साम्बो ने कहा, "यह देखिए, लूसी ने कोई काम नहीं किया, दिन भर बैठी रही, यह बड़ी बदज़ात है, कुलियों में ऐसा और कोई पाजी नहीं है।"

कुइम्बो—खबरदार साम्बो! मैं जानता हूँ कि लूसी से तू क्यों खार खाता है।

साम्बो ने लेग्री की ओर देख कर कहा, "सरकार, आप ही ने तो उसे मेरी औरत बनने को कहा था, पर वह आप की बात नहीं मानती है।

लेग्री—मैं मारते मारते उसका चमड़ा छुड़ा देता। लेकिन आज कल काम की भीड़ है इससे नुक़सान होगा।

साम्बो—लूसी बड़ी बद है, कुछ नहीं करना चाहती। सिर्फ़ दिक़ करती है—और यह टाम इसकी मदद करता है।

लेग्री—टाम ने इसकी मदद की है! अच्छा तो टाम ही इसको कोड़े भी लगावें। इससे टाम खूब सीख जायगा। यह ससुरी योंही

अधमरी हो रही है, तुम लोगों की मार से तो मरने का भी डर है, पर टाम उतने ज़ोर से कोड़े नहीं लगावेगा इससे वह भी डर नहीं है।

यह बात सुन कर साम्बो और क्विम्बो खीस निकाल कर हँसने लगे।

परिचालकों ने कहा, "लेकिन सरकार, टाम ने और मिस कासी ने लूसी की डलिया में बड़ी रुई डाली है।"

लेग्री—मैं अभी तौले लेता हूँ।

वह दोनों परिचालक फिर ठठा कर हँसे।

लेग्री ने पूछा, "मिस कासी ने अपना दिन भर का काम तो पूरा कर लिया है न?"

परिचालक—सरकार, काम तो वह शैतान की तरह करती है। लेग्री ने सब की कपास तोलने की आज्ञा दी। कुली बहुत थक गये थे, इससे बड़े कष्ट से अपनी अपनी डलिया उठा कर काँटे पर धरने लगे। लेग्री स्लेट हाथ में लेकर तौल और नाम लिखने लगा।

टाम की टोकरी का तौल हुआ और उसका काम सन्तोष-जनक पाया गया। टाम अपनी टोकरी तुल जाने के बाद बड़ी उत्कण्ठा से लूसी की टोकरी की ओर देखने लगा।

लूसी ने डरते और काँपते हुए अपनी टोकरी लाकर रक्खी। तौल में वह पूरी थी, पर लेग्री ने उसे धमकाने की नीयत से बनावटी ग़ुस्से से कहा, "यह हरामज़ादी बड़ी सुस्त है। आज भी कम है। इसे किनारे खड़ा करो, अभी इसकी ख़बर ली जाती है।"

लूसी ने निराशा से एक ठण्ढी साँस ली और एक तख़्ते पर बैठ गई।

फिर उस कासी नाम की स्त्री ने बड़ी अवज्ञा और औद्धत्य के साथ अपनी टोकरी लाकर रक्खी। लेग्री विद्रूप-सूचक तथापि कौतूहल-पूर्ण दृष्टि से उसका मुख देखने लगा।

रमणी आँखें गड़ा लेग्री की ओर घूरने लगी। उसके ओठ फड़कने लगे। उसने फ्रेंच-भाषा में लेग्री को कुछ कहा। बात किसी की समझ में न आई पर लेग्री का चेहरा पिशाच सा हो गया, और उसने कासी को मारने के लिए हाथ उठाया। रमणी घृणा दिखाती हुई निर्भीकता-पूर्वक वहाँ से चल दी।

कुछ देर बाद लेग्री साहब ने टाम को बुला कर कहा, "टाम, मैंने तुझे साधारण कुली का काम करने के लिए नहीं ख़रीदा है। मैं तुझे परिचालक का ओहदा दूँगा और तू काम ठीक करने पर तरक्की पाकर परिदर्शक भी हो सकेगा। कुलियों को किस तरह कोड़ों से पीटा जाता है, यह तू इतने दिन देख सुन कर ख़ूब सीख लिया होगा। जा, आज इस लूसी को कोड़े लगा। यह हरामज़ादी बड़ी शरारती है।"

टाम—सरकार, मुझे माफ़ कीजिए। कृपा करके मुझे इस काम में मत लगाइए। मुझ से नहीं हो सकेगा। मैंने कभी यह काम नहीं किया है, न करूँगा।

टाम की यह बात सुन लेग्री क्रुद्ध होकर कहने लगा, "तू ज़रूर कर सकेगा।" इतना कह चमड़े का एक चाबुक लेकर टाम को पीटने लगा, और उसके मुँह पर घूँसों की मार मारने लगा। क़रीब पन्द्रह मिनट तक लात, घूँसे और कोड़े बरसा कर बोला, "बोल, अब भी इन्कार करता है" ?

टाम की नाक से ख़ून बहने लगा था। ख़ून पोंछते हुए उसने कहा, "सरकार, मैं दिन रात काम करने को तैयार हूँ, इस शरीर में जितने दिन प्राण हैं आप की नौकरी बजाऊँगा। लेकिन इस काम को मैं अनुचित समझता हूँ, सरकार, यह मुझसे कभी नहीं होगा—मैं कभी नहीं करूँगा—कभी नहीं।

टाम बोलने में सदा से बड़ा विनयी था। उसके बोलने का ढङ्ग

विशेष सम्भ्रम-सूचक था । लेग्री ने सोचा कि टाम डर गया है, शीघ्र ही वश में आजायगा । पर टाम के अन्तिम शब्द सुन कर कुली लोग चौंक पड़े । लूसी हाथ जोड़ कर बोली, "हे भगवन् !" परस्पर सब एक दूसरे का मुँह देखने लगे, सब शङ्कित-मन से आने वाली विपद की प्रतीक्षा करने लगे ।

लेग्री कुछ देर निस्तब्ध और हतबुद्धि सा रहा, लेकिन ज़रा देर में ही गर्ज कर बोला, "क्यों रे हरामी के बच्चे ! बोल, तू मेरी बात को अनुचित समझता है ! साले पशु, तुझे उचित और अनुचित का विचार करने की क्या पड़ी है ? क्यों बे, तू अपने को समझता क्या है ? सूअर, तू अपने को बड़ा शरीफ़ का बच्चा समझता है कि अपने मालिक के सामने उचित अनुचित करता है ? इस छोकड़ी को कोड़े लगाने को तू अन्याय समझने का बहाना लगाता है ?"

टाम—सरकार, मैं इसे मारना अन्याय समझता हूँ । यह स्त्री बिल्कुल रोगी और कमज़ोर है ; इसे मारना निरी निर्दयता का काम है । मैं ऐसा काम कभी नहीं करूँगा । सरकार, मुझे मारना चाहें मार डालें, मुझे मरना कबूल है, लेकिन इनमें से किसी को मारने के लिए मेरा हाथ न उठेगा ।

टाम ने धीमे स्वर से ये बातें कही थीं, पर उसके वाक्यों से उसके हृदय की दृढ़ता और अटल प्रतिज्ञा का पता चलता है । लेग्री क्रोध से कांपने लगा । उसकी आंखों से चिनगारियाँ छूटने लगीं । पर जैसे कुछ भयङ्कर जन्तु अपने शिकार को एकदम न मार कर धीरे धीरे उसे खेला खेला कर मारते हैं, वैसे ही लेग्री ने भी टाम को तत्काल कोई ज़बरदस्त सज़ा न दी, और क्रोध के वेग को तनिक रोक कर उस पर तीव्र व्यङ्ग-बाण छोड़ते हुए कहने लगा:—

"चलो, अन्त में हम पापियों के दल में यह एक धर्मात्मा कुत्ता

आगया !—यह किसी महर्षि और किसी सज्जन से कम नहीं है; हम सब पाखण्डी हैं, यह यहां हम लोगों को हमारे पापों की जानकारी कराने आया है। अहा ! कैसा भारी धर्मात्मा शख़्स है !

क्यों रे बदज़ात, तू धर्म का तो बड़ा ढोंग रचता है, पर क्या तेरी बाइबल से यह बात नहीं सुनी, कि "अरे नौकरो, अपने मालिक के हुक्म की तामील करो ?" मैं क्या तेरा मालिक नहीं हूँ ? क्या मैंने तेरे इस काले शरीर के बारह सौ डालर नक़द नहीं गिने ? बोल, इस समय तेरी आत्मा और शरीर मेरा है या नहीं ?" उसने टाम को अपने डबल जूतों की एक गहरी ठोकर लगाते हुए कहा, "बोल, बोल, बतला।"

इस गाढ़ शारीरिक यन्त्रणा में, इस घोर पाशविक अत्याचार से गुरदार हुए रहने पर भी लेग्री के इस प्रश्न से टाम के हृदय में आनन्द और जयोल्लास की धारा बह निकली। टाम सहसा सिर ऊँचा करके खड़ा हुआ। घायल मुख से जो ख़ून की धारा बह रही थी, उस ख़ून के साथ आंसुओं की धारा का मेल होने लगा। टाम विश्वासपूर्वक आंखें ऊपर उठाकर कहने लगा—

"नहीं ! नहीं ! नहीं ! सरकार, मेरी यह आत्मा आप की कभी नहीं है। आपने इसे नहीं ख़रीदा है—तू इसे नहीं ख़रीद सकता ! यह उसी एक के हाथ बिकी हुई है जो इसकी रक्षा करने में समर्थ है; कोई परवा नहीं, कोई परवा नहीं। इस शरीर को तुम चाहे जितना सता लो, आत्मा का तुम कुछ नहीं बिगाड़ सकते।"

लेग्री ने नाक चढ़ा कर कहा, "मैं कुछ नहीं बिगाड़ सकता ! देखता हूँ, देखता हूँ। अरे साम्बो, कुइम्बो ! लो इस सूअर को दुरुस्त करो। ऐसी मार मारो कि महीने भर खाट से सिर न उठा सके।"

यह दोनों यमदूत सरीखे नर-पिशाच तत्काल टाम को बाहर खींच ले जाकर पीटने लगे। लूसी यह देख कर बार बार चीखने लगी।

सैंतीसवाँ परिच्छेद ।

कासी की रामकहानी ।

रात के दो पहर बीत चुके होंगे । चारों ओर घनघोर अँधियारी छाई हुई है । एक सड़ी गली कपास, और इधर उधर की सटपट टूटी फूटी चीज़ों से भरी हुई तंग कोठरी में टाम अचेत पड़ा है । सारे दिन कुछ अन्न पानी नसीब न हुआ, इससे उसके प्राण कण्ठ से आ लगे हैं । तिस पर कोठरी में मच्छरों की भरमार, यह पीड़ा पर पीड़ा है । ज़रा आँखें बन्द करने का भी आराम नहीं है ।

टाम ज़मीन पर पड़ा पुकार रहा है, "हे भगवन् ! दीनबन्धु ! एक बार दीन की ओर आंख उठाकर देखो । पाप और अत्याचार पर विजय प्राप्ति की शक्ति दो ।"

उसकी कोठरी में किसी के पैरों की आहट सुनाई दी और कहीं से लालटेन की रोशनी उसके मुँह पर पड़ी ।

टाम बोल उठा, "कौन है ? ईश्वर के लिए मुझे एक घूँट पानी पिला दो ।"

तब कासी ने—वही जिसके पैरों की आहट सुनाई दी थी—लालटेन ज़मीन पर धर कर अपने साथ लाई हुई बोतल से थोड़ा जल ढाल टाम का सिर उठा कर उसे पिलाया । बुखार की तेज़ी के कारण टाम ने और दो प्याले जल के पिये ।

कासी ने कहा, "जितना जल चाहे पीओ, मेरे साथ काफ़ी जल है । मैं जानती थी कि इस दशा में तुम्हारे लिए जल की कितनी

आवश्यकता होगी। अक्सर कुलियों की तुम्हारी सी दशा होने पर मैं उन्हें जल पिलाने आया करती हूँ। आज यह कुछ तुम्हारे लिए मैं पहले ही पहल नहीं आई हूँ।"

टाम ने जल पीकर कहा, "मेम साहब, आपको मेरे धन्यवाद !" कासी दुःखित स्वर से बोली, "मुझे मेम साहब मत कहो ! मैं भी तुम्हारी ही भाँति एक अभागी ग़ुलाम हूँ, बल्कि तुमसे भी गई बीती हूँ।"

फिर कासी ने खाट और बिछौने, जिन्हें अपने साथ लाई थी, लाकर टाम के सामने रक्खे और उस पर एक ठण्ढे जल से भिगोई हुई चादर बिछा कर बोली, "मेरे अभागे सङ्गी, गिरते पड़ते किसी तरह इस पर आ कर लेट रहो।"

टाम का सारा बदन छिला पड़ा था। हिलने डुलने की शक्ति न थी। पर बड़े कष्ट से ज्यों त्यों सरकते सरकते वह उन ठण्ढे बिछौनों पर जा लेटा। उन पर पहुँचते ही उसे कुछ आराम मालूम हुआ।

बहुत समय से इस पाशव अत्याचार-पूर्ण स्थान में रहते रहते कासी घावों की चिकित्सा के सम्बन्ध में विशेष अभिज्ञ हो गई थी। वह टाम के घावों पर अपने हाथ से मलहम लगाने लगी। मलहम के गुण से टाम की यन्त्रणा बहुत कुछ कम हो गई। इसके बाद कासी ने टाम का सिर ऊपर उठाकर तकिये की जगह उसके सिरहाने थोड़ी सी रुई रखदी। फिर बोली; "तुम्हारे लिए जितना मुझसे हो सका, मैंने किया।"

टाम ने अपनी हार्दिक कृतज्ञता जताई। रमणी ज़मीन पर बैठ गई और दोनों हाथ घुटनों से लपेट कर तीव्र-यन्त्रणा-व्यञ्जनक मुख से एकटक सामने की ओर देखने लगी। उसके सिर का कपड़ा पीठ पर गिर

गया और उसके लम्बे लम्बे काले बल खाये हुए बाल उसके विषादावृत मुख पर चारों ओर बिखर गये।

कुछ देर बाद रमणी बोल उठी, "इसका कोई नतीजा नहीं, अभागे साथी, तुम्हारी सारी चेष्टायें व्यर्थ हैं। तुमने आज बड़ा विलक्षण साहस दिखलाया, न्याय भी तेरी ही ओर था; पर यह संग्राम व्यर्थ है; इसमें तेरी जय नहीं होगी। तू साक्षात् शैतान के पञ्जे में फँसा है; उसकी क्षमता असीम है, अन्त में तुझे हार कर आत्मसमर्पण करना पड़ेगा—न्याय का पक्ष छोड़नापड़ेगा।"

न्याय का पक्ष छोड़ना पड़ेगा! क्या मानवी मानसिक निर्बलता और शारीरिक यन्त्रणा ने भी इसके पहले चुपके चुपके उसके कानों में यह बात नहीं कही थी? टाम काँप उठा। जिस प्रलोभन के साथ टाम आज तक बराबर लड़ता चला आता था, यह विषादमयी मूर्ति-रमणी उसी प्रलोभन की 'ज़िन्दा तसवीर' जान पड़ने लगी। टाम आर्त्त होकर बोला, "हा परमात्मन्! हा भगवन्! मैं न्याय का पक्ष कैसे छोड़ सकता हूँ?"

उस रमणी ने स्थिर कण्ठ से कहा, "ईश्वर से पुकार करने का कोई फल नहीं, ईश्वर कुछ सुनता सुनाता नहीं है। मेरा विश्वास है कि ईश्वर है ही नहीं, और है भी तो वह हम लोगों का विपक्षी है। लोक परलोक सभी हम लोगों के विरुद्ध है। प्रत्येक पदार्थ हमें नरक की ओर ढकेल रहा है। फिर हम नरक में क्यों न जायँ?"

टाम ने आँखे मूँद लीं। रमणी के मुख से यह नास्तिकता-पूर्ण वचन सुन कर उसका हृदय काँप उठा। रमणी फिर कहने लगी, "देखो, यहाँ की बाबत तुम कुछ नहीं जानते हो; पर मैं यहाँ की राई-रत्ती से वाकिफ़ हूँ। मुझे यहाँ रहते पाँच वर्ष हो गये, मेरा शरीर और आत्मा सर्वस्व इस व्यक्ति के चरणों तले है; और फिर भी मैं इस

नराधम पिशाच को जी से घृणा करती हूँ। यहां यदि तुम जीते गाड़ दिये जाओ, आग में डाल दिये जाओ, तुम्हारा शरीर काट कर बोटी बोटी कर डाला जाय, कुत्तों से तुम नुचवा डाले जाओ, पेड़ में लटका कर कोड़ों से तुम्हारी जान ले ली जाय तो भी उसका कोई विचार न होगा! अँगरेज़ गवाह के बिना इनके विरुद्ध कोई अपराध साबित न होगा। पर यहाँ पाँच कोस में कोई अँगरेज़ नहीं है। और होही तो क्या? यह झूठी अँगरेज़ जाति क्या किसी भी बुरे काम से बची है? वे क्या तुम्हारे हमारे लिए सच्ची बात कहेंगे? ईश्वर अथवा मनुष्य-रचित ऐसा यहाँ कोई क़ानून नहीं है जिससे हम लोगों का कोई उपकार हो सके। और यह नराधम! संसार में ऐसा कोई भी पाप नहीं है जिसे करने में ज़रा भी सङ्कोच करे! मैंने यहाँ आ कर जो कुछ देखा है, यदि उसका पूर्वापर मिलान कर वर्णन करूँ तो उसे सुन कर आदमी डर से पागल हो जाय। इस पाखण्डी की इच्छा के विरुद्ध काम करने का कोई फल नहीं है। मैं क्या अपनी इच्छा से इस नीच के साथ रहती हूँ? क्या मैं एक सभ्या रमणी न थी; और वह—हा ईश्वर! यह व्यक्ति क्या था और क्या होगया! फिर भी पाँच वर्षों से इसके साथ हूँ। इन पाँच वर्षों से मैं दिन रात, हर घड़ी, हर पल, अपने भाग को कोसती रही हूँ। लेकिन अब यह नराधम मुझे छोड़कर नई उपपत्नी बनाने के लिए पन्द्रह वर्ष की एक बालिका को लाया है। उसके मुँह से सुना कि उसकी भली मानस मलकिन ने उसे बाइबल पढ़ना सिखलाया है; और वह अपनी बाइबल यहाँ लाई है—नरक में अपने साथ बाइबल ले आई है!" इतना कहते कहते वह स्त्री पागल की तरह हँस पड़ी।

उस स्त्री की बातें सुनकर टाम की आँखों के सामने अन्धकार छा गया। वह हाथ जोड़ कर बोल उठा "कहाँ हो हे नाथ, क्या हम दीन

दु:खियों की सुधि एकदम विसार दी ? भगवन्, तुम्हारे सहायक हुए विना निस्तार नहीं है।"

कासी फिर रूखेपन से कहने लगी, "और तुम्हें क्या पड़ी है जो तुम इन अभागे नीच श्वानवत् गुलामों के लिए इतना कष्ट सहते हो ? इन्हें ज़रा सा मौक़ा मिलना चाहिए, फिर ये कभी तुम्हारी बुराई करने से न चूकेंगे। तुम इनमें किसी को वेत लगाने पर राज़ी नहीं हो पर इन्हें मालिक की आज्ञा मिल जाय तो ये तुरन्त तुम्हें पीट डालेंगे। ये हर एक दूसरे के लिए निर्दयी हैं; तुम्हारे इनके लिए कष्ट उठाने का कोई फल नहीं है।"

टाम—हाय ! काहे से यह इतने निर्दयी हो गये ? यदि मैं भी इन्हीं की भाँति दूसरों को वेत लगाने पर राज़ी हो जाऊँ तो मैं भी धीरे धीरे इन्हीं जैसा हो जाऊँगा। नहीं नहीं मेम साहव ! मैं सर्वस्व खो चुका हूँ—स्त्री, पुत्र, कन्या घर सब जाता रहा। एक दयालु मालिक पाया था, वह भी मर गये, एक सप्ताह भी वह और जीते रह जाते तो मुझे एकदम दासत्व से मुक्त कर देते। इस संसार में मेरा अब कुछ नहीं रहा—कुछ नहीं रहा। सब खोया जा चुका है। अब मैं अपना परलोक नहीं विगाड़ूँगा। नहीं, नहीं, मैं कभी पाप नहीं कमाऊँगा !

कासी—यह नहीं हो सकता कि इन पापों को ईश्वर हमारे हिसाब में दर्ज करे। जब हमें मजबूर करके पाप कराया जाता है तो इसके लिए वह हमें अपराधी नहीं ठहरावेगा; वह उन्हीं के सिर यह पाप का बोझा लादेगा जो हमें दबा कर पाप कराते हैं।

टाम—बात ठीक है। लेकिन हाथों से पाप करते करते हमारा हृदय कलुषित हो जायगा। यदि मैं साम्बो सा कठोर-हृदय और दुराचारी हो जाऊँ तो इस विचार का कोई फल नहीं निकलेगा कि मैं कैसे वैसा हुआ हूँ, किसी ने मजबूर करके वैसा बनाया है या स्वयं ही

वैसा हो गया हूँ, मेरा हृदय जो दुराचारी बन जायगा वह दुराचारी का दुराचारी बना रहेगा, उस तर्क के बल हृदय का दुराचारी होना नहीं रोका जा सकता, मुझे इसी का ख़ौफ़ है।

कासी टाम की बात सुन कर बावले की तरह उसकी ओर देखने लगी; मानों सहसा किसी नये विचार ने उसके हृदय पर आघात किया हो; और फिर वह बड़ी ठण्ढी साँस लेकर बोली—

"हा भगवन्, मैं कैसी पापिन हूँ! टाम तुमने सच्ची कही! हाय—हाय—हाय" इतना कहते कहते दारुण मानसिक यन्त्रणा से अस्थिर हो कर वह पृथिवी पर गिर पड़ी।

कुछ देर लों दोनों चुप रहे। अन्त में टाम ने चीण स्वर से कहा, "मेम साहब, कृपा करके!"

रमणी सहसा उठ खड़ी हुई। उसका मुख पहिले ही की भाँति उदास था।

टाम ने कहा—"मेमसाहब, मुझे मारने के समय उन सबों ने मेरा कोट इस कोने में फेंक दिया था। उसकी पाकेट में मेरी बाइबल है—यदि मेम साहब! कृपा करके उसे उठा दें तो बड़ा अनुग्रह हो।"

कासी गई और बाइबल ले आई। टाम ने बाइबल खोल कर उसमें अपनी एक निशान की हुई जगह बतला कर कहा, यदि मेम-साहब इसे कृपा करके पढ़ दें तो जल पाकर जितना उपकृत हुआ हूँ, उससे अधिक उपकृत होऊँगा।

कासी ने शुष्क-हृदय और अश्रद्धा से बाइबल हाथ में उठा ली और टाम के चिन्हाङ्कित स्थल को पढ़ने लगी। वह पढ़ना लिखना ख़ूब जानती थी, बड़ी स्पष्टता और मधुरता से ईसा के सूली पर चढ़ाये जाने का वृत्तान्त पढ़ने लगी। पढ़ते पढ़ते बारम्बार उसका हृदय

काँपने लगा। बीच में स्वर स्खलित होने लगा। उस समय कासी चुप रह कर फिर ज़रा देर में सम्भल कर पढ़ती। अन्त में जब पढ़ते पढ़ते "पिता! इन्हें क्षमा कीजिए, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं" इस वाक्य पर पहुँची तो पुस्तक बन्द करके रोने लगी। टाम भी रो रहा था। कुछ देर बाद टाम ने कहा, "मेम साहब, यदि हम लोग ईसा के दृष्टान्त का अनुसरण कर सकते तो क्या इस तरह दुःख और कष्टों से हार मान लेते? ईसा का दृष्टान्त तो हमें कठिनाइयों का सामना करना सिखलाता है। मेम साहब, मैं देखता हूँ कि आप सुशिक्षिता हैं, हर बात में मुझसे बढ़ चढ़ कर हैं; पर मेम साहब! एक विषय में आप को इस गँवार टाम से भी शिक्षा मिल सकती है। तुमने कहा है कि ईश्वर हम लोगों के विरुद्ध और गोरों के पक्ष में है, नहीं तो हम पर इतना अत्याचार होने पर भी वह इस का विचार क्यों नहीं करता? तुम्हारा यह संस्कार भ्रमात्मक है। तुम उस ओर देखो कि अपनी सन्तान के लिए ईसा ने कितना कितना दुःख सहा, किस तरह दीनों की भाँति जीवन बिताया, पापियों ने अन्त में उनके प्राण तक ले लिये। और हम में से क्या किसी की भी उनकी सी दुर्दशा हुई है? मैं निश्चय कहता हूँ, ईश्वर हम लोगों को भूले नहीं हैं। यह नहीं सोच लेना चाहिए कि हमारे दुःख और कष्ट में पड़े रहने से ईश्वर हमारा सहायक नहीं रहा। उस पर दृढ़ विश्वास रख कर सदा पापों से किनारे रहने से अन्त में अवश्य हमें स्वर्ग-लाभ होगा। यह विपद, यह दुःख और कष्टों के पहाड़ हमें अग्नि में तपाये हुए सोने के समान शुद्ध करके ईश्वर के साथ रहने योग्य बना रहे हैं।"

कासी—पर जिस दुर्दशा में पड़ कर हमारे लिए पाप-मार्ग से हट कर चलना असम्भव हो जाता है, वह हमें वैसी दुर्दशा में क्यों डालता है?

टाम—कैसा भी सङ्कट हो, मेरी समझ में हम उसे पार कर सकते हैं। किसी दशा में पाप-मार्ग से हट कर चलना हमारे लिए असम्भव नहीं है।

कासी—सो तो तुम्हारे आगे आवेगा। कल फिर तुम्हें सतावेंगे, तब क्या करोगे? मैं यहाँ की सब बातें जानती हूँ। तुम्हें वह जैसी जैसी तकलीफें देंगे उनका विचार मात्र करने से रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ऐसी ही तकलीफ़ें दे दे कर अन्त में वह तुम्हें पाप-कर्म करने को मजबूर करेंगे।

टाम—हे भगवन्, क्या तुम मेरी रक्षा नहीं करोगे? प्रभो! आप मेरे सहायक होना। देखना तुम्हारा दास उत्पीड़न और अत्याचार के भय से कुमार्गी न होने पावे।

कासी—मैं यहाँ पहले कितने ही क्रन्दन और कितनी ही प्रार्थनायें सुन चुकी हूँ, पर अन्त में चल कर यही होता है कि उनका सङ्कल्प टूट गया, ये पापी उन्हें अपने वश में लाने में सफल हुए। देखो न, उधर एमेलिन जी जान से चेष्टा कर रही है, इधर तुम भी मन-प्राण से लगे हो—पर इसका नतीजा क्या? या तो तुम्हें इनकी बात माननी पड़ेगी, या तुम कुत्तों से नुचवाये जाओगे।

टाम—अच्छा तो मुझे मरना ही कुबूल है! उन्हें जी चाहे जितना सता लेने दो, एक न एक दिन मरना तो निश्चय ही है, उसे तो कोई टाल ही नहीं सकता!—मार डालने के सिवा तो वह मेरा कुछ और अधिक बिगाड़ ही नहीं सकते। मरने पर इनके हाथों से मुक्त हो जाऊँगा! ईश्वर मेरे साथ है, वही मुझे इस परीक्षा में उत्तीर्ण करेगा।

रमणी ने कोई उत्तर न दिया, वह आँख गड़ाये पृथ्वी की ओर देखती रही।

कुछ देर बाद आपही आप भुनभुनाने लगी, "यह हो सकता है। पर जो अत्याचार और उत्पीड़न से अधीर होकर कुरास्ते पड़ चुके हैं, उनके लिए तो कोई आशा नहीं है, कुछ भी नहीं है। अपवित्रता में पड़े पड़े हमारा यहाँ तक पतन हो जाता है कि हमें अपने आप पर घृणा आती है मरने की इच्छा होती है, पर आत्महत्या करने का साहस नहीं होता!—कोई आशा नहीं है! हाय! हाय! कुछ आशा नहीं है!—यह बालिका एमेलिन—उस समय ठीक मेरी भी यही उम्र थी!"

उसने बड़ी शीघ्रता से बोलते हुए टाम से कहा, "तुम देखते हो, आज मैं क्या हो गई हूँ? पर मैं सदा से ऐसी नहीं हूँ। मैं ऐश्वर्य की गोद में पली थी। मुझे स्मरण है कि बचपन में मैं गुड़ियों की भांति सज बज कर मौज से खेलती फिरती थी। सभी साथी सङ्गती और हमारे घर आनेवाले मेरे रूप-लावण्य की प्रशंसा किया करते थे। हमारे यहाँ एक बाग़ था, उसमें मैं अपने भाई बहिनों के साथ नारंगी के वृक्षों के नीचे आँख-मिचौनी खेला करती थी। ग्यारह वर्ष की अवस्था में मैं एक शिक्षाश्रम में भेजी गई, वहाँ मैंने गाना बजाना, फ्रेंच भाषा, एवं अन्य कितनी ही बातों की शिक्षा पाई; और चौदह वर्ष की अवस्था में पिता की मृत्यु के कारण मुझे घर आना पड़ा। उनकी मृत्यु अकस्मात् हो गई थी। उनके मरने पर जब सम्पत्ति का हिसाब लगा कर देखा गया, तो मालूम हुआ कि इतने से तो ऋण भी मुश्किल से चुकेगा। लहनदारों ने सम्पत्ति की सूची बनाने के समय मेरा नाम भी उसमें चढ़ा लिया। मैं मोल की दासी के गर्भ से जन्मी थी, पर मेरे पिता सदा मन ही मन मुझे स्वतन्त्र कर देने की इच्छा रखते थे; किन्तु उन्होंने यह किया नहीं था, इससे मैं भी सूची में चढ़ाई गई। मैं सदा से जानती थी कि मैं कौन हूँ, पर मैंने इसके

सम्बन्ध में कभी अधिक नहीं सोचा। किसी को कभी इस बात की आशङ्का नहीं हो सकती कि एक हट्टा कट्टा तन्दुरुस्त आदमी इतनी जल्दी मर जायगा। मेरे पिता की अकस्मात् देखते देखते हैज़े से मृत्यु हो गई। पिता की अन्त्येष्टि क्रिया के दूसरे ही दिन उनकी विवाहिता स्त्री अपने बाल-बच्चों को लेकर अपने पिता के घर चलदी। मुझे वहीं वकील के ज़िम्मे छोड़ दिया। मैं उनके इस व्यवहार से बड़ी चकित हुई पर इसका कारण मेरी समझ में न आया। जिस वकील को मैं अन्य सब चीज़ों के साथ सौंपी गई थी, वह हमारे घर के पासही रहता था, नित्य आया करता था और मुझसे उसका व्यवहार बड़ी भलमनसाहत का था। एक दिन वह अपने साथ एक सुन्दर युवा को लाया, जो मुझे इतना सुन्दर जान पड़ा कि मैंने वैसा सुन्दर मनुष्य कभी नहीं देखा था। मैं उस संध्या को कभी न भूलूँगी। मैं बाग़ में उसके साथ टहली थी। मैं दुःख और रञ्ज से अकेली मुर्दा सी पड़ी रहती थी। उसने मेरे साथ ऐसी दया और सज्जनता का व्यवहार किया कि क्या कहूँ। उसने मुझसे कहा कि शिक्षाश्रम में जाने के पूर्व मुझे उसने देखा था और तभी से मुझ पर उसका प्रेम हो गया है, अब वह मेरा बन्धु और रक्षक बनना चाहता है; संक्षेप में, यद्यपि उसने मुझसे नहीं कहा कि उसने मुझे दो हज़ार डालर में ख़रीद लिया था; और मैं उसकी सम्पत्ति थी—मैंने अपनी इच्छा से उसे आत्मसमर्पण कर दिया, क्योंकि मैं उसे प्रेम करती थी। हाय! मैं, मेरा उस पर कितना प्रेम था! अभी मेरा उस पर कितना प्रेम है और जब तक दम में दम है तब तक रहेगा! वह कितना सुन्दर, कितना उदार और कैसा महान् अन्तःकरण का था! उसने मुझे दास-दासी, गाड़ी-घोड़े, बाग़-बग़ीचे और वस्त्राभूषण तथा अन्य नाना प्रकार की सामग्रियों से भरपूर एक बहुत सजे हुए मकान में ला

रक्खा । द्रव्य से जो चीज़ मिल सकती है, वह सब उसने मुझे दी; पर मैं उन सब चीज़ों की कुछ भी क़दर न करती थी—मैं तो केवल उसी को चाहती थी । मैं उसे ईश्वर और अपनी आत्मा से भी अधिक चाहती थी; और उसकी ज़रा सी इच्छा पर अपना सर्वस्व वार सकती थी ।

मेरी केवल एक ही इच्छा थी—मैं चाहती थी कि वह मुझे शास्त्रानुसार व्याह ले । मैं सोचती थी कि जब वह मुझसे इतना प्रेम करता है तो वह अवश्य व्याह कर मुझे दासत्व की बेड़ी से मुक्त कर देगा । पर जब मैं उसके सामने यह बात उठाती, वह कहता कि यह लोकाचार और देशाचार की दृष्टि में विरुद्ध होने के कारण असम्भव है; और वह मुझसे कहता कि यदि हम दोनों एक दूसरे से विश्वास-घात न करें तो यहाँ न सही ईश्वर के यहाँ हम लोग विवाहित ही हैं । यदि यह सत्य है तो क्या मैं उसकी धर्म-पत्नी न थी ? क्या मैंने उससे कभी विश्वासघात किया था ? क्या सात बरस तक मैं उसकी प्रकृति का अध्ययन, उसे सुख मिले इसी की चिन्ता, उसी के लिए अपना जीवन नहीं समझती रही ? एक बार उसे संक्रामक ज्वर हुआ था, उस समय लगातार इक्कीस दिन तक दिनो-रात मैं उसकी सेवा करती रही । मैंने अकेले अपने हाथ से उसका सारा दवा-पानी और पथ्य आदि सब कुछ किया; और फिर वह आरोग्य होने पर मुझे अपनी मङ्गलकारिणी देवी कहा करता था और कहता कि मैंने ही उसकी जान बचाई । हमारे दो सुन्दर सन्तानें हुईं । पहला पुत्र था, और पिता के नाम पर उसका नाम हेनरी रक्खा गया । उसकी सूरत शक्ल ठीक अपने पिता की सी थी; वह सुन्दर नेत्र, वह प्रशस्त ललाट, वह लटकते हुए घुंघुराले बाल, सब उसी के से थे; रूप ही के साथ उसने अपने पिता की तेजस्विता तथा अन्यान्य गुण भी पाये थे । छोटी

जो एलिस नाम की कन्या थी, उसे वह मुझसे मिलती हुई बतलाया करता था। वह मुझे लुसियाना भर में सुन्दर बतलाया करता था, उसे मुझ पर और सन्तानों पर बड़ा 'नाज़' (गर्व) था। वह सन्तानों को और मुझे ख़ूब वस्त्राभूषणों से सजा-सजा कर अपने साथ खुली गाड़ी पर हवा खिलाने लेजाया करता था, रास्ते में चारों ओर से लोग मेरे और मेरी सन्तानों के रूप की जो बड़ाई करते, उसे वह नित्य मुझे सुनाया करता था। वे कैसे सुख के दिवस थे ? मैं संसार में अपने को सबसे अधिक सुखी मानती थी; पर वह सुख बीत कर दुःख की घड़ियाँ आरम्भ हुई ! उसका एक चचेरा भाई था, जिसे वह अपना बड़ा मित्र—और संसार भर में एक ही मित्र समझता था, वहाँ आया। पर न जाने क्यों उसे प्रथम बार देखते ही मुझे भय मालूम हुआ ; मुझे निश्चय सा जान पड़ा कि यह हम लोगों पर मुसीबत ढाहेगा। वह व्यक्ति नित्य हेनरी को घुमाने लेजाया करता और प्रायः घर लौटने में रात के दो दो तीन तीन बज जाते। इसके लिए मेरा एक शब्द कहने का साहस न होता, क्योंकि मैं जानती थी कि वह बड़ा अभिमानी है, इसी से मुझे बड़ा भय मालूम होता था। वह दुराचारी उसे जूओं के अड्डों की हवा खिलाने लगा और धीरे धीरे उसे उसमें बिल्कुल लिप्त कर दिया। उसका तो स्वभाव था कि किसी चीज़ में फँस जाने के बाद उससे निकलना असम्भव था। इसके बाद उसने उसका एक और अँगरेज़ रमणी से परिचय करा दिया। मैंने शीघ्र ही देख लिया कि उसका हृदय मेरे पास से जाता रहा। उसने मुझसे कभी कहा नहीं, पर मैंने सब समझ बूझ लिया। दिन दिन मेरी छाती फटने लगी ; पर मैं मुँह खोल कर कुछ न कह सकी। इधर जूए में हारते हारते वह कर्ज़दार हो गया। उस पाजी ने मुझे सन्तानों सहित बेच कर ऋण चुकाने के बाद उस रमणी से

विवाह करने की सलाह दी, और स्वयं आगे बढ़ कर हम लोगों को, ख़रीदने को तैयार होगया। हेनरी ने मुझे दोनों सन्तानों सहित उस सत्यानाशी के हाथ बेच डाला। एक दिन उसने मुझसे कहा कि कुछ काम से दो तीन हफ़्तों के लिए उसे बाहर जाना पड़ेगा। उसने आज और दिनों से अधिक प्रेम दिखाया, और कहा, वह शीघ्र ही लौटेगा; पर मैं भुलावे में न आई। मैंने समझ लिया कि सर्वनाश का समय आ पहुँचा है; मैं बोल न सकी, निगोड़ी आंखों ने आंसू बहाये। उसने मुझे, और बच्चों को बार बार चूमा, फिर बाहर घोड़े पर सवार होकर चला गया। मैं एकटक उसकी ओर देखती रही। उसके आंखों की ओट होते ही मैं अचेत होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी।

उसके दूसरे दिन वह पाखण्डी मेरे पास आकर बोला कि उसने मुझे सन्तानों सहित ख़रीद लिया है। उसने मुझे लिखे हुए काग़ज़ दिखलाये। मैंने उसे बारम्बार शाप देकर कहा कि मैं जीते जी कभी उसके साथ नहीं रहूँगी।

उसने कहा, "ठीक है। तुम्हारी इच्छा, पर देख लो अगर नहीं मानती हो तो मैं तुम्हारी दोनों सन्तानों को ऐसी जगह बेच डालूँगा, जहां तुम फिर कभी उन्हें नहीं देख सकोगी।" उसने कहा कि मुझे मोल लेने के अभिप्राय से ही उसने ज़ाल रच कर हेनरी को कर्ज़दार बनाया और एक दूसरी स्त्री के साथ उसे लगा कर मुझे बेचने की सलाह दी। वह पाखंडी कहने लगा, "मैं दो चार बूँद आंसुओं अथवा तिरस्कारों से हटनेवाला नहीं हूँ, तुम मेरी मुट्ठी में हो, मेरी बात न मानने से तुम्हारी भलाई नहीं है।"

मैंने देखा मेरे हाथ पैर बँधे हैं,—मेरी दोनों सन्तानें इसी के हाथ में थीं; मैं जब उसकी इच्छा के विरुद्ध चलती तभी वह उन्हें बेच डालने की धमकी देता। सन्तानों की रक्षा के लिए मैं उसके वश में

आई। पर वह कैसा घृणित जीवन था! दिनरात हृदय में मर्म-भेदी यन्त्रणा की आग धधका करती थी! जिसे रोम रोम से घृणा करती थी, जिसे देखकर क्रोधाग्नि भभक उठती थी, उसी के चरणों में देह, आत्मा और सर्वस्व की आहुति देनी पड़ी! हेनरी के सामने मैं सदा ख़ुशी से पढ़ती, नाचती, और गाती थी, पर इस व्यक्ति की ख़ुशी के लिए मुझे जो कुछ करना पड़ता था वह मैं बड़े भय और अनिच्छा से करती थी। पर जिन दो सन्तानों के लिए मैं उस नराधम के वश में हुई उनसे यह बड़ा ही रूखा व्यवहार करने लगा। मेरी कन्या बड़ी कायर थी, वह उसके डर से सदा सशङ्क रहती। पर मेरा पुत्र अपने पिता की भांति तेजस्वी और स्वाधीनता-प्रिय था। वह सदा उस नराधम के साथ लड़ता-झगड़ता रहता था। यह देख कर मैं सदा डरा करती थी और उन्हें सदा उसके संसर्ग से दूर रखती। पर मेरे सब कुछ करने रहने पर भी उस निर्दयी ने मेरी उन दोनों सन्तानों को बेच डाला। कब और किसके हाथ बेचा, यह मुझे मालूम नहीं हुआ। एक दिन पापी मुझे साथ लेकर घूमने गया; घर लौटने पर मैंने अपनी सन्तानों को नहीं पाया। पूछते ही उस नर-पिशाच ने बिना किसी 'रञ्जग़म' के कहा कि उन दोनों को बेच डाला। उसने मुझे रुपये – उनके ख़ून के दाम, दिखाये। सन्तान-बिक्री की बात सुन कर मैं पागल सी होगई, भले बुरे का ज्ञान जाता रहा, मैं उसे ईश्वर के नाम पर शाप देने लगी, और उस पर तरह तरह की गालियों की वर्षा करने लगी। मेरी यह दशा देख कर वह पाखंडी कुछ भयभीत हुआ! पर षड्यन्त्र, धोखेबाज़ी, चालाकी एवं भांति भांति के जालों को जिन्होंने अपना अस्त्र बना रक्खा है, उनका हृदय कभी नहीं हारता, कभी नहीं पसीजता। ये जाल करके लोगों को फुसलाने की चेष्टा करते हैं। वह धूर्त्त फिर मुझे कौशल

द्वारा वशीभूत करने के लिए कहने लगा कि उससे अवाध्य होने से फिर कभी सन्तानों का मुँह न देख सकूँगी और मेरी अवांध्यता के लिए सन्तानों को बड़ी तकलीफ़ सहनी पड़ेगी; लेकिन मैं उसकी बात मान लूँगी तो वह कभी कभी सन्तानों को देखने का अवसर देगा और वह उन्हें फिर ख़रीद कर भी लासकता है। किसी स्त्री की सन्तान को चंगुल में कर लेने के बाद फिर उस स्त्री से तुम चाहे जो करा लो। पाखंडी ने मुझे भय दिखा कर और आशा बँधा कर फिर वश में कर लिया। अतएव, दो तीन सप्ताह एक प्रकार से निर्विरोध बीते। फिर एकदिन मैं दण्डगृह के पास हो कर घूमने जा रही थी। दण्डगृह के द्वार पर भीड़ देख तथा एक बालक का चिल्लाना सुन कर मैं वहाँ से कुछ दूर पर खड़ी होकर देखने लगी। तत्काल उस घर में से मेरा हेनरी तीन चार आदमियों को धक्के देकर चिल्लाते हुए निकला और दौड़ कर उसने मेरा कपड़ा पकड़ लिया। वह तीनों चारों आदमी बड़ी बुरी बुरी गालियाँ बकते हुए उसे पकड़ने के लिए दौड़े आये। उनमें एक निरा पिशाच सा गोरा अँगरेज़ था, वह कहने लगा कि वह हेनरी को दण्डगृह में लेजा रहा था, हेनरी हाथ छुड़ा कर भाग आया है, अब उसे चौगुनी सज़ा दी जायगी। उस आदमी का चेहरा मुझे जन्म भर न भूलेगा। वह साक्षात् निठुरता का अवतार जान पड़ता था। मैं उस समय अति विनय पूर्वक वहाँ के लोगों से उसे छोड़ देने के लिए कहने लगी। पर मेरी कातरता देख कर वह सब उल्टे हँसने लगे। हेनरी बड़ी निराश दृष्टि से मेरी ओर देख कर रोने लगा और दृढ़ता से मेरे कपड़े का कोना पकड़ लिया। दण्डगृह के वे निर्दयी मनुष्य उसे खींच लेजाने के समय मेरे कपड़े का कुछ अंश फाड़ कर ले गये। जब उसे ले जाने लगे तो वह, "मां! मां! मां!" चिल्लाने लगा। मेरे पास ही एक भलामानस सा आदमी खड़ा था, मैंने उससे कहा,

"मेरे पास जो कुछ रुपये हैं तुम्हें देती हूँ, तुम कृपा करके इसे वेत की सज़ा से बचा दो ।" वह सिरहिलाकर बोला, "नहीं जो आदमी इसे यहाँ लाया है, वह किसी तरह इसे माफ़ नहीं करेगा। वह कहता है कि यह किसी तरह कब्ज़े में नहीं आता है। इससे कोड़े लगवाने के सिवा और कोई उपाय नहीं है ।" मैं दौड़ती दौड़ती घर आई। राह भर हेनरी की वह क्रन्दनध्वनि और चिल्लाहट मेरे कानों में गूँजती रही। मैंने घर पहुँचते ही उस नराधम बटलर के कमरे में जाकर बहुत घिघियाते हुए बड़ी विनय के साथ हेनरी को इस सङ्कट से बचाने के लिए कहा। वह नराधम हँसकर बोला, "ख़ूब हुआ। हेनरी जैसी शरारत करता है वैसाही नतीजा भी है। बिना कोड़ों के वह दुरुस्तहोने का भी नहीं।"

नराधम का यह निठुर व्यवहार देख कर और उसके मुख से ऐसे निर्दय वाक्य सुन कर मैं उन्मत्त सी होगई। मुझे मालूम हुआ मानों मेरे सिर पर कहीं से वज्र गिर पड़ा। मेरा सिर घूम गया, मैंने भयङ्कर मूर्ति धारण की। इसके बाद क्या हुआ सो सब स्मरण नहीं। केवल इतना स्मरण है कि, सामने टेबुल पर पड़ी हुई छुरी उठा कर मैं उसका सिर धड़ से जुदा कर देने को झपटी थी। इसके बाद बेहोश होगई और कई दिन उसी दशा में पड़ी रही।

जब मुझे होश हुआ तो मैंने देखा कि एक अपरिचित सुन्दर कमरे में पड़ी हुई हूँ। एक काली स्त्री मेरी सेवा-शुश्रूषा करती है; डाक्टर मुझे देखने आया है और मेरे लिए बड़ी तन्देही की जा रही है। थोड़ी देर बाद मुझे मालूम हुआ कि वह पापी मुझे यहाँ बेचने के लिए छोड़ कर चला गया; और यही कारण था कि वे लोग मेरे लिए इतना कष्ट उठा रहे थे।

अब मुझे जीने की साध न थी। मैं सदा मृत्यु का आवाहन किया

करती थी पर उस निगोड़ी ने मुझे न अपनाया, अनिच्छा रहते हुए भी मैं दिन दिन आरोग्य होने लगी और अन्त में फिर पूर्ववत् ठीक हो गई। फिर इसके बाद वहां वाले मुझे अच्छे अच्छे वस्त्र पहनने को देते। कई भलेमानस वहां आते, मेरे पास आकर बैठते, मेरा शरीर जांचते, मेरे साथ तरह तरह की बातें करते और वहां वालों से मेरे मूल्य के सम्बन्ध में मोल जोल करते थे। पर मैं ऐसी उदासीन बनी बैठी रहती थी कि कोई मुझे ख़रीदने का आग्रह न प्रकट करता। यह देख कर वहाँ वाले मुझे कोड़े लगाने को तैयार होते और हँसी ख़ुशी से बातें करने को कहते। अन्त में एक दिन कप्तान स्टूअर्ट नाम का एक साहब आया। वह कुछ सहृदय जान पड़ा। उसने समझ लिया कि किसी बड़े शोक के कारण मेरी यह दशा हो गई है। उसने अनेक बार मुझसे अकेले में भेंट करके अपनी दुःख की कहानी सुनाने को कहा। अन्त में उसने मुझे ख़रीद लिया और वचन दिया कि यथाशक्ति वह मेरी दोनों सन्तानों को तलाश करके ख़रीदने की चेष्टा करेगा। हेनरी की तलाश करने पर उसे पता चला कि वह पर्ल नदी के पार किसी खेतिहर के हाथ बेच डाला गया है। अतएव हेनरी को फिर ख़रीदने की कोई सम्भावना नहीं रही। हेनरी के सम्बन्ध में मैंने वही अन्तिम बात सुनी थी तबसे आज अठारह वर्ष हो गये कुछ नहीं सुना। फिर वह मेरी कन्या की खोज में गया और देखा कि एक वृद्धा स्त्री उसका पालन कर रही है। स्टूअर्ट ने एक बड़ी रक़म देकर उसे ख़रीदना चाहा पर वह नर-पिशाच दुरात्मा बटलर जान गया कि मेरे ही लिए स्टूअर्ट मेरी कन्या को ख़रीद रहा है, अतएव मुझे कष्ट देने की इच्छा से उसे स्टूअर्ट के हाथ नहीं बेचा। कप्तान स्टूअर्ट अत्यन्त सहृदय मनुष्य था। वह मुझे साथ लेकर अपने कपास के खेत के पास वाले मकान में जाकर

रहने लगा । वहाँ मैं उसके साथ रहने लगी । एक वर्ष के भीतर ही स्टूअर्ट से मुझे एक पुत्र उत्पन्न हुआ । अहा ! कैसा सुन्दर पुत्र था ! मैं उसे कितना प्यार करती थी ! देखने में ठीक हेनरी जैसा था । पर मैंने पहले ही निश्चय कर लिया था कि सन्तान को पाल-पोष कर बड़ा नहीं करूँगी ! पन्द्रहवें दिन मैंने उस बालक को छाती से लगाकर बार बार चूमा; बार बार उसकी ओर देखा; और तब उसे अफीम खिला छाती से चिपटा कर सो रही । बालक चिर-निद्रा में मग्न हो गया । दो ही घण्टे बाद उसका साँस बन्द हो गया । सारी रात उसे छाती से लगाये बार बार मुख चूम चूम कर कहने लगी, "बेटा, तुझे इन पाखण्डी गोरों के हाथ से मुक्त कर दिया, अब तुझे दासी के गर्भ से जन्म लेने के कारण कोई कष्ट न उठाना पड़ेगा ।" मुझे अपने पुत्र के मार डालने का कोई कष्ट न हुआ । बल्कि मैंने उसे अत्याचार और उत्पीड़न से बचा दिया । यह अच्छा ही हुआ । गुलाम अपनी सन्तानों को मौत के सिवा अधिक सुखदायी और शान्तिप्रद दूसरी क्या वस्तु दे सकते हैं ? कुछ दिनों बाद कप्तान को हैज़े की बीमारी हुई और वह मर गया । संसार की कैसी उल्टी गति है, जो लोग जीना चाहते हैं वह मर जाते हैं, और मैं अभागी बार बार मरना चाहती थी पर जीती ही रह गई ! तब मुझे उसके उत्तराधिकारियों ने बेच डाला । यों मैं एक एक करके कई आदमियों के हाथ में रही । उसके बाद यह नर-पिशाच मुझे ख़रीद कर लाया और पाँच बरस से मैं यहाँ हूँ !"

कहते कहते कासी का कण्ठ रुक गया, और बोल न सकी । मालूम होता है लेग्री का नाम याद आते ही उसके हृदय में किसी विशेष प्रकार का शोक, दुःख वा विद्वेष का भाव जग उठा था ।

पूर्वोक्त विवरण कहते समय कासी कभी टाम को सम्बोधन करके कह रही थी, कभी अपने आप पागल की तरह बकती चली जा रही थी।

कासी का पूर्व विवरण सुनते सुनते टाम को अपना शारीरिक दुःख एकदम भूल गया, और वह अनिमेष नेत्रों से अपने दोनों हाथों का सहारा लेकर कासी की ओर देख रहा था।

कुछ देर ठहरने के बाद कासी ने फिर कहा, "तुम मुझसे कहते हो कि पृथ्वी पर परमेश्वर है और वह सब कुछ देखता है। हो सकता है कि ईश्वर हो। मैं जब शिक्षाश्रम में थी तो वहाँ की भगिनियाँ (Sisters) मुझसे कहा करती थीं कि एक दिन मनुष्यों के पाप और पुण्य का विचार होगा। पर क्या उस दिन गोरों को पाप का प्रतिफल नहीं भोगना पड़ेगा? क्या वे इस पाप के लिए दण्ड नहीं पावेंगे? उनकी समझ में हम लोगों को कोई कष्ट नहीं है। हम लोगों के मनों में बाल-बच्चों के लिए कुछ दुःख नहीं होता है; हम लोगों की सन्तानों को भी कोई कष्ट नहीं होता है। पर मुझे मालूम होता है कि केवल मेरे हृदय में जो शोक की आग दबी है, उससे यह सारा देश भस्म हो जा सकता है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि मुझ सुधाँ यह सारा देश पृथ्वी के गर्भ में समा जाय, पृथ्वी से आग निकले और देश जल कर ख़ाक हो जाय। वह विचार का दिन शीघ्र आवे। जिन सब अत्याचारी अँगरेज़ों ने मेरा और मेरी सन्तानों का सत्यानाश किया है, जिन्हों ने हम लोगों के शरीरों और आत्माओं का विनाश कर डाला है, उन लोगों के विरुद्ध मैं राजाधिराज ईश्वर के सामने खड़ी होकर अपील करूँगी, उनसे विनयपूर्वक न्याय करने की प्रार्थना करूँगी।

वचपन में मेरी धर्म पर विशेष भक्ति थी; ईश्वर पर मेरा प्रेम था और मैं उसकी उपासना करती थी। अब तो मेरे शरीर और आत्मा का विल्कुल पतन हो गया है, शैतान सदा मेरे सिर पर सवार रहता है, वह शैतान सदा मुझे अपने हाथ से अत्याचार और कठोरताओं का प्रतिफल देने को उसकाता है। इसी बीच में किसी एक दिन इस अत्याचार का फल दूँगी। इस वर्त्तमान नर-पिशाच को ठिकाने लगाऊँगी। किसी रात्रि को मौक़ा मिलते ही अपना मनोरथ सिद्ध करूँगी।" यह कह कर कासी अकस्मात् खिलखिला कर हँस उठी, पर सहसा अचेत होकर गिर पड़ी। कुछ देर वाद होश में आई और सम्हल कर उठ वैठी। फिर टाम से वोली, "वोलो, तुम्हारे लिए और क्या करना होगा,. और जल दूँ ?"

जव कासी के मुख से दया की वात निकलती तव तो वह साक्षात् दया की मूर्त्ति जान पड़ती; पर जव वह प्रतिहिंसा के भाव से उत्तेजित होती तो ठीक राक्षसी का रूप धारण कर लेती। इस संसार में सभी मनुष्यों का यह हाल है, कभी देव और कभी दानव का स्वाँग वदलते रहते हैं। जव दया, प्रेम और भक्ति की लहर रहती है तो मनुष्य देवता जान पड़ता है पर द्वेष और प्रतिहिंसा का भाव आते ही वह दानव की शकल में वदल जाता है।

टाम ने जल पिया, और दयार्द्र चित्त तथा व्याकुल नेत्रों से उसकी ओर देख कर वोला, "मेमसाहव !— मैं चाहता हूँ कि आप उस ईश्वर की शरण लें जो दुःखी, पापी, ज्ञानी, सव को विना भेद-भाव के शान्ति का अमृत प्रदान करता है !"

कासी—उसके पास जाऊँ ! वह कहाँ है ? वह कौन है ?

टाम—जिसके सम्वन्ध में अभी आपने मेरे सामने पढ़ा है।

कासी—बचपन में मैं उसका सिंहासनारूढ़ चित्र देखा करती थी। पर वह यहाँ नहीं है! यहाँ पाप और अत्याचार के सिवा और कुछ नहीं दीख पड़ता है।

इतना कह कर कासी छाती पीटने लगी। टाम ने फिर कुछ कहना चाहा, पर कासी ने बाधा देकर कहा, "बस, अब सो जाओ, बातें न करो।" यह कह कर जल का घड़ा उसके पास रख तथा उसके आराम के लिए और बन्दोबस्त करके वह उस कोठरी से चली गई।

अड़तीसवाँ परिच्छेद ।

कुलक्षणा ।

लेथी साहब घर में बैठे ब्रांडी ढाल रहे हैं और ग़ुस्से से आप ही आप भनभना रहे हैं, "इसी साम्वों माली की यह सब बदमाशी है—इसी का उठाया हुआ सब बखेड़ा है। टाम एक महीने में भी उठने बैठने लायक़ होता नहीं दिखाई देता। इधर फ़सल के दिन—कपास चुनने का समय आगया, कुलियों की कमी से पूरा हर्ज होगा—कार-बार ही बन्द हो जायगा। साम्वो अगर नालिश न करता तो यह बखेड़ा न उठता।"

लेथी की ये सारी बातें समाप्त भी न होने पाई थीं कि पीछे से किसी ने आवाज़ दी, "असल में यही बात है,—इन बखेड़ों में हानि के सिवा कोई लाभ नहीं है।" लेथी ने पीछे फिर कर देखा और वहाँ कासी को खड़े पाया।

लेथी—क्योंरी चुड़ैल—तू फिर आ पहुँची ?

कासी—हाँ, आ तो पहुँची।

लेथी—तू बड़ी झूठी है, बड़ी कुल्टा है। मैं कहता हूँ मेरा कहना मान, शान्ति से रहा कर, नहीं तो मैं तुझ से कुली का काम कराऊँगा।

कासी—एक बार नहीं हज़ार बार मैं कुली का काम करूँगी। कुलियों की तरह टूटी टपरी में रहना मंज़ूर है पर तेरे चरणों में न रहूँगी।

लेथी—मेरे पैरों तले तू अब भी है। ख़ैर जाने दो झगड़े की ज़रूरत नहीं (कासी की कमर में हाथ डाल कर और उसकी कलाई पकड़

कर) मेरी प्यारी, मेरी जान! इधर आओ, मेरी जाँघ पर बैठो, सुनो, तुम्हारे फ़ायदे की बात कहता हूँ।

कासी ने कड़क कर कहा, "ख़बरदार! मुझे छूना मत। मुझ पर शैतान सवार है।"

कासी की लाल लाल आँखें और कड़कना सुन कर लेग्री थोड़ा सा डर गया। वास्तव में लेग्री के डरने का कुछ विलक्षण कारण है। पर उसने डरने पर भी अपने मन का भाव छिपाते हुए पहले कासी को धमका कर कहा, "जा, जा, चल यहाँ से।" फिर ज़रा देर बाद बोला, "कासी तू यों क्यों करती है? आगे जैसे तू मुझ पर प्रेम किया करती थी, मित्रता का बर्ताव करती थी वैसा अब क्यों नहीं करती?"

कासी ने रुखाई से कहा, "क्या कहा, तुमसे प्रेम करती थी!" इतना कहते कहते उसका गला रुक गया।

उन्मत्त स्त्रियाँ सहज में पश्वाचारी पुरुषों को दबा सकती हैं। कासी भी जब चाहती लेग्री को दबा लेती थी। पर आज कल कासी दासत्व-बन्धन के उत्पीडन से पूर्व की अपेक्षा बहुत क्रोधी और अधीर हो गई है। जब तब ग़ुस्सा भड़क उठने पर वह सनक सी जाती है। लेग्री यह देख कर बहुत डरता था। विशेषत: आज कल कासी के साथ लेग्री का झगड़ा होरहा था। लेग्री उपपत्नी बनाने की ग़रज़ से एमेलिन को लाया है, पर वह किसी तरह अपना धर्म तजने पर राज़ी नहीं होती, इससे दुराचारी लेग्री एमेलिन पर तरह तरह के अत्याचार करता है, जब तब उस पर आक्रमण की इच्छा करता है। एमेलिन की दुर्दशा देख कर कासी के हृदय की भस्माच्छादित अग्नि की भाँति—वह स्त्री-जाति-सुलभ सहानुभूति जाग उठी है। इससे वह एमेलिन का पक्ष लेकर तरह तरह की चतुराइयों से उसे लेग्री के आक्रमण से

बचाती है । इसीलिये कासी और लेग्री का विवाद चलने लगा। लेग्री ने कासी को तङ्ग करने के लिए अन्य कुलियों के साथ खेत पर भेज दिया। उसने सोचा इससे कासी की अक़्ल ठिकाने आ जायगी। पर कासी इससे भी उसके वश में न हुई और उसकी उपेक्षा करके खेत का काम करने को सम्मत हो गई। यही कारण था कि इसके पहले दिन कासी कुलियों के साथ खेत में काम पर गई थी। कासी का यह आचरण देख कर लेग्री के मन में बड़ी बेचैनी पैदा हो गई। पहले दिन खेत में किये हुए काम की जांच के समय लेग्री ने उसके साथ मेल करने की इच्छा से कुछ सान्त्वना और कुछ घृणा के भाव से उससे बातें की थीं। पर कासी उससे मुँह फेर कर चली गई। आज फिर लेग्री कासी को कहने लगा, "कासी, तुम सीधी सादी होकर रहो, उत्पात मत जोतो।"

कासी—मुझी को कहते हो पर तुम स्वयं क्या कर रहे हो ? दूसरों ही को कहना जानते हो, तुम्हें ख़ुद तो ज़रासी भी अक़्ल है ही नहीं, यह काम के दिन, और इस समय एक परिश्रमी और कामकाजी आदमी को पीट पाट कर निकम्मा बना कर डाल दिया ? इसमें तुमने कौनसी अक़्लमन्दी की ?

लेग्री—सच मुच मैंने बड़ी बेवकूफ़ी की, लेकिन यह तो सोचो कोई आदमी ज़िद पकड़ ले तो उसे दुरुस्त भी तो करना चाहिए।

कासी—मैं कहती हूँ इस विषय में वह तुम्हारे किये कभी दुरुस्त नहीं होने का।

लेग्री ने क्रोध से उठते हुए कहा, "मुझसे दुरुस्त नहीं होने का ? मैं करके देखूँगा कि होता है या नहीं। ऐसा तो आज तक कोई ग़ुलाम ही न मिला जो मेरे हाथ से दुरुस्त न हुआ हो ! मैं उसकी हड्डी हड्डी चूर कर दूँगा।"

उसी समय द्वार खुला और साम्बो अन्दर आया । वह हाथ में एक काली सी पोटली लटकाये हुए था ।

लेग्री—क्यों बे सूअर, तेरे हाथ में क्या है ?

साम्बो—सरकार जादू की पुड़िया ।

लेग्री—यह क्या होता है ?

साम्बो—हब्शी लोग जादू की पुड़िया पास रखते हैं । इसके पास रहने से कोड़ों की मार असर नहीं करती । टाम ने काले डोरे से इसे गले में बांध रक्खा था ।

ईश्वर शून्यहृदय ही कायरता और कुसंस्कारों का आधार होता है । लेग्री को ईश्वर पर ज़रा भी विश्वास न था ! इसी से उसका मन नाना प्रकार के कुसंस्कारों का घर बना हुआ था ।

ज्योंही उसने पोटली हाथ में ले कर खोली उसमें से एक चांदी का सिक्का और एक लम्बे घुँघुराले बालों का गुच्छा निकला । वह सुवर्ण की नाईं चमकता हुआ बालों का गुच्छा किसी जीवित पदार्थ की भाँति लेग्री की उँगलियों मे लिपट गया । वह भय से चिल्ला कर बोल उठा, "चूल्हे में जाय !" उसका तात्कालिक भाव देख कर मालूम हुआ मानों इन केशों के स्पर्श से उसका हाथ जल रहा है । वह ज़ोर से ज़मीन पर लात पटक कर बालों को उँगलियों से छुड़ा कर फेंकते हुए साम्बो से बोला, "तूने यह बाल कहाँ पाये ? ले, अभी तुरन्त लेजाकर जला डाल—जला डाल । " इतना कह कर सामने जलती हुई आग में बालों को फेंक दिया और साम्बो से बोला, "ख़बरदार, जो ऐसी चीज़ें फिर कभी मेरे पास लाया ।"

साम्बो आश्चर्य से देखता खड़ा रह गया । कासी भी यह सब देख कर विस्मय से लेग्री का मुँह ताकने लगी । लेग्री ने कुछ स्थिर होकर साम्बो को घूँसा दिखाते हुए कहा, "फिर कभी मेरे सामने यह जाल

जञ्जाल मत लाना । " साम्बो लेम्री का रुख देख कर वहाँ से नौ दो ग्यारह हुआ। साम्बो के चले जाने पर लेम्री यह सोच कर कि छिः छिः इतनी छोटी सी बात पर मुझे इतना क्रोध आगया, शर्मा सा गया और फिर गिलास में ब्रांडी ढाल ढाल कर पेट में उड़ेलने लगा । कासी धीरे धीरे बाहर हो कर चुपके से टाम को कुछ दवा-पानी देने चली गई ।

अच्छा, अब पाठकों को यहाँ इस बात के जानने की उत्कण्ठा हुई होगी कि इस बालों के गुच्छे को देख कर लेम्री की क्रोधाग्नि इतनी क्यों भभक उठी, वह क्यों इतना डरा ? इसका मूल कारण बतलाने के लिए लेम्री के पूर्व-जीवन की दो चार घटनाओं का उल्लेख करना पड़ता है ।

इस नराधम लेम्री की शिशु अवस्था सच्चरित्रा और स्नेहमयी जननी की गोद में कटी थी । कितनी बार उत्तम उत्तम भजन और ईश्वर का नाम इसके कानों में पड़ा है । पर इसका पिता बड़ा दुर्वृत्त था । लेम्री की उम्र बढ़ने के साथ साथ उसके स्वभाव पर उस दुरात्मा अँगरेज़ के वीर्य का असर होने लगा । कहा है "तुख़्म तासीर सोहबत असर जाती नहीं ।" लेम्री की जननी आयर्लैंड-निवासी किसी कृषक की कन्या थी। उस सहृदया रमणी का अकपट प्रेम और विशुद्ध प्रणय पशु-प्रकृति अनुपयुक्त पात्र में पड़ा था । युवावस्था के आरम्भ से ही लेम्री अपने माता के रोने झीखने की ओर कुछ भी ध्यान न देकर भाँति भाँति के नीच कर्मों में लग गया । धन कमा कर उसके द्वारा भोग-विलास करना ही उसके जीवन का एक मात्र लक्ष्य था । १७—१८ वर्ष की अवस्था में उसने घर छोड़ कर अपने को जहाज़ के काम में लगाया । इस समय भी वह जल-पथ-यात्री रमणियों पर समय समय पर घोर अत्याचार करता था । इसके बाद लेम्री केवल एक ही

वार अपने घर गया था। उस समय उसकी माता ने उसे घर ही रह कर भलेमानसों की तरह जीवन विताने को कहा। जननी के रोने से लेग्री का मन क्षण भर के लिए पसीजा। इसकी ज़िन्दगी भर में यही क्षण अपने सुधार के लिए अनुकूल था। यदि इस क्षण को यह हाथ से न जाने देता, तो शायद सुधर जाता। पर उसके हृदय पर पापही की विजय रही। उसने माता के वचनों को न माना। वह स्नेहमयी जननी उसके गले से लिपटकर रोने लगी। पर वह लात से उसे ढकेल कर घर से चला आया। उसकी माता वेहोश होकर ज़मीन पर पड़ी रही। विदेश जाकर वह कभी अपनी माता की खोज ख़बर न लेता था। एक दिन की वात है कि वह कुछ अपने ही सरीखे दुराचारी युवकों को साथ लिये शराव पी रहा था, दो तीन अनाथा कुली रमणियों को वलपूर्वक पकड़ लेजाकर उनका धर्म नष्ट करने की तैयारी कर रहा था कि इसी वींच में उसके नौकर ने जाकर उसके हाथ में एक पत्र दिया। पत्र खोलते ही उसमें से एक वालों का गुच्छा निकला। वह वालों का गुच्छा उसकी अँगुलियों से लिपट गया। इस पत्र में उसकी जननी का मृत्यु संवाद था और लिखा था कि मृत्यु के समय उसने उसके सारे अपराधों को क्षमा करके ईश्वर से उसके कल्याण की प्रार्थना की थी। पत्र पढ़ कर लेग्री के मन में भय का सञ्चार हुआ। अपनी माता के वह सजल नेत्र, माता की वह मृत्यु के समय की प्रार्थना का स्मरण आते ही उसका हृदय काँप उठा; पर ब्रांडी की वोतल और कुली रमणियाँ सामने हैं, यदि झटपट जननी-सम्वन्धी सारी स्मृति को हृदय से दूर न कर दिया जाय तो सारा मज़ा ही किरकिरा हुआ जाता है! लेग्री ने अपनी जननी के वालों का गुच्छा और वह चिट्ठी आग में डालदी। पर केशों के गुच्छे के जलते ही उसे फिर उसी भयङ्कर नरक का स्मरण हुआ,

उसका हृदय काँप उठा। पर वह फिर सामने रक्खी हुई बोतल से बार बार ब्रांडी ढालकर पीने और इस भयानक चिन्ता को दूर करने की फ़िक्र करनेलगा। कुछ देर के लिए ब्रांडी ने वह स्मृति उसके हृदय से दूर कर दी। पर तब से प्रायः रात्रि के समय वह अपनी जननी को उदासीन-मुख और अश्रु-पूर्ण नेत्र अपनी चारपाई के पास खड़ी हुई देखता था। वह मातृ-केश आकर उसकी अँगुलियों में लिपट जाते थे और वह भय और त्रास से कांप उठता था। केश जलाने के सम्बन्ध में लेग्री के जीवन में एक ऐसी ही घटना हो चुकी है, इसी से आज फिर केश जलाने के समय उसे बड़ा डर लगा। इसी कारण वह साम्बो पर इतना विगड़ा था पर साम्बो और कासी के चले जाने पर भी वह अपने मन को स्थिर न कर सका। कुछ ही पलों के बाद वह बोला, "भाड़ में गईं यह सब बातें, इनको सोच कर क्या होगा?" फिर ब्रांडी पर ब्रांडी ढाल कर मन ही मन सोचने लगा, "क्या बात है, ठीक वह बाल जैसे अँगुलियों में लिपट गये थे, वैसे ही यह बाल भी क्यों लिपट गये? क्या बालों में भी जान है? बाल क्या आग में जले नहीं?" फिर सोचने लगा, "मैं अब इन सब चिन्ताओं को मन में न आने दूँगा। चलता हूँ एमेलिन के पास, बँदरिया मुझ से घिन करती है, पर मैं उसे हत्थे पर लाऊँगा, आज मैं उसे किसी तरह नहीं छोड़ने का।"

इतना कहकर लेग्री ऊपर के कमरे में एमेलिन के पास जाने लगा। सीढ़ी पर पाँव धरते ही उसने गाने की धुन सुनी। गाना सुन कर वह ठिठक गया। केशों को जलाकर उसका मन अस्थिर होगया था, अब गाना सुनकर वह और भी घबड़ाया।

कोई अत्यन्त करुण स्वर से गा रहा है:—

"हाय! कब छूटेगा संसार

कब तक रोऊँगी अभाग्य पर पड़कर नरक मँझार,
शोक निशा ग्रसने वाली है, हैं यातना अपार।"

यह गाना सुनकर लेग्री का मन और भी उद्विग्न हो गया। वह मनहीं मन कहने लगा, "चूल्हे भाड़ में जाय यह अभागी। मैं इसका गला घोंट कर मार डालूँगा।" इसके बाद जल्दी जल्दी पुकारने लगा,—"एम! एम!"—कहीं से कुछ उत्तर न आया, केवल "माँ! माँ!" की प्रतिध्वनि उसे सुनाई देने लगी। गाना अभी चल ही रहा था:—

"महा भयङ्कर वह दिन होगा हा! विधि. हा! कर्त्तार,
अब पापानल में जल भुन कर होऊँगी मैं छार।"

लेग्री फिर ठहरा—उसके सिर से पसीना निकलने लगा, उसका हृदय काँपने लगा, उसे मालूम होने लगा, मानों उसकी माता उदासीन-मुख और सजल नेत्रों से खड़ी हुई है। तब वह मन में सोचने लगा, "यह क्या हुआ? सचमुच ही यह साला जादू करना जानता है क्या? अस्तु। अब उसे नहीं मारूँगा। लेकिन यह बालों का गुच्छा उसने कहाँ से पाया? क्या वह मेरी माँ वाले बाल थे? वह कैसे होंगे? उन्हें तो जलाये ही कई वर्ष हो गये। यह बालों का गुच्छा ठीक वैसा ही क्यों जान पड़ता था? अगर उन जले भुने बालों में फिर जान आ गई तो यह बड़ी दिल्लगी होगी!"

अरे नराधम लेग्री! तू इन केशों की महिमा क्या जाने! तेरे ऐसा पापी इसे नहीं समझ सकता। इन केशों ने ही आज तेरे हाथ-पैरों में बन्धन डाल दिये। यदि ऐसा न होता तो इसी घड़ी तू निर्दोष, निर्मल-चरित्र एमेलिन का जीवन-सर्वस्व हर कर उसके चिर-पवित्र शरीर को अपवित्र कर देता, उसके निर्मल जीवन में कलङ्क की कालिमा लगा देता।

आज लेम्री के मन में भभकी हुई यन्त्रणा की ज्वाला किसी उपाय से शान्त नहीं हो रही है। अतएव उसने मनही मन निश्चय किया कि आज अकेला नहीं रहूँगा। साम्बो और कुइम्बो को बुलाकर सारी रात उनके साथ शराव कवाव उड़ाता और हल्ला मचाता रहा। इनके शोर ग़ुल के मारे दूसरे लोगों की नींद भी हराम हो रही थी। कासी टाम को पथ्य पानी देकर रात के एक वजे के वाद लौट रही थी। घर में घुसते ही उसे इनका शोर ग़ुल सुनाई दिया। उसने देखा कि शराव के नशे में चूर होकर लेम्री, साम्बो और कुइम्बो, तीनों हाथापाई कर रहे हैं। कासी ने वराम्दे में आकर ज़रा पर्दा उठाकर इन लोगों की ओर देखा। उसकी आँखों में उस समय घोर विद्वेष और घृणा का भाव दिखाई देने लगा। वह मनही मन सोचने लगी कि क्या इस नर पिशाच के स्पर्श से मानव-समाज को मुक्त करने की कोई सूरत निकलेगी। यह सोचते सोचते वह सीढ़ी चढ़ कर दुमंज़िले पर पहुँची और धीरे धीरे एमेलिन का दरवाज़ा खटखटाने लगी।

उनतालीसवाँ परिच्छेद।

एमेलिन और कासी

कासी ने कमरे के अन्दर पहुँच कर देखा कि एमेलिन एक कोने में दबकी हुई बैठी है, भय से उसका चेहरा पीला पड़ रहा है। कासी के आने की आहट सुन कर वह चौंक उठी; पर जब उसने कासी को देखा तो दौड़ कर उसकी भुजायें पकड़ लीं और बोली, "कासी, तुम हो? मैंने सोचा था कोई और आ रहा है। बड़ा अच्छा हुआ जो तुम आईं। मुझे भय बहुत सता रहा था। तुम नहीं जानती हो कि नीचे के कमरे में कितना भयङ्कर शोर हो रहा है।

कासी—मैं सब जानती हूँ, बहुत दिनों से सुनती आती हूँ।

एमेलिन—कासी! बोलो, क्या यहाँ से हम लोगों के निकल चलने का कोई उपाय नहीं है? इस जङ्गल में सांप और शेरों में रहना अच्छा है—पर यहाँ नहीं—और कहीं भी हो। क्या हम लोगों के यहाँ से निकल चलने की कोई सूरत नहीं है?

कासी—क़ब्र के सिवा और कोई जगह नहीं है।

एमेलिन—तुमने कभी चेष्टा की है?

कासी—मैंने ख़ूब चेष्टा कर देखी है, पर नतीजा क्या?

एमेलिन—मुझे वन में, दलदल में पेड़ों के पत्ते खाकर रहना मन्ज़ूर है, मैं भयङ्कर सर्पों से उतना नहीं डरती जितना इस नराधम के निकट रहने से डरती हूँ।

काली—बहुतों ने तुम्हारी ही भाँति यहाँ से भाग निकलने की इच्छा की। पर भागने से क्या निस्तार है? दलदल में तुम्हें टिकने नहीं देगा, शिकारी कुत्तों से पता लगवा लेगा, और पकड़वा मँगावेगा, और तब—तब—"

एमेलिन—और तब क्या करेगा?

कासी—इसके बदले यह पूछो कि क्या नहीं करेगा? जल-दस्युओं में रह कर यह अपने पेशे में बड़ा पक्का हो गया है। यदि मैं उसकी मज़ाक में कभी कभी कही हुई बातें तुम्हें सुनाऊँ और अपना यहाँ का आँखों देखा विवरण बतलाऊँ तो तुम्हें नींद आनी मुश्किल हो जायगी। इस घर के पिछवाड़े एक अधजला पेड़ है, पेड़ के नीचे की ज़मीन काली राख से ढकी पड़ी है। यहाँ के किसी आदमी से पूछो कि यहाँ क्या क्या हुआ है? देखो वह कहने की हिम्मत करता है या नहीं!

एमेलिन—तुम्हारे कथन का तात्पर्य मेरी समझ में न आया।

कासी—मैं तुमसे नहीं कहूँगी। मैं उन बातों का मन में लाना भी घृणास्पद समझती हूँ। और मैं तुमसे कहती हूँ कि यदि कल भी टाम अपने हठ पर क़ायम रहा और उसकी बात न मानी तो परमात्मा ही जानता है कि हमें कल कैसा भयानक दृश्य देखना पड़ेगा।

एमेलिन—(भय से काँपते हुए) ओफ! कितना भयङ्कर है! अरी कासी, मुझे रास्ता बता, मैं क्या करूँ?

कासी—जो मैंने किया है और अन्त में जो झख मार कर तुम्हें भी करना पड़ेगा, वही करो।

एमेलिन—वह मुझे अपनी घिनौनी ब्रांडी पिलाना चाहता है, और मैं इससे हद से ज्यादा नफ़रत करती हूँ।

कासी—इसका पीना अच्छा होगा। पहले मैं भी ब्रान्डी से घृणा करती थी; और अब तो मैं उसके बिना जी नहीं सकती। यह सब कुछ खाये पीये बिना काम नहीं चलता, जब तुम पीने लगोगी तो इतनी बुरी भी नहीं लगेगी।

एमेलिन—माता मुझे बरावर कहा करती थीं कि ऐसी चीज़ों का स्पर्श तक न करना चाहिए।

कासी—माता!—माता तुमसे कहा करती थीं! माता की इन बातों में कुछ कहने सुनने का क्या फल होना है? जिसने हमें मोल लिया है वह हमारे शरीर और आत्मा का मालिक है। उसी की कही बात माननी होगी। मैं कहती हूँ, तुम ब्रान्डी पीओ, जितनी पी सको उतनी पीओ। इससे तुम्हारी मानसिक पीड़ा बहुत कुछ दूर हो जायगी।

एमेलिन—कासी! कासी! मुझ पर दया करो!

कासी—तुम पर दया!—क्या मैं नहीं करती हूँ? तुम्हारी ही सी मेरे एक कन्या थी। ईश्वर जाने वह अब कहाँ है, किसकी है। सम्भव है जिस मार्ग का उसकी माता ने अवलम्बन किया हो, वह भी उसी पर चली हो और उसकी सन्तानें भी उसी पर जायँगी। हाय इस बद-क़िस्मती का क्या ठिकाना है!

एमेलिन ने अपने हाथों को ऐंठते हुए कहा, "मेरा जन्म ही न होता तो अच्छा था!"

कासी—मेरे लिए तो यह पुरानी इच्छा है, बहुत बार मैंने ऐसी इच्छा की। इच्छा होती है कि जान देदूँ, पर साहस नहीं होता।

एमेलिन—आत्महत्या करना पाप है।

कासी—मैं नहीं जानती कि आत्महत्या को क्यों पाप बतलाया

जाता है ? क्या नित्य हम जिन पापों में लिप्त रहते हैं उनसे भी बड़ा कोई पाप है ? पर जब मैं शिक्षाश्रम में थी तो वहाँ की भगिनियों से मैंने इस विषय में जो बातें सुनी थीं, उन्हें याद करके आत्महत्या करने में डर लगता है । यदि आत्महत्या के साथ साथ आत्मा के अस्तित्व का लोप हो जाता तो फिर—

एमेलिन ने पीछे हट कर दोनों हाथों से मुँह ढाँक लिया ।

यहाँ जब ये बातें हो रही थीं; उस समय लेग्री गहरी शराब के नशे में मस्त होकर नीचे के कमरे में पड़ा नींद के खुर्राटे भर रहा था ।

नींद की दशा में वह स्वप्न देख रहा था कि किसी मनुष्य की सूरत सफेद कपड़े पहने हुए उसके पास खड़ी है और बरफ सरीखे ठण्डे हाथों से उसके शरीर को स्पर्श कर रही है । यह सूरत उसे परिचित सी जान पड़ी । भय से उसका सारा शरीर जड़ हो गया ! फिर उसे मालूम हुआ जैसे वह बालों की लट आकर उसकी अँगुलियों के चारों ओर लिपट गई । देखते देखते वह लट गले तक जा पहुँची, और गले में बाँध लिया । उसका साँस रुक गया । तब वह श्वेतवस्त्रधारी मूर्त्ति उसके कानों में कुछ कहने लगी । सुनकर उसका हृदय सूख गया । फिर उसने देखा जैसे मानों वह किसी कूयें के किनारे खड़ा हुआ है, कासी वहाँ हँसती हुई आई और उसे कूयें में ढकेल दिया । फिर उसने उसी सफेद श्वेतवस्त्रधारी मूर्त्ति को अपने सामने देखा, उस मूर्त्ति के मुँह का पर्दा हट गया । अरे यह तो उसकी माता है ! माता उसे देख कर वापस चली गई और वह एक बड़े गहरे खड्ड में जा गिरा, वहाँ चारों ओर शोर गुल, चिल्लाहट, आर्त्तनाद और प्रेत पिशाचों की विकट हास्य-ध्वनि सुनकर लेग्री की नींद खुल गई ।

इधर सवेरा हो गया था।

प्रति दिन नवोदित सूर्य मानव हृदय में नव नव भावों का सञ्चार करता है। प्रभात-समीरण मधुर स्वर से कहता है, "अरे मनुष्यों! अपने पापासक्त मन को सुमार्ग पर लाने के लिए, अपने हृदय का मैल धो डालने के लिए ईश्वर ने तुम्हें फिर यह एक नवीन अवसर दिया है,—लेकिन आरम्भिक प्रभात-किरणों, प्रभात-गगनस्थित शुक्र की शान्त दृष्टि, हृदय-प्रफुल्लकारी सजीवता, किसी के किये लेग्री मरीखे संसारासक्त पापी के मन में परिवर्त्तन न हो सका। लेग्री के हृदय में प्रभात का उपदेश कभी न बैठता था। बिछौनों से उठा नहीं कि ब्रांडी की बोतल हाथ में।

कासी को जो उस समय तुरन्त ही दूसरे दरवाज़े से आई थी, देख कर लेग्री बोला, "कासी, रात मुझे बड़ा कष्ट हुआ।"

कासी ने शुष्कता से कहा, "आज ही क्या, अभी आगे आगे बहुत भोगना पड़ेगा।

लेग्री—तुम्हारे कहने का मतलब?

कासी—अभी नहीं, बाद को समझोगे। लेग्री! मैं तुम्हारे भले की एक सलाह देती हूँ।

लेग्री—क्या सलाह है?

कासी—वह सलाह यह है कि तुम टाम को अब मत सताओ।

लेग्री—तुम से इस बात से क्या मतलब?

कासी—मुझसे कोई मतलब नहीं। लेकिन यह काम के दिन हैं, इस वक़्त मारने से तुम्हारा ही नुक़सान है, इसीसे कहती हूँ। बारह सौ नक़द गिन कर एक आदमी लाओ और उसे यों हक नाहक में मार डालो तो सोचो कितना नुक़सान होगा। मैं बल्कि तुम्हारी हानि के खयाल से उसे शीघ्र आराम करने की चेष्टा करती हूँ।

लेग्री—तू क्यों उसे आरोग्य करने गई ? मेरे मामले में तेरे पड़ने की क्या दर्कार है ?

कासी—वास्तव में कुछ नहीं। पर मैंने इसी तरह कई बार तुम्हारा बहुत रुपया बचा दिया। यदि फ़सल अच्छी न हुई तो तुम्हारी आँखें चार हो जायँगी।

लेग्री रुई की फ़सल के लिए जी-जान से यत्न करता था। इसीसे कासी ने टाम की मार रोकने के मतलब से बड़ी चतुराई से इस विषय का उल्लेख किया।

लेग्री बोला, "ख़ैर मैं इस बार उसे छोड़ दूँगा, लेकिन शर्त यह है कि वह मुझसे क्षमा माँगे और भविष्य में मेरी बात पर चलने का वादा करे।"

कासी—यह वह नहीं करेगा।

लेग्री—नहीं करेगा ?—क्यों ?

कासी—न, कभी नहीं करेगा।

लेग्री—सुनूँ तो, क्यों नहीं करेगा ?

कासी—क्योंकि, उसने उचित किया है, और उसका यह विश्वास है। वह कभी न ीं कहेगा कि उसने अनुचित किया है।

लेग्री—हब्शी गुलामों का भला न्याय और अन्याय रहा। मैं जो कहूँगा सो ही उसे करना पड़ेगा।

कासी—तब वह इस काम के समय खाट ही पर रहेगा और इस साल तुम्हारी फ़सल ख़राब होगी।

लेग्री—पर आज वह ज़रूर क्षमा माँगेगा—ज़रूर माँगेगा। मैं क्या इन हब्शियों का स्वभाव जानता नहीं हूँ ?

कासी—साइमन, मेरी इस बात को पक्की मानो, वह कभी नहीं माँगेगा। तुम उसे ऐसा वैसा मत समझो। तुम उसकी [illegible] काट डालो फिर भी वह अपनी बात से नहीं टलेगा है। और आगे भी

लेग्री—मैं देखूँगा। वह इस समय कहाँ है?

कासी—जिस कोठरी में सड़ी रुई और पुराना असबाव पत्र पड़ा है।

लेग्री ने कासी के सामने इस तरह की शेखी हाँकी, पर उसके मन में शङ्का होने लगी कि जान पड़ता है टाम क्षमा नहीं माँगेगा। इससे वह यह सोच कर कि और किसी के साथ रहने पर यदि वह टाम से क्षमा न मँगवा सका तो उसकी हेठी होगी, रोब में फ़र्क आवेगा, वह अकेला ही उधर गया। मन ही मन सोचा कि टाम चाहे क्षमा न माँगे. तो भी अब उसे वह मारेगा नहीं, फ़सल चली जाने पर उसे दुरुस्त करेगा।

हम पहले ही कह आये हैं कि प्रातः-समीर और प्रभात सौन्दर्य लोगों की प्रकृति की भिन्नता के अनुसार भिन्न भिन्न प्रकार के भाव उत्पन्न करता है। किन्तु लेग्री सरीखे भावहीन, चिन्ताशून्य, अर्थ-लोलुप और इन्द्रियासक्त पिशाच के हृदय में किसी प्रकार का भाव नहीं प्रवेश कर सकता। उसका ध्यान केवल कपास के खेत, धन-सञ्चय, ब्रांडी और कुली रमणियों से लगा है। अपढ़ होने पर भी टाम का मन भाव और चिन्ताओं से शून्य नहीं है। प्रभात-कालिक सजीवता ने उसके हृदय में नवीन बल ला दिया। उसे मालूम होने लगा, मानों शुक्र तारा उसे आकाश से उतर कर कह रहा है, "टाम, डरना नहीं। ईश्वर तुम्हारे साथ है।" टाम को मनही मन बड़ी प्रसन्नता होने लगी। विशेषकर इस बात से कि लेग्री उसे जान से मार डालेगा। पहले उसने इस बात को नहीं सोचा था। पर कासी की पहले दिन की बात-चीत के ढङ्ग से वह समझ गया था कि अब उसकी मृत्यु बहुत निकट है। अतएव इस मृत्यु-संवाद को पाकर उसकी आत्मा विमलानन्द से के खयाल से उसे शोचने लगा कि मृत्यु के उपरान्त ईश्वर के प्रेम-राज्य में

जाकर विश्राम लेगा, जहां द्वेष, हिंसा और अत्याचार की गन्ध भी नहीं है; प्राणों से प्यारी इवाञ्जेलिन का मुख-कमल देखेगा; और देखेगा कि परम दयालु मालिक सेन्टक्लेयर की नास्तिकता परलोक में जा कर दूर हो गई है। अहा! टाम के लिए इससे बढ़ कर सुख और आनन्द की बात और क्या हो सकती है? वह अपने शारीरिक कष्टों को भूलकर आनन्द से विह्वल हो गया है, उसके मुख-मण्डल पर प्रीति एवं ईषत् हास्य का आभास दिखाई दे रहा है। इसी समय नरपिशाच लेग्री ने वहां पहुँच कर उसे पुकारा। और पैरों से ठुकरा कर बोला, कहो बच्चू, कैसे हो? मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं तुझे सिखा दूँगा? बोल, यह शिक्षा कैसी लगती है? अभी कुछ ज़िद बाकी है कि निकल गया? आज इस पापी को कुछ धर्म नहीं सिखलावेगा।" टाम ने कुछ उत्तर न दिया।

इस पर लेग्री ने फिर उसे ठोकर मारते हुए कहा, "उठ सूअर!"

पिछले दिन की मार से टाम बहुत शक्तिहीन हो गया था, इससे बड़े कष्ट से उठने की चेष्टा करने लगा। लेग्री यह देख कर हँसते हुए बोला, "क्यों तुझे क्या हो गया? मालूम होता है रात की ठण्ढी हवा से सर्दी खा कर अकड़ गया है।"

टाम बड़े कष्ट से अपने उत्पीड़क के सम्मुख निडर हो कर खड़ा हुआ।

लेग्री कहने लगा, "अरे शैतान! मैं समझता हूँ अभी तेरी काफ़ी सज़ा नहीं हुई है। मेरे सामने घुटने टेक कर माफ़ी माँग, नहीं तो और पीटता हूँ। जल्दी कर। उठता नहीं है।" इतना कह कर हाथ में लिए हुए कोड़े से उसे सड़ा सड़ पीटने लगा।

टाम ने कहा, "सरकार लेग्री साहब, मुझसे यह नहीं होगा। मैंने केवल वही किया है जिसे मैंने उचित समझा है। और आगे भी

काम पड़ने पर ऐसा ही करूँगा। चाहे जो कुछ हो जाय मैं किसी को मारने पीटने का निठुर कार्य कभी नहीं करूँगा।"

लेग्री—हाँ, लेकिन हज़रत अभी आपको यह पता नहीं कि इसके बाद आपकी क्या गति होगी। तू समझता है कल जो कुछ हो गया, वह काफ़ी हो गया। पर मैं तुझसे कहता हूँ कि कल कुछ भी नहीं हुआ है, वह तो जलपान भर था। ज़रा उस मज़े का ख़याल करके देख जब तुझे एक पेड़ से बांध दिया जायगा और नीचे धीमी धीमी आँच जला कर तूँ भूना जायगा।

टाम—सरकार, मैं जानता हूँ कि आप भयङ्कर से भयङ्कर काम कर सकते हैं।

इतना कहते हुए उसकी आँखों में आँसू भर आये और वह ऊपर को हाथ उठा कर कहने लगा, "पर इस शरीर को नाश कर डालने के बाद आप और कुछ अधिक नहीं कर सकेंगे। उसके बाद मैं अनन्त में मिल जाऊँगा।"

अनन्त! यह कैसा चमत्कारी शब्द है! भय और आनन्द दोनों इसमें समाये हुए हैं। काले टाम के हृदय में इसने शान्ति और आनन्द का स्रोत बहा दिया। और यही शब्द लेग्री को भीतर ही भीतर बिच्छू के डंक सा लगा। इस पर वह दांत किचकिचाने लगा।

टाम फिर स्वाधीनता-पूर्वक कहने लगा, "लेग्री साहब, तुमने मुझे ख़रीदा है, इससे मैं तुम्हारा दास हूँ। अवश्य मैं जी जान से तुम्हारा काम करूँगा; मेरा शारीरिक बल, और समय सब तुम्हारे काम के लिए है। पर अपनी आत्मा को मैं कभी तुम्हारे हाथ में अर्पण न करूँगा। जान रहे या जाय, चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय, मैं ईश्वर का आदेश अवश्य पालन करूँगा, मेरी यह आत्मा उसी के चरणों में समर्पित है। मैं उसके आदेश को उल्लङ्घन करके

कभी निष्ठुर व्यवहार न करूँगा ! कभी नहीं ! तुम्हारा जी चाहे मुझे कोड़ों से मारो, लाठियों से मारो या आग में जलाकर साफ़ कर डालो, कुछ भी करो; पर मैं धर्म न छोड़ूँगा । कदापि नहीं—कदापि नहीं ।"

लेग्री—(क्रोध से) देखता जा, मैं तेरी सब बदमाशी निकाल दूंगा । जब तुझे ठिकाने की मार पड़ेगी तब मालूम होगा ।

टाम—मुझे सहायता मिलेगी ।

लेग्री—कौन साला तेरी मदद करेगा ।

टाम—सर्वशक्तिमान् ईश्वर मेरी सहायता करेंगे ।

लेग्री ने एक घूँसा लगाकर टाम को ज़मीन पर ढकेल दिया और बोला, "देखूँगा, तेरा ईश्वर कैसी मदद करता है ।"

इसी समय पीछे से एक ठण्ढा और कोमल हाथ लेग्री के शरीर पर लगा । उसने फिर कर देखा—कासी है । पर शीतल हस्त के स्पर्श से उसे गत रात्रि के स्वप्न का स्मरण हो आया और वह भयभीत हो गया ।

कासी ने फ्रेंच भाषा में कहा, "लेग्री ! तुम भी कैसे अहमक हो ? छोड़ो इसे । इस काम के वक्त नाहक का टंटा लेकर खड़े हो गये । तुम्हें तो एक बार समझा चुकी हूँ । मैं इसकी दवा-पानी करके देखती हूँ कि किसी तरह जल्दी अच्छा हो कर खेत के काम लायक़ हो जाय ।

नाक और गैंडे के चमड़े पर गोली असर नहीं करती लेकिन उनके शरीर में एक ऐसा स्थान होता है कि जहाँ गोली पार होकर उनका काम तमाम कर सकती है । उसी भाँति नीच, लम्पट, निर्दयी, अविश्वासियों और नास्तिकों को डराने का एक न एक मार्ग होता है । भ्रान्त संस्कारसम्भूत भय सदा ही उनके मन में घर किये

रहता है । गत रात्रि के स्वप्न में देखी हुई मातृ-दृष्टि का स्मरण आते ही लेग्री का हृदय काँप गया ।

लेग्री ने कासी से कहा, "अच्छा तुम्हीं सम्भालो ।"

फिर टाम से बोला, "इस वक़्त तो मैं तुझे छोड़ता हूँ, क्योंकि आज काल काम के दिन हैं । पर याद रखना इसके बाद मैं तुझे समझूँगा । तुझे सीधा नहीं किया तो मेरा नाम लेग्री नहीं ।"

इतना कह कर वह चला गया ।

कासी मन ही मन बोली, अब तो तुम यहाँ से सरको, फिर देखा जायगा । तुम्हारे भी तो दिन नज़दीक ही आ रहे हैं । फिर टाम से पूछा "कहो क्या हाल है ?"

टाम—इस समय ईश्वर ने अपना दूत भेज कर सिंह का मुँह बन्द कर दिया है ।

कासी— हाँ, इस समय तो निश्चय मुँह बन्द कर दिया । लेकिन अब वह तुमसे बुरी तरह खार खा गया है । धीरे धीरे तुम्हारा ख़ून चूस चूस कर तुम्हारी जान लेगा । मैं इस पाजी को ख़ूब जानती हूँ ।

—:o—

चालीसवाँ परिच्छेद ।

स्वतन्त्रता ।

अब हम थोड़ी देर के लिए टाम को लेग्री के हाथों में छोड़ कर इलाइज़ा और जार्ज की ओर झुकते हैं। टाम लोकर को हमने एक वृद्धा क्वेकर रमणी के घर शरीर की यन्त्रणा से कराहते, अपने साथी मार्क को तरह तरह की गालियां बकते और फिर कभी उसका साथ न करने के लिए सौ सौ क़समें खाते छोड़ा था।

वह दयालु वृद्धा लोकर के पास बैठी माता की नाईं उसकी टहल कर रही है। वृद्धा का नाम डार्कस है। पर सब लोग इसे डार्कस मौसी मौसी कहते हैं। क़द की यह ज़रा लम्बी है, इसके मुँह पर दया, ममता, स्नेह और धर्म के चिह्न लक्षित होते हैं। यह बड़े सादे और सफ़ेद कपड़े पहने हुए है। यह अपने हाथों से दिन रात लोकर का पथ्य-पानी करती है।

लोकर बिछौने की चादर को इधर उधर लपेट कर कह रहा है, "ओफ! कैसी गरमी है! यह सुसरी चादर खाये जाती है।"

डार्कस ने उसके बिछौने की चादर की शिकन वग़ैरह ठीक करते हुए कहा, "बाबा टामस, ऐसी भाषा का व्यवहार नहीं करना चाहिए।

लोकर—मेरा शरीर जल रहा है, मुझसे रहा नहीं जाता।

डार्कस—गाली बकना, सौगन्दें खाना, गन्दे शब्दों का व्यवहार करना भलेमानसों का काम नहीं है। इसे छोड़ने की चेष्टा करो।

लोकर—यह साला मार्क बड़ा शैतान का बच्चा है। पहले साला वकीली करता था इसीसे इतना लालची है। ऐसा ग़ुस्सा आता है कि साले को फांसी पर लटका दूँ।

इतना कह कर लोकर ने फिर सारे बिछौने सिकोड़-सिकाड़ कर उलट-पुलट कर डाले।

क्षण भर वीतने के बाद फिर कहने लगा, "वे भगोड़े दास-दासी यहीं हैं क्या?"

डार्कस—हाँ।

लोकर—उन्हें जल्दी झील किनारे जा कर जहाज़ पर चढ़ने को कह दो, जहाँ तक जल्दी चले जायँ अच्छा है।

डार्कस— सम्भवतः वे ऐसा ही करेंगे।

लोकर—उन्हें बड़ी ख़बरदारी से जाने को कहना। सैनडस्की के जहाज़ के आफ़िस में हमारे आदमी लगे हुए हैं. वे बड़ी जांच पूँछ करेंगे। मैं इस लिए सब बताये देता हूँ कि उस मार्क नामाकूल को कौड़ी हाथ न लगे।

डार्कस—फिर तुम गन्दे शब्द मुँह से निकालते हो।

लोकर—डार्कस मौसी, मुझे इतना कस के मत बाँधो छांदो, बहुत कसने से सब टूट जायगा। मैं धीरे धीरे सुधरूँगा। लेकिन उन भगोड़ों की बाबत कहता हूँ। उस स्त्री से कह देना कि वह मर्दाना वेष बना कर जहाज़ पर चढ़े। और बालक को बालिका के से वस्त्र पहना दें। उन लोगों की हुलिया सैनडस्की पहुँच चुकी है।

डार्कस—हम लोग सावधानी से काम लेंगे।

यहाँ अब हम टाम लोकर से छुट्टी लेंगे, उस के विषय में हमें इतना ही कहना है कि तीन सप्ताह वह वहाँ बीमार पड़ा रहा। फिर वहाँ से निरोग हो कर अपने घर चला गया। यहाँ से जाने के बाद

उसने गुलामों के पकड़ने का धन्धा एकदम तर्क कर दिया, और किसी अच्छे धन्धे में लग गया। तीन सप्ताह क्वेकर परिवार के सत्सङ्ग में रह जाने के कारण उसके स्वभाव में भी बड़ा परिवर्तन हो गया था। क्वेकर सम्प्रदाय वालों को वह बड़ी भक्ति और श्रद्धा की दृष्टि से देखता था। डार्कस पर तो वह अपनी माता से भी अधिक भक्ति करने लगा था।

लोकर के मुँह से यह ख़बर पा कर कि सैनडस्की में उनकी हुलिया पहुँच गई है और वहाँ खोज पूछ होगी उन्हों ने विशेष सावधानी से काम लेने का निश्चय किया। साथ जाने से पकड़े जाने का खटका देख कर जिम और उसकी माता दो दिन पहले चल दिये। उसके बाद जार्ज और इलाइज़ा अपने बालक सहित रात को सैन-डस्की पहुँचे।

रात का अब अन्त हो चला है, स्वतन्त्रता का सुख-सूर्य्य हृदया-काश में उदय होने ही को है। अहा! स्वतन्त्रता!—कैसा जादू भरा शब्द है! इसका उच्चारण करते ही हृदय आनन्द से नाच उठता है! देवि स्वतन्त्रते! तुम साथ रहो तो खप्पर में माँग कर खाना और वृक्षों के नीचे जीवन बिताना भी सुखकर है, पर तुम्हारे बिना राजभोग भी रुधिरपिण्डवत् है; तुम्हारे बिना संसार में कहीं भी सुख नहीं है। तुम्हें पाने के लिए अमरीका के अँगरेज़ों ने अपनी जान की बाज़ी रख दी, कितने ही वीरों की रण में आहुति देदी। सारा संसार तुम्हारे लिए लालायित है। पर जहाँ वीरता और एकता है वहीं तुम्हारा निवास होता है, भीरुता, कायरता, स्वार्थपरता तथा फूट के तो तुम पास नहीं फटकती हो, इनसे तुम्हें बड़ी नफ़रत है। इस संसार में निर्बल, भीरु और स्वार्थपरायण जातियाँ तुम्हारे मुख-दर्शन की आशा नहीं कर सकतीं। और ज़िस जाति से तुम दूर हो उसमें

जीवन कहाँ । संसार का कोई सुख उस जाति को सुखी नहीं कर सकता, उसके लिए संसार के सारे सामान दुखदायी हैं । पर देवि ! तुमसे नाता जोड़ते ही स्वार्थपरता का अन्धकार, और निर्बलता की मार, देखते देखते काफूर हो जाती है । सङ्कीर्ण मानव-मनों में सार्वभौमिक प्रेम-चन्द्र का उदय होता है ।

क्या संसार में कोई ऐसी वस्तु है, जिसे कोई जाति तो अति सुखद और प्रिय समझती हो पर कोई मनुष्य उसे वैसी न समझता हो ? स्वतन्त्रता जितनी किसी जाति को प्यारी हो सकती है, उतनी ही वह एक मनुष्य को भी प्रिय है । जातीय और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता में भेद ही क्या है ? अलग अलग व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के समूह को ही तो जातीय स्वतन्त्रता कहते हैं। फिर व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के विना जातीय स्वतन्त्रता कब सम्भव है । यह जो युवक जार्ज हेरिस, यहाँ मुँहं लटकाये चिन्तित-चित्त बैठा है, यह कैसी स्वतन्त्रता के लिए व्याकुल है ? यह व्यक्ति क्या अधिकार चाहता है ? केवल इतना ही अधिकार, कि यह अपनी स्त्री को अपनी समझ सके, दूसरे के अत्याचार से उसकी रक्षा कर सके—अपनी सन्तान को अपनी समझ कर सुशिक्षा दे सके, अपनी मेहनत की कौड़ी, अपनी मशक्कत की कमाई को अपने लिए ख़र्च कर सके और अपने धर्म-विश्वास के अनुसार काम कर सके, इससे अधिक वह और कुछ नहीं चाहता ।

स्वार्थी नरपिशाचो ! क्या तुम उसे इतना भी अधिकार न दोगे ? क्या विना इन अधिकारों के भी मनुष्य जीवित रह सकता है ? आज जार्ज मनुष्य के कुछ स्वभावसिद्ध अधिकारों को पाने के लिए तुम्हारे देश से भागने का उद्योग कर रहा है, अपनी स्त्री का मर्दाना भेष बना रहा है, उसके लम्बे लम्बे सुन्दर बाल छाँट रहा है ।

इलाइजा के बाल कट जाने के बाद, वह मुस्कुरा कर बोली,

"कहो जार्ज, क्या अब मैं एक सुन्दर युवा भी नहीं जान पड़ती ?"

जार्ज—तुम किसी भेप में हो, मुझे सदा ही सुन्दर जान पड़ती हो।

इलाइज़ा ने उसके हाथ पर अपना हाथ रखते हुए कहा, "जार्ज, तुम इतने उदास क्यों हो रहे हो ? अब तो कैनाडा यहाँ से केवल चौबीस ही घंटों की राह है। बस, केवल एक दिन तथा एक रात का सफ़र और है, और उसके बाद—अहा ! उसके बाद !"

जार्ज ने इलाइज़ा को अपनी ओर खींच कर कहा, "इलाइज़ा, मुझे बड़ा भय मालूम हो रहा है, कहीं इतनी दूर आये हुए पकड़े गये तो सारा किया कराया बरबाद हो जायगा—किनारे लग कर नाव डूब जायगी। ऐसी दशा होने पर मेरा जीवन कदापि न रहेगा।

इलाइज़ा—डरो मत। यदि उस दयामय को हम लोगों को पार न लगाना होता तो कदापि वह हमें इतनी दूर न लाता। जार्ज, मुझे मालूम होता है, वह हम लोगों के साथ है। फिर डर क्या है ?

जार्ज—इलाइज़ा, तुम देवी हो ! तुम ईश्वर का साथ रहना अनुभव करती हो। पर बोलो, क्या इन जन्म से सहते आये दुःखों का अन्त होगा ?—क्या हम स्वतन्त्र होंगे ?

इलाइज़ा—जार्ज, मुझे तो इसका निश्चय है। मुझे मालूम हो रहा है कि ईश्वर ही हम लोगों को स्वतन्त्र करने के लिए यहाँ से बाहर लिये जा रहा है।

जार्ज—ठीक है, मुझे भी तुम्हारी बात पर विश्वास होता है।

इसके बाद जार्ज ने इलाइज़ा को टोपी ओढ़ा कर कहा, "गाड़ी का समय तो हो चला। मुझे आश्चर्य्य होता है कि मिसेस् स्मिथ हेरी को ले कर अब तक क्यों नहीं आई।

इतने ही में दरवाज़ा खुला और एक अधेड़ अवस्था की भद्र महिला

बालक हेरी को बालिका के वेष में सजाये हुए साथ लेकर अन्दर आई।

इलाइजा ने उसे देखते ही कहा, "वाह! क्या ख़ूबसूरत लड़की बन गई है, देखो अब उसे हम लोग हैरिअट के नाम से बुलावेंगे; क्यों ठीक नाम होगा न?"

बालक माता को मर्दाने कपड़ों में, बाल कटे हुए देख कर हत-बुद्धि हो गया और बारम्बार ठण्ढी साँसें लेने लगा। इलाइजा ने उसकी ओर हाथ बढ़ा कर कहा, "क्यों हेरी, अपनी मा को पहचानता है?

बालक शर्मा कर उस अधेड़ स्त्री से चिपट गया।

जार्ज ने कहा, "इलाइजा, जब तुम जानती हो कि उसे तुमसे अलग रखने की व्यवस्था की गई है। तो अब इसे नाहक क्यों अपने पास बुलाने की कोशिश करती हो?"

इलाइजा—जानती हूँ। यह मेरी मूर्खता है। लेकिन इसे अलग रखने में जी नहीं मानता। ख़ैर, मेरा लबादा (ओवरकोट) कहाँ है?

इस के बाद इलाइजा जब मर्दाना लबादा, पहन कर तैयार हो गई, तब जार्ज ने मिसेस् स्मिथ से कहा, अब से हम लोग आप को बुआ कहेंगे। और लोगों पर यह प्रकट करना होगा कि हम लोग अपनी बुआ के साथ जा रहे हैं।

मिसेस् स्मिथ ने कहा, "मैंने सुना है कि जो लोग तुम्हें पकड़ने आये हैं, वे टिकट घर में बैठे बाट देख रहे हैं।"

जार्ज ने कहा—"वे लोग बैठे हैं! ख़ैर, चलो देखा जायगा, अगर हम लोगों की उनसे भेंट हो गई तो हम उन्हें बतला देंगे।"

इसके बाद ये लोग एक किराये की गाड़ी पर सवार हो कर चले। जिस आदमी ने इन्हें अपने यहाँ शरण दी थी वह गाड़ी तक

इनके साथ आया और चलते समय इन के उद्धार के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने लगा।

इन लोगों का छद्म-भेष ऐसा बन गया था कि कोई इन्हें न पहचान सकता था—असल में यह टाम लोकर के साथ भलाई करने का नतीजा था। कभी कभी भलाई का फल हाथों हाथ भलाई मिलता है। यदि इन्हों ने वैर चुकाने की नीयत से लोकर को जङ्गल ही में रहने दिया होता, उसे डार्कस के घर न उठा लाये होते तो आज यह अपने साधारण भेष में आ कर यहाँ ज़रूर पकड़ जाते। टाम लोकर के साथ इन्होंने जो भलाई की उसका इन्हें बहुत अच्छा फल मिला।

मिसेस् स्मिथ कैनाडा-निवासिनी एक प्रतिष्ठित महिला है। वह कैनाडा लौट रही थी। इनकी दुर्दशा देख कर उसे दया आ गई और उसने इनकी सहायता करने की ठान ली। दो दिन पहले ही से हेरी उसके ज़िम्मे लगा दिया गया था। इन दो दिनों में तरह तरह के मेवा-मिठाई खिलौने वग़ैरह दे कर हेरी को उसने ऐसा हिला लिया था कि वह उसका सङ्ग ही न छोड़ना चाहता था।

इनकी गाड़ी जहाज़ के घाट किनारे जा लगी। जार्ज उतर कर टिकट लेने गया तो उसने दो आदमियों को अपने सम्बन्ध में परस्पर बातें करते सुना। उन में एक दूसरे से कह रहा था, "भाई, मैंने एक एक कर के सब मुसाफ़िरों को देख लिया, तुम्हारे भगोड़े इनमें नहीं हैं। फिर जार्ज ने देखा कि इन में एक मार्क है और एक जहाज़ का क्लर्क।

मार्क बोला, "उस स्त्री को तो तुम मुश्किल से पहचान सकते हो कि वह दासी है, क्योंकि वह बिल्कुल अँगरेज़ों की सी गोरी है। पुरुष भी वैसा ही है, पर उसके एक हाथ पर जलने का दाग़ है।

जार्ज उस समय हाथ बढ़ा कर टिकट ले रहा था, उसका हाथ

काँप उठा, पर वह सँभल कर धीरे धीरे वहाँ से टहल गया और वहाँ जा पहुँचा जहाँ इलाइजा और मिसेस् स्मिथ बैठी हुई थीं।

मिसेस् स्मिथ हेरी को साथ ले कर स्त्रियों के कमरे में चली गई।

जब जहाज़ ने चलने की सीटी दी और घण्टा बजा तो जार्ज के हृदय में आन्द की लहरें उठने लगीं। और मार्क ठण्ढी साँसें लेता हुआ जहाज़ से उतर कर किनारे आया। वह मन ही मन निराश हो कर कहने लगा कि वकालत के धन्धे में आमदनी की सूरत न देख कर प्रकारान्तर से उसी देश-प्रचलित क़ानून की रक्षा के लिए यह नया धन्धा पकड़ा, पर इस में भी कुछ होता जाता नहीं दिखाई देता। यही सोचते सोचते मार्क खिन्न मन से अपने देश को लौट गया।

दूसरे दिन जहाज़ ने अमहर्स्ट वर्ग में जा कर लङ्गर डाला, यह कैनाडा में एक छोटा क़स्बा है। जार्ज इलाइजा इत्यादि सब आ कर किनारे उतरे। स्वाधीन भूमि में पैर रखते ही आनन्द से उनका हृदय भर गया। आज उन्हें दासत्व से मुक्ति मिली, आज जार्ज को स्त्री पुत्र को अपने कहने का मानवी स्वत्व प्राप्त हुआ। स्वामी और स्त्री दोनों परस्पर गले से लिपट गये। दोनों के नेत्रों से आनन्दाश्रु बहने लगे; और घुटने टेक कर उन्होंने ईश्वर की प्रार्थना में यह भजन गाया।

विपति सागर में तुम्हीं जहाज़।
कौन बचावे दीन हीन को तुम बिन हे महाराज।
निपट निराशा अन्धकार था मम हित महा कुसाज।
उदय हुआ सुख-भानु पूर्व में तव करुणा से आज।
जैसे तुम्हें पुकारा दुख में वैसे पा सुखसाज।
ध्यान तुम्हारा ही धरते हैं गाते सुयश दराज।

इसके बाद इस मण्डली को मिसेस् स्मिथ नगर वासी एक सज्जन पादरी साहब के यहाँ ले गई। यह पादरी अपने

वर ऐसे ही निराश्रित और भागे हुए दास-दासियों को शरण दिया करता था ।

जार्ज और इलाइज़ा के आज के आनन्द का वारापार नहीं है । भला भाषा द्वारा इनके इस स्वतन्त्रता के आनन्द का वर्णन कैसे हो सकता है । आज रात भर उन्हें नींद न आई । सारी रात आनन्द की उमङ्गों में बीत गई । इस आनन्द में इन लोगों ने एक बार भी यह सोचने तक का कष्ट न उठाया कि यहाँ करना क्या होगा, कैसे ज़िन्दगी कटेगी । न इनके घर-द्वार है, न कोई साज-सरंजाम । कल तक के खाने लिए इनके पास ठिकाना नहीं है । फिर भी यह स्वतन्त्रता-प्राप्ति के आनन्द में ऐसे फूले हुए हैं कि उन्हें और किसी बात का ग़म ही नहीं है । और वास्तव में पूछिए तो, मनुष्य-जीवन में स्वतन्त्रता की अपेक्षा और अमूल्य वस्तु है ही क्या, जिसकी मनुष्य परवाह करे ? ऐसे अनमोल रत्न से जो लोग प्रभुत्व अथवा धन के लोभ से किसी व्यक्ति अथवा जाति-विशेष को वञ्चित करते हैं, किसी जाति की स्वतन्त्रता पर कुठार चलाते हैं, उन्हें अवश्य ईश्वर का कोपभाजन बनना पड़ेगा, उसके सामने जवाब-देह होना पड़ेगा । पीढ़ी दर पीढ़ी उन्हें इन अत्याचारों का फल चखना पड़ेगा ।

—:०:—

इकतालीसवाँ परिच्छेद ।

जयोल्लास ।

क्या सभी दशाओं में मृत्यु कष्टकर जान पड़ती है? बहुत से लोग तो इस दुःख और यन्त्रणा-पूर्ण संसार में ऐसे होते हैं कि जो ख़ुशी से मरना चाहते हैं। वह मृत्यु को भयानक नहीं समझते। कितने ही ऐसे धर्मवीर हुए हैं कि जिन्होंने निर्भीक होकर मृत्यु से भेंट की। सत्य और धर्म के लिए, संसार से अन्याय को दूर करने के लिए कितने धर्म और कर्मवीर प्रसन्नता से मृत्यु की वेदी पर चढ़ गये। क्या इन्हें उस समय मृत्यु कष्टकर जान पड़ी थी? कदापि नहीं। जब मनुष्य सत्य विश्वास से उत्तेजित हो जाता है, हृदय के उमड़े हुए धर्म-वेग और प्रेमानुराग के कारण वह अपने आप को भूल जाता है, उस समय वह वाह्यज्ञान से सर्वथा रहित हो जाता है। किसी प्रकार का शारीरिक कष्ट उसकी अन्तरात्मा को स्पर्श नहीं कर सकता।

पर जिन्हें नित्य मार का कष्ट सहन करना पड़ता है, जिन्हें अत्याचारी लोग बूँद बूँद रक्त चूस कर मारते हैं, कठोर आचरण सहते सहते जिनके हृदय की दया, ममता एवं अन्य सब प्रकार के सद्भावों का शनैः शनैः नाश हो रहा है, उन्हें भी क्या मृत्यु कष्टकर नहीं है? इससे अधिक कष्टकर मृत्यु संसार में और भी हो सकती है?

जब नर-पिशाच लेग्री टाम को पीटता था, और उसे मार डालने

की धमकी देता था, उस समय टाम मन ही मन सोचता था कि अब उसके संसार छोड़ने का समय आ गया है, अब शीघ्रही मृत्यु आ कर उसके सारे दुःख-दर्दों को दूर किये देती है; अतएव उसके भयभीत होने का कोई कारण नहीं है। सत्य विश्वास से उत्तेजित हो कर धर्म-वीरों की भाँति बेधड़क हो कर वह लेग्री के सामने डट कर खड़ा हो जाता था और ईसा के सद् दृष्टान्त का अनुसरण करने का विचार करके मनही मन हर्षित होता था। पर जब वह ठोंक पीट कर चला जाता था और टाम देखता था कि मृत्यु तो नहीं आई; उस समय हृदय का वह उमड़ा हुआ धर्म-वेग और मार के समय की उत्तेजना शनैः शनैः मन्द पड़ जाती थी और तब उसे मार का दर्द अखरता था, उसका शरीर शिथिल पड़ जाता था, और साथ ही अन्तरात्मा को भी अवसन्नता धर दबाती थी; हृदय में निराशा छा जाती थी, अपनी दुर्दशा का स्मरण होते ही उसके हृदय में असह्य यन्त्रणा की अग्नि धधक उठती थी।

पहले ही दिन की मार से टाम का शरीर जगह जगह से छिल गया था और वह बहुत अशक्त हो गया था। पर लेग्री ने वह अशक्तता दूर होने के पूर्व ही मारे हठ के उसे खेत के काम में जोत दिया। अन्य कुलियों के साथ उसे काम पर जाना पड़ता था। अपनी इस कमज़ोरी की हालत में भी वह जी लगा कर खेत का काम करता था, पर खेत के रखवाले केवल अपनी हिंसक वृत्ति चरितार्थ करने के लिए समय समय पर उसे बेत लगाते रहते थे। भला इस निष्ठुराचरण पर भी कोई सहिष्णु रह सकता है? पर टाम बड़ा ही शान्त प्रकृति का आदमी था। उसके धीरज और सहिष्णुता की सीमा न थी। पर कभी कभी साम्बो और कुइम्बो आदि के निष्ठुराचरण से उसका मन सहिष्णुता-रहित हो जाता था। अब तक यह समस्या टाम की

समझ में भली भाँति न आई थी कि लेग्री के खेत के कुली ऐसे मनुष्यत्व-विहीन और दुश्चरित्र क्यों हो गये हैं; उनका हृदय केवल द्वेष, हिंसा, वैर, विरोध, स्वार्थपरता और निष्ठुरता का घर क्यों बन गया है; उनके जड़-हृदय में क्षण भर के लिए भी सहानुभूति का सञ्चार क्यों नहीं होता है, पर अब उसे उनके किसी आचरण पर आश्चर्य न रहा। अब उसने सहज में समझ लिया कि उनकी इस दुरवस्था का निष्ठुराचरण के अवश्यम्भावी फल के सिवा और कोई कारण नहीं है। पर वह अपने मन में बहुत डरा कि समय पाकर कहीं यह निष्ठुराचरण उसकी प्रकृति को भी भ्रष्ट न कर दे। इस डर से वह जब ज़रा सा अवकाश पाता तुरन्त अपनी पुरानी बाइबल को लेकर पढ़ने बैठ जाता। पर आज कल काम की इतनी भीड़ है कि रविवार तक को काम के बोझ से छुट्टी नहीं मिलती। कपास चुनने के दिनों में कई मास लेग्री कुलियों को रविवार तक की छुट्टी नहीं देता था। क्यों देता ? धर्म तो उसका कुछ था ही नहीं, उसके लिए जो कुछ देवता-मन्दिर था, वही कपास का खेत और नगद-नारायण।

पहले टाम खेत से लौटने पर नित्य रात्रि को रोटी बनाने के समय चूल्हे के उजाले में बैठ कर बाइबल के एक दो उपदेश पढ़ा करता था। पर आज कल वह इतना कमज़ोर हो गया था कि खेत से लौटने पर पल भर भी उससे बैठा न जाता था। आते ही थकावट के मारे वह झोपड़ी में पड़ रहता और दर्द से छटपटाने लगता था।

यह बड़े आश्चर्य की बात है कि जब तब टाम सरीखे पक्के धर्म-विश्वासी का मन भी डावाँ-डोल होने लगा। जिस सुदृढ़ विश्वास के कारण उसने आजन्म किसी भी कष्ट की परवाह न की, उसी अदम्य धर्म-विश्वास के निष्ठुराचरण के सामने परास्त होने की सम्भावना होने लगी। अज्ञेय अन्धकारमय जीवन पहली के सम्बन्ध में उसके

मन में भाँति भाँति के प्रश्न उठने लगे। हृदय सुस्त पड़ने लगा। जी में प्रश्न करने लगा, जगत्-पिता कहाँ है ? वह चुप क्यों है ? क्या संसार में सचमुच पाप ही की जय होती है ? फिर आप ही आप सोचने लगा नहीं, "परमात्मा मुझे कभी नहीं भुलावेगा। सम्भव है मिस अफ़िलिया का पत्र पाने पर केन्टाकी से कोई मेरा उद्धार करने आता हो।"

योंही सोचते सोचते वह व्याकुल होकर ईश्वर से प्रार्थना करने लगा। वह प्रति दिन उठ सवेरे आशा से मार्ग की ओर देखता था कि, केन्टाकी से कोई उसे मुक्त करने के लिए आ रहा है वा नहीं। योंही देखते देखते कितने ही दिन बीत गये पर कोई कहीं से आया गया नहीं। तब फिर उसके मन में वही पूर्व प्रश्न उदय हुआ कि, "ईश्वर ने क्या मेरी सुध बिसार दी है !"

इस बीच में कभी कभी कासी से भेंट होती थी और काम से घर में जाने पर एमेलिन का नैराश्य-पूर्ण मुरझाया हुआ चेहरा दिखाई पड़ता था, पर वह किसी से कुछ बोलता चालता न था। सच पूछिए तो उन दिनों बोलने चालने के लिए पल भर की फ़ुर्सत तक न मिलती थी।

एक दिन सन्ध्या के उपरान्त खेत से आकर वह ऐसा शक्ति-हीन हो गया कि धड़ाम से ज़मीन पर गिर गया। आज उसकी उठने की शक्ति एकदम जाती रही। लेटे लेटे ही रोटियाँ बनाने की फ़िक्र में लगा। बीच में उसकी बाइबल पढ़ने की इच्छा हुई, तब चूल्हे की आग ज़रा तेज़ करके अपनी पसन्द के, निशान लगाये हुए बाइबल के अंशों को पढ़ने लगा। पढ़ते पढ़ते मनही मन प्रश्न करने लगा, क्या संसार से शास्त्र की शक्ति जाती रही है ? क्या यह धर्मशास्त्र भग्न-हृदय को बल और निष्प्रभ चक्षुओं में ज्योति नहीं देता ? इसके बाद ठण्ढी

साँस लेकर उसने ज्योंही बाइबल बन्द की, उसे पीछे से किसी का विकट हास्य सुनाई दिया। गर्दन घुमाकर देखने पर लेग्री को पीछे खड़ा पाया।

लेग्री बोला, "अब तो समझ न लिया कि तेरा धर्म तेरी कुछ मदद नहीं करने का! मैंने तो पहले ही कह दिया था कि तेरा धर्म वर्म सब हवा कर दूँगा।"

धर्म के सम्बन्ध में इस व्यङ्ग ने टाम के हृदय में बरछी मार दी। इतना कष्ट उसे दिन भर की भूख-प्यास से भी नहीं हुआ था।

लेग्री ने कहा, "तू निरा गदहा है। मैंने ख़रीदने के समय तुझे कोई बड़ा ओहदा देने की बात सोची थी। मैं तुझे साम्बो और कुइम्बो से भी ऊँचा पद देता। आज वह तुझे कोड़े लगाते हैं, पर मेरी बात मानने से तू उन सब को कोड़े लगा सकता था, मैं तुझे बीच बीच में थोड़ी ह्विस्की या ब्रांडी भी पीने को दिया करता। अब भी कहता हूँ अपने यह सब ढोंग छोड़दे। अपनी उस फटी पुरानी पोथी को चूल्हे भाड़ में झोंक कर मेरा धर्म पकड़!"

टाम—ईश्वर न करें कहीं ऐसा हो!

लेग्री—तू देखता तो है कि ईश्वर तेरी कुछ मदद नहीं कर रहा है; अगर उसे तेरी मदद मञ्जूर होती तो वह तुझे मेरे हाथ ही में न पड़ने देता। टाम, तेरा यह धर्म वर्म एक तरह का झूठा ढोंग है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ। तेरे लिए मेरी बात मान कर चलना ही अच्छा होगा; मैं सामर्थी आदमी हूँ, और तेरा कुछ उपकार कर सकता हूँ।

टाम—नहीं सरकार, मैं अपना सङ्कल्प नहीं छोड़ूँगा। भगवान मेरी सहायता करें अथवा न करें; पर मैं उसी की शरण रहूँगा और अन्त तक उस पर विश्वास रक्खूँगा।

लेग्री ने ठोकर मार कर उसके मुँह पर थूकते हुए कहा, "तू बड़ा उल्लू का पट्ठा है । ख़ैर कुछ परवाह नहीं, मैं तुझे समझूँगा, तू देखेगा कि मैं तुझे कैसे अपनी बात मनवाता हूँ ।" यह कह कर लेग्री चला गया ।

जब यन्त्रणा के गुरु भार से आत्मा सर्वथा अवसन्न हो जाता है, धैर्य सीमा को पहुँच जाता है, उस समय देह और मन की सब शक्तियाँ उस गुरु भार को अलग फेंकने के लिए तलमलाने लगती हैं; इसी से प्राय: घोरतर यन्त्रणा के उपरान्त तत्काल ही हृदय में आनन्द और साहस का स्रोत बहते देखा जाता है । यही दशा इस समय टाम की थी ।

निर्दयी मालिक के नास्तिकता-पूर्ण तानों ने उसके दु:ख-भारा-क्रान्त हृदय को और अधिक अवसन्न कर दिया; यद्यपि उसका विश्वास उस अनन्त परमेश्वर पर से टला नहीं, पर निराशा से वह सर्वथा शिथिल हो गया । टाम चूल्हे के पास संज्ञाशून्य की भाँति बैठा रहा । सहसा उसके चारों ओर के पदार्थ मानों शून्य में विलीन हो गये, और काँटों का मुकुट पहने, रक्ताक्त, आहत ईसा की मूर्ति उसके नेत्रों के सन्मुख उपस्थित हुई । टाम भय और आश्चर्य से उस आगत के महान् सहिष्णु भाव की ओर निहारने लगा; उन गम्भीर और करुणोद्दीपक युगल नेत्रों की दृष्टि उसके अन्त:स्थल पर पड़ी, उसकी अवसन्न और मुमूर्षु आत्मा जाग उठी, वह घुटने टेक कर और दोनों हाथ आगे फैला कर बैठ गया । उसी समय शनै: शनै: उस आकृति का रूप बदलने लगा, उस काँटों के मुकुट की जगह किरणें चमकने लगीं, एक अपूर्व-प्रभा-मण्डल से उद्भासित, उस मुख ने स्नेह-चक्षुओं से उसकी ओर देखा; उस कण्ठ से सुधा की धारा बह निकली, टाम ने सुना कि वह वाणी कह रही है, "जैसे मैंने पाप और अत्याचारों पर

विजय कर पिता के साथ सिंहासन पर बैठने का सौभाग्य प्राप्त किया, वैसे ही वह जो संसार में पाप और अत्याचारों पर विजय प्राप्त करेगा, मेरे साथ सिंहासन पर बैठ सकेगा।"

टाम कितनी देर वहाँ पड़ा रहा, इसकी उसे कुछ खबर न थी। जब वह होश में आया तो उसने देखा कि आग बुझ गई है, उसके कपड़े और शरीर को ओसने तर कर दिया है; पर आत्मा का वह सङ्कट-काल निकल गया है, उसके हृदय में एक अपूर्व आनन्द भरा हुआ है; उस आनन्द की उमङ्ग में भूख, प्यास, जाड़ा, अपमान, नैराश्य और यन्त्रणा सब को उसने बिसार दिया है। इस जीवन की समस्त आशाओं को तिलाञ्जलि देकर उसने अपना चित्त अनादि देव के चरणों में लगा दिया। टाम आकाश के उज्ज्वल तारों की ओर आँखें लगा कर आकाश को प्रतिध्वनित करते हुए आत्मा के गम्भीर आनन्द में मग्न हो कर, यह गीत गाने लगा।—

हिम इव पृथ्वी गल जायगी भानु भस्म हो जाएगा।
तब भी मैं प्रभु तेरा हूँगा तू मेरा कहलाएगा।
मृत्युलोक का जीवन पूरा होगा जड़ शरीर यह मंद।
शान्ति-सरोवर में तैरूँगा पाकर के मैं ब्रह्मानन्द।
वर्ष सहस्र वहां पर रह कर चिर प्रकाशयुत भानु समान।
गाता रहूँगा वैसे जैसा था जब छेड़ा गान।

जैसा हमने ऊपर वर्णन किया है, यह कोई नई घटना नहीं थी, धर्म-विश्वासी गुलामों में ऐसी आश्चर्य-घटनायें प्रायः होती रहती हैं। मनो-विज्ञानी पंडितों का मत है कि, ऐसी भी अवस्थायें हुआ करती हैं जिनमें मन के भाव और कल्पनायें इतनी उत्तेजित और प्रबल हो जाती हैं कि उस समय कुल बाहरी इन्द्रियों पर उनका प्रभाव हो जाता है, और ऐसी अवस्था में मनो-कल्पित पदार्थ प्रत्यक्ष से दीख

पड़ने लगते हैं। सर्वव्यापी परमेश्वर मनुष्य को वे सब शक्तियाँ देकर उसके जीवन में जो कितनी ही घटनायें घटाता है, उनकी गिनती कौन लगा सकता है? और इसी बात का कौन निर्णय कर सकता है, कि वह किन किन उपायों से निस्सहाय और निराशा-मग्न आत्माओं में नवीन बल का सञ्चार करता है? यदि यह अपढ़ दास विश्वास करे कि ईसा ने उसे प्रत्यक्ष दर्शन दिया था, उससे बातें की थीं, तो कौन उसकी बात का प्रतिवाद करेगा?

दूसरे दिन प्रातःकाल जब गुलाम लोग खेत की ओर चले तो उस समय उन भूखे हाड़, चिथड़े लपेटे, जाड़े से काँपते हुए अभागों में केवल एक ही व्यक्ति ऐसा था जो उमंग से पैर रखता मस्त की तरह जा रहा था; कारण, ईश्वर के अनन्त प्रेम पर उसका अटल विश्वास जम गया था। अरे लेग्री! तू अब अपनी सारी शक्ति आज़मा देख! निदारुण यन्त्रणा, शोक, अपमान और अभावराशि सबके सब इसके लिए शान्ति-निकेतन की सीढ़ियाँ बन कर इसे स्वर्ग की ओर अग्रसर होने में सहायता देंगे।

अब से उसी दिन टाम का विलीन हृदय शान्तिपूर्ण हो गया। नित्य, पवित्र स्वरूप परमेश्वर ने उसके हृदय को अपना पवित्र मन्दिर बना लिया। इस जीवन का वह मर्मान्तिक परिताप बीत चुका, इस जीवन की आशा, भय और आकांक्षा का आन्दोलन पीछे छूट गया, और पल पल की संग्राम-क्लिष्ट रुधिराक्त मानवी इच्छायें सम्पूर्ण रूप से ईश्वरीय इच्छा में विलीन हो गईं। टाम को अपनी जीवन-यात्रा का अवशिष्टांश बहुत अल्प प्रतीत होने लगा और अनन्त शान्ति तथा अनन्त सुख इतना पास और इतना स्पष्ट जान पड़ने लगा कि जीवन के सारे दुस्सहतम कष्ट भी उसके हृदय पर असर न कर सके।

उसका यह बाह्य परिवर्त्तन सब को दिखाई पड़ने लगा। उसका

मुख हर समय प्रफुल्ल रहने लगा और हर कामों में उसका फुर्तीला· पन दिखाई देने लगा। वह बड़े धीरज, सहिष्णुता, और शान्ति के साथ अत्याचार और निष्ठुर व्यवहार सहने लगा। किसी प्रकार के व्यवहार से उसके मन में उद्विग्नता वा उत्कण्ठा नहीं पैदा होती थी। यह देख कर लेग्री ने एक दिन साम्बो से कहा, "टाम पर क्या भूत सवार हो गया है? थोड़े दिन हुए तब तो वह बिल्कुल लचर गया था लेकिन आज कल तो बड़ी तेज़ी दिखलाता है।

साम्बो— मालूम नहीं सरकार; जान पड़ता है भागने की फ़िक्र में होगा।

लेग्री—एक बार भागने की फ़िक्र करे तो काम ही बन जाय। मैं भी यही चाहता हूँ।

साम्बो—(बहुत हँसते हुए) जान पड़ता है हम लोगों को जल्दी ही वह दिन देखना नसीब होगा। ज़रूर वह भागने की फ़िक्र में है। भागने पर शिकारी कुत्ते उसे दांतों में दबा लावेंगे। तब बड़ा मज़ा होगा। एक बार वह मोली नाम की दासी भगी थी तो कैसा तमाशा हुआ था, मेरा तो उस वक्त हँसते हँसते पेट फटा जाता था। कुत्तों ने जा कर उसे पकड़ा और हम लोगों के पहुँचने के पहले ही उसका आधा शरीर नोच डाला था। उसे देख कर मुझे ऐसी हँसी छूटती थी कि क्या कहूँ।

लेग्री—मालूम होता है लूसी अब शीघ्र ही क़ब्र में आराम करेगी। पर देख साम्बो, जब कोई दास-दासी बड़ा ख़ुश और तेज़ दिखाई दे तो तुरन्त उसे दुरुस्त करने की फ़िक्र किया कर।

साम्बो—आप बे खटके रहिए, मैं ख़ुद ही सब ठीक कर लूँगा। हाः! हाः!

यह तीसरे पहर के क़रीब की बातें थीं जब लेग्री घोड़े पर सवार

हो कर पास के नगर में जा रहा था। उसने मन ही मन सोचा था कि नगर से लौटते हुए कुलियों के झोंपड़े देखता चलूँगा।

जब वह नगर से लौट कर कुलियों के झोपड़ों से थोड़ी दूर रह गया तो उसे गाने का शब्द सुनाई दिया, उसने ज़रा ठहर कर सुना तो मालूम हुआ कि टाम गा रहा है:—

जब देखूँगा लिखा हुआ है स्वर्ग-द्वार पर मेरा नाम।
भय भावना विदा कर दूँगा अश्रु पोंछ लूँगा विश्राम।
यदि अरि बन जग लड़ने आवे और नरक से बरसें बाण।
तो भी धरा भृकुटि को निर्भय देखूँ गिनूँ तुच्छ शैतान।
प्रलय समुद्र उमड़ आवे या घोर शोक का हो तूफ़ान।
मुझको कुछ परवाह न होगी, कुछ न पड़ेगा मुझको जान।
मिले निरापद मुझे स्वर्ग. गृह, परम पिता सर्वस्व समान।

यह गाना सुन कर लेग्री मन ही मन कहने लगा, "हा हा! साला सोचता है स्वर्ग में जायगा। गान सुन कर मेरे तो कान जल उठते हैं।" इसके बाद टाम के सामने पहुँच कर उस पर चाबुक उठा कर बोला, " हरामज़ादे! इतनी रात को बाहर पड़ा क्या गोल माल कर रहा है ? जा झोपड़ी में बन्द कर तेरा वह सब गाना साना।"

टाम ने बड़ी विनय और प्रफुल्लता से कहा, "जो हुक्म सरकार।" यह कह वह झोपड़ी में जाने लगा। टाम को यों प्रफुल्लता से बातें करते देख कर लेग्री को असीम क्रोध हुआ और तत्काल उसने उसके कन्धे और पीठ पर कोड़े लगाते हुए कहा, "क्यों रे सूअर, तू ख़ूब बड़ी मौज उड़ा रहा है ?"

पर यह चाबुक की मार ऊपर ही ऊपर रह गई, टाम के हृदय पर इसका कोई प्रभाव न हुआ। उसे कोई दुःख न हुआ। क्योंकि वह जीवन्मुक्त हो चुका है। उसकी यह पाँच-भौतिक देह आत्मा से पृथक हो

गई है, अतएव कोई भी बाह्य कष्ट उसे कष्ट नहीं जान पड़ता। टाम सिर झुकाये खड़ा रहा, लेग्री ने देख लिया कि उसे अपने ढङ्ग पर लाना शक्ति के बाहर है। उसने समझा कि ईश्वर अत्याचारों से उसकी रक्षा कर रहे हैं। इस पर वह ईश्वर को गालियाँ देने लगा। ताने तिसने, धमकी और बेंतों की मार इत्यादि किसी से भी टाम के हृदय की शान्ति नष्ट न हो सकी। ऐसी दशा में पड़ कर भी टाम को विनीत भाव और प्रफुल्लता से दिन काटते देख कर लेग्री किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो गया। पूर्व काल में ईसा के सताने वालों ने, प्रफुल्लता से अत्याचार सहते देख कर कहा था, "ईसा, तुम क्या हम लोगों के हृदय की अग्नि को समय के पूर्व ही सुलगा दोगे?" लेग्री के हृदय में भी आज वही भाव उत्पन्न हुआ। लेग्री टाम को दुखी देखने के लिए कोड़े लगाता, पर टाम उससे कुछ भी दुखी न होता। यह देख कर उसके हृदय में यन्त्रणा की आग जलने लगी।

लेग्री के खेत में दीन दुःखी कुलियों की दुर्दशा देख कर टाम का हृदय बहुत ही दुःखित हुआ। उसके अपने दुःखों का अन्त हो गया है, स्वयं वह स्वर्गीय शान्ति का अधिकारी बन चुका है; पर वह अपनी इस शान्ति का कुछ अंश इन दीन दुखियों को बाँटने की चिन्ता करने लगा। उसने कुलियों के साथ धर्म-चर्चा करके उन्हें सत्पथ पर लाने की बात सोची, पर उनके साथ धर्म-चर्चा करने का बिल्कुल अवकाश न था, केवल खेत में जाने आने के समय बातें करने का कुछ अवसर था। टाम ने इस अवसर में अभागे कुलियों से धर्म-चर्चा आरम्भ की। पहले तो कोई उसके सदभिप्राय का मर्म न समझ सका, पर शनैः शनैः उनका वह कठोर हृदय पसीजने लगा। टाम इनका शारीरिक कष्ट दूर करने का भी जी-जान से यत्न करने लगा। कभी वह आप भूखा रह कर अपना भोजन दूसरे को दे डालता, कभी किसी जाड़ा

खाते हुए रोगी कुली की यन्त्रणा देख कर वह अपना फटा कम्बल उसे दे डालता और आप ज़मीन पर पड़ रहता। किसी कमज़ोर स्त्री को कपास चुनने में असमर्थ देख कर अपनी चुनी हुई कपास उसकी टोकरी में डाल देता था। इस बात की उसने एक बार भी परवाह न की कि इस कारखाई से उसकी पीठ का चमड़ा उधेड़ा जायगा।

उसका यह आचरण देख कर खेत के सारे कुलियों का हृदय शनैः शनैः उसकी ओर आकर्षित होने लगा। कुछ समय बाद कपास चुनने के दिन निकल गये। इससे अब कुलियों को उतनी मेहनत नहीं करनी पड़ती थी। उन्हें ख़ूब छुट्टी रहती थी। इस समय वे सब प्रायः टाम के पास बैठ कर धर्मकथा सुना करते थे और टाम के साथ साथ प्रार्थना किया करते थे।

पर लेग्री प्रार्थना से बहुत चिढ़ता था। वह जब सुन पाता कि कुली लोग टाम के पास बैठ कर धर्मचर्चा करते हैं तो उन्हें बहुत मारता पीटता। इससे उनकी धर्मचर्चा की तृष्णा और भी बढ़ गई। वास्तव में धर्म-विद्वेषियों द्वारा धर्म-प्रचार में बड़ी अनुकूलता होती है।

अत्याचार और निठुराइयों के कारण लूसी का धर्मभाव सर्वथा विनष्ट होने वाला था, पर टाम के उपदेशों और धर्म-संगीतों से उसका विश्वास फिर जग उठा। और की जाने दीजिए कासी जो इतनी प्रतिहिंसा-परतन्त्र और उन्मत्तमना हो गई थी उसके हृदय तक में भक्ति, विश्वास और प्रेम का सञ्चार होने लगा।

कासी का हृदय पहले से दुर्विषह यन्त्रणा की आग से जल रहा था, सन्तान-शोक से वह प्रायः सनक सी गई थी, इससे उसने मन ही मन ठान लिया था कि, किसी न किसी दिन मौक़ा मिलने पर वह इस अत्याचारी लेग्री को इसके कुकर्मों का मज़ा ज़रूर चखावेगी।

एक दिन रात के समय टाम की कुटिया में जब और सब लोग

सोये पड़े थे, उसने एकाएक उठ कर देखा कि कासी उसे इशारे से बाहर बुला रही है।

टाम कुटिया से बाहर आया। रात के दो बजे होंगे, चारों ओर चाँदनी छिटकी हुई है। टाम ने आज कासी के चेहरे पर विलक्षण आशा और उत्साह का भाव देखा। सदा उसके चेहरे पर निराशा के चिह्न दृष्टिगोचर हुआ करते थे; पर आज उन निराशा के चिह्नों की जगह आशा झलक रही है।

कासी ने बड़ी व्यस्तता से टाम की कलाई इस सख़्ती से पकड़ कर मानों उसके हाथ ईस्पात के गढ़े हुए हैं, आगे को खींचते हुए कहा, "पिता टाम, इधर आओ। तुम्हें कुछ ख़ास बात कहनी है।

टाम ने सशङ्क होकर पूछा, "बात क्या है?"

कासी—क्या तुम स्वतन्त्र होना पसन्द नहीं करते?

टाम—जब ईश्वर की मर्ज़ी होगी तब स्वतन्त्रता मिलेगी।

कासी ने बड़े उल्लास के साथ कहा, "लेकिन तुम्हें आज ही रात को स्वतन्त्रता मिल सकती है"। इधर आओ। इधर आओ।

इसके बाद कासी चुपके चुपके टाम के कान में कहने लगी, "अभी वह नींद में मस्त है। मैंने ब्रांडी में अफ़ीम मिला दिया था। जल्दी नींद नहीं खुलेगी। इधर आओ। पिछवाड़े का दरवाज़ा खुला है, वहाँ मैंने पहले ही से एक कुल्हाड़ी रख छोड़ी है, मैं तुम्हें मार्ग बतलाये देती हूँ। मैं अपने हाथों से ही काम बनाती पर मेरी भुजाओं में इतना बल नहीं है। आओ आओ।"

टाम ने बड़ी दृढ़ता से कहा, "संसार भर का राज्य मुझे मिले तो भी मैं ऐसा पापकर्म न करूँगा।

कासी—पर ज़रा इन सब अभागों की दुर्दशा पर विचार करो। हम

लोग इन सब को गुलामी से मुक्त कर देंगे और फिर किसी द्वीप में चल बसेंगे।

टाम—नहीं! नहीं! बुरे कामों का फल कभी अच्छा नहीं होता। मेरा दाहिना हाथ चाक कर डालो तो भी मैं ऐसा काम नहीं करूँगा।

कासी—तो मैं स्वयं ही करूँगी।

टाम—अरे मिस कासी! मैं तुम्हें भी मना करता हूँ, ऐसा बुरा काम कभी न करना। बुरे काम का अच्छा नतीजा नहीं होगा। ईश्वर के लिए कष्ट सहो, पर इस पाप से हाथ मत रँगो। कासी! ऐसा काम मत करना। नहीं, नहीं, तुम एक तो योंही पाप-समुद्र में डूब रही हो, तिस पर अब यह नया पाप मत मोल लो। हमें कष्ट सहते हुए भी समय की अपेक्षा करनी चाहिए।"

कासी—अपेक्षा! कहाँ तक! क्या मैंने अपेक्षा नहीं की? बहुत की, अब इस हाड़-मांस के शरीर से नहीं सहा जाता।

टाम—देखो ईसा ने अपना रक्त दिया पर और किसी का भी खून नहीं गिराया। हमें शत्रु को भी प्यार करना चाहिए।

कासी—प्यार! ऐसे दुश्मन को प्यार! क्या मेरा शरीर लोहे का बना हुआ है।

टाम—हम लोगों की जीत तभी होगी जब हम शत्रु को भी क्षमा करके उसके कल्याण के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर सकें।

इतना कह कर टाम आकाश की ओर देखने लगा।

टाम का यह हृदयग्राही उपदेश सुन कर कासी का हृदय पसीज गया। तब उसने कहा, "पिता टाम! मैं तो पहले ही कह चुकी हूँ कि मुझ पर शैतान सवार है। पिता टाम! मैं प्रार्थना करना चाहती हूँ, पर कर नहीं सकती। तुमने जो कहा ठीक है, लेकिन मेरा हृदय

न जाने कैसी प्रतिहिंसा से भरा हुआ है कि मैं जब प्रार्थना आरम्भ करती हूँ तो शत्रु के विरुद्ध हृदय में आग धधकने लगती है।"

टाम—हाय! तुम्हारी आत्मा की कैसी शोचनीय दशा है! मैं तुम्हारे कल्याण के लिए ईश्वर से प्रार्थना करूँगा। कासी, ईश्वर में मन लगाओ।

कासी चुपचाप खड़ी रही और उसकी आँखों से बड़ी बड़ी आँसुओं की बूँदें झरने लगीं।

टाम ने फिर कहा, "मिस कासी! तुम यदि यहाँ से भाग कर कहीं निकल जा सको तो मैं तुम्हें और एमेलिन को भागने की सलाह देता हूँ।"

कासी—क्या तुम भी हम लोगों के साथ चलने की चेष्टा करोगे?

टाम—नहीं। मैं पहले तो चला जाता। लेकिन अब मुझे यहाँ एक काम है। मैं दीन दुःखी दास-दासियों को धर्म की ओर ले जाने की चेष्टा करूँगा। ईश्वर ने मुझे यह भार सौंपा है। लेकिन तुम लोगों का यहाँ से भाग जाना ही ठीक है। तुम लोग यहाँ रहोगी तो धीरे धीरे और बुराइयों में फँस जाओगी।

कासी—भागने का कोई सुभीता नहीं है। कहाँ जायँ? कब्र के सिवा हम लोगों के लिए और कहाँ जगह है? जहाँ जायँगी, शिकारी कुत्तों से पकड़वा मँगवावेगा। साँप और नाकों को रहने की जगह है, पर हम लोगों के लिए इस दुनियाँ में कहीं ठिकाना नहीं है।

टाम ने कुछ देर तक चुपचाप कासी की बात सुनी, फिर बोला, "जिसने दानियल को सिंह की माँद से बचाया था, अपनी विश्वासी सन्तानों की अग्नि-कुण्ड से रक्षा की थी, जो समुद्र पर से चला गया था, और जिसके हुक्म देते ही हवा भी रुक गई थी वह अब भी विद्यमान है। मुझे जान पड़ता है, वह निश्चय ही यहाँ से भाग जाने

में तुम लोगों की सहायता करेगा। तुम लोग एक वार यत्न करके देखो। मैं तुम लोगों के उद्धार के लिए ईश्वर से प्रार्थना करूँगा।"

ईश्वर की महिमा विचित्र है। कौन जान सकता है कि किन विचित्र नियमों के अनुसार हमारे मानसिक कार्यकलाप और चिन्ताओं का शासन होता है? टाम की वात सुन कर अकस्मात् कासी के मन में एक विचार उत्पन्न हुआ। पहले उसे भागना असम्भव जान पड़ता था पर अव सम्भव जान पड़ने लगा। कासी ने पहले भागने के विषय में वहुत कुछ सोचा विचारा था पर निश्चय कर वैठी थी कि कोई सूरत भाग निकलने की नहीं है। लेकिन आज उसे ऐसा उपाय सूझ गया कि उसे भागना वहुत सहज जान पड़ने लगा, इससे उसके मन में आशा का सञ्चार हो गया। तव वह टाम से वोली, "पिता टाम! मैं चेष्टा करूँगी।" टाम ने स्वर्ग की ओर देख कर कहा, "परमात्मा तुम्हारे सहायक हों।"

बयालीसवाँ परिच्छेद ।

भागने का षड-यन्त्र ।

पाठकों को इसके पूर्व बतलाया जा चुका है कि एक ख़ूब बड़े धनी ज़मीदार के दिवालिये हो जाने पर लेग्री ने बहुत सस्ते में उसका यह मकान और खेत ख़रीद लिया था। यह घर बहुत बड़ा था, इसमें बहुत सी पुरानी कोठरियाँ थीं। पहले मकान मालिक के समय यहाँ अनगिनत लोग रहते थे। पर जब से यह मकान लेग्री के हाथ में आया था तब से इसके चार पाँच दर तो बिल्कुल सूने पड़े रहते हैं। लेग्री का व्यापार कोई विशेष लंबा चौड़ा न था, न वह वैसा सम्पन्न ही था; कुछ दिनों जब जहाज़ का कप्तान था, तब उसने इधर उधर से लूट-खसोट, चोरी-लुका करके दो चार हज़ार की पूँजी बना ली थी, और उसी से बड़े सस्ते में यह घर और खेत ख़रीद कर काम चलता कर दिया था। पहले मालिक के पास इतने बड़े खेत में काम करने के लिए ५०० के लगभग कुली थे पर अब उसी खेत का काम लेग्री केवल ५० ग़ुलामों से लेता है; इसी से लेग्री के खेत में काम करनेवाले कुली दो तीन वर्ष से अधिक नहीं जीते थे।

मकान में जो पाँच छः कमरे ख़ाली पड़े थे, उनमें उत्तर की ओर एक बड़ा कमरा था। यह कमरा कासी के सोने के कमरे से सटा ही हुआ था। और कासी के कमरे की बाईं ओर लेग्री साहब का शयनागार था। उस मकान के सब लोगों के मनों में ख़याल जमा हुआ था कि लेग्री के उत्तर ओर के कमरे में भूत है। रात की कौन

कहे दिन में भी लोगों की उस कमरे में जाने की हिम्मत न पड़ती थी। कई वर्ष हुए, लेग्री ने इस कमरे में एक कुली स्त्री को तीन सप्ताह तक भूखे प्यासे क़ैद रख कर उसकी जान लेली थी, तभी से सबको विश्वास हो गया था कि यह कमरा भूतों का घर है। इस घटना से भूत-कथा का सूत्रपात हुआ। स्वयं लेग्री की भी उस कमरे में घुसने की हिम्मत न होती थी। लेकिन वह अपना भय किसी के सामने प्रकट न करता था।

एक दिन कासी बिना लेग्री से पूछे ताछे ही बड़ी घबराहट से सब माल-असबाब उठा कर अपना कमरा बदलने लगी। दास-दासियों को बुला कर सारा माल-असबाब वहाँ से हटा कर दूसरे कमरे में ले जाने को कहा। वह सब बहुत डरते काँपते हुए वहाँ की सब सामग्री उठा कर दूसरे कमरे में ले जाकर रखने लगे। उस समय लेग्री घूमने गया था; जब वह लौटा तो उसने यह उलट-फेर देख कर पूछा, "कासी, क्या मामला है, इस कमरे की चीज़ें वहाँ क्यों उठवाये लिये जा रही हो?"

कासी बोली, "मुझे इस कमरे में नींद नहीं पड़ती।"

लेग्री—क्यों, क्या बात है?

कासी—मैं वह सब कहना नहीं चाहती।

लेग्री—कहने में क्या हर्ज है?

कासी—इस उत्तर के कमरे से रात को न मालूम कैसी खटपट की आवाज़ आती रहती है, उससे मुझे बड़ा डर लगता है।

लेग्री—क्या आवाज़ आती है? वह कैसी आवाज़ है?

कासी—सो क्या तुम्हें मालूम नहीं कि किसकी आवाज़ है, कैसी आवाज़ है?

इस बात पर लेग्री जामे से बाहर हो गया, और पृथ्वी पर ज़ोर

से पैर मार कर कासी के मुँह पर चाबुक लगाई । इस कमरे में कुली स्त्री की मृत्यु हुई थी, यह बात लेग्री किसी को प्रकट नहीं करने देता था । इसी से कासी पर बहुत क्रुद्ध हुआ । कासी चाबुक खा कर एक किनारे हट गई और बारम्बार कहने लगी, "लेग्री, तुम्हीं न एक रात इस कमरे में सोकर देखो, देखूँगी डरते हो कि नहीं ।"

कासी की इन बातों से लेग्री के मन में ख़ूब भय समा गया था । असल में जिन अशिक्षित मनुष्यों में धर्म-विश्वास नहीं होता, उनके मन में बड़ी जल्दी ऐसे कुसंस्कार-मूलक भूत का भय पैदा हो जाता है ।

कासी ने अच्छी तरह जान लिया कि लेग्री के मन में भय समा गया है, इससे वह मनही मन बहुत प्रसन्न हुई । इसके बाद कासी उस उत्तर ओरवाले कमरे की पास की एक कोठरी में अपना बिछौना वग़ैरह और सात दिन तक के खाने पीने की सामग्री रख आई । बीच बीच में वह ठीक आधी रात को वहाँ जाकर छिपे छिपे लेग्री के सोने के कमरे का दरवाज़ा खटखटाती और विचित्र प्रकार से आवाज़ करती थी । इससे लेग्री का कुसंस्कार मूलक भय दिन दिन बढ़ता गया । इस सम्बन्ध में कासी दास-दासियों के मन में अधिक भय उत्पन्न कराने की नियत से नित्य नये भौतिक उपद्रवों के क़िस्से गढ़ कर सुनाती । इससे उन सभों का डर बढ़ते बढ़ते यहाँ तक बढ़ा कि रात को उस कमरे की ओर आँख उठा कर देखने में भी भय खाते थे ।

तीन चार दिन में जब कासी ने देख लिया कि हाँ, अब सबके मन में भूत-सम्बन्धी संस्कार ख़ूब जम गये, तब वह भागने का बन्दोबस्त करने लगी । बिछौने आदि तो पहले ही रख आई थी अब अपने तथा एमेलिन के कपड़े-लत्ते भी ले जाकर वहाँ रख आई ।

तीसरे पहर लेग्री काम से अपने किसी पड़ोसी के यहाँ गया था । यह सुअवसर पा कर, जब सन्ध्या के बाद चारों ओर अन्धेरा छा गया

तब उसने एमेलिन के पास जाकर कहा, चल झट पट उठ चल। भागने का इससे अच्छा दाँव फिर नहीं मिलेगा।

वह दोनों घर से बाहर होकर दलदल की ओर चलीं, पहले उन्होंने निश्चय किया था कि पश्चिम ओर की दलदल में चलेंगी, पर यह सोच कर कि वहाँ रहने से लेग्री शिकारी कुत्तों से उन्हें पकड़वा मँगावेगा, उन्होंने पहले कुछ दूर पश्चिम और फिर उत्तर जाकर, वहाँ से पूर्व मुँह कर कुछ बढ़ने पर सामने की खाई पार करके भुतहे घर में पहुँच कर पाँच छः दिन वहीं रहने का निश्चय किया। और सोचा कि उनके भागने के बाद लेग्री सम्भवतः चार पाँच दिन उन्हें दलदल में तथा इधर उधर ढूँढ़ेगा, और शिकारी कुत्तों आदि से खोज करावेगा, पर जब चार पाँच दिन में वह खोज कर हार थकेगा तब मौक़े से किसी दिन रात को निकल कर चल देंगी। चलते चलते जब वह दोनों दलदल के पास पहुँचीं तो उन्हें पीछे से "पकड़ो, पकड़ो" "दासी भागी जा रही है" का शोर सुनाई दिया। कासी ने पहले सोचा था कि साम्बो चिल्ला रहा है, पर पीछे उसे आवाज़ से मालूम हुआ कि साम्बो नहीं लेग्री है। इस चिल्लाहट से एमेलिन बहुत डरी और कासी का हाथ पकड़ कर बोली, "कासी! मुझे तो मूर्च्छा आ रही है!"

कासी—इस समय यदि तुझे मूर्च्छा आई तो मैं तेरी जान ले लूँगी। नहीं तो चुपचाप मेरे पीछे पीछे दौड़ती चली आ।

कासी के डर से एमेलिन जी-जान से दौड़ने लगी और शीघ्र ही लेग्री की आँखों से ओझल हो गई। तब लेग्री ने देखा कि अब इस अँधेरे में बिना शिकारी कुत्तों के इनके पकड़ने की कोई सूरत नहीं है, इससे वह कुत्तों तथा और लोगों को साथ लेने के लिए घर लौटा। वहाँ से साम्बो कुइम्बो एवं अन्यान्य दास-दासियों तथा शिकारी कुत्ते और बन्दूकें इत्यादि साथ लेकर उन्हें पकड़ने चला।

लेग्री मनही मन जानता था कि वे सहज ही में भाग कर न निकल जा सकेंगी । उसके हब्शी ग़ुलामों में कोई किधर और कोई किधर चला ।

साम्बो ने लेग्री से पूछा, "अच्छा कासी को देख पाऊँ तो क्या करूँ ?" लेग्री बोला, "कासी को गोली मार सकता है पर एमेलिन को जान से मत मारना । और इन्हें जो जीते पकड़ कर ला सकेगा उसे पाँच सौ रुपये इनाम दूँगा ।"

इधर कासी और एमेलिन अपने निश्चय के अनुसार रास्ता तै करके उस ठिकाने वाले कमरे में जा पहुँचीं । घर में पहुँचने पर जंगल के पास खड़ी होकर एमेलिन ने कासी को बुला कर कहा, "यह देखो शिकारी कुत्तों को लिये हुए कितने आदमी जा रहे हैं, चलो हम लोग चल कर किसी अन्धेरी कोठरी में छिप रहें ।

कासी बोली, "डर क्या है ? यहीं बराम्दे में बैठ कर तमाशा देखा जायगा । ये इधर कदापि न आवेंगे ।"

लेग्री सारे दास दासी, एवं कुत्तों को लिये हुए दल दल की ओर निकल गया, घर एकदम सूना पड़ा था । कासी एमेलिन को साथ लेकर धीरे से कमरे का दक्षिण दरवाज़ा खोल कर लेग्री के सोने के कमरे में घुस गई । वहाँ उसने लेग्री की सन्दूक़ की कुञ्जी बिछौनों पर पड़ी हुई पाई, जिसे जल्दी में लेग्री भूल गया था । कुञ्जी पाकर कासी बड़ी ख़ुश हुई । और तत्काल सन्दूक़ खोल कर उसमें से तीन चार हज़ार रुपयों के नोट निकाल कर अपने कपड़ों में छिपा कर धरने लगी । एमेलिन यह देख कर बहुत डरी, उसने कहा, आह, तुम यह क्या कर रही हो ? ऐसा बुरा काम मत करो ।"

इस पर कासी ने झुँझला कर कहा, " चुप रहो, बिना रुपयों के जहाज़ का भाड़ा एवं और सब ख़र्चा कहाँ से आवेगा ? क्या पड़े पड़े दलदल में सड़ कर मरना है !"

एमेलिन—जो हो लेकिन यह चोरी ही है।

कासी ने बड़ी घृणा दिखा कर कहा, "चोरी है! जो मनुष्यों की आत्मा और शरीर सब कुछ चुरा लेते हैं, वह हमसे क्या बोलेंगे! लेग्री ने ये रुपये पाये कहाँ? इन कुलियों का ख़ून चूस चूस कर ही तो ये रुपये बटोरे हैं! यह दास-दासियों का ख़ून है। चोर का माल ले जाने में क्या दोष है? यह सारा का सारा चोरी ही का माल है।

इसके बाद कासी एमेलिन का हाथ पकड़ कर उसे उत्तर के कमरे में ले गई। वहाँ जाकर बोली, मैंने यथेष्ट रोशनी का प्रबन्ध कर रक्खा है, और समय बिताने के लिए कुछ पुस्तकें भी लाकर धरदी हैं! मुझे निश्चय है कि इधर वे हम लोगों को खोजने न आवेंगे। हाँ, यदि आ ही गये तो सच मुच उन्हें भूत का तमाशा दिखा कर डराऊँगी।

एमेलिन—तुम्हें क्या निश्चय है कि वे लोग हम दोनों की खोज में यहाँ नहीं आ सकेंगे?

कासी—मैं तो चाहती हूँ एक बार लेग्री यहाँ आवे, पर वह यहाँ नहीं आवेगा, न दास-दासी ही आना स्वीकार करेंगे।

एमेलिन ने सीधी सादी तौर से पूछा, "अच्छा। तुमने उस समय मुझे मार डालने की धमकी किस मतलब से दी थी।"

कासी—जिसमें तुम्हें मूर्च्छा न आजाय। यदि तुम्हें मूर्च्छा आ जाती तो फिर वे सब तुम्हें ज़रूर पकड़ लेते।

एमेलिन यह सुनकर काँप उठी। कुछ देर बाद दोनों चुप हो गईं, फिर कासी एक पुस्तक पढ़ने लगी और पढ़ते पढ़ते ही उसे नींद आ गई।

आधी रात के समय लेग्री जब अपना दल बल लिये हुए निराश

हो कर घर लौटा तो बड़ा शोर-गुल होने लगा। शोर-गुल से कासी और एमेलिन की नींद टूट गई। एमेलिन जाग कर चिल्ला उठी, पर कासी ने इसे धीरज दिला कर कहा, "कोई भय नहीं है, दलदल में हम लोगों को खोज कर लौट आया है। यह देखो लेग्री के घोड़े के बदन में कितना कीचड़ लगा हुआ है। उसके अपने बदन में भी कीचड़ लिपटा है। कुत्ते कैसे थके हुए जीभ लपलपा रहे हैं।

एमेलिन ने कहा, "धीरे धीरे बात करो। चुप रहो, कोई सुनलेगा।"

पर कासी ने और ज़ोर से बोल कर कहा, "डर क्या पड़ा है, हम लोगों की बात सुनेगा तो भूत के डर से और डरेगा।"

धीरे धीरे अधिक रात बीत गई। लेग्री बहुत थक गया था, अपने भाग को कोसते और कासी के नाम पर गालियों की वर्षा करते हुए अपने सोने के कमरे में गया।

—:०:—

तेंतालीसवाँ परिच्छेद ।

धर्मवीर ।

चलते चलते हज़ारों कोस की मंज़िलें तै हो जाती हैं, और देखते देखते अमावस्या की घोर निशा बीत कर प्रभात का सूर्य निकल आता है। काल का अनन्त स्रोत पापासक्त दुर्वृत्तों को क्रमशः उस घोर अमावस्या निशा की ओर ढकेल रहा है, पर साधु और महात्माओं को इस अत्याचार-पूर्ण संसार की विपद्-वेदनाओं से हटा कर शनैः शनैः उस शत-सूर्य किरण-प्रदीप्त समुज्ज्वल दिवस की ओर ले जा रहा है।

पार्थिव-पद-प्रभुत्व-शून्य टाम के जीवन में कितने ही उलट फेर हुए। पहले वह स्त्री-पुत्रों सहित सानन्द सुख से जीवन बिताता था, अकस्मात् दिन फिरे और सुख की घड़ियों की जगह दुःख की घड़ियों ने घेर लिया; स्त्री-पुत्रों से वियोग हो गया, उस समय उसे दासत्व की बेड़ी बहुत अखरी। फिर चक्कर पलटा और वह सहृदय हाथों में जा पड़ा, और वह लोहे की सी कठिन बेड़ी कुसुम सी कोमल हो गई; पर विधाता से उसका यह सुख अधिक दिनों तक न देखा गया। देखते देखते वह ऐसे हाथों में चला गया, जहाँ उसके सांसारिक सुख की आशायें समूल उत्पाटित हो गईं। तदनन्तर उस गहरे अन्धकार को भेद कर स्वर्गीय उज्ज्वल तारों की अपूर्व ज्योति उसके नेत्रों के सन्मुख चमकने लगी, उसके लिए स्वर्ग का द्वार उन्मुक्त हो गया।

कासी और एमेलिन के भाग जाने के बाद लेग्री की क्रोधाग्नि

एकदम भभक उठी और केवल बेचारा टाम ही उस धधकती हुई क्रोधाग्नि का ईंधन हुआ। लेग्री जब दोनों दासियों को पकड़ने के लिए सब गुलामों को बुला रहा था, उस समय टाम की आँखों से ख़ुशी टपक रही थी। टाम ने हाथ उठा कर आकाश की ओर देखा, लेग्री ने उसका यह भाव देख लिया था। दूसरे इस बात से भी वह टाम की नियत जान गया कि और सब गुलाम तो दोनों भगोड़ियों को पकड़ने के लिए दौड़ धूप करने लगे, पर टाम ने उनका अनुसरण नहीं किया। लेग्री ने एक बार टाम को ज़बरदस्ती पकड़ने वालों के साथ भेजने की बात सोची पर पीछे से उसके पूर्व आचरण का स्मरण कर के देखा कि उससे रगड़ करना व्यर्थ समय गवाँ कर अपनी हानि करना है, जिस बात को वह बुरी समझता है, उसे जीते जी कभी नहीं करेगा।

लेग्री के अपने लावलश्कर सहित एमेलिन और कासी को पकड़ने चले जाने पर केवल टाम रह गया तथा और दो एक आदमी रह गये जिन्होंने टाम से प्रार्थना करने का अभ्यास किया था। और यह लोग मिल कर कासी और एमेलिन के कल्याण के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने लगे।

जब बड़ी ढूँढ़ खोज के बाद आधी रात के समय लेग्री निराश और परेशान हो कर घर लौटा, तब टाम पर उसकी क्रोधाग्नि भभक उठी। वह मन ही मन सोचने लगा कि आज तक जब से उसने टाम को ख़रीदा है, उसने बराबर उसकी आज्ञा का उल्लङ्घन ही उल्लङ्घन किया है। यह चिन्ता नरकाग्नि की भाँति उसके हृदय को जलाने लगी। ज्यों ही वह अपने बिस्तरों पर बैठा, त्यों ही अपने आप बोला, "मैं उससे नफ़रत करता हूँ! मुझे उससे नफ़रत है! क्या वह मेरी चीज़ नहीं है? क्या मैं उससे मनमाना व्यवहार नहीं कर सकता? अच्छा देखता हूँ, कौन मुझे रोकने वाला है?" यह कहते हुए वह बार बार पृथ्वी पर पैर पटकने लगा।

लेकिन उसने फिर सोचा कि टाम को अधिक दामों पर ख़रीदा है, ऐसी दामी चीज़ को यों नष्ट करना ठीक नहीं है । कल उससे कुछ कहना सुनना ठीक न होगा ।

उसने निकट के अन्यान्य खेतों से परिदर्शक, शिकारी कुत्ते, बन्दूकें और बहुत से गुलाम इकट्ठे किये । उसने निश्चय किया कि जितनी दलदली ज़मीन है उसका पग पग, कोना कोना खोज डाला जायगा, यदि कासी और एमेलिन मिल गईं तो ठीक ही, नहीं तो टाम के प्राण लेने का पक्का सङ्कल्प किया। वह अन्दर से ख़ूब उबल कर दांत पीसने लगा, उसके पापासक्त मन ने इस भयङ्कर नरहत्या के सङ्कल्प का भली भांति अनुमोदन किया ।

क़ानून गढ़नेवाले कहा करते कि मनुष्य अपना स्वार्थ सोच कर दास दासियों के प्राण नहीं ले सकता । पर क्रुद्ध होने पर ये हत्यारे अँगरेज़ अपने या पराये, भले बुरे का ज्ञान खो बैठते हैं, इनके हाथों में इन बेचारों के प्राण सौंप कर उन लोगों ने निस्सन्देह बड़ा पापपूर्ण कार्य किया था ।

प्रातःकाल लेग्री जब इधर आदमी इकट्ठे कर रहा था, उस समय कासी उत्तर के दालान के एक सूराख़ से उसकी सब कार्रवाई देख सुन रही थी ।

पकड़ने वाले दल में दो तो पास के दूसरे दो खेतों के परिदर्शक थे और कई लेग्री के शराबी सहचर थे । सब बड़े उत्साह से तैयार हो रहे हैं और गिलासों में भर भर कर शराब उड़ा रहे थे । कासी उनकी सारी बात चीत सुनने की इच्छा से घर की एक दीवाल से चुप चाप कान लगाये खड़ी थी ।

उनमें से एक परिदर्शक कह रहा था, "उसका शिकारी कुत्ता भगोड़ों को पकड़ते ही नोच डालता है" दूसरे ने कहा, "जहां भगोड़ियाँ

उसकी नज़र तले पड़ीं, तहाँ वह तुरन्त उन्हें बन्दूक़ का निशाना बना कर भागने का मज़ा चखा देगा।"

कासी उन लोगों की बात सुन कर बोल उठी, "हे भगवन्, क्या इस संसार में सभी पापी ही पापी बसते हैं; हमने कौन सा ऐसा भारी अपराध किया है, जो हम लोगों पर ये इतना अत्याचार करते हैं। फिर एमेलिन की ओर मुँह करके बोली, "बेटी, तू यदि मेरे साथ न होती तो मैं अभी उन सभों के पास जाकर कहती कि लो मुझे गोली से मार कर अपनी साध पूरी कर लो। स्वाधीन हो कर ही मेरा क्या हुआ जाता है? क्या मुझे अपनी दोनों सन्तानों का मुँह देखने को मिलेगा? अथवा मैं फिर पूर्व का सा पवित्र जीवन प्राप्त कर सकूँगी?"

एमेलिन कासी के मुख का भाव देख कर सहम गई और डर से कुछ बोल न सकी। उसने बालक की भाँति कासी का हाथ पकड़ लिया।

कासी ने हाथ छुड़ाते हुए कहा, "मेरा हाथ छोड़ दे, मैं तुझे प्यार नहीं करना चाहती। अब संसार में किसी को प्यार करने की मेरी इच्छा नहीं होती।"

एमेलिन ने कहा, "दुखिया कासी, इतना दुःख मत कर। यदि ईश्वर हमें स्वतन्त्रता देता है तो शायद तुम्हें तुम्हारी कन्या से भी मिला देगा; यह न हुआ तो मैं तुम्हारी कन्या बन कर रहूँगी। अब अपनी दुखिया माँ के देखने की आशा मैंने छोड़ दी है, मैं अब तुम्हीं को अपनी माँ कर मानूँगी। कासी, तुम मुझे प्यार करो या न करो, मैं तुम्हें अवश्य प्यार करूँगी।"

कासी—ओह एम! अपनी दोनों सन्तानों के लिए मेरा हृदय हाहाकार कर रहा है, मेरी आँखें उन्हें देखने के लिए तरस रही हैं।

उसने फिर अपनी छाती पीटते हुए कहा, हे भगवन्, मुझे अपनी सन्तानों से मिला दो, उस समय मैं प्रार्थना कर सकूँगी। एमेलिन ने कहा, "उस पर विश्वास करो। वह हमारा पिता है।"

कासी—हम लोगों पर भगवान् का ग़ज़ब पड़ा हुआ है। वह हम लोगों पर नाराज़ हो रहा है।

एमेलिन—नहीं कासी! वह निश्चय हम लोगों पर कृपा करेगा। हम लोगों को उसका भरोसा रखना चाहिए।

... ...

इनमें जब ये बातें हो रही थीं उस समय लेग्री अपने आदमियों सहित निराश और परेशान हो कर घर लौट आया था। लेग्री जब बहुत उदास मुँह बनाये घोड़े से उतरा, उस समय कासी बड़ी प्रसन्नता से सूराख़ के रास्ते उसे देख रही थी। घोड़े की पीठ से उतरते ही लेग्री ने कुइम्बो से कहा—

"जल्दी ला टाम को यहाँ। वह ज़रूर इस मामले के भीतर है। उसके काले चमड़े के अन्दर से सारी बातें बाहर करनी होंगी।"

साम्बो और कुइम्बो दोनों बड़े उत्साह से उछलते कूदते हुए टाम को पकड़ कर लाने को लिए चले। आपस में इन दोनों की एक घड़ी न बनती थी। लेकिन टाम पर दोनों ही की शनि की दृष्टि थी। कारण, लेग्री ने टाम को सर्वप्रधान परिदर्शक बनाने का सङ्कल्प किया था।

साम्बो और कुइम्बो ने जाकर टाम से कहा, "चलो, साहब बुलाते हैं।" और हाथ पकड़ कर उसे ले जाने लगे। टाम ने जान लिया कि कासी और एमेलिन के भागने का वृत्तान्त पूछने के लिए ही लेग्री उसे बुला रहा है। टाम सब बातें जानता था और इस समय वह कहाँ है इसका भी उसे पता था। पर उसने मन ही मन ठान

लिया था कि जान चाहे चली जाय पर वह इस गुप्त भेद को प्रकट करके उन दोनों अनाथिनियों का सर्वनाश न करेगा। यह सोच कर वह ईश्वर के चरणों में अपने को सौंप कर मृत्यु के लिए कटिबद्ध हो गया। वह हाथ जोड़ कर ईश्वर की विनती करने लगा, "हे भगवन्, मैं तुम्हें आत्मसमर्पण करता हूँ, आज तक तुम्हीं ने सदा मेरी रक्षा की है।"

उसे ले जाते हुए कुइम्बो कहने लगा, "अहा-हा-हा! अब की बच्चू को मज़ा मालूम हो जायगा। मालिक जैसा चाहिए वैसे गुस्साये हैं! अब की छिप छिपाने की गुंजायश नहीं है, सारी बातें पेट से बाहर निकालनी पड़ेंगी। गुलामों को भागने में मदद देने में क्या मज़ा आता है, यह अब की ही मालूम होगा। अबकी तेरी खोपड़ी दुरुस्त हो जायगी!"

कुइम्बो की असभ्य और निष्ठुर बातें टाम के कानों में नहीं पहुँचीं। जिस समय कुइम्बो यह सब बक रहा था, उस समय टाम के कानों में अति मधुर कण्ठ के यह शब्द सुनाई दे रहे थे कि, "शारीरिक यातना देने वालों से भय मत करो, कारण इसके आगे उनका कुछ वश नहीं है।"

टाम की हड्डियों तक में उस उत्साहपूर्ण वाक्य को सुन कर बल भर गया। मालूम हुआ मानों ईश्वर के स्पर्श से उसके शरीर में नवीन बल आ गया है, सैकड़ों आत्माओं का बल मानों उसकी आत्मा में प्रवेश कर रहा है। आगे बढ़ते हुए ज्यों ज्यों वह पेड़ पत्ते और लता पता एवं दासों के छप्परों को पीछे छोड़ता जाता था, त्यों त्यों उसे मालूम होता था कि मानों वह अपनी अवनतावस्था को भी पीछे छोड़ता जा रहा है। उसकी आत्मा आनन्द से नृत्य करने लगी, उसके पिता का घर बहुत निकट आ गया है, उसकी दासत्व की बेड़ी टूटने का समय आ पहुँचा है।

लेग्री ने टाम के कोट का कालर पकड़ कर खींचते हुए बड़े क्रोध से कहा, "टाम! तू जानता है कि मैंने तुझे मार डालने का सङ्कल्प कर लिया है।"

टाम ने धीरता से उत्तर दिया, "यह बहुत सम्भव है सरकार।"

लेग्री—टाम, तू इन भगोड़ियों के सम्बन्ध में जो कुछ जानता है, मेरे सामने कह दे, नहीं तो आज मैंने तेरी जान लेने की ठानली है।

टाम चुपचाप खड़ा रहा।

लेग्री ने क्रुद्ध सिंह की भांति गरजते हुए पृथ्वी पर पैर पटक कर कहा, "सुनता है? बोल।"

टाम ने दृढ़ता, धीरता और स्पष्ट स्वर से कहा, "सरकार मुझे कुछ नहीं कहना है।

लेग्री—ससुरे पाजी काले ईसाई! तू मुझसे कहने की हिम्मत कर सकता है कि, तू इस विषय में कुछ नहीं जानता।

टाम चुप था।

लेग्री उसे मार कर बड़े ज़ोर से गर्ज कर बोला, "बोल! तू कुछ जानता है?"

टाम—सरकार, मैं जानता हूँ, पर बतला नहीं सकता। मुझे मरना स्वीकार है?

इसपर लेग्री ज़रा देर के लिए अपने गुस्से को थाम कर कहने लगा, "सुन टाम! एक बार मैंने तुझे जाने दिया इससे यह मत समझ कि अब की भी छोड़ दूँगा। इस बार मैंने ठान लिया कि कुछ रुपयों का नुक़सान हो जाय कोई परवा नहीं, या तो आज तुझे वश में करूँगा, नहीं गिन गिन तेरे शरीर से रक्त की बूँदें निकाल कर तेरी जान लूँगा।

टाम ने उसकी ओर देखा और उत्तर दिया, "सरकार, यदि आप बीमार होते, किसी आफ़त में फसे होते, या आपकी जान के लाले पड़े होते और मेरे प्राण देने से आप बच सकते तो मैं आपके लिए हर्षपूर्वक अपने प्राण न्यौछावर कर देता। अब भी यदि मेरी इस तुच्छ भग्न देह के रक्त की बूँदों से आपकी आत्मा का कल्याण हो सके तो मैं सानन्द आपके लिए अपने बदन का सारा ख़ून बहाने को प्रस्तुत हूँ। सरकार, इस नर-हत्या रूपी भयङ्कर पाप से अपनी आत्मा को कलङ्कित न कीजिये। इस काम में मेरी अपेक्षा आपही की अधिक बुराई होगी। मेरे प्राण आप ख़ुशी से ले सकते हैं, मेरे तो सारे दुःखों का अन्त हो जायगा। पर अपने पिछले पापों तथा इस नवीन पाप के कारण आपका बहुत ही अमङ्गल होगा। सरकार, एक बार इस पर ग़ौर करके देखिए।"

यह बात सुन कर पाषाण-हृदय नरपिशाच अँगरेज़ पुत्र के मन में भी पल भर के लिए भय उत्पन्न हो गया, उसे स्वर्ग से कोई देवदूत सा उपदेश देता मालूम पड़ा।

लेग्री स्तम्भित होकर टाम का मुख देखने लगा। उस समय वहाँ सब के सब सन्न थे। इतना सन्नाटा छा गया था कि सूई भी गिरती तो उसका शब्द सुनाई देता। यह लेग्री के चरित्र-संशोधन का अन्तिम सुयोग था।

मङ्गलमय परमात्मा पापी को अपकर्मों से दूर होने के लिए समय समय पर, पल पल पर अवसर देते हैं; क्षण क्षण पर पापी की आँखों के सामने ऐसी अवस्थायें आती हैं कि पापी इस ईश्वरदत्त सुअवसर का सद्व्यवहार कर सहज में आत्मसंयम करके अपने जीवन की गति को पलट सकता है। लेग्री, ख़ूब सोच लो, तुम्हारे लिए अन्तिम अवसर है।

पर सदा नरहत्या करते करते इन अर्थ-पिशाच स्वार्थी गोरों का हृदय पत्थर से भी सख़्त हो गया है । साधुभाव क्षण भर से अधिक इस हृदय पर न ठहर सका । ज़रा सा ठहरा । एक वार मन में विचार आया कि "क्या करूँ ?"—इस चिन्ता ने मन को डांवाडोल किया । किन्तु तत्काल ही अभ्यस्त पैशाचिक भाव के हृदय में आते ही लेग्री का क्रोध भभक उठा । और वह गोचर्म-निर्मित चाबुक से टाम को पीटने लगा ।

उस दिन के भीषण काण्ड का वर्णन करने में लेखनी सर्वथा असमर्थ है । नृशंस प्रकृति का मनुष्य विना हिचकिचाहट के जो लोमहर्षण अत्याचार करता है, सहृदय मनुष्य उसे सुनने में भी कान पर हाथ धरते हैं । हाथ ही भर नहीं धरते, कभी कभी उन कठोर अत्याचारों की वात सुन कर उनके हृदय में वरछी सी लग जाती है और उनकी मौत का कारण वन वैठती है । इसी से दूसरों का कष्ट देख कर इवाञ्जेलिन के हृदय की ग्रन्थि छिन्न हो गई और वह यह संसार त्याग कर परम पिता की गोद में चली गई ।

महर्षि ईसा ने संसार के कल्याण के लिये बड़ी वड़ी यातनायें और घोर सङ्कट और अपमान सहे थे, इसीसे वह मृत्यु के उपरान्त देवता समझे गये । फिर उन्हीं ईसा का प्रचारित ईसाई-धर्म जिनकी एक मात्र पूँजी है, वे भला क्यों इस यातना को सहने में असमर्थ होने लगे । जिस राजाधिराज परमेश्वर ने १९०० वर्ष पूर्व ईसा की सूली के पास आकर कहा था, "बेटा, कोई डर नहीं है ! चले आओ; तुम्हारे लिए स्वर्ग-राज्य का द्वार खुला हुआ है ।" वही अनन्त मङ्गल-स्वरूप जगत्पिता आज पार्थिव-पद प्रभुत्वहीन दीन टाम के पास खड़ा होकर उसे आश्वस्त कर रहा है, मधुर कण्ठ से कह रहा है, "कोई भय नहीं है टाम ! तुम्हारी दुःखनिशा का अन्त हुआ । स्वर्ग का द्वार

तुम्हारे लिए मुक्त है। राज-मुकुट धारण करके स्वर्ग-राज्य में प्रवेश करो। मेरी भुजायें तुम्हें उठा लेने के लिए फैली हुई हैं।"

मार खाते खाते जब टाम बेदम हो गया और उसकी जान निकलने की तैयारी होने लगी, तब भी उसे लुभाने के लिए लेग्री कहता है, "अब भी बतला दे, भागी हुई दासियां कहाँ हैं? तो तुझे छोड़ देता हूँ।"

पर जिसने ईश्वर के हाथों में आत्म-समर्पण कर दिया उसे कौन लुभा सकता है? उसके मुख से " पिता परमेश्वर ! पिता परमेश्वर " के सिवा और कोई ध्वनि न निकली।

टाम का धीरज देख कर अब तो साम्बो का हृदय भी पसीज गया। तब उसने लेग्री से कहा, "सरकार, अब मार की दरकार नहीं, इसकी जान तो यों ही निकल जायगी।"

लेग्री फिर भी कहता है, और मार, और मार, जब तक कोई बात न बतलावेगा तब तक मैं उसे नहीं छोड़ूँगा"।

इस समय धराशायी टाम ने लेग्री की ओर देख कर कहा, "हा हतभाग्य ! तू मेरा और अधिक कुछ नहीं कर सकता। जा मैं तेरे सारे अपराधों को क्षमा करता हूँ" इतना कहते कहते वह अचेत हो गया।

लेग्री ने उसका शरीर हिला डुला कर देखते हुए कहा, "मालूम होता है, साला मर गया। अच्छा हुआ, इसका मुँह बन्द होगया।"

यह ठीक है लेग्री, तू ने उसका मुँह तो बन्द कर दिया पर उसकी आवाज़ तेरे अन्तःकरण में सदैव धधकती रहेगी, उसे कौन बन्द करेगा?

फिर लेग्री वहाँ से चला गया। लेकिन टाम के प्राण अभी तक शरीर से बाहर नहीं हुए थे। मार के समय टामने जो प्रार्थना की थी उसे सुन कर साम्बो और कुइम्बो का हृदय पसीजने लगा। लेग्री के जाने के बाद वे तुरन्त उसे उठा कर एक झोंपड़ी के अन्दर लेगये। अपनी मूर्खता के कारण वे टाम को बचाने की चेष्टा करने लगे।

साम्बो बोला, "हम लोगों ने बड़ा पापकर्म किया है। आशा है इसके लिए मालिक ही को जवाबदेह होना पड़ेगा, हम लोगों का कुछ न होगा।"

फिर वे दोनों टाम के ज़ख्मों को धोने लगे। घावों को धोकर उसे एक खाट पर सुला दिया। उसके बाद उनमें से एक लेग्री के पास गया और अपने पीने का बहाना करके थोड़ी सी ब्रांडी ले आया और थोड़ी थोड़ी टाम के गले में डालने लगा।

कुछ देर बाद कुइम्बो बोला, "टाम! भाई, हम लोगों ने तुम पर बड़े बड़े अत्याचार किये हैं।"

टाम ने क्षीण स्वर से कहा, "मैं हृदय से तुम लोगों को क्षमा करता हूँ।"

साम्बो ने कहा, "टाम! हमें एक बार बतलाओ ईसा कौन है? तुमने जिसे पुकारा था, वह कौन है?"

ईसा का मधुर नाम सुन कर टाम के शरीर में बल आगया, वह तेज़ी के साथ ईसा की दया की कथा कहने लगा। तब इन दोनों नराधमों का हृदय भी पसीजा और वे काँपते हुए बोले, "अहा! ऐसा सुन्दर नाम पहले कभी नहीं सुना था! हा ईश्वर! हम पर दया कर!"

टाम ने कहा, "हाय अभागो! मैं तुम्हें धर्म मार्ग पर ले जाने के लिए सारे कष्ट उठा सकता हूँ।"

इतना कह कर उसने इन दोनों की आत्माओं के उद्धार के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

टाम की प्रार्थना पूरी हुई। साम्बो और कुइम्बो ने कुपथ छोड़ सुपथ पर चलने की दृढ़ प्रतिज्ञा की।

—:o:—

चवालीसवाँ परिच्छेद

जार्ज शेल्बी

इसके दो दिनों बाद एक छोटी गाड़ी पर चढ़ कर एक युवा पुरुष लेग्रो के यहाँ आया और झटपट गाड़ी से उतर कर वहाँ के लोगों से बोला, "मैं घर के मालिक से भेंट करूँगा।"

यह जार्ज शेल्बी था; यहाँ वह कैसे आया था यह बतलाने के लिए कुछ पिछली बातें कहनी पड़ेंगी।

पाठकों को स्मरण होगा कि टाम के नीलाम में भेजे जाने के पहले, मिस अफिलिया ने शेल्बी साहब की मेम के पास टाम को छुड़ाने के लिए एक पत्र भेजा था। पर विधि की विडम्बना, पोस्ट-आफ़िस की ग़लती से वह पत्र इधर उधर मारा मारा फिर कर दो महीनों बाद मिसेज़ शेल्बी को मिला। वह टाम के भावी अमङ्गल की बात सोच कर बहुत घबड़ाई।

पर इस समय उसके हाथ में टाम की सहायता का कोई उपाय न था। उसके पति रोग-शय्या पर पड़े हुए थे, उन्हीं की सेवा-शुश्रूषा एवं काम-काज के देखने के झंझट में वह बेतरह फँसी हुई थी। कुछ दिनों बाद शेल्बी साहब इस दुनिया से कूच कर गये। इससे सारे काम का बोझ उसी को सम्हालना पड़ा। उसके पति पर बहुत ऋण था, उसे चुकाने की उसे बड़ी चिन्ता पड़ी। पर उस सुशिक्षिता, सहृदया ललना का हृदय केवल स्त्री-जाति-सुलभ कोमलता, स्नेह, दया और धर्म का ही आगार न था, बल्कि काम-काज सम्हालने में भी उसने

अपनी असाधारण बुद्धिमत्ता का परिचय दिया। उसने कुछ अंश खेत का और घर की बहुतसी फ़ालतू चीज़ें बेच कर बहुत शीघ्र अपने पति का सारा ऋण चुका दिया और सारे कामों का सिलसिला ठीक कर लिया। उसका तरुण पुत्र अपनी माता का सब कार्य्यों में हाथ बँटाने लगा।

जब सब ठीक ठाक हो गया तब माता और पुत्र दोनों मिल कर टाम के उद्धार का उपाय सोचने लगे। जिस वकील ने सेन्टक्लेयर के दास दासी एवं घर का और माल असबाब बेचने का भार उठाया था. बुद्धिमती मिस अफ़िलिया ने अपने पत्र में उसका नाम पता लिख दिया था। इससे टाम के पते के लिए पहले उसे पत्र लिखा गया। पर वह वकील टाम के वर्त्तमान ख़रीदार का ठिकाना न जानता था। पत्र के उत्तर में उसने केवल इतना ही लिखा था. "मृत सेन्टक्लेयर के ग़ुलामों में टाम नाम का एक ग़ुलाम नीलाम हुआ था पर उसके ख़रीदार का पता ठिकाना मुझे मालूम नहीं है।"

इस संवाद से माता और पुत्रों को बड़ी चिन्ता हुई। इसके छः महीने बाद माता के किसी काम से जार्ज शेल्बी को दक्षिण की ओर जाना पड़ा। इस अवसर पर उसने स्वयं नवअर्लिन्स में आकर टाम के अनुसन्धान करने का निश्चय किया। दो महीने तक तो कहीं कुछ पता न लगा पर अकस्मात् एक दिन एक आदमी से भेंट हो गई, उससे मालूम हुआ कि लेग्री नाम का एक आदमी उसे ख़रीद लेगया है। यह संवाद पाकर वह तुरन्त रेड नदी में खड़े हुए एक जहाज़ पर सवार हो लिया और आज यहाँ पहुँचा है।

लेग्री से भेंट होते ही जार्ज शेल्बी ने कहा, "मुझे पता चला है कि नवअर्लिन्स से आपने टाम नाम के एक दास को ख़रीदा है। वह पहले मेरे पिता के खेत में काम करता था, मैं उसे फिर ख़रीदने आया हूँ।"

उसकी बात सुन कर लेग्री का मुँह फीका पड़ गया। वह खिझला कर बोल उठा, "हाँ, मैंने इस नाम के एक आदमी को ख़रीदा है। बड़ा अच्छा सौदा निकला! ऐसा बेअदब, हठी, और पाजी सूअर तो किसी ने कभी न देखा होगा! हमारे ग़ुलामों को भड़का कर भगाता है; अभी दो दासियाँ उसकी सलाह से भाग गई हैं, जिनका दाम ८००) या १०००) से कम न होगा। कहता है कि उसने उन्हें भागने की सलाह दी थी। कहता है कि उसी की सलाह से वे भागी हैं। पर जब पता बतलाने को कहा जाता है तो साफ़, नाहीं कर देता है। इतनी मार खाने पर—"इतनी मार और किसी ग़ुलाम ने नहीं खाई होगी!" भी पता नहीं बतलाया। मालूम होता है, अब मरने बैठा है, मैं नहीं कह सकता मरेगा कि नहीं!"

यह बातें सुन कर जार्ज का चेहरा सुर्ख़ हो गया, उसकी आँखों से आग की चिनगारियाँ बरसने लगीं, पर झगड़ा करने में कोई अक़्लमन्दी न समझ कर उसने केवल इतनाही पूछा, "वह कहाँ है? मैं उसे देखना चाहता हूँ।"

बाहर जो ग़ुलाम जार्ज का घोड़ा पकड़े हुए खड़ा था, वह बोल उठा, "टाम इसी कुटिया में है।"

लेग्री ने उस ग़ुलाम को एक लात जमाई। पर जार्ज ने वहाँ पल भर की भी देर न की और झट से कुटिया की ओर बढ़ा।

टाम दो दिन से इस कुटिया में पड़ा हुआ है। उसकी शारीरिक कष्ट अनुभव करने की शक्ति रहित हो गई है, आत्मा जीवन्मुक्त हो गई है; पर शरीर के पूर्व स्वास्थ्य के कारण देह पिंजर से आत्मा सहज में बाहर नहीं होने पाती है, इसी से अब भी उसमें प्राण बाक़ी हैं। टाम सदा लेग्री के भूखे दास-दासियों की सहायता किया करता था, कभी कभी आप भूखा रह कर अपना आहार उन्हें दे देता था। इससे

टाम की इस दशा के कारण वे बड़े दुःखी हो रहे थे। लेग्री के डर के मारे टाम को देखने जाने की उनकी हिम्मत न पड़ती थी, पर रात को वे छिप कर उसकी कुटिया में जाते और यथा-शक्ति उसकी सेवा-शुश्रूषा करते थे। अधिक इन से और क्या होता, जब तब दो बूँद जल उसके मुख में डाल देते थे।

कासी को टाम की विपत्ति का सब हाल मालूम हो गया। टाम के दुःख की बात जान कर उसका हृदय शोक से भर गया। टाम ने उसके और एमेलिन के लिए ही यह अलौकिक त्याग स्वीकार किया है। यह सोचते सोचते उसके हृदय में कृतज्ञता की लहरें उठने लगीं। वह सारी आफ़तों को तुच्छ समझ कर इसकी पहली रात को टाम को देखने के लिए उसकी कुटिया में पहुँची। टाम अपने उस अन्तिम समय में अस्फुट स्वर से कासी को स्नेहपूर्वक जो धर्मोपदेश करने लगा, उसे सुन कर उसके हृदयाकाश से निराशा का अन्धकार सर्वथा दूर हो गया, वह शोकदग्ध वज्रसम कठिन हृदय पसीज कर नरम पड़ गया; वह रोती हुई प्रार्थना करती जाती थी।

टाम की कुटिया में प्रवेश करते ही उसकी दुर्दशा देख कर जार्ज को चक्कर आने लगा, उसके हृदय में शेल सी विंध गई। वह टाम के बग़ल में घुटनों के बल बैठ कर ज़ोर से बोला, "क्या यह सम्भव— क्या यह सम्भव है! क्या मनुष्य पर मनुष्य इतना अत्याचार कर सकता है! टाम काका, मेरे दुःखी टाम काका।"

मृत-प्राय टाम के कानों में इस कण्ठस्वर से अमृत सा बरस गया। वह संज्ञाशून्य सा पड़ा था, पर यह स्वर सुन कर धीरे धीरे उसने सिर हिलाया, होठों पर ज़रा हँसी आई, अस्फुटस्वर से वह बोला—

"सम्भव नहीं क्या ईश कृपा से, मृत्युशय्या होती सुख पुण्यमय"

जार्ज सिर झुकाये एकटक टाम के मुँह की ओर देख रहा था, आँखों से आँसुओं की धारा बह रही थीं, शोकरुद्ध कण्ठ से कहने

लगा, "प्यारे टाम काका! उठो एक बार बोलो! आँखें ऊपर उठा कर देखो। तुम्हारा मास्टर जार्ज आया है—तुम्हारा प्यारा मास्टर जार्ज आया है। क्या तुम मुझे नहीं पहचानते हो?"

टाम ने आँखें खोल कर क्षीण कण्ठ से कहा, " मास्टर जार्ज! मास्टर जार्ज!" इतना कह कर वह चौकन्ने की तरह देखने लगा। फिर बोला, "मास्टर जार्ज!" मानों धीरे धीरे अन्त में यह बात उसकी समझ में आई। उसकी शून्य आँखें क्रमशः चमकने लगीं, उसका मुख प्रफुल्ल हो गया, नेत्रों में अश्रु-धारा बह निकली, वह हाथ जोड़ कर क्षीण स्वर से कहने लगा, "धन्य भगवन्! अन्त में मेरी इच्छा पूर्ण कर दी! वे मुझे भूले नहीं! इससे मेरी आत्मा को सन्तोष मिल गया! धन्य हे भगवन्! धन्य है! अब मैं सुख से मरूँगा।"

जार्ज ने कहा, " तुम्हें मरना नहीं होगा, तुम नहीं मरोगे, इस बात का विचार भी मन में न लाओ। मैं तुम्हें ख़रीद कर घर ले चलने के लिए आया हूँ।"

टाम—ओह, मास्टर जार्ज, तुम बड़ी देर से आये, अब समय नहीं रहा। मैं तो ईश्वर के हाथ बिक चुका, वह मुझे अपने साथ अमृत धाम को ले जायगा। वहाँ जाने को जी चाह रहा है। केन्टाकी से स्वर्ग कहीं अच्छा है।

जार्ज—टाम काका, ऐसा मत कहो! तुम्हारी बात सुन कर मेरी छाती फटी जाती है! हाय तुम्हें कितना सताया! कैसे मैले में डाल रक्खा! हाय, तुम्हारी दशा देख कर मेरी जान मुँह को आ रही है! हाय दुःखी!

टाम—मुझे दुःखी मत कहो। था मैं दुःखी, पर अब वह सब बातें गई गुज़रीं। मैं पिता की गोद में जा रहा हूँ। जार्ज, यह देखो स्वर्ग का द्वार खुला हुआ है! धन्य ईसा, धन्य परमेश्वर!

जार्ज टाम के यह सत्य-विश्वास-पूर्ण तेजोमय वाक्य सुन कर स्तम्भित रह गया। वह अवाक् हो कर उसके मुख की ओर देखने लगा।

टाम ने जार्ज का हाथ पकड़ कर कहा, "तुम रोओ मत, क्लोई से मेरी इस दशा का हाल कहना! ओफ! उसे कितना दुःख होगा! लेकिन तुम उससे कहना कि मेरी मृत्यु शान्ति से हुई है, मेरे लिए कोई दुःख न करे। उसे यह भी कह देना कि भगवान् सर्वत्र मेरे साथ साथ थे, उसने सदा मुझे दुःखों पर विजय दी है। मुझे बच्चों के लिए सदा दुःख होता था। उन्हें मेरे पथ पर चलने को कहना, सदा मेरे मार्ग का अनुसरण करने को कहना। अपने पिता और माता एवं घर के प्रत्येक आदमी को मेरा प्रेम जनाना। मेरा प्रत्येक जीवधारी से प्रेम है; मैं जहाँ गया, वहीं प्रेम के अतिरिक्त और कुछ नहीं किया। ओह, मास्टर जार्ज, प्रेम भी क्या ही अनोखी वस्तु है अहा, धर्म-मार्ग पर चलने में कितना आनन्द है।

उस समय लेग्री वहाँ कुटिया के द्वार तक आया और एक बार अन्दर की ओर देख कर घृणा प्रकट करते हुए लौट गया।

जार्ज उसे देखकर क्रोध से बोला, "पुराना शैतान! ईश्वर एक दिन इसे अपने किये का फल देंगे।"

टाम—जार्ज, ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिए। यह बड़ा अभागा जीव है। उसके अभाग की बात सोच कर भी दुःख होता है! अब भी यदि वह पश्चात्ताप करे तो ईश्वर उसे क्षमा करेंगे। पर मुझे भय है कि वह कभी पश्चात्ताप नहीं करेगा।

जार्ज—उसका पश्चात्ताप न करना ही अच्छा है। उसे स्वर्ग न मिले, यही मैं चाहता हूँ।

टाम—जार्ज, ऐसी बातें मत कहो—इनसे मुझे कष्ट होता है! मन में ऐसा भाव मत रक्खो! उसने मेरी कोई वास्तविक

हानि नहीं की है, केवल मेरे लिए स्वर्ग-राज्य का द्वार खोल दिया है।

जार्ज को देखकर टाम आनन्द से उत्तेजित हो गया था, उसी उत्तेजना से उसका शरीर और भी सुस्त पड़ गया। नयन मुँद गये, साँस जल्दी जल्दी चलने लगी और उसकी आत्मा संसार से विदा हो गई। मृत्यु के समय उसके मुँह से ये शब्द निकल रहे थे—"ईसा के प्रेम से हम लोगों को कौन कौन वञ्चित करेगा?"

जार्ज स्तब्ध की भाँति एकटक मृतक के मुख की ओर देख रहा था, उसे जान पड़ने लगा कि टाम का यह मृत्यु-गृह पवित्र स्थल है। उसने घूम कर देखा तो लेग्री को अपने पीछे खड़ा पाया।

टाम का अन्तिम वाक्य सुन कर जार्ज का यौवन-सुलभ उत्तेजित भाव कुछ मन्द पड़ गया था। नहीं तो आज जार्ज अवश्य लेग्री को ठोंकता। पर लेग्री का मुँह देख कर उसके हृदय में घृणा उत्पन्न हो गई। जार्ज तुरन्त वहाँ से उठ जाने को तैयार हुआ और उससे बोला, "तुमसे जो बन सका तुमने कर लिया, अब मैं इस मृत शरीर को साथ ले जाना चाहता हूँ। बोलो, इसकी मृत देह के लिए तुम्हें क्या अदा करना पड़ेगा। मैं उत्तम प्रकार से इसे मिट्टी दूँगा।"

लेग्री बोला, "मैं मुर्दे हब्शी नहीं बेचता। जहाँ और जब तुम्हारा जी चाहे उसे लेजा कर दफ़न करो।"

जार्ज ने वहाँ जो दो तीन दास खड़े हुए लाश की ओर देख रहे थे उनसे कहा, "तुम लोग मेरे साथ आकर इस लाश को गाड़ी में उठवा दो, और मुझे एक कुदाल ला दो।"

लेग्री की आज्ञा की कोई अपेक्षा न करके उनमें से एक कुदाल लाने के लिए दौड़ा, और दो जो थे उन्होंने उस लाश को गाड़ी पर रखवा दिया। लेग्री भी टहलते टहलते गाड़ी के पास जाकर देखने लगा।

जार्ज ने अपना लबादा खोल कर गाड़ी में बिछाया और उस पर टाम की मृत देह को यत्नपूर्वक लिटाया । उसके बाद गाड़ी हाँकते समय लेग्री को पुकार कर बोला, "तुमने जो नरहत्या की है, इसकी सज़ा पाओगे । यह मत समझना कि मैं तुम्हें योंही छोड़ दूँगा । मैं मैजिस्ट्रेट के सामने जाकर अभी इज़हार दूँगा ।"

यह सुनकर लेग्री ने ताने से हँस कर कहा, "जाओ, जहाँ तुम्हारा जी चाहे इज़हार दो । ओफ, जाने मुझे तो अब डर के मारे नींद ही न आवेगी ! पर अँगरेज़ गवाह कहाँ पाओगे ? ऐसे किसी मुक़द्दमे में गुलामों की गवाही सबूत नहीं मानी जाती ।"

तब जार्ज ने मन में सोच कर देखा कि यह ठीक कहता है, देश-प्रचलित क़ानून के अनुसार गोरों के विरुद्ध कालों की गवाही सबूत में नहीं ली जाती । इससे मन ही मन जार्ज को कष्ट हुआ ।

फिर लेग्री आप ही आप बकने लगा, "मेरी तो कुछ बात ही समझ में नहीं आती कि एक मुर्दे हब्शी के लिए एक सुशिक्षित अँगरेज़ इतना बखेड़ा क्यों करता है ? कितने ही कुली और कुली स्त्रियाँ योंही मारी जाती हैं । यह मुक़द्दमा चलाने चला है । कोई समझदार अँगरेज़ विचारक तो ऐसे तुच्छ विषय को सुनेगा भी नहीं । और तो कुछ किया नहीं बस एक कुली ही न मारा है !"

आग लगने से जैसे बारूद की मैगज़ीन भभक उठती है वैसे ही लेग्री की यह बात सुन कर जार्ज का क्रोध भभक उठा । जार्ज वकीलों की तरह क़ानून के पन्ने उलट कर कर्त्तव्य निश्चय नहीं किया करता था । उसमें मानुषिक तेज और वीर्य वर्तमान था । उसने क़ानून नहीं पढ़ा था कि वह मनुष्यत्व-विहीन हो जाय । वह तुरन्त गाड़ी से कूद लेग्री के मुँह पर ज़ोर ज़ोर से घूँसे जमाने लगा, लेग्री की नाक से ख़ून की नदी बह निकली । कायर लेग्री और अधिक न

सह सका और मृतक की भांति पृथ्वी पर गिर पड़ा। जार्ज ने विदेश में अकेले होते हुए भी यह वीरता प्रकट करके प्रातःस्मरणीय जार्ज वाशिंग्टन का नाम सार्थक कर दिया।

संसार में कुछ मनुष्य ऐसे होते हैं कि लतियाये जाने पर ही सीधे रहते हैं, ठीक से व्यवहार करना सीखते हैं। लेग्री उन्हीं आदमियों में था। अब उसने भलमनसी अख़्तियार की, धूल झाड़ झूड़ कर उठ बैठा और जब तक जार्ज की गाड़ी आँखों की ओट न हो गई तब तक मुँह न खोला।

लेग्री के खेत से हट कर एक वृक्ष-लता-परिपूर्ण सुन्दर स्थान में, जार्ज ने कुलियों को क़ब्र खोदने की आज्ञा दी। क़ब्र तैयार हो जाने पर कुलियों ने जार्ज के पास आकर कहा, "हुज़ूर, यह लबादा खोल लिया जाय?" जार्ज ने कहा, "नहीं, नहीं, इसी समेत उसे दफ़ना दो।" फिर टाम की मृत देह को सम्बोधन करके कहने लगा, "हाय टाम काका, मेरे पास इस समय और कोई अच्छा वस्त्र नहीं है कि तुम्हारे साथ दूँ। यही मेरी श्रद्धा का अन्तिम चिह्न है!"

टाम को मिट्टी दे दी गई और क़ब्र पर फूल बिछा दिये गये। तब जार्ज ने कुलियों को कुछ पैसे देकर कहा, "अब तुम लोग जा सकते हो।" वे जार्ज से कहने लगे, "हुज़ूर, हम लोगों को ख़रीद लीजिए। हम दिन रात जी-जान से आपका काम करेंगे। यहाँ हम लोगों को बड़ी तकलीफ़ है।"

जार्ज ने कहा, "मैं यहाँ किसी को नहीं ख़रीद सकता। यह असम्भव है। तुम लोग लौट जाओ।"

वे निराश हो कर धीरे धीरे चलते हुए।

जार्ज टाम की समाधि पर घुटनों के बल बैठ कर ऊर्ध्व नेत्रों से हाथ बाँध कर कहने लगा, "हे अनन्तस्वरूप परमात्मन्! मैं आपके

सन्मुख प्रतिज्ञा करता हूँ कि देश से इस घृणित दासत्व-प्रथा को दूर करने के लिए, गोरों के अत्याचार निवारण के लिए मैंने आज से अपने तन मन को समर्पित कर दिया। आप मेरे इस सत्सङ्कल्प में सदा सहायता करें।

टाम के समाधिस्थल पर कोई स्मृति-चिह्न नहीं बना। पर उसका पवित्र जीवन ही उसका एक मात्र उज्ज्वल-स्मृति-चिह्न था।

पाठक, टाम के लिए दु:खित होने का कोई कारण नहीं है। ऐसे जीवन और मृत्यु पर तरस खाने की कोई आवश्यकता नहीं है। टाम दया का पात्र वा दु:खी न था। वह जिस धन का धनी था, वह धन बड़े बड़े राजा महाराजाओं के भंडार में भी नहीं मिलता।

टाम के हृदय की सत्यप्रियता, न्यायपरता, धर्मतृष्णा, प्रेम, भक्ति और उसका सत्य-विश्वास क्या संसार के और सारे धनों से अधिक मूल्यवान न था?

—:०:—

पैंतालीसवाँ परिच्छेद ।

भूत-कहानी ।

कासी और एमेलिन के भाग जाने के बाद लेग्री के दास-दासियों में भूतों की चर्चा ने बड़ा ज़ोर पकड़ा । हर घड़ी वही—उसी की चर्चा होने लगी ।

रात को बन्द किये हुए दरवाज़े सवेरे खुले मिलते, रात को किसी के दरवाज़ा खटखटाने की सी आवाज़ आती, इससे सबने यही सिद्धांत निकाला कि यह सारी कार्रवाई भूतों के सिवा और किसी की नहीं है । दासों में से कोई कोई बोला, "भूत के पास इन सब दरवाज़ों की तालियाँ ज़रूर हैं बिना ताली के वह दरवाज़ा कैसे खोल सकता है ?" दूसरों ने उसका खंडन करके कहा, "यह कोई बात नहीं, भूत बिना ताली के भी दरवाज़े खोल सकता है ।"

भूत की सूरत शक्ल के विषय में भी बड़ा मत-भेद होने लगा । किसी ने कहा, "भूत के सिर नहीं होता । उसके दोनों कन्धों पर दो आँखें होती हैं ।" पर दूसरे ने उसकी बात काट कर कहा, "मैं तो ख़ुद अपनी आँखों से दो तीन भूत देख चुका हूँ, कोई भूत बिना सिर का नहीं होता ।" तीसरे ने कहा, "हाँ सिर तो होता है, यह तो मैं भी मानता हूँ लेकिन वह पीठ की ओर फिरा हुआ होता है । मैंने जितने भूत देखे हैं उनमें एक का भी सिर छाती की ओर नहीं देखा ।" इस पर एक चौथा दास बोला, "मालूम होता है तुम सब लोगों ने जितने भूत देखे हैं सबके सब विलायती थे, देशी उनमें एक भी न था ।"

दास-दासियों में भूत के रूप-रङ्ग के विषय में योंही तर्क-वितर्क होते रहे; पर बहुतेरी आलोचना प्रत्यालोचना के बाद भी कोई बात तै नहीं हुई, मतभेद ज्यों का त्यों बना रहा।

दास-दासियों की यह भूत-सम्बन्धी चर्चायें लेग्री के कानों तक भी पहुँचने लगीं। उसने हज़ार यत्न किये पर इन चर्चाओं का अन्त न हुआ। दिन पर दिन भूत-चर्चा का बाज़ार गर्म ही होता गया। उत्तर के कमरे में बहुधा रात को किसी के पैर की आहट सुनाई देती थी। इससे उठते ही सवेरे इसकी चर्चा छिड़ जाती थी। रोज़ रोज़ भूत-कथा सुनते सुनते गँवार, धर्मज्ञानहीन लेग्री के मन में भी ख़ूब डर समा गया। आज कल नित्य रात्रि को, वह इन भयङ्कर स्मृतियों को मन से परे रखने के लिए, पहले से दूनी चौगुनी शराब पीने लगा।

जिस दिन सवेरे टाम की मृत्यु हुई, उसी दिन वह निकट के एक दूसरे खेत में गया था। वहाँ से घर लौटने में अधिक रात बीत गई। घर पहुँचते ही वह सोने के कमरे में गया और उसके सारे किवाड़ बन्द करने लगा। उत्तर ओर का दरवाज़ा बन्द करके किवाड़ों के पीछे उसने एक कुर्सी रख दी। अपने सिरहाने एक भरी हुई पिस्तौल रक्खी और बहुत ज़्यादा शराब पी कर सो रहा। कुछ देर बाद उसे नींद आ गई। नींद में पहले की भाँति उसे अपनी माता की मूर्त्ति दिखाई दी। फिर चिल्लाहट सुनाई दी। इससे उसकी आँख खुल गई और उसे साफ़ साफ़ आदमी के पैरों की आहट सुन पड़ी। दरवाज़े पर नज़र पड़ते ही उसने देखा कि दरवाज़ा चौपट पड़ा है; घर की रोशनी बुझ गई है; अन्धेरे में किसीने उसके बदन पर ठण्डे हाथ लगाये जिससे वह खाट से उछल कर दूर जा खड़ा हुआ। इतने ही में श्वेत-वस्त्रधारी मूर्त्ति अन्तर्धान हो गई। लेग्री ने दरवाज़े के पास जाकर देखा तो दरवाज़े को बाहर की ओर से बन्द पाया। यह देखते ही वह बेहोश

हो कर ज़मीन पर गिर पड़ा। सवेरे जागने पर देखा कि खाट की जगह वह मिट्टी में पड़ा है।

इसके दूसरे दिन से लेग्री ने ब्रांडी की मात्रा और बढ़ा दी। उसने मन ही मन दो तीन रात शराब पीकर एकदम बेहोशी की हालत में बिताने का निश्चय किया कि जिसमें कोई दुश्चिन्ता पास न फटकने पावे। पर दो तीन दिन इस प्रकार ख़ूब शराब पीने के कारण उसे बड़ा भयानक ज्वर आया और वह बेहोश हो गया। बेहोशी की दशा में पागल की तरह वह अपने पूर्व कृत अपकर्मों एवं निष्ठुर आचरणों की बातें बकने लगा। वे सब लोमहर्षण बातें आदमी के दिल को कँपा देने वाली थीं। इससे उस दशा में कोई उसके पास खड़ा न होता था। दिन रात वह अकेला बेसुध पड़ा रहा। तीन दिन के बाद उसके मुँह से ख़ून ही ख़ून गिरने लगा और उसी के कुछ क्षणों बाद इस पापात्मा, नराधम अँगरेज़ पुत्र ने, अपने चिर-कलङ्कित जीवन के स्पर्श से मानव-समाज को निर्मुक्त किया—इस लोक से विदा हो कर पृथिवी पर से पाप का बोझ हल्का किया।

इसकी लाश को इसके ग़ुलामों ने रेड नदी में बहा दिया। और इसके पास जो कुछ नगद-नारायण, माल ताल था, सब झाँप झाप कर उत्तर की ओर स्वाधीन भूमि को निकल भागे।

जिस रात को लेग्री भय से मूर्च्छित हुआ था, उस रात को तीन चार ग़ुलामों ने देखा कि दो स्त्रियाँ सफ़ेद चादर से अपना सारा बदन ढके हुए घर से बाहर हो कर चली गईं। उसके दूसरे दिन सवेरे बाहरी मकान का दरवाज़ा भी खुला हुआ पाया गया। इससे लेग्री को और भी डर समा गया था।

सूर्योदय के कुछ ही पहले कासी और एमेलिन नगर के निकट पेड़ों के नीचे बैठ कर विश्राम ले रही थीं।

वृक्षों की आड़ में बैठ कर कासी ने स्पेन देश की कुलीन स्त्रियों के से वस्त्र धारण किये और एमेलिन ने उसकी परिचारिका का सा भेष बना लिया।

कासी भले घर जन्मी थी और सभ्यजनों की सी शिक्षा पाई थी; इससे उसे देख कर कोई भगोड़ी दासी नहीं समझ सकता था। उसने नगर में जा कर एक सन्दूक मोल लिया। उसमें सब कपड़े-लत्ते रक्खे और उसे एक कुली के सिर उठवा कर निकट के एक होटल में जा कर रहने लगी।

उस होटल में पहुँचते ही पहले जार्ज शेल्बी से उसकी भेंट हुई। जार्ज शेल्बी भी वहां जहाज़ के लिए ठहरा हुआ था। कासी ने अपने गुप्त स्थान से जार्ज शेल्बी को टाम की लाश ले जाते देखा था, और जार्ज ने जब लेग्री को पीटा था तब भी वह उसे देख रही थी, इससे जार्ज का चेहरा उसके लिए सर्वथा अपरिचित न था। विशेष कर जार्ज के चले जाने के बाद कासी ने अन्यान्य दास-दासियों की बात-चीत से पता लगा लिया था कि वह टाम के पूर्व मालिक का पुत्र है। अतएव उसने अति आग्रहपूर्वक जार्ज से घनिष्ठता बढ़ाने का यत्न किया।

कासी के कुलीन स्त्रियों के से वस्त्र एवं आचार-व्यवहारों के कारण किसी को उस पर सन्देह न हुआ। और ख़ास कर होटल में जो खाने पीने आदि की चीज़ों का दाम देने में कृपणता नहीं करता, उससे सब सन्तुष्ट रहते हैं। कासी इन बातों की ख़ूब जानकार थी। इसी से वह लेग्री के सन्दूक से ख़ूब रुपये ले आई थी।

संध्या होते होते जहाज़ आ गया। जार्ज शेल्बी ने बड़े शिष्टाचार से कासी का हाथ पकड़ कर उसे नाव पर चढ़ाया और स्वयं उसके लिए विशेष कष्ट सह कर जहाज़ के बीच का एक अच्छा कमरा उसके लिए किराये कर दिया। जहाज़ जब तक रेड नदी में था तब तक कासी

कमरे से बाहर न निकली । शारीरिक अस्वस्थता का बहाना बना कर कमरे ही में सोई रही । पर जब जहाज़ मिसीसिपी नदी के मुहाने पर पहुँचा तो कासी बाहर आई । जार्ज ने फिर इस नदी वाले जहाज़ में भी उसके लिए एक कमरा किराये कर दिया । इस जहाज़ में आते ही कासी की शारीरिक अस्वस्थता दूर हो गई और इस जहाज़ में वह इधर उधर ख़ूब टहलने लगी ।

जहाज़ के अन्य यात्री उसके वस्त्र और सौन्दर्य्य देख कर आपस में कहने लगे, "युवावस्था में यह ललना वास्तव में अद्वितीय सुन्दरी रही होगी ।"

जार्ज ने जब से कासी को देखा तभी से उसके मन में यह विचार उठ रहा था कि उसने ऐसी ही सुन्दर मुखाकृति और भी कहीं देखी है । इससे वह बड़े ग़ौर से कासी के मुख की ओर देखता था । खाते-पीते, बातें करते, बराबर जार्ज की आंखें कासी पर लगी रहती थीं ।

यह देख कर कासी के मन में उद्विग्नता उत्पन्न हो गई । वह सोचने लगी कि यह आदमी निश्चय मुझ पर सन्देह करता है; और जार्ज की दया पर भरोसा करके उसने आदि से अन्त तक अपना सारा वृत्तान्त उसे कह सुनाया ।

जार्ज को उसके जीवन का इतिहास सुन कर बड़ा दुःख हुआ, उसने उससे सहानुभूति दिखाई और सान्त्वना दी । विशेष कर लेग्री के दास-दासियों का कष्ट वह अपनी आंखों देख आया था, इससे वहां से भागी हुई दोनों स्त्रियों पर सहज ही उसके मन में दया हो आई । उसने कासी को विश्वास दिलाया कि तुम डरो नहीं । मैं जी जान से तुम्हारी रक्षा करूँगा ।"

कासी के कमरे से सटे हुए कमरे में मैडमडियो नाम की एक फ्रेंच भद्रमहिला सफ़र कर रही थी । जब उस फ्रेंचमहिला ने जार्ज की

वात-चीत से जाना कि वह केन्टाकी का आदमी है, तो वह उसके साथ वात-चीत करने के लिए विशेप उत्सुक हुई। और शीघ्र ही उसने जार्ज से आलाप-परिचय कर लिया। उसके वाद प्रायः जार्ज उसी के कमरे के द्वार पर कुर्सी डाल कर उससे वातें किया करता। कासी अपनी जगह से उनकी सारी वातें सुनती थी।

एक दिन मैडमडिथो ने वातों ही वातों में जार्ज से कहा, "पहले मैं भी केन्टाकी में ही थी।" और उसने केन्टाकी प्रदेश के जिस गाँव का नाम लिया, जार्ज शेल्वी का घर भी वहीं था। जार्ज को उसकी वात से वड़ा आश्चर्य हुआ।

इसके वाद एक दिन मैडमडिथो ने जार्ज से पूछा, "अपने गाँव में तुम हेरिस नाम के किसी आदमी को जानते हो?"

जार्ज—हाँ, इस नाम का एक बुड्ढा हमारे गांव में है।

मैडमडिथो—उसके वहुत से दास-दासी हैं न?

उसे अन्तिम वात वड़े आग्रह से पूछते देख कर वह कुछ विस्मित हुआ; वोला, "हाँ, है।"

मैडमडिथो—उसके एक जार्ज नामक वर्णसङ्कर दास को आप जानते हैं? शायद आपने उसका नाम सुना होगा?

जार्ज—जानना ही क्या, उसका तो मेरी माता की एक दासी से विवाह ही हुआ था। पर अव तो वह कैनाडा भाग गया है।

मैडमडिथो—हाँ, कैनाडा भाग गया है? ईश्वर का धन्य-वाद है!

जार्ज मैडमडिथो की वात सुन कर वड़ा चकित हुआ। पर उससे कुछ पूछा ताछा नहीं। मैडमडिथो दोनों हाथों से मुँह ढक कर आनन्द के अश्रु वहाने लगी, वोली, "जार्ज मेरा भाई है।"

जार्ज ने वहुत विस्मित होकर, "ऐं!"

मैडमडिथो ने सगर्व सिर उठा कर कहा, "हां मिस्टर शेल्बी, जार्ज हेरिस मेरा भाई है !"

जार्ज—मुझे आपकी बात सुन कर बड़ा अचम्भा हुआ ।

मैडमडिथो—मिस्टर शेल्बी, जिस समय जार्ज बहुत बच्चा था, उसी समय हेरिस ने मुझे एक दक्षिण के दासव्यवसायी के हाथ बेच डाला था। उस दास-व्यवसायी से मुझे एक सहृदय फ्रेंच सज्जन ने ख़रीद लिया और दासत्व की बेड़ी से मुक्त करके शास्त्रानुसार मुझसे विवाह कर लिया। कुछ दिन हुए मेरे स्वामी की मृत्यु होगई। अब मैं अपने उस कनिष्ठ सहोदर जार्ज को ख़रीद कर दासत्व से मुक्त कर देने की इच्छा से केन्टाकी को चली थी ।

जार्ज—जार्ज हेरिस मुझसे कई बार कहा करता था कि, "मेरी एमिली नाम की एक बहिन को हेरिस ने दक्षिण में बेच डाला है ।"

मैडमडिथो—मेरा ही नाम एमिली है ।

जार्ज—आप का भाई बड़ा बुद्धिमान् और सच्चरित्र युवा है, पर ग़ुलाम होने के कारण कोई उसके किसी गुण का आदर नहीं करता। वह तो हमारे यहां की दासी से उसका विवाह हुआ था, इसीसे मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ।

मैडमडिथो—उसकी स्त्री कैसी है ?

जार्ज—वह भी एक रत्न है। परम सुन्दरी, बुद्धिमती, मिष्टभाषिणी, सुशीला और धर्मपरायणा है। मेरी माता ने अपनी कन्या की भांति बड़े यत्न से उसका लालन-पालन किया था। वह लिखने पढ़ने, सीने-पिरोने एवं घर के अन्यान्य सभी कार्यों में बड़ी निपुण है।

मैडमडिथो—क्या वह आप ही के घर जन्मी थी ?

जार्ज—नहीं ! मेरे पिता उसे नवअर्लिन्स से मेरी माता को उपहार देने के लिए ख़रीद कर लाये थे। उस समय वह आठ नौ बरस

की थी । उन्होंने उसे कितने पर ख़रीदा था यह बात माता के सामने कभी प्रकट नहीं की । पर थोड़े दिन हुए उनके काग़ज़-पत्रों से हम लोगों को मालूम हुआ कि उसके लिए उन्होंने बहुत अधिक मूल्य दिया था, जान पड़ता है उसके अपूर्व सौन्दर्य के लिए ही इतने ज्यादा दाम दिये थे ।

कासी जार्ज के पीछे बैठी थी, इससे कासी के इन बातों को बड़े ध्यान से सुनने का पता जार्ज को नहीं था । पर जार्ज की बात समाप्त होते ही क़ासी ने उसकी बाहुओं पर हाथ धर कर कहा, "मिस्टर शेल्बी, क्या आप बता सकते हैं कि आप के पिता ने उसे किससे ख़रीदा था ?"

जार्ज—याद आता है कि सिमन्स नाम के किसी आदमी से उन्होंने ख़रीदा था ।

"हे भगवन् !" यह कह कर कासी तुरन्त मूर्च्छित होकर गिर पड़ी । मैडमडिथो और जार्ज के कासी की इस आकस्मिक मूर्च्छा का कारण समझ में न आया । सब मिल कर उसे होश में लाने की तदबीर करने लगे । होश होने पर कासी बालिका की भाँति ज़ोर ज़ोर से रोने लगी ।

पाठिकाओं में सन्तानवती "मा" कहलाने वाली महिलायें पूरी तरह से कासी के मनोभाव को हृदयङ्गम करने में समर्थ होंगी । कासी का क्रन्दन विषाद-क्रन्दन नहीं है । कासी अब अपनी कन्या से भेंट असम्भव समझ कर निराश होगई थी पर ईश्वर की कृपा से फिर मन में उसे देख पाने की आशा बँध गई और इसी से वह हृदय के उमड़े हुए वेग को सम्भाल न सकने के कारण बालिका की भाँति रोने लगी ।

—:o:—

छियालिसवाँ परिच्छेद।

स्वाधीनता प्रदान।

जार्ज शेल्बी ने अपने घर लौटने के कुछ ही दिन पहले अपनी माता को जो पत्र लिखा था उसमें केवल अपने घर पहुँचने की तारीख़ के सिवा और किसी बात की चर्चा न की थी। टाम का मृत्यु-समाचार लिखने की उसको हिम्मत न पड़ी। कई बार उसने लेखनी उठाई कि टाम के मृत्यु समय की घटनायें विस्तार से पत्र में लिखे, पर क़लम उठाते ही उसका हृदय शोक से भर जाता था, दोनों आँखों से आँसू बहने लगते थे, बस तुरंत काग़ज़ को फाड़ कर फेंक देता था और क़लम किनारे रख कर आँसू पोंछते हुए अलग जाकर हृदय को शान्त करने की चेष्टा करता था।

जिस दिन जार्ज ने घर पहुँचने को लिखा था उस दिन घर के लोग बड़े हर्षित मन से उसके आने की बाट जोह रहे थे। सब की आशा लगी हुई थी कि आज वह टाम काका को साथ लेकर लौटेगा।

तीसरे पहर का समय है। मिसेज़ शेल्बी कमरे में बैठी हुई है। क्लोई पास खड़ी भोजन की मेज़ पर काँटा चम्मच सजा रही है। क्लोई आज बड़ी प्रसन्न है। पाँच बरस बाद स्वामी के दर्शन होंगे। आज क्लोई एक एक चीज़ को पाँच पाँच बार सजाती है। मिसेज़ शेल्बी से वह इस विषय पर दो चार बातें करना चाहती है। टेबुल के किस तरफ़ किस कुर्सी पर जार्ज बैठेगा, इत्यादि विषयों पर मलकिन से तरह

तरह की बातें होरही हैं। अन्त में क्लोई बोली, "मेम साहब, मास्टर जार्ज का पत्र आया है ?"

मेम—हाँ आया तो है, लेकिन एक ही लाइन का है। बस केवल आज पहुँचने भर ही की बात लिखी है।

क्लोई—मालूम होता है, मेरे बूढ़े की कोई बात नहीं लिखी है ?

मेम—नहीं क्लोई ! टाम की कुछ चर्चा नहीं है। लिखा है सब बातें घर पहुँच कर कहेगा।

क्लोई—मास्टर जार्ज की तो यह पुरानी आदत है। उन्हें अधिक लिखना पसन्द नहीं है। सब बातें सामने ही सामने कहना पसन्द करते हैं। बालक है और लिखे होगा कितना। मेरी तो समझ ही में नहीं आता कि आप लोग इतना कैसे लिख डालती हैं।

मिसेज़ शेल्बी कुछ मुस्कुराई।

क्लोई—मैं सोचती हूँ मेरा बूढ़ा घर आकर लड़कों को नहीं पहचान सकेगा, लड़की को भी मुश्किल से पहचानेगा। उसको लेगये तब तो यह बड़ी छोटी थी, अब कितनी बढ़ गई है। पोली जैसी भली है वैसी ही चालाक भी है, मैं भोजन बनाकर इधर उधर चली जाती हूँ तो वह बैठी भोजन की रखवाली किया करती है। आज मैंने ठीक वैसा ही भोजन बनाया है, जैसा बूढ़े को ले जाने वाले दिन बनाया था। हा परमेश्वर ! उस दिन मेरा जी कैसा करने लगा था !

मिसेज़ शेल्बी ने क्लोई की बातें सुन कर ठण्डी साँस ली, उसे अपने हृदय पर बड़ा बोझ सा जान पड़ा। उसका मन उचट गया, जब से उसने अपने पुत्र का पत्र पाया था, उसी दिन से उसके मन में भाँति भाँति की शङ्कायें उठ रही थीं। वह सोचती थी कि जार्ज के पत्र में टाम की बात न लिखने का कोई न कोई विशेष कारण होगा।

क्लोई—मेम साहब ! मेरे भाड़े के रुपयों के बिल मँगा रक्खे हैं न ?

मेम—हाँ मँगाये पड़े हैं।

क्लोई—मैं बूढ़े को यह रुपये दिखाऊँगी। बूढ़े को मालूम होगा कि मैंने कितने रुपये पाये हैं। वह मिठाई वाला मुझे और कुछ दिनों वहाँ रहने को कहता था। मैं रह भी जाती लेकिन बूढ़े की अवाई के कारण अब मेरा मन वहाँ नहीं टिकता। मिठाई वाला आदमी बड़ा अच्छा है।

क्लोई अपने कमाये हुए रुपये दिखाने के लिए बड़ा आग्रह प्रकट करती थी, इससे मिसेज़ शेल्बी ने उसकी मनस्तुष्टि के लिए उसके बिल और उसमें लिखे हुए सब रुपयों को वहाँ ला रक्खा था।

क्लोई फिर कहने लगी, "बूढ़ा पोली को नहीं चीन्ह सकेगा, कैसे चीन्हेगा। ओफ़, बूढ़े को गये पांच वर्ष हो गये। तब तो पोली बड़ी छोटी थी। ज़रा ज़रा खड़ा होना सीखती थी। चलने के समय उसे गिरते पड़ते देखकर बूढ़ा कैसा ख़ुश होता था। तुरन्त दौड़ कर उसे गोद में उठा लेता था। अहा!

इसी समय गाड़ी के चकों की घरघराहट सुनाई दी। "मास्टर जार्ज!" कहते हुए क्लोई खिड़की पर दौड़ गई। मिसेज़ शेल्बी ने शीघ्र बाहर आकर पुत्र को छाती से लगा लिया।

जार्ज ने वहाँ क्लोई को खड़े देखते ही अपने हाथों में उसके दोनों काले हाथ लेकर कहा, "हाय, दुखिया क्लोई चाची! यदि मैं अपना सर्वस्व देकर भी टाम काका को ला सकता तो लाता पर वह यहाँ से उत्कृष्ट राज्य को चला गया है।"

मिसेज़ शेल्बी हा हाकार कर उठी, पर क्लोई कुछ न बोली।

सबने घर में प्रवेश किया। वह रुपया, जिसके लिए क्लोई बहुत गर्वित थी, उस समय भी टेबुल पर पड़ा हुआ था।

क्लोई ने उन रुपयों को बटोर कर कांपते हुए हाथों से मेम के सामने रख कर कहा, "मैं अब कभी इन रुपयों को नहीं देखना

चाहती हूँ, न इनकी बात ही सुना चाहती हूँ। मैं पहले से जानती थी कि अन्त में यही होना है। खेत वालों ने उसका .खून कर डाला है !"

क्लोई यह कह कर घर से बाहर चली। तब मिसेज़ शेल्बी स्वयं उठी और उसे हाथ पकड़ लाकर अपने पास बिठाते हुए कहा, "मेरी दुखिया क्लोई !"

क्लोई उसके कन्धे पर सिर धर कर रोती हुई कहने लगी, "मुझे क्षमा कीजिए। मेरा हृदय छिन्न भिन्न हो गया है !"

मिसेज़ शेल्बी ने कहा, "मैं यह जानती हूँ। मेरी सामर्थ्य नहीं कि तुम्हारी इस व्यथा को शान्त कर सकूँ, पर ईश्वर समर्थ है, वह सब कर सकता है। वह टूटे हुए हृदय को जोड़ सकता है और हृदय में लगे हुए घावों को भर सकता है।" कुछ देर तक वहाँ सभी चुपचाप आँसू बहा रहे थे। अन्त में जार्ज शोकार्त्त विधवा के पास आकर बैठ गया और उसके हाथ अपने हाथों में लेकर गद्गद कण्ठ से उसके स्वामी की वीरोचित मृत्यु की घटना का साद्यन्त वर्णन करने लगा, और टाम ने अपनी पत्नी को जो प्रेम-सन्देश भेजा था वह कह सुनाया।

इसके क़रीब एक महीने बाद एक दिन प्रातःकाल शेल्बी साहब के घर के सारे दास दासी अपने नव-युवा मालिक की आज्ञानुसार कमरे में इकट्ठे हुए।

कुछ देर बाद सभों ने बड़े विस्मय से देखा कि, जार्ज काग़ज़ों का एक बंडल हाथ में लिये हुए वहाँ आया। उसने प्रत्येक के हाथ में एक एक काग़ज़ देकर बतलाया कि यह उनकी दासत्व-मुक्ति का सार्टिफ़िकेट है। आज उसने समस्त गुलामों को दासत्व-शृङ्खला से बिल्कुल मुक्त कर दिया। उसने हर एक के सामने एक एक बार उनका सार्टिफिकेट पढ़ कर सुनाया। उसके चारों ओर दास दासी आनन्द-मग्न हो कर रोने लगे, कोई कोई शोर मचाने लगे और उनमें से

कितनोंही को इस घटना से बड़ी चिन्ता हुई और उससे वह काग़ज़ फिरती लेने का अनुरोध करने लगे। बोले, हम जितने स्वाधीन हैं, उससे अधिक स्वाधीनता नहीं चाहते। हम लोग यह घर छोड़ कर, मेम साहब को छोड़ कर, आपको छोड़ कर, कहीं भी नहीं जाना चाहते।"

जार्ज उन लोगों को सब बातें अच्छी तरह समझा देने का यत्न करने लगा। पर वे सब उसकी बात को अनसुनी करके कहने लगे, "हम लोग यहाँ से नहीं जायँगे।" अन्त में जब सब चुप हुए तब जार्ज ने कहा, "दासत्व से मुक्त हो जाने पर तुम लोगों को हमारा घर छोड़ कर जाने की ज़रूरत नहीं है, यहाँ पहले जितने नौकरों की आवश्यकता थी, अब भी उतनी ही है। घर में जो काम पहले था वही अब है। पर अब तुम लोग सम्पूर्ण स्वाधीन पुरुष और स्वाधीन स्त्री हो। मैं अब तुम लोगों से तै करके तुम्हें महीने महीने नौकरी दूँगा। तुम लोगों को स्वाधीन कर देने से तुम लोगों का यह लाभ हुआ कि मान लो यदि मैं किसी का कर्ज़दार हो जाऊँ या मर जाऊँ तो तुम्हें कोई पकड़ ले जाकर बेच न सकेगा। मैं अपना काम स्वयं चलाऊँगा। और तुम लोगों को यह बतलाने का यत्न करूँगा कि इस मिली हुई स्वाधीनता का कैसे सदुपयोग करना चाहिए। आशा है कि तुम लोग सच्चरित्र बनने का यत्न करोगे और शिक्षा में मन लगाओगे। मुझे विश्वास है कि ईश्वर की कृपा से मैं तुम लोगों के लिए कुछ कर सकूँगा। मेरे भाइयो! आज के दिन तुमने जो अमूल्य स्वाधीनता-धन पाया है, उसके लिए ईश्वर का गुण-गान करो, उसे धन्यवाद दो।" इसके बाद जार्ज ने निम्नलिखित कविता पढ़ कर सुनाई—

रहे अब तुम न किसी के दास।
परवश जीवन मृत्यु सदृश है इसमें कौन सुपास ?
किसने कब सुख पाया जग में करके पर की आस ॥ १ ॥

वह भी जीना क्या जीना है यदि मन रहा उदास।
इंगित पर औरों के नाचा सह सह कर उपहास॥ २॥
सुख स्वतन्त्रता का अनुभव कर होगा उर उल्लास।
बीतेगा जीवन विनोद में होंगे विविध विलास॥ ३॥
भय न रहा अब तुम्हें किसी का दूर हुआ दुःख त्रास।
हो स्वच्छन्द सुखी हो विचरो जग में बारोमास॥ ४॥

एक बहुत बूढ़ा हब्शी खड़ा होकर अपने काँपते हुए हाथों को उठा कर कहने लगा, "ईश्वर का धन्यवाद है! हम सब आज उसकी करुणा कटाक्ष से दासत्व की बेड़ी से मुक्त हुए हैं।" इस बूढ़े के साथ अन्यान्य दास-दासी भी कृतज्ञता-सहित बारम्बार ईश्वर की प्रार्थना करने लगे।

इनकी प्रार्थना समाप्त होने पर जार्ज ने इन्हें टाम की मृत्यु समय की सारी घटनाओं का साद्यन्त वर्णन सुनाकर कहा, "देखो, एक बात और कहनी है, तुम सब कृतज्ञता-पूर्वक हमारे टाम काका का स्मरण करो। याद रक्खो कि तुम लोगों के इस मूल सौभाग्य का कारण टाम काका ही थे। उन्हीं ने अपनी जान देकर आज तुम लोगों को स्वाधीनता दिलाई है। उसकी वह शोचनीय मृत्यु देख कर मेरे हृदय को बड़ी वेदना हुई थी, मैंने वहीं उसकी समाधि पर बैठ कर सर्वसाक्षी परमेश्वर के सन्मुख प्रतिज्ञा की थी कि मैं भविष्य में अब कभी दासत्व-प्रथा को आश्रय न दूँगा, स्वयं कभी दास न रक्खूँगा; ऐसा कभी न करूँगा कि कभी मेरे लिए किसी को अपने पुत्र परिजन परिवार से अलग होना पड़े।"

आज मेरी वह प्रतिज्ञा पूर्ण हुई। तुम सब स्वाधीन हुए। अतएव देखो जब जब स्वाधीनता के सुख से तुम्हारे हृदय में आनन्द हो तब तब मेरे परम बन्धु टाम काका का स्मरण करना, उसके परिवार पर

बनाने वाले की दूकान पर काम करता है, वहाँ उसे जो कुछ मिलता है उतने से उसके दिन बड़े सुख से कट जाते हैं। यहाँ आने पर इलाइजा के एक कन्या और हुई। वह पाँच बरस की हो गई है और उसका पुत्र हेरी ग्यारहवें वर्ष में पैर रख चुका है। इस समय वह इस नगर के एक विद्यालय में पढ़ता है।

इनका निवासस्थान बड़ा साफ़ सुथरा है। सामने एक छोटी सी सुन्दर फुलवारी है जिसे देख कर घर के मालिक की सुरुचि का विशेष परिचय मिलता है। घर में तीन चार कमरे हैं। उन्हीं में से एक छोटे कमरे में बैठा हुआ जार्ज पढ़ रहा है। बचपन से ही जार्ज को लिखने-पढ़ने की बड़ी लगन थी। अनेकानेक विघ्न-बाधाओं के होते हुए भी उसने पढ़ना लिखना सीख लिया था। जब काम से थोड़ा अवकाश पाता, तत्काल पुस्तक लेकर पढ़ने बैठ जाता।

सन्ध्या निकट है। जार्ज अपने कमरे में बैठा एक पुस्तक पढ़ रहा है। इलाइजा बगल वाली कोठरी में बैठी चाय तैयार कर रही है। कुछ देर बाद इलाइजा बोली, "सारे दिन तुमने मेहनत की है, अब थोड़ा आराम भी लो। इधर आओ गपशप की जाय। इतनी मेहनत करोगे तो स्वास्थ्य ख़राब हो जायगा।" इस पर इलाइजा की कन्या ने पिता की गोद में जाकर पुस्तक छीन ली। इलाइजा यह देख कर बोली, "ख़ूब किया, आओ छोड़ो किताब, इधर आओ।" इसी समय हेरी भी स्कूल से आ गया। जार्ज ने उसे देख कर उसके सिर पर अपना हाथ रखते हुए पूछा, "बेटा, तुमने यह हिसाब अपने आप लगाया है?"

हेरी—हाँ, मैंने स्वयं लगाया है, किसी से मदद नहीं ली है।

जार्ज—यही ठीक है। बचपन ही से स्वावलम्बी होना चाहिए। खोटी क़िस्मत के कारण तुम्हारे बाप को लिखना पढ़ना सीखने की

सुविधा नहीं थी, पर तुम्हें बड़ा मौक़ा है। खूब जी लगा कर पढ़ा-लिखा करो।

इसी समय जार्ज के दरवाज़े पर किसी के धक्के देने की आवाज़ आई। इलाइजा ने जा कर द्वार खोला। देखा वही अमहर्स्टवर्ग वाले पादरी साहब तीन स्त्रियों को साथ लेकर आये हैं। पादरी साहब इनके एक बड़े उपकारी मित्र थे, निराश्रित अवस्था में इन्हें आश्रय दिया था। इससे इलाइजा उन्हें देख कर बड़ी प्रसन्न हुई और जार्ज को बुलाया।

पादरी साहब और उनके साथ आई हुई स्त्रियों ने घर में प्रवेश किया। इलाइजा ने सबको बड़े आदर-सत्कार से बिठाया।

अमहर्स्टवर्ग से चलते समय पादरी साहब ने मैडमडिथो और कासी को मना कर दिया था कि, "तुम लोग वहाँ पहुँचते ही अपना भेद मत खोल देना।" उन्होंने मन ही मन एक लम्बी चौड़ी भूमिका बाँध कर एक व्याख्यान के ढङ्ग पर जार्ज और इलाइजा को इनका परिचय देने का निश्चय किया था। मालूम होता है, वह रास्ते रास्ते इस बात को सोचते आ रहे थे कि इस विषय में किस ढङ्ग से वक्तृता देंगे, कैसे कैसे शब्द काम में लावेंगे। इसीसे जब सब लोग बैठ गये तब पादरी साहब जेब से रूमाल निकाल कर मुँह पोंछते हुए व्याख्यान देने की तैयारी करने लगे। पर मैडमडिथो ने वक्तृता आरम्भ करने के पूर्व ही सब खेल बिगाड़ दिया। जार्ज को देखते ही वह उसके गले से लिपट गई और आँसू बहाते हुए बोली, "जार्ज, क्या तुम मुझे नहीं पहचानते हो? मैं तुम्हारी बहन एमिली हूँ।"

कासी अब तक मौन मारे बैठी थी। उसकी गति से जान पड़ता था कि यदि मैडमडिथो सब खेल न बिगाड़ती तो वह पूर्व के प्रबन्धानुसार मौन धारण किये रहने में बाज़ी मार ले जाती। पर इसी समय इलाइजा की कन्या वहाँ आ पहुँची। वह रूप-रङ्ग में बिल्कुल इलाइजा

की सी थी । इलाइजा बस इतनी ही उम्र में कासी की गोद से अलग की गई थी । कासी देखते ही पागल की तरह उसे छाती में दबोच कर बोली, "बच्ची, मैं तेरी माँ हूँ ! बेटी, तू मेरी खोई हुई सम्पत्ति है !" कासी ने इसी को अपनी सन्तान समझा !

इनके यों परिचय देने से इलाइजा और जार्ज दोनों ही को बड़ा विस्मय हुआ और वे चौंक पड़े । उन्हें सब स्वप्न सा जान पड़ने लगा । अन्त में हर्ष सम्भूत-क्रन्दन रुकने पर पादरी साहब फिर खड़े हुए और सारा भेद खोल कर सुनाया । उनकी बातें सुनते समय सबकी आँखों से आँसुओं की धारा बह रही थी । वास्तव में पादरी साहब की उस दिन की वक्तृता से उनके श्रोताओं का मन जैसा पिघला था वैसा शायद कभी न हुआ होगा ।

इसके बाद सब लोग घुटने टेक टेक कर बैठे और वह सहृदय पादरी साहब ईश्वर को धन्यवाद देते हुए प्रार्थना करने लगे । उपासना की समाप्ति पर सब उठ कर परस्पर भेंटने लगे, और आँसू बहाते हुए सोचने लगे कि ईश्वर की महिमा भी कैसी अनन्त है ! जार्ज और इलाइजा को स्वप्न में भी ऐसे अद्भुत सम्मिलन की आशा न थी पर ईश्वर ने आज अनमाँगे उन्हें यह सुख और शान्ति देने की कृपा की ।

कैनाडा के एक पादरी की स्मृति-पुस्तक में भगोड़े दास-दासियों के ऐसे अद्भुत मिलन के सहस्रों दृष्टान्त लिखे थे । यह पुस्तक पढ़ कर पता चलता है कि दासत्व-प्रथा पर लिखे हुए उपन्यासों की काल्पनिक घटनाओं की अपेक्षा भी मनुष्य के प्रकृत जीवन में अधिकतर आश्चर्य-जनक घटनायें आ पड़ती हैं । छः बरस की अवस्था में सन्तान माता की गोद से बिछुड़ गई है । फिर तीस वर्ष की अवस्था में उसीका अपनी माता के साथ इस कैनाडा प्रदेश में मिलन हुआ है । पर कोई किसी को पहचान नहीं सकता है । कितने ही भगोड़े दासों के जीवन

में अद्भुत वीरता और त्याग स्वीकार के दृष्टान्त देख पड़ते हैं। अपनी माताओं और बहनों को दासत्व के अत्याचार से मुक्त करने के लिए ये अपनी जान पर खेल जाते थे। एक दास युवक था। पहले वह यहाँ अकेला भाग कर आया पर पीछे से वह अपनी बहन को छुड़ाने के लिए जा कर एक एक करके तीन बार पकड़ा गया। बड़ी बड़ी तकलीफें और सङ्कट सहे। एक एक बार की कोड़ों की मार से छः छः महीने खाट पकड़े रहा, पर किसी तरह अपना उद्यम न छोड़ा। अन्त में चौथी बार की चेष्टा में अपनी बहन को छुड़ा ही तो लाया।

कहिए पाठक! क्या यह युवक सच्चा वीर नहीं है? पर अमरीका के पशु-प्रकृति अँगरेज़ इसे चोर समझते थे। न्याय की नज़र से देखा जाय तो ये अर्थलोभी गोरे ही असल चोर हैं। इस अत्याचार-पीड़ित युवक का कार्य वास्तव में वीरता का कार्य कहलाने योग्य था।

कासी, मेडमडियो और एमेलिन, तीनों जार्ज और इलाइजा के साथ रहने लगीं। कासी पहले कुछ सनकी सी जान पड़ती थी। वह जब तब आत्म-विस्मृति के कारण इलाइजा की कन्या को छाती से लगाने के लिए इतने ज़ोरों से खींचती थी कि देख कर सबको आश्चर्य होता था। पर धीरे धीरे उसकी दशा सुधरने लगी। इलाइज़ा अपनी माता की यह दशा देख कर सदा उसे बाइबल सुनाया करती थी, ईश्वर की दया की कथा सुनाती थी। कुछ दिनों बाद कासी का मन धर्म की ओर फिरा। उसके हृदय में भक्ति और प्रेम का स्रोत प्रवाहित होने लगा और बहुत थोड़े समय में उसका जीवन अत्यन्त पवित्र हो गया।

थोड़े समय बाद मेडमडियो ने जार्ज से कहा, "भाई, अपने पति के मरने से मैं ही उसके अतुल धन की मालिक हुई हूँ। तुम अब इस धन को जो चाहे जहाँ खर्च कर सकते हो। मैं तुम्हारी इच्छानु-

सार इस धन का सदुपयोग करना चाहती हूँ।" जार्ज यह सुन कर बोला, "एमिली! मेरी ख़ूब पढ़ लिख कर विद्वान् होने की बड़ी लालसा है। तुम मेरी शिक्षा का कोई प्रबन्ध कर दो।" इतनी बड़ी उम्र में जार्ज की शिक्षा का क्या प्रबन्ध होना चाहिए, सब लोग इस विषय पर विचार करने लगे। अन्त में सब की यह राय हुई कि सब लोग फ़्राँस चल कर रहें और जार्ज वहाँ के किसी विश्वविद्यालय में भर्ती हो कर शिक्षा प्राप्त करें।

यह बात पक्की हो जाने पर ये सब एमेलिन को साथ ले कर जहाज़ से फ़्रान्स को चल पड़े। जहाज़ का कप्तान बड़ा अच्छा आदमी था। उसने एमेलिन का सदाचार और रूपलावण्य, विनीत भाव एवं अनेक सद्गुण देख कर उससे विवाह करने की इच्छा प्रकट की—और फ़्रान्स पहुँच कर उससे विवाह कर लिया। जार्ज ने चार वर्ष फ़्रान्स में रह कर अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया। पर किसी राजनैतिक घटना के कारण उन लोगों को फ़्रान्स छोड़ कर फिर कैनाडा लौट आना पड़ा।

अब जार्ज एक सुशिक्षित युवक है। जार्ज का अपने हाथ का लिखा हुआ एक पत्र हम नीचे उद्धृत करते हैं। यह पत्र जार्ज ने कार्यक्षेत्र में प्रवेश करने के कुछ ही पहले अपने किसी मित्र को लिखा था। शिक्षा के प्रभाव से उसका हृदय कितना उच्च हो गया था, पाठक इस पत्र को पढ़ कर प्रिय मित्र, उसका अनुमान कर सकते हैं।

"मुझे तुम्हारे पत्र में यह पढ़ कर बड़ा खेद हुआ कि तुम मुझे गोरों के दल में मिलने का अनुरोध कर रहे हो। तुम कहते हो कि मेरा रंग साफ़ है और मेरी स्त्री, पुत्र, कुटुम्बी कोई भी काले नहीं हैं, इससे मैं बड़ी आसानी से उनकी सोसायटी में मिल जा सकता हूँ। पर मैं तुम्हें सच कहता हूँ कि इन में मिलने की मेरी ज़रा भी इच्छा

नहीं है। धनवानों और रईसों पर मेरी तनिक भी श्रद्धा नहीं है। मनुष्य-समाज का इससे कभी उपकार नहीं हो सकता कि अधिकांश मनुष्य तो पशुओं की भाँति परिश्रम से पिस पिस कर मरें और कुछ लोग बाबू और रईस बने फिरें तथा चैन की बन्सी बजावें। ऐसे आदमियों से मनुष्य-समाज का बड़ा अपकार हो रहा है। जिन मनुष्यों को पशुओं की भाँति परिश्रम करना पड़ता है, वे किसी प्रकार का ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकते, ज़िन्दगी भर मूर्ख बने रहते हैं। इससे उन्हें धर्म अधर्म का कोई विचार नहीं रहता, वे सदा बुराइयों में फँसे रहते हैं। इन बुराइयों के मूल कारण वे ही लोग हैं जो उनसे इस प्रकार पशुओं की भाँति काम लेते हैं। उन लोगों के पाप और दुर्नीति के अवश्यम्भावी कुफल से समग्र मानव-मण्डली का अकल्याण होता है।

इस विषय पर मैं जितना सोचता हूँ कि समाज में इतने पाप, दुःख, अत्याचार और दारिद्र्य के कोप का क्या कारण है, संसार में सुख-शान्ति क्यों नहीं है; उतनी ही इन रईसों और धनवानों पर मेरी श्रद्धा घटती जाती है। बड़े आदमी ही इसके एक मात्र कारण जान पड़ते हैं।

अत्याचार से सताये हुए दीन-दुखियों पर, पार्थिव-पद-प्रभुत्व-हीन मानव-समाज के अन्नदाता ग़रीब किसानों पर—निर्बल और निस्सहाय अनाथों पर ही मेरी श्रद्धा है।

तुम मुझे रईस-मण्डली में मिल कर शान के साथ जीवन बिताने को कहते हो पर ज़रा विचारो तो यह रईस-मण्डली है क्या? निस्सहाय और कङ्गालों के कठोर परिश्रम की कमाई को घर बैठे बैठे मुफ़्त में राँड़ भाँड़ और भोग-विलास में उड़ाना ही रईसी है या और कुछ? इसी का नाम न बड़प्पन है? ग़रीब दिन रात मर पच कर जो कुछ कमावे, उसे मैं छल बल से हड़पलूँ, और मेरे पास जो कुछ है उसमें से किसी को कानी कौड़ी तक न दूँ। मैं विद्वान् हूँ पर उन दुर्बलों

को उनके कठोर परिश्रम की कमाई के बदले में अपनी विद्या का एक कण भी न दूँ । ऐसे ही आचरणों को भिन्न भिन्न जाति के लोग रईसाना व्यवहार कहते हैं । पर तुम्हीं कहो क्या ऐसे रईसी जीवन से मुझे सुख मिल सकता है ? ऐसा बड़प्पन ले कर क्या कोई कभी संसार से पाप, ताप, अत्याचार और दरिद्रता का मूलोच्छेदन कर सकता है ? कभी नहीं । बल्कि जो कोई इस रईस-मण्डली में शामिल होगा, उसी को समाज-प्रचलित पाप अत्याचार और निष्ठुरताओं का पक्ष लेना पड़ेगा । मैं मानता हूँ कि इस संसार में सब लोग कभी बराबर नहीं हो सकते, सब की दशा समान नहीं हो सकती । सामाजिक विवर्त्तन के कारण लोगों की दशा में सदा ही वैषम्य होता रहेगा । पर वह स्वाभाविक वैषम्य होता रहेगा, इससे हमें यह कदापि उचित नहीं है कि किसी दूसरे का हाथ काट कर उसमें और अपने में भेद उत्पन्न कर लें । कहो मेरी क्या दशा थी ? मैं केवल दासी के पेट से पैदा होने के कारण ही देश-प्रचलित क़ानून के द्वारा मनुष्य के स्वाभाविक अधिकारों तक से वञ्चित रक्खा गया । भला ऐसे व्यवहार द्वारा मनुष्य-समाज में परस्पर भेद उत्पन्न करने की अपेक्षा और क्या बुराई हो सकती है ?

अपने पितृकुल की जाति से मेरी तनिक भी सहानुभूति नहीं है । उस जाति वालों ने सदा मुझे किसी घोड़े वा कुत्ते से अधिक नहीं समझा केवल मेरी माता ही थी जिसकी आँखों में मैं मनुष्य-सन्तान था । बचपन में जब से मेरा उस स्नेहमयी जननी से वियोग हुआ तब से आज तक मेरी उससे भेंट नहीं हुई । वह मुझे प्राणों से भी अधिक प्यार करती थी । उसने कैसे कैसे कष्ट और दुःख भोगे, मैंने लड़कपन में कैसे कैसे अत्याचार सहे और कष्ट उठाये, मेरी स्त्री ने बच्चे को बचाने के लिए जिस तरह नदी पार की और जिस वीरता से नाना

प्रकार के दुःख और यन्त्रणाओं का सामना किया, यह सब जब मैं याद करता हूँ तो मेरा मन बेचैन हो जाता है। पर जिन लोगों ने हमें इतना सताया, इतने दुःख दिये, उनके विरुद्ध मैं अपने हृदय में किसी प्रकार का द्वेष नहीं रखता, प्रत्युत् ईश्वर से उनके भी कल्याण की प्रार्थना करता हूँ।

मेरी माता अफ्रीकावासिनी थी, इससे अफ्रीका मेरी मातृभूमि है। उन्हीं पराधीन, अत्याचार-निपीड़ित, अफ्रीकावासियों की उन्नति के निमित्त ही मैं अपना यह जीवन उत्सर्ग करूँगा। देश-हित-व्रत धारण करके प्राण-पण से बलवानों के अत्याचारों से निर्बलों की रक्षा करने का यत्न करूँगा।

तुम मुझे धर्मप्रचारक का व्रत धारण करने की राय देते हो और मैं भी समझता हूँ कि धार्मिक हुए बिना कभी मनुष्य की उन्नति नहीं हो सकती। लेकिन क्या इन अपढ़ और गँवारों को सहज में धर्ममार्ग पर लाया जा सकता है? विशेष कर अत्याचार-पीड़ित जाति कभी सत्यधर्म का मर्म नहीं समझ सकती। उनकी अन्तरात्मा जड़—पथराई हुई रहती है।

अत्याचारनिपीड़ित पराधीन जाति को उन्नत करने के लिए सब से पहले देश-प्रचलित क़ानून का सुधार करना होगा, पराधीनता की बेड़ी से इन्हें मुक्त करना होगा। तब जा कर इनका कुछ भला हो सकेगा। मैं तन मन से इस बात का यत्न करूँगा कि अफ्रीकावासियों में जातीय जीवन आ सके और संसार की सभ्य जातियों में इनकी एक स्वतन्त्र जाति में गणना हो सके। सम्प्रति लाइबिरिया उपकूल में साधारण तन्त्र की स्थापना हुई है। मैंने वहीं जाना ठाना है।

तुम शायद समझते हो कि मैं इन घोर अत्याचार से सताये जाने वाले अमरीका के गुलामों को भूल गया हूँ। पर कभी ऐसा मत

समझना। मैं शपथ खाता हूँ कि यदि मैं इन्हें एक घड़ी के लिए, एक पल के लिए भी भूल जाऊँ तो ईश्वर मुझे भूल जावे। पर यहाँ रह कर मैं इनका कुछ भला न कर सकूँगा। अकेले मेरे किये इनकी पराधीनता की बेड़ी न टूटेगी। पर यदि मैं किसी जाति में जा कर मिल जाऊँ, जिसकी बात पर अन्यान्य जातियों के प्रतिनिधि ध्यान दें तो हम लोग अपना वक्तव्य सब को सुना सकते हैं। किसी जाति की भलाई के लिए किसी व्यक्ति-विशेष को वादानुवाद, अभियोग वा अनुरोध करने का अधिकार नहीं है, हाँ, वह जाति की जाति अवश्य वैसा करने का पूर्ण अधिकार रखती है।

यदि किसी समय सारा युरोप स्वाधीन जातियों का एक महा-मण्डल बन गया, यदि अधीनता, अन्याय और सामाजिक वैषम्य-उत्पीड़न युरोप से सर्वथा रहित हो गया, और यदि सारे युरोप ने इँग्लेंड, और फ़ान्स की भाँति हम लोगों को एक स्वतन्त्र जाति मान लिया, तो उस समय हम विभिन्न जाति-समूह की महा-प्रतिनिधि-सभा में अपना आवेदन उपस्थित करेंगे और बल-पूर्वक दासत्व में लगाये हुए, यथेच्छाचारपीड़ित, दुर्दशापन्न स्वजातीय भ्राताओं की ओर से सुविचार की प्रार्थना करेंगे। उस समय स्वाधीन और सुसभ्य अमरीका देश भी अपने वक्षस्थल से इस दासत्व-प्रथारूपी, सर्वजन-घृणित घोर कलङ्क को धो बहावेगा।

तुम कह सकते हो कि आयरिश, जर्मन और स्वीडन जातियों की भाँति हम लोगों को भी अमरीका के साधारण तन्त्र में सम्मिलित होने का अधिकार रहे। मैं भी इसे मानता हूँ। समान भाव से हम लोगों को सबके साथ मिलने देना उचित है; जाति वर्ण के भेद को परे रख कर हम लोगों में प्रत्येक को योग्यतानुसार समाज में उन्नत स्थान पर पहुँचने देना सर्वथा कर्त्तव्य है। इतना ही नहीं कि इस देश में जन-साधारण को

जो अधिकार मिले हुए हैं, उन्हीं पर हमारा दावा है, बल्कि हमारी जाति की जो क्षति इन लोगों के अत्याचार से हो रही है उस क्षति की पूर्त्ति के लिए अमरीका पर हम लोगों का एक विशेष दावा है। पर यह सब होने पर भी मैं वह दावा नहीं करना चाहता। मैं अपना एक देश और एक जाति चाहता हूँ। अफ़्रीकन जाति की प्रकृति में कुछ विशेषतायें हैं। अँगरेज़ों से अफ़्रीकन प्रकृति बिल्कुल भिन्न होने पर भी ये विशेष गुण सभ्यता और ज्ञान विस्तार के साथ ही साथ अफ़्रीकनों को नीति और धर्म की ओर अग्रसर करने में उच्च और महान् प्रमाणित होंगे।

मैं एक युगान्तर के अभ्युत्थान की प्रत्याशा में हूँ। मेरा विश्वास है हम इस नवीन युग की पूर्व सीमा पर खड़े हुए हैं। आज कल जो भिन्न भिन्न जातियाँ भयङ्कर वेदनाओं से कातर हो रही हैं, मुझे आशा है कि उन्हीं वेदनाओं से ही सार्वभौमिक प्रेम और शान्ति का जन्म होगा।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि अफ़्रीका धर्म बल से ही उन्नति के शिखर पर पहुँच सकेगा। अफ़्रीकन चाहे क्षमतावान् तथा शक्ति-सम्पन्न न हों, पर वे हृदयवान्, महानुभाव और क्षमताशील हैं। जिन्हें अत्याचार की धधकती हुई आग में जलना पड़ता है, उनके हृदय यदि स्वर्गीय प्रेम और क्षमा के गुणों से पूर्ण न हों तो उनके हृदय की अग्नि को शान्त करने के लिए और उपाय ही क्या है? अन्त में यही प्रेम और क्षमा उन्हें विजयी बनावेगी। अफ़्रीका महाखंड में यह प्रेम और क्षमा का महान् धर्म-प्रचार करना ही हम लोगों का जीवन-व्रत होगा।

स्वयं मैं इस विषय में कमज़ोरियों का शिकार हूँ, मेरी नस नस में आधा ख़ून गर्म—अँगरेज़ ख़ून है। पर मेरे सन्मुख सदा एक मधुर-

भाषिणी धर्म-शिक्षयित्री विद्यमान रहती है, यह मेरी परमलावण्य-वती सहधर्मिणी है। भटकने पर यह मुझे कर्त्तव्य मार्ग का ज्ञान कराती है, हम लोगों के जातीय एवं जीवनोद्देश्य को सर्वदा नेत्रों के सन्मुख जागृत रखती है। देश-हित की इच्छा से, धर्मशिक्षा की इच्छा से मैं अपने प्रियतम स्वदेश अफ़्रीक़ा को जा रहा हूँ।

तुम मुझे कल्पना के घोड़ों पर सवार कहोगे, कदाचित् तुम कह सकते हो कि जिस काम में मैं हाथ डाल रहा हूँ, उस पर मैंने पूर्ण विचार नहीं किया। पर मैंने सब सोच-विचार रक्खा है, हानि का हिसाब लगा कर देख चुका हूँ। मैं काव्य-वर्णित स्वर्गधाम की कल्पना करके लाइबिरिया नहीं जा रहा हूँ। मैं कर्मक्षेत्र में डट कर परिश्रम करने का सङ्कल्प करके जा रहा हूँ। मुझे आशा है कि स्वदेश के लिए मैं कभी परिश्रम करने से मुख न मोड़ूँगा, हज़ारों विघ्न-बाधाओं के आने पर भी डटा रहूँगा, जब तक दम में दम है तब तक देश के लिए काम करता जाऊँगा।

इसी आशा से जा रहा हूँ और मुझे ध्रुव विश्वास है कि मैं इस विषय में निराश नहीं होऊँगा।

मेरे सङ्कल्प के सम्बन्ध में चाहे जो कुछ क्यों न सोचो, पर मेरे हृदय पर अविश्वास न करना। स्मरण रखना कि, मैं चाहे जो कुछ कार्य क्यों न करूँ, स्वजाति की मङ्गल-कामना को ही हृदय में धारण करके उस काम में लगूँगा।

तुम्हारा
जार्ज हेरिस।"

इसके कुछ सप्ताहों उपरान्त जार्ज अपने पुत्र-परिजन-सहित अफ़्रीक़ा चला गया।

मिस अफिलिया और टप्सी को छोड़ कर उपन्यास में आये

हुए नामों में से अब हमें और किसी के विषय में कुछ नहीं कहना है ।

मिस अफिलिया टप्सी को अपने साथ वारमंन्ट ले गई । पहले अफिलिया के पितृ-परिवार के लोग उसे देख कर बहुत विस्मित हुए और चिढ़े भी, पर मिस अफिलिया किसी तरह कर्त्तव्य से हटनेवाली न थी । उसके अपूर्व स्नेह और यत्न के गुणों से दास-बालिका थोड़े ही दिनों में अड़ोसी पड़ोसी सब की स्नेहपात्र हो गई । बड़ी होने पर टप्सी अपनी ख़ुशी से ईसाई हो गई । उसकी तीक्ष्ण बुद्धि, कर्मिष्ठता और धर्मोत्साह देख कर कुछ मित्रों ने उसे अफ़्रीक़ा जा कर धर्म-प्रचार करने की सलाह दी ।

पाठिकायें सुन कर सुखी होंगी कि मैडमडियो के अनुसन्धान से कासी के पुत्र का भी पता लग गया ।

यह वीर युवक माता के भागने के बहुत पूर्व कैनाडा भाग आया था । यहाँ आकर कई दासत्वप्रथा-विरोधी अनाथबन्धु सहृदय महात्माओं की सहायता से उसने अच्छी शिक्षा पाई थी । उसे जब मालूम हुआ कि उसकी माता और बहन अफ़्रीक़ा को जा रही हैं, तो उसने भी अफ़्रीक़ा का मार्ग लिया ।

॥ सम्पूर्ण ॥